| | वीर | सेवा | मन्दिर | |
|------|---------------------|------------|----------------|---|
| | | दिल्ल | र ी | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | * | | |
| | | 8 | 32 | |
| क्रम | सस्या | 955 | - | |
| कार | प न० ^{——6} | x <u> </u> | MICA | - |
| खण | · | | | _ |

बात मन्दिर न्यू सैण्ट्रल जुट मिल्स कम्पनी लिमिटेड, बजबज, चौबीस परगना की स्रोर से

श्री सिद्धचक्रविधान महोत्सव के

सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष में सादर में ट

'ज्ञानपीठ मूर्तिदेवी' पालि गम्थमाला [गम्थाहो १]

भदन्ताचरियेन बुद्धघोसमहाथेरवरप्यणीता परमत्थजोतिका नाम

जातक द्वकथा

[पडमा भागा]

एककनिपातवण्ण**न्**



कोसिनारकेन तिषिटकाचरियेन भिक्खुना धम्मरिकावेन संसोधितामिमङ्गता च

भारतीय ज्ञानपीठ काशी

पठममुद्दापन (सहस्समत्तं) ब्रासाल्हो बीरनि० स० २४७७ बु० स० २४६५ जलाई १६५१

मूलं ९ ६०

भारतीय ज्ञानपीठ काशी

स्व० पुण्यश्लोका माना **मृतिदेवी** की पवित्र स्मृति में तत्सुपुत्र सेठ शान्तिप्रसाद जी द्वारा

संस्थापित

ज्ञानपीठ मूर्तिदेवी पालि ग्रन्थमाला

पालि यंथांक १

प्रकाशक--अयोध्याप्रसाद गोयलीय,

मन्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ काशी
दुर्गाकुण्ड रोड, बनारम

मुद्रक-देवताप्रसाद गहमरी, संसार प्रेस, काशीपुरा, बनारस

स्थापनाब्द फाल्गुन क्रुडण १ वीरनि० २४७०

सर्वाधिकार सुरक्षित

विक्रम सं० २००० १८ फरवरी ११४४



स्व० मूर्तिदेवी, मातेश्वरी सेठ शान्तिप्रसाद जैन

JÑĀNA-PĪTHA MŪRTIDEVI PALI GRANTHAMĀLĀ

PALI GRANTHA No. 1

JATAKATTHAKATHA

Vol. I



EDITED BY

TRIPITAKACHARYA BHIKSHU DHARM RAKSHIT

Published by

Bharatiya Jnanapitha, Kashi

BHARATIYA JÑANA-PITHA, KASHI

FOUNDED BY

SETH SHANTI PRASAD JAIN

IN MEMORY OF HIS LATE BENEFOLENT MOTHER

SHRI MURTI DEVI

JNANA-PITHA MÜRTI DEVI PALI GRANTHAMALĀ

PALI GRANTHA No. 1

PUBLISHER

AYODHYA PRASAD GOYALIYA.

SECY BHARATIYA JNANAPITHA, DURGAKUNDA ROAD, BANARAS.

Phalguna Krishna 9, A'l Rights Reserved. Vikrama Samvat 2000 Vira Sam. 2170 18th Feb. 1911.

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्बासम्बद्धस

विञ्ज्ञाति

सामित्यनगुणनाथावनेन पतस्त्राक भगवता अरह्ना सम्मामम्बुदेन अभिमम्बुण्यस्य, मन्योधिसमधि-गाय सम्मारम्ना दीएडरूनाथरम् न नाभिनोहारानो पृद्धा याव नुमित्रभवनोन्नामा, या चरियायो एवा-मम्बेन श्रीवादानृष्येन व मन्य नत्तर सिक्युक्तिसम्बद्धान्त्रचेन उप्पास्त्रणामित्यसम्बद्धान्त्रस्य सुना, सब्बा अद्यव्यद्ध-मनप्पाणा आहाक्षां एन नामेन तेनेव नयानेन पास्त्रीवना । नत्त्र्य सो पन जानक गटगीनि आरोपेलीह याम-परवाहरूप्रस्वादे हिम्दगीनित्यसमारीणन गिटरूबमेन मुन्तरिक्ते च निकाय समेन स्वरूक्तिकाये च अल्लोमप

तस्म मो पन जानकस्म अध्यवणाना, परमदिगद्वमद्वाबृद्धिविरियानिमण्डिने निष्टिकपरियन्तिप-भैरसादुक्षये मध्युमासने अपादिक्तन्त्राणाचारेन थेप्यसण्यतीयान थेरानं महाविद्याप्यसीत समासक्कारभूतेन जनवरीयाबामिना सक्तमयपायनपरपादस्मिना यसस्मिना अवस्य बुद्धधोत्तर्थस्य परस्यक्षोतिकानि नामेन कता । मा पताय परमान उत्तमान अत्यान जोनननो पकामनतो परमाव्यजोतिका नाम । जातकहुक्स्यां निर्ण अपस्य करीयने ।

न सो पन जानकहरूवामदिमा विभाजनमा अञ्जा अहुक्या नाम अस्य । इमिम पन गर्व राज-नानियमनान्यायया मध्येषि यम्मा भागना । अपि च कर्यामणेन बिष्णाना अस्य गर्यो मध्यक्रसमुणावहो होति । एनगहि लाक कर्यामाहित्वं जानकहरूवा विग लांकियलोकुनस्वसाधको एकोपि अञ्जो गर्यो मध्ये ।

अय जानकटुकवा जानक्यांचिय आगतनिवासेनेव वावीसनिवा निगानीह गर्निमण्डिता होति । तेमु एककतियानकस्थानम् निदानकपाननम् अपन्यमकातेनकादीनि दिवट्डजनवस्थानि होन्ति, तानि अपन्यमक् वधारीति ग्रामानविवयोहि नेव नीहि गर्मणासकेटिच सहस्योनानि । गर्वस निगानान विव्यागे पन एव बेरि-गर्वा —

| श्रनुक को | निपातो | वगगपमाणो | जातकप्पमाणो |
|------------|---------------------|----------|-------------|
| , | एककनियाली | १ | १५० |
| ÷ | दुक्रनिपानो | 9.0 | 800 |
| 4 | विक्रियानी | У | 90 |
| 6 | चत्रकतिपाता | ¥. | 90 |
| ×. | पञ्चक्रनिपाती | 3 | υy |
| Ę | छक्यनिपाला | t t | Do |
| 9 | सनवनिषानो | 5 | ၁ ခု |
| τ. | अहकानियात्स | Ę. | 9.0 |
| ₹ | नवर्गानगाना | | 82 |
| 9.0 | दगर्भनपाता | | ₹ € |
| 8.9 | एकादसकनियानो | | £ |
| 8.5 | द्रादसकनिपानो | | 80 |
| १र | तरसक्तिपान <u>ी</u> | | 90 |
| 8 6 | र्वारूक्यक्तियाता | | 8 3 |
| १ % | बीसनिनिपानो | | 8 4 |

| सनुक्कमो | निपातो | वस्यपमाणो | जातकप्पनाणो |
|----------|--------------|-----------|-------------|
| ें १६ | तिसतिनिपातो | | १० |
| १७ | चतालीमनिपातो | | × |
| १= | पञ्जासनिपातो | | Ę |
| 38 | सद्भिनपातो | | 2 |
| ર્૦ | सत्ततिनिपानो | | ২ |
| ₹ १ | असीतिनिपाती | | × |
| २२ | महानिपातो | | १० |
| | | - | |
| २२ | | *3 | ४४७ |

इति इमानि सत्तवतातीयाधकाति पञ्चवातकमतानि इमिन्सं आतंकदुकवाव विष्युतानि । आतंक-पालीपि एतपरमायेव दिस्मति । यनन वदिन पण्णामाधिकानि पञ्चवातकमतानीति अवञ्चद्रानि आतंक-सतानीति च तं एतकमेव, न हेत्य अपिकाय निसञ्ज्ञचाय उनता सन्तन्तवीयनीत अनेकेहि वेरेहि वृत्त ।

समाय जातकहुरूवाय पन निवानमन इतो मनाधिकनिवासिसवण्यायो पुन्ने विकाशित पार्विषेत समानक्ष्मिसीमा मूर्वापतं अहीति । सकताय जातकहुरूवाय निर्मोमामाय परिवननिय आतत्कांकालना-तत्वेरने कठ जिला । तस्या ताव तमे मामा येव मूर्वापता सीन । अञ्जो पि भागा मीकेन मूर्वापिता भावत्कांनित स्वाचित अञ्जो । अपि च जातकहुरूवाय नामानकरमुहाग्ने अतिविवययोजन विस्तमाने 'भारतीय सामचीक कालो' इति नामिकाय सीनिवाय मुरावननाद । इसिस्सा पनाय पटमो भागा वाव एककनिवानवण्या पार-सीमान मुराविता । जातकहुरूवाय पन मुरावने तमे भारतीयान महाउपकारो कतो

इमाय जानकट्टकयाय सम्पादनिकच्च पन सम्बय्धकारेन निष्टिकाचरियोन भदन्तवपदीसकस्मपत्थेर-वरेन कर। तस्मेव अनुमनिया मया समीधितासिमाइक्या च । इमिम्म अभिसङ्कर्ण तत्व तत्व विस्वयानुस्पा मात्रिकाचो निश्विता सन्ति, ता अञ्जेस गर्भस् निर्देश, रूप पाठकान सुवायवीधन्याययेव तथा करा। अवीटियणीस् विस्तिसाराणि तेनेव अञ्कासयेन आहटा। पमादबन्त सन्दु स्मीस्म मुशपने सन्दोगायया दिस्सन्ते, तस्या मया मृद्धियन निष्टित अस्यि, न मायुमो ओनोकेन्याय मण्डना एठन्त्रीन निवेदयामि।

कुसिनारायं २८-५-५१ इत्यं विञ्ञापीयते मया कोसिनारकेत भिक्कुना धम्मरक्कितेना'न्ति

सङ केतनिरूपनं

- रो० मुद्दिन रोमनवस्तरपोत्थकं। सि० - महिन मीहलक्तरपोत्थकः।
- स्याः महित स्यामनन्दरयोत्थक ।
 - न**ः मृ**हित मरम्मक्लरपोत्थक ।

सृचिपत्तं

निदानकथा

| घडको | प्रनुब ङ्को | विसयो | पिद्रक्रको |
|-------------|--------------------|--------------------------------|---|
| 8 | | परगामगाथा | |
| ર | | तीरिए निदानानि | 7 |
| ą | " | व्रेनिवानं | |
| 0 | 8 | सुमेधकथा | |
| ** | | अमरवती नगर | ş |
| n | 2) | समेधपण्डितस्स चिन्तन | |
| ,, | 13 | ुमेधपण्डितस्स पब्बज्जा | ¥ |
| ,, | ,, | दीपऋकरभगवतो पादमूले बुद्धभावाय | |
| | | अभिनीहारो | ς, |
| D | ** | बुद्धुप्पादस्स पुब्बनिमित्तानि | १२ |
| ,, | | महासत्तम्स अधिद्वानानि | १५ |
| ,, | ., | १ दानपारमी | |
| ,, | 33 | २ सीलपारमी | १६ |
| ,, | ** | ३ नेक्कम्मपारमी | ٠, |
| 9 | 11 | ४. पञ्जापारमी | १७ |
| ** | | ५ विरियपारमी | |
| ,, | | ६ म्बन्तिपारमी | 9 ⊏ |
| ,, | | ७ सच्चपारमी | १ ⊏ |
| " | 22 | च अधिट्ठानपारमी | ,,, |
| ,, | 1) | ६ मेलापारमी | 39 |
| ,, | p. | १०. उपेक्कापारमी | ,, |
| ,, | n | महासत्तस्य पारमिसम्मयन | २० |
| ,, | २ | भगवा दीपडकरो | २२ |
| ,, | ą | भगवाकोण्डञ्ञा | २४ |
| n | Y | भगवा मङ्गलो | 7.5 |
| 2) | ¥, | भगवा स्मनो | २७ |
| " | Ę | भगवारेवतो | n |
| ,,, | و | भगवा सोभितो | ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, |
| 11 | Ψ. | भगवा अनोमदस्सी | २⊏ |
| 11 | 3 | भगवा पदमो | ,, |
| ,, | १० | भगवा नारदो | 39 |
| ,, | 8.8 | भगवा पदुमुत्तरो | 1) |
| | १ २ | भगवा सुमेघो | ,, |
| " | १३ | भगवा सुजातो | ĝο |
| ,, | १४ | भगवा पियदस्सी | ,, |
| | १५ | भगवा अत्थदस्मी | ,, |

| | | <u>-</u> | |
|----------------|-------------|------------------------------|----------|
| श क्षको | धनुष्ठको | विसयो | विट्ठकरो |
| 3 | १६ | भगवा धस्मदस्सी | ₹ |
| ,, | १७ | भगवा सिद्धत्थो | |
| n | १= | भगवा तिस्सो | ,, |
| " | 3.8 | भगवा फ्रस्सो | ३२ |
| " | t o | भगवा विपस्मी | , |
| 11 | २१ | भगवासिर्वा | 12 |
| n | २२ | भगवा वेस्सभू | 3 3 |
| ,, | २३ | भगवाकक्सन्धो | ** |
| ,, | २४ | भगवा कोणागमग्गो | ,, |
| | २४ | भगवा कस्सपो | ,, |
| ,, | २६ | सब्बे बुद्धा | ३ ४ |
| ,, | २७ | वोधिनतान आनिममा | ,, |
| n | २६ | पार्शमयो पूरेसि | ₹₩ |
| n | n | १ दानपारभी | n |
| " | n | २ सीलपारमी | p+ |
| n | n | ३. <i>नेक्</i> थम्मपारमी | " |
| n | n | ४ पञ्जापारमी | ३६ |
| n | ,, | ५ विरियपारमी | 11 |
| 27 | " | ६ स्वन्तिपारमी | ** |
| n | n | ७ स च्च पारमी | - 4 |
| n | ** | ≖ अधिहानपारमी | |
| 17 | n | ६ मेत्तापारमी | ** |
| ν | 11 | १० उपेक्सामारमी | 3 9 |
| ¥ | 38 | श्रविदूरे निवान | ,,, |
| n | n | तीरिंग कोलाहलानि | , |
| n | n | १ कप्पकोलाहल | 41 |
| n | n | २ व्यकोलाहल | ** |
| 11 | n | ३ चक्कवितिकोलाहल | *1 |
| n | 30 | देवनायाचन | ş∈ |
| 11 | ₹ १ | पञ्चमहाविलोकन विलोकेसि | |
| | " | १ কুলা - | ,,, |
| n | | २ दीप | n |
| 11 | | ३ देशा | 22 |
| 11 | ** | ∢ कुल | 3 € |
| ×1 | n | ५. जनेसिआयु | 19 |
| n | 30 | पटिसन्धि गण्हि | n |
| 27 | 33 | महामायादेवी गुपित अहस | n |
| " | ± 8. | बाह्मगा आहम् | 80 |
| n | 3 .4 | इतिसपुञ्जनिमित्तानि पातुरहमु | n |
| 17 | ३६ | वोधिसत्तमातुधम्मता | n |
| | | | |

बूचिवलं ह

| व्यक्तनो | ग्रनुग्रङको | विसयो | विद्वसको |
|----------|-------------|--|----------|
| X | ₹.9 | लुम्बिनी व ने | ٧o |
| ٠, | 3 = | तापसो कालदेवलो | 85 |
| ,, | 3.5 | लक्खरापटिग्गाहका अट्ट ब्राह्मशा | 8.8 |
| ,, | 80 | पचविभाषा थेरा | 11 |
| 11 | ४१ | चत्तारि पृथ्वनिमित्तानि | 66 |
| ,, | 40 | रञ्जा वण्पमद्यल अहोसि | |
| 11 | 64 | ञातकान सिप्पं दम्सेसि | 84 |
| - 11 | 66 | चत्तारि पुरवनिमित्तानि | |
| | ,, | १ जराजिषम् | |
| | | २ व्याधिन | |
| | 21 | ३ कालकल | 6 % |
| | 11 | ४ पथ्यजित | |
| | 6 Y. | बोधिससम्भ पश्चिमो अनदकारो | |
| ,, | 68 | राहली जातो | ,, |
| | 43 | किसागोर्तामया उदान | |
| | 65 | नाटकित्थियो | 63 |
| | 33 | महाभिनिक्खमन | |
| ,, | y o | वोधिसमो पब्बजि | €6 |
| | 9.9 | वोशिसनो राजगह पाविस | Хo |
| | y . | आलार चकानाम उट्क चरामपूर | , |
| | УB | दुक्करिकारिया | ., |
| ,, | y 6 | सुजाताय पायासदान | x e |
| | ųУ | वाधिमत्तस्य पानि पटिसोत गच्छनि | y P |
| | X 5 | योधिमण्ड आकृहि | |
| <i>n</i> | ¥.5 | मारपराजयो | ХЗ |
| ,, | V = | सम्बोधिया पनि | ¥ξ |
| y u | | सम्तिके निदानं | у э |
| | νŧ | जयपञ्यदको वरपञ्यको | |
| " | 80 | अनिमिसचेनिय | " |
| *** | 5.8 | रतनचङ्कमचेतिय | , |
| " | 52 | रतसघर | |
| | 6.9 | येन अजपालनिग्रोधोः | ,, |
| ,, | 26 | मुर्चालन्द, राजायतन | V.= |
| n | ξ¥ | नपस्मभन्निका | x.e |
| " | 55 | ब्रह्मा धम्मदेसन आयाचि | |
| " | દુદ | ज्ञासा धम्मदेसन आयाचि | n |
| n | ę. | अक्षा यस्मदस्य आयात्र धम्मचककप्यवस्त | " |
| " | ξ⊕ ξ= | वस्य भिक्सवे चारिकन्ति | Ę o |
| " | | भगवा राजगहे | |
| 19 | ૬ દ | मगवा राजगह सारिपुक्तो च मोम्मल्लानो च | ૬૨ |
| ** | 90 | साम्पुरा। च मानविलाना च | ٠, |

१० जातकत्ठकथा

| गडको | ग्रम्शङ्को | विसयो | विट्ट इस्को |
|------|------------|-------------------------------|-------------|
| × | ভৃ | भगवा कपिलवत्थु अगमासि | દર |
| | હર | कपिलवत्यस्मि पाटिहारिय अकासि | દ્ર |
| ,, | ৬३ | कपिलवत्यु पिण्डाय पाविसि | ६८ |
| | 94 | राहुलमानुया सिरिगब्भ अगमासि | ξ¥ |
| | '9 X | नन्द पब्बाजेसि | ** |
| ,, | ું દ | राहुल पञ्चाजेसि | |
| 11 | وي | अनोधपिण्डिको जेतवनाराम कारेसि | ६६ |

निदानकथा निद्विता

१. एककनिपातो

१. पठमो पण्णासको

ែ ១០០៣១,ចរព១០៣ភា

| घ डको | विसयो | पिट्ठइको |
|--------------|--------------------------|---------------------------------------|
| 8 | अपण्याकजातक | ्रें इ |
| 7 | वणग्पथजातक | eУ |
| 3 | सरिवारिएजञातक | 95 |
| 8 | चुल्लसेट्विजातक | 5.0 |
| × | नण्डुलनालिजातक | = 5 |
| Ę. | देवधम्मजातक | 55 |
| ত | कट्टहारिजा तक | ; 3 |
| 5 | गामनिजातक | € 9 |
| 3 | मखादेवजातक | 3.3 |
| 8.0 | स्वविद्यारिजातक | 6 = |
| | २ सीलवग्गवण्या | |
| ę | लक्ष्यग्रामिगजात्रकः | 900 |
| २ | निग्रोधीमगजानक | 800 |
| 3 | कण्डिनजातक | 205 |
| 6 | वातसिगजानक | 180 |
| × | सरादियजातकं | ११२ |
| Ę | निपत्लत्थमिगजातकः | ११३ |
| ঙ | मालुतजातक | 888 |
| E. | मतकभ नजातक | ११७ |
| 3 | आयाचितभत्तजातकः | * * * * * * * * * * * * * * * * * * * |
| 90 | नलपानजातकं | १२० |

सूबिपसं १?

| | ३. कुरुड्गव्यव्यवणना | |
|----------|----------------------|--------------|
| पडको | विसयो | पिट्ठ इस्को |
| 8 | कुरुङ्गमिगजातक | 199 |
| ę | कुक्कुरजातक | 858 |
| 3 | भोजाजानीयजातकं | १ २७ |
| 8 | आजञ्जाजातक | 378 |
| X. | तित्थजानक | १३० |
| ٩ | महिलामुख जातक | १३३ |
| ড | अभिष्हजातक | 2 # X |
| 5 | नस्दिविसालजातक | ए हे 9 |
| 3 | कण्हजानक | 3 5 9 |
| 80 | मुनिक। तक | 8.8.8 |
| | ४ कुलावकवगायण्याना | |
| ę | कुलावक जातक | १४२ |
| • | नच्च जातक. - | १४७ |
| ş | सम्मोदमानजातक | १४= |
| 6 | मच्छजातक | १५० |
| V, | वट्टकजानक | 8 % 8 |
| Ę | सबुगाजातक | १४३ |
| ٥ | तिसिरजानक | १ ५५ |
| ς. | त्रकजानक | १४८ |
| 3 | नन्दजानक | १६१ |
| 80 | वदिरद्यगरजातक | १६३ |
| | ४ ऋत्थकामयमायण्याना | |
| ۶ | लीसकजातक. | १६८ |
| ÷. | कपोतजातक | £७३ |
| 3 | वेलुकजानक | १७५ |
| K | मकसजातक | १७६ |
| × | रोहिगोजातक | ووع |
| E | आरामदूसकजातक | १७८ |
| ق | वामशिगजानक | १८० |
| Ε. | वेदव्भजानक | १८१ |
| £ | नक्ष नजातक | १८४ |
| 80 | दुस्मेधजातक | १ = ६ |
| | २. मज्भिमो परणासको | |
| | ६ श्रासिसवभगवण्यना | |
| 8 | महासीलवजातक | १८८ |
| २ | च्लजनकजातक | १ ६२ |
| ą | पुणगुपानिजातक | ₹3 } |

१२ जासकट्टकवा

| ग्रहको | विसयो | पिट्ठझको |
|----------|---------------------------|-------------|
| R | फलजातक | १६५ |
| × | पञ्चावुधजातक | ७३१ |
| ٤ | कञ्चनक्यन्धजातक | 339 |
| ٠ | वानिग्दजातक | २०१ |
| 5 | तयोधम्मजातक | २०३ |
| ê | भेरिवादजानक | २०४ |
| १० | मद्रखधमनजातक | २०६ |
| | ७ इत्थीयग्गवण्यामा | |
| 8 | असातमन्त्र जातक | ২০৩ |
| 2 | अण्डभ्तजातक | २१० |
| 3 | नक्क जानक | २१४ |
| 6 | दुराजान जानक | 283 |
| × | अनभिरति जातक - | २१६ |
| ç | म्दुलक्षगाजातक | २२० |
| 3 | उच्छ हु जातक | 223 |
| 5 | माकेन जानक | হ হ্ |
| 3 | विसवन्तजातक | ၁၁६ |
| 90 | कुट्टालजानक | ودب |
| | ८ वरणवभावण्णना | |
| १ | वरगाजातक | 230 |
| ÷ | सीलवनागजातक | २३२ |
| ₹ | सच्चिकिरजातक | 236 |
| 6 | रुक्षधम्मजातक | 2 \$ 3 |
| × | मच्छजातक | 295 |
| E | असद्भियजानक | 260 |
| 3 | महासॄपिनजातक | २ ४० |
| 5 | इल्लीसजातक | 38€ |
| 3 | खरस्यरजातक | ≎४४ |
| 9,0 | भीमसेनजातक | ३५६ |
| | ९ अपायिम्ह्यग्गचण्णना | |
| ? | सरापानजातक | 34€ |
| υ | मिनविन्दजानक - | 568 |
| ą | कालकाभिगजानक | ২ ६২ |
| 8 | अत्थस्मद्वार जा लक | २६४ |
| × | किम्पक्कजातकः - | २६६ |
| ε | सीलवीमसनजातक | २६७ |
| '9 | मद्रगलजानक | २६६ |
| = | सारमभजातक | २७१ |
| 3 | कुहकजातक | २७२ |
| 80 | अकतञ्ञाुजातक | २७४ |

सूचिपसं १३

| | १० लित्तवग्ग व ण्लना | |
|------|--|----------|
| पडको | विसयो | पिट्ठइको |
| 8 | नि नजा नकं | २७६ |
| २ | महासारजातक | 5.9.3 |
| ₹ | विस्सासभोजनजातक | २ द २ |
| 6 | नोमहसजातक | २ ⊏ ३ |
| ¥ | महासुदस्मनजातको | ≎∈¥ |
| Ę | तेलपत्तजातकः | হ্ল ভ |
| હ | नामसिद्धिजातक | ၁၉၁ |
| 4 | कूटवारिगजजानक | \$ 3 \$ |
| 3 | परो सहस्मजानक | : १६ |
| १० | असातम । जातक | ≎ € ′9 |
| | ३. उपरिमो परणासको | |
| | ११ परोसतवभावण्याना | |
| 8 | परोसतजातकः | 339 |
| २ | पष्मिगकजातक | 300 |
| Ę | वे रिजानक | ३०१ |
| 8 | मिनविन्दजातक | 500 |
| x | दुव्यलकटुजानक | \$ o \$ |
| Ę | उदञ्चिमित्रात्रकः | 306 |
| 9 | सानिचजानक | ३०४ |
| ς. | गहियजानक | 50.0 |
| 3 | कुण्डकप् बजानक | ३०६ |
| १० | सस्त्रसहारकप≕हो निट्टितो | ३१० |
| | १२ हंसीवयावण्णना | |
| 8 | गद्रभपञ्हो निद्धितो | 380 |
| २ | अमरादेवीपञ्हो निहितो | ३१० |
| ŧ | सिगालजातक - | 3 8 8 |
| 3. | मिनचिन्नी जानक | ३१३ |
| X. | अनुसर्गिकजातक | ३१४ |
| * | दुव्यचजातक | ક શ્રૃષ્ |
| ড | तिनिरजातक | ३१६ |
| τ, | बट्टनजानकं | € १ ७ |
| 3 | अकालरावीजातक | 3 9 € |
| 80 | वन्धनमोक्षाजानक | 250 |
| | १३ _् कुसन(लि ष ग्गवण्रना | |
| 8 | कुम्नालि जातक | ३२३ |
| ₹ | दुम्मेधजातक | ३२४ |
| 3 | नडगलीसजानक | ३२,७ |

48

| ब्रह्म | बिसयो | पिट्ठद्धको |
|--------|-------------------------|-------------|
| ¥ | अम्बजातक | 3₹€ |
| , A | कटाहजानक | ३३० |
| Ę | अमिलकवगाजातक | ३३२ |
| · · | कलण्डुकजातक | <i>まま</i> え |
| ς. | विलारयनजानक | χşε |
| 3 | अस्मिकजानक | 335 |
| 80 | कोमियजानक | रुह इ |
| | १४ श्रसम्पदानवग्गवण्णना | |
| ۶ | असम्बदान जानकं | ३३९ |
| ÷. | पञ्चभीरुकजातक | ₹ 6 8 |
| 3 | घतासनजातक | 3 43 |
| 6 | भानसोधनजातक | 366 |
| y | चन्दाभगातक | ३४४ |
| Ę | म् वष्णाहमजानक | ३४६ |
| 9 | बब्बुजातक | 3 / 4 |
| = | गोधजानक | 5 X o |
| ĉ | उभनोभद्रजानक | ३४१ |
| ę o | कान जानक | 372 |
| | १४ ककण्टकवश्गवण्याना | |
| 8 | गोधजातक | ેપ્∕ |
| ō. | सिगालजातक | \$ y y |
| 3 | विरोचनजातक | ₹9 € |
| 6 | नदगुटुजातक | ЗУ,⊏ |
| X | राधजातक | 3 ¼ € |
| ę | काकजानक | ३५० |
| 9 | पुष्फरनजातक | 362 |
| 4 | सिगाल जातकं | 3 € 6 |
| 3 | एकपण्याजातक | ३६६ |
| 90 | सङ्जीवजानक | 3 € € |

एककनिपातवण्यना निद्विता

जातकद्वकथा

The state of the s

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बद्धस्स

जातकट्टकथा

१. पणामगाथा *

जातकोटसहस्सेहि पमाणरहिलं हित ।
लोकरस लोकनाथेन कतं येन महेसिना ।।
तस्स पादे नमस्सित्वा कत्त्वा धन्मम् चन्न्राल ।
सपञ्च पतिमानेत्वा सन्वयममानमाजन ।।
नमसनादित्वो अन्य पुञ्जस्स रतन्तय्ये प्रवत्तसानुमावेन भेत्या सब्वे उपहवे ।।

 स्या०-वन्दित्वा सिरसा सेट्ठं बुद्धमप्पिटपुग्गलं। तिष्णसंसारसागरं ॥ **जेय्यसागरम्** सिण्ण तथेव परमं सन्तं गम्भीरं दुद्दसं अणुं। भवाभवकरं बुद्धं अम्मं सद्धम्मपूजितं।। तयेव पन संघञ्च असंगं संघमुत्तम । उत्तम दक्षिणेय्यानं सन्तिन्द्रियमनासयं ॥ कतन तस्स एतस्स पणामेन विसेसतो । धीरातिधीरधीरेहि आगमञ्जूहि विञ्जुहि।। अपदानट्ठकयं भन्ते कातब्बन्ति विसेसतो । पुनप्पुनादरेनेव याचितोहं यसस्सिभि ॥ तस्माह सापदानस्त अपदानस्म सेमतो । बीपिस्सं पिटकत्तये ।। यया पालिनयेनेब अत्यसंबन्धनं सुभं। केन कत्थ कदा चेतं भासितं धम्ममुत्तमं॥ किमत्यं भासितं चेतमेतं वत्वा विधि गतो । निदानकोसल्लत्थञ्च सुउग्गहणधारणा ।। तस्मातन्तं विधि पत्वा पुरुवापरविसेसतं। पुराणसीहलभासाय पोराणटठकथाय च ॥ ठियतंतंन साथेति साधूनं इच्छितिच्छितं। तस्मा तमुपनिस्साय पोराणद्ठकयानयं।। विवज्जेत्वा विरुद्धत्ये विसेत्थम्पकासयं। विसेसवण्यनं सेट्ठं करिस्सामत्थवण्यनन्ति ॥

केन कत्य कवा खेतं भासितं घम्ममुसमिति च करिस्सामत्यवण्णनन्ति च पटिन्नातत्ता ।

तं तंकारणमागम्म देसितानि जतीमता । परा जातकानि महेसिना।। अपण्णकादीनि यानि येसूचिरं मत्या लोकनित्थरणित्यको । परिपाचेसि नायको ॥ अनन्ते बोधिसम्भारे नानि सब्बानि एकज्झं आरोपेस्तेहि सगहं। संगीतं धम्मसंगाहकेहि य ।। जातकं नाम बद्धवसस्स एतस्स इच्छन्नेन चिरटिंहित । याचितो अभिगन्त्वान धरेन अत्थदस्सिना।। असमटठविद्वारेन सद्धिविद्यारिना । तथेव बुद्धमित्तेन सन्तचित्तेन विञ्जना ॥ महिसासकवसम्हि सम्भृतेन नयञ्जना । बद्धदेवेन च तथा भिक्लुना सुद्धबद्धिना।। महापुरिसचरियान आनभाव अचिन्तियं । विज्जोनयन्तम्स जातकस्सत्यवण्णन ॥ महाविहारवासीन वाचनामग्गनिस्सित । भासिस्स भासतो तम्मे साधु गण्हन्तु साधवीति ॥ [1]

२. तीणि निदानानि

सा पनाय जातकरस[े] अत्यवण्यना दूरेनिदान अविद्^रनिदान सन्तिकेनिदानिन दमानि तीणि निदानानि दस्मेरवा बण्णियमाना थे न सुणीन तेहि सभुरागमतो ^८ पट्ठाय विञ्जानत्ता यस्मा सुट्ठु विञ्जाना नाम होनि तस्मा त तीणि निदानानि दस्सेरवा बण्णियस्माम ।

- नत्य आदितो ताव तेस निदानान परिच्छयो वैदितस्त्री—(१) दीपकरपादभूर्कीम्म हि कर्ताभिनी-हारस्स महामनस्स याव बेम्मन्तरसभावा चिवरवा तुसितपुरं निम्बत्ति ताव पवत्तो करामस्यो दूर्रनिदान नाम, (२) तृसितभवनतो पन चिवरवा याव बोधिमण्डे सब्बज्ज्ञतप्पत्ति ताव पवत्तो कर्यामस्यो आंवदूर्रनिदान नाम,
- (३) सन्तिकेनिदान पन नेस् नेस् ठानेस् बिहरतो तस्मि तस्मि येव ठाने लब्भतीति ।तिश्वदं दरेनिदान नाम —

३. दूरेनिदानं

^{\$} ?. सुमेधकथा

रतो किर रूपसन्महत्याधिकान चतुन्न असमेत्यान मत्यके अमरवती नाम नवर अहोति। तत्य मुमेशो नाम बाहणो परिवर्तति , अनती मुनेताने मानिनो च पितितो च, महुद्धाहरिको याव सत्माकुर्ल्यात्वर्द्दाः अस्तिमाने अपन्ति । तत्य स्त्रमाकुर्ल्यात्वर्द्दाः अस्तिमाने अपन्ति । तत्य स्त्रमाकुर्ल्यात्वर्दाः अस्तिमाने । सो अञ्जे काम अक्तवा बाह्याधित्याचे उत्मान्ति । तत्वर्वे को समाची प्राचित्र के नाहस्य । अस्तर राति । देखको अपन्ते आहरित्व मुक्कार्व्यक्षाने अपन्ते । त्याचित्र के नाहस्य । अस्तर राति । देखको अपन्ते आहरित्व मुक्कार्व्यक्षाने । स्त्रमाने स्त्रमाने स्त्रमाने । त्याचित्रमाने प्रत्यक्षाने स्त्रमाने आहरित्व मुक्कार्व्यक्षाने । स्त्रमाने स्त्रमाने स्त्रमाने । स्त्रमाने स्त्रमाने स्त्रमाने स्त्रमाने स्त्रमाने स्त्रमाने । स्त्रमाने स्त्रमाने

१ स्वा०-अपवानस्त । २ स्वा०-समुपागमनतो । ३ रो०-पटिजागाहि ।

दूरेनिदानं ३

चरापेत्वा महाजनस्क बान बरवा तापसपन्वज्जं पत्नाजि । इमस्स पनस्वस्त आवीभावत्य इमस्सि ठाने सुमेवकवा कथेतव्या । सा पनेसा किञ्चापि बुढवसे निरस्तरं आगता येव, गाथावन्त्रनेन न आगतत्ता न सुद्दु पाकटा तस्मा त अन्तरन्तरा गायावन्यदीपकेहि वचनेहि सिद्धि कथेस्साम ।

अमरक्ती नगरं

कप्पसतसहस्साधिकान हि चतुन्न असंखेट्यान मत्थके दसहि सद्देहि अविविक्तं अमरवर्तीति च अमरन्ति च लढनाम नगर अहोसि य मन्धाय बुढवसे बुत्त :---[2]

> "कप्पेच सतसहस्सेच चतुरोच असिलये। अमर नाम नगर दस्सनेय्य मनोरमं।

दमहि सद्देहि अविवित्त अन्नपानसमायुत"।। न्ति ।

तत्य "दसिह सहेहि अविविष" नित हिथिसहेन अस्साहेन रथसहेन भेरिसहेन मृतिगसहेन बीणासहन गीनमहेन ' सबसहेन तालसहेन 'अस्नाच पि" : खादथा' ति दसमेन सहेनाति, इमेहि दसिह सहेहि अविवित्त अहोसि । नेमं पन सहानं एकदेसमेव गहेरवा :---[२]

> "हिल्यसहं अस्ससहं भेरिसंखरथानि च। खादय पित्रया चेत अन्नपानेन घोमिन"।। न्नि।

बुद्धवसे इसं गाथ र वस्वा .---

"नगर सब्बंगसम्पन्न सब्बकाममुगागत । सत्तरतनसम्पन्न नानाजनसमाकुष्टं॥ समिद्ध देवनगश्च आवास पुञ्जकिम्मन । नगरं अमग्वनिया सुमेषो नाम शह्मणो॥ अनेककोटिनशिचणो पहृत्यनपञ्जवा। अन्नमावका मन्त्रपरी निक्च वेदानपारमु॥ ज्वन्नवर्ण इतिहास स्वयमं पार्याम मनी निक्न ।

सुमेषपंडितस्स विन्तनं

अवेकदियम भी मुमेषपण्डितो उपरिपासादवरते रहोगनो हत्वा परू क्के आर्मुजरवा निर्मिश्रो चिन्तीम:—पुरानावे पण्डित । पोटिसचिमालय नाम दुस्क तथा निक्सतिन्वमत्दराते सरीरपोदा, अह व जाति-धम्मो जरापम्मा अधिषमम्मो मरण्यम्मो । एवंसूतेन मया अज्ञाति अवर अव्यापि अवुस्वमनुष् भौत्वश्रमान्य हातिब्बाण परियोमतु बर्दाना अवसम् अवतो मुण्डित्या निक्याणामिना एकेन मस्मेन प्रीतनश्रमा ।तेन तुन —

"न्होत्तनो निर्मादित्वा एवं चित्तेमह तदा ।
दुक्को पुरुकश्वो नाम सरीरस्स च भेदन ॥
आतिवस्मो जगध्यम्मो व्याधिक्यमो वह तदा ।
अत्रतं अत्रनं स्त्रमं चरित्रविस्त्वामि निरुद्धात ॥
सन्निम प्रतिकाय नानाकुणपद्गति ।
छुट्डीसत्वान गच्छेद्य अनमेको अनर्तिवस्ते ॥ [3]
अत्रिव्हेहित यो भम्मो न सो सक्का न हेतुये ।
परियोवस्सामि नं सम्मो मको परिमृत्तिया" ति ॥

१ रो०-सम्मसद्देन । २ रो०-बुलनाय । ३ रो०-सब्बकम्म । ४ रो०-सो ।

ततो उत्तरिम्प एव चिन्तीसः— यथा हि होके दुश्वस्स परिवश्वभूत मुखं नाम अस्थि, एव भव सति तप्यटियक्केन विभवेगापि भवित्रकां । यथा च उण्हे सति तस्स बुपसम्भूतं सौराम्पि अस्थि, एवं रागादीतं अगीन वृषसमत निव्वाचेनापि भवितव्य । यथा च पापकस्स लामकस्स ममस्स परियक्कभूतो कत्याचो अनवज्य-सम्मीपि अस्थिये, एवमेब पापिकाय जानिया सनि सक्वजानिक्खेपनतो अजातिसंगतन निव्वाचेनापि भवित-क्यमेशाति । तेन वृत्तः—[३]

"यथापि दुससे विज्ञनते मुखं नामपि विज्ञानि । एव ससे विज्ञानि विभसोपि इण्डितस्काने ।। यथापि उपहे विज्ञाने अगर विज्ञाति सीतलः । एव तिविश्वमा विज्ञाने निज्ञाण इण्डितस्कान ।। यथापि पापे विज्ञाने करणाणमिणि विज्ञाति ।।

भगरान्य चिन्तीस — यथा नाम गुथरासिम्हि निमुगीन पुरिसेन हुरतीय पञ्चवणणपुमसञ्ख्य महातळा दित्या कराने तुश्रो मणेन एव गानकांन्य त तळाक गरीसेन् युन् । य तस्स अपवेधन न तो तळाकस्स दोसो । गव किलेमक्योवनअसन्तमसहित्याणतळाके विज्ञाने तस्य अपवेधन न त्यो तळाकस्स दोसो । तथा च चोरेहि सापनिवांनिनो पुन्सो एळाजामणी विज्ञानांनीय सचे न पञ्चाति न सो मगस्स दोसो । प्राच चोरेहि सापनिवांनिनो पुन्सो एळाजामणी विज्ञानांनीय सचे न पञ्चाति न सो मगस्स दोसो पुन्सिस्मेव दोसो, एवमेव किल्सेहि परिवारिया गहितस्स पुर्णिसस्य विज्ञानांने यस्त क्याधिगीळितो पुरिसो विज्ञानांने विज्ञानांने समस्स अपवेधन न ममस्स दोसो पुन्सिस्मेव दोसो । व्याधिगीळितो पुरिसो विज्ञानांने व्याधिगीक्ति क्याधिनीक एके वेज्य सचे त देवन गवेसित्व व्याधिनीक एके वेज्य सचे त देवन गवेसित्व व्याधिनीक एके वेज्य सचे त देवन गवेसित्व व्याधिनीक एके विज्ञानिक प्राचीनिक प्रचीनिक प्राचीनिक प्राचीनिक प्राचीनिक प्रचीनिक प्रचीन

यवा गूबगती पुस्सि तळाक दिस्वान पूरित ।
न गर्वसित त तळाक न दांसी तळाकस्य सी ॥
एवं किलेसमण्याेव विज्ञन्ते अभतत्तळे ।
न गर्वसित तं तळाकं न दांसी अभतत्तळे ॥ [ग्रे]
यथा अरोहि परिन्छो विज्ञन्ते गमने पथे ।
न पत्यांवित मी पुस्सिन दोसी अञ्जसस्य सी ॥
एव किलेसपरिन्छो विज्ञमाने सिवे पथे ।
न गर्वसित न समा न दोसी सिवमञ्जमे ॥
वर्गास व्याधितो पुस्मि विज्ञमाने तिकिच्छके ॥
न विक्तिस्थापित व्याधित सो होनी निक्तिस्थके ॥
न वर्षसित न समा न दोसी सिवमञ्जमे ॥
वर्षासि व्याधितो पुस्मि विज्ञमाने तिकिच्छके ॥
न वर्षमित वर्षाधित प्रसिक्ती परिप्रिजीतो ।
न मर्वमित न आवर्षिण्य सो होनी विनायके ति ॥

अपर्गम्य विन्तेति.—यवा मध्यनजातिको पुरिसो कच्छे [्रोआसत्तं कृषप छड्डेरवा सुख गच्छित, एव मयापि एस प्रितिकाय छड्डेरवा अनरोबेन निव्वाणनगर पविसितस्य। यथा च नरनारियो उनकारभ्मिय र उच्चार-पस्सावं करवा न त उच्छोन वा आदाय सम्तने वा बेटेखा गच्छित्त जिगुच्छमाना पन अनरेखाव छड्डेरवा गच्छित्त, एव मयापि इस प्रतिकाय अनरेखेन छड्डेरवा अमत दिव्याणनगर पित्रसित् बट्टित। यथा च नाविका नाम जञ्डर नाव अनरेखा छट्डेरवा गच्छित्ति, एव अहाँग्य इस नवहि वममुखेहि एषसरन्त कार्य छट्डेरवा अनरेखो निव्याणनगर पविनित्सामि । यथा च पुरिमो नानारनानि आदाय चोरीह सिंह सम्म पच्छन्तो अनरो

१ रो०-अजातिम्पि इष्डिलब्बकं । २ स्या०-उक्करभूमियं ।

दूरेनिवानं ५

रतननासभयेन ते छड्डेला श्रेम मणा गण्हाति, एवं अयम्पि करअकायो रतनविलोपकवोरसदिसो सवाह एस्य तण्डं करिस्सामि अरियमगण्कुसलयम्मरतनं में निस्सस्तित तस्मा मया इम वोरसदिस कायं छड्डेला निम्बाण-नगर पविकित् वटटनी ति । तेन वृतः—

> यथापि कुणप पुरिसो कण्ठे बद्धं जिस्ब्छिय । मोचियत्यान गच्छेय्य सुखी सेरी सर्व वसी ।। प्रतिकायं नानाकुणपसञ्चयं । छडडियत्वान गच्छेय्य अन्यस्तो अनित्थिको ॥ उच्चारठानम्हि करीसं नरनारियो । छडडियत्वान गच्छन्ति अनपेखा अनस्थिका। **एवमे वाहमिम** काय नानाकुणपपूरित । छड्डियत्वान क्विन्छस्स बच्च कत्वा यथा कृटि ॥ यथापि जज्जर नाव पल्ला उदगाहिनि । सामी छड्डेत्वा गच्छन्ति अनपेखा अनत्थिका॥ [5] काय नवच्छिद् धुवस्सव । छडडियित्वान गण्डिस्स जिण्णेनावं व सामिका ॥ यथापि पुरिसो चोरेहि गच्छन्तो भण्डमादिय । भण्डच्छेदभय दिस्वा छडडयित्वान गच्छति॥ एवमेव अय कायो महाचोरसमो विय । पहायिम गमिस्सामि कुसलच्छेदना भया' ति ॥

सुमेधपण्डितस्स पब्बन्जा

एव मुमेषपण्डिनो नानाविधाहि उपमाहि इम नेक्सम्पुपतिहतं अस्य चिन्तेत्वा, सकनिवेसन अपरिमित भोगक्क्स हेट्रास्तुनतर्यन कपण्डिकादीन विस्ताजरेता, महादान दन्ता, [५] बस्कुनाये च किलेखकासे व पहाय, असरनाराती निक्क्सीस्ता, एककोव हिमवन्ते धम्मक नाम पत्रवान दन्ता, [५] बस्कुनाये च किलेखकासे व पहाय, असरनाराती निक्क्सीस्ता, एककोव हिमवन्ते धम्मक नाम पत्रवान निक्सा असरम करत्य, पण्यासात्र च कंसम च माप्तेता, पण्यक्ति नीत्रवाने विविच्ता विकार प्रतिकृति कार्यक्रित निविच्ता निविच्ता निविच्ता निविच्ता हार्यक्षण गर्मेष्ट समुप्तेत अभिज्ञासंस्तात वरू आहर्रितु तिस्त्र असमप्रदे नवदोससम्प्राणन सारक पत्रविद्वा, इार्यक्षण भागत्रात्त वाकचीर निवासेत्वा इसिपबज्ज पत्रवान । एव पत्रविद्वातो अट्ट्योससमाधिक्या न पण्यासाल पहाय, समझायत क्ष्मकृत्व उपगन्त्वा, सम्ब धञ्जविकृति पहाय, पत्रवाज्ञक्रभोत्रनी हृत्या निस्त्रव्युट्यानंक्सम्बसेनेव व्यानां पहल्तो सत्ताहरूभन्तरे येव अट्ठ्य समापत्तीन पञ्चल व अभिज्ञात लाभी अहोसि । एव त यवापत्यित अभिज्ञात्व पाणि । तेन वस —

"एबाह चिन्तयित्वान नेककोटिसत धन । हिमबन्तमपागमि ।। नाथानाथान दत्वान हिमवन्तस्स अविदूरं धम्मको नाम पब्बतो । अस्समो सुकतो मय्ह पण्णसाला सुमापिता ।। चंकमन तत्थ मापेसि पञ्चदोसविवज्जित । अट्टगुणसमूपेत अभिञ्जाबलमाहरि ॥ पजिह तत्य नवदोसमपागत । निवासेसि द्वादसगुणमुपागतं ॥ पज्ञहि पण्णसालकं। उपागमि रुक्खम्लं गुण दसहुपागत ।।

बापितं रोपित धम्भं पर्जीहं निरबसेसतो । अनेकगुणसम्पन्न पवत्तफलमादियि ॥ [७] तत्व पथान पर्दीहं निसज्जट्ठानचंकमे । अक्मन्सर्राम्ह सत्ताह अभिन्ञाबलपापृणि''न्ति ॥

इमाय पन पालिया मुमेथपिण्डतेन अस्मयपण्णसाल्यकमा सहत्था मापिता विय बृत्ता । अस पनस्य अत्यो । महामत हिम्मन अफाशहेत्वा अत्रव सम्मकप्रव्यत पविसिस्तामीति निक्कत दिखा सक्को देवानीमच्छे विस्तक्तमे 'देवपुत आमन्तरत गर्च्यता नात । अयं मुमेथपिष्टता विव्यविस्तामीति निक्कत तिक्कतो, एतस्त वसनटटान मापेहीति । मो तस्य वयन मर्पाटिष्टिया रमणीय सस्सम मुगुत्तं पण्णातः [६] यनोरस चक्रम च मापेसि । भगवा पन तदा अनतो पुट्टानुमोवेन निष्क्रतं तं अस्तमयद सम्माय सारिपुत्त । तस्य प्रमायस्य स्वतः —

"अस्समो सुकतो मय्हपण्णसालासुमापिता।

चकम तत्थ मापेसि पञ्चदोसविवज्ञित" ॥ न्ति आह ।

तत्व "मुक्तो मस्ह्"िन मुक्तो मसा—"पण्णसाला मुमापिता" ति पण्णच्छदससालापि मे सुमा-पिता अहोसि । "पञ्चदोम विविज्ञत" नि पञ्चिमे चक्तगदोमा नाम— (१) अह्यविसमता, (२) अन्तो व्हस्तना, (३) ग्रहणच्छत्रना, (३) अनिमन्वाधना, (५) अनिविसालनाति ।

अतिर्विसाले चक्रमे जकमन्तम्स चित्त विधावति, एकम्पत्त न लभती ति अतिरिवसालना पञ्चमो दोमा । पुषुलतो पन दियर्डरनत डीसु पम्पेमु रनतमत्त अनुचंकमण दीधनो महिरुहत्य सुदुनल समीवण्य-किण्णवाह्मक चंकमण बर्टात । चेनियगिरिन्हि दीपण्यसादकमहित्यत्थेरम्स चक्रमण तादिम अहोसि ।

तेताह "चंकन तत्य मापेम पञ्चवोमविविज्ञत" िन । "अट्टुगणसम्पेन" िन अट्टिह समणमुखेहि
उत्तेतं अट्टिमानि समण्मुमानि नाम (१) धनव ज्ञापिरमहाभावो, (२) अनवज्जिपदमानामान्ते ।
(३) तम्बुन्तिपण्यानामुज्जनमानो, (४) रट्ठ पीळेटचा धनसार वा मीसकहापणादीनि वा गण्डत्नेषु राजकुलेसु ट्टुणीळनांकण्यामानो, (५) उपकरणंसु निष्कृष्टरामानाते, (६) चौराविज्ञेष निम्मयमानो,
(७) राजगजमहामनिह अनमट्ठमानो, (८) चनुमु दिनामु अप्पटितनमानोति । इद [७] बुन होति—
वया नरिम अस्मन वनन्तेन सक्का होनि इमानि अट्ट समणमुखानि विन्दिष्ठ एव अट्ट गुणसमयत त अस्सम
मापेसिन।

"अभिज्ञा बलमाहरि" नि [७] पच्छा तरिम अस्ममे बसलो कसिणपरिकम्म करवा अभिज्ञान च समाराचीन च उप्पादनत्थाय अनिच्यतो दुक्कतो विरस्कतं आरमित्वा बामप्पत्त विरस्कतंबल आहरि । यथा तरिम वसलो त बल आहरितु सक्कोमि एव त असमम तस्स अभिज्ञात्वाय विपरसनावलस्स अनुच्छ-विक करवा गार्थाधीना अरथो ।

''बाटक जर्जीह तरण नवदोसमुपागत' 'नि एत्थाय आनुगुब्बकथा — तदा किर कुटिलेणककमादि पतिमध्यत पुष्पूरागरूपागरूबसस्थ्यक रत्यभीय मधुरस्थित्यत्व अपरावदाक्षमित्रस्य समुक्ता असस्य माधेरवा अवस्तर्वकमस्य उनोषु अनेतु जारुबनकरूक शिक्षाय निर्दोदनस्थाय नावस्थित्ये सम्बन्धिय सम्बन्धि मृगयरण्यस्यि माधेरवा अनोपण्यालाय जटामण् जवाकचीर निदण्डकुष्टिकादिके तापसपरिक्सारे मध्ये दूरेनिदानं ७

पानीयकुटपानीयमंक्यानीयसारावानि अभिमसालाय अंवारकपल्लदाहजादोनीति एव यं य पळ्जूजात उपका-राव सक्ताति त सक्यं मारंत्वा एण्यासालामितिस 'ये केलि पवक्रियुक्तामा इसे परिस्कारे सहेत्या प वजन्तु' ति अक्कारानि छिन्दिश्या देवलोकमेव पाते विस्सकसमे देवपूर्त मुमेषपण्डितो हिमवन्तपादे पित्कन्दरानुसारेन अन्तानी निम्नासानुष्यं फासुक्ट्राल ओलोकेन्तो नदीनिवतने विस्सकस्मानिम्मत सक्वरतिया रमणीय अस्सम् दिस्यः चंकसम्बक्तीट गन्त्वा पदबळ्ळ्यं अपस्मत्तो पुत्र पब्बिजता धुरगामे भिन्न परियंसित्वा किलन्तस्या आगन्त्वा पण्णासालं पर्विनित्वः निविक्ता भविस्सत्तीति चिन्तेत्वा थोक अगसेत्वा अतिविद्य चित्रास्ति कानि-समामीति पण्णासाल्कुटिडार विवर्तस्थाञ्चनो पविस्त्या इतीचित्रो व ओलोकेन्तो महानित्तय अक्बरानि नाचेत्वा मत्त्व कप्यियपन्तिकारा पर्ने इसे गहेत्वा पळ्ळीक्सामीति अन्तो निवस्त्यासलं साटकबूत पत्नहि ।

तेनाह "साटक पजीह तत्था" ति । एवं पविट्टो अह सारिपुन्त । तस्मं पण्णमालाम साटकं पजीह । "नव दोसमुपागन" न्ति साटक पजहन्तो नव दोस्ने दिस्वा पजीहिन्ति दीपेति ।

तापसपस्त्रज्ञं पश्चित्रनात हि साटकांग्म नव रोसा उपट्ठहित । (१) महत्यभावो एको दोमो (२) पत्पटिवङ्गाय उपप्रजनभावो एको (३) पत्पिमोगेन लड्ड किलिस्सनभावो एको (४) किलिट्ट च धोविनच्यो न राज्जित्वच न होति पिरमोगेन जीरणभावो एको । (०) जित्तमप्रसाद हि तुत्र वा अस्मलदान वा सान्त्रच होति पुन परियेसनाय दुर्शभसम्भवभावो एको (६) तापनप्रसञ्ज्ञाय असारुप्यमावो एको। (७) पच्चित्रकान साधारणभावो एको। यथा हि न चच्चित्रका न गव्हित तथा गोपन्त्रच होता। ८) पत्रिम्ञ्चनसम्बन्धमावो एको। (९) गहेत्वा बस्तस्स [८] क्रमभारमाञ्चिक्षमावो एको। (९) गहेत्वा बस्तस्स [८] क्रमभारमाञ्चिक्षमावो एकोत।

"वाकचीर निवासिस" निन तदाह सारियुत्त । इमे नव दोसे दिस्व साटक पहाय बाकचीर निवासीस । मुञ्जितिण [s] ही रहीर करवा गन्येत्वा कतवाकचीरनिवासनपारुपणत्याय आदियिनि अत्यो । "ढादसनृण-मुपायतिल ढादसिह आनिक्सेष्ट सम्प्रागन ।

वाक नीर्रास हि डारसारितसा-- (१) अप्यास मुन्दर, क्षिण्यांत्त अद ताव गुले आतिसंसो। (२) सह-त्वा कार्नु नक्कार्ति अय दुर्गियो। (२) परिभोग्ते सांतिक किरिस्सति। धोत्रानि एपट्ये निर्देशित अय तित्यो। (४) परिभोगेन त्रिक्यांगि सिब्बितबागार्थो चतुरुषो। (५) पुत परियस्तत्स्स मुकंत करणाशांवो पञ्चमो। (६) तापसप्रबन्जाय सारप्यमांचो छट्टो। (७) पच्चित्यकात निस्पर्भागभावो सत्तमो। (८) परि-मुज्जन्तम् विभानसङ्कारामांचो अट्टमो। (१) धारणस्ल्हुक्कारांचो नक्ष्मो। (१०) चीवरपञ्चय अपिष्ट-भावो दसमो। (११) वाकुप्पतिया धन्मकअनवज्जभावो एकादसमो। (१२) वाकचीर नर्टरीय अत्यवसमांवा इारसमोति।

वा "अट्टदीससमाधिकण पर्जाह पणसालक" नित कथ पर्जाह ? सो किर वरसाटकपुर्ग ओम्-ज्वन्तों ने साव अव्यादक लगान अनोज्ञपुरुदामसिस रस वाकचीर गहेरता. नित्रमोस्ता तस्मूपिर अपर मुख्यणवरण वाकचीर परिराहित्ता, प्रितामुक्त तस्मूपिर अपर मुख्यणवरण वाकचीर परिराहित्ता, प्रकामण्डल परिस्कृतित्वा निकास पर्वाद उत्तर उत्तर जटामण्डल परिस्कृतित्वा निकास प्रकाम करता, जटामण्डल परिस्कृतित्वा निकास मिल्रा प्रवाद परिस्कृति अपर पर्वाद वाकचीर वाचचीर वाकचीर वाचचीर वाचच

अह घर्डावामे आदीगवं दिस्वा अमितभोगं अनन्तं यस पहाय अरञ्जं पनिस्त्वा नेक्क्सम्भग्वेसको हृत्वा पम्बन्तिनो। इतोदानि पट्ठाय पमादवार चरितु न वट्टिन। पविवेक हि पहाय [९] विवरन्त मिक्कावित्तकः मिक्कात्रा तार्याना। इदानि मया विवेकमनुक्षेत्रं वट्टिन। अहं हि घरावास पिळ्बोवानो दिस्वा निवकत्तो। अयं स मनापा पण्यानावा बेळ्वपक्कवणा पिळावित्रा त्रा क्रितानित्ता । त्रा विवेक्तमनुक्षेत्रं व्याप्त प्राप्त विवेक्तमन्त्रा । अयं स मनापा पण्यानावा बेळ्वपक्कवणा पिळावित्रा । निवासभागुक वसन्तर्द्यानं । न एनो अतिरेक्तरा विय मे गेळ्वप्या पण्यावाच । इति पण्यासालाय दोसे विविन्तनो अट्ट दोसे परिस ।

परमालापिभोगित्म हि अट्ठ आदीनवा - (१) महासायरभेन ' दलसामारे समीपानेत्व करण-परिसंतमान्नी एको अधिनान्ना । (२) निषपणभात्तकासु पतिनासु [१) तासं वृत्युनं उपेतस्ताम निबद्धस्यमन् भानो दुतियो । (३) क्षेत्रास्त नाम सहल्कस्त पायुगति असेवाय बृद्धापिमागन्स चित्तकगता न होतीति उद्धापनियभानो तिर्यो । (४) सीतुम्हपटियातेन कायस्स सुख्मालकरणभानो चतुत्यो । (५) गेह् पविद्ठेन य किञ्च पाप सक्का कार्नृतिन गरहपटिच्छादनभानो पञ्चमी । (६) महर्तन्त परिपाहकरणभानो छट्ठो । (७) गेहस्स अत्यभानो नाम सदुतियकवानोित सनमी । (८) उक्तमक्ष हृणघरगोळिकादीन साधारणताय बहुताधारणभानो अट्ठमी हि ।

इमें अट्ठ आदीनवे दिस्वा महासत्तो पण्णसाल पबहि । तेनाह - "अट्ठदोससमाहिष्ण पर्जाह पण्णसालक" ता । "उपापीम इस्बन्ध हु गृत सहुपारत "ला छत्र पटिस्किपित्वा दसिंह गृत्योह उत्तर क्ष्ममूल उपा-तांस्मीत वर्दत । तिमे दस गृणा-(१) अपसमारम्भना एकं गृणो, (२) उपपाममसत्तमेव हि तत्य होतीति । अप्यवग्मतत दुर्तियो, (३) वह सम्मट्टाम्प असमम्पट्टाम्प परिभोग्फाकुक होति ये अनुट्ठप्रिनियमावो तित्तां, (४) गरह न पटिष्क्षादेति तत्व हि पाप करोत्तो लज्जतीति गरहायापटिष्ठक्षभावो चतुन्तो, (५) अम्भोकासवासा विय काय न सम्बम्भेनि कायस्य अमन्वरभनभावो पञ्चमो, (६) परिमाहकरणाभावो छट्ठो, (७) महालय-पटिस्क्षेपो सत्तमो, (८) बहुमाधाग्यगेहे विय पटिजगिगस्पापि न तिक्कमध्यति नोहत्यकाभावो अट्ठमो, (१) वस्तनम्स सप्पीतिकभावो नवमो, (१०) क्लम्पूलमेनासनस्य गरायनट्टाने मुण्भनाय अनपेक्षभावो दसमोति । इमें दसगुणे दिस्वा स्वस्तृत उपातीन्सीनि वर्दति ।

इमानि एनकानि कांग्णानि सल्लक्षंत्वा महासन्ते पुनिद्वते भिक्ताय पाविमि । अथस्म सम्पताम् सन्त्या महन्तन उस्ताहेन भिक्तं अवसु । सो भनिकच निद्दांत्वा अस्मम आगम्म निनीदित्वा चिन्तीस—'नाह आहार न लभामीनि पत्विजतो सिनिद्धाहारो नामेस मानमदपुन्तिसदे दृष्टेनि, आहारमूलकस्स च दुष्क्तस्स अन्तो नित्य । [१०] यसूनाह वापिनरोपिनधञ्जीनस्वतं आहार प्रजिक्ष्वा पत्तिक्तान्त्रोत्वा स्वाचिक्तं भन्तिस्त्रोते स्वाचिक्तं भन्तिस्त्रोते स्वाचिक्तं स्वचिक्तं स्वाचिक्तं स्वचिक्तं स्वाचिक्तं स्वचिक्तं स्वाचिक्तं स्वाचिक्तं

"वापित रोपिन धञ्ज पर्जीह निरवसेसतो । अनेकगुणसम्पन्न पवत्तफलमादियि ॥ तत्थप्पभान पर्दाह निसज्जट्ठानच द्वुमे । अञ्मन्तरम्हि सत्ताहे अभिज्ञाबलपापुणि"न्ति ॥

दीपङ्करभगवतो पादमूले बुद्धभावाय अभिनीहारो

एव अभिञ्जाबत पत्था सुमेपनापने समापनिनुष्येन बीतिनामन्ते दीप द्वारो नाम सत्या लोके उत्पादी। तस्य पित्राध्यातीत्वोधिपमम्बन्धप्यवननेमु सक्कापि दसप्रहम्मी लोकचातु सङ्क्रीम्न [10] सम्प्रकीप महावित्र वित्र वित

१ रो०-सम्भारेन।

"व में सिद्धिपत्तस्स वसीभृतस्स सासने । दीपङ्करो नाम जिनो उपज्जि लोकनायको ॥ उप्पज्जन्ते च जायन्ते बुज्ज्ञन्ते धम्मदेसने, । चतुरो निमित्ते नाद्दसि शानरतिसमप्पतो"ति ॥

तिस्म कालं दीपङ्करसम्बन्ध नृद्धि ल्लीणास्त्रसत्तसहसेहि परिकृतो अनुपुल्वेन नाग्क चरमानो सम्मक्त माम नगर पत्ना मुस्सनमहान्तिद्वार पिट्यति। रम्मनगर नाम नगर पत्ना मुस्सनमहान्तिद्वार पिट्यति। रम्मनगर नामनगर पत्ना मुस्सनमहान्तिद्वार परिव्यति। रम्मनगर पत्ना मुस्सनमहान्तिद्वार पिट्यत्व पत्ना स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त अनुप्रकृत नामित्र प्रदेश स्वाप्त नाम स्वाप्त स्व

"पञ्चन्तदेसविमयं निमन्तेत्वा तथानतः । तस्स आगमन मग्गं सोधीन्त तृदुठमानसा ॥ अह तेन समयेन निक्कमान्य पक्तसमा । धृतन्ती वास्त्वीरानि गच्छामि अच्चरे नदा ॥ वंदबातं जन दिच्चा तृद्रुहहुट पमोदित । ओरोहिल्यान गगना मनुस्से पुष्कि ताबदे ॥ [11] तृद्रुहहुट्ठे पमुदितो बेदजानो महाजनो ॥ कन्स सोधीयती मग्गो अञ्चस वदुमाननं ॥ त्ति ।

मनुस्मा आहमु, "भन्ते मुमेष ! न त्व जानाति ? दीपकरदसवलो सम्मामस्बीधि पत्वा पवत्तवरष्ट-भ्मचवको चारिक वरमानो अम्हाक नगर पत्वा मुदस्सनमहाविहारे पटिवसिन। सय न भगवन्त निमन्तियम्ह । तम्सेत बुदस्स भगवतो आगमनमर्गा अञ्चलरोमानि ।"

मुमेशनापमो चिन्तीस. "बुढोनि को घोममनाम्य लोकं दुल्लम. पगेव बुद्धणादो । मर्गाप इमेहि मनुम्मीह सिंढ दसवलस्स माग अलंकरिनु वट्ट्नीति।" मो ने मनुस्मे आहे, "सर्वे भो । तुम्हे एत मर्ग्या बुढस्स अलकरोध मर्व्हाम्य एक ओवास देव अर्हाम्य तुम्हेहि मिंढ मागं अलकरिस्मामीति।"

ते 'साभूति' तम्मटिन्छिन्न मुमेथनापतो इद्धिमानि जानन्ता उदक्तिभन्नोकाम मन्नक्तेत्वा 'त्व इस ठान अकरोदेशित' अदंगु मुमेथो बुढारमणं पीति गहेत्या चिन्तेति, ''अह इस ओकागं इद्धिया अकर्षान्तु पहीति । एवं अकेतो पन म न परिनोनेस्सति ।' अज्य मया कायवेस्यावच्च कानु बट्टतीति पर्मु आहरिन्वा तक्ति पदेसे पिकारि ।

तस्स तिस्म पदेशे अनलंकते यव दीपकरो हसकलो महानभावानं छळ्ळिञ्जान बीणणसवानं बतुहि सतमहस्रेहि परिवृतो, देवनामु दिख्यमालागन्यादीहि पृत्रपन्तीमु, दिख्यमगीतेमु पदमन्तेमु, मनुस्केमु मानुस्कगन्यहि वेष माजादीहि च पृत्रयन्तेमु, अनलाय बृदलीलृहाय मनोसिलानले विवस्हमानो सीहो विय न अलक्षतपटियनमानं पटिपण्जि।

१. रो०-नाइसं।

मुमेशनायसो अवस्थीति उम्मीलेत्वा अलंकतमग्गेन आगण्डान्तस्य दसवलस्य इत्तिसमहापुरिस-लक्कणपतिमण्डित, असीनिया अनुव्यञ्जनिहि [१२] अनुव्यञ्जितं व्यामप्यभाय सम्परिवारित, मणि-वण्णपामनले नानप्यकारा विज्ञुल्ला विश्व आवेळावेळमृता चेव युगलप्यनलभूना च छब्बण्णावनबृद्धारिसयो विस्सल्जेजन्त स्थागपात अन्तभावं जोलोकेत्वा,अञ्च मया दसवलस्य जीवितपरिच्चागं कातु बट्टतीति मा भगवा कलले अकस्मि, प्राणकलकसेतु पन अक्कमा विश्व सीह्य चतुहि बीणासवस्ततसहस्सेहि मय पिट्ठि महमानो गच्छन्तु त मे भवस्मति दीधन्तं हिताय सुखायानि केमे मोचेत्वा अजिनजदावक्यी [12] रानि कालवण्ये कलले प्रवरित्या मणिकलकसेतु विश्व कलणपिट्ठे निपरिज । तेन दस्म

"ते मे पटठा व्याकरिम, बढ़ी लोके अनत्तरो । दीपकरो नाम जिनो उप्पज्जि लोकनायको ॥ सोधीयति मग्गो अञ्जस बटमायनं । बद्धोति मम मूत्वान पीति उप्पन्जि ताबदे॥ बढ़ो बढ़ोति कथयन्तो सोमनस्सं पवेदिय । तत्थ ठत्वा विचिन्तेसि तृट्ठो सविग्गमानसो।। इध बीजानि रोपिस्स खणो वे मा उपच्चगा। यदि बुडस्स सोधेथ एकोकास ददाय में।। अर्हाम्प सोधयिस्सामि अञ्जम वटमायन । अदस ते ममोकाम सोघेत् अञ्जल तदा॥ बढ़ी बढ़ीति चिन्तेन्ती मग्ग सीधेमह तदा । अनिटटिते ममोकासे दीपकरो महामनि ॥ छळभिञ्जेहि चत्तारिसतसहस्सेहि तादिहि । खीणासवेहि विमलेहि पटिपज्जिअ ञ्जस जिनो ॥ पच्चग्गमना वत्तन्ति वज्जन्ति भेरियो आमोदिता नरमर साधकार देवा मनुस्से पस्सन्ति मनस्सापि च देवता । उभोपि ते पञ्जलिका अनुयन्ति तथागतं॥ देवा दिब्बेहि तुरियेहि मनुस्सा मानुसकेहि च । उभोपि ते वज्जयन्ता अनुयन्ति तथागत ॥ दिब्ब मन्दारव पुष्फ पदुम पारिच्छत्तक । विसोविस ओकिरन्ति आकासनभगता चम्पक सळल नीप नागपुत्रागकेतक । उक्लिपन्ति भूमितरूगता नरा।। केसे मुञ्चित्वाह तत्थ वाकचीर च चम्मक । कलले पत्थरित्वान अवसुज्जो निपज्जह ॥ [१३] अक्कमित्वान म बुढो सहिहस्मेहि गच्छत्। मा मा कलले अक्कमित्यो हिताय में भविस्सती'' ति ॥

सो कललपिट्ठे निपन्नकोव पुन अवस्त्रीनि उम्मीलेत्वा दीपकरदसबलस्स बुद्धांसरि सम्पस्समानो एव चिन्तीम, "सर्चे अहं इच्छेय्य सब्बिकलेसे झापेत्वा सधनवको हुत्वा रम्मनगर पविमेय्य [13] अञ्जातक-

१. रो०-मनुस्सेहि।

क्षेत्रन पन में किरुसे झापेत्वा निब्बाणपत्तिया किल्न नित्य, यमूनाह दीपंकरहसवलो विय परमाभिक्षम्बीचि पत्वा झम्मनाव आरोपेत्वा महाजन ससारसागरा उत्तारेत्वा पच्छा परिनिक्षायय्य । वदं मय्ह पतिक्य'' न्ति । ततो अटठ सम्में समोधानेत्वा बुढमावाय अभिनीहार करवा निप्पण्डि । तेन वृत्तं —

> "पुर्विषय निपमस्स एवं में आसि चेतसी । इच्छमानी अह अज्ज किलेसे हाएपरे मम । किम्मे अञ्जातसंदेन पम्म सांच्छकतिया । सब्बञ्जूत पापणित्वा बुढो हेत्सं सदेवके ।। किम्मे एकेन तिष्णेन पुरिसेन श्रामदीस्ता । सब्बञ्जूतं पापुणित्वा सन्तारस्सं सदेवस्ता । सम्बञ्जूतं पापुणित्वा परिसेन वामदीस्ता । सम्बञ्जूत पापुणित्वा परिसेन वामदीस्ता । सम्बञ्जूत पापुणित्वा परिसे वामदीस्ता । समाराज्ञेत ।

यस्मा पन बुद्धत्त पत्थेन्तस्सः---

'मनुस्सत्त लिगसम्पत्ति हेनु सत्यारदस्सन । पव्यज्जा गुणसम्पत्ति अधिकारी व छन्दना ॥ अटठषम्मसमोषाना अभिनीहारो समिज्यती'' नि ।

(१) मन्स्मतभावांस्य येव हि ठरवा बुद्धत पत्थन्तस्य एथवा सिंगन्नित । नागस्य वा मुण्णस्य वा देवताय वा पत्थना से सिंगन्नित । (२) मनुस्सनभावेषि पुरिस्तिलयं किनसेव पत्थना सिंगन्नित । हिन्यया वा पत्थना से सिंगन्नित । (२) मनुस्सन्य प्रिस्तिलयं किनसेव पत्थना सिंगन्नित । हिन्यया वा पत्थनत्य स्वान्तित । तो कान्यम्य । (४) हेतुसम्पर्क्षप्त भवं जोवयानकदुवन्तंय सित्तिक पत्थन्तम्य पत्थना सिंगन्नित । पिर्गानन्नत् बुद्धे चेतियसिन्तं का वोधिमूले वा पत्थनस्य त सिंगन्नित । (५) युद्धान्य सिंगन्नतं । तथ्येन्तस्यापि पत्य-वासिन्य पत्य-वासिन्य । (६) पत्यवित्तस्यापि पत्रन्ति । एक्पित्रस्य । (६) पत्यवित्तस्यापि पत्रन्ति । तथिन्तरस्य । (६) मुण्यस्पर्य-नापि वा अन्तर्ने अर्थस्य । तथिन्तरस्य । (४) मुण्यस्पर्य-नापि वा अन्तर्ने जीवित द्वानं परिच्चति । तिति तस्य हिम्म अर्थाय महन्तो छन्दो च महन्तो उस्साहो च वायामो च परिवेद्दि व तस्मेव सिंगन्नित न इतरस्य ।

तिबद 'छन्दमहत्तताय ओपमा। सचे हि एवसस्स 'थां सकल्वक्वाळाल्य एकोदकीमूत सन्ता बहुवकंत पतिस्वा पार तन्तुं [14] समस्यो सां बुद्धन पाष्णाति। यो वा पत्त सकल्वक्वाळाल्य वल्लाब्वळळ्ळा वियुद्धित्वा महित्वा पद्या गच्छती पा पन्तु समस्यो सां बुद्धन पाष्णाति। यो वा पत्त सकल्वक्वाळाल्या सत्तियो आकोटेत्वा तिरन्तर सत्तिचल्यामाकित्य पद्या अक्वम्यमानी पार गन्तु मनस्यो सो बुद्धन पाष्णाति। यो वा पत्त सकल्वक्वाळग्यस्य वीतिष्वकारभारित पादेहि महमानो पार गन्तु समस्यो मो बुद्धन पाष्णाति। यो वा पत्त सकल्वक्वाळग्यस्य वीतिष्वकारभारित पादेहि महमानो पार गन्तु समस्यो मो बुद्धन पाष्णाति। 'तो यो एतेषु एकपिय अत्तानो हुक्कर न मञ्जति अह एतिम तरिस्वा वा गन्त्या वा पार गहस्सामीति एव महन्तेन छन्देन च उम्माहेन च बायामेन च परियेट्ठिया च समप्रागतो होति तस्स पत्थना सन्तिमाति । त्व तरस्य।

सुमेधतापसो पन इमे अट्ठधम्मे समोधानेत्वा बुद्धभावाय अभिनीहारं करवा निपर्जिज । दिपङ्करोपि भगवा आगन्त्वा सुमेधतापसस्स सीसभागे ठरवा मणिसीहपञ्जरं उग्धान्टेतो विय पञ्चवन्त्रप्यसारक्षप्रकानि वन्त्रीनि उम्मिलेरवा कललपिट्टे निपन्नं सुमेशतापसं दिस्या अर्थ तापसो बुद्धताय अभिनीहारं करवा निपन्नो डोब्बस्सित नृत्यो इसस्य पचना उदाह गोति जनागतं कत्र्याणं पेतेस्वा उपयारेन्तो इतो कण्यवसहस्ताधिकानि चनारि अरावेश्यानि अतिकक्षित्या गोतमे नाम बुद्धो मनिस्सति अरवा रितकोव परिसपक्षे व्याकृति "समय नो तम्हे इस उमातरां तापसं कल्लपिट्टे निपन्न" नि

एवं भन्ते ।

अयं बुद्धताय अभिनीहारं कत्वा निपन्नो। सिनिक्तस्यति इमस्य एयना। इतो कप्पसतसहस्याधिकानं स्वृद्धं अर्थक्ष्यानं सल्यके गीतसो नाम बुद्धो भितस्यति। तस्य नगरस्य अताभावे कण्ठिकस्य नाम नगरं निवासी महस्यति। माया नाम देवो माता। गुद्धोदनो नाम राजा पिता। अप्पश्चाकिक उपरिक्तसो नाम वेदो। इतिस्यासिको केपितस्यो नाम येदो। इतिस्यासिको केपितस्य केपित नाम । बुद्धाद्वाको आनन्ते नाम। अप्पश्चासिका स्वेमा नाम येदो। इतिस्यासिका [१५] उपप्रवक्तमा नाम येदो भितस्यति। परिपक्तकाणो महाभित्यकमणं कत्वा महाप्यमानं पर्दिह्या निवोषमुक्तं पादानं परिप्याहित्व। नेरकत्वराय तीरे परिभृत्वित्वरा बोधिमण्डं आस्टह अस्सत्यम्बत्वमूके अन्तयन्ववित्वरास्तिति। तेन वृत्तं —

"दीपकरो लोकविद आहतीनं पटिगाहो। मं ठत्वान इद वचनमववी ।। पस्सथ इमं तापस जटिल उग्गतापन । अपरिमेय्ये इतो कप्पे बुद्धो लोके भविस्मति ॥ [15] अह कपिलह्वया रम्म। निक्लमित्वा तथागतो । पदहित्वान कत्वा दुक्करकारिय ॥ अजपालस्क्लमुले निसीदित्वा तथागतो । पायासमग्गय्ह नेरञ्जरमपेहिति ॥ नेरञ्जराय तीरम्डि^२ पायासं आदाय सो जिनो । पटियत्तवरमगोन बोधिमल हि एहिति।। पदिक्ष्यण कत्वा बोधिमण्ड अनत्तरो । अस्सत्यरुक्खमलिम्ह बिज्झस्सिन महायसो ॥ इमस्स जनिका माता माया नाम भविस्सति । पिता मुद्धोदनो नाम अय हेस्सति गोतमो।। अनामवा वीतरागा सन्तचित्ता समाहिता । कोलितो उपनिस्सो च अग्गा हेस्सन्ति सावका ।। आनन्दो नामुपट्ठाको उपट्टहिस्सति त जिनं । खंमा उप्पलवण्णा च अग्गा हेस्सन्ति साविका ॥ अनासवा वीतरागा सन्तवित्ता समाहिता । बोधी तस्स भगवतो अस्सत्थोति पवुच्चती"॥ ति।

बद्धापादस्स पुट्यानिमित्तानि

मुमेषतापसो मध्य किर पत्वना समिश्चिस्सतीति सोमनस्मप्यतो अहोसि। महाबनो दीपंकरदसवलस्स वचन मुखा मुमेषतापसो किर बृढबीज बृढंकुरो चाति ह्रट्लपुट्ठो अहोसि। एवं नेसंअहोसि, यथानामपुरिसो नदि तरन्नो उजुकेन नित्येन उत्तरिनुं असक्कोत्सो हेट्ठा तित्येन

१. रो०-मकवि । २. रो०-तीरे । ३. रो०-अस्सत्यमूले ।

उत्तरित, एवमेर्व मर्थाप दीपंकरदसकल्प्स सासने मगणकलं अलभमाना अनागते यदा त्व बृढो भविस्तित तदा तव सम्मुखा मगणकल सिच्छकातु समत्वा भवेद्यामा ति पत्थनं ठपयिमु । दीपकरदसबलोपि बोधिसत्त पर्यसित्वा अट्टिह पुफ्सपुटरीहि पूजेत्वा पदिस्त्वण कत्वा पक्कामि । [१६]

तेपि चतुसतसहस्सस्सा सीमासवा बोधिसत्त गन्मेहि व माळाहि चपूजेत्वापदिस्त्रणकत्वा पक्किमसुदेवमनुस्सापन तथेव पूजेत्वावन्तित्वापकान्ता।

बोर्षिसत्तो सब्बेस परिवक्ततकाले सथना बुट्डाय पारिमयो विधिनस्सामीत पुण्करासिमस्यके पत्छकं आमुजित्वा निर्मादि । एव निर्मित्तं बोधिमत्तं सक्तदसग्रहस्सवक्तवाळे देवना सन्निपतित्वा साधुकारं दत्वा, " "अय्य सुमेषनापमा । निराणकवोषिसत्तान पत्छकं आमुजित्वा पारिमयो विवित्तस्ता-माति निसिक्तकाले यानि दुव्वनिष्मा । निराणकवोषित्त तानि सव्वतिष्ठि अञ्च पातुमूताने । निस्कसयेन त्वं बुढो [10] भिवस्सितः। मम्पन्यं जानाम । यस्वेतानि निमत्तानि पञ्जापित एकत्तेन सो बुढो होति । त्व अत्ततो विरिय दृष्ट् कृत्वा पणण्डा" ति बोधिमरः, नानप्पकाराहि चुत्तीहि अभित्ववित्तु। तेन बुत्त

> सुत्वान वचन असमस्स महेसिनो । आमोदिता नरमरू बद्धबीजंकुरो अय ॥ उक्कृट्टिसहा बत्तन्ति अप्पोटेन्ति हसन्ति च । कतञ्जली नमस्सन्ति दससहस्सी सदेवका।। यदिमस्स लोकनाथस्स विरज्झिस्साम सासन । अनागतम्हि अद्धाने हेस्साम सम्मुखा इम ॥ यथा मनुस्सा नींद तरन्ता पटितित्थ विराज्झिय । हेट्ठा तित्ये गहेत्वान उत्तरन्ति महार्नाद ॥ एवमेव ^२ मय सब्बे यदि मञ्चेमिम जिनं। अनागतम्हि अद्वाने हेस्साम सम्मुखा इम ॥ दीपंकरो लोकविद् आहुतीन पटिग्गहो । मम कम्म पकित्तेत्वा दक्खिण पदमुद्धरि ॥ ये तत्थास् जिनपुत्तासब्बे पदक्खिणमकसुम । नगनामा च गन्धब्बा अभिवादेत्वान पक्कम्।। दस्सन में अतिकालने समंघे लोकनायके। त्ट्ठहट्ठेन चित्तेन आसना ब्ट्ठहि नदा॥ मुखेन सुखितो होमि पामोज्जेन पमोदितो । पीतिया च अभिस्मन्तो पल्लंकं आभुजितदा।। पल्लकोन निसीदित्वा एव चिन्तेसह तदा। वसीभृतो अह झाने अभिज्ञापार्राम ४ गतो ॥ साहस्सिकम्हि लोकम्हि इसयो नत्थि में समा। असमी हद्विधम्मेस् अलभि ईदिस सुखा। [१७] मरह दससहस्साधिवासिनो । पल्लकाभजने महानादं पवलेसुं धुवं बुद्धो भविस्सिम ॥ बोधिसत्तान पलकवरमाभुजं। निमित्तानि पदिस्सन्ति तानि अज्ज पदिस्सरे ।।

१. रो-कत्था । २. रो-नानप्पकारेति । ३. रो-एवमेवं । ४. स्था-अभिङआसु ।

सीतं व्यपगतं होति उष्हं च उपसम्मति । तानि अज्ज पदिस्सन्ति धुव बुद्धो भविस्ससि ॥ दससहस्सी लोकधातू निस्सद्दा होन्ति निराक्ता । नानि अञ्ज पदिस्सन्ति धुवं बुद्धो भविस्ससि ।। महावातान वायन्ति न सन्दन्ति सवन्तियो । तानि अज्ज पदिस्सन्ति धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥ [17] थलजोदकजा पुष्फा सब्बे पुष्फन्ति तावदे। ते पज्ज पुष्फिता सब्बे धुव बुद्धो भविस्ससि ॥ लता वायदि वा रुक्खा फलभारा होन्ति ताबदे । ते पञ्ज फलिता सब्बे धुवं बुद्धो भविस्सिसि ॥ आकासट्ठा च भुम्मटठा रतना जोतन्ति ताबदे । तेपज्ज रतना जोतन्ति धृव बुद्धो भविस्ससि॥ मानुसका च दिब्बाच तुरिया वज्जन्ति ताबदे। तपञ्जुभो अभिरवन्ति धुव बुद्धो भविस्ससि ॥ विचित्तपूष्फा गगना अभिवस्सन्ति ताबदे । तेपि अज्ज पवस्सन्ति धृव बद्धो भविस्ससि ॥ महासमुद्दो आभुजति दससहस्सी पकम्पति । तं पज्जुमो अभिरवन्ति धुव बुद्धो भविस्ससि ।। निग्येपि दससहस्सी अग्गी निब्बन्ति तावदे । तेपज्ज निब्बुता अग्गीधृत बुढो भविस्मसि।। विमलो होति सुरियो सब्बं दिस्सन्ति नारका । तंपि अज्ज पदिस्सन्ति धूव बुद्धो भविस्समि॥ अनोबट्ठेन उदकेन महिया उब्भिज्जि ताबदे । तम्पज्जुब्भिज्जतं महिया धुव बुद्धो भविस्ससि ॥ तारागणा विरोचन्ति तक्खत्ता गगनमण्डले । विसाला चन्दिमा यत्ना धव बद्धो भविस्समि।। विलासया दरीसया निक्लमन्ति सकासया । तेपज्ज आसया छुद्धा घुव बुद्धो भविस्ससि ॥ [१८] न होनि अरित सत्तान मन्तुट्ठा होन्ति ताबदे । तंपज्ज सञ्जंसन्त्ट्ठाध्व बुद्धो भविस्समि ॥ रोगा तदुपसम्मन्ति जिघच्छा च विनस्मति । तानि अज्ज पदिस्सन्ति धुव बुढो भविस्ससि ।। रागो तदा तनु होति दोसो मोहोपि नस्सति । तेपज्ज विगता सब्बे धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥ भयं नदान भवति अज्जपेतं पदिस्सति । तेन लिंगेन जानाम धुवं बुद्धो भविस्ससि ॥ रजोनुद्वंसति उद्ध अज्जपेतं पदिस्सति । तेन लिंगेन जानाम धुव बुद्धो भविस्सरित ।।

अनिट्रान्थो पक्कमित दिव्यान्थो पवापति ।
सीपज्य वायति गन्यो वृषं बृद्धो प्रविस्तिस । [18]
सम्बंदे वेषा परिस्तन्ति उपियद्या अस्तित ।
तेपज्य सम्बंदि दिस्तिन्त पृत्र वृद्धो प्रविस्तित ।
यावता निरया नाम सम्बंदिस्सिन्त तावदे ।
तेपज्य सम्बंदिस्सिन्त पृत्र वृद्धो प्रविस्तित ।
त्र वृद्धा कपाटा संका च न होन्तावरण नदा ।
अजनसभूता तेपज्य पृत्र बृद्धो प्रविस्तित ॥
चृती च उप्पत्ति च स्त्रणं तिस्म न विज्जति ।
तानि अज्य परिस्तिन्त पृत्र वृद्धो प्रविस्तित ।
तानि अज्य परिस्तिन्त पृत्र वृद्धो प्रविस्तित ।
स्वर्णं प्रपाण्ड विर्चन मा निर्वान अभिक्सम ।
मय पति विजानाम पृत्र वृद्धो प्रविस्तित ।

महासत्तस्स अधिद्वानानि

बोधिसत्तो दीपकग्दसवनस्स व दससहस्सवक्कवाडदेवतानं व ववन सुत्वा भीषो सोमनाय सञ्जा-तुम्साहो हुत्वा विन्तेसि, 'बुढा नाम अमोधववना। नित्य बुढान कथाय अञ्चलनं । यणाहि आकासे विन्तिन्ने-इहुस्य पनन, जातस्स मण्य, अरुपे उगाने मुरियस्मुट्ठान, आस्त्रया निक्वन्तस्स सीहस्स सीहनादनदन,गरुगस्त्राय दिख्या भारमोचन च घृव अवस्तभावी, एवमेव बुढान वचन नाम धृव अमोध । अढा, अह बुढो मविस्सामीति। तेन बुत्तः—

"बुद्धस्य बचन मुखा दससहस्सीन चूमय ।
तुट्हहूटी पमीरिती एक चित्तेसर् तदा ॥
अद्वेज्ज्ञ्बन्सा बुढा अमेपवचना जिना । [१६]
यथा बित्त नमें छेड्डु धुव पनिन भूमिय ।
तथेव बुद्धहेट्टानं बचनं धुवसस्ततं ॥
यथापि सम्बस्तानां मरणं धुवसस्ततं ॥
यथापि सम्बस्तानां मरणं धुवसस्ततं ॥
यथा रिचकको पत्ते मुरियस्तुगमन धुव ।
तथेव बुद्धहेट्टान बचनं धुवसस्ततं ॥
यथा रिचकको पत्ते मुरियस्तुगमन धुव ।
तथेव बुद्धहेट्टान वचन धुवसस्ततं ॥
यथा निककत्तवसनस्म मीहस्स नदनं युवं ।
नथेव बुद्धसेट्टान वचन भुवसस्ततं ॥
यथा आगक्रसतानं भारमोरोपन धुव ।
तथेय अगक्रसतानं भारमोरोपन धुव ।
तथेय बुद्धहेट्टान वचनं धुवसस्मतं ॥

(१. बानपारमी)

सो धुवाहं बुढो प्रविस्सामीति एवं कतसन्निट्ठानो बुढकारके धम्मे उपधारेतु कहनूवो बुढकारकथमा[10] कि उद्धं उदाहु अभो दिसानु विदिसानूनि अनुक्कमेन सकलं धम्मधातु विचिनन्तो पोराणकवीधिसत्तेहि आसे-विनित्सेवित पठमं दानपारीम दिस्या एवं असानं ओवेदि "सुमेष पण्डिन ! त्यं दतो पट्ठाय पठमं वानपारीम पूरेय्यासि । यथा हि निक्कुष्टिजतो उदकुम्भो नित्सेमं करवा उदकं वमतियेव न पण्वाहरित एक्सेमं धर्न वा यस वा पुत्तदारं वा अंगपच्चेगं वा अनोलोक्तेवा सम्पत्तयावकानं सन्त्यं दिण्छतिच्छितं निस्सेसं करवा ददमानो बोधिषक्तवमूर्ल निसीदित्वा बृद्धो भविस्समी' नि पठमं दानपारीम दल्ल्हं करवा अचिट्ठासि । तेन वृत्तंः—

"हृत्द बृहकरे धम्मे वि बिनामि इतोचितो ।
उद्यं अयो दसिंदिसा यावता धम्मधात्या ॥
दिविननतो तदा दिम्स पठमं दानपार्रीम ।
पुत्रकेहि महेसीहि अनुचिण्णं महास्थ ॥
हमं त्वं पठमं ताव दळ्हं कत्वा समादिय ।
दानपारित गच्छ यदि बीधि पम्हिमच्छिम ॥
यथापि कुम्मो सम्युण्णो यस्स करसचि अयोकतो ॥
वसते उदकं निस्सेसं न तत्य परिस्काति ॥
ददाहि दानं निस्सेसं कुम्हो विय अयो कतो ।
ददाहि दानं निस्सेसं कुम्हो विय अयो कतो । ति ।

(२. सीलपारमी)

अवस्य न एनकेहेव बुढकारकघम्मेहि भवितम्बन्ति उत्तरिग्य उपधान्यतो दुर्तियं मीलपार्गम दिस्वा एनदात्रोति, "मुमेषपिडना 'त्वं देतीपट्ठाय मीलघारमित्रिय पूरेस्थाति। यथाहि (२०) वसरीमिगो नाम नीविर्मास अनोलोकेव्या अतनो बाळमेव रक्कति, एवं व्याम दत्तीपट्ठाय जीविनय्ति अनोलोकेव्या सीलमेव रक्कत्तो बुढी मिक्समी' ति दुर्तियं सीलघारमि दळ्हं कव्या अधिट्ठाति। तेन वृत्तं---

(३. नेक्खम्मपारमी)

जयसम् न एनकेहेव बुद्धकारकथम्मेहि भविनव्यक्ति जलिरिम्य उपधारयतो तर्तियं नेवसम्मपार्राम हिन्दा एनत्होंमि "मुमेषपवित्त । त्वं देतो पट्ठाय नेवसम्मपार्गमित्य दूरेव्यावि । यथाहि विद्यान्य बन्धनागारे बन्धमानो पुरिको न तत्य निनहं करोति अवस्रो उक्कण्ठति येव अवसित्कामो होति, एवसेव त्विम्य सबस्येवे बन्धमानायहिस्य करवा मध्यप्रवेहि उक्कण्ठितो मुज्जितामो हुन्वा नेवसम्माभिमुकोव होहि । एवं बुद्धो भविस्सी" ति तर्तियं नेवसम्मपार्गम वह्नई करवा अधिद्वति । तेन बुत्तं —

> "न हेते एत्तका येव बुद्धधम्मा भविस्सरे , अञ्जेपि विचिनिस्सामि ये धम्मा बोधिपाचना ।

१. रो०-परिपृत्तिय ।

विधिननो तदा दिश्व ततियं नेशव्यम्पार्गाम ।
पुत्वकेष्टि महमीदि आंदीपितनिविद्यतं ।।
इम्में त्वं ततियं ताव दक्हं कच्चा ममादिय ।
नेश्वममे पार्गत मण्ड यदि बोधि पल्तिम्ळाति ।।
यया अन्दुषरे पुरिसो चित्रमुत्यो दुव्वहिनो ।
न तत्व गर्ग अभिजतित मृति यंव गवेसति ।।
नत्व रागं अभिजतित मृति यंव गवेसति ।।
नवेद त्व सक्काचे पस्स अन्दुपरे विद्य ।
नेश्वममाभिमुलो होहि अवनो परिमृतिया ।।" ति । [२१]

(४, पञ्जापारमी)

3

अवस्स न एनकेहेव सुदकारकमभाह भवितव्यन्ति उत्तरिष्य उपधारको चतृहिव पञ्जापार्शम दिस्वा एनदहोंमि "मुमेषपण्डिन । त्वं इनो एर्ट्स पञ्जापार्शमित पूरेच्यामि होनामञ्जापकर्ट्सु किन्त अव-अञ्चला सब्देषि पण्डिन प्रमक्तिस्व । पञ्च पुज्केय्यामि । वयाहि पिष्टवार्गिको भिष्क होनादिभदेमु कुन्चेम् क्रिन अवज्ञेत्वा परिपारिया पिष्डाम बन्तो वित्त पापन प्रभाति, । ये व्यक्ति मस्वापित्रे उपसंत्रामत्वा पञ्च पुष्कव्यतो बुढी भविस्ममी" नि चतुन्थं पञ्जापारीम दळ्हं कत्वा अधिर्द्शान । नेन वृत्त -

"न हते एनसायेव तृक्षपमा भविष्मरे। अञ्जीत विवित्तम्सामी ये परमा अधिपायता।। विवित्तनो तदा दिस्क चतुर्थ पञ्जाय पार्गम। वृक्ष्यक्षेति महेसीथि आमेवितनिसीसा। इम त्व चतुर्थ ताव देल्ह कत्वा ममादिव। पञ्जाय पार्गम राज्य विदे बीचि पन्तिम्बद्धीता। [21] यथापि भिक्ष्यु भिक्षस्तां। हीतमुक्तद्वरमित्रममे। कुलाति न विवर्जेन्तो एव लगति यापनं।। कुलाति न विवर्जेन्तो एव लगति यापनं।। पञ्जाय पार्गम मत्वा सम्बद्धीय पाष्ट्रासमा। विवर्णना वृद्धीत्वां। पञ्जाय पार्गम मत्वा सम्बद्धीय पाष्ट्रासमाने।। विवर्णना वृद्धीत्वां। पञ्जाय पार्मम मत्वा सम्बद्धीय पाष्ट्रासमाना।। वि

(४. विरियपारमी)

अयस्य न एनकेहेव बुडकान्कपामीह मिवनब्बिन उनिर्मित उपधारयनां पञ्चमं विश्वपार्गन दिस्ता एनहर्होमि "मुभेषपिष्ठन । त्य रनो एट्टाय वित्यपार्गमिश्य गुरुव्यानि । यथा हि मीहो मियराश सब्बद्दियापयेमु बद्धहर्वित्यो होनि एव त्वीप्त सब्यमेनु सब्बद्दियापयेभू बद्धहर्वित्यो अनीजीवित्यो समानो बुढो अविस्माने 'नि पञ्चमं वित्यपार्गाम बद्धहें कत्वा अधिरुठामि । नेत तन ——

"न हेते । तनकायेव बहुबममा भित्रमणे । अञ्जीत विवित्तस्तामि ये यम्मा बोषिपानना ।। विवित्तस्तामि ये यम्मा बोषिपानना ।। विवित्तस्तानि तदा दोस्य पञ्चमं विरित्यपार्गमः । पुत्रकोहंह महेसीहि आमेवितत्तिनीति ।। इस त्यं पञ्चमं ताव दळ्हं कत्वा समादिय । वितरित्यपार्गमतं गच्छ यदि बोषि पत्तीमच्छति ।। यथापि सीहां सिमराजा निसञ्बद्धानकंकमं । अञ्जीतवित्यो होति पम्मोतामनो सत्त ।। [२२]

तथेव त्वस्पि सब्बभवे पग्गण्ह विरियं दळ्हं । विरियपारमितं गन्त्वा सब्बोधि पापुणिस्मसी ॥" ति ।

(६. सन्तिपारमी)

अयस्य न एनकेहेव बुद्धकारकथमोहि भिवतब्बिन उत्तरिष्प उपधारमती छट्टं सन्तिपारीम दिस्वा एनदहोसि "मुमेधपिटन ! त्वं इतो पट्ठाय सन्तिपारीमिन पुरेध्यासि सम्माननेथि अवमाननेथि समोव अवेद्यासि । यथाहि वर्ठावयं नाम मुक्तिन पत्तिकथानि अमृतिष्प, न तेन पटवी सिनेहे न पटिचं करोति स्थमित सहित अधिवातिनवेव एवमेव स्वष्प सम्माननावनिम् स्यमित सामानो बुद्धो भविस्ससी ति छट्टं सन्तिपारीम उद्धों करवा अधिट्योस । नेन वत्तं---

"न हेते एनकार्येव बुद्धममा भविस्सरे । अञ्जीर विवित्तस्ताित से सम्मा बोधिपाचना ॥ विवित्तस्ताित से सम्मा बोधिपाचना ॥ विवित्तरतिता दाविक छट्टमं बित्तपार्यम । पुष्किहि भट्टेमीहि आमेवितर्गित्सितां ॥ इमं खं छट्टमं ताव द्यूहं करवा समादिय । तथ्य अदेश्वमानतो सम्बोधि पापुणिस्सित्ति ॥ [22] यथापि पटवी नाम मुचिम्म अमुचिम्म व । सन्यं सहति तिकथेयं न करोति पटिणं दयं ॥ तथेव स्वीम्म सम्बोसं सम्मानावमानवक्षमां । ब्रित्तपारमित गल्या सम्बोधे पापुणिस्मती ॥" नि । ब्रित्तपारमित गल्या सम्बोधे पापुणिस्मती ॥" नि ।

(७, सच्चपारमी)

अयस्य न एनकेहेव बृद्धकारकथम्मेहि भविनम्बत्ति उत्तरिग्य उपधारयनो सन्धं सञ्चागर्यमः दिस्वा एनकोसि "मुप्तेभावित्व ! त्वं इतो प्रतृष्ठा सञ्चागर्यमिष् गृरेग्यासि । अमिनवा सत्येक पत्रमानावर्यि भगविन अत्याय छन्यदिने बतेन सराजात्रावादं नाम अभिमि । यस्ति ओमिषनारका नाम सस्यजृत्यु आगो गमप्याधि जहित्वा अञ्चाय वीषिया न नच्छित सक्तीदियाव गम्पति, एवसेद त्वीप सन्धं पहाय मुगावाद नाम अकरोन्तो येव बृद्धो भविस्मती" ति सत्तीम सन्धं पहाय मुगावाद नाम अकरोन्तो येव बृद्धो भविस्मती" ति सत्तीम सन्धं पहाय

"न हेते एसका येव बुद्धधमा अविस्तरे ।
अञ्जीर विवित्तस्तामिय धममा बोधिपाचना ॥
विवित्तनो तदा दिस्स सत्तमं मञ्जपार्यमा ।
इस्केरित महेसीहि आमेवितिनिमिक्तं ॥
इसं त्वं सत्तमं ताव दह्यूहं करवा समादिय ।
तत्य अद्रेड्यत्वनो सम्बोधि पापुणिम्सित्त ॥ [२३]
ययापि ओसधी नाम नुलामृता सदेवके ।
समये जनुबस्ने वा गातिक्वमिति वीथितो ॥
तपेव दहिष्ट सर्वमु मा बोक्किति ह बीथितो ।
सञ्जपारतिय सन्वमु मा बोक्किति ह बीथितो ।
सञ्जपारतिय सन्वमु मा बोक्किति ह बीथितो ।

(८. अधिद्वानपारमी)

अथस्स न एनकेहेब बुद्धकारकथम्मोह् मित्रनब्द्धान्त उत्तरिम्पि उपधारयतो अट्टमं अधिट्ठानपारीम् दिन्दा एनदहोति "सुमेथपण्डित ! त्व इतो पट्ठाय अधिट्ठानपारिमिप्प पूरेय्यासि । यं अधिट्ठासि तीस्म अधिरुठात निष्यको नबंद्यासि । यथा हि पखतो नाम सम्बासु रिसामु - बाते पहरन्तेषि न कम्पनि न बण्ति जसनी ठाने येव निर्दृति, एवमेवं श्वीम्य असनो अधिर्दृतने निष्यको होलोव बुढो प्रविस्मामी'' नि अर्ट्यं अधिर्दृतन-पार्गीय सङ्ग्रं कर्या अधिर्दृत्ति । तेन बुत्तं —

"न हेते एनका येव बृत्यसमा सिवम्मरे । अञ्जीत विवित्तमामि ये पम्मा बीधिपानमा ॥ [23] विवित्तमो तवस्मि अट्टमं बीधिपानमा ॥ [23] विवित्तमो तवस्मि अट्टमं अध्याद्भारमार्गव । प्रमुक्ति महेसीहि आमेवित्तासीवतः । इमं त्वं वर्ट्टमं ताव तट्ट्रमं तत्वा समादिव । तत्व त्य अन्तर्गे हुन्या सम्बीध पापुणिम्मातः ॥ स्वर्धाप पत्र्यतो मेनो अन्तर्गे भूणिन्द्रिनो । न सम्मि भूमवातीह सन्दर्धनं विव्दान । नत्यत्व त्याम अधिद्रान सन्दर्धनं सन्दर्धनं । सन्दर्धनं वर्धम् अधिद्र्यान सन्दर्धनं । सन्दर्धनं । सन्दर्धनं वर्धम् अधिद्र्यान सन्वद्धानं सन्वद्धानं । पापुणिमम्मा । विव्दानं सिद्धानं मत्यत्वामा अधिद्र्यानं पापुणिमम्मा । विव्दानं सिद्धानं पापुणिमम्मा । विव्दानं ।

(६. मेलापारमी)

अथस्य न एनकेहेव बृढकारुक्षमंत्रि प्रवित्ववित्त उत्तरिम्य उपधारमंति नवम मेलापार्गम दिस्वा एनव्होंसि "बुमेधपरिष्ठन ! त्व इतो पट्ठाय मतापार्शमम्प पूरेय्यामि, हितेषुपि अहितेषुपि गर्काचतो अवय्यासि, थर्थापि उदके ताम पापजनस्मपि कत्याणजनस्मपि मीनभाव एकमिटम कत्वा पर्गत ग्वमंव त्वस्थि सञ्चलसेन् में संवित्तांन एकचित्तोव होन्ता बृढी भविस्ममी" नि नवस मेलापारीम बङ्ग करवा अधिद्रासि । तेन वन —--

न हेने एसका यंत्र बुढ्यम्मा भित्रमे ।
अञ्जीन वित्तित्सापित्र ये सम्मा शेषिपाजना ।।
वित्तिनमां नदा दिश्यं नत्यम मेनाय पाणि ।
पुत्रकेहि महेभीहि असेकिननेत्रीका ।।
इम त्व नतम नाज दल्ह कत्वा समादिय ।
मेनाय अममो होहि यदि शोष पन्तिक्छीन ॥ [२४]
यथापि उदक नाम कत्याणे पागर्व जने ।
मम फर्गन तीनेन पत्रोहीन प्रजोमक ।।
नवेद त्रवीप्य आहततितों मम मेनाय पाय्य ।
मेनाय पार्गिक नेत्रका सक्बीधि पाणुणसायी ॥" ति ।

(१०. उपेक्क्षापारमी)

अवस्त न एतकेहेव बृद्धकारकधर्माह भवितव्यक्ति उत्तरिम्य उपभारक्तो रमम उपेक्वापार्गम दिस्वा एतरहोति—— मुमेथपिवत । त्व इतो प्रदेश्य उपेक्वापार्गमिष्य पूरेव्यामि मुखीप दुक्वीप मञ्जलीव भवेव्यामि । युवापि एठवी नाम सुविध्य असुविध्य पक्किपमाने मञ्जलाव होति, एवमेव त्विध्य मृत्युक्केश्च मञ्जलीव होत्तो बृद्धो भविस्मर्गी ति दसम उपेक्वापार्गम दृद्धः करवा अधिर्ठामि । तेन वृत्त —[24]

१ रो०-सब्बदिसासु पि । २ रो०-एकविस्तो । ३ रो०-मेसापारमित ।

"न हेते एतका येव बुढणमा मविस्तरे ।
अञ्जीर विचित्तसामि ये अम्मा बोधिपाचना ।।
विचित्तनतो तदा दिक्क दसमं उपेक्कापारिम ।
पुव्यक्तेहि महेसीहि आमेवितनिसेवितं ॥
इम त्व दसम ताव दळ्ह करवा समादिय ।
पुष्पभृतो दळ्ही हत्या सम्बीधि पापुणिस्सित्त ॥
यथापि पठवी नाम निक्क्त असुन्ति मुचि ।
उपेक्कत उभोपेने कोपान्तयविज्यता ।।
तयेव त्विप्य मुखनुक्के तुळामुतो सदा अव ।
उपेक्कापारिसतं गन्या सम्बीधि पापुणिस्सती ॥" त !

महासत्तरस पारमिसम्मसनं

ततो चिन्तीय— "इमीन्स कोक बोधिमतीह पूरेगब्बा बोधिपरिपाचना बुढकारकथमा एनकासेव । दसपामियो ठरेवता अञ्जे निष्य । इमापि दसपामियो उदं आकारिय निष्य , हेट्ट पठिवामिय पुरन्वमासिय हिसामु पि निष्य । स्वत् से स्वत् इस्त स्वत् । स्वत् निष्य । इमापि दसपामियो उदं आकारिय निष्य , हेट्ट पठिवामिय पुरन्वमासिय हिसामु पि निष्य । स्वत् से ह्वर से निर्देशिय दिसामु पि निष्य । से स्वत् से स्वत् । स्वत् । से प्रति हे क्ष्या अविद्वास पुरन्य निष्य सम्प्रती अनुकोषप्रिकोष सम्मति । परियमी पहेला आदि पापेनि, आदिष्टि गहेला परियन क्षेत्रीत । सक्ष्य नेहर्स उभतो ओमापेनि । अपवित्वसामे परियम । स्वत् अभापेनि । अपवित्वसामे परियम । सामित्र । इस परियम । सामित्र सामित्र । सामित्र सामित्र सामित्र । सामित्र सामित्र सामित्र सामित्र सामित

"एनका येव ते लोके ये घम्या बोधियाचना । ततुद्ध तमिय अञ्जय दक्षह तत्य पतिन्द्रह ॥ इमे घम्मे सम्मसनो सभावसम्सलवाको । धम्मतंत्रेन वनुषा इससहस्मी पकस्पय ॥ चलनी रकती पुषयी उक्कप्रमा व पीद्धित । तेलपना यथा चक्क एव कम्पनि मेदिनी॥" ति । [25]

महापठिवया कम्पमानाय रम्मनगरवामिनो मण्ठानु असक्कोन्ता युगन्तवातन्भाहना महासाला विच मुच्छिनमुच्छिना पर्यातमु, घटादीनि कुलाळभाजनानि पवट्टलानि अञ्जमञ्ज पहरन्नानि चुण्णविचु ण्णानि अहेसु । महाजनो मीततसितो सत्यारं उपसक्तिमत्वा किन्नुबो भगवा नागाबट्टो अय भूनयक्षवेदवतामु अञ्जनरावट्टोनि न हि गय एत जानाम, अपिव सो सम्बोपि अय महाजनो उपदृद्तो । किन्नुबो इमस्स स्रोकस्स

१ रो०-हडगमंतन्तरे । २ स्या०-बाहिरमण्डपरिच्यागो वानपारिमयो नाम, अंगपरिच्यागो वानजपपार-नियो नाम, जीवतपरिच्यागो वानपरमत्यपारिमयो नामित ।

पापक मनिस्सति, उदाष्ट्र कत्याण ? कभेष नो एन कारणन्ति आह् । सत्या तेस कच सुत्या तुम्हे मा भायन, मा चिन्तीयस्थानिष्य ने इती निवाना भव । मो सो मया अञ्च सुमेद्याण्डिती अनागते गोतमो नाम बुद्धो अधिसस्पतीति स्थानतो सो इद्यानि पार्रीमधो सम्मति । उस्स पार्रीमधो सम्मनन्तस विरुद्धिनस्स भम्मतेजेन सकज्वसम्रहस्थी क्षोकसाह पुरूष्णहोरेन कम्पति चेद रवति चाति आह् । तेन बुत्ता—

> ''यावता परिसा आसि बुद्धस्स परिवेसने। पवेधमाना सा तत्य मुच्छिता सेति भूमिय ।। घटानेकसहस्सानि कुम्भीनञ्च सता बहा सञ्चुण्णा मधिता तत्थ अञ्जमञ्जं १ पर्घाट्टता ॥ उविवग्गा तसिता भीता भन्ता व्यधितमानसा । सभागम्म दीपकरमुपागम् ॥ किम्भविस्सति लोकस्स कल्याण अथ पापक । सब्बो उपददतो लोको तर विनोदेहि चक्छम ' रि६] सञ्जापेसि दीपकरो महामृनि । विस्सत्या होथ मा भाष इमस्मि पुषविकम्पने ॥ यमह अज्ज व्याकासि बुद्धो लोके भविस्सति । एसो सम्मसनी धम्म पुरुवकः जिनसेवित ॥ तस्य सम्मसतो धम्म बुद्धभूमि असेसतो । नेनाय कम्पिता पुथवी दसमहस्सी सदेवकं।। निः।

महाजनीपि नथागतस्म वकः मुखा हट्टत्र्ठो माळागत्थविकंपन आदाय रस्मनगरा निक्वसित्वा बोधिसम् उपस्कामत्वा माळादीहि पूत्रेत्वा वन्तित्व पदिस्कण करवा रस्मनगरमेव पाविस् । बोधिसत्तीपि दसपारमियो सम्मामत्वा विदियं दळ्ड कत्वा अधिद्ठाय निमित्रामता बुट्ठासि । तेन वृत्त — [26]

> "बुद्धस्स वचन मुन्ता मनो निब्बाधि नावदे । सब्बं म उपसकम्म पुनिष म अभिवन्दियु ॥ समादिधित्वा बुढगुण दळ्ह करवान मानस । दीपकर नमस्मिरवा आमना बुट्ठीह नदा॥" नि ।

१ स्या०, रो०-अञ्जमङजूपघट्टिता । २ रो०-सदा।

"दिख्य मानसक पृष्फ देवा मानुसका उभी । समोकिरन्ति पृष्फेहि वट्ठहन्तस्स आसना ॥ बेदयन्ति चते सोत्थि देवा मानुसका उभी । महन्त पत्थित तुय्ह त लभस्स् यथिन्छित।। सब्बीतियो विवज्जन्तु सोको रोगो विनस्सत् । मातं भवत्वन्तरायो १ फुस खिप्प बोधिमत्तम ॥ [२७] यथापि समये पत्ते पुष्फन्ति पुष्फिनो दुमा । तथेय त्व महाबीर ! बुद्धआणेन पूप्पसि ॥ यथाये केचि सम्बद्धा पूरय दसपारमी। नथेव त्व महावीर ! पूरय दमपारमी।। यथाये केचि सम्बद्धा बोधिमण्डम्हिब्जझरे । नथेवत्व महाबीर । बुज्झस्स् जिनबाधिय ॥ यथाये केचि सम्बद्धा धम्मचक्क पवलय् । तथेव त्व महाबीर ! धम्मचक्क पवलय॥ पूण्णमाय यथा चन्दो परिमुद्धो विरोचति । तथेव त्व पुण्णमनो वीरोच दससहस्मिय ॥ [27] राष्ट्रमनो यथा स्रियो नापेन अनिरोचनि । तथैव लोकामुच्चित्वा विशेच सिरियात्व॥ यथायाकाचि नदियां ओसरन्ति महोदधि । एव सर्ववका लोका ओसरन्त् तर्वान्तकं।। तेहि थनप्पमत्थो सो दसधम्मे समादिय । तंधम्मे परिपुरेन्तो पवन³ पाविमी नदा॥"ति। मुमेधकथा निट्ठिता

ुं२ भगवा दोपच्चूरो

रम्मनगरवासिनोपि स्रो नगर पविसित्धा बृद्धपमुख्यस प्रिक्तुसम्बस्स महादान अदगु । सन्धा तम धम्म देसेत्वा महाजन सम्बादिषु पनिद्धोपेवा सम्मनगरम्हा निक्कमित्वा ततो उद्घीप यावतासुकः निद्धन्तो सक्त बुद्धिरुक्षं नवा अनुकर्षकंत अनुपादिसेमाय निक्वाण धानुषा परिनिक्वायि । तस्य य वसस्य त सस्य बुद्धको कुननमेनेव वैदित्वस्य । बुन हितत्थ —

"नदा न भोडोबस्थान ससय ठोकनायक । उपगण्ड सरण नस्स दीषकरस्स सस्थ्रो ॥ सरणायमं कोण्ड निवंसीस तथायतो । कोण्ड पञ्चमु भीलेषु मीले दस्तियो पर ॥ कम्मांच दीत सामञ्ज चतुरो कलमूतामं । कम्मांच नम्मांचाना । तथाया । तथाया । कम्मांच सम्मापानाची अद्य देव नगाममां । निम्मां कम्मांच विज्ञायो छळामञ्जापवेच्छाता ॥ [४८]

१ रो०-भवतु अन्तराघो । २ स्था०-रो०-लोकं मुञ्चित्वा । ३ स्था०-हिमवस्तं ।

तेन योगेन जनकाय ओवदति महामृनि । तेन वित्यारिक आमि लोकनायस्य सामन ॥ महाहन उसभक्लन्थां दीपकरसनामको। बह जने तारयति परिमोचेति इग्गति ॥ बोधनेय्य जन दिस्वा सतसहस्सेपि योजने । खणेन उपगल्यान बोधेनि त महामनि ॥ पठमाभिसमयं बद्धो कोटिसतमबोधिय । दृतियाभिनमये नाथो सतसहस्सं अबोधिय ॥ यदा देवभवनम्हि बद्धो धम्ममदेसयि। नवृतिकोटिसहस्सान ततियाभिसमयो अहु॥ [28] सन्त्रिपाता तयो आम् दीपकरस्स सत्यनो । कोटिसतसहस्यान पटमो आसि समागमो।। नाग्दकटम्हि पविवेकगते व्योगासवा बीतमला समिस् सतकोटियो ।। यदा बसी महाबीरो सुदस्मनसिल्ड्चयं। नवनिकोटिसहरमेहि परिवारेसि तदा मुनि ॥ अह तेन समयेन जटिलो उम्मतापनो । अन्तळिक्लिम्हि चरणो पञ्चाभिञ्जाम् पारग् ॥ दमवीसमहस्मान धम्माभिसमयो अहं । nक्तिक अभिसमयो गणनातो असलिया।। वित्थारिक बाहजञ्जादद्ध फीत अहु नदा । दीपकरस्स भगवतो सासन सुविसोधित।। चलारि सनमहरमानि छळभिञ्जा महिद्धिका । दीपकर लोकविद परिवारेन्ति सब्बदा।। ये केचि नेन समयेन जहन्ति मानुस भव । अप्यतमानमा मेला गरहिनाव भवन्ति ते।। सुपृष्फित पावचन अरहन्तेहि नादिहि । श्रीणासबेहि विमलेहि उपसोर्भान सदेवके।। नगर रम्मवती नाम मुदेवो नाम खत्तियो । सुमेधानाम जनिका^र दीपकरस्स सत्थुनो ॥ दमवस्ससहस्सानि अगारमज्झम्हि मो बनि । रम्मो मुरम्ममुभो तयो पासादमुत्तमा।। सत्सहस्सानि नारियो समलकता । यमोधरा नाम नारी उसभक्तनचो च अत्रजो ॥ निमिन्ते चतुरो दिस्वाहित्ययानेन निक्लमि । अननदससहस्सानि पधानं पदही जिनो ॥ पद्यानचार चरित्वान अबुज्ज्ञि मनसा मुनि ।

१ रो०-सुमेघो । २ रो०-जनिया।

सिरीधने । महावीरो नन्तदायं धस्मचक्क सिरिसम्ले स्विरो अकासि तित्थियमदृत् ।। सूमगलों च निस्सो च अहेसुं अग्गसावका । दीपकरस्स सत्युनो ॥ [२९] नामपटठाको नन्दाचेव सुनन्दा च अहेस् अग्गसाविका। बोधितस्स भगवतो पिष्फलीति पवुच्चति ॥ महामनि । अमीतिहत्य मुब्बेधी दीपंकरो फुल्लितो ॥ सालराजाव सोभनि दीपरुक्खोव महेसिनो । नस्म मनसहस्सवस्सानि आय् नावता तिट्ठमानो सो तारेसि जनतं बहुं।। जोतियत्वान सद्धम्मं सन्तारेत्वा महाजनं । जलित्वा अभ्गिक्षत्योव निब्बुतोसो ससावको।। मा च इद्धि सो च यसो तानि च पादेसु चक्करतनानि। सब्ब समन्तरहितं नन् रित्ता सब्बसंखाराति ॥ [29]

ु३ भगवा कोण्डङओ

दीपकरस्य पन भगवती अपरभागं एक असम्बद्ध अनिक्किमन्त्रा कोण्डञ्जो नाम सन्धा उदयादि । तस्सापि
तयो भावकाविषाना अदेसु । पण्डमाधिषानं कोटिसनसहस्य, इतिय कोटिसहस्य, तिस्त व्यक्तिकोटियो । नदा
बोधियना विजनावी नाम वक्कवनी हुत्वा कोटिसनसहस्यम्भवस्य सुद्धपमुलस्य निक्क्यपस्य मादादान अदाधि ।
सन्धा बोधियन बुद्धो भविस्यानी कथाकिरिव्या प्रस्य देशीस् । गो सन्ध् प्रमाकक सुत्वा राज्य परिवादिना वर्ष्वा ।
गो नीणि पिरकानि उप्पहेत्या अट्टममापितयो पञ्च च अभिज्ञायो उप्पादेत्वा अपरिवादिनकानो अह्मलांक निक्क्यते । कोष्डज्यस्य पुरस्य पर स्मावनी साम नार, आन्त्यो नाम सन्धि पिता. सुनाना नाम देवी माना,
भारो च मुमहो च दे अपमायका, अनुरुक्षो नाम्परहाको, तिस्मा च उपनिन्तमा च व्यक्तिमानिहरूपक्षेष मारी, सम्मानसहस्य आप्रमाण ब्रहीति ।

दीपकरस्म अपरेन कोण्डञ्जां नाम नायको । अनन्तरेजी अमितयमो अप्पर्मब्यो दुरासदोति ।।

∮४ भगवामङ्गलो

यया पत्त अरुभेन बुद्धान समना अभीतहरूषयमाणा येव सरीरप्यमा अहोमि न तस्त एव । तस्त पत्त पत्त पत्त स्वाद स्वाद स्व । तस्त पत्त पत्त स्व स्व । क्ष्मपठवीपक्षनसमृद्दार्थो अन्तमसो उन्दक्षित्व स्वाद स्व । आपूष्पाण पत्तम्म नवृत्तिवस्पाहरूसानि अर्ह्रासि । एत्वरूष्ट्या पत्त प्रवाद युवणणट्टप्रियोनद्वा विच अहेतु । आपूष्पाण पत्तम नवृत्तिवस्पाहरूसानि अर्ह्रासि । एत्वरूष्ट त्व पर्व्याद्वाय । दिवा सुर्ग्याकोकेन विच सत्ता[30]निच्च बुद्धालोकेनेव चिचांन्गुसाय पुष्पतकुमुमान पानोव रवनतहुणदीनञ्च ववेत लोको रिनिट्यपरिष्ट्रद सल्वक्षीस । किम्पन अञ्चेत बुद्धाल अप्यानुमालां नर्वाति ? ते । त्रिच्य ते पिद्ध आक्रंक्षमाना समहिस्य वा लोकपानु नर्वा वा सिप्त आभाष करेय्य। मनलस्य पत्र भावतो पुर्व्यपत्थ-नावतिक अरुप्ते बुद्धालक्ष्ममान प्रसिद्ध स्व स्व । क्षेत्रपानु नर्वा वा सिप्त आभाष करेय्य। मनलस्य पत्र भावतो पुर्व्यपत्थ-नावतिक अरुप्ते स्व स्वप्त स्व ।

सी किर बीपिसलवर्गयकालं बेस्सल्यसिसं अलभावे दिनो सपुनदारो कण्यवस्तादिने पथ्वतं विश्व । अवेको लुग्दारिको नाम यनको महापुनिस्सर दानप्रशासका मुख्य आक्षणवर्णन उपस्रकृतियवा हृहामन दे दारके याचि । महासत्तो द्वादा स्वाध्य महाप्तन हृहामन दे दारके याचि । महासत्तो द्वादा स्वाध्य महाप्तन स्वाध्य प्रशासन प्रशासन स्वाध्य अद्यादि । यसको कृष्टमक्षेत्र प्रशासन स्वाध्य आल्यक्त प्रशासन स्वाध्य अद्यादि । महापुरिस्सम् यनक ओलोकेत्वा मुखे विवयमं अग्यावात विवय ओहितपार उगिरमान तस्त मुख दिस्वापि केस्पामनिया होन्तम् न उपप्रित्न । मुद्धिक वन मे द्वादान जिल्लामें नियम नपेरे महत्त पीतिसोसनस्य उद्यादि । मो द्वास्य में निस्सर्वन अतार्यते दीन्याव महारान रिस्मयो निक्स्यमन्ति पश्च अक्षासि । नस्य तथ्यति होस्स्य दिश्व विवयस्ता विवयस्ता होस्स्य होस्य होस्स्य होस्य होस्य होस्स्य होस्य होस्य होस्य होस्स्य होस्य होस्य होस्स्य ह

अपराग्तस्य गुब्बविन अस्य । सो किर बांघसनकालं एकस्य बुट्टम्म चेनिय दिस्या स्पस्य बुट्टस्य मया जोविन परिच्चतिन्न बस्टतीति विक्तंत्वा सण्डरीपकरेवनीत्यामन मक्त्यसरीय देशाण्या रानतमबुक सन्तमह-स्माधनिक मुख्यणाप्ति सार्वस्य प्राप्तेत्वा तल्म सहस्यबर्टियो जालांग्या नो मीमेनादाय सकल्यसरीरे जालांग्या चेनिय परस्यीण करोन्नो मकल्यांत बीनितार्मामा । एव साव अरुणगुममा वासमन्त्रसाण्य आस्त्रम्या आस्त्रस्यास्य अरुपसम्म उत्तम न नाहि । एद्ममध्ये पीब्ट्टकालं विच अहोमि । धम्मो हिनामंत्र अनान रचक्तं स्थान । तेनाह सगया —

> धम्मो हवं त्रक्वित धम्मचारि धम्मो सुचिण्णो सुख्मावहाति । एसानिसमो धम्मे सुचिण्णं न दृगाति गच्छति धम्मचारी ॥" ति । [31]

दमस्मापि कम्मस्म निम्मन्देन नग्य भगवती सरीरोभामी दममहत्यी/लेकपातुँ फरित्वा अट्टासि ।
तदा अम्हतः बोधिमली मुर्तेच नाम ब्राह्मणी हत्वा सत्याः निमन्तेस्मामीति अगवकीमत्वा मधुरधम्मक्य मुत्वा स्व मस्य भिक्व- गण्डव भन्नेति जाह । याद्याण । किन्तेहि हो भिक्वृहि अन्योति ? किनका पन
वो भन्ने । पित्वार्यिकस्कृति आह । तदा सत्य एटममिश्रियाती येव होति तन्या काधिन्यनवहत्यानि आह । अन्ये
सब्बेहित र्याद मस्य मेट् भिक्वं गण्डवभाव । त्या वाधवार्योत्त । आहणी म्वानाय निमन्तेत्वा रोहं सब्दुन्ता
निमन्तिम्भ प्रत्य एत्राकार निम्मृत्वा वागुमनवत्यासीति रातु जो नम्बोमि निमीयनट्टानं पन कव भवित्यानीति
सम्म ना वित्या सुरासीति योजनवत्यास्य निमन्ते स्वराज्यो (पण्डक्ष-स्वर्मीम्शानस्य पण्डका) वर्गीन ।
सक्को को नृत्वो म समस्मा ठाता चावेनुकामीति दिस्त्वक्कृता ओलोकेन्तो महापुरिम दिस्या मृर्शवद्याद्याये
बुद्धभाविक् भिक्कृत्ये निमन्तित्वा निगीदनट्टानत्याव चिन्तेत्र, क्यापि तत्य गत्या पुरन्ते कोट्टाम गहेनु बट्टानीति
बद्धक्षीवक्षा निम्मिणत्वा नाधिकरमुहत्यो महामनस्य पुरत्ये गण्डुरह्मुकृत्व सुक्कृत्व क्षा कम्मचि भतिया
कत्यक्षित आह । महापुरियो दित्य कि कम्म करिस्मर्यीति आह ।

१ रो०-मूलकलापं विय दारके । २ रो०-मुखं।

मम अजाननसिष्यं नाम नत्थि, गेहं वा मण्डपं वायो य कारति तस्स तं कार्ुजानामीति। तेन हिमय्हकम्मं अल्थीनि। कि अस्याति ?

स्वातनाय हे कोटिमतसहस्सभिक्ल निमन्तिता, तेसं निसीदनमण्डपं करिस्ससीनि ? अहं नाम [३२] करेरयं सने में भति दात सक्खिस्सथाति ।

सक्खिस्सामी नानानि ।

साध करिन्सामीति गन्तवा एकं पदेस ओलोकेसि । द्वादसतेरसयोजनप्पमाणो पदेसो कसिणमण्डल विय समतलो अहोति । मो एतके ठाने सलग्तनमयो मण्डपो उट्ठहतूति चिन्तेत्वा ओलोकेसि । तावदेव पूर्धीव भिन्दित्वा मण्डपा उटठीह । तस्स सोवण्णमयेस् थम्हेस् रजनमया घटका अहेस् रजनमयेस् सोवण्णमया । मणित्थ-म्भेम मणिमया मनरननमयेस सत्तरतनमयाव घटका अहेस । ततो मण्डपस्स अन्तरन्तरे किकिणिकजाल ओलम्बतति ओलोकीम । सह आलोकनेनेव जाल ओलम्बि, यस्स मन्दवातेरितस्स पञ्चगिकस्मेव तरियम्स मधरसही निग्ग-च्छति, दिख्यगरीतवत्तनकालो विय होति । अन्तरन्तरा १ गन्धदाममालादामानि ओलम्बन्तृति चिन्तेमि।दामानि ओलम्बिम् । कोटिसतमहस्ससस्वानं [32] भिक्खुन आसनानि च आधारकानि च पठिव भिन्दिन्वा उट्ठहन्तुनि विन्तेमि । तावदेव उट्ठहिम् । कोणं कोणं एकेका उदकचाटियो उट्ठहन्तूति चिन्तेसि । उदकचाटियो उट्ठहिम् । एनक मापेत्व ब्राह्मणस्म सन्तिक गन्त्वा--एहि अय्य । तब मण्डप ओलोकेत्वा मय्ह भीत देहीति आह ।

महापुरिसो गन्त्वा मण्डप ओलोकेसि । ओलोकेन्तम्मेव सकलसरीर पञ्चवण्णाय पीतिया निरन्तर फट अहोसि। अथस्स मण्डप ओलोकेत्वा एनदहोसि-नाय मण्डपो मनस्मभतेन कतो। मब्ह पन अञ्जासय मब्ह गण आगम्म अद्धा सक्कभवन उण्ह अहोसि । ततो सक्केन देवरञ्जा अप मण्डपो कारितो भविस्मति । न खोपन मे यन एवरूपे मण्डपे एकदिवस येव दान दात । सत्ताह दम्मामीति चिन्तेमि । बाहिरकदान हि कित्तकस्पि समान बोधिमनान नर्टाठ कात् न सक्कोति । अलकतमीम पन छिन्दित्वा अञ्जितअक्वीनि उप्पारंत्वा हृदयमम वा उब्बन्तेत्वा दिश्वकाले बोधिसन्तान चाग नीस्साय तट्ठि नाम होति । अम्हार्काम्प हि बोधिसत्तस्म सिविजातके देवसिक पञ्चकहापणम्मणानि विस्सज्जेत्वा चतुम् द्वारेम् मञ्ज्ञे नगरे च दान देन्तस्म त दान चागतुर्टाठ उप्पादेतु नामक्तिव । यदा पतस्म ब्राह्मणवण्णेन आगन्त्वा सक्को देवराजा अक्बीनि याचि तदा तानि उप्पाटेत्वा ददमानम्मेव हासी उपारिज । कंसमामनाम्य चिन अञ्जयत्त नाम नाहामि । एव दान निस्माय बोधिमत्तान निन्ति नाम निन्ध । तस्मा सोपि महाप्रिसो सनाह मया कोटिसनसहस्सराखान भिक्ष्यून दान दातु बट्टनीति चिन्तेत्वा तस्मि [३३] मण्डपे निसीदापेत्वा सत्ताह गवपाण नाम दान अदासि ।

गवपाणिन्त महन्ते महन्ते कोलम्बे खीरस्स पूरेत्वा उद्धने आरोपेत्वा, घनपाकपक्के खीरे थोके तण्डुले प्रविक्वपित्वा, प्रवेकसयुसर्कराचुण्णसप्पीहिर अभिसेखट भोजन वच्चति ।

मनुस्सायेव पन परिविसितु नासक्लिसु । देवापि एकन्तरिका हुत्वा परिविसिसु । वारसतरसयो-जनप्पमाण ठानम्पि भिक्खू र्गाण्हतु नप्पहोसि येव । ते पन भिक्खू अत्तनो अत्तनो आनुभावेन निसीदिम् ।

परियोगार्नादवमे सञ्जभिक्ष्यन पत्तानि धोषापैत्वा भेसज्जत्वाय सप्पिनवनीतमधुफाणितादीनि पूरेत्वा तिचीवरीह मद्धि अदासि । मधनवकिभक्त्वना लद्धचीवरसाटका सतसहस्सम्धनका अहेसु ।

सत्था अनुमोदन करोन्तो-अय पुरिसो एवरूपं महादान अदामि । को न स्वो भविस्सतीति उपधा-रेन्नो अनागर्ने कप्पमतमहस्माधिकान द्विन्न असखेय्यान मत्थके गोनमा नाम बुद्धो भविस्सतीति दिस्वा महापूरिस आमन्तेत्वा त्व[33]एतक नाम काल अनिककमित्वा गोनमो नाम बुद्धो भविस्समीति व्याकासि ।

```
१ रो०-अन्तरा। २ रो०-पदकं मधुसदकरं।
```

महापुरिसो व्याकरण मुखा—अह किर बुढो भविस्सामि, को मं धरावासेन अत्यो, पन्वकि-स्सामीनि विन्तेत्वा तथारुप सम्पत्ति खेलपिण्ट विषय पहाय सत्यु सन्तिके पन्निजत्वा बुढववन उम्पण्हित्वा अभिञ्जा च समापतियो च निक्वतेत्वा आयुर्गरयोसाने ब्रह्माटोके निक्वति।

भगलस्स पन भगवनो नगर उत्तर नाम अहोति । पितापि उत्तरो नाम खतियो । यातापि उत्तरा नाम । सुरेवो च घम्मसेनो व ई अगमावका । पालिनो नाम उपट्ठाको । सीवली व अलोको व ई अगमावका । नागरका वे बात्रा को वो अट्ठासीतहरू कथे मरीर अहोति । नवृत्वस्मसहस्मानि ठला परिनिच्छ्न पे पन निम्म एक्प्यहारोते व दसवक्वाळसहस्मानि एक्प्यकारानि अहेमु । सब्बवक्वाळसु मनुस्मान महन्त आरोदन-परिदेवन अहोति .—

"कोण्डञ्जस्स अपरेन मगलो नाम नायको । तम लोको निहस्त्वाः अस्मोककमभिष्ठारयी" ॥ ति ।

ु ५ भगवा समनो

एव दसमहस्मीलोकथानु अन्यकार कर्त्वा परिनिब्द्युनस्म तस्म भगवनो अपरभागे सुमनो नाम सत्या उदगादि । तस्सापि तयो मावकमन्निपाना । पठममन्निपानं कोटिसतसहस्म भिवस् अहेमु । हुनियं कञ्चनपद्य-तम्हि नवनिकोटिसहस्मानि । नतिये असीनिकोटिसहस्मानि ।

तदा महामनी अनुलो नाम नागराजा अहोमि महिद्विको महानुनावो । मो बुद्धो [३८] उपपन्नोति मुखा शांतिमधपरिवतो नागभवना निक्वमित्वा कोटिसनसङ्स्प्रीभक्वपरिवारम्य तस्म भगवतो दिञ्जनरिवेहि उपहार करवा महादान दस्वा पञ्चेकं दुस्मयगानि दस्वा सरणम् पतिटटामि ।

सोपि न सत्था 'अनागने ब डो भविस्समीति' व्याकासि ।

तस्म भगवनो नगर खेम नाम अहोमि । मृदनो नाम राजा पिना । मिरिमा नाम माना । मरणा च भावितनो च अप्पनावका । उदनौ नामुपट्ठाको । सोणा च उपगोणा च अप्पनाविका । नागरूको बोधि । नव्तिहत्युरुषेभ मरीर । नव्तियेव बस्ससहस्पाति आयत्पमाणं अझोनि --

> "मगलस्य अपरेन मुमनो नाम नायको । सब्बयममेडि असमो सब्बसतानमृतमो"।। वि । [8+]

ं ६ भगवारेवतो

तस्म अपरभागे रेवतो ताम सत्या उदर्शाद । तस्मापि तयो सावकसन्निपाता । पठमसन्निपाते गणना नाम नत्यि । दृतिये कोटिमतसहस्मभिक्न अहेस् । तथा ततिये ।

तदा बोधिमनो अनिदेवो नाम बाह्यणो हुन्या सत्य धम्मदेमन मुन्या सरणंमु पितट्ठाय मिर्गस अञ्जाल ठवेरवा तस्म मध्यनो किलेमपहाणे वण्ण वत्या उननामगेन पुज अकामि ।

सोपि न बद्रो भविस्मसीति व्याकासि ।

तस्स पर भगवनी नगर थञ्जवनी ' नाम अहीसि । पिना विषुठो नाम खनियो । मानापि विषुठा नाम । वर्ष्णां च द्रहादेवो च अगमावका । सम्भवी नाम उपट्ठाको । भट्टा च मुभट्टा च अगमाविका । नागकक्षीय बोधि । सरीर अमीनिहत्युक्वेष अहीमि । आगु सट्ठिबस्ससहस्मानीनि ---

"सुमनस्म अपरेन रेवतो नाम नायको। अनुपमो असदिसो अनुलो उनमो जिनो"॥ नि ।

७ भगवा सोभितो

तस्म अपरभागं सोभितो नाम सत्था उदगादि । तस्सापि तयो सावकसन्निपाना । पटमसन्निपाने कोटिसत मिक्ख् अहेम् । दूतिये नवृति कोटियो । तितये असीति कोटियो ।

१ रो० – सुषञ्जवती ।

तदा बाधिसत्तो अजितो नाम ब्राह्मणो हृत्वा सत्यु धम्मदेसन सुत्वा सरणसु पतिट्ठाय बुद्ध-पमुखस्स भिक्तसुर्वस्स महादान अदासि ।

सोपि न बद्धो भविस्समीति व्याकासि ।

तस्स पन भगवतो नगर सुधम्म नाम अहोसि । पिता सुधम्मो नाम राजा । मातापि सुधम्मा नाम । असमो च सुनेत्तो च अग्गसावका । अनोमो नाम उपट्ठाको । नकुळा च सुजाता च अग्गसाविका । नागरुक्कोव बोधि । अट्ठपण्णासहत्युब्येथ सरीर अहोसि, नबुतिबस्ससहस्सानि आयुष्पमाणन्ति.—[३५]

"रेबतस्स अपरेन सोभितो नाम नायको। समाहितो सन्तचित्तो असमो अप्पटिप्ग्गलो"॥ ति ।

६८. भगवा अनोमबस्सी

तस्स अपरभागे एक असंखेट्यं अतिककिमत्वा एकस्मि कप्पे तयो बुद्धा निब्बत्तिसु अनोमदस्सी पद्मो नारदोनि।

अनोमदिस्सस्स भगवतो तयो सावकसिक्षणाना । पठमे अट्ठिभक्कुसनसहस्सानि अहेसु । दुतिये मत्त । नितये छ । नदा बोधिसत्तो एको यक्सबेनापनि अहोसि सहिद्धिको सहानुभावो अनेककोटि [35] सनहहस्माने वक्सान अधिपति । मो बुढो उपप्योति सुरता आगन्या बृद्धपमुक्तस्स भिक्कुसथस्स महादान अदागि । सन्यापि न अनागने बुढो भविस्सतीति व्याकासि ।

अनोमदिस्सिस्स पन भगवनो चन्दवनी नाम नगरं अहोमि । यसवा नाम राजा पिना । यसोघरा नाम माता । निसभो च अनोमो च अग्यसावका । यस्को नाम उपट्ठाको । सुन्दरी च सुमना च अग्यसाविका । अज्ज्यकत्कचो बोधि । सरीर अट्ठगञ्जासहत्युब्वेध अहोसि । बन्मसनसहन्म आयृति —

"सोभितस्स अपरेन सम्बुद्धो दिपदुत्तमो । अनोमदस्सि अमितयसोतेजस्सी दुरतिक्कमो" ॥ ति ।

९ भगवा पतुमो

तस्म अवरभागं पदुमां नाम सत्या उदगादि । तस्सापि तयो सावकसित्रपाता । पटमसित्रपात कोटियनसहस्स भिवत् अंद्रमु । [36] दुनिये नीणि सनसहस्मानि । तनिये अग्यमके अरञ्जे महावन-सण्डवामीन भिवत्नुन हे सनसहस्मानि ।

तदा तथागतं त्रीस्म बनसण्डं बसलं बोषिमनो मीहो हुन्या सत्थार तिरोधसमापीन समापन्न दिन्या पमश्रीवनो बीस्ट्रसा पदीव्यण कत्या पीतिसोमनस्सजातो निकवन्, मीहनाद तदित्या सत्ताह बुदा-रममणपीति अविज्ञहित्या पीतिमुक्तेनेव गोचराय अपकर्शमत्वा जीवितपरिच्याग कत्या पिट्रसा-समानो अट्टर्गित ।

मत्था मनाहरूबयेन निरोधा बृट्टिनो मीहं ओलोकेखा भित्रसूसधेपि वित्त पसादेखा सघ वन्दिरमनीति भित्रसूमधो आपच्छत्रनि विस्तेमि । भित्रसू नावदेव आर्गामसु । सीहो सथे वित्त पसादेसि । मन्या नम्म मन ओलोकेखा 'अनायते बढ़ो अविस्मगीति' व्याकामि ।

पदुमस्म पत भगवतो चम्पक नाम नगर अहोसि । असमो^र नाम राजा पिता । मातापि असमा नाम । मालो च उपनालो च अग्मसाबका । वरुणी नामुपट्ठाको । रामा च मुरामा⁷ च अग्म-साबिका । मोणरुक्वो नाम बोधि । अट्ठपण्डासहत्युब्बेध मरीर अहोसि । आयु वस्समतसहस्वति..--

"अनोमदस्सिस्स अपरेन सम्बुढो दिपदुलमो । पदुमो नाम नामेन असमो अष्यदिषुरगको" ॥ ति । [३६]

१ रो०-पदुमो। २ रो०-उपरामा।

९ १० भगवा नारदो

तस्स अपरभागे नाग्दो नाम सत्था उदपादि । तस्सापि तयो सावकसम्निपाना । पठमसिन्नपाने कोटिसतसहस्सभिवज् अहेर्मु । दृतिये नव्निकोटिसहस्सानि । तिनये असीनिकोटिसहस्सानि ।

तदा बोधिसत्तो इमिपब्बज्ज पब्बज्जित्वा पञ्चमु अभिञ्ञामु अट्ठमु च समापत्तीसु वसी हुन्या बुद्धपमुखस्स संघस्स महादान दत्वा चन्दनेन पूज अकासि ।

सोपि न अनागते बुद्धो भविस्ससीति व्याकासि ।

तस्स भगवती अञ्जयती नाम नगर अहोसि। मृदेशो[®] नाम स्रांतियो पिना। अनोमा नाम माता। महसाको च जिनमित्तो च अगसावका। वामेट्ठो नामुपट्ठाको। रुत्तरा च रुग्गुणी च अगसाविका। महासीणरक्षो नाम बोघि। सरीर अट्ठामीतिहन्युक्वेष अहोमि। नवृत्तिवस्म-सहस्वानि आपिन —

> "पदुमस्स अपरंन सम्बुद्धो दिपदुत्तमो। नारदो नाम नाग्नेन असमो अप्पटिपुरगलो"।। नि ।

§ ११. भगवा पद्रमुसरो ।

नारदबुद्धसः अपरभागे इतो मतमहस्मकप्पमत्यके एकस्मि कपो एकोव पद्ममृतरबुद्धो नाम उदपादि । तस्सापि तयो भावकसिभगता । पठमे कोटिसतमहस्सभिकम् अहेमु । इतियं वैभाग्यव्यते नवृतिकोटिसहस्सानि । तित्ये अमीतिकोटिसहस्सानि ।

तदा बोधिमत्तो जटिलो नाम महारर्ट्ठियो हुत्वा बुद्धपमुखस्स मधम्म तिबीवरदान अदासि । सोपि न अनागते अदो भविस्ममीति व्याकामि ।

पदुम्नरम्म पर्ने भगवतो काले निन्धिया नाम नाहेमु । सब्बं देवमनुस्सा न बुक्रमेव सरण अयममु । तस्म नगर हमवती नाम अर्गास । पिना आनन्दो नाम खनियो । माना मुजाना नाम । देवलो च मुजानो च अगमसावका । मुमनो नाम उपट्ठाका । अमिना च अममा च अगममाविका । साल्यक्ष्मो च बांचि । सरीर अट्ठामीनिङ्ग्युक्षेच अहोसि । मरीरप्पमा समन्ता । डादमयोजनानि गणिह । बस्म-मनमहत्म आर्थान ——

> "नारवस्म अपरेन सम्बद्धो दिपदुत्तमो। पदुमुत्तरो नाम जिनो अक्खोब्भो सागरुपमो"॥ नि ।

ु १२. भगवा सुमेधो

तस्स अपरभागं तिमकष्मसनमहस्मानि अतिकश्मात्वा मुमेधो मुजानो वाति एकस्मि कष्पे हे बुद्धा तिस्वतिमु ।

सुपेपस्मापि नयो मावक्पप्रियाता । पश्मसिप्रयाते मुक्स्मननगरं कोटिस्तः लीणासवा अहेसु । वृतिसं नवृत्ति कोटियो । ततियं अमीतिकोटियो । तदा बोधिसत्तो उनगे नाम [३०] माणवो हत्वा निदहित्वा उपितं यंव [३७] अमीतिकोटियन विस्सार्जेत्वा बुढम्मुबस्स मधस्म महादान दरवा धम्म सुत्वा सत्योषु पतिन्द्राय निवक्मित्वा पब्बाजि ।

सोपि न अनागते बुद्धो भविन्समीति व्याकासि ।

सुमेधस्स भगवतो सुरस्मन नाम नगर अहोसि । सुदत्तो नाम राजा पिना । मानापि सुरस्मना नाम । सरणो च सञ्चकामो च द्वे अग्यसावका । मागरो नाम उपट्ठाको । रामा च सुरामा च द्वे अग्यसाविका । महानीपरुक्को बोधि । सरीरं अट्ठासीनिहत्यु ज्वेघ अहोसि । आगु नवुतिवरसमहस्मानीति । ₹o जातकट्टकथा

> ''पदुमुत्तरस्स अपरेन सुमेघी नाम नायको । दुरासदो उग्गतेजो सञ्बलोकुत्तमो मनी" ॥ ति ।

९ १३ भगवा सुजातो

तस्स अपरभागं सुजातो नाम सत्था उदपादि । तस्सापि तयो सावकमन्निपाता । पठमसन्निपाते सर्टिभिक्ख्सहस्सानि अहेसु । दुतिये पञ्जासं । ततिये चनारीसं ।

तदा बोधिसनो चक्कवनी राजा हुत्वा 'बुढो उप्पन्नोति' सुत्वा उपसंकमित्या बम्मं सूत्वा बुद्धपमुखस्स सघम्म सद्धि सत्तिह् रतनेहि चतुमहादीपरज्ज दत्वा सत्थुसन्तिके पञ्चिज । सकलरट्ठवासिनो रट्ठुपादं गहेल्बा आरामिककिच्च सायेल्ता बुद्धपमुखन्स सथस्स निच्च महादान अदसु। सोपिन^० सत्था व्याकासि।

तस्स भगवतो नगरं सुमगळ नाम अहोसि । उग्गतो नाम राजा पिता । पभावती नाम माता । सुदस्मनो च देवो च अग्गमावका । नारदी नाम उपट्ठाको । नागा च नागसमाला च अग्गसाविका । महावेणुरुक्को बोधि। सो किर मन्दब्छिट्दो घनक्यन्थो उपरि माहासाम्बाहि मोरपिञ्जकलापो विय विगोजित्य । तस्म भगवतो सरीर पण्णासहत्युब्बेधं अहोमि । आयु नवृत्तिवस्मसहस्मानीति ---

"तत्त्र्येव मण्डकप्पम्हि सुजातो नाम नायको। सीहहन् सभक्खन्धो अध्यमेय्यो दुरामदो।।" ति ।

९१४ भगव पियवस्सी

तस्स अपरभागे इतो अट्ठारसकष्पसत्मत्थके एकस्मि कर्षा पियदस्यी अत्थदस्सी धस्मदस्सीति तयो बुढानिर्व्वात्तमु।

पियदस्सिस्सपि तयो सावकसन्निपाता । पठमे कोटिसतसहस्स भिक्ष् अहेमु । दृतियं नवृतिका-टियो । ततिये अमीतिकोटियोति ।

तदा बोधिसत्तो कस्सपो नाम माणवो तिष्ण वेदान पार गतीव हृत्वा मत्युधम्मदेसन सुत्ता कोटिमतमहस्मधनपरिच्चागेन [38] सधाराम कारेत्वा मरणेसु च मीलेमु च पतिट्ठामि ।

अथ न सत्था अट्ठारमकप्पसनच्चयेन बृद्धो भविस्मर्माति व्याकामि ।

तस्य भगवतो अनोम नाम नगर अहोसि । पिता मुदिन्नो नाम राजा ।

माता चन्दा नाम । पालितो च [२८] सब्बदस्सी च अग्गसावका । सीभितो नामुपट्ठाको । सुजाना च धम्मदिन्ना च अग्गमाविका । पिर्यंगुक्त्रस्वो बोधि । सरीर असीतिहत्थुक्त्रेथ अहोिम । नवृतिवस्ससहरमािन आयुनि ---

"मुजातस्स अपरंत सयम्भू लोकनायको । दुरासदो असमसमो पियदस्मि महायसो ॥"ति ।

§ १५ भगवा अत्थदस्सी

तस्स अपरभागे अत्यदम्मी नाम सत्या उदपादि । तस्मापि तयो सावकसन्निपाता । पटमे अट्टनबुनि भिक्ब्युमनसहरसानि अहेर्सु । दुनिये अट्ठामीतिसतसहरसानि । तथा तनिये ।

तदा बोधिसलो सुमीमो नाम महिद्धिकतापमो हुन्बा देवलोकतो मन्दाग्वपुष्फछल आहरिन्बा सत्थार प्रजसि ।

सोपि न बुद्धो भविस्सभीति व्याकासि।

तस्स भगवतौ सोभित नाम नगरं अहोसि । सागरो नाम राजा पिता । सुदस्सना नाम माता । सन्तो च उपसन्तो च अग्मसावका । अभयो नामुपट्ठाको । धम्मा च मुधम्मा च अग्मसाविका । चम्पकरुक्खो बोधि । १ गे०-सोपि तं व्याकासि ।

दूरेनिदानं ३१

मरोर अमीतिहत्युब्वेधं अहोमि । सरोरप्पभा समन्ततो मञ्ज्यकारु योजनमत्त फरिन्वा अट्ठासि । आयु वस्सस-तसहस्मन्ति —

> "तत्थेव मण्डकप्पम्हि अत्थदम्सी नरासभो । महानम निहन्त्वान पत्तो सब्बोधिमन्तम" ।। न्ति ।

६१६ भगवा घम्मवस्सी

तस्स अपरभागं घम्मदस्सी नाम सत्या उदरादि । तस्सापि तयो सावकसन्निपाना । पठमे कोटिसत भिक्कु अहेनु । दुनिये सन्ति – कोटियो । ततिये असीति कोटियो । तदा बोधिसन्तो सक्को देवराजा हुन्या दिख्यनस्पूष्केहि च दिख्यतुर्ग्यिह च पूजं अकासि ।

सोपि नं व्याकासि ।

तस्म भगवनो भरण नाम नगर अहोसि। पिता सरणो नाम राजा। माना सुनन्दा नाम। पढुमो च कुरमदेवा च अगमावका। मुनेनी तामपुद्शको। खेमा च मखनामा च अगमाविका। रत्तुर-वरुरम्ने वोधि विभिन्नालो निधि चुच्चिन। सरीर पनस्स अमीतिहरणुक्केथ अहोमि। चस्समतमहस्स आयिन---

> "तत्थेव मण्डकप्यम्हि धम्मदस्सि महायसो। तमन्धकार विधमेत्वा अतिरोचित सदेवके"॥ ति । [39]

६ १७ भगवा सिद्धत्यो

तस्य अरत्मार्थं ३ती चनुनवृतिकप्पमत्यके एकस्मि कप्पे गुकोब सिद्धन्थो नाम युद्धां उदगादि । तस्मापि तथो भाषकमाभिपाता । पटममाभिपाते कोटिसनसहस्य भिषक् श्रेष्टमु । दुनियं नचुनि कोटियो । तनियं अमीनि कोटियो

तदा बोधिमनो उग्गतेजो अभिञ्ञाबलसम्पन्नो मगलो नाम तापसो हुत्वा महाजम्बुफल आह-रित्वा तथागतस्य अदासि ।

सत्था त फल परिभृज्यित्वा चतुनबृतिकष्पसत्यके बृद्धो भविस्मगीति [३९] बोधिमत व्याकासि । तरस भगवर्गे तगर बेगर नाम अहोति । तिना वयसेनी नाम राहा । माना सुक्रमा नाम । सम्बह्नो च सुमिनो च अगमानका । रेवतो नामुग्स्टाको । सीचले च मुरामा च अगमाविका । कणिकार-कवाँ बोधि । सरीर नहींक्रहपुंबेच अहोति । बस्माननहस्म आयोति —

''धम्मदरिसस्स अपरेन सिद्धत्थो नाम नायको । िनिहनित्वा तम सब्ब सुरियोयबभुगतो यथा'' ॥ ति ।

🖇 १८ भगवा तिस्सो

तस्म अवरमागे उनी डानबुनिकप्पमयके तिस्मो पुम्मोनि गुर्कास्म कृप्ये हे बुडा निर्व्वातसु । निम्मस्म भगवनो तथो मावकमीन्नपाना । पठममीन्नपाने भिनवून कोटिसत अहोसि । दुनियं नवुनि कोटियो । ननियं असीति कोटिको ।

तदा बांधियनो महाभोगो महायमो सूजातो नाम खितयो हत्वा इत्तिपब्बज्ज पर्व्याज्याना महिद्धिक-भाव पत्वा बुद्धो उपप्रोति मुख्य दिख्य मन्दारवपटुम परिच्छनकपुष्फानि व आदाय चनुपरियमञ्जे गच्छल तथामतं पुर्जेसि, आकासे पुष्फीवतान अकासि ।

सोपि न सत्था इनो द्वे नवुतिकप्पे बुढो भविस्ससीति व्याकासि ।

तस्य भगवतो श्रेम नाम नगर अहोसि । पिता जनसन्धी नाम बनियो । माना पद्मा नाम । ब्रह्मदेवो च उदयो च अस्पसादका । सम्भवो नामुपट्ठको । पुस्सा च मुदना च अस्पमाविका । अमनन्त्रवी बीधि । सरीर सट्ठिहुन्युकोश अहोसि । बस्समतसहस्स आयुति:-- "सिद्धत्यस्म अपरेन असमो अप्पटिपुग्गलो। अनन्तसीलोअमिनयसो निस्मोलोकग्गनायको"॥ ति।

§ १९. भगवा फुस्सो

तस्स अपरभागं फुस्सो नाम सत्या उदपादि । तस्सापि तयो मावकसन्निपाता । पठमसन्निपाते सट्-ठिभिक्त्वमनमहस्सानि अहेस् । दुनियं पण्णास, तनियं र्डान्तस ।

तदा बोधिसनो विजिनावी नाम खत्तियो हत्वा महारूज्य पहाय सत्युसन्तिके पञ्जजित्वा तीणि [40] पिटकानि उत्पहेत्वा महाजनस्म धम्मकय कथेसि । सीलपारीम च पूरेसि ।

ँसोपि नंबद्धो तथेव व्याकासि ।

नस्स भगवतो कामि नाम नगरं अहोसि । जयमेनो नाम राजा पिता । सिरिमा नाम माता । सुरिक्ष्यतो च धम्मसेनो च अग्गसावका । सिभयो नामुपट्ठाको । चाला च उपचाला च अग्गसाविका । आमलकरुक्यो बोधि । सरीर अट्ठणणासहत्युक्षेष अहोसि । नवतिवस्समहस्सानि आयृति ——

"तत्थेव मण्डकप्पम्हि अहु सत्था अनुनरो । अनुपमो असमसमो फस्मो लोकग्गनायको" ।। ति । [४०]

§ २० भगवा विपस्सी

तस्स अवरभागे इतो एकतबृतिकष्पे विषस्सी नाम भगवा उदयादि । तस्सापि तयो सावकसन्निपाता । पठममन्निपाते अटठसट्टि भिक्कसनसहस्म अहोमि । दुतिये एकसनसहस्य । ततिये असीति सहस्सानि ।

पठनमात्रपार न्यूट्याच्छा पत्रपुराचाकत्त श्रहामा पुराच प्राचाराह्या राजान स्वापार स्वर्णामा व तदा बीधिमनो महिद्धिको महानुभावो अनुलो नाम नागराजा हृत्वा मत्तरननस्वित सोवण्णमय पीठ भगवनो अदामि ।

सोपि न इतो एकनवृतिकव्ये बद्धो भविस्मसीति व्याकासि ।

तस्स भगकनो बन्धुमती नाम नगर अहोनि । बन्धुमानाम राजा पिना। बन्धुमती नाम माना। खण्डो च निम्मो च अपमाबका। असोको नामुपट्ठाको। चन्दा च चन्दीमना च अपमाबिका। पाटकीरुक्ष्मो बीचि । सगैरे अमीनिहत्युक्वेय अहोमि। सगैरण्यमा मदा सनयोजनानि फरिय्वा अट्ठासि। अमीनिवस्स-सहस्यानि आयुर्गि —

> "फुस्सम्स अपरेन सम्बुद्धो दिपदुत्तमो । विषस्मीनामनामेन स्रोके उप्पण्जि चक्क्सा ॥" ति ।

६ २१. भगवा सिखी

तस्म अपरभागे इतो एकतिमे क्ष्ये सिखी च वेस्मभू चाति हे बुद्धा अहेसु ।

सिविस्सापि तयो सावकमन्निपाता । पठमसन्निपाते भिक्कुमनसहस्म अहोसि । दुनिये असीनि-महस्मानि । तनिये सत्तनि ।

नदा बोधिमनो अरिन्दमो नाम राजा हृत्वा बृद्धपमुखस्स मधस्स सवीवर महादान पवनेत्वा मनरननपतिमण्डिन हत्थिरतन दत्वा हत्थिपमाण करवा कांप्यमण्ड अदासि ।

मोपि न इतो एकतिमे कप्पे बद्धो भविम्समीति व्याकासि ।

नम्म पन भगवनी अरुवावनी नाम नगर अहोसि। अरुवानाम सन्तियो पिता। पभावती नाम माता। अभिभू च मस्त्री च अयापासका। स्रेमकरो नामुप्टठाको। मिक्किला च पदुमा च अयासाविका। पुष्टरी-करूबसो बोबि [41] मरीर सन्तिनमहत्युक्वेथ अहोमि। सरीरप्पभा योजनन्तयं फरिरदा अट्ठासि। सन्तितस-बस्सबहुस्सानि आधूनि ---

> "विपस्सिस्म अपरेन सम्बुद्धो दिपदुत्तमो । सिखिह् वयो नाम जिनो असमो अप्यटिपुग्नलो ॥" नि ।

§ २२. भगवा वेस्सभ्

नस्स अपरभागं वेसमभ् नाम सत्या उदयादि । तस्सापि तयो सावकसन्निपाना । पठमसन्निपाने अमीति-भिवत्यसनसहस्सानि अहेस्ं, दुनिये सत्तति, तनिये मर्टाठ ।

तदा बोधिसती सुदस्सती नाम राजा हुत्वा बुढगमुगम्म सथस्स सबीवर महादान दत्वा तस्स सतिके पथ्बितता आचारगुणसम्पत्नी बुढननो चित्तकारपीतिबहुको अहोसि । सोपि न भगवा इतो एकतिसे कप्ये बुढो भिद्यस्तिति व्यासिति

तस्स पन मगवती अनूषम नाम नगर अहोसि । मुप्पतीतो नाम[४१]राजा पिता । यमवती नाम माता । सोगो च उसरो च अग्गसावका । उपसन्तो नाम उपहठाको । दामा च समाला च अग्गमाविका । सालकक्यो बोधि । सरीर सहठिहल्युव्वेध अहोसि । सहठिवस्ससहस्सानि आधृति:---

. "तत्थेव मण्डकप्पम्हि असमो अप्पटिपुग्गलो । वेस्सभ नाम नामेन लोके उप्पज्जि सो जिनो ॥" नि ।

९२३. भगवा ककुसन्धो

तस्य अगरभागे इमस्मि कथ्ये चतारो बुढा निब्बला—ककुमन्थां, कोणागमणी, कस्सपो, अम्हाक भगवाति ।

ककुसन्धस्म भगवतो एकोव सन्निपातो । तत्य चलाळीस भिक्त्युसहस्मानि अहेसुं ।

तदा बोधिसनो खेमी नाम राजा हत्वा बृद्धपमुखस्म संघम्म मपलवीवरं महादानञ्चेव अञ्ज-नादि भेसज्ज्ञानि च दत्वा मत्युधम्मदेमनं मूरवा पर्व्याज ।

गोपि नं मत्या व्यक्ति । कनुसन्धस्म पन भगवनो क्षेत्रं नाम नगरं अहीमि । अग्विदत्तो नाम-बादाणो पिता । विसाला नाम बाह्यणी माता । विष्ठुरो च संजीवी च अग्वतावका। बृद्धिको नाम उपट्ठाकी। गमा च चन्दका च अग्वाविका । महामिरीमतक्यो बोषि । गरीरं चताळीमन्यृब्वेष अहोमि । चनाळीसं वस्स-सळ्लानि आर्यान ——

> '''वेस्मभुस्स अपरेन सम्बद्धो दिपदुत्तमो । ककुसन्धो नाम नामेन अध्यमेथ्यो दुरासदो ॥'' ति ।

६२४ भगवाकोणागमणो

त्रस्त अराज्यातं कोशात्मवर्णा नाम सत्या उद्यादि । तस्यापि एको मावकसन्नियानो । तस्य निम्म सिक्समहामानि अहेर्यु । वादा बोधिमती पकतो नाम राजा हुन्या अवस्थाणवरिष्ठां सत्यमन्तिकं गत्म्या धम्मदेसमं सुत्या बुद्धपम्य भिक्समुंधं निमन्तेत्वा महादानं पवनेत्या पनुष्यं चीनपट्टं कोमेर्प्यं कम्बलं दुक्तरानि येव सुवणणद्ट्यं दत्या सत्यानिकं पत्यजी ।

मोपि नं व्याकामि ।

4

तस्म भगवतो मोभवती नाम नगरे अहोसि । यञ्जादत्तो नाम ब्राह्मणो फिना । उत्तरा नाम ब्राह्मणी माता । भीयमो च उत्तरो च अगमावका । मोखिओ नामुपट्ठाको । समृहा च उत्तरा च अग्य-साविका । उदम्बररुस्यो बोधि। सरीरं तिसतिहत्युक्षेत्रं अहोसि । तिसवसमहस्मानि आयृति —

> "ककुमन्धस्स अपरेन सम्बुद्धो दिपदुत्तमो। कोणागमणो नाम जिनो लोकजेट्टो नरासभो॥" ति ।

§ २५ भगवा कस्सपो

तस्स अपरक्षागे कम्मपो नाम मत्या लोके उदपादि। नस्मापि एको मावकमन्निपातो। तत्य वीसतिभित्रवसुसहस्मानि अहेर्मु। तदा बोधिमतो जोतिपालो नाम माणवो हुत्वा [४२] तिष्णं बेदानं पारमू भूमिर्गं व अनाळिवल्ले च पाकटो घटीकारम्स कुम्भकारम्स मित्तो अहोमि । सो नेन सिद्ध सत्यारं उपनकमित्वा घम्मकर्थ सुत्वा पळ्यकित्वा आरद्धविरियो तीणि पिटकानि उग्गहेत्वा बत्तावत्तसम्पत्तिया बृद्धसासनं सोभेषि ।

सोपि नं सत्था व्याकासि ।

तस्स भगवनो जातनगरं बाराणसी नाम अहोसि । ब्रह्मदत्तो नाम ब्राह्मणो पिना । धनवती नाम ब्राह्मणी माता । निस्सो च भारहात्रो च अग्मसावका । सब्बमितो नाम उपट्ठाको । अनुला च उद्देला च अग्मसाविका । निशोधकार्यो बोधि । सरीरं वीसनिहत्युन्तंयं अहोसि । बीसनीबस्मसहस्मानि आयुनि —-

> "कोणागमणस्म अपरेन सम्बद्धो दिपदुत्तमो। कस्सपो नाम सो जिनो धम्मराजा पर्मकरो॥" नि ।

९२६ सब्बेब्द्वा

र्यास्य पन कर्ष दीपकरसम्बन्धे उरपादि तस्मि अञ्जेषि तयो बुद्धा अहेतुं । तेसं सित्तका बोधि-सत्तस्स व्याकरणं नित्य, [43] नस्मा ते ६६ न दिम्मिना । अट्ठकथार्यं पन तम्हा कष्पा पट्ठाय सब्बंधि बुद्धे इस्मेतुं दर्शं वर्गं —

> ''तण्डकरो मे बंकरो अथोपि सरणंकरो । दीपंकरो च सम्बद्धां कोण्डञ्जो दिपदत्तमो ॥ मंगलोच समतो च रेबतो सोभितोमित । अनोमदस्सी पदमो नारदो पदमचरो ॥ सुमेश्रो व सुजाती च पियदस्मी महायसी । अत्थदम्सी धम्मदस्सी सिद्धत्था लोकनायको।। तिस्सो फम्मो च सम्बद्धो विपस्सी सिखी वेस्सभ । ककमन्धो कोणागमणी कस्सपो चापि नायको ॥ एते अहेम् सम्बद्धा वीतरागा महातम्बिनोदना । उपन्ना जिल्ला अभिक्षिक्षाय निब्बता ते ससावका॥"ति।

⁶ २७ कताभिनीहारानं बोधिससानं आनिसंसा

तस्य अम्हाकं बोधिमनो दीपकरादीनं चनुकोसनिया बुढानं मन्तिकं अधिकार करोन्नां वर्णमन-महस्माधिकानि चर्चारि अमवेय्यानि आगनो। कस्मयस्स पन भगवती ओरभागे ठपेन्या इम. सम्मासम्बुद्धं अञ्जो बुढो नाम नस्यि। इति दीपकरादीनं चनुवीसनिया बुढान सन्तिकं लढ्ढयाकरणो पन बोधिमन्तो येन पन मेन---

> "मनुस्सनं जिंगसम्पत्ति हेतु मत्थारदम्सन । पथ्यज्ञा गृणसम्पत्ति अधिकारो च छन्दता ॥ अट्ठधम्मसमाधाना अभिनीहारो समिज्यती ॥" ति । [४३]

इमें अट्ठ धर्म समीपानेत्वा दीर्थकरमादमुरु कर्ताभितीहारेन "हरद बुढकरे धर्म विचिनामि इतो-चिनो" नि उम्माहं करवा "विचिन्नो तदा दीस्च पटमं दानपारिम" नि दानपारिनादयो बुढकारकथस्मा दिट्ठा । ते पूरेन्नो यात्र वैस्मानरत्नभावा आसमि। आगच्छनो वं से ने करामिनीहारानं बोधिमत्तातं आनिसमा संबोधकार---

१ स्या०--पुस्सो० । २ रो०--व ।

"एवं सब्बंगसम्पन्ना बोधिया नियना नरा। दीघमद्वानं कप्पकोटिसतेहिपि ॥ अवीचिम्हिन उप्पज्जिन्ति तथा लोकन्तरेम् च। निज्ञामनण्हा खुप्पिपासा न होन्ति कालकञ्जका ।। न होन्ति खुद्दका पाणा न उप्पज्जन्तापि दुग्गति । जायमाना मनुस्सेम् जच्चन्धान भवन्ति ते ॥ [44] सोतबेकल्लता नित्यंन भवन्ति मूगपक्लिका । इत्थिभाव न गुरुछन्ति उभनोव्यञ्जनपण्डका ॥ न भवन्ति परियापन्ना बोधिया नियनानरा। मत्ता आनन्तरिकेहि सब्बत्थ मुद्धगोचरा ॥ मिच्छादिटिं न सेवन्ति कम्मकिरियदस्मना । वसमानापि सरगेसु अर त्रं न उपपञ्जरे ॥ सुद्धावासेस् देवेस् हेस् नाम न विज्ञाति । नेक्यम्मनिका सप्रिमा विसयना भवाभवे । चर्यान लोकन्यचरियाय पुरेन्ता मध्वपारमी।।" ति ।

५२८ पारमियो पूरेसि

(१ दानपारभी)

तं आनिमंसे अधियानवाब आगतो । पार्यमधो पूरत्वस्स वस्स अकितिबाहाणकाले, संब-बाह्यणकाले, पन्तरुवरानकाले, महासुदस्यककाले, सहमोतिकदद्दाले, तिमिमहारानकाले, वन्दकुमारकाले, विस्त्यन्त्रेट्टिकाल, गिवरानकाले, बेक्सनरकालेनि दानगार्यमताय पूरितनभावान गरिमाण नाम नत्थि। एकतनेन पनस्य समर्गणवतनाको

'भिक्तवाय उपगतं दिस्वा सकतानं परिच्चित । दानेन में समो नत्थी एस। में दानपारमी।।'' ति । एवं असपरिच्चानं करोल्सस दानपारमिता परमत्थपारमिता नाम जाता ।

(२ सीलपारमी)

तथा मोलवनागराजकाले, नम्पेय्यनागराजकाले, भृरिदानागराजकाले, छहन्नागराजकाले, जयहिम [४४] राजस्म पुनाअलीनसन्कुमारकालेविर् सीलपार्यमताय परिपृरितनभावाने परिमाणे नाम निर्य । एकस्वेत पनस्म संख्यारुजातके ---

> "मुलेहि विज्ञयस्तेषि" कोट्टयस्तेषि सनिहि । भोजपत्ते न कृपामि एसार्थमें सीलपारभी॥" ति ।

एव अनुपरिच्चार करोन्तस्य मीळपारमिता परमन्यपारमी नाम जाता ।

(३ नेक्खम्मपारमी)

तथा सोमनस्यकुमारकाले, हस्थिपालकुमारकाले, अयोघरपण्डिनकालेति महारज्ज पराय नेक्यस्म-पारमिनाय पुरितनभावान परिमाणे नाम नन्त्रि । एकल्नेन पनस्य चूळमुनसोमजातके —[45]

१ स्या०-कालकञ्जिका । २ स्या०-जयदिस्सराजपुत्तकाले अलीनमत्तकुमारकालेति । ३ रो०-मुलेशीय विज्ञयन्तो । ४ रो०-एस ।

"महारञ्ज हत्यगतं संक्षिपण्डं व छड्डिया । चजतो न होति लग्गनं एसा में नेक्सम्परारमी ॥" ति । एवं निस्मयताय रञ्जं छड्डेला निक्समन्तस्स नेक्सम्परारमी परमत्यपारमी नाम जाता ।

(४ पञ्जापारमी)

तथा विश्रृपण्डिनकाले, सहागोविन्दपण्डितकाले, कुट्टाल्पण्डितकाले, अरक्षपण्डितकाले, बोधिप-रिख्याजककाले, महोमथपण्डितकालेलि, पञ्जापारीमया पूरितत्तभावानं परिमाणं नाम नत्थि । एकन्तेन पनस्स सन्भन्तजानके सेनकपण्डितकाले —

> "पञ्जाय विचिनन्तोह ब्राह्मणं मोचिय दुखा। पञ्जाय में समो नित्य एसा मे पञ्जापारमी।।" ति । अन्तोङ्स्तानं मध्यं दस्सेन्तस्य पञ्जापारमी परमत्थपारमी नाम जाता।

(५ विरियपारमी)

तथा विरियपारमितादीनिम्प पूरिनत्तभावानं परिमाणं नाम नित्य । एकन्तेन पनस्स महाजनकजातके ---

"अतीरदस्सी जलमज्झे हता सब्बेब मानुसा। चित्तस्स अञ्जया नित्य एमा में विज्यिपारमी।।" ति । एवं महासमृहे तरन्तस्स विज्यिपारमी परमत्यपारमी नाम जाता ।

(६ खन्तिपारमी)

स्रन्तिबादजातके —

''अचेतन व कोट्टेन्ते तिष्हेन फरमुना सम । कासिराजे न कुष्पामि एसा मे व्यन्तिपारमी ।। '' ति । एवं अचेतनभावेन विय महादुक्षं अधिवामेन्तस्स बन्निपारमी परमत्वपारमी नाम जाता ।

(७ सञ्चपारमी)

महासुतसोमजातके —

"सच्चवाचं अनुरस्थन्तो चिजन्ता मम जीविनं। मोचिय एकसनं बिनिये एसा में सच्चपारमी ॥" नि । [४५] एवं जीविन चिजन्ता सच्चमनुरस्थन्तस्स सच्चपारमी परमत्यपारमी नामजाता।

(८ अधिद्वानपारमी)

मृगपक्खजातके ---

एक राजजातके ---

"माना पिता न में देस्सा निंप में देस्सं महायमं। सम्बष्टतुर्न पियं मय्हं तम्मा बतमधिट्ठहि॥" निन । एवं जीविनिम्प बजित्वा बनं अधिट्ठहन्नसः अधिट्ठानपारमी परमस्थपारमी नाम जाता।

(९ मेलापारमी)

"न मं कोचि उत्तसति निषहं भायामि कस्सचि । मेलाबलेनुमन्यढो रमामि पक्ने सदा॥" ति । एवं जीविनाम्प अनवलोकेत्वा मेलायन्तस्म मेलापारमी परमत्यपारमी नाम जाता ।

१ सततुभत्त ।

(१०. उपेक्खापारमी)

लोमहंसजातके.---

"सुसानं सेय्यं कप्पेमि छवट्ठि^९ उपधायहं।

गोमण्डला उपगन्त्वा रूपं दस्सेन्तनप्पक ॥" न्ति ।

एवं गामदारकेषु निट्ठुभनादीहि चेव मालागन्धुपहारादीहि च सुखदुक्लं उप्पादेन्तेमुपि उपेक्खं अनितवत्तन्तस्स उपेक्खापारमी परमत्थपारमी नाम जाता ।

अयमेत्य संक्षेपो । वित्थारतो पनेस अत्यो वरियापिटकतो गहेतच्यो । एवं पारिमयो पूरेत्वा वेस्सन्तरत्तमावे ठितो.---

. ''अचेतनायं पठवी अविञ्ञाय सुखं दुखं।

सापि दानवला मण्हं सत्तकत् पकम्पया ॥" ति । एव महापठिकम्पनानि महापुञ्जानि करित्वा आयुपरिपोसाने ततो चुनां नुसितभवने निब्बत्ति । इति दीपैकरपादमुकतो पट्ठाय यात्र अयं नुमिन् : निब्बत्ति एतकं ठानं दुरैनिदानं नामाति वेदितब्बं ।

बूरेनिवानं निट्ठित

४. अविद्रेनिदानं

§ २९ तीणि हळाहळानि

नुमिनपुरं वसन्ते येव पन बोधिससे बुढहळा^२हळ नाम उदपर्गद । लोकस्मि हि नीणि हळाहळानि उपपञ्जलि——कपाहळाहळं, बुढहळाहळं चवकवत्तिहळाहळिना ।

(१ कप्पहळाहळ)

तत्त्र्य वस्तमनसहस्यस्य अन्यतेन कणुट्ठानं भविस्यतीनि लोकख्दृहा नाम कामावचरदेवा मुक-सिना विकिणनेवा ध्वस्मूखा अस्पूति हरवेहि पुष्टक्षमाना नमवस्यनिकत्या क्रिनियम विकणवेषमानिनो हरवा मनुस्तापये विवस्तन्ता एवं अरोजिन—"बारिया" दिनो वस्तमनहरहस्यम अवस्येन कणुट्ठाना भविस्यति। अर्थ लोको विनिक्तस्यति। महासमुदोषि [47] गुस्तिस्यति। अर्थ व महापद्यती सिनेच व पव्यतमाना उइरिक्ट्सिन्त विनिक्तस्यति। यात्र बद्धालोगा लोकविमानो भविस्यति। मेसे मारिया ! भावेष । कर्षण मुदिनं जोक्यो मारिया ! भावेष । मान्य उत्यद्धस्य प्रिनरं [४६] उत्युट्टह्य कुलेजेट्टार-वायिनो होषा ति। इर्ष कण्यस्त्राह्यं नाम ।

(२ बुडहळाहळ)

वस्ससहस्सस्स अञ्चयेन पन सन्बञ्जू बृद्धो लोको उप्पज्जिस्सतीति लोकपालदेवता—'इतो मारिसा! बस्ससहस्सस्स अञ्चयेन बृद्धो लोको उप्पज्जिस्सतीति उग्धोसेन्ता आहिण्डन्नि-इदं बृद्धह्याहळं नाम ।

(३ चक्कवत्तिहळाहळ)

१ रो०-छवट्ठिकं । २ मुद्रकोलाहलं ।

६३० देवतायाचनं

हमानि तीमि हळाहळानि महत्तानि होत्ति । नेमु बुढहळाहळाहं मुख्य मकळहममहत्त्मवकवाळे देवता गुरुतो मान्निपतित्वा अपुष्ठो नाम सत्तो बुढो भिवस्त्वनीति अत्यान ते उपसंगित्वता आयाचिता आयाचाना। च पुर्वानिमित्तेमु उपपन्नेमु आयाचित्व । तदा पन सत्वापि ना । गुकेकचकवळ आनुम्महागितकसुमामसत्त्रीस्तित्वत्व त्याचित्व क्षाचित्तहास्त्रामित्व तिस्मानत्त्रतित्व त्याचित्व क्षाचित्तहास्त्रति । स्वित्व गुक्तव्यक्ष्यतित्व त्याचित्व वे बोधियत्तस्य सित्तकं गत्वा—माग्निमा । बुग्हेहि दमपाग्निमो पुरेन्तिह न सक्कमप्यति न भागब्रह्मचक्कवित्वस्यत्ति त्यवे-नतिह पुरित्या । लोकिस्तियाण्याया पन स्वयञ्चपं पत्येनीह पुरित्या । मो बो डदानि काळो माग्निम ! बुढनाय । समयो भाग्नि ! बदलाया नि-वासित्य ।

६३१ पञ्चमहाबिलोकनं विलोकेसि

अष्ट महासत्तो देवतानं पटिञ्जं अदत्वाव कालदीगरेमकुळजनेतिआयुपरिच्छेदवेगेन पञ्चमहावि-छोकन नाम विलोकेसि ।

(१ कालो)

तत्थ कालो नुखो अकालो नुखो ति पठमं कालं विलोकेसि । ९

नत्थ बस्ममनसहस्मनो उद्ध बर्श्वनआयुकालो कालो ताम न होनि । करमा ' तदा हि सनानं जानिजरामरणानि त पञ्चायनि । बद्धान च धम्मदेसना विलक्ष्वणविनिमन्ता नाम निश्च । तन ''अनिरूष दुश्वमनत्ता' नि कर्गन्तानं कि 'नामेन कथेलीनि नेव मोनध्य न प्रदानक्ष मञ्जालि । तसी अधिगसर्या न होति । तमिन अर्मान अनिज्याणिक गामक होति । तस्सा मो अद्यालो ।

वस्ममानते उनजायुकालोपि कालो न होति । कस्मा ? नदा मना उस्मयकिल्मा होत्ति । उस्पत्र किलेमान च दियोवादा ओवादरुशने न निर्श्शेत । उदके द्रण्टरात्री विश्व विश्व [वैश्व] वित्तक्ष्टीत । तस्मा-सोपि अकालो ।

वस्मसनमहस्मतं पन पट्टाप हेट्टा वस्समनना पट्टाप ग्रह आयुकालो कालो नाम । नदा च वस्ससनकालो । अय महामनो निब्बन्तिन्वकालानि पस्मि ।

(२ बीप)

ननी दीपं निकोकेस्तो मपरिवारं चत्तारो दीपं ओळोबेस्वा तीमु दीपेसु बुद्धा न निब्बत्तस्ति, जम्बदीपं येव निक्बसस्तीनि दीप च परिग ।

(३ देसो)

ननो जम्बुरीमो [८७] नाम महा दमयोजनसहस्परिमाणो । कनर्गस्म नृश्रो पदेन बढा निब्बन्तिनीत ओकसमित्र विज्ञोंबेन्ना मस्त्रिम देम पस्मि । मिज्यमदेसो नाम पुरस्थिमदिसाय कश्यक नाम निममो, तस्म अपने महासाका ननो एउँ पच्चित्तमा जनगदा ओप्यो, मज्ये पुरुद्धिसम्बाध दिसाय सळल्वती नाम नदी. नतो पर पच्चित्तमा जनपदा औरनो मज्ये, दिस्प्वाधाय दिसाय नंत्रकाण्यक्तं नाम निममो, ततो पर पच्चित्तमा जनपदा औरनो मज्ये, पांच्याय दिसाय युने नाम ब्रह्मणमामा, ततो परंपच्यत्तिमा जनपदा औरनो मज्ये, उत्तराय दिसाय उसी दुक्की नाम पद्धनी, तनो परंपच्चित्तमा जनपदा

१ रो०-नुको वि ।

ओरतो मज्बति एवं विनये बुत्तो परेमो । सो आयामतो तीणि योजनसतानि विस्वारतो अङ्शीतययोजनानि परिनक्षेपती नवयोजनसतानीति । एतस्मि परेमे बुद्धा पञ्चेकबुद्धा अग्यसायका महामायका असीति महासायका जनकबितराजानो अञ्जे च महेसभका अनियकाद्वाणाग्रपतिमहासाद्धा उप्यज्जन्ति ।

इदं चेत्थ कपिलवत्थक नाम नगर । तत्थ मया निव्वत्तितव्वन्ति निटटं अगमासि ।

(४ कुछं)

तनो कुल बिलोकेन्सं बुद्धानाम बेस्मकुले या मुहकुले वा न निब्बतील । लोकसम्मत ।न स्वानयकुले वा ब्राह्मणकुले बानि क्षित्र वेब कुलेमु निब्बत्तीत । इदानि च चानियकुलं लोकसम्मत । नत्थ निब्धानिस्मामि

मुद्रोदरी नाम राजा में पिता भविस्मतीति कुछ परिसा। तती मातर विछोकेती बुद्धमाता नाम लोला मुराधृत्ता न होति, कपसतमहस्सं पत पूरित्वपारमी जातिनो पर्टाय अमण्डपञ्चमीलायेव होति। अमञ्च महामाया नाम दंदा एदिसी, ... व मे माता भविस्मतीति।

(५ जनेत्तिआयु)

कित्तकं पनस्मा आयति ? दसन्न मामान उपरि सत्तदिवसानि पस्सि ।

६३२ पटिसन्धिं गण्हि

दिन २म पञ्चमहाविकांकन विकांकेत्वा-कालों में मारिया! बुद्धभावायानि—-देवनान गयह करोन्नों परिच्छ ब्या गच्छव नुहाँदित या देवना उपयोदेत्या तृष्ठिमतंदेवनाहि परिच्छों तृष्टिमक् रूप ने स्वतं वार्षित । सख्य-देवकोकेनु हिनस्दम्बनं अध्यिवं । तम न देवना 'देनों पुनी मुनीत गच्छा' ति तृष्ट्ये करकुमतंद्रकामोकार [48] मारियाना विचारिक में गण्ये देवनाहि कुमले मारियानाहित दिवसों तत्व्य विचारतों चित्या महामायाव देविया कुच्छोरिय परिचार्य त्रीष्ट्र। नाम्मायोग्नात्व प्रथा आनुत्वी कथा ।

🖇 ३३ महामायादेवी सुपिन अहस

नदा किर कपिणवन्यनगणे असाल्हिनसम्मतं पुर्ठं अर्हामि । महाजनो तक्क्यं कीर्यंति । महामध्या-देवी पुरं पुण्णमाय सममदिकानो पर्ठाव[४८]विधनसुरागान माणान्यविक्षृतिसमण्ड सम्बन्धीळ अनुभवमाना सममदिक्षे पानीच उद्धाय राधीदवेन नहायिक्या बनारि सनसहम्मानि विक्सारकेखा महादान द्वन्या सब्बा-कंडारविक्षृतिनता वरभोजने भृष्टिजनवा उपोक्षयोगि अधिद्याय अलकनपटियसं निरिम्बर्भ पविमिन्वा विद्यायवित्तपात्रा विद् ओक्कममाना धर्म मुफ्ति अहत ।

चलारों किर ने महाराजाना गश्नेनव साँछ उक्तिषांवता हिमयनों नेत्वा मर्द्िगांजीवर्क मनोगिकाति के सत्त्रायोजिकम्म महाराज्यसम्म हेट्टा ठरेखा एकानते अट्टेमु । अब नेने बीबयो आगन्या दीव अतो-तत्त्राद्ध गेत्वा मनुम्मकट्टाण्यय नहाएंच्या दिव्यवयां निवागापेत्वा गर्थारे विकित्यापेत्वा दिव्यव्यक्तांनि पिक-न्यापेत्वा तत्रो अदिद्दरे उत्तरपञ्चरो, नत्य अतो ककावियागां अदिव, नत्य वाचितानिमक दिव्यत्यत पट्टापेत्वा निपञ्जापेन्। अथ बोधिमानो मेनवर बारणो हत्या तत्रो अविदूरे एका गुक्जणपञ्चतो, तत्य चरित्या तत्रो ओग्य्ह रज्जापकत्य अभिक्रीट्या अत्तर्भावती आगम्म जननदामकणाय मोष्याय सेसप्ट्रम गर्म्या कुण्यत्वा प्रत्या प्रत्या विव्यव्यक्ति तत्र्य चरित्या भावत्रम्य प्रत्या विव्यव्यक्ति त्या चरित्या अप्ट्राप्त क्ष्याच्या निव्यव्यक्ति त्या विव्यव्यक्ति स्वर्था भावत्रम्य क्ष्याच्या स्वर्था विव्यव्यक्ति स्वर्था प्रत्या विव्यव्यक्ति प्रत्याच्या स्वर्था स्वर्था क्ष्याच्या स्वर्था विव्यव्यक्ति स्वर्था अप्रत्या व्यव्यक्ति प्रत्याच्या स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्था स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्था स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर

१ रो०-कोञ्चनादं। २ रो०-तलिःवा।

§ ३४ बाह्यणा आहंस्

पुन दिवसे पबुढ़। देवी मं सुपिनं रञ्जो आरोचेनि । राजा चतुसद्ियसे बाह्यणपामोक्कं पक्की-सापेरवा हिन्तुपिलताय लाजादीहि कतमगण्यककाराय भूमिया महारहानि आसनानि पञ्जापेरवा तत्व निक्षि-मान काह्यणानं सर्वियमधुसकराभिस्ततन्त्रस वरायायस्य सुवणणरजनपातियो पुरेरवा पुक्रभारजनानीहि वेच पिटियुज्येरवा अदामि । अञ्जीह च अहनदरककिपलगाविदानादीहि ते सन्तर्प्यमि । अय नेस सन्वकासेहि मंतिग्यतानं मुपिनं आरोचापेरवा कि भविस्सरीति पृष्टि ।

बाह्यणा आह्यु—"मा चिन्तिय महाराज । देविया ते कुष्टिम्ह गब्यो पतित्रिको । सो [50] च सो पुरिसगब्यो न इत्थिगब्यो । पुनो ने भविस्मिति । सो सचे अगार अज्ञावगिस्सित राजा भविस्सित चक्कवती, सचे अगारा निक्सम्म पब्बजिस्मित बुढो भविस्मिति होके विवतच्छड्डो" ति ।

🖇 ३५ इतिंसपुब्बनिमित्तानि पातुरहंसु

श्रीधमसम्म पन मानुकुण्डिम्ह परिमाण्यगहणस्त्रणं एकणहारंनेव सक्लदसमहस्यी लोकधानु सर्काण्य सम्पर्धाः इति प्रमुख्य प्रसाण प्राप्तस्य । इति व स्वक्रालस्य सम्पर्धाः इति प्रमुख्य प्रसाण प्राप्तस्य । एकण्य स्वक्रालि । इति प्रमुख्य स्वया विक्रम् । विकास सम्पर्धाः प्रमुख्य प्रमाणो श्रीभासां पृति । सस्य ति स्वक्रमाण्य । विक्रमाण्य । विक्रम् । प्रमुख्य । मृत्य समाणिषुः । एकण्य । उत्पत्ताः अहेतु । पण्य परसाण सम्पर्धाः । प्रस्क्रमः । सस्य सम्पर्धाः । प्रमुख्य । प्रमुख्य । सस्य सम्पर्धाः । स्वयं सम्पर्धाः । स्वयं सम्पर्धाः । प्रस्कृ । सस्य सम्पर्धाः । स्वयं सम्पर्धाः । स्वयं सम्पर्धाः अहेतु । । स्वयं । स्

§ ३६ बोधिसत्तमातुधम्मता

ाव गहितारिवास्थिकस्य बाँग्यमत्तम्य गरियाभ्यते पर्ठाय बाँग्यमत्तम्य चेत्र बाँग्यमत्तमानु पात्रम्य व्याह्मस्य व्याह्मस्य वार्मस्य वार्मस्य वार्मस्य क्षाह्मस्य वार्मस्य वार्मस्य वार्मस्य क्षाह्मस्य वार्मस्य वार्म

§ ३७ लुम्बिनीवने

महामायापि देवी पत्तेन तेल त्रिय दममामे कुच्छिया बोधिसन परिहरित्वा परिपुण्णगश्मा ञातिघरं गन्तुकामा मुढोदनमहाराजस्स आरोचेसि---इच्छामह देव । कुल्यन्तक [५०] देवदहनगर गन्तुन्ति । राजा

88

साधृति सम्पटिच्छित्वा कपिलवत्थतो याव देवदहनगरा मग्गं समं कारेत्वा कदछिपुण्णघटधञ्चपताकादीही अरू-कारापेत्वा देवि सीवण्णसिविकाय निमीदापेत्वा अमच्चमहस्सेन उक्तिचपापेत्वा महत्तेन परिवारेन पेसीस ।

हिर्भ पन नगरान अन्तरे उभयनगरवानीनिष्य कुम्बिनीवन नाम मगळसाळवन अल्वि । तिम्म समये मुक्तो पट्ठाव याव अगमासा तत्व एकवाळिष्कुळ क्षेत्रित । सावत्तरहि चेव पुण्यन्तर्रोह च पट्च-बण्यभमराषा नानप्पकारा च सकुनाया मधुरस्तरेत विकृत्वना विवर्गन । सक्क कुम्बिनीवन विस्त-कनावनसहित्य महानुभावस्य एट्टो सुम्पिकन्त्रशाण्याण्यक्ष विद्य क्ष्रोसि ।

दे विद्या ते दिस्ता साजवनकीळ कीळिनुकामना उद्यादि । अमच्चा देवि गहेत्वा सालवन पविसित्तु । सा मगन्तसालमूल गन्दा सालमाखाय गण्हिनुकामा अहोसि । सालमाखा मुनेदिनवेत्तागी विद्य ओन-मित्त्वा दिख्या हन्यपय उपर्गाच्छ । सा हन्य पमारेन्द्रा साल अमहोसी । नावदेव बन्सा कम्मजवाना विजेषु । अपस्मा साणि परिक्षिपरिया महाजनो परिक्किम । सालका गरेन्द्रा तिट्रभागाय एव चन्सा गळ्मबस्टान अहोसि । त क्या वेव चनारोपि मुहांचना महाकद्वानो मुख्यणजाल आदाय समाना ने न मुख्यणजालेन बोधि-मन सम्पर्टिक्किया मातपुरतो छरेखा "अत्तमना देवि । होहि हमेसमको ते पूनो उपको" कि आहस् ।

यथा पन अञ्जे मना मातु कुष्कितो निक्कमता परिकक्षत अमुचिना महिक्कता निक्कमिन न एव बोधमतो । बोधिसतो [32] पन धम्मासनतो ओनन्तो धम्मकांपको विग्र तिस्मीणतो ओन-रत्तो पुरिमो विश्व व, द्वं च हत्ये द्वं चार्य पसारेखा ठिनको मातुकुष्किमहृद्वेच केमचि असुम्वना अम-स्थितो मुद्रो विमदो सांकवत्यं निक्सतमधिएनर्न विग्र जोतस्तो मातुकुष्कितो निक्समि । एव मन्तंपि बोधिमतस्स च बोधिमतमानुषा च सक्कारत्यं आकासतो है उदक्यांग निक्समिन्या बोधिमतस्य च मातु चस्म मरीर उन् गाहानेषु ।

अय न मुक्काजालेन परिमाहेन्या ठिनान ब्रह्मान हम्यती चनारी महाराजानी मंगलमम्भनाय
मुक्स हम्याय अजिन्यवंशिया गणिस् । नेम हम्यती मन्ममा दुक्क्ष्ण्वस्वरेन परिमाणिहम् । मन्ममा हम्यती
मृज्ञित्वा पर्विद्य पिन्द्रिया पुण्डियासिद ओलोकेनि । अनेकाित जनकाव्यवस्यानि गृक्ष्णेणानि अहेमु ।
तन्य देवामस्या गत्यमाणात्रीहि दृश्यमाना "महापृष्टि । इस नृष्टिहि स्रियो अञ्जानील, कृतेण्य उत्तरिनारी
त आहम् । तव वनस्यो दिसा वनस्यो अनुदिया च हेट्ठा उपगीन दसपि दिसा अनुविशोकेण्या अत्तरी सदिय
अदिरवा अब्दार्थि । अज्ञानिक विश्वस्था विश्वस्था स्थानिक स्थान

बंधिसतो हि तीमु अनुभावेमु मातुकुष्टिजो निक्षलमत्तो एव वाच निच्छारंगि—
महोसप्रचनभावं, वेस्पलन्तभावं, उर्वास्म अनुभावेति । महोसप्रचनभावं विरूप्य मातु कुष्टिजो निक्षमत्तम्बेन मक्तो वेदगाजा आगन्त्वा चर्यतमार, हत्ये ठरेखा गतो। सो न स्ट्टिय करवाव निक्सलो। अयु न मात्त—नात ' कि गहेल्या आगतोगीति गुष्टि । ओष्ट्राय अस्माति ।

र्दात ओसस पहेत्या अगतत्ता ओसअदारकोत्येवस्म नाथ अकसु । ते ओसस गहेत्या चारिय पाल्लिपमु । आगनागनात अन्यवीधरादीन तदेव सन्वयोगबूषसमय भेसञ्च अहोसि । तनो महत्त्व दद ओसअि उपाय्यवन उपादाय महोसयोग्येवस्म नाम जात । वेस्मन्तरक्तभावे पन मानुषु- विकास त्रिक्सम्तो दिक्सणहत्य पारोर्ट्साव "अस्य नुष्यो अम्म ! किञ्चि पते गेहिस्म ? दान दस्मामी" ति वदस्ती निक्सिम । अपस्म माना स्थिय कुछ निक्सामी नाना" ति पुत्तस्म हत्य [54] अननो हत्यनले कृत्व सहस्मद्यविक ठपापेनि । स्थ्यते कुछ निक्सामी नाना" ति पुत्तस्म हत्य [54] अननो हत्यनले कृत्व सहस्मद्यविक ठपापेनि ।

ε

इमस्मिपन असभावे इमं सीहनाद नदीति । एव बोधिसत्तो तीसु अत्तभावेसु मातुकुच्छितो निक्ख-न्तमत्तोव वाच निच्छारेसि ।

यदा च पटिसन्धिक्वणं एव जातक्क्यगेपस्स बनिसपुव्यनिमित्तानि पानुरहसु । यस्मि पन समये अम्हाक बोधिवस्तो हुम्बिनीवेज जातो तस्मि येव समये राहुळ्याना दंत्री, छत्री अमच्ची, काद्भुदाशी अमच्ची, काद्भुदाशी अमच्ची, काद्भुदाशी अमच्ची, कात्रद्वा राज्यक्रमारा, जातनीयो हरिवराजा, कन्यको अस्मराजा, महाबोधिक्च्यो, जनस्ती निष्कृतिमयो च जात्रदा । तत्र्य एका गावुनण्यमाणा, एका अद्योजनण्यमाणा, एका तिपावुनण्यमाणा, एका योजनण्यमाणा अहो-सीर्ति इसे सन्त सहजाना नाम । उभयनगरवामिनो बोधियन गहरवा कपिळवरचुनगरमेव अगममु ।

६३८ तापसो काळदेवलो

त दिवस येव च कांपण्यश्चनगर गुडोंदनमहाराजस्स पुत्तो जाता अय कुमारो बोधिवले निसी-दित्वा बुढो भविस्मतीति तार्वानयभवने हटलुट्टा देवनधा बेलुस्खेपायीति पवनेत्ता कींद्रिष्ठा । निर्म्म समये गुढोंदननहराजस्म कृत्युगो अट्टममापतिलाभी काळदंवली नाम तापसो भत्तकिच्च कत्वा दिवाविहा-रत्याय तार्वानमभवन मन्या नन्य दिवा [५२] विहार निमिन्नो ना देवता दिस्दा किकारणा नुम्हे एव नुटटमानसा कीळच ? मद्द लेत कारण कवेथाति पुच्छि।

देवना आहमु-मारिम ! सुद्धोदनरञ्जो पूलो जातो । मो बोधितले निमीदित्वा बुद्धो हत्वा धम्म-चक्क पवनेस्मिनि । तस्म अनन्त बुद्धलीलृह दट्ट धम्मै च मोत् लच्छामानि ३मिना कारणेन तुट्टम्हानि ।

नापसो नाम वयन सुन्वा व्याप देवलोकनो ओक्टह राजनिवेसन पविभिन्दा पञ्जानासने निसिन्नो पुनो किर ने महाराज 'जानो पस्सिस्सामि नन्ति आह्। राजा अलकतपटियन कुमार आवापेत्वा नापस बन्दायन् अभिर्टीर ।

अंधिमनस्म पादा परिवर्तनस्म नापसस्म जटामु पनिर्टाहम् । बोधिमनस्म हि ननसमावेन विन्तव्यव्यानको अट्यो नाम निश्व । सर्च हि अजानना बोधिमनस्म मीम तापसस्म पादम्के ट्रांच्य मनशा अस्म मुख फ्लेंच्य । तापतो न में अता नामेनु युन्तिन उट्टावासना बोधिमनस्म अञ्जीक पण्योम । राजा त अच्छान्य दिवसा अन्तनो पुन विद ।

नापमी अनीनं चत्ताळीमकप्ये, अनामनं चत्ताळीमानि अमीति कप्यं अनुम्मर्गन। बोधिमत्तम्य कस्तवामपानि दिस्सा मिबस्मित नुम्बो बुद्धो उदाहु नोति आविज्यन्या उपयोग्नो तिनस्थय बुद्धो भवि-स्मतीति जन्या अच्छीरयपुरियो अवीन्त [54] सित अकासि। तेनो अहे इस बुद्धभून दृद्धु लीसस्यामि नुष्यो गौति उपयोर्त्यो न लीसस्यापि अस्पायं व काल करवा बुद्धमतेनित बुद्धमहस्येनित गन्या बोधेनु अक्तकुष्येथे अरुपभवे निच्चतिस्मामीति दिख्या एवरूप नाम अच्छिरसपुरिसं बुद्धभूत दृद्धन लिसस्यामि। भक्षती वन मे जानी भविस्मतीति परोदि।

मतस्मा दिस्वा अस्हाक अथ्यो इदानेव हसिन्वा पुन रोदितु उपट्ठिनो किन्नु स्रो भन्ते [।] अस्हाक अय्य-पुनस्म कोचि अन्तरायो भविस्मर्तानि पुन्छिमु ।

नत्थेतस्य अन्तरायो निरमसयेन बद्धो भविस्सतीति ।

अध करमा परादित्थानि ?

ण्वरूप महापुरिस बुढ्धभूत दर्द् न लिभरसामि, महती वन मे जानी भविस्सातीनि जनान अनुसोचन्सो रोदामीनि आह ।

तती किञ्चला में जानकेमु कोचि एत बुद्धभूत दर्ठ लिभस्मति न लिभस्मतीति उपधारेन्सो भागिनेध्यं नाळकदारक अदम । सा भर्गानिया येह गत्स्वा कह ते पुत्तो नाळकोति ? गेहे अय्य !

पत्रकोसाहि निन्त । अननो सन्तक आगत आह, तान । सुद्धोदनमहाराजन्म कुळ पुनो जानो । बुद्धंहुरो एस पञ्चीतस बस्मानि अतिवर्कामत्वा बुद्धो भविस्मति । त्व एत हट्ट् स्टभिस्मसि । अज्जेव पत्रबज्जाहीति (५३)।

ससामीतिकोटिथने कुलै निख्यां दाग्को त मानुलो अनत्ये नियोजेम्सतीनि चिन्नेया नावदेव अन्तरायणनी कामावानि वेव सनिकारामञ्ज आहरारोदया कंपसम्मु ओहारत्या कामावानि वल्यांनि अन्द्रादेखायो लोके उत्तमभूगालो न उद्दिस्य मान्य पवचणानि वोधिमनाभिमुख अञ्चलिप्ययस्य एज्य-पतिदृष्टिनेत विरुद्धा परिवारिक सम्बन्धित अस्पर्दे आल्याचा हिष्कत विश्वास्य सम्बन्धम अकासि ।

सो पठमाभिमभ्वीधिणन नथागत उपमक्तिस्वा नालकपटिण्य कथागेत्वा पुत हिमबल प्विनित्व अरहत पत्वा उक्कट्ठपटिण्य पटिण्यो मनेव मामे आयु पालेत्वा एक मुबल्लपञ्चन निरमाय ठिनकोव अनुपादि-मेसाय निव्वालधानुमा परिनिव्याणि ।

्र ३९ लक्खणपटिग्गाहका अट्ट**बाह्**यणा

होधिमनास्य खो पञ्चमदिवने मीम नहापेखा नामग्रहण गोक्समामानि राजभवन चनुजानिक-गम्बोहि विकित्सम्या काजपञ्चमकानि पुण्यानि विकित्स्या आस्तिभवायामा पद्मापेखा निष्णा बेदान पारमे अट्टनरस्यन आहार्णा निमनेत्वा राजभवने निमीदार्थना मुगोजन भोजन्या [35] महानक्कार करवा किस्त्रलो भवित्यतीनि रुक्त्यणानि गटिमाहापेम् । नेम् —

"रामो धजो लक्यणो चापि मन्त्री कोण्डङती च भोजो सुयामा सुदत्तो ।

एवं तदा अट्ठ अहेसु बाह्यणा छळगवा मन्त व्याकरिस्।। 'ति ।

टमें अन्देव ब्राह्मणा लक्ष्मणपटिमाहका अहेमु । पटिमोत्स्वहणदियमे मुण्गिणि एनेहेब पटिमाहितो । तेमु मन जना है अर्गाल्यो अस्मिणित्या हेथा आस्त्रीत्य टिमाहित लक्ष्मणीह समक्ष्मणने आरा अञ्चालमासनो राजा होनि चक्कप्यनी, पद्यज्ञमानी बृहो नि सच्य चक्कप्यनिक्टजी सिरिविक्य आर्थिकमा

तेम पन सब्बदहरों गोनती कोण्डब्बों नाम माणवा बोधिमत्तस्म व्यवणवरित्यक्ति ओओकेत्वा "एनस्म अगारमञ्जे धानवारण निथा, एक्सनेव विवरण्डारों बुढी भीसम्मती" ति एक्सेव अमुणि उपित्यम्भ एक्सव्याकरण ब्याकारिम । अब हि कताधिकारों पश्चिमभिक्तानी पश्चाय इतरे मन जने अभिभित्या इंसीह एक्सपेटि सम्मतानस्म अगारमञ्जे छात नाम नित्य। असमय बुढो एक्सियोदि सम्मतीत एक्सेव वाति अहम। तस्मा एक्सुणि उपित्यालया एवं व्याकारिस [५४]।

🕽 ४० पंचवरिगया थेरा नाम

अय ने ब्राह्मणा अननो धरानि मन्या पुत्ते आमन्तियमु—नाता । अन्द्रे शहरू व्यक्ता, मुद्रोदनमहा-राजस्म पुन्न सब्बरुजनपन्न सथ रुभस्याम वा ना वा, नुग्हे तस्म अुभारे सब्बरुजुन पने नस्य सागने पश्चकत्यावानि ।

तं मनीप जना पाकराएक उत्था प्रयोक्तम नारा। कोण्डलभावयो अरोगो अदीरा। यो महासने बृद्धिमत्याय महीर्भाविक्षमन अभित्तवविक्तया अनुक्रमेन उनयेल गरूपा रागोगी यत अथ अभिन्यायो अरु बितः कुल्युनस्म प्यातिक्तस्म पथानायाति किना उप्यादस्था तरूप बास अपासे महागुरिस्सा पाक्षप्रतिक्रीति भूत्वा तेन आक्षप्रात्त पुनै उपकर्षभावता एक्साहरू-निद्धस्त्रकुमारो किर पश्चित्रती मो निस्मस्य बृद्धो भीवस्मति, सबै नुम्हाक पिनरोअरोगा अरुम् अरुव निक्समित्वा पद्धबेद्ध्या सबै तुम्होर्ग इच्छेय्याय एथ अहंत पुरिस अनुषब्धजिस्सामीति । ते सब्बे एकच्छन्या भविषु [56] नासम्बद्धा तयो जना न पब्धजियु। कोण्डय्यशक्षणं जेट्टक कत्वा इतरे चत्तारो पब्बजियु। ते पञ्चपि जना पञ्चविमाय पेरा नाम जाता ।

§ ४१ चलारि पुब्बनिमित्तानि

तदा पन राजा कि दिस्वा मध्हे पुनो पब्बजिस्मतीति पुण्छि । चत्तारि पुब्बनिमित्तानीति । कतरं च कनरञ्चाति ?

जराजिण्या ब्याधितं मत पञ्जजितन्ति ।

राजा—-रतो पट्ठाय एवश्यात मम पुनस्स सन्तिकं उपसेकमिनुं मा अदस्य। मग्हं पुनस्स बुद्धभावेन कम्म नित्य। अह मम पुन डिमहस्मदीमपरिचारान चतुक महादीपान इस्मिन्याधिपच्चं रज्जं कारेन्त छन्तिसयोजनवरिमण्डलाय परिसाय पटिवृतं गगनतले विचरमानं पस्सितृकामोन्हीति—-एव च पन क्वा इसेस चतुष्पकारान पुरिमान कुमारस्म चक्कुपये आगमनिवारणस्य चतुसु दिसासु गावृते गायुते आरक्क ठरेषि।

त दिवस व पन मगज्हाने मीप्रपतिनेमु अभीतिया जातिकुलसहस्मेमु एकेको एकमकं पुत्तं परिज्ञानि । अयं बुढ्ढो वाहोनु राजा वा मय एक्सेकं पुत्तं दस्ताम । सचैषि चुढो मितस्पति स्तिनप्रसम्पेहेव पुरस्कतपरिज्ञाति । विचरिम्मति, सचैपि राजा भविस्मति स्तिनयुक्तमरेहेव पुरस्कतपरिज्ञाति ।

ु४२ रङजो बप्पमंगलं अहोसि

राजापि बोधिमतस्म उत्तमरूपसम्पन्ना विगतसब्बदोसा धानियो पञ्चुपट्ठापेसि । बोधिमनो अनन्तेन परिवारेन महत्तेन सिरिमोभग्गेन बद्दति ।

अपंकरिवस रञ्जो वण्यमगण नाम अहोमि । त दिवस समलनगण देविसमान विष [५१] अलकरोनि । सर्व दानकम्मरुग्दियो अहर्तवस्तिवत्या गण्यमालदिवनिमण्डिना राजकुले माझ्मरानि । राज्य अल्पन्यने स्व स्वान्ति स्व विष्य दानकम्मरुग्दियो । तिस्म पन दिवसे एकेन उन अद्भुद्धस्त नेमण्डांन सीढ विलवद्-र्गस्मयोनीह रवनविष्यत्वात्ति होनि । रञ्जो अल्पन्यत्वाले 'पन रसमुक्षण्यात्त्र्यत्व होनि । विलवद्दान् सिमानि रस्मयोनीह रवनविष्यत्वात्ते होनि । राज्य क्षम्यान्त्रे न त्रान्ता नित्रक्षमात्रे प्रत्या वास्त्रक्ष्यात्रे विषयत्व वास्त्रक्षयात्रे सात्रक्ष्या विषयत्व वास्त्रक्षयात्रे सात्रक्ष्या विषयत्व वास्त्रक्षयात्रे सात्रक्ष्या वास्त्रक्ष्यात्र वास्त्रक्षयात्रक्षयात्र वास्त्रक्षयात्रक्षयस्ति स्वयस्त्रक्षयस्त्रक्षयस्ति स्वयस्त्रक्षयस्त्रक्षयस्त्रक्षयस्त्रक्षयस्त्रक्यस्ति स्वयस्त्रक्षयस्त्रक्षयस्त्रक्षयस्त्रक्षयस्यस्ति स्वयस्त्रक्षयस्त्रक्षयस्त्रक्षयस्ति स्वयस्ति स्वयस्

बोधिमतो इतो जिनो च ओलोकंन्तो कञ्चि अदिस्वा वेगेन उट्ठाय पत्लंक आमुजित्वा आनापाने परिग्गहेत्वा प्रमञ्ज्ञान निव्यत्तीस ।

भातियां लज्जभोजनतरे विचरमाना थोकं चिरायिषु । सेसम्ब्रानं क्षेत्रा विचतारे, तस्स पन रुमबस्स परिमण्डल हुत्वा अट्टासि । धानियां अप्यपुत्ती एककोति येगेन सांग डांक्सिरित्वा अन्तो । परिवम्माना बीधिसन्त सप्ते पल्जकेन निक्षित्र त च पाटिहारिय दिस्ता गत्त्वा उच्चो आरोचेमुं —देव ! कुमारो एव निक्कां एव अञ्जेत रुक्तमान छाया निज्ञा जन्दुश्चस्त्रस्त छाया परिमण्डला ठिताति । राजा वेगेनागत्त्वा पाटिहारिय दिस्ता इट ते तात । दुतिय बदर्गात्त पुत्त बन्दि ।

१ रो०-आलम्बननङ्गले । २ सी०-अनितवता । रो०-अतिवता ।

६४३. आतकानं सिप्पं बस्सेसि

अस अनुकल्मेन वोषिसतो सोळसवस्तपदेसिको जातो। राजा बोधिसतस्स तिर्णं उत्त अनुब्छिकि तयो पासार कारीस, एक नवमूमक, एक सत्तमूमक, एक पञ्चभूमक। चताळीससहस्मा च नाट-किरिययो उपट्ठापेसि। बोधिसनो देवो विय अच्छरासंचर्यारबुतो अलकतनाटकपरिवृतो निर्णुरिमेहि तुर्ग्योह परिचारियमानो महासम्पन्ति अनुभवनो उनुवारेन नेतृ तेमु पासादेमु विहर्णत। राहुलमाना पनस्स देवी अनगमहेसी अहोसि। [५६]

तस्स एवं महासम्पत्ति अनुभयन्तस्स एकदिवस आतिमधस्स अव्भन्नरं अय कथा उदपादि-सिद्धत्थो कीळापसुतोव विचरति, न किञ्चि सिप्प सिक्खति, संगामे पच्चपट्ठिते कि करिम्मतीनि !

राजा बोधिससं पक्कोसापेत्वा—नात । तव आतका सिद्धत्यो किञ्च सिप असिक्यत्वा कीळापमुतोव विचन्तीति वदन्ति । एत्य किं पनकाले मञ्जमीति ? देव ! मम सिप्पसिक्यतिकच्च तित्व । नगरे मम सिप्पं दस्मतन्त्वं भीर चरापेयदतो सत्तमे दिवसे आतकान सिप्पं दस्मेन्सामीति ।

राजा तथा अकासि। बोधिसनो अस्मणवेधि वाळवेधि, सरवेधि,सदेबीघ पुंकानपुंक षतुग्गहं सिन्नपातापेत्वा महाजनस्स मञ्जे अञ्जेहि च धनुगार्शेहि अमाधारण जातकान द्वादसविघ सिप्प दस्मेसि।त सरभगजानक्षे आगननयेनेव व वेदिनब्ब।तदास्स आनिसधो विकक्षी अहोसि।

े ४४. चलारि पुब्बनिमिलानि

अर्थकदिवस बोधिमनो उथ्यानभूमि गन्तुकामो मार्गय आमन्तेन्वा रथ योजेहीनि आह । सो साधूनि पटिम्मृणित्वा महारहं उत्तमरथ मख्वालंकारेन अलकरित्वा कुमुटपनवण्णो [58] चतारो सगलसिन्धवे योजेत्वा बोधिमत्तस्स परिनिवेदीम । बोधिमनो देवविमानमदिस रथ अभिनहित्वा उथ्यानामिमुलो अगमासि ।

(१) जराजिण्य ।

देवता सिद्धत्यकुमारस्स अभिसम्बुण्यनकालो आमश्रो, पुण्यतिमित्तं दम्सेस्सामानि एक देवपूर्तं जराजज्जर वण्डदन्त पिलनकेस गोपाणसिवकं ओभग्यमरीर दण्डहत्य पवेभमानक कत्या दस्मेमु । त बोधिसत्तो चेव सारणी व पस्सत्ति ।

ततो बोधियनो सार्गथ—"सम्म [।] को नामेसो पुरिसो [।] केशापिस्स न यथा अञ्जेस"िन महापदाने आगतवयेन पुच्छित्वा तस्स बचन सुत्वा घिरत्यु वन भो ! आति यर्शीह नाम जानस्स जरा पञ्जा-यिस्सतीति सीवग्यहदयो ततो व पटिनिबन्तिवा पासादमेव अभिनिह ।

राजा किकारणा सम पुत्तो खिष्प पटिनिवत्तीति पुच्छि ।

जिण्णं पुरिस दिस्वा देवाति आहंसु।

"जिण्णाकं दिस्या पञ्जीजन्मती" ति कस्मा म नामेष ! सीर्ष मे पुत्तस्स नाटकानि मण्डेष । सम्पत्ति अनुभवलो पञ्जाज्ञाय सित न करिस्सिनीति वन्दा आरक्ष्य बङ्ढेत्वा सब्बदिमामु अद्धयोजनं अद्धयोजनं ठपेसि ।

(२) व्याधित

पुनेकदिवस बोधिसत्तो तथेव उय्यान गच्छत्तो देवनाहि निम्मिन व्याधिनं पुनिसं दिस्वा पुरिमनयेनेव पुण्छित्वा सविग्गहृदयो निवत्तित्वा पासाद अभिष्ठहि । राजापि पुण्छित्वा हेट्ठावृननयेनेव सविदहित्वापुन बहुबेत्वा समन्ततो निगावृतणमाणे पदेमे आत्रक टरेसि । [५७]

(३) कालकतं

अपरं पन एकदिवस बीधिसतो तथेव उम्यान गच्छतो देवताहि निम्मित काणकत दिस्वा पुरिमनयेनेव पुच्छित्वा सविगाहरयो पुन निवित्तत्वा पासाद अभिर्श्तह। राजापि पुच्छत्वा हेट्ठावुत्तनयेनेव सविद्वित्वा पुन बहुबेत्वा समन्ततो योजनप्पमाणे पदेसे आरक्य ठपेसि।

(४) पडवजितं

अथर पन एकदिवस उच्यान गच्छन्तो तथेव दंबनाहि निम्मिन सुनिवस्य सुपान्त पत्विज्ञते दिन्दाकोनामेश्रो मम्मानि सार्गव पृथ्छि । सार्गिष किञ्चापि बृद्धपादस्म अभावा पत्विजन वा पत्विजनगुणे वा न जानानि देवानुभावेन पन पत्विजनो नामेस देवानि वस्या पत्वज्ञाय गुणे वर्णोसि । बोपिसनो पत्वज्ञाय शेव उपादेश्या ते दिवस उच्यान अगमापि ।

दीधभाणका पनाह-'चलारि निमित्तानि एकदिवसेनेव दिस्वा अगमासी' ति।

ु ४५. बोधिसत्तस्स पश्छिमो अलंकारो

तस्य दिवसभागः कीक्रित्वा सगलपोक्तराणियः नहायित्वा अन्य गनं सुरिये सगलमिलापट्टे निसीदि अनानं अलकारापेनुकामो । अधस्म परिचारकपुरिमा नानावण्णानि दुरमानि नानापकारा आभरणविकतियो मालागस्यविलेपनानि च आदाय समन्ता परिचारेन्या अट्टम् ।

तिम्म वर्ण मक्कस्म निमिन्नामन उण्ह [5%] अहोनि । मो कंतृन्यों म इमन्हा ठाना चार्यनुका-मंगि उपधारेलो श्रीधनतम्म अलकरणकाल दिस्ता विस्सकत्म आमनोमिन सम्म विस्मकत्म । गिडल्थ-कुमारो अञ्ज अङ्ग्रत्समयं गहामिनिक्समण निक्तमिस्मिन । अयमस्स पश्चिमो अलकारो । उप्यान गल्या महापुरित्व विद्यालकरिह अलकरोहीि ।

मो माजूनि पटिम्मुणित्वा देवनातृभावेन त स्वण येव उपगक्तिमत्वा तस्मेव करफक्तिदिनो हृदव करफक्ति हृत्यो वेठमहुम्म नहेत्या बोधिसनस्म सीम वेटीम । बोधिसन्ता हृत्यसप्कासेव नाय सन्साने देवभुनी एकोनि अञ्ज्ञासि । वेठने वेठिनसन्ते सीमित्र सिक्ति स्वानित्व हिन्ससहस्म प्रवन् । पाठिष्ठ । सीम लहक हुस्साहस्मानि वादिष्ठ । सीम लहक हुस्सानि वहिन वच अञ्गुणनात्रीति न चिन्तेन्द्य । तेमृ हि सब्बाह्न मासक्ताणुष्ठाप्याण, अवसेमानि कृतुम्ब-कपुष्ठाप्याणात्र अदेम् । बोधिसनस्म सीम कसेह आहिष्ण किञ्चस्थानचिष्ठ विष कृत्यस्थान अदेम । बोधिसनस्म सीम कसेह आहिष्ण किञ्चस्थानचिष्ठ विष कृत्यस्थान अदेम ।

अथम्म सञ्जालकारपतिमण्डितस्य सब्बताद्धावचरेषु सकानि सकानि व परिभाणानी रस्य-यन्तेषु बाह्यणेषु जयनिरन्दानि आदित्रवर्गेहि सुनमागणादियु नानप्पकारीह मगज्यवनयृतियोसिहि सम्भावेत्तेषु सय्याजकारपतिमण्डित रथवरं अभिनहि । [५८]

§ ४६ राहुलो जातो

नस्मि समये राहुल्माना पुने विकाशीत मुख्य मुडोरनमहाराजा पुनस्स में तृद्धि निवदेशांति सामनं पहिला। बोधिसनो ते मुख्य राहुलो आनो` बन्धन जातन्ति आहे। राजा कि में पुनी अवचानि पुच्छित्वा तं बचन सुख्य इतो पट्ठाय में नता राहुलकुमारो येव नाम होतृति आहे।

🛭 ४७ किसागीतामया उदानं

बीधिसनीपि को स्थावर आब्स्क्र महत्त्वेन यमेन आनमनारमेन सिरिसोभग्गेन नगरं पार्विम । तिस्म समयं किसायोनमी नाम बत्तियकञ्जा उपरिपासादवरतत्त्र्यना, नगर पदिन्त्रवर्ण कुरमानस्म बोधिसत्तरस रूप-सिरि दिस्वा पीतिसोमनस्सजाना इमं उदाने उदानेमि —

१ स्या०-विस्सुकम्मं । २ सि०-राहु जातो ।

"'निब्बुता नून सा माना निब्बुनो नून सो पिना, । निब्बुता नून सा नारी यस्मायं इंदियो पती' ।। ति । [60]

बोधिसत्तों ते मुला चिन्तेमि—अयं एवमाइ, एवडचं अत्तमाव परसत्तिया मातु हर्द्य निब्बायित पिनुहृद्द्यं निब्बायित प्रवापितम हर्द्यं निब्बायिति । क्रांध्य नृत्त्वं निब्बन हृद्धं निब्बन् नाम होतील / अध्यस् क्रिक्तेमु दित्तमातृत्ति एत्युर्वे तिब्बुले ताम होति, प्रोमाणिक निब्बुले निब्बुले नाम होति, योमाणिक निब्बुले निब्बुले नाम होति, अधि मे मुल्यत्ये निब्बुले निब्बुले नाम होति, अर्थ में मुल्यत्ये निब्बुले नाम होति, अर्थ में मुल्यत्ये तास्वित्ये निब्बुले नाम होति, अर्थ में मुल्यत्ये नाम होति, अर्थ में मुल्यत्ये नाम होति । अर्थ हि निब्बाण गवेशालों चरामि । अञ्जेव मया परावास छड्डव्या निब्बन्म पद्धित्वित्यं नाम निव्या परिवास निब्ब्यणं गवेशालों क्षित्र निब्ब्यणं निव्या नाम निव्या स्वाप्ति । अप हीमस्य आवित्यामा होतिन क्लानों अपिक्वित्यं क्रिस्ताने निव्या क्षित्र निव्याणं निव्या स्वाप्ति । अप क्षित्र निव्याणं निव्या नि

§ ४८. नाटकिस्थियो

बांधिसस्त्रीर महत्वेन सिरिसोम्पर्येन अन्तरी पासादं अभिरहित्व मिरिनस्य निपर्येच । नावदेव न सब्बार्वकारपतिमध्या मान्यवानित्व मुनिष्यिना देवकाच्या स्व ६ एमोम्परपत्ता । इत्थि तानातृत्वित्व स्वार्वकारपतिमध्या अभिरमपेक्तिय मुनिष्या स्वार्वकार्ये स्व ६ एमोम्परपत्ता । इत्थि तानातृत्वित्व सिर्वेच स्व ६ एमोम्परपत्ता निष्यं आधिसात्ते किर्येमु तिन्तित्वत्तात्त्र प्रवेचित्व स्व अधिसात्ते किर्येमु तिन्तित्वत्त्वत्त स्व स्वार्वित्व प्रयोक्ति मृत्यं किर्मात्व क्ष्यां स्व स्व क्ष्याद्वित्व प्रयोज्यम् मो निर्दे उपयोज्ञ स्वार्वात्व स्व स्व सिर्वेच क्ष्यां स्व स्व सिर्वेच किर्मात्व क्षयात्र्वात्त्र स्व सिर्वेच किर्मात्व क्ष्यात्र्वात्व स्व स्व सिर्वेच किर्मात्व क्ष्यात्र स्व सिर्वेच किर्मात्व स्व सिर्वेच किर्मात्व सिर्वेच किर्मात्व किर्मात्व सिर्वेच किर्मात्व सिर्वेच किर्मात्व किर्मात्व सिर्वेच किर्मात्व किर्मात्व

९४९ महाभिनिक्छमनं

सं अठजेव मया महाभितिकषमनं निक्षमितुं बट्टनीति सयना युद्ठाय द्वारसमीपं गल्या कः एत्याति आह् । $\lceil 61 \rceil$

उम्मारं सीसंकत्वानिपन्नो छन्नो अहं अय्यपुन ! छन्नोनि शह।

छन्न । अहं अञ्च महामिनिकसमण निक्खामनुकामो । एवं में अम्मं कर्णशीन । मा माय् देवानि अस्मभण्डकं गहेल्वा अस्ममाल गल्ला गत्यनेलण्यदीपेमु जलन्तेमु मुमनगर्हर्विनानस्म हेर्ट्या रमणीये भूमिमापे टिन कल्बक अस्मराजान दिस्या अञ्च सया इममेव कर्ण्यनुं बर्ट्टनीनि कल्बक कर्णाम् ।

सां कष्णियमानीय अञ्ज्ञाति अयं में कष्णना अनिपाळहा, अञ्ज्ञेमु दिवसेमु उच्यानकीळारि-गमनकाले कष्णना विया न होति । मध्यं अच्यपुनी अञ्ज महाधिनिक्कमणे निक्क्षिम्कुमामे अविक्सपीति । नवां तुरुप्तानयो महाहिस्यं होति । यो सहो मकलनगर पत्थरित्वा गच्छंच्य । देवता यन तं सह निर्माहत्वा न कस्सीक मोन् अदेस ।

बोधिमनोपि स्रो छत्रं पेसेत्वाव पूर्न ताव परिसम्मामीनि चित्तंत्वा निर्माक्षपरुकेनो बुट्ठाय राहु-रुमाताय वमन्द्रानं गत्त्वा गरुश्चारं विवरि । तरिम स्रमे अन्तोगरुभे गत्यनेरुप्पदीपो झावनि । राहुरुमाता समनमन्त्रिकारीनं पूष्पान अस्मणमत्तेन अभिप्पिरुण्यसयने पुतस्य मत्यके हुन्यं छोरवा निहासति । बोधिसत्तो उम्मारं पारं ठपेरवा ठिनकोव ओलोकेरवा सचाहं देविया हर्ष्यं अपनेरवा मम पुर्त गण्डिस्सानि देवी पर्वुण्डिस्सिति एवं में गमनन्तरायो अविस्मिति, बुढो हरवाव आगन्त्वा पुत्तं परिसरसामीनि पासावनलतो ओति । यं पन आनकट्ठकथायं "नदा सत्ताहकातो राहुलकुमारो होती" ति वृत्तं सं सेस्ट्टकथामु नित्य तस्मा इदमेव गहेतव्वं।

एवं बोधिसत्तो पामादनला ओनरित्वा अस्सममीपं गल्दा एक्शाह्—न्तात कन्यक[ा] त्व अज्ञ एकरींत मं नारय, बहु त निस्साय बुद्रो हुन्या सदेवकं छोक तारेस्साभीति । नतो उल्लिघित्वा कत्यकस्स पिट्रींट अभिष्ठहि ।

कन्यको गीवतो पर्ट्राय आयामेन अट्ठारसहत्यो होति, तदनुच्छविकेन उच्चेभेन समझागती पाम-जवसम्पन्नो सव्ययंतो,भोतन्त्रवादियो। [६०] सो सब हत्येस्य वा पादवर् वा करेच्या सहो सकत्वनार अद्यवरेखा। तसमा देवता अत्तनो आनुभावेन तस्य यथा न कोचि गुणाति एवं हमितमद् सन्तिरुहित्वा अक्कमनजक्कमन-पदवारे हत्वनलानि उपनामेषु।

बोधिसत्तो अस्मवरस्स पिट्टिबेमञ्झातो है छक्षं [02] अस्सस्स बार्क्यघ गाहापेरवा अङ्बरत्त-समये महाद्वारसमीपं पत्तो । तदा पन राजा एव बोधिसत्तो याय कायचि बेलाय नगरद्वार विविग्त्वा निक्कमितुं न सस्विन्यस्तीति द्वीस् द्वारकवाटेस् एकंक पुरिससहस्मेन विविग्तिक्वं कारापेसि ।

बोधिसतो थामबलसम्पन्नो हित्यगणनाय कांटिसहस्सहत्थीन बल घारेति, पुरिसगणनाय दायुर्तसकोटसहस्सान । तस्मा सो चिन्तीम—"सचे द्वार न अवापुरीयति अञ्ज कण्यकस्य पिट्ठे निषक्षीव वार्ळीच गहेत्या ठिटोन छन्नेत सिंह येव कत्यक उरूहि निष्पीळेला अट्ठासहत्युक्लेष पाकार उप्पतित्या अतिकक्तिमस्तानी" ति । छन्नोपि चिन्तीम्—"सचे द्वार न विवरीयति अह अज्यपुन मम लत्यं निर्मीयार्चना कत्यक दिक्वणहत्येन कुच्छिय परिक्रियानो उपकच्छत्यरे करवा पाकार उप्पतित्या अतिकक्तिमस्सामी" ति । कत्यकीपि चिन्तीम्—"सचे द्वार न विवरीयति अह अत्यानी मामक पिट्ठ्य यथानिसम्भवेष छन्नेन वार्ळीष निर्माणने पत्रित्या पत्या पत्रित्या पत्या पत्रित्या पत्रित्या पत्रित्या पत्रित्या पत्रित्या पत्रित्या पत

तस्मि येव खणे मारो पापिमा बोधिमतः निवनेस्मामीति आगन्त्वा आकासे शिनो आह-मारिस ! मा निक्कमि । इतो ते सत्तमे दिवसे चक्करतन पातुभविम्मति । डिसहस्मपरित्तदीपपरिवारान जनुन्न महादीपान रज्ज कारेस्सित । निवत्त मारिसाति !

कोसित्वन्ति?

अह वसवत्तीति मारोम्हीति ।

मार[।] जानामह मय्ह् चक्करननस्म पानुभाव । अनत्थिकोह रज्जेन । दसमहस्मी लोकधातु उन्नादेत्वा बढो भविस्सामीति ।

मारो इतोदानि तं पट्ठाय कामबितक्क वा व्यापादिवतक्क वा विद्रिसावितक्क वा चिन्तित-कारु जानिस्सामीति ओतारापेखी छाया विय अनपगच्छन्तो अनुबन्धि ।

१ रो०-पिट्टबरमञ्जातो । २ स्या०-अपारुपितस्य ।

च धनमेषबुद्धिकाले थाराहि विधानम् निरन्तर अहोसि । दिव्यति सङ्गीनानि पदसन्ति । मननती अट्टसट्टि बुरियस्तरसस्यानि पर्वाज्यम् । सपुरङ्गुच्छिय गोयस्यनिनकालो विधा सुगन्यरकुच्छिय सावरनिगयोसकालो विधायसम्बद्धित । इनिना विश्विभाग्येन गण्डलो बोधियतौ एकरतेनेव नीणि रज्जानि अतिबहन्य निस्योजन-सन्दर्भ अनोमानदीतीर पार्त्वण।

कि पन अस्मी ततो पर गरनु न सबकोतीति ? तो न सबकोति। मी हि एक बक्क स्वाटन न तां अया ठित-बक्क स्म नैमियाँद्र महर्गा पित्र अन्तर्गन चरित्या पुरे पानराममेव आगरना अन्तरी मण्यादिन अस्त भूष्टिकत् नारयो। तवा पन देवनान गुरुष्णावीहि आकाते ठत्या ऑसस्ट्रेट्टि एम्बमाणादीहि याव अस्पर्यना मण्डस्य सारी आकर्ष्ट्राच्या सम्माणाज्य छिन्दस्तरास अधित्यपञ्चो अहोति । तस्मा तिस्योजनसम्बेच असार्यन ।

६ ५० बोधि सलो पञ्जीत

अय बोधिसलो नदीतीरे ठन्ता छन्न पुष्कि-किनामा अय नदीति।

अनोमा नाम देवाति।

अम्हारुपिय प्रवज्जा अनोमा नाम भीवस्मीति पित्रिया घट्टेन्सो अस्मान मञ्ज अद्यामि । अस्मो उष्यतिका अरुऽअमभीक्शाया नदिया पारिमतीर अर्ट्यान । बोषिनसो अस्मिर्य्कितो ओम्ब्स् रजनवर्ट्ट स्वतिका स्वतुर्वाकिने ट्वा छज आमस्तेमि । सम्म छन्न । त्य मरह आभरणानि चेव जनवकम्च आद्याग तब्क चेवार प्रकृतिस्मामीति ।

अहस्य देव ! तथा साँद्ध पव्यक्तिसामीति ।

बांधिमतो न लन्मा तथा पव्यक्ति नुष्क्य स्वित्व विश्वनु पटिवाहित्वा आभण्णानि येव कायकं व पटि-च्छादेश्व विश्वेति---इसे मरूर केमा ममणमारणा न होनित, अञ्जो बोधिमतस्य केमे छिन्दित् युक्तस्यो त्रीय, तथा मार्थ्य व व्यक्ति छिन्दिस्सामीति दिक्ताबहुर्यन जीता गोद्या वाष्ट्रव्येन मोछिया ग्रीड क्रम्म ग्रेहेद्या छिन्दि । केमा ड्रमुज्या हुन्बा दिक्ताबहुर्यो आवन्मामा मीम ऑन्जियमु । नेम यावश्रीन नदेवणमाण अहोसि, मन्द्र च तदान्य अहोसि । पुत्र केममन्द्र आहारणवित्वच नाम गोहिति । (छ)

वर्षियसम् मह मेडिया चृद्ध (६२) गहेला मचाह बुढो भविष्यापि आकामे निर्हेश्तु चो चे सूचिय पनतृति अलक्षित्रके चिर्णतः न चृद्धामणिकेत योजनरपमाण ठार्ग गल्या अवगंग अर्द्धामः । सक्को देवराजा दिव्यवक्तना ओणेकेत्वा योजनियमनय द्वोटकेन मम्बर्टिच्छरचा नार्वानयमञ्जने चूळामणिचनिय नाम पति-टक्कामि।

> "छे बान मंक्षित्र वस्यान्यवासिक, वेहासय' उक्तिवि अग्वपुरान्या । सहस्यतेनो सिरसा पटिग्यहि, सुवण्यच होटवरेन वासवो" ति ॥

पुत्र बंधियत्तो जिलासि—"ऽमानि कासिकबर्गानि मध्ये तः समणसाध्यानी" ति । अदस्य, क्रम्सन् बुद्धकारु पुराणसदायशो घरीकारसङ्ख्या एक तुष्ठत्तर अपाने । मिनभावेतः जिलासिस-अस्त्र में सहायको महाभितिकसम्बन्धान निक्वत्तो, समणपरिकारसस्य गहेल्या गविज्यसामीति —

> "तिचीवर च पतो च वासी मूचि च वन्यन, परिस्मावीन अनुदेने युन्योगस्स भिन्यनो" ति।

इमे अट्टसमणपरिक्यारे आहरित्वा अदासि । वोधिमतो अपहडक निवासेत्वा उनसपद्वप्रवादेस गण्डित्या-छन्न ! मम वचनेन मानापिनुक आरोग्य वदेतीति उच्योजीस ।

छत्रो बोधिसस् बन्दित्वा परिविधण करवा पनकामि । करवको पन छत्रेन सदि मस्तप्रमानस्त बोधिसनस्य बन्त सुणत्तो ठवा नरवीरानि मध्य पुन मामिनो दस्मर्गाना चक्रव्यय विजवत्नो मोक अधिवासेनं अमुक्कोनो हृद्येन फुलिनेन काल करवा नार्वातमभवने करवको नाम देवरूनो हृत्वा निज्वति ।

१ स्वा०-बेहायसं ।

छन्नस्स पटमं एकोव मोको अहोति । कन्यकस्स पन कालकिरियाय दुतियेन सोकेन पीळितो रोदन्तो परिदेवन्तो नगर जगमानि ।

६५१ बोविसत्तो राजगह पाविसि ।

बोधिससीपि पश्विजला तांस्म येव पदेसे अतुषिय नाम अम्बवनं अस्पि तत्य सत्ताह पत्र्वजनानुकेन बीतिनामेत्वा [65] एकदिवसेनेव निवयोजनममा पदसा गत्त्वा राजगहं पाधिति । पविसित्वा सरदान पिष्टाय विरे। सक्तनमार बोधिनन्यः क्यादस्तनेन घनपालकेन पविद्वराजगहं तिय अनुरित्वेन पविद्वरेव-नगरं विय च सहक्षीभ अगमानि । अय राजगुरिया नन्त्वा—देव ! एवक्सो नाम सती नगरे पिष्टाय चरति, देवो वा मनत्यो वा नागो वा सपण्यो वा को नायेसीति न जानागति आरोचेन ।

राजा पामादतके ठत्वा महापुरित दिन्दा अच्छरियदम्पनजातो पुरिसे आणोपीत-गच्छय भणे । वीममत मने अमनुन्मो भविस्सिनि नगरा निक्वमित्वा अन्तरचायिस्पति, [६३] सचे देवना भविस्पति आका-सेत गाँकप्रसात, सने नागो। भविस्पति पर्शवय निमुज्जित्वा गांगस्यति, सचे मनुस्सो भविस्पति ययान्द्व मिक्क परिम्मिक्यम्पति ।

महापुरिमोपि मो मिस्सकभत संहरित्या अल मे एतक वापतायाति अत्या पिवर्ठकारेनेव तगरा निषका-मित्या पण्डवक्ष्मवत्कावाया पुरत्याभिमुमो निमीदित्या आहार परिभुञ्जितु आरखी। अथस्म अन्ताति विपरिविध्यानाया तेन परिक्कृत्वाहरेत अद्भियानां एव अत्याव अनान ओवरित्या आहारस्य पत्रकृत्यार्था अद्भिर्द्धपुक्वाया तेन परिक्कृत्वाहरेत अद्भियानां एव अत्याव अनान ओवरित्यां पिक्यपुत्रिक्य । त्व वह सुल्य-प्रवासकुले निवस्तिकगण्यसाक्षित्रोजन नानणग्येहि भुञ्जन्द्राते निव्यन्तित्वारि एक पसुकुतिक दिन्य करा नु सो अहरित एक्सपो हुत्वा पिष्टाया चरित्या पूज्जिस्सामि, अविस्थित नु स्थो मं मो काणीन वित्तेत्वा निक्यत्वा इसित कि नामेन करोसी नि एव अत्यनाव अतान ओवरित्या निव्यक्तरो हुश्या आहार परिभृत्य ।

राजपुरिसा त पर्वान दिश्या गल्या राज्यो आरोचेसु । राजा दूतवयन मुख्या वेगेन नगरा निवर्णामत्या वोधिसनस्स सन्तिक गल्या इरियापयस्मि येव पसीदित्या बोधिमत्तस्म सम्ब इन्सरिय निव्यादेगि ।

बोधिसनो–मध्ह महाराज [।] वत्युकामेहि वा किलेसकामेहि वा अन्यो नन्थि, अह परमाभिसम्बोधि-पत्थयन्तो निक्खन्तोनि ।

राजा अनेकप्पकार याचरनीपि तस्स चित्त अर्छाभत्वा अद्धा त्व बुद्धो भविस्समि बुद्धभूतेन पन ते पठम सम. विजितः आगत्तस्वन्ति ।

अयमेत्य सहर्लपो । वित्यारो पन् ''पब्बज्जं किलयिम्मामि यथा पर्व्यज्ञ चनव्युमा'' ति टम पब्बज्जामुल साँढ अट्ठकथाय ओलाकेत्वा बेदितब्बो ।

§ ५२ आलारं च कालाम उद्दर्भ च रामपुतं

बोधिसनीषि रञ्जो परिञ्ज दखा अनुषुद्धेन बारिक चरमानी आळाः च कालाम उद्दक्ष च रामपुत उपसङ्कामिया समापतियो निव्यनेत्वा नाव माणो सम्बोधायानि [66] तीन्य समापत्तिभावन अनल्कारित्वा सर्वेदकस्य लोक्सा अननो बार्माविर्यमन्दमननत्य महाप्यान पदहितुकामी उद्देखे गन्या रमणीयो बनाय समिमाणीति तत्येव बाम उपान्त्वा महाप्यान पदहि ।

६ ५३ **दुक्करकिरिया**

तीप स्रो कंण्डज्जपपम्था पञ्च पञ्चितिना गामिनगमराजधानिमु भिक्त्वाय चरन्ना तत्य योधिसत्त सम्पापुणिमु । अय न छञ्जन्मानि महापधान पदहन्त इदानि बुद्धो भविस्सति इदानि बुद्धो भविस्सतिति परिवेणसम्पञ्जनादिकाय बत्तपटिपतिया उपस्टहमाना मन्तिकावचराति चस्स अहेसु । [६४]

बोधिमनोपि स्रो कोटिप्पत टुक्करकारिक करिस्सामीति एकतिललण्डुलादीहिपि बोतिनामेसि । सम्बसोपि आहारूपच्छेर अकामि । देवतापि लोमकूरीह ओज उपसहरमाना पर्टिक्सिप । अपस्स ताय निरा-

१. सुत्तनिपास महावाग ।

हारताय परमकसिमानं पत्तकायस्म सुवण्णवण्णो कायो काळवण्णो अहोमि । ढत्तिममहापुरियलकवणानि परिच्छकानि अहेस् ।

अप्येकदा अप्पाणकं झानं झायन्त्रो महाबंदताहि अभिनुष्ठो विविश्यक्षभूतो चक्कुमनकोटिय पनि । अध न एकच्चा देवता कालकतो समणो गोतमोनि वदन्ति । एकच्चा विहारवेमो अरहनत्ति आहतु । तत्त्व यास कालकतोति अहोसि ता गत्त्वा सुबोदनमहाराजस्य आरोचेमु नुम्हाक पुनो कालकनोति ।

मम पुनो बुढो हत्वा कालकतो अहत्वानि ?

बुद्धो भवित् नासमिल पद्मानग्रीमय येव पतित्वा कालकतोति।

डद सुत्वा राजा-नाह सहहाभि, मेम पुतस्य बोधि अप्यत्वा कालकिरिया नाम नत्योति पटिक्रियरि । कस्मा पन राजा न सहलीति ? काळदेवलगापसस्य बन्दापनदिवमे अन्युक्कसम्ले च पाटिहारियालं डिटठता ।

पुन बोधिसने सञ्ज परिलिभिन्वा पर्ठिने ता देवना आगल्या-अरोगो ते महाराज । पुनीति आरोचेनित।

राजा जानामह पुत्तस्य अमरणभावन्ति वर्दात ।

महामतस्स छञ्जस्सानि दुक्तरकारिय करोलस्म आकामे गण्डिकरणकालो विय अहोनि । सो अयं दुक्करकारिका नाम बोधाय मग्गो न होनीति ओळारिक आहार आहारेनु गामनिशमेमु पिण्डाय वरिस्वा आहार आहरि । अवस्स क्षेत्र ममहापरिमण्डवणानि पाकनिकानि अहेन । कायो सुवण्णवण्लो अहोनि ।

पञ्चविभाया भिक्ष् अय छस्वस्थानि दुक्तरकारिक करोलोपि मब्बञ्जनं परिविश्वित नासिक्य द्वानि (०१) गामादिनु रिण्डण चरित्र्या ओळारिक आहार आहरियमानो कि मिक्क्समिन ? बाहु-लिको एम पञ्चानिक्यमनो भीम नहाथितृकामस्म उस्मावित्रदुनक्कत विय अस्ताक गतस्म मिलिका विस-सन्त्रकां । कि प्रीमानि महापुरिस पहाय अननो अनना पनवीवर गोरेखा अर्डास्थोजनस्या गत्स्या इमिपननं पविमित्

६ ५४ मुजालाव पावासदानं

तेन को पन समयेन उरुवेलाथ सेनानिनिगमें सेनानिक्टिम्बिकस्म गेहे निध्वत्ता सूजाता नाम दारिका वयप्पत्ता एकस्मि निगोधरुक्षे पत्थन अकासि । सचै समजानिक कुलघर गत्त्वा पटमगढ्भे पुत्त लभिस्मामि अनुसबुच्छर ने सनसहस्मपरिच्चापेन बलिकस्म करिस्मामीति । तस्मा सा पत्थना समिज्ञि । सा महासत्तस्स दुबकरकारिक करोत्तस्य छट्ठे बस्से परिपृण्णे विसाखपुण्णमाय विलक्षम कातुकामा हत्वा पुरेतर येव च धेत्-सहस्य लट्टिमधकवने चरारेत्वा तास श्रीर पञ्चधेतमतानि पायेत्वा तास स्रीर [६५] अडढतियानीति एव याब मोलसम्न धेनन स्वीर अट्ठधेन्यो पिवन्ति ताब स्वीरम्स बहळत च मध्रत च ओजवन्तर च पत्वयमाना स्वीरपरिवत्तन नाम अकामि । सा विसाखपुण्णमीदिवसे पातीव बिटिकस्म करिस्सामीति रिलया पच्छ-ससमय पचवटठाय ता अटठक्षेनयो दहापेसि । वच्छका घेन्२ यनमूल नागमम् । यनमूले पन नवभाजने उपनीतमते असनो धम्मताय लीरघारा पर्वात्तम् । त अच्छरिय दिस्वा मुजाता सहत्येनेव लीर गहेत्या रख-भाजने पिक्किपित्वा सहस्येनेव अस्मि करवा पिंचतु आरिभ । तस्मि पायामे पच्चमाने सहस्ताहरूना बुख्यूला उट्ठहित्वा दक्किणावला हुत्वा सञ्चरत्वि । एकफुसिर्ताम्प बहि न पति । उद्धननो अप्पमलकोपि धुमो व उटठहति । तस्मि समये बैलारो लोकपाला आगस्त्वा उद्धने आरक्ष गण्हिसु । महाब्रह्मा छत्त धारेसि । सक्को अलातानि समानंत्रो अग्नि जालंसि । देवताहिसहस्सदीपपरिवारेसु चतुसु दीपेसु देवान च मन्स्सान ब उपकल्पनकओं अन्तनो देवान भावेन दण्डकबद्ध मध्यटल पीत्वा पंछित्वा गण्हमाना विय सहरित्वा तस्य पक्लिपम् । अञ्जेस हि कालेम् देवता कबळे कवळे आंज पक्लिपन्ति । सम्बोधिदिवमे च पन परिनि-ब्बाणदिवसे च उक्खल्यि येव पक्लिपन्ति।

मुजाता एकदिवसेनेव [68] तत्य अत्तनो पाकटानि अनेकानि अच्छित्यानि दिन्दा पुण्णादासि आम-नोमि—असम् [।] पुण्णे [।] अज्ज अन्हाक देवना अतिविध पमन्ना । सथा एनके कान्ने एवरूप अच्छित्य नाम न दिट्रवृद्ध । बेनेन गन्दग देवर्ठानं पटिजगादोत्ति । सा साध अय्येति तस्सा वचन सम्पटिच्छित्वा तुरिततुरिता रक्खमूलं अगमासि ।

बोध्वरतापि सो तरिम रितभागे पत्र्च महामुपिने दिस्ता परिगण्हलो तिस्समयेनाह अण्ण बुढो अविस्सामीति कतमिन्द्रानो तस्सा र्रान्या अण्णयेन कतसरीरपटिजणानी भिक्काचारकाल आगमयमानो पातीब आगल्या तरिम क्कबमुले निगीदि अननो पभाय सकल क्कब ओभासयमानो ।

अब को मा पुण्या आगस्या अहस बोधिमतः स्तत्वमूले पाचीनकोकपातु बोलोकवमानं निसिधं। सरीरतो बस्म नित्तवलाटि पमाहि सक्करनाव मुबल्पवणा दिव्या तस्या एतदहोसि-अवज अस्हाकं देवता स्वत्वती ओन्सर मुक्त्येनेव बिलक्समं सम्पर्टिच्छिनु निसिक्षा मञ्जीत उन्हेगप्पना हुत्वा वेगेन गत्त्वा मुजाताय एनस्थ आरोचींमा [६६]

मुन्नाता नन्मा वचन मुखा तुर्दरमानसा क्षुत्वा अञ्ज्यानि पद्शय मम जेर्ड्यनिद्दाने तिर्दाहीनि सीतु अन्वश्चिक गण्याण्या अवाधि । सम्मा पन चुक्यभानि पायाण र्याण्याणानि विज्ञ ज्याण्याणानि स्त्रुवणानि स्त्रुवणानि क्षुत्रुवणानि कृष्ण्याणानि । स्त्रुवणानि स्त्रुवणानि सुत्रुवणानि स्त्रुवणानि । स्त्रुवणानि स्त्रुवणानि । स्त्रुवणानि ।

§ ५५. बोबिसत्तस्स पाति पटिसोतं गच्छति

अभिसानीपि श्री निमित्रहरूतना उद्दाय रक्क पदिस्त्रण कर्या पानि आदाय नेरञ्जनय नीर गल्या अनेक्स बांधियतस्त्रसम्हरमान रे अभिनान्द्रज्ञनादिवरं ओनिर्ग्न्ज नहानद्द्रान गुगतिद्द्रिजनित्य नाम अग्रिश, नम्स नीरे पानि रोक्चा ओनिरस्या नहात्वा अनेकबुद्धमनस्त्रमान निवामना अरहत्ज्ञ निवामेत्वा पुरस्था-भिमुको निवीसित्या एकट्टिनाल्यकरपमाणे एकनण्यामाणिक क्रवा नक्ष अप्योदक मन्त्रपामा परिकार्यक ।

मो एवं हिस्स बुडभूतस्म मनमताह वोधिमण्डे वसननस्म एक्नपञ्जःसदिवसानि आहारो अहानि । एनक काल नेव अञ्जो आहारो अन्ती न नहान न मुखधांवन न सरीरवळज्जो । झानसुकन मन्मसुकन फलमुक्तेनेव वीतिनामेसि ।

त पन पायाम परिभृज्ञिस्या मुक्कणपाति गहेत्वा-मजाह अञ्च बढ़ो भविनु मिक्कस्मामि अय मे पाति परिमोत्त गच्छनु तो च मिक्कसमामि असमोत गच्छनुति बत्वा परिभागि । मा [६०] सोत छिन्दसाता निमित्त्व गत्वा मण्डस्ट्रानंतेव उवसम्पन्नी अस्मो विव अमीनिहस्थासस्ट्रान परिसात गत्वा एकस्सि आवते निमृज्ञिब्बा कल्यामाराज्ञभवत गन्या निष्ण युद्धान परिभोगपातियो किळिकिळीनि रव कारयमाना पहरित्वा ताम सब्बेह्टिमा हुन्बा अट्टामि ।

कारो नागराजा त सर् मुखा हिस्सी एको बुद्धो निब्बानि पुत अरुज एकोनिब्बतीति अनर्केहि पदमतिहि वित्यो बदमानो अट्टानि । तस्म किर[े] सहाराठीबया एकयोजनितनाव्यल्पमाण नम् पूरेत्वा आरोहनकाळो अरुज वा हित्यो बाति सदियो उहाँनि ।

§ ५६ बोधिमण्ड आरुहि

योधिसनोपि नदीतीर्राम्ह सुपुष्फिनसालवने दिवाबिहार कत्वा सायण्हसमये पुष्फान वण्टतो स्ञ्चन-

काले देवताहि अलक्क्ष्तेन अर्ट्सभिवन्यानेन मागेन सीहो विय विजयभानो बोधिकक्वाभिष्वा पायाति । नागयक्वसुण्णाद्यो विक्टीह गन्यपुष्कादीहि पूर्वायमु । दिख्यसङ्गीनादीनि ' पवनियमु दससहस्मीलोकधानु एकनान्या एकमाला एकसावकारा अहोति ।

तिस्स समये मोलियों नाम तिणहारको तिण आदाय विराधे आगल्छनो महावृत्तिसम आकार अन्य अहट विलग्नहियों नस्स अदापि । वोधिमानो निण गरेल्या [२०] वोधिमान आराज दिनकालियानायों जनगरभिमुखो अहट्गिन । तीर्म सणे दिनकालकाला जोगीदित्वा हेट्छा अवीधिमान्यन विज अहोगि । उनरप्यक्तत्राक्ष उन्हारित्वा उपरि भवण्यापन विज अहोगि । योधिमानो हम मार्चोध्यापुण्यन्द्रात न भविसानी
मण्डेति पदिकाण करोरनो पन्छिमदिसाभाग गल्ला पुरन्थातिमुखो अहट्गिन । तनो पन्छिमचक्काळ ओमीदिन्ता हेट्छा अवीधिमाणन विज अहोगि । पुरन्थातिमुखो अहट्गिन । तनो पन्छिमचक्काळ ओमीदिन्ता हेट्छा निरस्स ने निष्हणारियनो अक्का नामिया पनिर्टितमहानकत्वक द्वा महापठवी
ओनतुम्रता अहोगि । योधिमानो मयिद सार्चोधियापुण्यन्द्रात न भविस्मति मण्डेति परिक्षण करोगो
उनरदिसामाग गल्ला दिन्सणाभिमुचो अहट्गीय । तनो उन्तरचक्काळ ओमीदित्वा हेट्छा अवीधिसामम विज अहोगि । योधिमानो सम्बद्धा साम्या प्रकार । वास्ति प्रकार । स्वाप्ति । स्वाप्त

महामनो दर्भ मध्यबुडान अविज्ञाहित अबज्दरात क्रिकेमज्ज्जनविद्धमनद्दातान जन्या तानि तिचानि अमं गहेन्या बांकेमि । तावदेव सुदमहत्यां परण्ड्यो अहोमि । तानिष [६८] मो निचानि तथा-इपेन सण्डानेन राष्ट्राहेनु यथा रूप मुकुमलेशि चिनकारा वा ताव्यवारों वा ज्ञांजिवनुष्यि ममत्यो तथि । बोधिमनो वेशिकक्य पिट्टिनो क्रमा पुरम्याभिम्भो दहरमानगो हुत्या काम तथा च नद्वार प अट्टि ब अवस्मानु जे जयसुमानु सरीर ममलेहिन, करवे सम्मानथीधि अल्का दम एल्क्ट्स क्षित्रस्मातीनी अमिमननमितानेगा अभेजक्या अगराजितपण्डसु आक्षत्रिया निगीरि ।

§ ५७. मारक्राज्यो

तरिम्म समये मारो देवपुनी भिडल्थकुमारो मारः वन अतिकामितुकामो, न दानिम्म अतिकामितु दरमामीति मान्वक्रम पत्तिक सम्बा एतम्बल आरोजेल्या मार्ग्योगन नाम धोमारीवा मार्ग्यक आरात विकल-मि। मा मार्ग्यम पार्ग्य पुनो दिवसयोजनाति होति । दिल्लग्यो । व समानी व द्वारमांज्ञाता, पर्कार्य-गत वक्तवाळ पीर्यन्त कत्वा दिना उद्ध नवयोजन्त्वेषा मार्ग्मना यस्मा उक्षरीलगा उक्षादगरा [२1] योजन-सहस्मानो पर्दाय परिविज्ञदायनगरी विवा मूर्यामा अत्र मार्गे देवपुनी दिवपुर्योजनातिक गिर्मिन्य नाम दिल्य आमर्गहत्वा बहुसहस्म मार्ग्यना वानापुर्यानि अगाहीत। अवस्मायित मार्ग्यमाया द्वे जना एक्सदिसक आयुव न गिल्यु। नामप्यसम्भाभ हृत्या महात्मन अञ्चोलनमाना आरोगम्।

सम्माट्स-वक्कवळ देवना पन महामनास्य विशोधि वदनामा अर्थमु । मन्ही देवराजा विजयुनस्य द्वय सममानो अर्दानि । मां किर सदस्यो दीराज्य-वीत ही हीर्ति , मीर बान वाहरोन्चा पमन्ते। नन्तारो माने मह करित्वा निस्महो होति । महानाक्यानाराजा अंगरेकपदस्योन वर्षा बहुरानी अर्दानीम । महाजहा मेनकछन पारस्यानो अर्दानीम । महाजहे पन वेशियमण्ड जागह मुस्ते उपसङ्घनने नेन एक्षेपि एत नार्वास्थ । रास्स-सम्बद्ध्यनेत्व पार्वास्थि । सार्वा उपस्थ निम्नात्वा पर्वास्थ निम्नात्वा पर्वास्थ । स्वस्ता सम्बद्धान्त्य पार्वास्थ । प्रत्ये वास्मानो अर्दानी । स्वस्तान्त्य प्रत्ये वास्मान्त्य पर्वास्थ निम्नात्वा पर्वास्थ निम्नात्वा पर्वास्थ निम्नात्वा । स्वस्तान्त्र निम्नात्वा । स्वहेदस्य स्वस्तान्त्र । स्वस्तान्त्र । स्वस्तान्त्र । स्वस्तान्त्र । स्वहेदस्य स्वस्तान्य स्वस्तान्त्र । स्वस्तान्ता । स्वस्तान्त्र । स्वस्तान्य । स्वस्तान्त्र । स्वस्तान्त्र । स्वस्तान्य । स्वस्त

१. रो०-विब्बसङ्गीतानि । २. रो०-इवं । ३ सि-अवसिस्सतु ।

सिद्धत्येन सर्वसो अञ्जो पुरिसो नाम नित्य। सम् सम्मुखा युद्धं दातुं न सिक्कस्साम, पञ्छाभागेण वस्सामासि। [६९]

महापुरिसोपि तीणि पस्मानि ओलोकेरवा सब्बदेवतान पणतत्ता सुन्छानि अहस । पुन उत्तरपस्ति मारवरू अक्टोस्टरमाने दिन्दा अस एतको जनो माएककं सम्बाय महत्त वायाम परकस्म करोति । इस्मीत्म ठाने मयह माता वा पिना वा भागा वा अङ्ओ वा सोलि आतको नीत्व । इसा पन पत्तपारियोव सम्बद्धं वीचरत्त पुरुपरिखनतिस्ता । तस्मा पारिमयो च फलक करवा पारिससयेनेव पहरित्वा अय वस्कायो सवा विद्वेतेत बृतनीनि दसपारिमयो आक्रजमानो निसीदि ।

अय मारो देवपुनी एनेनेव सिङ्क्य पकार्थस्मामीति वातमण्डल समुद्धापेक्षि । त सर्च येव पुरित्यमादिसेदा वाता समुद्धीहत्वा अङ्ड्योजनाद्वियोजन [22] नियोजनप्यमाणानि पम्मतक्टानि पदालेत्वा वत्तपञ्चकलादीनि उस्मृतेत्वा समन्ता गामनिनमे नृण्यविकृण कातृ समत्यापि महापुरिसस्स पुज्यतेत्रेन विकृतान्मावा वीपियन पत्र्या चीवनकण्यानियः चालेत् नामान्यस्य ।

नतो उदकेन न अक्सोन्यरित्वा मारेस्मामीति महावस्य समुर्ठापेति । तस्सानुभावेन उपक्यरि सतप-टलमहस्परटकारिभेदा बलाहका उदर्रीहृत्या बीत्समु । बुट्ठिधारायेगेन पठवी छिद्दा अहोति । बनरुक्का-दीन उपरिमागंन महाभेषी आगल्या महामतस्य चीवरं उस्सावविन्युपतनमन्तिर तैमेतु नासविक्ष ।

नतो पासाणबस्यं समुद्धावेसि । महन्तानि महन्तानि पब्यतक्दानि धूपायन्तानि पञ्जलन्तानि आका-मेनागन्त्वा बोधिसत्त पत्वा दिव्यसालाग्ळभाव आपर्षिजसु ।

नतो पहरणबस्म समुद्रापेनि । एकतो धारा उभतो धारा असिमतिखुरप्पादयो धूपायस्त्रा पञ्जलन्ता आकामनागन्त्रा बोधिमल पत्वा दिख्यपूर्फानि अहेमु ।

तनो अङ्गारवस्य सम्ट्ठापेसि । किमुकवण्णा अङ्गारा आकासेनागन्त्वा बोधिसत्तस्य गादमूर्वे दिब्बयुष्फानि हत्वा विकित्तिमु ।

तनो कुंबकुळवस्य सम्द्रापेसि । अच्चुण्हो आंगावण्णो कुंबकुळो आकासेनागस्या बोधिसत्तस्य पादमूले चन्दनबुण्ण हुन्वा निर्पात ।

ततो बालुकावस्य समुद्रशपेसि । अतिमुख्मवालुका घूपायन्ता पञ्जलन्ता आकामेनागन्त्वा बोबिसनस्य पादमुखे दिव्यपुष्कानि हुत्वा निर्पातम् ।

तनो कललबस्य सम्ट्ठापेसि। त कलल धूपायन्न पञ्जलन्न आकासेनागरूवा बोधिसत्तस्य पाद-मुलं दिब्बविलेगन हत्वा निपति।

ननो इमिना भिसेत्वा सिद्धस्य पलापेरसामीति अन्धकार समृट्ठापेमि। त वनुरङ्गसमन्नागत विय महातम हुत्वा बोधिसल पत्वा मृरियप्पभाविहत विय अन्धकार अन्तरधाय। [70]

्व मारो इताहि नवहि बातवस्मवानाणगहरणङ्कारकुक्कुळवाजिकाकळळ्यकारव्दहीहि बोधि-सम् पायपेनु अनकोरोनी-कि सणे निद्धः इम कुमार गष्ट्यः हवतः स्वयोवानि परिस आया-पेत्रा सर्वास्य विरिध्येक्टस्य हरिश्यो संश्ये निर्माशे वक्कायुष आदाय बोधियन उपसङ्क्षीस्त्वा-सिद्धस्य । उद्हेहि एनस्मा पल्टक्का नाय तुष्ट पापुणानि सङ एसो पापुणानीनि आहः।

महामनी तस्य वचन मृत्वा अवीच-मार । नेव तथा दमवारिमयो पूरिता, न उपरारीमयो, न परमन्थपारीमयो नापि पञ्चमहापित्च्यामा परिच्यना न आनत्यबरिया न लोकस्ववरिया न बुढल्यचरिया पूरिता, नाय पन्जङ्को तुस्त्र [73] पापृणाति मस्हेसेमो पापृणातीनि आह ।

मारो कुद्धो कोधवेग असहस्यो महापुरिसस्य चवकाय्थ विस्तरजेसि । तं तस्स दसपारिमयो

१. रो०-सुञ्जा। २ सि०-प्रातत्थवरिया।

आवज्जेन्तस्स उपिन्भागे मालाबितान हृत्या अट्टासि । त किर मुग्धारं वक्तापुषं अञ्जदा तेन हुन्देन विस्सट्ट एकष्ठपसासाणं पस्पे वसक्कीरे विध छिन्दन्त गच्छिन । इरानि पन नीस्म मालावितान हृत्या ठिजे अवसेसा भारपित्सा इदानि पन्त्रमूपो बुद्दाय पन्धायस्मतीति महत्त्ममहत्तानि संस्पे-जर्मेम् । तानियि महापुरिसम्स सम्मार्गस्य अवज्जनसम्म मालाव्यास्य आपित्रम्या मुनिस्स पनिम् ।

देवता चक्कबळमुखबट्टिय हिना गीव पनारंखा मीम उन्स्विपत्वा उभिविपत्वा न्ट्ठो वन भी सिद्धत्वकुमारस्स रुपमोभमण्यनी अलभावी किन्नु लो करिन्मतीनि ओठोकेलि।

ततो महापुरिमो पूरिनपारमीन बोरिननान ऑशमम्ब्ज्झतिदवन पनपल्लङ्को भरद पापुणानीति बत्वा ठिन मारे आह.—गर ! तुरह दानस्म दिश्रभावे को मक्बीति ।

मारो इमे गुलका सक्कितील मारकलाभिमुल हुन्थ प्रमारेशि। तस्य लगे मारपरिसाय अह सक्कि अहं तक्कीति प्रवनगर्दा गृटविडिटेयनगर्दमरिमा अहोनि। अथ मारो महापुरिस आह-निद्धन्य । तस्य दानस्य विकासके को मक्कीति।

महापुरिमो 'तुरह ताब दानस्स दिन्नभावे सबेनना सिक्बनो मरू पन धर्मास्म ठाने सचेतनो कोचि सिक्ब नाम निक्ष, निरुठ्तु ताब से अबसेसब्रनभावेषु दिन्नदान वेस्मन्तरनभावे पन ठरवा मरू सनस्तनकमहादानस्स ताब दिश्रमावे वस अवेतनारि पनसहरण्यत्वी सक्योति चीबरणध्यन्तरनो दिश्वप्रहर्य अभिनीहीरत्वा वेस्सन्तरनभावे ठ्वायाना' सन्तरकमहादानस्म दिन्नभावे त्व सक्यी न सक्योति [७१] महाएठवीअभिमण् हत्व पर्यार्थन।

महापठवी अह ते तदा सक्वीति विरावसतेन विरावसहस्थन विरावसनगहस्थन मारवल अवत्य-रमाना विय जन्नदि।

तनो महागुरितं दिम्न तं सिद्धस्य ! महादान उनमदानस्ति वेम्पनरदान सम्मसने सम्ममन्ते दिवञ्डवोजनमनिको गिरियेभज्दरत्यो जशकेदि पित्दुरुमि । मारपरिमा दिसा विदिसा पर्णाय । दं एकमणेन गता नाम नित्य । मीसाभरणानि चेव निवस्थवस्थानि च पहाय सम्मस्यसम्बदिसाहि येव पर्णायम् ।

ननी देवसद्दशा पलायमान मारवल दिस्मा [२४] मारस्म पराजयो जानी मिद्धस्वकूमारस्म जयो. जयपुत्र करिस्सामानि नागा नागान, सुपण्णा सुपण्णान, देवना देवनान, ब्रह्मानी ब्रह्मान पेसेत्वा गन्धमाला-दिहस्था महापुरिसस्स मिनक बोधियन्त्रद्भ जगमम् । एव गनेम् च पन नेम् —

'जयां हि इद्धम्म मिरीमतो अया मारम्म च पारिमतो पराजयोः
जया नदा नापाणा महीनतो ।
जयो हि चुहम्म सिरीमतो अय
मारम्म च पारिमतो पराजयोः
स्वर्थमिय् बीचिमणं पराजयोः
सुरण्यमद्भार्थ जय महीनतो ।
जयो हि बुहम्म सिरीमतो अय
मारम्म च पारिमतो पराजयोः
उपयोग्य वीचिमणं पर्मादिता
उपयोग्य वीचिमणं पराजयोः
उपयोग्य वीचिमणं पराजयोः
उपयोग्य वीचिमणं पराजयोः
उपयोग्य वीचिमणं पर्मादिता
जया तदा देवराणा महीनतो ।
जया नदा देवराणा महीनता ।
जया नदा देवराणा महीनता ।
जया ।

१. रो०-पलपल्लक्षं । २. रो०-मदहं ।

जमो हि बुद्धस्स निरीमतो अय मारस्स च पापिमतो पराजयो, उम्बोसयु बोधिमण्डे पमोदिता जय तदा ब्रह्मगणापि तादिनों ति।

अवसेसा दसमु चक्कवाळसहस्सेसु देवना मालागन्धविलेपनेहि पूजयमाना नानश्कारा घृतियो वदमाना अटेक्स्।

६ ५८ सम्बोधिया पत्ति

्व धरमानं येव मुरिये महापुरिगो मारवन्त्र विधमेत्वा चीवरूपरि पतमानेहि योधिरुक्षरृष्ठेरि रत्तप्रवाहदर्शतः विय भूतियमानो परमे याम पुर्व्यनिवासप्राण अनुस्मरित्वा मज्जिमे दिव्यवस्यु जिनोधेत्वा पश्चिमे याम परिज्यसमुदारे जाग जीतारींग (%)

अयस्य द्वादसङ्गिकः प्रचयाकार बट्टविबट्टबमेन अनुलोमपटिलोमगो सम्मसन्तस्य सम्मसन्तस्य दसमहस्मीलोकधान् उदकर्पारयन्त कत्वा द्वादसकथन सङ्घाष्ट्राः

महापुरिये पन दस सहस्यीकोकधान् उन्नादेखा अरुणुगमनवेकाय सब्बञ्जुनआण [75] परिविज्ञसन्ते सक्वरुपनसम् लोकधानु अरुष्ठुनपरियन्ता अहोसिः । वाचीनवन्त्रवाळसुपदवर्ष्ट्रियं उम्मापितान धनान पराक्षान रिस्त्रों परिविज्ञसन्ते व्याप्त एराक्षान रिस्त्रों परिविज्ञसन्ते व्याप्त परिविज्ञसन्त्रकाळस्थान्त्रवर्ष्ट्रियं उम्मापितान वाचीनवन्त्रकाळस्थान्त्रवर्ष्ट्रियं उम्मापितान वाचीनवन्त्रकाळस्थान्त्रवर्ष्ट्रियं उम्मापितान वाचीनवन्त्रकाळस्थान्त्रवर्ष्ट्रियं पर्वाप्तान विज्ञानकाळस्थान्त्रवर्ष्ट्रियं पर्वाप्तान अर्थाने प्रमापितान उत्तरन्त्रकाळस्थान्त्रवर्ष्ट्रियं पर्वाप्तान प्रस्त्राने अन्तर्भाने अर्थाप्तान प्रस्त्रपत्रकाल प्रस्त्रपत्रकाल प्रस्त्रपत्रकाल प्रमापितान वाचीनविज्ञपत्रवर्ष्ट्रियं पर्वाप्तान प्रस्त्रपत्रकाल प्रमापितान प्रस्तिकालियां प्रमापत्रकालियां प्रमापत्रकालियां प्रमापत्रकालियां प्रमापत्रकालियां प्रमापत्रकालियां प्रमापत्रकालियां प्रमापत्रकालियां प्रमापत्रकालियां प्रमापत्रकालियां प्रस्तिकालयां प्रमापत्रकालियां प्रसापत्रकालियां प्रमापत्रकालियां प्रसापत्रकालियां प्रसापत्रकालिया

दससहस्मीजोकभानु बहुँचा विस्मद्दमालागृद्धा विय सुमण्डनगुष्कमन्यारो विय न अहोनि। वक्कबाद्धम्पेनु अह्म्योक्तमन्त्रस्थोकस्पत्तिका सम्मद्गिययभावपि अनोभानिननुष्वा एकोभागा अहम्। क्लुग्रानीतियोकस्वहस्मयग्रमीरा महामभुद्दे। स्परोहका अहोगा। त्रियो नाप्कोन्य। अल्कुशा एकोभागा अहम्। स्पानि सम्मन्। जानिकोरा सह मुणिद् । जानिकोछम्पा पराम प्रस्किनु । अल्कुश्नानीकीनि छिक्किया पितृ । एव अर्थान्याकि निर्मानिक प्रतिस्मित् । प्रतिस्मित् । एव अर्थान्याक्षमेनु परिभूमेनु सम्बन्धनुकाण परिविध्वान्या सम्बन्धनुकाण स्थानिक स्थानि

"अनेकजातिनमारं सत्याविष्मं अनिश्चिम्, गहकारक गवेमत्त्रो हुम्बा जानि पुनप्तुन । गहकारक । दिदेशीन पुन गेह न काहिन, सब्बा ने फामुका भग्मा गहकूट विमस्त्रित, विसङ्कारम्य चित्त तकहात ब्यमञ्जूमा" नि । [76]

६ति तुमितपुरतो पर्ठात यात्र अप बोधिमण्डे मध्यव्यक्रुतर्पात, एत्तकः **ठा**न अविदूरेतिदान नामाति वेदिनव्य।

१ रो०-पुजयमानो । २ रो०-छिन्दित्या । ३. स्था०-विसङ्खतं ।

५. सन्तिके निदानं

सिनक निदान पन "भगवा सावित्यय विहर्गन जेनवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे बेमालियं विहर्गत महावने कूटागारमालाय "न्ति एव तेसु तेमु ठानेसु विहरतो तम्मि तम्मि ठाने येव लब्धनीति बुन । किचापि एव बुन अप स्त्रो पन तं आदिती पट्ठाय एवं बेहितब्य---

६ ५९. जयपस्लंको वरपस्लंको

ष्टमं उदान उदानेत्वा जयपल्लेके निमिन्तस्स हि भगवनां एनदहासि-अह कप्पसतसहस्माधिकानि वत्तारि असलेय्यानि इमस्स पल्लकस्स कारणा सन्धानि । एनकः में कालं इमस्सेव पल्लकस्स कारणा सन्धानि । एनकः में कालं इमस्सेव पल्लकस्स कारणा गया अलंकनसीत शीवाय छिन्दित्वा दिन्त । जालियकुमार-मिरिसा पुत्ता, कण्हाजिनाकुमारीमिरिसा धीनगो, महीरेबीसिरिसा भरियायो च परेसं दासत्याय दिन्ता। अर्थ में पल्लक सन्धानि । अर्थकेत सन्धानि (वस्तानक्ष्मविस्तानक्यानक्ष्मविस्त

६६०. अनिमिसचेतिय

अयेक-चान देवनानं अग्वापि नृत निरुद्धस्य कराव्यक्तिच्चं और परान्तरास्त्र हि आठर्थं व विव-हतीनि परिवित्यक्को उदगारि । सत्या देवनानं वित्यक्त प्रत्या नार्या वित्यक्क्युस्समनन्थ बेहामं अस्मामस्य यसक्यारिहारिय दर्भाम । महासीचित्रपर्धस्य हि कत्यसम्बन्धारिहारिय च जानिसमानमे कार्यारिहारिय च पार्टिकपुन समानामे कार्यारिहारियं च सर्वा गण्डस्यक्त्रसमूखं समस्यारिहारियवरित्यं अशीस । एवं सत्या इमिना पारिहारियंत देवतानं वित्यक्तं बूपसमेत्या पत्नकंतो ईसकं पाचीननिस्सातं उत्तरादिसामाये ठत्वा इमिन यन में पत्नकंतं मदबर्ट्यनुत्राणं परिविद्यान्ति आसेस्यानि कप्पतनस्यार्ट्य पृरितानं पाप्तमीनं कार्यार्थमसन्द्रानं पत्नकंत्र असिमंगहि अस्मीहि ओलोकप्यानी सत्ताहं शैनिनामेमि । त ठानं अनिमिमचैतियं नाम जानं ।

५१ रतनचङ्कमचेतिय

अथ पल्लंकस्स च ठितद्शानस्म च अन्तरा चंकमं मापेत्वा पुरित्यमपिच्छमतो आयते [77] रतनचंकमं चकमन्तो सत्ताहं बीतिनामेमि । सं ठानं रतनचंकमचेत्रियं नाम जाते ।

६६२ रतनघरं

चतुत्र्ये पत मलाहे योधितो पच्छिमुलर्गवमाभागे देवता रतनवरं मापीयम् । तस्य पत्र्यकंत निमी-दित्वा अभिश्रमपिटकं विमेसतो चेन्य अतन्तत्रयं समलपट्ठानं विचिनसो मलाहं कीतिनामेसि ।

अभिधास्मका पताहु — "रतनघरं नाम न रतनमयं गेहं। सनक्षं पन पकरणानं सम्मास्तर्द्धान रतनघर" नि । यस्मा पनेत्व उभोषेने परियाया यज्जनि नस्मा उभयापेतं गहेनव्यमेख। ततो पर्द्धाप पन तं रात रतनघरचेतियं नाम बातं। [७४]

ु ६३. येन अजपालनिग्रोधो

एवं बोधिसमीपे येव चत्तारि सत्ताहानि बीतिनामेत्वा पञ्चमं सत्ताहे बोधिरुवय्म्ला येन अजपालिन-ग्रोबो तेनुपसंकपि । तत्रापि धम्मं विचिनन्तो येव विभृत्तिमुखं ^व पटिसंदेदेतो निसीदि ।

तस्मि समये भारो देवपुनो एनसं कालं अनुबन्धनो ओतारापेकोपि इमस्य किञ्चि बालितं नाइसं। अतिककत्तोदानि एम भम बसनि शोमनस्यपानो मशाममं निमीदित्वा सोळस कारणानि चिन्तेन्तो भूमियं सोळस लेखा कर्ड्डा । "अहं ऐसी विव दानपारीम न पूर्नेस नेनस्टि इमिना मध्यो न जानो" ति एसं

१ महाबगा उदान । २ स्या०-पातलीपुत्रसमागमे । ३ सि०-दिमृत्तिमुखं ।

लेखं कहि । तथा ''अहं एमं। विव भीलपार्राम नेक्समपार्राम पञ्जापरीम विरिवणारीम स्वित्तापार्राम सित्त्वणारीम विरिवणारीम स्वत्त्वणारीम अधिर्शालपार्राम मेतापार्राम उपेक्सापार्राम न पूर्णेश नेनिष्ट इमिना सदिमो न जातो'' ति दसमें लेखं किहि । अहं एमं। विव असाधारणस्य आसवान्त्रपञ्जापस्य इतिक्रपरोपरिष्ठणाणस्य मार्गत्तालापस्य समकपारिष्ठाणिक्षाणस्य भावतिस्यालास्य समकपारिष्ठाणिक्षाणस्य अपनार्याणस्य समकपारिष्ठाणिक्षाणस्य अपनार्याणस्य समकपारिष्ठाणिक्षाणस्य अपनार्याणस्य सम्बद्धानिष्या न पूर्वेष तेनिष्ठ इमिना सदिसो न जातो'' ति सोद्धसमें लेखं कहि । एवं इमेहि कारणोहि महास्योगिक्षय लेखा कर्इशालो' निर्मारि ।

र्ताम्म समये तण्हा अरती रागा चानि तिस्सी मारधीनरो पिता नोन पञ्जायति कह नुस्रो एतरहीति ओलोकसमानातं दोमनम्मप्पनं भूमियं विलिखमान दिस्या पितुमन्तिकं गल्या कस्माप्ति तात ' दुक्खी दुम्मनोमीति पृष्टिम् ।

अस्मा, अयं महासमणो सप्हं वसं अनिक्कलो। एनकं कालं ओलोकेन्तो ओनारसस्स दट्ठु नासर्विक तेनस्हि दुक्की दुम्मनोति। [78]

यदि एवं मा चिन्तयित्य मयमेतं अत्तनो वसे कत्वा आदाय आगमिस्सामाति ।

न सक्का अम्मा । एसो केनचि वसे कातुं। अचलाय सद्धाय पतिटठितो एसो परिसोति ।

तात ! मर्थ इस्थियो नाम, इरानेव न रागपामादीहि बन्धित्वा आनेस्साम । तुम्हे मा चिन्निधिस्थाति ।

ता इतो अगवन्तं उपमंकिमस्या पादे ते समण । परिचारेस्सामाति आहेंमु। अगवा तेव
तामं वचनं मतीन अक्योसि न अक्योसि उम्मीण्येला आंकोकेसि अतृतरं उपधियंत्रयं विद्युत्तमानसो
विवेकमुख्यचेव अतृभवन्तो निर्मीदि । पुत मार्ग्योतरो "उच्चावचा अक्षेप्रस्तातं अधिप्यासा,
केसिष्ट्य कुमार्रिकामु पंसे होति, केसिष्ट्य एठमययं ठितामु, केसिष्ट्य माठ्यप्रया ठितामु, केसिष्ट्य
पिच्छमवयं ठितामु। यसूत मय तानप्पकारेहि रूपेहि एकोभेय्यामा" ति [७५] एकमेका कुमारिवण्यादिवयेत्र सस्तं अनभावे असिनिम्मित्रचा कुमारियो अविज्ञाता सौक्षित्रज्ञाता इतिज्ञाता मित्रविभित्त्ययो महिः
वयोग बहुवा छक्ष्यन् भगवनं उपस्तर्भस्या वादे नं मयण परिचारेस्मामाति आहम् । र्राण भगवा न मनसाकानि यथा तं अनुनरे उपधिमात्रय विभागे।

केचि पनाधरिया वदित्त — "ना महित्यभावेन उपगना दित्वा भगवा एवमेव एता सण्डदत्ता पिठनकेसा होत्तुनि अधिद्रशामें 'ति न न गहेत्व्ये । न हि सच्या पत्रमा अधिद्रशन करोति । भगवा पन ''अयेव तुन्हें कि दिस्या एव वायमय ?' एवस्थं नाम अवीनरागायीन पुराने कानु बट्टिन । नवाननम्म पन रागो पहीनो, दोमो पहीनो, मोदो पहीनो '' नि । अन्तो किवेबणद्वाणं आरक्ष्य —

"यम्स जित नावजीयति जितमस्म नो याति कोचि छोके ।

त बुद्धमनन्तर्गोचरं अपद केन पदेन नेम्सथ ॥

यस्म जालिनी विमन्तिका नण्हा नत्थि कुर्हिञ्च नेतवे ।

तं बुढमननगोवरं अपरं केन पदेन नेम्मया' ति । इमा धम्मपदे बुढवमो ढें गाथा वदलो धम्म कर्षोम । ता सच्च किर नो पिता अवोच ''अरढं सुगनो लोके न रागेन [79] सवानयो' ति आदीनि बस्वा पितु सन्तिक अगमम ।

भगवापि तत्य सत्ताह वीतिनामेत्वा मुचलिन्दमूलं ३ अगमामि ।

§ ६४ मुचलिन्दं, राजायतनं

तस्य मलाहरुर्हाळकाय³ उप्पन्नाय सीतारिपाट्याहृतस्य मुचलिन्देन नागराजेन सनस्वत्तु भोगेहि परिक्रित्ता असम्बाध गत्यकुटियं बिहरूला विद्य विमुनिगुष्तं पटिसंबेदियमानो सलाहं बीतिनामेत्वा राजायनर्न

१ रो०-आकड्डमानो । २ रो०-मुचलिन्दं। ३ रो०-सत्ताहं बीतिनामेत्वा धट्टलिकाय ।

उपसंकमि । तत्थापि विमुलिसुखपटिसंवेदीयेव निसीदि ।

एनावना सत्त सताहानि परिपुण्णानि । एत्यन्तरे नेव मुख्योवनं न मरीरपटिजगन न आहार-किञ्चं अहोसि । झानमुखेन मगासुखेन फलमुखेनेव शीनिनामेसि ।

जवस्य निष्म सनस्माहसम्बक्ते गुक्तपञ्जासनिष्मे दिवसे तत्य निमित्रम्म मुत्रे थोविस्सामीति चित्ते उदरादि । सक्को देवानिस्त्री अगद्धरीटक आहोत्या अदासि । सत्याते गरिभृष्टिक । तेनस्स सरीरबळ्डे अशोम । अपन्स सक्को येव नागठनादनकट्ठे खेव सुक्थीवन्यदक्ते च अदासि । सत्या नं दलकट्ठे बाहित्वा अनीननवद्गे उदक्ते मुत्र घोवित्या नत्येव राजायतनक्ष्णे निमीति । विश्व

§ ६५ तपस्सुभल्लिकानाम हे वाणिजा

तर्मिस समयं तपसमुमलिन्हा` नाम इं याणिजा पञ्चित मन्द्रमतेहि उनकलाजनपदा मिक्रमदेसं गण्डलना अतनो ज्ञानिसालोहिताय देवताय सकटानि मिक्रमीमत्वा मन्युबाहारमम्पादने उस्साहिता भन्यं च मयपिण्डिकं च आदाय पितगण्हातु नो मन्ते मगनः इमं आहार अनुकम्यं उपादायाति सत्यार उपसंक्रीमत्वा अटटेतु ।

भगवा पायाम परिमाहणदिवसे येव पत्तम्स अन्तरहितना न स्वो तवापना हत्येषु पतिपण्डित्ति किस्ति न ह्यो अर्द पतिपण्डित्ति किस्ति न स्वो तवापना हत्येषु पतिपण्डित्ति किस्ति न हार्य स्वार्ग महाराजानो इत्यती-क्षाणियपे पाने उपनामेषु । भगवा ने परिनिक्षित । पुन मृगावण्णसेकस्य बनारो पत्ते उपनामेषु । भगवा चतु-निष्य देवपुनानं अत्रकृषाय बनारोपिप पत्ति हार्य हार्य एक्ष्य एक्ष्य होन्। स्वारोपि मृण्य हार्य पत्ति अधिद्रशिक्ष । चनारोपि पत्ति स्वार्थ पत्ति स्वार्थ । स्वारोपि मृण्य दर्शिय पत्रभामम् । भगवा तिस्य पत्त्वच्ये सेक्ष्ययं पत्ते अहार्य पत्रिक्ष स्वार्थ पत्ति स्वार्थ ।

द्व भावगं वाणिजा बर्द्धं च धर्मा च मरणं [80] गल्या द्वे बाल्किजपानका अहमु । अथ तेम पुको मां भन्ते । परिचरित्तव्यट्टान देवाति वयन्तान दिव्यणन हत्येन भन्तो नीम परामसित्वा केसपातुची अदामि । ते अननो नगरे ता थातुची अन्तोपिक्वपित्वा चेतिच पनिट्यापेस ।

ं ६६ ब्रह्मा धम्मदेसनं आयाचि

सन्मासम्बुद्धीप क्षे। त्यो बुट्टाय पुत्र अवदाशनिष्ठोवमेव गत्या निर्धायमूले निर्मादि । अवस्स तत्य निर्माक्षमनस्येव अनना अधिगतम्म थम्मरम् गम्भीरन पञ्चवेत्रयन्तम्स मञ्जवद्भान आविष्णो "अधिगतो क्षे म्यायं धम्मी" नि परंग थम्म अदेगनुकाम्मताकारण्यवता वित्तका उदयादि । अथ ब्रह्मा सहपति "नम्मति वत भो । लोगे वितम्मति वत्र भा । लोको "ति दसहि चक्कवाळसहरमहि सक्कमुणसम्बन्धनित्पृतिमितवस्वनी-महाबद्धानो अद्याद्य सन्य मन्तिकं गन्या "देमेतु भन्त । भगवा धम्म देसेतु मृगतो धम्म" न्ति आदिना नयेन धम्मदेसत अध्याद्य ।

६६७ धमचक्कपवसभं

सन्या तस्म पटिञ्ज दत्वा कस्स नृ वां अह एदम यस्म देसंध्यान्न चिन्नेनां आहारो पण्टिनो सो इम यस्म व्याप आजानिस्मानीत चित्त उप्पादेत्वा गृत ओलोन्नो तस्स मताहकाल्यनभाव अन्या उदक आजवर्षा । तस्सापि अभिदोमकाल्यनभाव जत्वा बहुत्कारा वां में पञ्चविष्माय भित्रवृत्ति पञ्चविष्मयं आरस्म मनिसकार कन्या कहुत्वानं ने एतर्राह |७०| विदुर्ग्नानि आवजेन्तो वाराणांस्य मिसदायति अन्या तत्र्य वस्त्र यस्मवस्त्र पवतेस्मासीति कतियाहः बोधिमण्डमामना ३ येव पिण्डाय चरन्तां वहरित्वा आमाहृहिण्णमास्यि वारणांस गमिस्हामीति चत्रहिस्य पञ्चसम्य पभाताय रनिया काल्यमेव पत्रचीवरमादाय अट्ठारसयोजनस्मा पृटिक्सो अन्यासमा उपक नाम आजीवक दित्या तस्स अमनो बृद्धभाव आविश्वत्या त दिवस येव संयक्ष्टसस्य हृत्यापत्र

पञ्चविष्यया थरा तथागत दूरतीव आगच्छन्त दिस्या ''अय आवृसी ! समणो गोतमो पच्चयबाहुल्लाय आवन्तित्वा परिपुण्णकायो फीनिन्दियो ' मुदश्गवण्यो हृत्या आगच्छनि इसस्म अभिवादनादीनि न करिस्साम

१ रो०-भरुकुका। २ महाबग्ग। ३ रो०-समन्ता। ४ सिं०-पीणितिन्द्रियो।

महाकुलप्पमुतो स्वो पनेस आसनाभिहारं अरहित तेनस्स आसनमत्त पञ्जापेस्सामा" ति कतिक अर्कसु ।

भगवा सदेवकस्स लोकस्स विताबार जाननसमत्वेन ब्राणेन किसुसो इमें विन्तांबसूनि आविज्यत्वा वित्तं अञ्ज्ञाति । अय ने मब्बदेवमनुम्मेषु अनोदिससक्वमेन [81] फरणसमत्य मेत्तवित्त सीर्विपत्वा औदिस्सक्वमेन मेत्तवित्त कृति । ते पगवना मेत्तवितेन फुट्टा त्वागते उपसंकमन्ते सकाय कृतिकाय सण्ठातु असक्कोत्ता अभिवादनपञ्चूटानादीनि सम्बक्षिण्यानि अकंसु । सम्बुद्धभावं पनस्स अजानमाना केवलं नामेन च आव्योबायेत्न च समुदावर्गनः ।

अय ने भगवा "मा भिक्सवे । तथागत नामेन च आबुनांचारेन च समुदाचरण, अरह् रे भिक्सवे । तथागतो सम्मासन्द्रों । ते अनतो बुद्धभावं भटकारिया पञ्चलावाने निसिक्षों उत्तरामाळुहनक्षणयोगे वत्ताना अट्टारसिक्ष इद्धाकोटीहि परिवृतों पञ्चलिया पञ्चलामाळे अट्टारसिक्ष व्यवस्थान हुन देसेस् । तेषु अञ्चलाकोण्डरअयरो देशनानुतारेन आण देसेत्यो सुत्तर्पायोगाने अट्टारसिक्ष बद्धकोटिक्ष सिद्ध सोनायान्त । क्षेत्र पतिट्टारिन । तथा तत्येव वस्स उपगत्वा पुत्त दिवसे वप्पचेरं ओवदन्ती विहारं येव निसीदि । तेसा चत्तारो (पण्डाय वर्तिष्कृ) वय्यरसेरो पुत्रक्षकेष सोनायान्त्यक पार्युणि । एनेनव उपायेन पुनरिवसे महिक्यरे पुनरिवसे महानायस्थेरं पुनरिवसे अस्तान्त्यकेष्ट पतिट्टारेस्य । पञ्चणिय पर्वे स्वस्य पञ्चणि जने सित्यानेत्य अन्तर्कक्षण सन्तर्कं देशीन । देसनायरित्योगं पञ्चणिय पेरा अरहत्यकेष पत्रिट्टारेस्य । अटी

§६८ चरथ भिक्लवे चारिकन्ति

अव सत्या यसस्स कुलवुत्तस्स उपनिस्सव दिस्वा नं रत्तिभागे निष्यिज्ञितवा गेहं पहाय निक्वन एहि यसानि पक्कोसित्वा तस्मि येव रत्तिभागे सोनापनिकले पनिट्ठापेति । पुनदिवमे अन्हतं पनिट्ठापेत्वा अपरेपि तस्म सहायकं चतुपश्णासजने एहि भिक्क्यु पब्यज्जाय पब्याजेत्वा अन्हन पापेमि ।

एवं छोके एकसट्टिया अरहन्तेषु जातेषु सत्या तुष्यवस्यो पवारंत्या 'वरत्य भिक्कवे ' चारिकांन' सट्टि भिक्कू (दियाषु पेतेत्वा सय उवके पाच्छतो अत्याममे क्यामित्वनमण्डे तिवजने भट्डीगायमुमारे विविद्य तेषु सक्यपित्वमण्डमारे विविद्य तेषु सक्यपित्वमण्डमारे निर्मात क्षेत्र व्यवक्ष विवक्ष व्यवक्ष विवक्ष व्यवक्ष विवक्ष व्यवक्ष विवक्ष व्यवक्ष विवक्ष विवक्य विवक्ष विवक्य विवक्ष विवक्ष विवक्ष विवक्ष विवक्ष विवक्ष विवक्ष विवक्ष विवक्ष

६६९ भगवा राजगहे

राजा उट्यानपानम्म सन्तिका सत्या आगनीनि मुखा डादमनहुत्रीह बाह्मणनहुपतिकेहि परिचुतो सत्यार उपनकिमत्या चक्कविचित्रनतेषु मुक्कणपट्टिवेनार विश्व पशासमुद्य विस्मज्जेनोमु नवागनस्म पादेमु सिरमा निपनित्वा एकमन्तिनियि सिंड परिमाश अथ को तेम बाह्मणगहुपतिकान एनदहीमि किनुको महास-मणो उद्देशकरसापो बह्मचरियं चरित उदाहु उद्देशकरम्मपो महासमणीति । भगवा तेमं चेतसा चेनो परिवितकसम्बाद्या येर गामाय अन्त्रभामि —

> "किमेव दिस्ता उभ्वेलवामी पहासि आगि किसको बदानो । पुच्छामि न कस्सप [†] एतमस्य कथ पहीन नव अग्निहुत्त ॥"न्ति थेरोपि भगवनो अभिष्पास विक्तिबा —

"रूपे च सहे च अयो रसे च कामित्थियो चाभिवदन्ति यञ्जा।

एत मर्लान्त उपधीमु अत्वा तस्मा न यिट्ठे न हुते अरञ्जि ॥'' न्ति । इमं गाथं बत्वा अननो सावकभावणकासनत्यं तथागतस्स पादपीठे सीस ठपेत्वा सत्था मे भन्ते

१ रो०-पुट्टा। २ रो०-अहं। ३ महाबगा।

भगवा सावकोहमस्मीति बरवा एकतालं द्वितालं नितालन्ति याव सत्ततालप्पमाण [७९] सत्तक्खनुं बेहास अभ्युम्मन्त्वा आरुव्ह तथागत वन्दिरवा एकमन्त निमीदि ।

त पार्टिहारिय दिस्वा महाजनो अहो । महानुभावा बुद्धो एव थामगतीबट्ठिको नाम अनान अन्हाति मञ्जवानो उरुवेजकस्मपोपि बिट्ठिजालं भिन्दित्वा तथागनेन दमितोति सत्यु गुणकथ येव कथेभि ।

भगवा नाह इदानिमेव उरुवेनकन्सप दमेमि अतीतेषि एम सया दमितो येवाति वरवा इमिस्सा अत्युष्पत्तिया महानारदकस्सपजानक कथेत्वा चत्तारि सच्चानि पकासेसि । मगथराजा एकादर्साह नहुर्तेहि साँढ सोतापत्तिकन्ने पतिट्ठासि । एक नहुतं उपासकत्त पटित्रेदेसि । [88]

राजा सत्यु सन्तिके निसिन्नो येव पञ्च अस्मासके पयेदेश्या सरणं गन्त्वा स्वाननाय निमन्तेत्वा आसना बुट्ठाय भगवन्त पदक्किण कत्वा पक्कामि ।

पुनिदिबसे सेहि च भगवा दिङ्ठो सेहि च आविद्ठो सम्बंधि राजगहवासिनो अट्ठारसकोटिसचा सन्स्सा तचागतं दर्दुकामा पालीच राजगहती - 'ठिजन जममृत्रु तिचावृत्तमपो नणहींसि । सक्तक्ष्ट्रितवृत्यपात निरुत्तर फुट' अहोसि । सहाजनो टसवक्स रूपणपण जमभावं पस्मत्तो तिनि कातुं नासक्रिच । बण्णभूमि नासेसा एवक्सेम् हि ठानेमु नथागतस्स क्रमकासिक्यान्तर्यास्य स्वाधि रणकासिक्ति वर्णकेस्या ।

ाव रूपमाण्याः दसवणस्स सगैर पस्ममानेन महाजनेन निरन्तर फुटे उध्यानं च मगौ च एकिम-बब्दसापि निक्समाणेकागी नाहाँसि । न दिवत किर भगवा छिक्रमतो भवेष्यत सा अहाँमीनि सम्बन्ध निस्त-स्मास- उल्होत्तर स्वेमित । सो आवन्त्रमानो त कारण अत्वा माणवकवण्या अतिमिम्मिन्दवा बृहधभममध-पटिसपुत्तवृतियो बदमानो दसवन्तर पुरनो जोनरित्वा देवानुभावेन ओभास करवा —

"क्सो दर्शिह सह पुराणजटिलेहि विष्णमुनेहि ।
समीतिनकपुराणो राजगह पाविस भगवा ॥
मुनी मुनेहि सह पुराणजटिलेहि ।
सिगीतिनकपुराणो राजगह पाविस भगवा ॥
निष्णो निष्णेहि सह पुराणजटिलेहि ।
सिगीतिनकपुराणो राजगह पाविस भगवा ॥
सिगीतिनकपुराणो राजगह पाविस भगवा ॥
सा दमसामो दसका दसधम्मविद् दसहि चुगेगे ।
सो दससमरिवारी राजगह पाविस भगवा ॥" नि । [८०]

हमाहि गाथाहि सत्थु बण्ण बरमानो पुन्तो पायामि । महाजनो माणवकस्य रूपीसीन दिन्दा असिविय अभिरूपो अय माणवको न स्रो पनन्हींह दिट्ठपुब्बोति चिन्तेत्वा कृतो अय माणवको कस्स वा अर्यान्त आह । ते सुत्वा माणवी ---

> "यो धीरो सब्बधी दन्तो बुढो अप्यटिपुग्गलो । अरह सुगतो लोके तस्साह परिचारको ॥" नि ।

गाथ आह । सत्था सक्केन कर्नाकास माग परिपाण्डितवा [81] प्रिक्षुसहस्मर्गारवृता राजगह पार्वित । राजा बुद्धपमुबस्स मद्यस्स महादान दत्वा अह भन्ने । तीचि रनतानि विना विनितु न सिक्षम्सासि बेलाय वा अवेलाय वा भगवतो सन्तिकं आगिसस्सामि ल्यूटिबन्स्यान व नाम अनिदृरं इद पनानृतिक बेलूबन नाम उच्यान नातिदृरे नाच्यासनं गमनापमसस्यम् बुद्धारह वेतासन इद से भगवा पनिष्युति सुवण्डीस्तेष युष्ट-गच्यासित मणिवण्णाददक आदाय बेलूबन्स्यान परिच्याते स्वस्त्रस्य हन्ये उदक पानिस । तीस्म आरामपरिमाहणं बुद्धसासनस्य मूलानि ऑलिप्णानीति महापदवी कमित्र। वस्मृदीपरिम हि देनैत्वा बेलूबन अञ्च प्रशिव कस्पेन्दा गहिननेनामन नाम नित्य । नम्बपण्णिदीपेषि ठोरचा महाविहार अञ्च पञ्चि कम्पेन्दा £Þ

गहितसेनासन नाम नित्य । सत्या वेळुवनारामं पटिग्गहेत्वा रञ्जो अनुमोदन करवा उट्ठायासना भिक्खुसघ-परिवती वेळवन अगमासि।

§ ७०, सारिएलो च मोग्गहलानो च

तिस्म ब्हो यन समये सारिपुत्तो च मोरानलानो नाति ई परिब्हाजका राजागहं उपनिस्साय विहर्रान्त अमत परियेसमाना। नेसु मारिगुत्तो अस्सजित्वेर पिण्डाय पविद्ठ दिस्वा पसत्रिवनो पिष्क्पासित्वा "ये धम्मा हेतुप्रभाभा" नि गांध सुरवा भौनापत्तिकहे पौत्रहाय अननो सहायकस्स मोगानलानपरिब्हाजकस्मापि नमेव नात्रासा सो प्रीम मोनापत्तिकले एतिद्दृष्टि ते उभोषि सञ्जय ओलानेत्वा अननो परिसाय सिद्ध सत्यू सिन्तके पब्बिजा है सेसु महामोपान्तानो सत्ताहेत्व अरहत पापुष्ण। सारिगुत्तस्येरो अरहदाससेन उपोष्ठ को सत्या अगासावकहानो ठेपीस। सारिगुनस्येने अरहतप्ताचारियसे येव सावक्रिकिता अकामि।

S ७१ भगवा कपिलवत्यं अगमासि ।

तथागते पन तासमञ्जेव बेळुबन्ध्यातं बिहराने मुद्धोदतमहाराजा पुत्तो किर से छ बरसाति दुक्कर-बारिक चेरित्वा पात्मानिस्त्योधि पत्वा पदत्तदायमाचकको ' राजगई निस्साय बेळुवन विहरतीति सुत्वा अञ्ज-तत्तर अमच्च आमानीता [८१]एहि भयो 'पुरिस्तमहस्मपात्वारो राजगई निस्साय बेळुवन विहरतीति सुत्वा अञ्ज-तर अमच्च आमानीता [८१]एहि भयो 'पुरिस्तमहस्मपात्वारो राजगई नराजा सम् वचनेत विरास सम्पर्धाच्छरवा पाजा बट्ट्कमार्गे' ति बत्वा पुन्त से गिछत्वा एहीित आह्। मो एव देवाति रञ्जो बचन विरास सम्पर्धाच्छरवा पुरिस्तसहस्मपात्वारो विष्योचन सर्द्धाजनमाम् गानवा दवकालमा चुनुपारमामञ्जे निर्माण्यवा प्रायदेवान सुत्वा यथाठितांव नादि पुरिस्त [४६] नहस्मते वरह्म एव्हा पञ्चल बाचि । मगदा एव भिस्तवाति हत्य पद्मारोत । सब्बे न बन्ध पेव इद्धिमयमच्चीवरण्या बस्समानिकत्येरा विद्य असु । अरहानप्यनकालनो पट्टाय पन औरया नाम मन्नमात्र होन्धीत रञ्जा पहिल्सामान दसकाम । कथीम ।

राजा नंत्र गतको आगच्छिति न सामन सूप्रनीति एहि भणे । त्य गच्छाति तेनव निवामेन अञ्च असच्य पेसेवि । सोपि गन्त्वा पुरिसनवनेव साँद्ध परिसाय अरहत पत्रा तुष्टी अहोसि । राजा एनेवेव निवासेन पुरिसस-हस्मर्परिवारे नव असच्ये पेसीन । सब्ये असनो किच्च निट्छोत्या तुर्व्हीभूना तृत्येय विद्वारिग् ।

राजा सामनममर्थान्य आहोरन्या आचिरव्यन्त अलोभरवा चिनासि- एनका जना मौर मिनहाभावेन सासनमसीरग न पञ्चाहरियु, को नुवो मम बवन करिस्मनी' ति सम्ब राजवल ओलोकेलो कालुदायि अहम । मी किर रुक्षो सब्बल्यायको अमन्त्रों अक्ष्मतीरको अनिविस्मासिका बोधियनन सब्बि एकदियो जानो मह-पमुकीळिनो सहायो। अह राजा आमन्त्रोंन- 'निता ' कालुदायि अह मम पुन परिसपुदामो नवपुरिससहस्मानि नेमीम एकदुरियोपि आमन्त्रा सामनमत आयोक्नोपी नित्य। दुरुकानो को पन में जीविनन्त्रायो अह जीवमानोव गुन दहरू इन्ह्यामि सक्लियानी नक्षो मे पुन दरमेन् 'नित '

सिन्त्यस्सामि देव ! सचे पब्चजितु लीभस्सामीति ।

तात [।] त्व पव्यक्तित्वा अपव्यक्तित्वा वा मय्ह पुन दस्मेहीति आह ।

सो साथु देवाति रञ्जो मामन आदाय राजगह गल्या गत्थुधरमदेसनदेलाय परिमपरियन्तं ठितो धरम सुत्वा सपरिवारो अरहतफल पत्वा एहिजिनकुभावे पनिद्ठामि ।

सत्या बुढो हुरबा पठम अलोबस्य शीवानने बीतत्या बुत्यवस्मी पवारंत्वा उग्वेळ गत्त्वा तत्त्व त्यो मार्ग वसली तेमारितन्त्रिक विशेत्वा भित्त्वहरूसमार्गवारो कुसमासपुरणमाय राजगई गत्त्वा हे मार्ग विग । एतावना बाराणसितो नित्त्वसत्त्तस्य पट्य मासा जाता सत्त्वहो हेमतो अतिस्वलतो उद्यासिप्येत्रस्याँ ८२] अपनिर्वित्वारी पट्टिया सत्त्रदेविया बीतित्वता । से प्रस्तृणीयुष्णमास्य विन्तीस अतिस्वलतो हैममन्तो वमत्तममयो अनुष्पतो, मनुस्तिह सस्सादीत उद्वरित्वा सामुस्तमम्मस्टानहि समा विश्वा होजनित्तमहरूक्का

१ स्था०-पविश्वतपवरधम्मचवको । २ रो०-पटिहरथ ।

सन्तिकेनिदानं ६३

पटवी, सुपुष्किता वनसण्डा पॉटपज्जनक्समा मग्गा, कालो दसबलस्स जानिसगह कातुन्ति । अथ भगवन्तं [86] उपसकमित्वा.—–

"अगारिनोदानि हुमा भदन्ते । फर्लासनो छदन विप्यहार । ते अच्चिमत्तोच पभासयनित समयो महाबीर ! भगीरसान । नातिसीत नातिज्ञ नातितुच्यिसक्खारतः । सह्लाहोरता भूमि एम कालो महामुनी।" ति । सट्टिमताहि गायाहि दसवलस्स कुलनार गमनत्थाय गमनवणा वर्णासि ।

अय न सत्था किन्नुको उदायि [।] मधुरस्मरेन गमनवण्ण वण्णेसीति आह । भन्ते [।] तुम्हाक पिता मुद्धो-दनो महाराजा पस्सितुकामो, करोय बातकान सगहन्ति । साधु उदायि [।] करिस्सामि जातकानं सगह । भिक्खु-सघस्स आरोचेहि गमिकवन पूरेस्सन्तीति । साधु भन्तेति थेरो आरोचेनि । भगवा अगमगधवासीन कूलपूत्तान दसहि सहस्सेहि कपिलवत्थवासीन दसहि सार्महीति सब्बेहेव वीमितिमहस्मेहि लीणामविभक्षविह परिवती राजगहा निक्यमित्वा दिवसे दिवसे योजन गच्छति । राजगहतो सट्टियोजन कपिळवत्य द्वीहिमासेहि पापुण-स्मामीति अतुरितवारिक पक्तामि । थेरोपि भगवतो निक्खन्तभाव रञ्जो आरोबेस्सामीति वेहास अस्भागन्तवा रञ्जो निवेसने पातुरहोसि । राजा थेर दिस्वा तृट्ठचित्तो महारहे पल्लबे निसीदापेत्वा अन्तनो पटियादिनस्स नानगरमभोजनस्म पन पुरेत्वा अदासि । थेरो उटठाय गमनाकार दस्सेनि । निर्मादिस्वा भञ्ज नानानि । सत्थ सन्तिक गन्त्वा भुञ्जिस्मामि महाराजाति । कह पन सत्थाति । बीमतिभिवलुसहस्मर्पारवारो तुम्हाक दरसनत्थाय चारिक निक्यन्तो महाराजाति । राजा तुर्ठमानसो आहं, तुम्हे इम परिभुङ्जित्वा ग्राव मेस पूलो मं नगर पापुणाति तावस्म इतोव पिण्डपात पटिहरूयाति । थेरो अधिवासेसि । राजा थेर परिविसित्वा पून गन्ध चण्णेन उब्बटटेत्वा उत्तमभोजनस्म पुरेत्वा तथागतस्म देशांत थेरस्म हत्थं पतिटठापेमि । थेरो सब्बेसं प्रसस्तान थेव पत्त आकासे स्विपित्वा सर्याम्य वेहास अवभूगान्त्वा पिण्डपात आहरित्वा मत्यु हत्ये ठेपीस । [८२] सत्या त परिभक्ति । तत्रेनपायेन थेरो दिवसे दिवसे आहरि । सन्थापि अन्तरामसो रञ्जो येव पिण्डपान परिभक्ति । थेरोपि भत्तकिच्यावसाने दिवसे दिवसे अञ्ज एनकं भगवा आगनो अञ्ज एनकन्ति 87 | बृद्धगुणपटिसंयुनाय च धम्मकथाय सकलराजकुल सत्यु दरसन विनायेव सत्यरि सङ्जातप्पसादं अकासि । तेनैव न भगवा - -"एनदस्य भिक्खवे ! मम सावकान भिक्खनं कुळप्यसादकान यदिद कालुदायी" ति एनदस्ये ठपेसि ।

ु ७२ कपिलवत्युस्मिं पाटिहारियं अकासि

साफियाणि सो अनुपाने भगवनि अम्हाकं ऋतिसंट्ठ परिसरसामानि सिश्वात्वा भगवनो वसन-दृश्यत्व वीमेममाना निश्नोधानकरम्म आगमो ग्याणियोणि सल्लेकस्था तत्व राख्य परिवामनिथि कारंत्वा गय-पुण्यत्वया पञ्चममने करोला महामालकर्गायत्वार्थित सहरवहे नागरान्तः के वारियायो च एक्स पहिल्यु । ततो गजकुमारं च राजकुमारियो व नेमं अनन्तरा 'साम गन्धपुण्यकुण्यादीहि पूज्यमाना भगवलं गहेत्वा निर्धाधा-गाममंत्र अमान्यु। तत्र भगवा वीमिनमहस्प्यक्षिणासक्यारिवृतो पश्चतवन्द्वासने निमीदि । साहित्या नाम मान-वातिका मानत्यद्धा । ने सिद्धरुकुमारो अन्हीह इहरलगं अन्हाक कण्टिहो आपिनेय्यो पुना नन्तानि । नेत्र एवं अन्त-वहरवहर राजकुमारे आहमु, तुन्दे भगवत्व वत्यस्य मर्थ सुन्हाक गिद्धिनो निमीदिसामानि । नेषु एवं अन्त-दिव्यहा निस्तिकेषु भगवा तेव अन्नसार्थ ओलोक्या न म अल्यो वन्दिन हत्य द्यानि र यन्यारसमामीति अभि १-ज्ञापादकरुत्वान समार्थिज्ञावा बुट्टाय आकाम अन्दुणन्त्वा तेम सीर्य पादप्यु ओकिरसानो विच गण्डस्व-क्ष्मकुके सम्बन्धारिद्वानियसंदित्य पारिदृत्यि अन्तास ।

राजा तं अच्छरियं दिस्ता आहु भगवा । तुम्हाक जातदिवसे इसिकाळदेवलम्म वन्दनल्यं उपनीतात पादे वो परिवत्तित्वा श्राह्मणस्म मत्यके पनिट्टिन दिस्त्वापि अहु नुम्हं वन्दि अर्थ में पटमवन्दना, वप्पमंगलदिवसे अम्बुच्छायाय मिस्सियने निमिन्नात वो अम्बुच्छायाय अपरिवत्तनं दिस्वापि पादे बन्दि अर्थ में दुनियवन्दना। इदानि

१ रो०-अनन्तरं। २ स्या०-अभिक्र आपादक चतुत्वज्ञान ।

६४ जातकट्ठकथा

इम अविट्ठपुक्त पाटिहारियं दिस्यापि तुम्हाकं पादे बन्दामि अयं में तितयनन्दनाति। रञ्जे पन बन्दिते भगवन्तं अवन्दित्वा ठातु समत्यों नाम एको साक्तियोपि नाहोति। मध्ये वन्दितु येद। इति भगवा आत्रके बन्दापेरबा आकासतो आंतरित्वा पञ्जनं आवतं निवीति । निर्मित्तं भगवानि विकापपो आतिस्वागमो आहोसि । सब्यं एकमाजिता हुत्वा निर्मीदिषु । ततो महासंभे पोषस्वरवन्तं विस्तपत्तो तावचण्यं उदके हेट्टो विरवन्तं गच्छति । तेनित्वकामोव वेनीत अतीमित्वामस्यि ८ असिरे विस्तुमत्तोपि न पनित । तं दिव्या सब्यं अच्छित्यस्त्र्वाचिना जाता । अहो ! अच्छिति अक्षात्ति अक्षात्ति विस्ता सब्यं अच्छित्यस्त्राचिना जाता । अहो ! अच्छित्यं अहो ! अच्युतनित कर्ष समृद्दापेषु । सत्या न [88] इदानेव मध्हं आतिसमागमे पोषस्वरक्तसं वस्ति अतीतिर्पता अव्याग अद्युत्वाचिना महावेस्यन्तावात्ता कर्मित । सम्पत्ति स्विष्ता सब्यं उद्यागित स्वागित स्विष्ता प्रमादेसनं सुत्वा सब्यं उद्याग विदित्वा पक्किंपसु । एकोपि राजा व राजमहामत्तो वा स्वं अम्हाकं भिक्तं गण्ड्यानि बत्वा गतो नाम निष्य ।

९७३ कपिलवत्युं पिण्डाय पाविसि

सत्या पुनिवस्य सेमित्यहस्यभिक्युपिक्यो क्रियनवस्य पिष्टाय पार्विस । तं न कोचि गन्या त्रिमस्त्रीस सा पत्तं वा अगहिस । भगवा इन्त्यक्षि टिलोस आवज्येक्षि, "कप्रकृषो पुक्षबृद्धा कुलनार पिष्टाय चरित्रु कि नु उपरिपादिया इस्तरनानो करानि अग्यम् उपहा इस्तरनान्तिक चरित्रु "ति नाते एक्युइस्सापि उप्पटिपाटिया गमनं अदिस्या मयापि दानि अयमेव नेसं वंगी अर्थ मे एवंणी पगाहेतव्या आयति व से सावकापि ममञ्ज्य अनुमिक्शना पिष्टवारियवसं परिपुरेस्मलीनि कोटिय निविद्दर्गेहलो पट्टाय सपदानि पिष्टाय स्वरि । अप्यो किर सिद्धरुष्टुमारो पिष्टाय चरतीनि हिमूमकनिभूमकादियु पासादेयु सीहपञ्जरं विवरित्या महाजनो स्मन्तवाबदो अहोसि ।

राहुलमातापि देवी अध्यक्षमां किर हमीम्म येव नगरं महत्नन राज्ञानुभावंन मुवलासिवकातीहि विवरित्त ह्यांनि केसमस्य ओहारेला कासायस्यवसनो कराणहरूषो पिण्डाय वर्गत सोभांन नुस्तांन सीह-पञ्जरं विवरित्वा ओलांकयमाना भगवन्तं नानाविरागसमुज्जलाय सरीरणभाय नगरवीथियो ओभांसत्वा क्यासप्यभाषरिक्षयसमृष्युद्धारे अनीत्यनुव्यञ्जनावभासिनाय हीन्समहायुक्तिस्वस्ववर्षात्माण्डनाय अन्-पमाय बुद्धासिया विरोचमानं दिस्या उण्हीतनो एट्ठाय याव पातन्तः—

"सिनिद्धनीलमुदुकुञ्चितकेसो मुरिश्यिनम्मलतलाभिनलाटो । युत्ततु गमुदुकायतनासो रसिजालविवतो नरमीहो॥" ति ।

्वमादिकाहि अट्ठीह नम्मीहणायाहि नाम अभित्यविक्या "तुम्हाकं कुनो पिण्डाय चरनी" नि रञ्जो आरोचेंक्ष । राजा संविक्ष्ययो हत्येन साटकं क्ष्णेनती तुम्रितहार्य निक्वस्त्रिक्य केंग्न नस्त्वा भगवती गुरनो हत्व आह "कि भन्ते अने क्षण्डे क्षण्ये क्षण्डे क्षण्डे क्षण्डे क्षण्ये क्षण्डे क्षण्डे क्षण्ड

"उत्तिहर्ट नप्पमज्जैध्य धम्मं मुचित्तं चरे । धम्मचारी मुखे सेति अस्मि छोड़े पर्राष्ट्र चा॥" ति । इमं गावमाह । गावणारियोमाने राजा मोनापनिष्क्रेट पतिद्ठासि —— "धम्म चरे मुचीत्तं न जं दुच्चत्तिचरे । धम्मचारी मुखे सेति ऑन्म लोडे परस्हि चा॥" ति ।

इमं पन गाथ सुत्वा सकदागामिफले पतिट्ठासि । महाधम्मपालजातकं भ सुत्वा अनागामिफले पति-

```
१ रो०--समृत्यकूहाय । २ रो०-पुन्निमला । ३ रो०-भिन्नसम्बारो । ४--घम्मपद, लोकवस्य ।
५ रो०---घम्मपालजातकः ।
```

ह्ठासि । सरणसमये सेतच्छतस्स हेट्ठा सिरिसयने निषक्षो येव अरहत्तं पापुणि । अरञ्जवासेन पन पथानानु-योगिकच्चे रञ्जो नाहोसि । मोतापत्तिकुळं सिच्छकत्या येव पन मगवतो पत्तं गहेत्वा सपरिसं अगवन्तं सहापासार आरोपेत्वा पणीतेन खावनीयेन भोजनीयेन परिविस्त ।

७४. राष्ट्रलमातया सिरिगब्भं अगमासि

भत्तिकच्चपरियोगानं मर्व्यं इत्वागारं आगत्त्वा भगवन्तं वन्ति टपेत्वा राहुस्मानरः। सा पन "गच्छ अय्यपुत्तं वन्दाही" ति परिजनेन बुच्चमानापि "सचे मर्व्यं गुणी अत्थि मयमेत्र में सन्तिकं अय्यपुत्तो आगमिस्सति आगनमेव नं वन्दिस्सामी" ति वत्वा न अगमासि।

भगवा राजान पर्स गहापेरबा द्वीहि जगसावकेहि सिंह राजभीताय सिरिगर्भ गस्ता राजधीता यथायि बन्साना न किञ्च बत्सवानि बत्वा पञ्चसे आसने निमीदि । सा बेगेनागस्त्रा गाण्यनेम् गहेत्वा पादिपिट्टियं सीभं परिवसेत्वा यथास्त्राम्य बन्दि । राजा राजधीताय भगवति निमेहबहमानादिगुलसम्पत्तियो कपैरि-"भने मेम भीता ''तेहि कासायानि [20] निवस्थानीति मुखा नतां पर्टश्य
कासाववस्या जाता, नुस्ह्राक एकभित्तकार्व मुन्ना एकभित्तका जाता, नुस्ह्रीक महास्मानक शहरूनभाव जाता
पर्टिकामञ्चके येव निषम्ना, नुस्ह्राक मालाग्यादीहि विरन्तभाव आता विरन्तमालग्याका काना जननो
आत्रकेषु स्य परिजिम्मानाद्वामानि सासने पेतिन एकजानकिय न ओलोकेसि । एव गुणसम्पत्रा से भगवा ।
धीता' नि । ''अनच्छरिय महाराज' यं दशित नया रावस्वयमाना राजधीना परियक्ते आणे [८६]
अनानं रावस्थ्रया गमा गुळो अनारक्वा पर्ववनगादं विवयसाना आर्पायक्के प्राणे अनान रक्वीनि बत्वा

ु७५. नन्दं पश्वाजेसि

दुनियदिवर्ग नन्दस्म राजकुमारम्स अभिमंक्षेद्रश्यवेमनिववाद्रमग्लेम् वनमानेमु नग्स गेह गत्ना कुमारं पर्न गाडायेवा पव्याकेनुकामो मगल जन्ता उट्ठायामना पत्रकामी। जनपदकन्याणी कुमार गच्छल दिन्दा "गुबट मो अय्यपुत्त ! आपच्छेत्यामी" नि बत्या गीव गमारन्या डोलोकेनि । मोपि भगवन्न पन्न गक्ष्यानी वन् अनिसहमानी विहारमेथ अगमामि । त अनिच्छमान येव भगवा गव्याजेमि । दनि भगवा कर्मालगुर गन्त्या तनियदिवर्म नन्दं पद्याजीम ।

🦫 ७६. राहुलं पब्बाओस

सनमें दिवसे राहुलभाना कुमारं अलकरित्वा भगवतो मन्तिक पंमीम—"पम्म नात ! एन बोमानि-सहस्तसमणपरिकृते मुक्कणवर्षा के क्ष्राभीवष्ण समण, अय ते जिता एतस्य महत्ता निष्यां अहेत् । त्यास्म निक्यमनतो प्रदाय न परसाम गच्छ न दोवज्ञ याच, अह तात ! कुमारो अभिमेव पत्वा चक्कवनी भोवस्सामि भनेन मे अल्थो भन में दीह सामिको हि पुत्तो पितु सन्तकम्मा 'ति । कुमारो च भगवतो मन्तिकः गन्तवा पितृमिनेह पटिकभिरवा हर्द्वुट्ठो "मुखा ते समण ! छाया" ति वन्या अञ्जीस्प वहु अननो अनुमण बक्तो अट्डासि ।

भगवा कलभन्तिकच्चो अनुमोदनं करवा उद्शयसना पक्तामा । कुभारोप "शयकज मे समण ! वेह, वायकज में समण ! वेह," ति भगवत अनुवाद्य । भगवा कुभारं न निवनापिम । गरिजनोपि भगवता सदि उत्तरक में समण ! वेह," ति भगवता अनुवाद्य । भगवा कुभारं न निवनापिम । गर्गना भगवा चित्तिस, "यं अयं पिनुस्त्वक परं इश्कृति ते बद्दान्त्वन सीवधातं हरूचम बोधियक परिच्छ सन्तिवं अरिध्यन देम छोषुनाच्या यज्ञ्यसन न सामिक करोमी "ति आयस्मन्ते सारिपुत्त आमन्तिम "तेन हि [ग] त्वं सारिपुत्त 'गहरूकुगारे ज्वाच-जेही" ति । पत्त्विजने पत्त कुमारं रुख्यो अपिनतदुक्त उप्योज्ञ । ते अधिवासेनु अगवकोत्ती भगवतो निवेदत्वा "साधु भन्ते ! अथ्या मातापिद्रहि अनुस्त्रत्वा गृत्त पश्चाकेन्त्व" निवाद याचि । भगवा

१ रो०-निधियो । २ रो-गच्छन्तो ।

६६ जातकट्टकथा

तस्य सं वचन पटिस्मृणित्वा पुनिदवभे राजनिवेसने कतपानरासी एकमन्तं निसिन्नेन रच्ना "मन्ते ! तुम्हाकं दुक्करकारिककाले एका देवता म उपसंकित्या पुनीते कालकर्ताकि आह् । तस्या वचनं स्वसहरूनो "न मरहं पुनी [८७] बोधि अप्यत्वा कार्ल करोनीति न पटिक्किपि "नित् वृत्त "द्वानि कि सदृष्ट्सिय "ये पुनहे पुन्नेपि अप्यत्वा कार्ल करोनीति न पटिक्किपि "नित् वृत्त "द्वानि कि सदृष्ट्सिय "ये पुनहे पुन्नेपि अपटिक्किपि "कि प्रमित्त अत्युप्पत्तिया महाधम्मपालजातकं करिया । क्षाप्यियोगाने राजा अनामामिकले वितरु ठीति ।

७७७ अनायपिण्डिको जेतवनारामं कारेसि

इति भगवा पिनरं तीमु फेल्यु पतिदृश्येत्वा भिक्कुसंपरिदृश्ये पृत्येव राजगहं पत्त्वा क्षीत्रकते विद्वास । गाँसम समये अनापरिकरो । सहपंत्र एज्यहि समन्दर्शादि भग्धं आदाय राजगहे जनती पियसहायस सिट्टिनो गेह पात्त्वा तत्त्व सुट्यस भगवती उपात्रभाव मुत्त्व वरुवयच्चसमये देवतानुभावेन निवदेन होरेत सिट्टिनो गेह पात्त्वा तत्त्व सुट्यस भगवती उपात्रभाव मृत्वा वरुवयच्चसमये देवतानुभावेन निवदेन होरेत सिट्टिनो गेह पात्रमाव प्रमान स्वादा निवदा सार्वास्त्र अन्तर्भाव सार्वास प्रमान स्वादा नेत्वा सार्वास अन्तर्भाव प्रमान स्वादा नेत्वा सार्वास व्यावस्थित अन्तर्भाव स्वादा स्वादा स्वादा सार्वास प्रमानका विद्वास प्रमानका विद्वास प्रमानका विद्वास प्रमानका स्वादा स्वादा

सहिन्द्रिति को बिहारवह बाँजेत्वा तथागनस्य जेनवनं पत्रिमनदिवमे पुनं सब्बार्ककारपतिमध्धितं कस्या अलंकनपरियनेहेव पञ्चित् कृमारमनेहि मद्वि पेमीता । मो मपारिवारो पञ्चवण्यवरुक्षमुज्जलाति पञ्चप्रस्तताति गहेल्या थिशे देनवलस्य पुरत्तो अहीति । नेसं पञ्चती महासुभरा चूळपुमराति हे नर्द्विशीनरो पञ्चित् कृपारिसतीह सिद्ध पुण्यप्रदे गहेल्या निक्सिम् । नाम पञ्चती मेट्ठिभरिया सम्बार्ककारपतिमध्यिता पञ्चित मानुपामसनेहि सदि पुण्यपतियो गहेल्या निक्सिम् । मध्येमं पञ्चती सर्व महानेट्ठि अहनवस्वनिवस्यो अहनवस्येहेव पञ्चति सेटिजनीहि सदि संगवना अक्साण्यित्व ।

भगवा इमं उपासकर्पारमं पुरती कत्वा महाभिक्षुमंघपरिवृती अनती मरीरणभाय मुवलारमंक-पिञ्चरानि विद्य बनत्तरानि कु हमाती अनत्याय बुढलीळ्हाय अप्याटममाय बुढिमिरचा जेनवनिवहारं गाविन । अव नं अनायिषिष्टको पुच्छि । [८८] "कवाहम्भन्तः "इमीस्म बिहारे पाँठपञ्जामी" ति ? तेनहि तहरानि "इम बिहारं आगतानायनस्म भिक्ष्यपस्म देरी" ति साधु भन्ति महासेट्ठि मुक्लिमिङ्कारं आदाय दमकलस्म हत्ये उद्यक्तं पातेत्वा "इमं जेनवनिवहारं आगतानायतस्म चातुष्टिसस्स बुढपमुक्तस्म संघस्म दम्भी" ति अदामि । सत्या विहारं परिलाहेवा अनमोदनं करोलां ---

"सीत उष्ट परिहरित नतो बार्जामगानि ब ।

विगित्सां च मक्तं मिसित्र चारि बुट्ठियां ॥
ततो वातानपं घोरे मञ्जातं परिहरूजति ।

तेषाव च सुष्यत्व सामितुं च वर्षास्मतु ॥

बिहारदान मेधस्स अग्यं चुढंन बिष्णतं ।
तस्मा दि परिवनो पोसो सम्परस अत्यमतानो ॥

बिहारे कार्य रमें वात्मयेल्य बहुस्सते ।

देवेस्य उजुमृतेमु विप्यसेतान वे ॥

देवेस्य उजुमृतेमु विप्यसेतान च । ।

प्राथमित विज्ञान ।

प्राथमित विज्ञमित विज्ञमित विज्ञमित विज्ञमित विज्ञमित ।

प्राथमित विज्ञमित विज्ञमित विज्ञमित विज्ञमित ।

प्राथमित विज्ञमित विज्ञमित विज्ञमित विज्ञमित विज्ञमित ।

प्राथमित विज्ञमित विज्ञमित विज्ञमित विज्ञमित विज्ञमित विज्ञमित ।

१ रो–दुक्करचारिककाले । २ रो०–कारेत्वा ।

सन्तिकंनिदान

દુષ્

ते तस्स धम्मं देसेन्ति सब्बदुक्क्षापनूदनं । यं सो धम्मं दधञ्जाय परितिब्बाति अनासवो ॥" ति ।

बिहारानिमंसं कवेसि । अनाथपिण्डको दुनियदिबसतो प्रदेशय यिहारमहं आराभ । विसासाय पासादमहो चुर्तुह मारोहि निर्दछितो । अनाथपिण्डिकस्म पन विहारमहो नवहि मारोहि निर्छास । निहारमहोपि अटटारसेव कोटियो अगमंस् हिन क्ष्मीरम येव विहारे चनुपणासकोटिमंख धन परिच्चित्र ।

जातकटुकथाय

निदानकथानिद्विता [94]

जातकट्टकथा

- १. एकनिपातो
- १. अपण्णकवागवण्णना

१. अपण्णकजातकं पच्चपन्नवस्थ

इमं ताब अपण्णकथम्मदसनं भगवा सार्वात्थं उपनिस्साय जेतवनमहाबिहारे बिहरन्तो कथेसि । कम्पन आरक्ष्म अयं कथा समृद्यिताति ? सेद्यिस्स सहायके पञ्चसते तित्थियसावकेति ।

एकिस्म हि दिवसे अनायिपिण्डको सेट्डी अतनो सहायके पञ्चसते अञ्जातिस्थयसावके आदाय वहुं मालागन्धिकेषपञ्चेव तेलमप्पाणिजवत्यच्छादतानि च गाहारीच्या जेनवनं गत्त्वा भगवत्तं वित्तवा मालादीहि पुजत्वा भेसज्वाति चेव वस्त्वानि पश्चिम् पाहारीदि पुजत्वा भेसज्वाति चेव वस्त्वानि पश्चिम पित्रमानं निर्माद निर्माद

अय नेसं मत्या मनोसिन्जानने मीहनाद नदन्नो नश्णमीहो विष गण्डन्नो, पानुस्मकमंत्री विष च, आकाससम्बक्षेणा [95] रेत्नो विषच, रातदाम गण्डेन्नो विषच अट्टंलममन्नागनेन सबनीयेन ब्रह्मसम्भन नाना नयविचित्तं मञ्चूपसम्मकचं कवेसि । ते सन्युष्प्रस्येदेसनं मृत्या पामुष्टिना बृट्टाय दसबलं बीन्दिन्दा अञ्ज्ञिनित्यय-सर्प्यं भिन्दित्वा बुढं सर्च्यं अगर्ममु । ते तनो पट्टाय निच्चकालं अनायर्पिण्डकेन मद्धि गन्यमालादिहत्या बिहार गत्या धम्मं स्मानि दाने दीन नीलं पन्यनित उपीमयकम्मं करील ।

अय भगवा सावस्थितो पुनदेव राजगहं अगमासि । ते तथागतस्स गतकाले तं सरणं भिन्दिरवा पुन अञ्जतिस्थियमरणं गत्त्वा अनतो मुलट्टाते येव पीतटिटता ।

भमवापि सन्दृष्टमाने बीनिनामेश्वा पुत्र जेनवन अपमासि । अनार्थापिष्टको पुनिष्(९०)ने आदाय सन्दु सन्तिकं गत्वा सत्यारं पत्थाशीह पुत्रेक्वा बन्दित्वा एकमन्ते निसीदि । तेपि भावतः बन्दित्वा एकमन्ते निसीदिम् । अय नेमं अनार्थापिण्डको नाथागे चारिकं पत्कले गहितसरणं भिन्दिश्वा पुन अञ्जतित्ययसरणमेव गहैत्वा मुक्ते पनिष्टित्रभाशं भावतां आरोचीन ।

भगवा अपरिमितकणकोटियो निरम्तरं पवित्तवचीमुर्चारतानुभावेन दिव्वगन्धर्मान्धर्त नानागन्ध-पूरित रतनकरण्डक विवरन्ता विव मुख्यदुर्ध विवरित्वा भयुरस्तर निच्छारेन्तो "सच्छ किर तुम्हे उपासका ! नीणि सरणानि भिन्दित्वा अञ्ज्ञानित्वयसर्ग्ण गना" नि पुष्टि । अयं तीह पटिच्छादेतुं आसक्कोत्वोह "सच्चे भगवा" नि वृत्ते सत्या "उपासका ! हेट्ठा अवीचि उपि भवगो परिच्छेदे क्ला तिर्ध्य व्यरिसाणासु कोकधानुमु मीळादिगुणेन बुद्धेन सदिसो नाम नत्वि कुतो अधिकतरो। "यावना विस्ववे ! सत्ता अपदा वा—-ये—न्यागातो ने

१ इतिबृत्तक, सुत्तनिपात ।

रतनत्त्तवनुषं पकासेत्वा एवं उत्तमगुणेहि समप्रागतं रतनत्त्वं सरणं गता उपामका वा उपामिका वा निरवादिसु निष्वत्तनका नाम निरव । अपायनिष्यत्तिनो मुञ्चित्वा पन देवलोके उप्यज्ञित्वा महासम्पत्ति अनुभोत्ति । तस्मा तुन्हेहि एक्कपे सरणं भिन्दित्वा अञ्जातित्थियमरणं गच्छलोहि अयत्तं कत् " नितः आहः ।

एत्य च तीणि रतनानि मोक्खबसेन उत्तमवसेन च सरण गतानं अपायेमु निब्बत्तिया अभावदीपनत्थं इमानि मुत्तानि दस्सेतब्बानिः [96]---

> "ये केचि बुद्धं सरणं गनासे न ते गमिस्सन्ति अपायं। पहाय मानुसं देहं देवकायं परिपरेस्सन्ति ॥ ये केचि धम्मं सरणं गतामे न ते गमिस्सन्ति अपायं । पहाय मानुसं देहं देवकायं परिपूरेस्सन्ति ॥ ये केचि संघंसरणंगतासेन ते गमिस्सन्ति अपायं। मान्सं देहं दवकायं परिवृरेस्मन्ति ।। वे सरणं यन्ति पब्बतानि वनानि च । आरामश्वस्वचेत्यानि मनुस्सा भयनज्जिना ॥ खेमं नेतं सरणमत्तमं। नेतं सरणमागम्म सब्बद्बन्बा पमञ्चति ॥ यो च बद्धं च धम्मंच सघ च मरणं गतो। बत्तारि अरियसच्चानि सम्मप्पञ्जाय पस्सनि।। [९१] दुबखसम्प्पाद दुबखस्य च अतिकक्षं। अ**रियञ्**चट्ठंगिकं मग्ग दुक्ख्यसमगामिन ।। एन एत खमं सरणम्तमं । सरणसागम्म पम्च्चती ।।" ति । र सब्बद्दस्या

न केवलं च नेस सत्था एतक येव धम्म देशीत। अपि च को "उपासका ! बुद्धानुस्सित कम्मट्ठानं नाम धम्मान्स्सीत—री—मधानुस्सित कम्मट्ठानं नाम सोनापत्तिमाम देति सोनापत्तिकल देति सकदापामिमाग देति सकदापामिफल देति अनापामिमाग देति अनापामिकल देति अप्तन्तमागं देति अन्तरास्त्र देति। विश्वस्थानं स्वाप्तिस्म देशियि नवेदि धम्म देसेला "एक्कर नाम सत्या मिन्दलींह अद्यत् नुस्कृति कर्ना "ना आह् ।

एत च बृद्धानुस्मानकम्मट्टानादीन मोत्रापनिमग्णादिष्णदान "एकधम्भो भिक्सवे ! भाविनौ बहु-लीकनो एकस्तिनिबदाय विरागाय निरोधाय उपममाय अभिन्त्राय, मम्बोधाय, निक्वानाय संवत्ति । कनमो एकधम्भो ? बृद्धानुस्सी" ति ३ एवमादिह सुनेहि दीपेनस्व ।

एव भगवा नानप्पकारिह उपासके ओवदित्वा ''उपासका ! पुत्विप भनुस्सा असरण सरणिन नक्षमाहेन विरुद्धगाहेन गहेत्वा अमनुस्सर्परिगहिन कन्नारे यक्षभक्ता हुत्वा महाविवास पत्ता. अपरणकगाह पन एकसमाह अविरुद्धगाह पहितमनुस्मा तस्मि येव कन्नारे सीरियभाव पत्ता'' ति वन्वा तुष्ही अहोसि ।

अय को जनाविपिण्डको गहरानि उट्ठायामना भगवन्त बन्दित्वा अभित्यविद्वा सिगमि अञ्जलिम्प-निट्ठायेत्वा एक्साह-"भन्ने 'इदानि नाव इमेस उपासकान उत्तमसरण मिदित्वा तक्कताह विरुद्धताह सरणगहण अस्हाक पाकट पुत्र्वे पन असनुस्सारिय्याही कनारे निक्कतान विनामी अपण्णकगाह गहितसनुस्सान व सोरिय-मात्री अस्हाक पटिक्छप्रो [97] तुन्हाकमेव पाकटो। साथु वन नो भगवा आकार्स पुण्णवन्द उद्वापेत्रो विष इस कारण पाकटे करोह्" नि अथ भगवा मया खो गहणित । अपिनिमत्काल दसपारिमयो पूरेत्वा लोकस्स कंखच्छेदनत्थमेव सम्बज्ज्तजाण पटिविद्धं सीहबसाय सुवण्णपति पूरेत्तो विय सक्कच्च सीतमोदिहत्वा सुणोहीति सेटिंग्नो सतु-प्याद जनेत्वा हिमगव्भे पदाक्षेत्वा पुण्णवन्द नीहरत्तो विय भवन्तरेन पटिच्छन्नं कारण पाकटं अकासि---(९२)

अतीतबत्य

अतीने कासिरट्टे बाराणसिनगरे ब्रह्मदन्ते नाम राजा अहोमि । तदा बोधिसत्तो सत्यबाहकुले पटिस्तिन् गहेला अनुभूकेन वयपत्तो पञ्चिह सहरसनेहि बाणिक करोन्ती विवर्षन्ते । सो कदाचि पुक्तनतो अरम्पत नावशिक स्वरासि अरम्पतनो पुक्तनतो आया ता अरम्पत पञ्चित करासि अरम्पतो पुर्वे कार्याचे अप्यासे अनुपायकुसले। तदा बोधिसती वाराणसित्तो महाम अर्थक देशा अरम्पत वारा अरम्पत अरम्पत वारा कर्या कर कर्या कर्या कर्या कर्या कर्या कर्या कर्या कर्या कर्या क्

बोधिसनो चिन्तेषि, सचे अप बालसत्यवाहपुतो मया सद्धि येवग मिस्सति सकटसहस्से एकनो मयो गच्छलं मयोपि नप्पहोस्सति मनुस्सान दावदकादीनिपि बलिबद्दान तिणानिपि दुल्लभानि भवि-म्माला । एनेन वा मया वा पुरतो चन्तु बद्दनीति ।

मो त पक्कोसापेत्वा एतमत्व आरोचेत्वा द्वीहिपि अन्हेहि एकतो गन्तु न सक्का । कि त्वं पुग्ती गमिस्समि उदाह पच्छतोति आह ।

मो चिन्तेसि-मयि पुरतो गच्छन्ते बहु आनिससा । मग्गेन अभिन्तेनेव गीयस्थामि । गोणा अनामर्ट-निण खादिस्सन्ति । मनुस्सान अनामर्टम्पेय्यपण्ण भविस्मनि । पसन्न उदक भविस्मति । यथार्शन अग्ध ठगेत्वा भण्ड विक्किणस्सामीनि । सो अह सम्म । पुरतो गीम [98] स्सामीनि आह ।

बोधिससीपि पच्छलो गमने बहु आनिममं अहम। एव हिस्स अहोमि-एने पुरनो गच्छला मग्ये विस्मस्ट्रान सम करिस्सीला। अह तेहि गतमणोन गमिरसामि। पुरनो गनेहि बालबहेहि परिणनप्यत्निणे बारितं सम गोणा पुत उट्टिजानि मध्रतिणानि बादिस्सील। सहित्सण्यट्टान्थो उट्टिंग मनुस्मान सूप्रेयपण्या मध्र स्विस्सीत। अनुदर्क ठाने आवाट स्विश्वा एने उट्टेक उप्पार्टसम्भा गर्गह कनेषु है आवाटेमु स्य उद्यक्त पिक्समा सण्डअण्डट्यने नाम मनुस्मान बीचिनाबोगेपनसीटम अह पच्छलो गस्त्र एनेहि है ठिप्तमचेन अष्ट विक्सिणसामीनि । मो एककै आनिसमे दिस्वास्मा । त्व पुत्तो गच्छानि आह ।

साथ् सम्माति बालसत्यवाहो सकटानि योजेत्वा निक्खन्तो अनुपुब्बेन मनुस्मवामं अनिक्कमित्वा कन्तारमुख पाप्नुणि ।

कन्तार नाम चोरकन्तारं, वाळकन्तार, निरुदककन्तार, अमनुस्सकन्तार, अपपुस्सवकन्तारंनि पञ्चिव । नत्व चौरीह अधिर्ठितमप्ती चोरकन्तार नाम । सीहावीह अधिर्ठितमप्ती चोळकन्तार नाम । सत्व नहायिषु वा पातृ चित्रके निरुद्ध देश निरुद्धकन्तार नाम । अमनुस्साधिर्द्धित अमनुस्सकन्तार नाम । इस्ति वा अपनुस्सकन्तार चेव अमनुस्सकन्तार चा नत्सा सो चारकन्तव्यवासुन्तो सक्टेमु महन्तमहन्ता चाटियो ठरेन्वा उदसकस्म पूरापेरवा सर्दियोजनिक कन्तार परियोज्ञ

अवस्य कन्तारमध्य गतकाले कन्तारे अधिवत्ययक्षो हमेहि मनुस्सेहि गहित उदक छड्डणेपता दुब्बले कृत्वा सब्बेव ते लादिस्सामीति सब्बसेतत्ररुणविल्वह् [99] युत्त मनोरम यानक मापत्या धनुकल्या-सल्काबुधहत्वेहि दसहि वा द्वारदाहि अमनुस्ति तरिबुती उप्पल्कुमुदाति पिलिम्बत्वा अल्लसीसो अल्लबत्यो इस्तरपुरिनो वियनिस्म यानक निसीदित्वा क्हममिब्बतेहि बक्केहि पटिषयं अगमासि । पिबारमनुस्सापिम्स पुरतोच पच्छनो व गच्छन्ता अल्लकेसा अल्लब्द्रप्या उपपलकुमुद्दमाला पिक्सिम्बा पदुमपुण्डरीस्कल्यापे गहेल्या भिममळाल्योनि मादन्ता उदकविन्द्रहि चैव कल्लेन पम्मण्योत आमसु । सत्यवाहा च नाम यदा धुग्वातो । वायनि नदा यानके निर्मादित्या उपट्ठाकजनपरिवृता ज्ञ परिहरून्ता पुरतो गच्छन्ति । यदा पच्छतो वायनि नदा तेनव नयेन पच्छनो गच्छन्ति । नदा पन धुग्वानो अहोसि । तस्मा सी बालस्त्यवाहपूत्तो पुरतो अगमासि ।

यस्त्रो त आगन्छन्त दिस्ता अन्तर्गे यानक मग्गा ओक्कमपित्वा कह गच्छ्यानि नेन माँद्व पटिमत्वार अकासि । सत्यत्वाहोपि अन्तर्गे यानक मग्गा ओक्कमपत्वा सकटान गमनोकाम दत्वा एकमन्त ठिनो न यस्त्र अवीव-भो । अहे तान बाराणमिलो आग्रा ओक्कमप्रो न उपलब्कुनुदानि पिलिप्यता पदुमपुष्टरीकहत्या मिसनुदालानि लादन्ता कर्ममपित्रता उदकविन्द्रहि पपरपनिति आग्रान्छ्य । किमूलो नुप्हेहि आग्रतमग्गे देवो बस्सति उपलग्निसम्ब्रक्षानि सानि अत्योति पुष्छ ।

यक्को तस्स कय मुखा-सम्म ! किस्नामेनं कथेसि ? एसा नीलवनराजि पञ्चायित. ततो पट्ठाय सकळ अरञ्ज एकोटक निबद्ध बस्मीन, कन्दरग पूरा, तरिम तरिम ठाने पटुमादिमञ्ज्यन्नानि सरानीनि बत्बा पटिपाटिया [100] गच्छनेन् मकटेन् इमानि सकटानि आदाय कह गच्छवानि पच्छि।

> असुक जनपद नामानि । इमस्मि च इमस्मि च सकटे कि नाम भण्डन्ति ?

अमुक च अमुक चानि पच्छनो आगच्छन्ते मकटे अतिवियं गरुकं हत्वा आगच्छनि एनस्मि नि भण्डन्ति ?

उदकं एन्थानि ।

परनो नाव उदसे आनेत्वीह वो मनाप नन । इती पहराब पन उदसेन किच्चे निष्य पुग्नो वह उदसे। चाटियो [९४] मिनिटब्बा उदसे छहरेला सन्तरहरेत. सकटंन, नष्टपानि आहे. १७६ पन वस्ता गुम्हे पष्टप अन्हासे पण्टचो होनीनि योसे गन्या नेना अस्त्यमें पत्या अनती सम्मनानग्रेस अपामि ।

मोरि को बाजसत्ववाही अननो बाजताय यस्करम बक्त गहेरूवा चाटियो भिन्दापेर्या पमनमनिष्य उदक अनवमेरूवा मध्ये छड्डेट्वा सकटानि पाजापेमि । पुरनो अलमनिष्य उदके नाहोति । मनुसा पानीय अलमना किल्प्रीस् । ते याव सुरियरवगमना गस्त्वा मकटानि मोज्या परिकानके ठेवाया गोणे चक्केनु बन्सिम् । नेव गोणान उदके अहोमिन मनुस्तात याजा मत्या सकटानि मोज्या सक्वेरि । मनुस्ता मनिस्तात निपिज्यता मोपितु । गिनागासमनन्ये यस्वा यस्वानगरनो आगन्या सक्वेरि गोणे च मनुस्ते च जीविनक्वयं पापेरवा नेमं मेर्ग सादित्वा अद्दीनि अवसेर्यावा असम् ।

एव, एक बालमत्यबाहपुत्तं निस्माय मध्ये ने विनास पापुणिमु । हत्यर्ठिकादीनि विमाविदिसामु विपाकिण्णानि अहेमु । पञ्चसकटमतानि यथापूरिनानेव अट्ठेमु ।

बोधिसतीपि को बालमत्यवाहपुनस्म निवनत्तिद्वमतो पट्ठाय मामद्वसाम बीनिनामेता पञ्चिह सक्तमत्त्रीह सिद्ध तपा निकलस्म अनुपुढंन कलात्मक वार्ष्णि । सानल्य उदक्ताद्यिपे पूरेल्य वह उक आदार कल्याबारे अंग्रिज्यस्थिता मृत्ये सिद्ध [101] पानंत्रा एवसह-अस्मों में अनापुन्छत्वा पसनमत्तिष्य उदक् मा आविश्वित्य । कलारे विकरक्या नाम होलि । पत्त वा पुण्क वा पुन्हिह पुरे च अवादिनपुळ्यं भे अनापुन्छित्वा मा आदिन्यांति ।

एवं मनुस्सानं ओवादं दत्वा पञ्चहि सकटसनेहि कन्नारं पटिपज्जि ।

तस्मि कन्नारमञ्ज्ञे सम्पत्ते सो यक्लो पुरिमनयेनेव बोधिसत्तस्स पटिपथे अत्तानं दस्सेमि ।

१ स्या०-पुरिमबातो । २ सिं०-सुपिंसु ।

बोधिसत्तां ते दिश्वाद अञ्जासि इमिस्यं कत्तारं उदक निष्यं, निरुदकतत्तारो नामेसो । अयञ्ज निक्रयां रननेत्तो, छायाधिस्य न पञ्जायति । नित्संत्रयं इमिना पुरतो गतो बालस्ववाहपुत्तो सब्बं उदकं छड्डापेत्वा क्लियेत्वा सर्वारतो सादितो भविस्तित, मन्द्रं पन पष्टिदामावं उपायकोसस्कं न आनाति मञ्जेति । ततो नं आह पण्डिय दुग्हे सर्यं वाणिजा नाम अञ्ज उदकं अदिस्या गहितउदकं न छड्डेम । दिट्ट्ट्राने पन छड्डेश्या सक्टानि स्वल्हकानि कत्वा गीमस्तामाति ।

यक्को योक्षं गत्वा अदस्यनं उपगम्म अत्तो सक्कतगरमेव गतो । यक्कं पत्त गतं सब्बे मृत्सा सीधि-मत्तं उपगत्वा आहंपु-अस्य । एतं मृत्सा एमा नीक्वतग्राजि पञ्चायानि, तृतो पट्ठाय (१५) देवो निबद्ध बस्मतीति वत्वा उपलकुमृत्यालासाकिनो पदुमपुण्डरीककलापं आदाय भिसमुकानि बादता अल्कवस्या अल्कासा उद्यक्षिवद्वाह पायरनीह आगता । उदस् छट्टवेला लहुकीह सकटीह स्निप्पे मच्छामानि ।

बोधिमतो तेसं वचनं सुरवा सकटानि ठरागेत्वा सब्बमनुस्से सन्तिपातापेत्वा तुम्हेहि इमिन्स कान्तारे सरो वा पोक्करणी वा अरवीति कस्सचि सुतपुम्बन्ति पृष्किष्ठ ।

न अय्या ! सूतपूर्व्यः । निरुदककन्तारो नाम एसोति ।

इदानि एकच्चे मनुस्सा एनाय नीलवनराजिया परनो देवो बम्सतीनि वदन्ति । बुट्ठियानो नाम कित्तक $\lceil 102 \rceil$ ट्ठानं वायतीनि ।

योजनमत्त १ अय्यानि । कच्चि पन वो एकम्सपि मरीर बुट्ठिबातो पहरतीति ? नत्थि अय्याति । मेधसीस नाम कित्तके ठान पञ्जायतीति ? योजनमत्ते अय्याति । अत्थि पन वो केनचि एकम्पि मेघसीस दिटठन्ति ? नित्थ अय्यानि । विज्जल्लना नाम कित्तके ठाने पञ्जायतीति ? चतुपञ्चयोजने अय्याति । अत्य पन वो केनचि विज्जन्लतोभामो दिटहोति ? नित्थ अय्यानि । मेथसही नाम कित्तके ठाने मयतीति ? एकद्वियोजनमत्तं अध्याति । अत्थि पन वो केनचि मेघसही मुनोति ? र्नात्य अस्याति । कि तुम्हे एते जानाथाति । त जानाम अस्याति ।

न एनं मनुस्सा। यक्ता एने। अन्हे उदक्तं छड्डापेटला दुब्बले करवा लादिन्सामानि आगता भविस्मान्ति पुरतो गतो बालसल्यबाहुस्तो न उपायकुसलो। अद्यासी एतेहि उदकं छड्डापेटला किल्पोस्वा लादितो भविस्सानि, पञ्चसकट्सतानि यथापूरितानेव ठिलानि भविस्सानि। अञ्च मध्ये तानि पस्मिस्साम। पस्तप्रसामि उदकें अछड्डेल्या सीधमीधे सकटानि पाजेषानि।

१ स्या०-तियोजनमसं ।

'ક દે'

सो गच्छनो यथापूरितानव पञ्चसकटसतानि गोणमनुस्तानञ्च हृत्यट्टिकारोति रिमाधिहमामु धिप्पिकण्यानि दिस्ता सकटानि मोनापेत्वा सकटपरिवन्तकेन जन्यावारं बन्धापेत्वा कालस्येय मनुस्ये च गोणं न सायपासभर्त्तं मोणपेत्वा मनुस्तानं मन्द्रे गोणे निपण्यापेत्वा स्त्र्यं वलनायकं गहेत्वा सप्ताहत्वो नियामर्गत आर-क्षयं गहेत्वादितकोव अर्पणं उट्टापेपि। पुनिदिवसे पातोच सज्ब्यिकच्यानि निट्ठापेत्वा गोणे भोजेत्वा दुवलत्सन्दर्शन छड्डेत्वा विपानि गाहापेत्वा अप्यापं मण्डं छड्डापेत्वा महास्यं आरोपेत्वा यवाधिष्योनं तानं गन्तवा दिगुणिनण्येन मुकन भण्डं विक्किणित्वा सन्त्रं परिसं आदाप पुन अत्वनो नागमंत्र अपमासि । [103]

मत्या इमं अस्मक्यं कवेत्वा एवं गहरति पुत्रचे तक्कवाहगाहिनो महाविनासं पत्ता अपण्णकगाह-गाहिनो पत्र अमनुस्मान हत्य[९६]नो मुञ्चित्वा मोलियता इच्छित्रट्शनं गत्या पुत्र सकट्शनसेव पच्चान-मिमुति डेपि बत्युनि घटेत्वा इमित्सा अरण्णकसम्बदेमनाय अभिमस्बद्धो हत्वा इमं गायमाह-

"अपन्नकं ठानमेके बुतियं आहु तक्किका। एसदञ्जाय मेथाबी तं गण्डे यदपन्नकृति।"

तत्य-- अपष्णकन्ति एकमिकं अविरुद्ध निय्यानिकं । ठानन्ति कारणं । कारणं हि यस्मा तदायन्-बुत्तिताय फल निट्ठनि नाम तस्मा तं ठानन्ति बच्चनि । "ठानञ्च ठानतो अट्ठानञ्च अट्ठानतो"नि । आदिम् चस्स पयोगो वेदिनव्यो । इति अपण्णक ठानन्ति पदद्वयेनापि य एकन्तहित्मखाबहत्ता पण्डितेहि पटिपद्धं एकं-सिककारण सोभगकारण अवण्यकन्नाम अविध्यकारणं निय्यानिककारणं व इदन्ति दीपेति । अयमेत्य गंखेपो । पभेदतो पन तीणि सरणागमनानि पञ्च सीलानि अटठ सीलानि दस सीलानि पातिमोक्खयवरो इन्द्रियसवरो आजीवपारिमृद्धिमीलमंत्ररो पच्चयपटिसेवनं सञ्जप्ति चनपारिमद्भिमीलं इन्द्रियेस सनदारना भोजनं सन-क्रजता जागरियानयोगो झानं विपस्सना अभिज्ञा समार्थान अस्यमगो अस्यिक्तं सब्बम्पेतं अपणाकं ठानं अपराकपटिपदा निय्यानिकपटिपदानि अत्यो । यस्मा च पन निय्यानिकपटिपदाय एनं नामं तस्मा येव भगवा अप-ण्यकाटिनदंदेमेन्तो इस सुलमाह-"तीहि भिक्छवे । धस्मेहिसमञ्जागनी भिक्चु अपण्यकपटिपद पटिपछो होति बिरियो चस्म आरडो होति आसवानं खयाय । कतमेहि तीहि ^२ इथ भिक्खवे [।] भिक्ख दन्द्रियेस गलदारा होति भोजने मतञ्ज होति जागरियं अनयस्रो होति । कथं च मिनवर्ष ! भिक्स डन्डियेस गुनदारो होति 'इय भिक्कवे ! भिक्क चक्कना रूपं दिस्वा न निमित्तगाही होति-पे-एवं खो भिक्कवे ! भिक्क इन्हियंग गत-द्वारो होति । कथं च भिक्कवे ! भिक्क भोजने मत्तञ्ज्ञहोति ? इय भिक्कवे ! भिक्क पटिसक्वायोनियो आहार आहारेति ने व दबाय न मदाय न मण्डनाय न विभमनाय यावदेव इमस्म कायस्य ठितिया यापनाय विहिन्पपरिया ब्रह्मचरियानगहाय इति पुराणञ्च बेदन पटिसुखामि नवञ्च बेदन न उप्पादेस्मामि यात्रा च मे भविस्मति अनवज्जता च फासुबिहारो चाति । एव खो भिक्षवे । भिक्षव भोजने मतञ्ज होति । कथ च भिक्षवे । भिक्षव जागरियं अनयत्तो होति ?इध भिक्लवे! भिक्ल दिवमं चकमेन निमञ्जाय आवरणीयेहि धम्मेहि चित्तं परिसाधित रसिया पठमं याम चंकमेन निसज्जाय आवरणीयेहि धम्मेहि चिनं परिसोधेनि रसिया मिलामं याम दिस्यणेन पस्सेन सीहमेव्य कप्पेति पादेन पादं अञ्चाधाय मनो सम्पत्रानो उट्ठानसञ्ज मनसिकरिन्त्रा रनिया पन्छिमे याम पञ्चटठाय चवामेन निसञ्जाय आवरणीयेहि धम्मेहि चित्त परिमोधेति । एव खो भिक्खव । भिक्ख जार्गारयं अनुयत्तो होती" ति । इमस्मि चापि सूने नयोव धम्मा बना । अय पन अपण्णकपटिपदा याव अरहतफटा टब्स [104]तेव । तत्य अरहनफलम्पि फलसमापतिविहारस्स चेव अनुपादापरिनिब्बाणस्म च पटिपदायेव नाम होति। एकेति एक व्य पण्डितमनुस्सा । तत्य किञ्चापि अमुको नामाति नियमो नत्यि, इद पन सपरिमं बौधिमत्त येवि ०७] सन्धाय बुलन्ति वेदितव्यं । दुतियं आहु तक्किकाति दुतियन्ति पठमं ब्लती अपण्णकट्ठानतो निय्यानिककार-णतो दुनिय तक्कगाहकारण अनिय्यानिककारण । आहु तिकक्काति एत्य पन सद्धि पुरिमपदेन अयं योजना, अपण्याकट्ठानं एकन्तिककारण अविरुद्धकारणं निष्यानिककारणं एके बोधिमतः प्याना पण्डिनमन्स्मा र्गाण्हस् ।

१ अंगृत्तर, अद्वानपालि । २ रो०-पठमतो ।

ये पन ते बालसःववाहपूनःपमुखा तक्किका आहु ते दुतियं सापरार्थ अनेकंसिकट्ठानं विरुद्धकारणं अनिय्या-निककारणं अगाहेस् । तेस् ये अपण्यकट्ठानं अगाहेस् ते सुक्कपटिपदं पटिपन्ना ये द्रतियं पुरतो भवितव्यं उदके-नाति तककगाहसंखातं अनिय्यानिककारणं अग्गहेमुं ते कण्हपटिपदं पटिपन्ना । तत्य सुक्कपटिपदा अपरिहानि-पटियदा कण्डपटियदा परिहानिपटियदा तस्मा ये मुक्कपटियदं पटियन्ना ते अपरिहीना सोत्थिभावं पत्ता, ये पन कब्ह्रपटियदं पटियन्ना ते परिहीना अनयन्यसनं आपन्नाति इममत्यं भगवा अनायपिण्डिकस्स गृहपतिनो बत्वा उत्तरि इदमाह-"एतदञ्जाय मेघाबी तं गण्हे यदपण्णक" न्ति ! तत्य एतदञ्जाय मेघाबीति मेघाति लद्धनामाय विस्द्वाय उत्तमाय पञ्जाय समझागतो कुलपुत्तो एतं अपण्णके चेव सपण्णके चाति द्वीस् अपण्णकगाहतक्कगाह-संखातेस ठानेस गुणदोसं बुद्धिहानि अत्यानत्यं ठानाठानञ्च जात्वाति अत्यो । तं गण्हे यवपण्णकनित यं अपण्णकं ए कंसिक सक्क पटिपदाअपरिहानियपटिपदासंखातं निय्यानिक कारणं तदेव गण्हेय्य । कस्मा ? एकंसिकादिभाव-. सो येव। इतरंपन न गण्डेय्य। कस्मा[?] अनेकसिकादिभावतो येव। अयं हि अपण्णकपटिपदा नाम सब्बेसं बृद्ध-पञ्चेकबद्धबद्धपत्तानं पटिपदा । सब्बबुद्धा हि अपण्णकपटिपदायमेव ठत्वा दळ्हेन विरियेन पारिमयो पूरेत्वा बोधितले बढ़ा नाम होन्ति । पच्चेकबुढ़ा पच्चेकबोधि उप्पादेन्ति । बढपूलापि सावकपारमित्राणं पटिविज्झन्ति । इति भगवा तेमं उपासकानं तिम्मो कुमलमम्पत्तियो छ कामावचरसागे ब्रह्मलोकसम्पत्तियो च दत्वापि परियो-साने अरहत्तकलदायिका अपण्णकपटिपदा नाम चतुमु अपायेम् पञ्चम् च नीचकुलेम् निब्बत्तिदायिका सपण्ण-कपटिपदा नामानि । इमं अपण्णकथम्मदेसनं दस्मेत्वा उपरि चनारि सच्चानि सौळमहि आकारेहि प्रकासेमि । चतसञ्चपरियोमाने सब्बेपि ते पञ्चमता उपासका सोतापत्तिकले पतिट्टहिसु ।

सत्या इम घम्मदेसनं आहरित्या दस्सेत्या द्वे बन्धृति कथेन्या अनुमृश्यि घटेन्या जानकं समोधानेत्या दस्सेसि । तस्मि समये बालसत्यवाहपुत्ती देवदत्ती अहोसि, तस्य (८) परिमा देवदत्तरारिमा व, पण्डिनमत्यवाह-पुत्तपरिसा बुद्धपरिसा, पण्डिनसत्यवाहपुत्ती पत अहमेव अहोसिन्ति देसनं निटरुपेमि ।

अवकारकातकं

२. वण्णुपथजातकं

अकिलासुनोति इमै घम्मदेसनं भगवा सावन्थियं शिहरन्नो कथेसि । कंपन आरक्भानि ? एकं ओस्स-ट्टबिरियं भिक्कु ।

पच्चुपस्रवत्यु

तथागते किर सावश्वियं विहरने एको सावश्वियामी कुल्युनो जेतवनं गन्दा मन्यू सिनकं सम्मदेसनं सुत्वा पक्कवित्तो कामेसु आदीनवं नेत्रक्षम्मं च आिंगांनं दिखा प्ववित्तत्वा उपसम्पदाय पञ्चवित्तको हुत्वा द्वे मातिका उम्मिल्ट्ना, वेपस्सनाचारं विकित्तवा सत्यु मीनकं अननो जित्तर्गन्यं कस्म-दुर्जनं महेल्वा एकं अरञ्जं पविसित्वा बस्मं उपगन्दा तेमास वायमन्तो अभासमनं वा निमनमनं या उलादेनुं नासन्ति

अवस्स एतदहीसि-मश्यारा चनारो पुग्गला कविता । तेनु मद्या पदएगमेन प्रतिनव्यं । नाःय मञ्जे मर्व्ह इंमस्सि अत्तभावे मग्गो वा कलं वा । अह कि करिस्सामि अरञ्जवासेन ? सन्युमानिक गन्तवा अर्तावय कृषसीभगण्यनं बुद्धसरीरे ओओकेनो मयुग्यस्मरेसनं सुणन्तो विज्ञारस्मामीति पन जेनवनसंघ प्रच्यासमाग्न ।

अव नं मन्दिद्धा सम्भत्ता भिन्न् आहंसु-आनुमी । त्वं तत्व् सन्तिक कम्पर्टानं गहेत्वा सम्पाधमं करिस्सामीति गरो इदानि पन आगल्वा संगणिकाय अभिरममाना नर्राप्त । किन्नु वो ने पत्वजिनकिच्चे नत्यक पनं अपणीरमधिको जातोमी । ति ?

आत्रुमो । अहं मध्यं वा फर्कं वा अलभित्या अभव्यपुरगलेन मया भविनव्यन्ति विरिय ओस्मिजित्वा आगतोम्हीति ।

अकारणे ने आबुमी, कर्न दळ्हाविरियस्म सन्यु मामने पथ्वितत्वा विरिय ओम्मजन्तेन । एहि तथानतस्य नं दस्सेम्मामानि ने ने आदाय मन्यु संतिक अगर्ममु ।

सन्या नं दिस्या एवमाह—भिवस्यवे † नुम्हे एत भिक्त्यु अनिच्छमान आदाय आगना । कि कर्न इमिनाति 2

भन्ते । अय भिक्क एक्कपे निष्यानिके सामने पञ्जीकत्वा समजयस्मं करोन्तो विरिय ओस्सजित्वा आगतोति ।

> अय नं सत्था आह्—सञ्च किर तया भिक्खु । विरियं ते ओस्सट्ठन्ति ? सञ्चं भगवाति ।

कि पन त्यं भिक्षु । एवरूपे निय्यानिकसासने पश्चित्रत्या अध्यव्छाति या सन्तृट्रोति या पवि-वित्ताति वा अनेसट्ट्रोति या आरद्धिनिर्धाति या एव अनान अवानाशेश्या आस्मट्टार्वित्यां भिक्कृति जानार्यात। नन् त्यं पुत्र्ये विरिष्या ब्रहोति । तया एकेन कर्त विरिष्य निस्माय मकत्त्वात्रीं १९ गुण्यम् । प्रत्येनमु गच्छनोमु मनुस्मा व गोगा व पानीय स्मित्या मुखिला जाता । इतानि कस्मा विरिष्यं आस्मत्रजीति ?

सो भिक्क एतकेन उपस्थिभतां अहोसि। त गन कथ मुखा भिक्क भगवनां यांचमु-भन्ने ! इदानि इमिना भिक्कतां विरासक ओस्सट्टभावो अस्हार्क पास्टो, पुत्र्य पन एतस्म एकस्म कनिविन्ये निस्साय महरूनारे गोगमन्स्मानं पानीयं लिभित्वा मुखिनभावो पटिच्छन्नो, तुम्हार्क स्वकञ्जनञाणस्वेव पाक्टो। अस्हाकन्येतं कारणं करेवाति ! तेनहि भिक्लवे ! सुणाथानि । भगवा तेमं भिक्लनं सनुष्पादं जनेन्या भवन्तरेन पटिच्छप्नं कारणं पाकटं अकासि-

असीतवस्थ

अनीने कासिन्द्रे वाराणियं श्रद्धादने रण्यं कारेन्तं बोधिसत्तो सत्यवाहकुले पटिमस्य गहेत्या वयव्यानो पञ्चित नकटमनेहि विणयं करोत्तो विचरित । तो एकदा सद्दियोजनिक मरुकत्तारं पटिपिय । विचरते । तो एकदा सद्दियोजनिक मरुकत्तारं पटिपिय । विचरते स्वत्यारं मुख्यस्यारं मुख्यस्यारं मुख्यस्यारं मुख्यस्यारं मुख्यस्यारं मुख्यस्यारं मुख्यस्यारं । ति पटिप्ययन्ते । राष्ट्रकरूण्यस्यारं मुख्यस्यारं पदिप्ययं । विचरते परिवास कर्षां ने मरुक्त विचरते । विचरते मण्यस्य । विचरते मरुक्त विचरते मारुक्त विचरते । विचरते मरुक्त विचरते । विचरते । विचरते मरुक्त विचरते । वि

मोपि मध्यवाहो तरिम काले इमिनाय नियामेन ने कलारे राष्ट्रक्तो एकृतसद्द्वियोजनानि पत्त्वा इदानि एक्रमंत्रेच महरूलागा निक्समन प्रतिस्मतीति सायमास भूष्टिज्यला सब्ध दावरके खेणेचा मक्टारि योजेला पावासि । नियामको पृरियनकरे आर्माल सम्वरावेला आकाने तारक ओलोक्नी करिया पाजेच उनी पाजेचानि वस्मानी निपष्टिक । सो दोषमानाले अनिहायनमाजेन किल्कमती निव्ह औक्करिम ।

गोणी निवत्तित्वा आश्तमपामेव गण्डलं न अञ्जास । गोणा सख्यर्गन अगमपु । नियानको अरुणु-गणनवेलाय पबुद्धा नक्षनं आंत्रोकेस्या मक्टानि निवनेश्य निवनेषाति आह् । सक्टानि निवनेत्या पटिपाटि करोलानं येथ अरुणे। उपगते। ।

मनुत्सा हिष्यो अम्हार्क निविद्ठलस्या (१००) वारट्ठानमेश्रेतं दाश्दकिम्य नो खोण इदानि नट्ठम्हानि सकटानि मोचेत्व। परिवनकेन ठऐत्या मत्यके मण्डणं करवा अननो अननो सकटम्य हेट्ठा अनुमोचना निर्पाजन्तु ।

बोधिमतो मिप विरिध ओस्सबन्ते राखीं वित्तिस्त्रस्त्रस्तीत पातोव मीतलवेळावमेव आहिण्डन्तो एक दर्धातणत्रक्त दिस्वा इमानि निणानि इट्टा उदक्तिमतेहेन उद्दितानि भविस्मत्तीति चिलोवा कुहाल माहारिता व परेन व्यामित । ने मट्डिहलब्द्दान बांजमु । परिह्मित्र । यहरमने सब्बेणि विरिध्य ओस्त्रात्रम् ।

वाधिमनो पन इमस्म पामाणस्स हेट्टा उदकेन भविनव्यन्ति ओतरिस्वा पामाणे टिनो ओनमिस्वा सोन ओदिह्या सङ्गापकलेला हेट्टा उदकम्म पबनानगङ् तृत्वा उत्तरिस्वा सूतृप्रट्शक आह्-ताल ! त्या विरिधं ओसम्पट्टे सर्थं विनिम्मस्माम । त्य विरियं अनोस्मजित्वा इम अवकृट गहेत्वा आवाट ओनस्विं एत्रीस्म पामाणे प्रशार हेशीरि ।

मो तस्म वचन सम्पर्धिकृत्वा सन्धे मृत्रिय ओस्त्रीज्ञत्वा ठिनेमुत्ति विरिध अनोस्मजन्ते ओर्नास्वा त्वासाणे पहार अवामि । पासाणो सन्धे मिजिजन्वा हेट्ठा पतित्वा सोतं सिन्निमस्वा अट्ठासि । तात्ववन्य-प्रमाणा उक्तवन्द्रि उमान्कि । सन्धे पानीव पित्रित्वा नहासिषु । अतिरेकानि अन्वस्तुपारीनि कान्द्रेदा बागुसस्य प्रमाणा उक्तवन्द्रित्वा गोजे व भोजेत्वा सुर्ग्य व अत्य गाँ उक्तवादसमेषं यज्ञ सम्पित्वा स्थित्वा प्रमित्वा अविकासिक्त मृत्रित्वा गोजेत्वा सुर्ग्य व अत्य गाँ उक्तवादसमेषं यज्ञ सम्पित्वा स्थित्वा प्रमित्वा अत्य अत्य विकासिक स्थापित स्था

ने नत्थ यावनायुक ठन्वा यथाकम्म गता । बोधिसतोपि दानादीनि पुञ्जानि करवा यथाकम्मभव गतो । मम्मामम्बुद्धो इम धम्मदेगन कथेत्वा अभिसम्बद्धोव इम गाय कथेसि-

१ रो०-भोगं। २ रो०-अगमिस्।

''अिकलासुनी बण्णुपये खणन्ता, उदंगणे तत्य पपं अविन्दु ।' एवं सूनी विरियबलूपपन्नो, अकिलासु विन्दे हदयस्स सन्तिन्ति ॥''

तरम — अिक्छासुमीस निक्कोमञ्जा आरद्धिविरया। सम्मुवसीस वण्णु वृध्यिन सालुका? । बालुकामध्येन करवा। सम्मुवसीस वण्णु वृध्यिन सालुका? । वालुकामध्येन करवा। सम्मुवसीस वण्णु वृध्यिन साल्का? । सालुकामध्येन करवा। सम्मुवसीस वृध्येन स्वार्थ प्रमुमागित अर्था। १० १ त्रेवस्यासित सिम्म सम्मुवसीस अर्था । स्वार्थ स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्थ स्वार्य स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स्वार

भगवता हि, "दुस्य भिवस्य । कुमीतो विहर्गत योक्त्रणो गापेनेहि अकुमलेरि परमित महत्त्रन्य सदस्यंपरिहायेति, आरखिषियो व यो भिवस्य । मुखे विहर्गत परिविद्यो गापेनेहि अकुमलेरि परमित महत्त्रन्य सदस्यंपरिहायेति, आरखिष्ययो व यो भिवस्य । मुखे विहर्गत परिविद्यो गापेनेहि अकुमलेरि परमित महत्त्रक्त्र्य सदस्य परिदर्शने पर्वे पर्वे हित्र महित्र हुमेरिक स्वाप्त स्वाप

मत्या हेपि बत्यूनि कथेला अनुमन्त्रि घटेला जानक ममोधानेत्वा हम्मेमि । तस्यि मभव विरिय अनोस्यितित्वा पामाण भिनित्त्वा महाजनम्म उदकरायको चृत्युस्ट्राको अयः आम्मर्ट्यविरियो भिनन् पर्नोम अवसेस्वरिमा इदानि बृद्धपरिमा जाना मत्यवाहुबेट्टको पन अहमैव अहोमिनि इम धम्मदेसन निट्टर्येमि ।

बण्ण्यञात ह ।

3. सेरिववाणिजजातकं

इध चेहिन जिराधेसीति इदिम्प घम्मदेसन भगवा सावस्थियं विहरन्तो एकं ओस्सट्ठविरियमेव भिक्स आरक्ष कर्यसि ।

पच्चपञ्चवस्थ

त हि पुरिमनयेनेन भिनक्हि आनीतं दित्वा सत्या आह—"भिनक्तु । त्व एवरूपे मग्पफलदायके सासने पञ्जीजत्वा विरिय ओस्सजन्तो सतसहस्सम्बनिकाय कञ्चनपातिया परिहीनो सेरियबाणियो विय चिर् सोक्स्यामी" ति ।

भिक्ख तस्सत्थस्स आवीभावत्य भगवन्त याचिस् । भगवा भवन्तरेन पटिच्छन्नं कारणं पाकटं अकासि-

अतीतवत्थ

अनीतं इती पञ्चमं कल्पं बोधिमनो सेरिवरट्ठे सेरिवो नाम कच्छपुटवाणिजो अहीति। सो सेरिवा नाम एकेन लोकच्छपुटवाणिजेन सिद्ध वोहारत्याय गच्छन्तो नीलवाहिनि नाम नदि उत्तरित्वा अन्यपुर⁸ नाम नगर पविमन्तो नगरवीपियो भोजेत्वा अननो पनवीधिया भण्ड विक्किणनो चरि। इनरोपि अतनो पत्तवीधि गर्लिः।

तिस्म पन नगरे एक सेट्ठिकुल परिजिण्ण अहोसि । सब्बे पुत मातिका च वन च परिच्छय अगमनु । एका दारिका अध्यक्षाय साह अवसेसा अहोसि । ना द्वेषि परेक भीत करवा जीवन्ति । येहे पन तास महासेट्टिना परिभुत्तपुत्रवा सुवण्णपति भाजनन्तरे निम्बता दीवरत्त अवलञ्जियमाना मलग्गहिना अहोसि । ता तस्सा सवण्णपतिभावन्ति न जानन्ति ।

सो कोलवाणिजो तस्मि समये "मणिके^उ गण्हथ, मणिके गण्हथा" ति विचरन्तो तं घरद्वार पापुणि ।

सा कुमारिका त दिस्वा अध्यिक आह्-अम्म । मय्ह एक पिलन्धन गण्हाति ।

अम्म ' मय दुमाना कि दत्वा गण्हिस्सामाति ?

अय नो पानि अत्थि, नो च अम्हाक उपकारा । इम दत्वा गण्हाति ।

सा वाणिज पक्कोमापेत्वा आमने निमीदापेत्वा तं पानि दत्वा—अय्य ! इम गहेत्वा तव भगिनिया किञ्चियेव देहीनि आह ।

वाणिजो पानि हत्येन गहेत्वाव मुवण्णपानि भविस्सतीति परिवस्तवा पानिष्ट्ठियं सूचिया सेख कड्डित्वा मुवण्णभाव ज्ञात्वा इमासं किञ्चि अदत्वाव इमे पानि हरिस्सामीनि-अय कि च अप्यति ? अद्धमास-कोषिस्मा मूल न होतीनि भूमिय खिपत्वा उटठायासना प्रकामि । [१०३]

एकेन पविसित्वा निक्वन्नवीर्षि इनरो पविसिनु लग्नतीति बोधिसत्तो त बीधि पविसित्वा "मणिके गण्हय मणिके गण्हया" नि विचरन्तो तमेव घरद्वार पापुणि । पुन सा कुमारिका तथेव अस्थिकं आह ।

अय न अध्यका-अम्म ! पठम आगनवाणिजो पानि भूमियं खिपित्वा गतो इदानि कि दत्वा गण्हि-स्सामानि आह ।

१ रो-तेलबाहं। स्या०-नीलबाहं। २ स्या०-अस्ट्रिपुरं। ३ स्या०-अस्डिके।

अस्म ! सो वाणिजो फुरुसवाचो अय पन पियदस्सनो मुदुसल्लापो । अप्पेबनाम न गण्हेय्याति । तेन हि पक्कोसाष्टीति ।

सा त पत्रकोषि । अयस्स गेहं पत्रिवित्वा निसिन्नस्स तं पानि अदंमु । सो तस्सा सुवण्णपातिभावं इन्त्वा-अस्म ! अय पानि सनसहस्स अध्वनि पानिजण्यनकमण्ड मन्हं हत्ये नन्धीनि आह ।

अस्म । पठम आगनवाणिजो अय अद्धमासकस्पि न अध्यतीति भूमिय खिपित्या गतो । अय पन तव पूरुमेन सुवण्णपति जाता भविस्सतीति । मय इम तुष्ट देम । किञ्चिदेव नो दन्वा इमं गहेत्वा याहीति ।

बोधिसत्तो तस्मि लणे हत्यगराति पञ्चकहारणसताति पञ्चसतायनकञ्च अण्ड सब्ब दत्वा-मस्ट् इमं तुकंच पक्षिश्व कञ्च अट्ठ च कहारणे देशाति एतकः याचित्वा-आदाय पक्कामि । सो मीघमेव नदीतीर यत्त्वा नाविकस्स अटठकहारणे दत्वा नाव अभिरुष्टि ।

तनो लांजवाणिजांपि ' पुन गंह गल्वा-आहरथ त पाति तुम्हाक किञ्चिव दस्सामीति आह । सा नं परिभाषित्वा-त्वं अम्हाकं तिमहस्साधिनकं सुबण्णपानि अद्भासकाधिनकामि न अकासि । तुन्हें पन सामिकसदिसो एको षम्मिकवाणिजो अन्नाकं सहस्सं दत्वा तं आदाय गलोति आह ।

तं मुखा तस्य 'सत्सहुन्यायनिकाय हि मुक्कणपातिया परिहीनोन्हि महावानिकरो वन मे अपन्ति' सञ्जातवलवर्गको मित पत्रवृत्तदृर्धनु असकोलो विस्तृञ्जी हुन्या अत्तरी हत्यालो कहाणणे वेब भण्डकरूव पद्धारे येव विकित्य्वा निवासतगाशानं पहाय मुखायण्डं मुग्गरं कत्या आदाय बीधिसत्तस्स अनुपदं पनकत्तो नदीतीरं गत्या बीधिसनं मञ्जूनं दिरवा-अम्मो नाविक ' नावं निवतहीति आह ।

बोधिमतो 'मा निवन्तयीति' पटिसेधेसि ।

इतरस्सपि बोधिमन गच्छन्तं परसन्तस्य परसन्तस्य वलवगोको उदगदि । हृदयं उष्हं अहोति । मुखनो लोहिनं उपान्छि । बापिकह्मो विव हृदय फलि । तो बोधिसत्तं आधान बन्धिन्वा गल्पेव जीवितस्वयं पापुणि । इदं यटमं देवदनस्य बोधिसन् आधानवन्यत । बोधिमत्तो दानादीनि पृञ्जानि करित्वा ययाकस्म अगमासि । सम्मासम्बुद्धो इसं धम्मदेयनं क्येत्या अभिसम्बुद्धोव इसं गार्च कर्योग -[१०४]

"इंघ चे हिनं (बराघेसि सद्धम्मस्स नियामतं।

चिर त्वं अनुतपेस्ससि सेरियायंव वाणिजो ॥" ति ।

्रवमस्त सत्या अरहतेन क्ट्रं गण्डत्तो इमं धम्मर्देसनं इस्मेव्या चतारि मञ्चानि पकामिन । मञ्चपरि-योसानं बोसस्ट्ठीवरियो भिक्स् अम्मर्कले अरहते पनिद्शासि । सत्यापि इं वर्त्यनि कपेरवा अनुमन्धि घटेरवा जानकं समोधानेत्वा दश्मोसि । तदा बालवाणिको देवदनो अहोसि, पण्डिनवाणिको अहमेव अहोसिन्त देसनं निट्येपि

४. जुल्लकसेटिजातकं

अप्यक्रेनापि मेघाबीति इमं घम्मदेसनं भगवा राजगहं उपनिस्साय जीवकम्बवनं विहरन्तो चुल्ल-पन्यकत्येरं आरक्भ कथेसि ।

बह्लपन्धकस्स निब्बत्तिकथा

तत्य चुरुपायकस्स ताव निन्नति कथेतन्त्र—राजगहे किर महाधनसेट्टिकुलस्स धीता अक्तनो दासेनंव सींद सम्बद्धं कत्वा अञ्जीपं में इसं कम्म जानेव्यान्ति भीता एकमाह-अन्हेहि इसस्मित ग्रानं वेतनु न कक्का स्वनं में माताणितरो इसं दोनं जानित्सान्ति सण्डालण्डं करिस्सिन्ति, विदेशं गत्त्वा विसत्सामाति हत्यसारं गहेत्वा अन्तदारेन निक्सिम्त्वा यन्य वा नत्य वा अञ्जीह अजानन्दग्रनं गन्त्या विस्त्यामानि ज्ञोणि अमानु । तेन एकस्मि शत्रेव सम्बन्धारं संवासम्बन्धाय नह्या [२०५] कुष्टिवयं गञ्जो पतिद्शामि । ना गन्भपरिपाकमागम्म सामिकेत सिंद्व मनंतिम-नाभी में परिपाकं गतो, आनिवन्युविनहिनं व शाने गन्भवृद्शान नाम अनिक्षांप अन्तालं इनक्षेत्रं सुक्रमीह मञ्चावानि ।

सो अज्ज राच्छाम स्वे राच्छामाति दिवसे अनिक्कामेति । सा चिन्तेमि-अयं वाको अननो दोम-महन्तनाय गर्नु न उस्महति, मानापितरो नाम गुकन्तहिता, अयं गच्छतु वा मा वा, मया गर्नु वहटनोति । तस्म गेहा निक्चन्ते गेहपरिक्खारं पटिसामेत्वा अननो कृष्यपरं गनभावं अनन्तरगेहवासीने आरोचेत्वा गर्म्य पटियक्ति

अय सो पुरिसो घर आगतो ने अदिस्वा पटिविस्सके पुच्छित्वा कुलघर गताति मृत्वा वेगेन अनुविध्यत्वा अन्तरामग्गे सम्पापुणि । तस्सापि तत्थेव गरुअवृद्धानं अहोसि । मी कि वर्ष भद्देति पुच्छि ।

सामि ! एकां पुत्तो जातोति ।

इदानि कि करिस्सामाति ?

यस्सत्थाय मर्थ कुलघरं गङ्ग्रेय्याम तं कम्मं अन्तराव नित्फलं, तत्थ गल्या कि करिस्साम, निवत्ता-मानि देपि एकचिन्ता हुत्या निवत्तिम् । नस्म च दारकस्स पन्थे जातत्ता पन्थकांति नामं अवंस् ।

तस्सा न चिरस्मेव अपरोपि गब्भो पनिट्ठिह् । मध्यं पुरिमनयेनेव वित्थारेनध्यं । तस्सामि दारकरस् पन्ये जानता पटमजानस्स महापन्यकानि नामं कत्वा इतरम्स चुल्जपन्यकोनि नामं अकमु । ने द्वेषि दारकं गहेत्वा अत्तनो वसनटठानमेव आगता ।

पच्चपन्नबत्यु

तेसं तथ्य वमत्तानं अयं पत्यकदारकां अञ्जे दारकं चुल्लपितानि, अध्यकोनि, अध्यकानि वदन्ते मुख्य मानः पुष्छि-अम्म । अञ्जे दारका चुल्लपिताति अध्यकोति अध्यकानि वदन्ति । अम्हाकं ज्ञानका मत्थीति ?

आम तात [!] तुम्हाकं एत्य आनका नित्य । राजगहनगरे पन वो महाधनसेट्ठा नाम अय्यको तत्य तुम्हाकं बहु आनकाति ।

कस्मा तत्थ न गच्छाम अम्मानि ?

मा अत्तनो अगमनकारणं पुत्तस्स कथेत्वा पुत्तेसु पुनप्पुनं कथेन्तेसु सामिकं आह–इमे दारका अति-विय निलमेन्ति कि गो मानापिनरो दिस्वा मंसं खादिस्सान्त ! एहि, दारकानं अय्यककुलं दस्सेस्सामाति । अहं सम्मुख्त गन्तुं न सक्खिस्सामि, तंपन तत्व नियस्सामीति आह ।

सायु, येन केनषि नयेन दारकार्न अय्यककुलमेव दृद्धु बट्टतीति ते ह्रेपि जना दाग्के आदाय अनुपुः श्र्वेन राजगई एका नगरद्वारे एकिस्सा मालाय निवासं कप्येत्वा दारकमाता ह्रे दारके आदाय आगतभावं माता-पितकं आरोचार्पेसि ।

ते तें सासनं सुत्या-संसारे संसरन्तानं अन्हाकं न पुत्तो तभीता नाम नित्य । ते अन्हाकं महापराधि-का । न सक्का तें हि अन्हाकं चक्खुपये ठातुं । एतकं पन नाम घनं गहेत्वा [१०६] द्विनि जना फासुकट्ठानं गत्त्वा जीवन्तु । दान्के पन इभेव पेसेन्तृति ।

सेट्ठीथीना मानापिनृहि पेषितं घनं पहेत्वा दारके आगतदूनानं सेव हत्वे दत्वा पेसेति । दारका अध्यक्षकुळे बहुवन्ति । नेतु कुन्करानको अनिसहरो, महापत्मको पत्त अध्यक्षेत्र सिंढ दसकणसा धम्मकः सींतुं गच्छिति । सस्स निज्ये संयुक्तसमुखा धम्मं मणनास्स पब्बज्जाय चिन्तं निम्। सो अध्यक्षे आह्-सचे गुन्हे सम्पटिच्छा अहाँ पबजेध्याति ।

कि वर्टीस तात ! मस्टं सकललोकस्मापि पत्र्वजिननो नवेच पत्र्वज्ञा भिद्दका । सचे सक्कोमि पद्यज्ञ तानाति सम्पटिष्ण्यत्या सत्यमन्तिकं गतो ।

सत्था-कि महाभेट्टि ! अयं दारको ते लद्घोति ?

आम भन्ते ! अयं दारको मध्हं नत्ता, तुम्हाक सन्तिके पथ्यजामीति बदतीति आह ।

सत्या अञ्जतरं पिण्डपातिकभिक्तुं इम दारकं पब्दाजेहीति आणापेमि । थेरो तस्म तचपञ्चककम्म-टटानं आचित्रिकत्वा पब्चाजेमि ।

मो बहुं बृद्धवनं उपाधिस्त्वा परिपृष्णवस्मो उपमध्यदं स्ति। उपसम्पन्नो यानिमो मनिकारेन करमह्दानं करोत्रो अत्रतां पापुणि। सो झानमुखेन व सम्मवुखेन व बीनिनामेलो विन्तीस, सक्ता मूला इम पूर्ण बुल्लयक्तस्म दातुन्ति। ततो अध्यक्षमेट्डिम्म सन्तिकं मनवा-महामेट्डि सब्दे नुम्हे सम्परिष्ठप अहं चुल्लयक्कं पञ्चानेव्यानि आह ।

पव्वाजेय भन्तेति ।

श्रेरो चुल्लपत्यकदारकं पञ्चाजेत्वा दसमु मीलंगु पनिट्ठापेसि । चुल्लपत्यकसामणेरो पञ्चीजत्वाव दस्यो अहोसि । यथाह—

"पदुम[े] यथा कोकनदं सुगन्ध पातो सिया फुल्लमबीतगन्धं ।

अंगीरस पस्स विरोधमानं तपन्तमादिश्यमिवन्तळिनसे ॥" ति ।

इम एकं गाथ चतुहि मासेहि गण्हिनुं नासक्खि ।

मो किर कस्थायसमामान्दुइकाले पत्नित्वा पञ्जवा हुन्बा अञ्जनरस्स दस्त्रीभस्त्रम् । उद्देशमहरूनः काले परिहासकेत्रि अकासि । मो मिनक् नेन परिसासेन लिज्जो नेव उद्देशं गण्डित न सञ्जायसकामि । तेन कस्मे-नार्यं पञ्जीकत्राव दस्यो जानो । गहिनपहिनपद उपि उपरि एवं गण्डलस्य नस्मति । तस्स उसमेव गार्थं गहेतुं बायसन्तरम्य बनारो माना अनिकस्त्ता ।

अय नं महापन्यको आह-बुल्जपन्यक, त्वं इमीम्म मामने अभव्यो । चतुहि मामेहि एकं गार्थाम्य गहेतुं न सक्कोमि । पव्यक्तिनिकल्यं पन न्वं कथं मध्यकं पापेस्मिन ? निक्सम इतो विहासति निक्कड्डिं। [१०७] चुल्जपन्यको बुडमासने सिनेहेन गिहिभावं न पत्थेति ।

र्तास्म च काले महापन्थको भत्तद्देमको होति । जीवको कोमारभच्चो बहुं गन्धमालं आदाय अतनो

अम्बवनं गत्त्वा सत्यारं पूजेत्वा घम्मं सुन्वा उट्ठायासना दसबलं वन्दित्वा सहापन्थकं उपर्सकिमित्वा – कित्तका भन्ते ! सत्यसन्तिकं भिक्कति पिक्छ ।

पञ्चमत्तानि भिक्खसतानीति ।

स्वे भन्ते ! बुद्धपमुखानि पञ्च भिक्खुसतानि आदाय अम्हाकं निवेसने भिक्खं गण्हथाति ।

उपासक [!] चुल्लपन्यको नाम दन्धो अविकळ्ड्धममो, तंठपेत्वा सेसानं निमन्तणं पटिच्छामीति भेरो आह ।

तं मुख्या बुल्लपत्यको बिलोशि- मर्स्ट् भानिकत्यरो एतकानं भिक्कृनं निमन्तर्ण पटिच्छन्तो मं बाहिरं कत्या पटिच्छनि । निम्मंसर्य मर्स्ट्र भातिकत्स्य समि बित्तं मिक्कं भविस्सर्ति । कि इदानि मर्स्ट् इमिना सामनेन ! मिही हृत्या दानादीनि पुट्यानि करोन्तो जीविस्सामीति । सो पुनदिवसे पातोन मिही भविस्सामीति पार्यामि ।

सत्या पञ्चसकाले येव लोक ओलोकेन्तो इमं कारणं दिस्वा पठमतरं गन्तवा बुल्लपत्यकस्स गमनममा ारकांट्ठकं बंकमन्तो अट्ठामि । बुल्लपत्यको घरं गच्छन्तो सत्यारं दिस्वा उपसंकीसत्वा बन्दि । अय नं सत्या-कहं पन त्वं बुल्लपत्यक । इमाय बेलाय गच्छसीति आह ।

भागा मं भन्ते । निकडिं । तेनाहं गिही भविस्सामीति गच्छामीति ।

चुरूरुपत्यक ! तव प्रवारजा सम सत्तक। । भातरा निकाइडितो कस्मा सम सन्तिकं नागन्छि। एहि कि ते मिहीमावेत ? सम सन्तिकं मिसस्सीति चुरूरुपत्यकं आदाय गत्या गत्यकृष्टिप्यूम्बं ने निर्मादायेत्वा चुरू रुपत्यक ! पुरत्याभिमुस्ते हुत्वा इस पिछोन्ति रजोहरूप रजोहरूपानि परियजनते इथेव होहािन । इढिया अभिसंबद परिद्रुद्ध पिछोतिक दत्या काले आरोजित निकासपरित्यतो जीवकस्स गेह सन्त्या पट्टानामाने निर्मादी।

चुल्यन्यकोषि मुर्तियं ओलोकेनो ते पिळोतिकाशार्थं रजोहरणं रजोहरणान्व परिमञ्जनतो निमीदि । तस्म ते पिळोतिकाशार्थं परिमञ्जनस्म परिमञ्जनस्म क्लिट्टं आहोति । ततो चिन्तेसि-इद पिजोतिकाशार्थं अतिविध परिमुद्धं, इसे पन अत्याचं निस्साय पुरिमगर्कात विज्ञहिन्दा एवं क्लिट्टं जातं, अनिच्या वन संखा-राति क्षयर्थं पट्टपेन्तो विषस्मतं नहशेति ।

सत्यापि बुल्लपत्यकस्स चित्तं विपस्सनं आरुळ्हािन अत्वा-बुल्लपत्यक ! त्व एतं पिळोतिकासण्ड-मेव सीकिलिट्टं रजोरिज्जतं जातित मा सञ्ज्ञकार, अञ्चलरं पन ते रागरजादयो अत्यि ते हुराहीित बत्बा ओमासं विस्सर्जेत्वा पुरतो निसिन्नो विय पञ्जायमानरूपे हुत्ता हमा गाया अभासि -[१०८]

"रागो रजो न च पन रेणु बुज्बित रागस्सेतं अधिवचनं रजोति । एतं रज विश्वजिद्धवः भिनस्त्रचो विहरन्ति ते विश्वतरजस्स सासने ॥ दोंगो रजो न च पन रेणु बुज्बित दोसस्सेतं अधिवचन रजोति । एतं रजं विष्पजिद्ध्य भिनस्त्रची विहरन्ति ते विश्वतरस्स सासने ॥ मोहो रजो न च पन रेणु बुज्बित मोहस्सेतं अधिवचनं रजोति । एतं रजं विष्पजिद्धवः भिनस्त्रची विहरन्ति ते विश्वतरजस्स सासने ॥" ति

गायापरियोसानं चुल्लपन्यको सह पटिसम्भिदाहि अरहतं पापुणि । पटिसम्भिदाहि येवस्म सब्बानि तीणि पिटकानि आर्गामसु ।

सो किर पुब्बं राजा हुत्वा नगरं पदक्षिणं करोन्ती नळाटती सेदे मुख्यन्ते परिसुद्धेन साटकोन नळाटन्तं पुष्टिखः। साटको किलिट्ठो अहोमि । मो इमं सरीरं निस्साय एवरूपो परिसुद्धो साटको पकति विजहित्वा

१ रो०-विप्पजहित्वा ।

किलिट्ठो जातो अनिश्वा वन संलाराति अनिश्वसम्भां पटिलिभ ।तेन कारणेनस्स रजोहरणमेव पञ्चयो जातो। जीवकोपि लो कोमारभच्चो दसवणस्य दसिवणोदकं उपनामेसि । सत्या-ननु जीवक ! विहारे भिक्खु अत्यीति हत्येन पत्तं पिदहि ।

महापन्थको-ननु भन्ते ! विहारे नित्य भिक्त्यूति आह । सत्या अत्यि 'जीवकाति' आह ।

जीवको~नेन हि भणे, गच्छथ विहारे भिक्खूनं अस्थिभावं वा नत्त्वभावं वा जानाहीनि पूरिसं पेसेसि।

तिस्म खर्णे चुल्लग्यको मध्हं भातिको बिहारे भिक्कुनत्थीति भणति । बिहारे भिक्कुने अल्यिभाव-मस्स पकासेस्सामीति सकलं अम्बबनं भिक्कुनञ्जेब पूरीस । एकच्चे भिक्कु चीक्कम् चीवरकम्मं करोलि एकच्चे रजनकम्मं एकच्चे सञ्झार्य करोत्तीनि एव अञ्जामञ्जा असदिस भिक्कुसहस्म मार्थस ।

सो पुरिसो विहार बहु भिक्कू िना निवनित्वा— अथ्य ! सकल अम्बवन भिक्कूहि परिपुष्णन्ति जीवकस्स आरोजेनि । थेरोपि खो तत्थेव—

"सहस्सक्त्वन् अत्तान निम्मिनित्वान पन्थको ।

निसीदि अम्बवने रम्मे याव कालप्पवेदना ॥ 'ति । [१०९]

अथ सत्थान पुरिस आह-विहारं गन्त्वा सत्या चुन्लपन्थक नाम पक्कोसतीति बदेहीति ।

तेन गल्खा तथा बुने अह चुल्लपन्थको अह चुल्लपन्थकोति मुखमहरूम उट्ठहि । पुरिमो गलबा— सम्बेपि किर भन्ते । चुल्लपन्थकायेव नामानि आह ।

तंन हि त्व गन्त्वा यो अह चुल्छपन्थकोति पठम वदति त हत्थं गण्ह, अवसेमा अन्तरधायिम्सन्तीति ।

मो तथा अकामि । नाबदेव सहस्समना भिक्क् अन्तरभाविष् । थेरो गनेन गुरिमेन मीढ अगमासि । सत्था भलकिक्वारियोशान जीवक आमलीम, जीवक । चुल्लप्रत्यकस्स पन गण्ड । अय ते अनुभादने करि-स्मतीनि । त्रीवको नथा अकासि । थेरो मीहनाद नदल्तो नद्यागीहो विष तीणि पिटकानि मलाभेन्या अनुमोदन अकामि ।

मत्या उद्धायासना भिक्तन्तपर्धारवारो विहार गल्या भिक्तृति वसं दिससं उद्धायामना गण्य कृटिप्यमुलं उत्या भिक्तृत्यस्य मुगतीवाद दत्या कम्मद्धान कथेत्या भिक्तृत्य उत्योशेत्वा सुर्गिमनप्यवासवा-तित गण्यकृटि पविसित्या दिस्यणंन गरमेस सीहसेय्य उपगतो । अय सामण्डसमये थ मममभाय भिक्तृ इनो जितो स समोमसित्या रनकस्याणां परिनिक्तान्ता विवि निर्मादित्या मन्युगुक्तम आर्गिममु-आवृगी! महाप्ययो स्वन्तप्यस्य अस्माम्य अत्यानन्तो चतुर्हि मामेहि एक गाय गणिहतुं न मक्कीनि दत्यो अर्यान विहारा निक्क-इति । समामास्य हो पन अतनो अनुन्तप्यमराजनाय गुक्तिम येवस्य अन्ताभन्ते महर्पाटमण्यित्राहि अरहत्त अदासि । तीणि पिटकानि दस पटिनीम्मदाहि येव आगनानि । अहो बुढान वल नाम महन्तन्ति ।

अय भगवा धम्मसभाव इम कथापवृत्ति जत्वा अज्ज मया गन्तु वह्टतीति बृद्धमध्याय उट्टाय मुरत्तदुष्ट्ट निवासेत्वा विज्ञहरूना विय कायबन्धन बन्धित्वा एत्तक्ष्यक्रमादेस मुत्तमहाचीवर पार्टापत्वा मुर्दिमतम्बक्टीटनो निवक्षम्म मत्तद्वारणसीहिविककत्विकासेत्रम् अन्तताय बृद्धकीह्म्स्य धम्मसभं गत्त्वा अकत-तत्वकृष्वसभ्यं मुगञ्जन्तदर्दुद्धास्म अभितृष्ट् एक्क्बणबृद्ध-मियो विम्यजन्तो अक्ववकृष्टि श्रोभासयमानो मुनस्यम्बस्यके बाक्नुरियो विय आसनमञ्जे निर्मादि ।

सम्मासम्बुद्धै पत्र आपतासने भिक्कुसघो कथ पिच्छिन्दावा तुष्कृी अहोमि । सत्या सुदुक्ते मेत्तवित्तेन परिस ओलोकरेवा अब परिसा अतिवित्य सोभति एक्सप्ति द्रत्यकृष्ठच्य वा [११०] पादकुकुरूच्य वा उक्का-सितसहो वा विधिनसहो वा नित्य सत्वेषिमं बृदुगारलेन सगाय्या बुदर्गनेन तिच्या मिष्य आयुरूप्याध्य अकर्षेया निश्चित्र पटम कथ सम्दर्शारेवा न कर्षसम्बित क्यासम्दर्शायनस्त नाम भयाव जानितस्त्य अहमेस पटमं कप्येस्सामीति मधुरेन ब्रह्मस्तरेन भिक्क् आमन्तेत्वा काय नृत्य मिक्कवे ! एतरिह कथाय सिप्तसिक्षा का चपन वो अन्तरा कथा विष्पकताति आह ।

भन्तं ! न मयं इमस्मि ठाने निसिम्ना अञ्ज तिरच्छानकथं कथेम, तुम्हाकं येव पन गुणै वच्णयमाना निसीक्षम्हा–आवुमो महापन्यको चुल्जपन्यकस्स अग्झासयं अजानन्तो – पै– अहो बुद्धानं बळं नाम भहन्तन्ति !

सत्या भिक्कुनं कथ सुरवा—-भिक्कथे ! चुन्छपत्यको मं निस्ताय इदानि ताव धम्मेमु धम्ममहन्तं पत्तो, पुरुषे पन मं निस्ताय भोगेसुपि भोगमहन्त पापुणिति आह ।

भिक्त तस्तत्थस्स आवीभावत्य भगवन्त याचिस् । भगवा भवन्तरेन पटिच्छन्न कारणं पाकटं अकासिः-

अतीतवस्य

पुन एकरिस बानबुद्धिदिवसे राजुम्याने बहू सुक्यदण्डका व साखा च पळासञ्च बातेन पीनन होति। उच्यानपाळो छड्ढेनु उपायं न परसति। सो तत्वागन्त्वा-सचे इमानि दारुगण्णानि [१११] सब्ह दस्सप्ति अह ते इसानि सब्बानि नीहरिरसमाभीति उच्यानपाल आहू।

सो गण्ह अय्यानि सम्पटिच्छि ।

चुरुकतेवामिको दारकान केक्षिमण्डक गन्त्वा फाणितं दत्वा मुहुनेन मन्त्वानि दारुगण्यानि नीहरा-पेरवा उपयानद्वारे राप्ति कारीस । तदा राजकुरमकारो राजकुकाने भाजनानं पवनत्वाय दारुति परिसमानो उपयानद्वारे तानि दिखा तस्स हरवतो विकासणित्वा गण्डि । ते दिवसं चुन्कतेवासिको दारुविकस्य मोळम कहारणं वादिआदीनि व पञ्च भाजनानि किंग । सां चतुर्वेसतिया कहारणंषु वानेसु अस्य अयं उपायो मञ्हान्त नगरद्वारतो अविदूरद्शने एकं पानोयबादि ठरेत्वा पञ्चमतं निष्कहारकं पानीयन उपर्वहि ।

ते आहंसु-त्वं सम्म, अम्हाक बहूपकारो कि ते करोमाति ?

सो-मर्व्ह किच्चे उप्पर्के करिन्सथानि बत्बा इतो चित्रो च विचरन्तो धलपथकस्मिकेन च जलपथकस्मि-केन च सर्द्धि मित्तसन्थयं अकासि ।

तस्स थलपपकस्मिको-स्वे इमं नगरं अस्सवाणिजको पञ्च अस्ससनानि गहेत्वा आगमिस्सतीति आविक्ति ।

सो तस्स वचनं मुत्या निणहारके आह, अञ्ज मय्हं एकेकं निणकलापं देथ मया च निणे अविक्किण-ते अत्तनो निणं मा विक्किणाथानि ।

रो०-बुल्लकः। २ रो०-वययसो । ३ स्या०-राजकुलालभाजनानः।

ते साधूति सम्पटिच्छित्वा पञ्चितणकलापमनानि आहरित्वा तस्म घरढारे पार्नायमु ।

अस्मवाणिजो सकलनगरे अस्मानं गोचरे अल्प्रिस्वा तस्य महस्सं दल्वा ने निर्ण गण्डि । किनगहरूब-येतस्य जल वक्तिस्मकसृद्यको आरोपेसि पुन महानावा आपवाति। मो आस्य अय उवायोगि अर्ट्राह हस्त्राणीह, सक्वपितासस्यक्षं ताव्वाणिकरं पहेल्ला सहले चलेना नावापट्ट ने सल्वा एक आंत्रिस्त हर साविकस्य सक्त-कारं दल्वा अबिद्गर्ट्टानं साणि पिनिक्वपापेत्वा निसिक्षो पुरिसे आणविम, बाहिन्वाणिवनु आगतेनु तिनयेन रिह्मारेन आरोपेवाति । तावा आगताति मुख्य बागणिवनी नन्यमा वाणिका प्रच गण्डामानि आर्गासमु । सन्द तुन्हेन लिपिस्सा अनुकट्टानं नाम महावाणिवेन सन्वकारी दिशीति । ने त नृत्वा तस्य मनिक आगता। वारमृक्तिकपुरिया पुरिस्सव-आवनेन तिनयेन पिहारिन नेमं आगत्रावा आरोपेन् ।

ते सतमत्तापि वाणिजा एकेक सहस्स दत्वा तेन सद्धि नावाय पत्तिका हुस्वा पुन एकेक सहस्स दत्वा पत्ति विस्तरजापेत्वा भण्ड अत्तनो सन्तर्क अकंस् । [११२]

चुन्लन्तेवासिको हे सत्तसहस्मानि गण्डित्वा बाराणीन आगन्त्वा क्तज्जुना से शवितु बट्टतीनि एक सत्तमहस्म गाहायेखा चुन्लकमेट्डिस्स समीप गर्ना । अथ न सेट्डि- किन्ते जान ! करवा इद घन लढित्त पश्चिष्ट ।

मो-नुस्हेहि कथित बाये ठत्या चतुमासः भन्नरेयेव रुउन्ति, मतशृक्षिक आदि कस्त्रा सब्ब पर्यात कथेमि ।

च्हरजकमहामेट्ठि तस्स वचनं मृत्वा न इदानि एवरूपक दारक परमन्तक कानु वट्टनीपि वयप्पत्त अत्ततो बीतर दत्वा सकलकुट्टुब्दस्य सामिक अकामि ।

मो सेट्टिनो अवनयेत तस्मि नगरे सेट्टिट्ठान लिम । बोधिसलोपि यशकम्म अगमासि । सम्मा-सम्बद्धोपि इम बम्मदेसन कथेत्वा अभिसम्बद्धोव इम गाथ कथेसि-

"अप्यकेनपि मेघाबी पाभनेन विश्वक्षणो । समुद्रापेति अत्तानं अणं अभ्यिव सन्धमन्ति ॥"

तस्य अप्यक्तियोति थोकेनारि परित्तंकर्तारि । भेषाबीति पञ्चावा । पाभतेतानि भण्डमूलेन । विववस्य-णीति बोहारकुमलो । समुष्टुपरित असानतित महत्त्व यन च वम्यन्य उपादेत्वा तत्त्व अनान मण्डेपित रितर्ट्या-पेति । यता कि ? अणुं अस्पित सम्बन्धति वया पण्डिनो गुरियो परिनक्त और्गा अनुकर्त्वन गोमयङ्कणादीति पत्तिवारिता मुख्यातेन चमन्तो समुद्दार्थित बहुदेति गहुन्त अस्मित्तम्य कर्रोति । एवमेव पण्डिनो बोह्यांग्रिया पाभन क्षित्रवा नानाज्ञायिहि प्रयोजेखा यत्तम्य सम्बन्ध उपादेति बहुदेति बहुदेखा च पत्त नन्य तत्रस्य आना पत्तिद्दार्थित नाम एव बा पत्त चनसमहन्तनाय असानं समुद्दार्थित असिन्छान पागट करोनीति अरथे ।

इति भगवा भिक्त्यवे ! चुन्जपत्यको म निस्साय इदानि धम्मेनु धम्ममहत्तन गर्ना, पुत्वे पत्र भाँगेमुपि भोगमहत्तन यममहत्तन पापुणीति एव इस धम्मदेवन स्मेनवा ई वन्त्र्मित कथेत्वा अनुसन्धि घटेत्वा आतक समीधानेमि । गदा चुल्लनेवामिको चुन्लग्नवको अहोमि चुन्जकमहामेट्यो पत्र अहमेव अहोमिनि देसन निदर्शिक्ष ।

चुल्लकसेट टिजातक

४ तण्डलनालिजातकं

किमन्धति तण्डलनालिकाति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो लालुदायित्येरं आरब्भ कथेसि

पञ्जूपश्चवस्य

र्नास्म समये आयस्मा दख्यो मस्लपुतो संघस्स मन्दुरेसको होनि । तस्मि [११३] पातोव सलाक-भत्तानि उद्दिसमाने लालुदायित्वेरस्स [।] कदाचि वरभत्त पापुणाति कदाचि लामकभन्त । सो लामकभनस्म पत्तिद्वेसे सलाकणा आकृतं करोति— कि दब्बोव सलाकं दातुं आनाति, अन्हे न ब्रानामातिपि वदति ।

त्तिदिवसे सलाकरण आकुलं करोति– कि दब्बोब सलाकं दातुं जानाति. अस्हे न जानामातिपि वदित तस्मि मलाकरण आकुल करोस्ते– हन्द दानि त्वसेव सलाक देहिति सलाकपच्छि अदसु।

अय नं भिल्नू आवृक्षो लालुदायी ! लेला नाम हेट्ठा वा होतु उपरिवा वरभत्त पन असुकवस्मस्ये ठिन लामकभत्त असुकवस्मर्योति आहम् ।

सो भिनल् पटिप्करनो यदि एवं अय लेला कस्मा एवं ठिना, कि अह नुस्हाक सहहामि इमिन्सा लेलाय सहहामिनि वदनि ।

अथ न दहरा च सामणेरा च – आवृत्तो लालुदायि । तिय सलाक देश्ने भिवत्वृ लाभेन परिहा-यन्ति । न त्व दातु अनुच्छविको, निम्मच्छ दनीति सलाकम्मती निक्कड्डिमु।

तिस्म खणे सन्तकस्यो महस्त कोलाहरू अहोमि । त मुख्या सथ्या आनन्दत्थेर पुष्छि— आनन्द [।] सलाकस्यो महस्त कोलाहरू, कि महो नामेसोति ?

थेरो तथागतस्स तमत्थ आरोचेनि ।

आनन्द ! न इदानेव लालुदायी असनो बालनाय परेम लाभहानि करोति, पुब्बेपि अकासि येवानि आह् ।

थेरो तस्सत्यस्म आविभावत्य भगवन्तं याचि । भगवा भवन्तरेन पटिच्छश्चं कारण पाकट अकासि-

अतीतबस्य

अनीने कासिन्द्रे बाराणसिपं ब्रह्मदक्ती राजा अहोसि । तदा अस्हृत्वं बोधिसत्तो तस्स अध्यक्षारको विश्व स्वादित्तं, हिल्थअस्यादीनि चेव श्रीमुक्त्यादीनि च अध्यादेति । अध्यादेत्वा भण्डसामिकानं भण्डानुरुपमेव मूळं दावेति । राजा पन लुडो होनि । यो लोभपकतिनाय एवं चित्तंने स्वादेत्वा पांच अध्यादनको एवं आध्यादेत्वा ति चित्तस्वेत मा । हे पर्व गायिक्ता प्रकार अध्यादनकं कर्तरस्वासामित । सो सीह्यक्तर्व उत्यादेत्वा राज्यंगणं ओलो-केत्तो एकं गायिकमनुस्यं लोलडाल गायेल्येन गायुक्तं दिस्त्वा एस गायहं अध्यादनकस्य कातु सम्बन्ध्यतीति द्यं चक्कोमायेत्वा समिक्तस्यान अले । अस्त्राकं [११४] अध्यादनिककस्य कार्तुस्त अहि ।

सक्लिस्सामि देवाति ।

राजा अत्तनो धनरक्कणस्थाय तं वालं आघापनिककस्मे टर्गस । ततो पट्ठाय सो वालो हृत्यिअस्मा-दीनि अप्यापेन्तो अप्ये हापेस्वा ययारुचिया कथेति । नम्म टानन्तरे टिनतार्य सो कथेति तसेव सुलेहोति ।

तर्सिम काल उत्तरापथतो एको अम्मवाणियो पञ्च-अम्मसतानि आनेसि । राजा तं पुरिनं पक्को-सापेत्वा अस्से अप्यापेति । मो पञ्चनं अस्मानानं एकं तण्कुलनाठिक अध्यमकानि, करवा च पन अस्सवाणिजस्स एकं तण्कुलनाठिकं देशाति बस्वा अस्से अस्मागालाय सण्यापेति ।

अस्मवाणिजो पोराणकअग्धापनिकस्म सर्मन्तकं गन्त्वा तं पर्वांस आगोचेत्वा इदानि कि कलस्वनिन पच्छि ।

मो आह -तस्स पुरिसस्स नञ्जं दत्वा एवं पुक्छप 'अम्हाक ताव अस्सा एक तथ्युठनाळिक अम्य-ग्तीति, आनमेर्व, तुन्दे एन तिस्माय तण्डुठनाळिया आम्य ज्ञानिकुक्तमोसिट्ट। मध्यस्यय वो गञ्जो सानिके ठत्वा सा तष्टुठनाळिका दर नाम अमयतीति वन्तिन ? मचे सबकोगीनि वदनि त गहेत्वा रच्छो सन्तिक गच्छय। अञ्चीम्य तत्व आगिमस्सामीति।

अस्मवाणित्रो माधूनि बोधिमत्तस्य वनन सम्पर्टिच्छित्वा अग्धापनिकम्स लब्ब्बं दत्वा तमत्य आरोचेसि ।

सो लञ्चं लभित्वा- सनिग्वस्मामि नण्डलनालि अग्यापेतन्ति ।

तेन हि गण्डाम राजकुलिन ते आदाय र्यन्त्रा सिलक अगमासि । बोधिसनोगि अञ्जोगि बहू अमच्चा अगमम् ।

अस्सवाणिजो राजान विन्दित्वा— अह देव । पञ्चम्न अस्ममनान एक नण्डुलनालि अध्यनभावं जानि, मा पन तण्डुलनाळिका कि अध्यनीति अध्यापनिक पुच्छय देवानि ।

राजात पर्वात्त अज्ञानन्तो अस्भो अग्वापनिक ! पञ्च अस्ममनानि कि अग्वस्नीनि पृच्छि ।

तण्डुरुनाळि देवाति । होत् अर्च ! पञ्च अस्मसना नाव तण्डुरुनाळि अप्यन्तु, सा पन किमायित तण्डुरुनाळिकाति पुच्छि । मो बालपुरिमो— बारार्णाम मन्तरबाहिर अप्यति तण्डुरुनाळिकाति आह ।

सो किर पुत्र्वे राजान अनुवसेन्तो एक मालिनाडुलनाळि अस्मानं अस्य अकामि, पुन वाणिजवस्स हत्यनो लञ्च लमित्वा नस्मा नण्डलनाळिकाय बाराणीम सन्तरबाहिर अध्यमकामि ।

नदा पन बाराणसिया पाकारपरित्वेषो हादसयोजनिको होति । इदसम्सा अन्तर बाहिर पन नियो-जनसनिक एटठ इति सो बालो एव महत्त बाराणीम सन्तरबाहिर नण्डुग्टनाळिकास अन्य अकासि ।

त सत्वा बोधिमत्तो पुच्छन्तो इम गाथमाह-

त मुख्या अमस्या पाणि पहारित्वा हसमाना-मयः पुख्यं पठिवन्त रज्जन्य अनायन्ति सिन्धनो अहुन्हा एव महत्त्व किर भराजक बाराणिवरज्ज तण्डुलनाद्धिमन अग्यात अहो अप्यापनिकस्स पञ्जासम्पदा । कह एनक कालं अय अप्यापनिको ठिनोवि ? अन्हाकः रञ्जो एव अनुन्धिविकोति परिहास अकन् ।

र्नाम्म कार्ले राजा लिज्जितो न बाल निककदृश्येत्वा बीचिमनास्मेव अप्यायनिकट्टान अदामि । बोचिस्तनीयि यवाकसम नती । मस्या इसं धम्मदेशनं आहरित्वा दस्मेत्वा ३ जन्भनि कथेत्वा अनुसांध घटेत्वा जातकं सभीवानेमि । नदा गामिकदालअय्यायनिको लोटुरायी अहोमि परिकटनय्यायनिको अदमेव अहोसिनि इसमे निकटलेपि ।

तण्डलनाळिजातकं

६. देवधम्मजातकं

हिरिओक्तप्यसम्बन्धाति ६६' भगवा जेनवने विहरन्तो अञ्जतरं बहुभण्डिक' भिक्ल् आरक्भ कथेसि । यच्चपक्षवरथु

सावित्यवासी किरेको कुटुम्बिको अरिवाय कालकताय पश्चित । सो पश्चवनतो अतनो परिवेणञ्च अगिसालञ्च भव्यवस्थल कारित्या प्रथमको सीप्यतपकुलादीहि पूरेत्या पत्वजि । पश्चवित्वा पत्र अतनो दासे पनकोताथेत्या यवारचित्त आहार पत्रापेत्वा भुञ्जित बृद्धगिनकारो च अहोसि । रास्ति अञ्चो निवासन-पारुण्य होति दिवा अञ्च । बिहारपण्यत्ते वसति ।

नस्मेकदिवस चीवरपञ्चत्थरणादीनि नीहरित्वा परिवेण पत्थरित्वा सुक्वापेन्तस्स सम्बद्धला जान-पदा भिक्व सेनासनवारिक आहिण्डन्ता परिवेण गत्त्वा चीवरादीनि दिस्वा कस्सिमानीनि पृण्छिमु ।

सो मय्ह आवुसोति आह ।

आबुसो ! इदस्पि चोवर इदस्पि चोवर इदस्पि निवासन इदस्पि निवासनं इदस्पि पच्चत्यरण ६दस्पि पच्चत्यरणं सब्बं तृथ्हमेवानि ?

आम मय्हमेवाति ।

आबुसी ! नन् भगवना तीणि बीवरानि अनुरुशातानि, त्वं एवं अप्तिच्छस्म बृद्धस्म सामने पञ्च-जित्वा बहुपरिनवारो जातो । एहि न दसवरुस्स सन्तिक नेस्सामानि तं आदाय मत्यु सन्तिक अगमगृ ।

सत्या तं दिस्वाव किश्नुको भिक्तववे । अतिच्छमानक येव भिक्तव् गण्हित्वा आगतन्थानि आह्।

भन्ते । अथ भिक्क बहुभण्डो बहुपरिक्लारोति ।

सच्च किरत्व भिक्क्ष्युं बहुभण्डोति ?

सङ्क भगवाति । [१९६] कस्मापन द्व निक्कृ बहुभण्डो जातो ? ननु अहं अस्पिक्छनाय मस्तुर्हिया पिववेकस्म विरियार-स्नस्य वर्ष्ण वदासीति ।

सो संत्युववनं मुख्या कुपितो इमिनादानि नीहारेन चरिस्सामीति पारुपनं छड्डेस्वा परिसमन्धे एकजीवरो अटरासि ।

अयं न सत्या उपश्य-भयमानी-नानु त्य भिक्क्षु । पृथ्वे हिरोत्तप्यग्वेमको दक्रण्यस्यानाशेलि हिरो नप्प गर्वसमानो द्वादस स्वच्ळगति बिहामि ? अयं कस्मा इदानि एवं गक्के बुद्धमासने पञ्चितत्वा चतुर्गासमस्रे पारुपणं छर्दकेवा हिरोनाप्प पहाय हितोसीति ?

सो सत्युवचन मुन्दा हिरोत्तप्प पच्चुपट्ठाभेट्वा तं चीवरं पार्हपित्वा सत्यार विस्त्र्वा एकमन्त निर्साद । निवचू तस्मत्यस्म आवीमावत्य भगवन्त याचिमु । भगवा भवन्तरेन पटिच्छत्रं कारण पाकट अकासि.–

अतीतवत्यु

अतीतं कासिरट्टे बाराणसियं बृह्यदत्तो राजा जहाँसि । तदा बोधिसतो तस्य अग्ममंहीमया कुण्धि-स्मि पटिवस्थि गर्मितः । वा दसमासेषु परिवर्षणे पुना विश्वादि । तस्त तासग्रवणदिवसे महिसामकुमारीन ।तम् अकंगु । तस्त आधानित्वा परिधानित्वा विचरणकाले रङ्गो अञ्जोपि पुनो जाते। तस्त चन्दकुमारोनि नाम अकंगु । तस्त पन आधानित्वा परिधानित्वा विचरणकाले बोधिसत्ताता कारुमकासि ।

राजा अञ्ज अग्गबहेसिट्डाने ठपेसि । सा रञ्जो पिया अहोसि मनापा । सा पियसंबासमन्वाय एक पूर्त विजायि । मुरियकुमारो निस्स नाम अकंबु । राजा पुत्त दिस्वा तुट्ठिचतो-भद्दे । पुतस्स ते वर दम्मीनि आह् । देवी वर' इच्छितकारु गहेनब्बं करबा ठपेमि । सा पुने बबंध्यने राजानं आह्—देवेन मध्हं पुनस्स जातकार्ले वरी दिक्षों, पुतस्स में रज्ज देहीति ।

राजा मर्क्स दे पुता अगिमस्त्रम्था विय जलमाना विवयनित, न मस्का तव पुत्तस्त रज्य दातुनि पिटिस्विपरवा त पुनप्पुन याचमानमेव दिस्वा 'अयं मर्क्स पुत्तान' पापकमित्र विन्तेव्याणि' पुने पक्कोसाधेत्वा आह्-नाता ' अह मुरियकुमारस्य जातकाले वर अदासि । इस्रोनिस्स माना रज्य याचनि । अह तस्स न दातुकामो । मातुनामो नाम पापो, नुम्हाक पापकमित्र विन्तेय्य । तुम्हे अरम्भ पविस्तित्वा ममक्वयेन कुलसन्तके नगरे रज्य करेय्यापाति 'रोदित्वा कनिवत्वा सीवे चिन्नव्वा उत्योजिम ।

ते पिनरं बन्दित्व पासादा ओरोहत्ते राजंगमें कीळमानो सुग्यिकुमारोपि दिस्ता त कारणे ज्ञात्व । अहीम्य भागिकेडि सर्वि ग्रासिसामोति तेहि सर्वि वेत निक्सीम । ते हिमबन्त पर्विस्ति । शोधिसतो मणा ओक्तम्म क्ष्यिस्त्रम् । विभिन्नित्ति । तुर्वि । एक मर गन्त्वा नहात्वा च पिविस्ता च पर्विस्ता व प्रश्निनित्यणेडि अमहाक्तिय पानीय आनेहीनि ।

न पन सर बंदसबणस्य सन्तिका एकेन दक्तरक्ष्यमेन छढ़ होति । बेस्मवणी च न आह्— ठपेरवा देवधस्भजाननके ये अञ्जेष्टम सर बोतरन्ति ते खादितु क्रमंसि । अनेतिण्णे त क्रमंगीति । तनी पद्छाय सी रक्ष्यंगी ये न सर बोतर्रान्त नै देवधस्मे पुच्छित्वा ये न जातन्ति ते खादिति ।

अय स्वो मृत्यिकुमारो न मर गल्या अक्षीप्रसिन्याव ओनिर । अघ न सो रक्ष्यसो गहेत्वा देवघम्मं जानामीनि पुण्छि । सो देवधम्मो नाम चन्दमुरियानि आह । अय न त्व देवधम्मे न जानासीनि उदक पर्वेसेत्या अननो वमनटठाने ठोमि ।

बोधिसत्तोषि त विरायन्त दिस्वा जन्दकुमार पेसेसि । रक्कसो नस्यि गण्हिल्बा देवधम्मे जानासीति पुच्छि ।

आम. जानामि । टेवधम्मो नाम चतस्सो दिसाति ।

रक्षमा न ख देवधम्मे जानासीति तम्यि गहेल्बा तत्थेव ठऐसि ।

बोधिमनो तस्मिष्य चिरायनो एकेन अन्तरायंन भवितव्यन्ति सम तत्थ गत्त्वा डिन्मीम्प ओनरण-पदक⊘ व्ये दिन्या स्कमपरिस्माहितेन हीमना सरेत भवितव्यन्ति समो सन्तिव्ह्वा धनु गहेत्वा अट्ठांस । उदकर-चन्नाो बोधिमनं उदके अनेतरन्ते दिस्ता वनकीम्मकपुरिमो विय हुत्वा बोधिसत आह_ भो पुरिस । त्वं सम्माकिञ्नो कस्मा इमं मर ओनिल्या नहायित्वा पिवन्या भिममुकानि खादित्वा पुण्कानि पिञन्यित्वा या-मुखं न मक्कोत्ति ?

```
बोधिसत्तो त दिस्वा एम मो यक्को भविस्सतीति अत्वा-तया में भातिका गहिताति आह ।
आम मयाति ।
किकारणाति ?
आहं इमं सरं ओतिष्णके लभामीति ।
कि पत सब्धेव लभामीति ? ये देवधम्में जातित ते उपेत्वा अवमेमे लभामीति ।
अत्यि पत ते देवधम्में हिल्लोति ?
आम जरिय ।
यदि एवं अहुँ तै देवधम्में कथेस्तामीति ।
तेनहि कथेहि अहुँ तद्वधम्में स्थिस्तामीति ।
```

बोधिससो अहं देववम्मे कथेव्यं किलिट्ठगसो पनम्हीति आह ।

यक्को बोधिससं नहापेत्वा मोजन भोजेत्वा पानीयं पायेत्वा पुष्कानि पिळत्वापेत्वा गण्डेहि विकि-प्रापेत्वा अकंदतमञ्जूपरको पत्ककं अत्परित्वा कवाति । बोधिकतो ज्ञावनं निसीवित्वा यक्क पादमूखे निसीदा-पेत्वा तेनहि जोहितवोजो सक्कन्यं येवचन्ये कुणाहीति इमं गायमाह-

"हिरिजोत्तप्यसम्पन्ना सुक्कथम्मसमाहिता ।

सन्तो सप्पुरिसा लोके वेवधन्माति बुक्वरे।।" ति ।

तत्य **हिरिओक्तप्वसम्बन्धात** हिरिया च ओक्तप्येन च समझागता । तेनु कायवुष्चरितादीहि हिरी-यतीति हिरि । लज्जावेतं अधिवचनं । तेहियेव ओक्तप्यतीति जोक्तप्यं । पायतो जब्जेमस्सेतं अधिवचनं ।

तस्य अञ्चलसमूट्ठाना हिरि, बहिद्वासमूट्टानं बोलप्पं । अलाधिपतेच्या हिरि, लोकाधिपतेच्यं बोलप्पं । लञ्जासमावसण्टिता हिरि, भयसभावसण्टितं जोलप्पं । सप्पतिस्मवलक्खणा हिरि,वज्जभीरुकभय-दस्सावीलक्खणं बोलप्पं ।

तत्व अन्यतसमृद्धानं हिर्दि चतुष्टि कारणेहि समुद्धापेति (१) जाति पञ्चवेक्कित्वा, (२) वर्ष पञ्चवेक्कित्वा, (३) सूरभावं पञ्चवेक्कित्वा, (४) बाहुसञ्चं पञ्चवेक्कित्वा ।

कर्ष ? पापकरणं नामेतं न जातिसप्यक्षानं कम्मं। हीनजच्चानं केवहटादीनं इदं कम्मं। तादिसस्स जातिसप्यक्षसः इदं कम्मं कातुं न यूनिला। एवं ताव जानि पच्चविक्तत्वा पाणातिपातादिपापं अकरोत्ता। हिरि समृद्दापेति। तथा पापकरणं नामेतं इहरेहिं कत्तव्यकस्मं। तादिसस्य वयं ठितस्य इदं कम्मं कातुं न यूनिला। एवं वर्ष पच्चविक्तत्वा पाणातिपातादिपापं अकरोत्ता हिरि समृद्दापेति। तथा पापं नासेतं दुब्बल्यातिकानं कम्मं। तादिसस्य सूरभावसम्पक्षस्य इदं कम्मं कातुं न युनिला। एवं सूरभावं पच्चविक्त्वता पाणातिपातादि-पापं अकरोत्ती हिरि समृद्दापेति। तत्वा पापकम्मं नामेतं अन्यवालानं कम्मं न पण्डितानं। तादिसस्य पण्डितस्य बहुस्युतस्य इन्मं कातुं न युनिला। एवं बाहुसच्चं पच्चविक्तत्वा पाणातिपातादिपापं अकरोत्ती हिरि समुद्दापेति।

एवं अव्यक्तससमूट्ठानं हिरि बतुहि कारणेहि समुट्ठापेति । समुट्ठापेत्वा च पन असनो चित्ते हिर्दि पवेमेत्वा पापकम्मं न करोति । एवं हिरि अव्यक्तसमूट्ठाना नाम होति ।

कर्य ओत्तप्पं बहिद्धासमृद्धानं नाम ? सर्चे त्वं पापकम्मं करिस्मसि चतुसु परिसासु गरहप्पक्तो भविस्ससि—

"गरहिस्सन्ति तं विञ्ञू असुन्ति नागरिको यथा । विविज्जितो सीलवन्तेहि कथं भिक्क्षु करिस्ससी ॥" ति ।

पञ्चवेक्खन्तो हि बहिद्धासमूर्यञ्जेन श्रोतप्पेन पापकम्मं न करोति । एवं श्रोत्तप्पं बहिद्धासमुर्यानं नाम होति ।

कर्ष हिरि अत्तापिपतेय्या नाम ? इषेकच्चो कुलपुत्तो अत्तानं अधिपति वेट्डकं कत्वा तादिसस्स सद्धानव्यांजनस्य बहुस्तुस्तस्य पुत्रवास्तित न युत्तं पापकम्यं कार्तुत्त पापं न करोति । एवं हिरि अत्ताधिपतेय्या नाम होति (तेनाह भगवा- "सो अतानं येव अधिपति कत्वा अकुसक्तं पबहुत्ति [१९९] कुसकं माचेति सावव्यं पजहाति अववर्ष्यं भावेति । युद्धं अतानं परिहृद्धति" ति"।

कथं ओल्लपं लोकाधिपतेय्यं नाम ? इधेकच्चो कुलपुली लोक अधिपति जेट्टकं कत्वा पापकम्मं

१ अंगुसर, तिकनिपात ।

त्र करोति । ययाह- "महा वो पनायं लोकसित्रवासो तस्मि को पन लोकसित्रवासे सीना समयबाह्यणा इदिमत्त्री रिक्ष्यवस्तुक परिवासिद्दुनो । वे दूर्नापि परसान्त आसभीप परसान्त वेतसापि विस्तं पत्रावन्ति । तेषि ये पर्व अमित्वस्त्रिक परस्व भी ! इमं कुण्युतं सद्धाय अमारस्मा वन्तापित्यं स्वजितो समानो बोक्तिणां विहरित्
पापवेद्वि बङ्गक्लिहि पमेहीति । सीन्त ये बना इद्विमानित्तयो दिव्यवस्त्रका परिवासिद्विन्तियो । ता दूर्तापेष परस्वित्व बङ्गक्लिहि पमेहीति । सीन्त ये बना इद्विमानित्तयो दिव्यवस्त्रका परिवासिद्विन्तियो । ता दूर्तापेष परस्वित्व आसभीप परसन्ति वेतसापि विस्तं पत्रानितः । तापि मं ज्ञातिस्वति परस्व भी ! इमं कुण्युतं सद्वाय अगारस्मा अनगारियं पश्चितवो समानो बोक्तिणो विहरित पापकंदि अकुसलेहि पम्मेहीति । सो लोकं येव अभिप पर्व करित्व अकुसले पत्रहति कुसलं भावेति सायव्यं पत्रहति अनुस्वज्ञे भावेति मुद्धं अनानं पत्रिहस्ती । ति ।

सञ्जासभावसण्टिता हिरि, भवसभावसण्टितं ओत्तप्पत्ति । एत्व पन लञ्जाित लञ्जनाकागो तेन सभावेन सण्टिना हिरि । भवन्ति अपायभयं ' तेन मभावेन सण्टिनं ओत्तप्पं । तदुभयिप पापपित्वज्जने पाकटं होति ।

एकच्चो हि यथा नामको कुलपुनो उच्चारपस्मावादीनि करोत्तो लज्जितस्वयुत्तकं एकं दिस्वा लज्जनाकारप्यत्तो भवेय्य हीनितो एवमेथं अञ्चलं लज्जिधमं ओक्कमिन्दा पापकम्मं न करोति। एकच्चो अपायभयभीकको हत्वा पापकम्मं न करोति।

त्तिवरं जोपम्मं । यथाहि द्वीसु जयोगुळेमु एको सीनलो भवेय्य गुवमिक्सतो एको उच्छो जाहिसो । तत्व परिडवो सीनलं गूपमिक्सतता जिनुक्कतो न गच्छाति इतरं ब्राह्मयेन । तत्व सीतलम्म गूममिक्सतस्स विजुच्छाय अगण्हनं विच जज्जतं लिज्ज्यममं ओक्कमित्वा पापस्स अकरणं, उच्हस्स हाङ्गभोन जगण्हनं विच जगायमयेन पापस्स अकरणं वेदितस्यं ।

सप्यतिस्मवलक्षणा हिरि वज्वभीवक्षभयदस्माविलक्षणं भ्रोतप्यत्ति । इदीम्य इयं पायपरिवज्यते येव पाकटं होति । एकच्यो हिर् (१) जातिसहत्तपच्चवेकस्या, (३) सद्यव्यवहत्तपच्चवेकस्या, (३) दायज्वसह-त्तपच्चवेक्सणा, (४) सब्बाबारीमहत्तपच्चवेकस्याति चतुर्हि काप्योहि सप्यतिस्सवलक्षणं हिरि समुद्रदोरावा पायं क करोति । एकच्यो (१) अलानुवादस्थं, (२) परम्तुवादस्थं, (३) दण्डस्थं [१२०](४) दुम्पतिभयित् चतुर्हि कार्य्योह वज्यभीक्कभयदरसाविलक्ष्यणं अोतप्यं मसुद्रदारेचा पापं न करोति । तत्त्व जातिमहत्तपच्च-वेक्सवादीति येव अलानुवादस्थादीति च वित्यारेखा कवैतब्बानि । तेसं वित्यारों अंगुत्तरट्ठकपायं दूतीः।

कुक्कयस्मतमाहिताति इदमेव हिरोन्त्यं आदि करवा कृत्यता कुम्ला घम्मा सुक्कयस्मा नाम । ते सब्बमंगाहक्तयेन चनुसूमिकलोकियणोष्टुत्तरसम्मा । तेहि समाहिता समझागताति अत्यो । सत्तो सखुरिसा लोकेति कासकम्मादोनं सम्ताता सत्तो । कतन्त्रकृतवेदिताय सोमनपुरिसाति सप्पुरिसा। छोको पन संसारलोको सत्त्रकोको ओकासलोको सम्बचको आयननलोको चातुलोकोति अनेकवित्यो । तत्य, एको लोको सब्बे सत्ता आहारद्शितका—ने---अर्टासलोका अर्टास्थायुर्जानि एत्य समारलोको वृत्तो । स्वय्लोकादयो तदनो-गया येव । अयं लोको परलोको देवलोको मन्सम्यकोकोति आदिसु पन सनलोको वृत्तो ।

> "यावना चन्दिममुग्या दिसा भन्ति विरोचना । नावना सहस्मधा लोको एत्य ते बत्तनी बसो ॥" ति ।

्रत्य ओकासकोको हुनो । तेषु इथ तनकोको अधियोतो । सनकोकिम्म हि येव एवक्या स्वयुरिसा ते देवधम्माति बृष्यरे । तत्य देवानि सम्मृतिदेवा ज्यापिदेवा बिष्मुद्धिवेवानि निविधा । तेषु महासम्मतकावतो पट्ठाय कोकेने देतित सम्मतता रावदावकुमारादयी सम्मृतिदेवा नाम । देवकोके उपस्रा उप्पत्तिदेवा नाम । स्वीवासवा विद्युद्धियेवा नाम । बुन्मिय चेते "सम्मृतिदेवा नाम गवानो देवियो कुमारा च । उप्पत्तिदेवा नाम भूम्मदेवे उपादाय तदुर्सार देवा । विसुद्धिदेवा नाम बुद्धपञ्चेकबुद्धवीणासवा'' ति । इमेसे देवानं घम्माति दव-घम्माति ।

वृच्वरित युच्चिता । हिरोनप्पमूनका हि कुसला घम्मा कुसनसम्पदाय देवलोके निब्बत्तिया च विसु-दिभावस्थे कारणता कारणहरेन तिविधानं देवानं धम्माति देवधम्मा । तिह देवधम्मी हे समझातता पुनालापि देवसम्मा । तस्मा पुनालाधिक्रानाय देसनाय ते धम्मे दस्सेन्ती "सन्तो सप्पुरिसा लोके देवधम्माति वुच्वरे" ति आह ।

यक्सो इमं यम्मदेसनं सुत्वा पमन्नो बोधिसत्तं आह्-पण्डित ! अहं तुम्हाकं पसन्नो एकं भातरं देमि, कतरं आनेमीति ?

कनिट्ठं आनेहीति ।

पण्डित ! त्वं केवलं देवघम्मे [१२१] जानासि येव न पन तेसु वत्तेसीति ।

किंकारणाति ?

यंकारणा जेट्ठं ठपेत्वा कनिट्ठं आनापेन्तो जेट्ठापचायिककम्मं नाम न करोसीति ।

देवधम्मे चाहं यक्तः! जानामि तेमु च पवतामि । मर्यं हि इमं अरब्धं गृतं निस्साय पिवट्ठा । एतस्स हि अत्याय अन्हाकं पितरं एतस्स माता राज्यं याचि । अन्हाकं पन पिता न वरं अदला अन्हाकं अनुन्वस-गल्याय अरब्धायां अनुवानि । सो कुमारो अनुवित्तवा अन्हिहि सब्जियानी, तं अरब्भे एका यक्ती सादीति बुत्तीय न कांचि सहहित्सानि । तेनाहं गरहस्यमीती तमेव आनायेमीति ।

साधु साधु पण्डित ! त्वं देवधम्मे च जानासि तेमु च वत्तसीति पमन्नचित्तो यनवो बोधिमनम्स साधु-कारं दत्वा क्षेपि भारतो आनेत्वा अदासि ।

सत्या दर्म घम्मदेसनं आहरिस्वा दस्सेत्वा सच्वानि पकासेसि । सञ्चपरियोसानं मो भिनन्तु सोनापति-फले पतिट्टिंहि । सम्मासम्ब्रोपि हे नत्यूनि कथेत्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेनि । तदा उदकरन्त्रस्तो वहभण्डिकिमक्त् अहोसि, ग्रुरियकुमारो आनन्दो, चन्दकुमारो सारिपुनो जेट्टकभाता महिमानकुमारो पन अहमेव अहोसिनि ।

वे वधम्मजातकं

७. कट्टहारिजातकं

पुत्तो त्याहं महाराजाति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो वासभवत्तियाय वत्युं आरब्भ कथेसि ।

पच्चुपन्नबत्धु

वासभवित्तवाय वर्ष् इादसनिपतं भहसालजातकं आविश्वविस्सति । सा किर महानासस्स सक्क-स्स भीता नाममुख्या नाम दासिया कुष्टिक्सि जाता[१२२]केसलराजस्स अगमसेसी जहोति । सा रघ्यो पूर्व विज्ञायि । राजा पनम्बा पच्छा दासिमार्थ चारण धना परिहापेसि । पुनस्स विवृद्धभस्यापि धाना परिहापेसि येव । उमोपि अनाने निवेसनं येव वस्पति । अत्या कारणं चन्त्र पुत्रचल्हसस्यं पच्चसनिसक्युरिज्वो रघ्यो निवेसनं गरुवा पञ्जनासने निसीदत्वा—सहाराज । कहं वासभक्षतियाति आह ।

> राजा सं कारणं आरोजिति । महाराज [!] वासभलतिया कस्स धीताति ? महानामस्स भन्तेति । आगच्छमाना कस्म आगतानि ?

मयह भन्तेति ।

महाराज ! ए.मा रञ्जो धीता रञ्जो व आगता राजान यव पटिच्च पुत्त पटिजांभ । सो पुतो कि कारणा पितु सन्तकस्स रज्जस्स सामिको न होति ? पुत्ने राजानो मृहत्तिकाय कट्ठहारिकाय कुच्छिरिमास्य पुत्त लोभरबा पुत्तस्य रज्ज अदमृति ।

राजा तस्सत्यस्साविभावत्थाय भगवन्त याचि । भगवा भवन्तरेन पटिच्छक्ष कारण पाकट अकासि-

अतीतबस्य

अतीते बाराणमियं ब्रह्मदत्तो राजा महत्त्वेत यसेन उय्यात गत्त्वा तत्यं पुण्य-फलरोभेन विचयन्तो उय्यातवनसण्डं गायित्वा गायित्वा दाष्ट्रति उद्धरमान एकं इत्ति दिस्ता परिवर्द्धाच्यो सवस्त्र कर्यास् । त सण येथं श्रीयसतो तस्सा बुच्छिय येव परिसन्धि गण्डि । तावदेव तस्मा बिजयुत्ति विय गरका बुच्छि अर्हासि । सा गरुभस्स पनिवृद्धित्माव ज्ञात्वा-काओं ये देव ! पतिरृद्धितीति आह ।

राजा अगुलिमुहिक दस्वा सत्रे धीता हीति इमं विस्सर्ग्यस्वा पोमय्यासि सत्रे पुत्ती होति मुह्काय सद्धि मग सन्तिक आनेव्यासीति वस्वा पक्कामि ।

सापि परिषक्कगढभा बोधिससं विजाबि । तस्स आधावित्वा परिधावित्वा, विचरणकारे गीळा-मण्डले कीळन्तस्स एव बनारो होन्ति-निष्पितिकेनम्हा पहटाति ।

> तं मुत्वा बोधिसत्तो मातु सन्तिकं गन्त्या-अम्म ! को मय्ह पिताति पुच्छि । तात ! त्वं बाराणसिरञ्ञां पुनोति ।

अस्म ! अन्धि पन कोचि सक्योति ?

तात[ा] राजा ६म महिक दत्वा सर्वे धीता होति इम विसज्जेन्द्रा पोसेय्यामि, सचे पुनो होति इमाय मुहिकाय सिद्ध आनेय्यासीति बत्वा गरोति ।

अम्म ! एवं सन्ते करमा म पितु सन्तिक न नेथ्यासीति ?

सा पुलस्स अन्सासर्थ ञत्वा राजद्वारं गत्वा रञ्जो आरोबापेसि – रञ्ञा च पक्कोसापिता पित्रसित्वा राजानं वन्दित्वा अयं ते देव ! पुलोति आह ।

> राजा जानन्तीपि परिसमञ्ज्ञे छण्जाय न मय्हं वृत्तीति आह । अय ते देवमुहिका इमं सम्बानासीति । अयम्पि मय्हं महिका न होतीति ।

देव इदानि टरेप्ता सम्बन्धिरस्य अञ्जो मम सक्की नित्य । सवायं दारको तुम्हे पटिच्च जातो खित्तो आकासे तिट्रु नो चं भूमियं पतित्वा [१२६] मरतृति बोधिसत्तं पारं गहेरवा आकासे विधि । बोधिसत्तो आकासे परच्कं आभूजित्वा निसिन्नो मधुरस्सरेन पितृषम्मं क्येन्तो इमं गाथमाह—

> पुत्तो त्याहं महाराज ! त्व म पोस जनाधिप ! अञ्चलि हेवो पोसेति किञ्च हेवो सकं प्रजन्ति ।।

तस्य पुत्तो त्याहिन्त पुत्तो ते अह । पुत्तो च नामंस ै अवजो स्तेत्त जो अन्तेवासिको दिक्रकोति चतुव्विधो । तत्य अतान परिज्य जातो अत्रवो नाम । यसानिष्ट्दे परुल्के चेदित एकमादितु निक्काो सेत्तवो नाम । सित्तके निप्पुण्डनको अन्तेवासिको नाम । पोसावनत्थाय दिश्चो दिक्को नाम । इध पन अत्रव सन्याय पुत्तोति तृत । चर्ताह सक्हद्वस्पृत्ति वनं राज्यवतीति राजा । महनो राजा महाराजा । १ आमरतेनो आह महाराजाति । त्यः संबोत जनाधिवासि जनाधिय ! महाजनवेट्ठक ! त्व म पोस भरस्य वर्डेहि । अञ्चेषि वेद्यो पोसेतीति अञ्चेष हिल्वअस्तावयो तिरच्छानगर्ते बहुजने च देवो पोसेति । किष्ट्य वेद्यो सद्य प्रवासित एक पन किञ्चाति गरहस्य च अनुगहरूषे च निपातो । सर्क पर्व जननो गुर्त मंदी वो पोसीतिय वन्तो परहृति नाम । अञ्चवह्यवे पोसेतीति वरदत्तो अनुगणकृति नाम । हति वीधिनतो गहरन्तीपि अनुगणङ्ग्नीपि 'किञ्च देवो तस पत्र' नित आह । राजा वोधिततस्य आकात्ते निर्दादित्य एव भम्म देवेनात्मस मुन्ता—ऐहिनान । अहमेव पोसेस्सामि अहमेव पोसेस्मामीति हल्वं पत्तरित । हल्यसहस्य पत्रापित्य । बोधित्तती अञ्चल हत्ये अनोन्तित्वा राज्योव हत्ये ओनरिरवा अंके निर्माति । प्रात्त तस्त्र औपरण्य तद्या मार अस्मकृति अकामि

सो पितु अञ्चयंन कट्टबाहनराषा नाम हत्या धम्मेन राज कारेत्वा ययाकम्म गठो । सत्या कोसर-राज्यो इम धम्मदेसन आहरित्या है बत्यूनि बस्सेत्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातक समोधानीस । तदा माता महामाया अतीसि । पिता सद्वोदनमहाराजा । कटटबाहनराजा अहसेच अहीसिनि ।

कट्टहारिजातकं

८. मामनिजातकं

अपि अतरमानानित्त इद सत्या जेतवन निहरत्तो बोस्सट्ठिविरिय निक्कु आरम्भ कथेसि । हमस्मिपन जातके एच्चूपप्रवत्युञ्च अतीतवत्युञ्च एकाहसनियाते संवरजातक [१२४] आविभिवस्सति। बत्यु हितस्मिञ्च हमस्मिञ्च एकसिसमेव। गाथा पन नाना। गायनिकुमारो बोध्यसत्तस ओवादे ठत्वा आतिक-सत्तस्य कनिट्ठीपि हुत्या भातिकस्परिवारिनो सेतच्छत्तस्य हेट्टा वर्ष्टक्षेत्रे निस्क्रो। अत्तनो यससम्पत्ति क्षोत्रोक्षेत्वा अयं मार्क् यससम्पत्ति अम्बाक आवरियस्स सत्तकति तटटो इम उदाने उदानेसिः—

अपि अतरमानानं फलासाव समिज्झति । विपक्कश्रद्धाचरियोस्मि एवं ज्ञानाहि गामनीति ।

तत्त्व अपीति निपातमत्त । अतरमानानिन पण्डितान ओवादे ठत्वा अनुरित्वा अवेगायित्वा उपायेन कम्मं करोत्तान । कलावाच समिज्यति यथापित्वनकले आसा तस्स फल्स्म निप्कतिया समिज्यति येव । अपवा, कलावाचित आया एकः यथापित्वन एकः सीम्क्यिति येव । विश्वक्षसूष्ट विद्यानित जावाय एकः यथापित्वन एकः सीम्क्यिति येव । विश्वकृत्वाच विद्यानित एवः विद्यानित एवः विद्यानित प्रत्यानित प्रत्यानित स्वर्यानित सिर्वकृत्वाचित सिर्वचन सिर्वचित सिर्वचन सिर्वचचन सिर्वचित सिर्वचन सिर्वचचन सिर्वचित सिर्वचन सिर्वचचन सिर्वचचन सिर्वचचन सिर्वचित सिर्वचचन सिर्वचचन सिर्वचचन सिर्वचचन सिर्वचित सिर्वचचन सिर्वचचचन सिर्वचचन सिर्वचचन सिर्वचचन सिर्वचचन सिर्वचचन सिर्वचचन सिर्वचचन सिर्वचचन सिर्वचचन सिर्वचच

सत्या इमं धम्मदेसन आहरित्वा दस्सेत्वा सच्चानि पकासेसि । सच्चपरियोसाने ओस्सट्ऽर्विरयो भिक्कू अरहरते पतिट्ठिगोति । सत्या डे बत्यूनि कथेत्वा अनुमन्यि घटेत्वा जातक रामोघानेसि । तदा गामनिराजा आनन्दो, आचरियो पन अक्रमेवाति ।

गामनिजातकं

· मखाडेवजातकं

उत्तमंगरहा मय्हन्ति इद सत्या जेतवने विहरन्तो महाभिनिन्खमनं आरब्भ कथेसि ।

प स्थूपश्रवत्यु

तं हेट्ठा निदानकथाय कथितमेव । तस्मि पन कार्ले भिक्त्यू दसवलस्स नेक्सम्म वण्णेत्ता निसीरिंद्या । अत्य सत्या भम्मसभ आगन्तवा बुढासने निसिन्नो भिक्त्यू आमन्तोमि≁ काय नुत्य भिक्त्यवे! एतरिह कथाय तन्निभिन्नाति ?

> भन्ते । न अञ्जाय कथाय, तुम्हाकं येव पन नेक्कमं वश्ययमाना निसिन्नम्हानि । न भिक्कवे । तथानने[१२५]गनरीह येव नेक्कममं निक्कन्तो, पृथ्वेपि निक्कन्तो येवाति आह । भिक्कतस्तरस्यस्माविभावत्वं भगवन्तं याचिस् । भगवा भवन्तरेन पटिच्छक्तं कारण पाकटमकासि-

अतीसबस्य

अतीते विदेहरूद्दे मिषिकायं मसादेशो नाम राजा अहांति पर्मिमां धम्मराजा । मो चनुराधीति-वस्त्तवहस्तानि बुमारकीलं कीळि । तथा ओपरञ्ज,नवा महारञ्ज कत्था दीघमद्वानं वेपेत्या एकदिवसः कप्पकः आमन्तिम-चदा में सम्म कप्पकः ! निर्माण परिनानि परमेरवानि अर्थ में आरोजेस्यामीति ।

कप्पकोषि दीधमढानं खेपेरबा एकदिवम् रञ्जो अञ्जनवण्णान केमान अन्तरे एकमेव पालित दिस्वा देव ! एकं से पालितं विस्सतीनि आरोजेसि ।

तेन हि में सम्म[ा]त पळित उइस्त्वा पाणिम्हि ठपेहीति च बुत्ता मुबण्णसण्डानेन उइस्त्वा रञ्जा पाणिम्हि पतिद्ठापेसि ।

नदा रच्यों बहुरासीतिबस्मस्स्माति आगु अवसिद्ध होनि । १व सन्तेषि परित दिस्वाव मच्चुराज्ञान आगस्त्वा समीपे दिन बिच जतान आदिसरणध्याल प्रविद्ध विद्य च मच्च्यानी सवेग आगजित्वा
—वाल मखादेव ! याव परितम्मुणादाव इमे क्लिसे बहित्तु नासक्वीति चिन्ते मि । तस्मेव परितपानुभाव आवउत्तरस्स आवज्ञतस्स अल्लीहाते उत्याज्ञ सरीरा तदा मुच्चिमु नाटका पीळेला अपनेस्व्यावाण्यस्य अहेतु ।
सो अञ्जेव ममा निक्यियत्वा पब्यितु वर्दुनीति कप्यकस्स सनमहस्मुद्दान गामवर दत्वा जेट्ठपुन पक्कोसापेस्वा
—तात ! मम सीपे परित्य पानुमेन महस्वकारीम् आतो । भूना मो पन मे मानुमका कामा दशीन दिव्यवसारे
परिवेसिस्सामि नेक्यम्मकाली मळ स्व ६म रज्ज पटियज्जा अन् पन प्रव्यविद्या मश्चिक्यकार्यम् सम्त्रोध

त एव पञ्चिजितुकाम अमच्चा उपसर्कामत्वा- देव ! कि तुम्हाक पञ्चब्जाकारणान्ति पुण्डिसु राजा परित हत्थेन गहेरवा अमच्चान इम गाथमाह-

उत्तमगरुहा मय्हं इमे जाता बयोहरा।

पातुभूता वेवदूता पञ्चक्जासमयो ममा ॥ ति ।

तत्त्व **उत्तर्भगवहाति के**सा । केसा हि सम्बेग हत्यपादादीन अंगानं उत्तमें मिर्रास्म निरुव्रहत्ता उत्तन् मंगरहा नामानि बुच्चिन्ता **इमे जाता बचोहराति** पस्तथताता । पिल्तपातुभविन तिष्ण वयान हरणतो इमें जाता वयोहरा । **पातृभृताति** निब्बत्ता । **वेवहृताति** देवोनि मच्चु तस्य द्वतानि देवहृता । सिर्रास्म हि पिल्तेसु पातृभुतेस् मञ्जूराजस्स सन्तिके टिनो विय होति तस्मा पिलतानि मञ्जूरेवस्स हुमाति बुञ्चांत्रा। १२६ देवा विय दूतातिष् देवदुता। यथाहि अलंकतापिटसाय देवनाय आकामे ठत्वा अगुरुतियमे स्वं मन्सिमीति बुन्ते त सयेष होति एव विरिक्ति पालुमेतेषु देवताय व्याकरणसिसमीय होति। तस्मा पीलनानि वं वर्षादेवा दूतानि वृज्जांति। विस्तुविदेवाने दूतानिष्ठि देवदुता। सब्बबोधिमसा हि जील्याध्याधिमनपञ्जजिते दिस्वाव सेवेगमापाज्जित्वा निकक्षम पञ्जजनित। यथाह-

> "जिण्णञ्च दिस्वा दुखित च व्याधित मनञ्च दिस्वा गतमायुसंखय । कासाववस्य पञ्चीजनञ्च दिस्वा नस्मा अह पद्वजिनोम्हि राजा ॥" नि ।

हमिना परियायेन पिन्तानि विमुद्धिदेवात दूनता देवदुताति बुज्बत्ति । पब्बज्जासमयो ममा ति गिहीमावतो निक्वत्तद्वेत पब्बज्जाति छद्धनामस्स सम्मान्त्रणगहणस्म कानो मय्हीन्त दस्तेति । सो एवं बत्वा स्त्र दिवसमेत्र एज्य पहारा हमिण्डबन्त्र पद्धाजि. या तस्मिञ्जेव मखादेवसम्बत्ते विहुत्त्ती चनुरामीविवससबहस्साति बतारो बहाविहारे भावेत्वा अपरिहोनन्द्रमाने टिठो काल कत्वा ब्रह्मालोके निम्बत्तित्वा पुन ततो चुनो सिथ-लार्य येव निम 'नाम राजा हुत्वा ओससक्कमान अत्तनो वंस पटेत्वा तत्वेव अम्बवने पन्नवित्वा श्रह्माविहारं मावेत्वा पन ब्रह्मालेकणायेव अहोसि ।

मध्यापि न भित्तस्त्वे । तथागतां इदानेव महाभिनिक्समन निक्सन्तां. पुब्केषि निक्सन्तो थेवानि इस धस्मदेसन आर्हारत्वा दस्सेत्वा चत्तारि सच्चानि पक्तासेषि । सच्चपरियोमाने केवि मोनापम्ना अहेसु केवि सकदागामिनो केवि अनागामिनो । इति भगवा इमानि डे वस्थृनि कथेत्वा अनुमन्तिम घटेत्वा जानक ममोधानेषि । तदा करपको आनन्दो अहोसि, पुत्तो राहुको, सम्बादेवराजा पन अहमेवानि ।

माना तेयजा तक

१० सुखविद्यारिजातकं

यञ्च अञ्जे न रवक्वान्तीति इदं सत्वा अनुपियनगरं निस्साय अनुपियम्बवने विहरन्तो सुखविहारिं भहियरुपेरं आरक्स क्येसि ।

पच्चपश्चवस्य

मुखबिहारी भिर्देशस्वेरी छक्खतिबसमागम उपालिसत्तमो पन्यजितो । तेमु भिर्देशस्वेरी च किम्बि-करवेरी च भमुस्वेरी च उपालिखेरी च अरहतं पत्ता । आनन्दत्वेरी सीतापन्नी जातो । अनुरुद्धत्वेरी दिख्यचक्कुर्की देवदत्ती क्षानलाभी जातो । छत्रं पन खतियानं[१२७]बत्यु याव अनुप्यनगरा खण्डहालजातके "आविभनिस्मति ।

आयस्मा पन महियो राजकाले जत्तानं रक्त्वन्तो रक्त्वप्तिवानञ्चेव ताव बहूहि रक्त्वाहि रक्त्विय-मानस्स, उपरियासादतले महासदने सम्परिवसमानस्थापि जत्तनो मयुप्पत्तिञ्च दिस्वा डदानि अरहत्तं पदा अरञ्जादिषु यत्व कत्यिचि विचरन्तोषि अत्तनो विगतमयतञ्च समनुषस्यन्तो – अहो मुर्ख ! अहो मुख्ति । उदानं उदानेसि ।

तं सुत्या जिम्बू आयस्या प्रदियो अञ्जे व्याकरोतीति भगवतो आरोपेसु । भगवा न जिम्ब्यते ! भद्दियो इदानेव सुस्त्रिकारी पुत्र्वेषि सुस्त्रिकारी मेवाति आह । भिम्ब्यु तस्सत्यस्साविभावत्थाय भगवन्तं याचित्रु । भगवा भवन्तरेन पटिच्छनं कारणं पाकटमकासि–

अतीतवत्यु

अतीते बारणांसियं बहात्त रज्यं कारयमाने बोधिसत्तो उदिज्यबाह्यणमहासालो हुत्वा कामेमु सादीनसं नेस्सम्मे पानिसं दिस्वा कामे पहाय हिमवन्तं पविस्तितः दिस्यक्रपणं प्रवाणित्या अदृश्यमा-पित्त्यो निव्सत्त्वेति । परिवाणित्या महा अहोित एज्यतामस्तिताति । सो वस्सकाले हिमवन्त्ताती निवस्तित्वा तापस्यणपरिवृती गामनितमातिषु वारिसं करणेति तत्य बस्तिक वसारो माले सन्तित्वा राजानं आपूष्टि । अप ने राजा तृम्हे भन्ते ! महल्का, कि बोहित्यवन्ते । अल्वेतासिकं हिमवन्ते पेमेला देषे वसायोति याचि । बोधिसती जोटुम्हे भन्ते ! महल्का, कि बोहित्यवन्ते । अल्वेतासिकं हिमवन्ते पेमेला देषे वसायोति याचि । बोधिसती तो उद्योजित्वा सर्व तत्वेत्व वार्ष कर्णेति । सो पनस्त । स्वाच्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या कर्णेति । सो पनस्ति । स्वाच्या व्यव्धा क्ष्या कर्णेति । सो पनस्ति वोद्या क्ष्या क्ष्या कर्णेति । सो पनस्ति अद्योजित्वा सर्व तत्वेत्व वार्ष कर्णेति । सो पनस्ति अद्योजित्वा सर्व तत्वेत्व वार्ष कर्णेति । सो पनस्ति अद्योजित । सो तापस्ति क्षय हिमवन्ते वस्त वस्त्राणे एकदिवसं आपरित्य देहुहसभो हुन्ता तै तापसे आमन्तेत्वा तुम्हे अत्योजित । सामानेत्वा तुम्हे अत्योजित वस्त्राण क्ष्या वस्ति कर्णेति आपरित्यस्त सर्वित्व वस्त्र वस्त्र वित्यत्वा आपरित्यस्त सर्वित्व अवित्यत्व । स्वित्यत्व निव्यत्वा आपरित्यस्त सर्वित्व । स्वित्यत्व निव्यत्वा आपरित्यस्त सर्वित्व । स्वित्यत्व निव्यत्वा आपरित्यस्त सर्वित्व । स्वित्यत्व निव्यत्वा आपरित्यस्त निव्यत्व । स्वित्यत्व निव्यत्वा आपरित्यस्त सर्वित्व । स्वित्यत्व निव्यत्वा आपरित्यस्त सर्वित्व । स्वित्यत्व निव्यत्वा भावित्यस्त सर्वित्व । स्वित्यत्व निव्यत्व निवस्त्व । स्वित्यत्व निवस्त्व । स्वित्यस्त सर्वित्व निवस्ति । स्वित्यस्त सर्वित्व । स्वित्यस्त सर्वित्व निवस्त्व । स्वित्यस्त सर्वित्व निवस्ति । स्वित्व निवस्ति । स्वित्व स्वित्व सर्व निवस्ति ।

तस्मिश्च समये राजा तापसं पस्सिस्सामीति उथ्यानं गन्त्वा बन्दिश्वा एकमन्त निर्मादि । अन्तेवासी तापमो राजानं दिस्वापि नेव उद्ठासि । निपन्तको येव पन अहो मुखं अहो मुखन्ति ! उदानं उदानंसि ।

राजा अयं नापसो में दिस्वापि न उट्डितोति अनत्तमनो बोधिसत्तं आह–भन्ते [।] अयं तापसो यदिच्छक्रे भूतो भविस्सति उदानं उदानेन्तो सुखसेय्यमेव कप्पेतीति ।

महाराज! अर्थतापसी पुज्जे तुम्हादिसी एको राजा अहोसि। स्वायं अहं पुज्ये गिहीकाळे १ स्वाः—कण्डहालजातके। रज्जितिर अनुभवन्तो [१२८] आवुषहत्वीह बहुहि पीस्त्रयमानोपि एवरूपं सुन्नं नाम नालत्वीन्त अत्तनो पम्बज्जानुन्नं झानसुन्धं आरक्भ इमं उदानं उदानेनोनि । एवरूच पन बन्चा बोधिसत्तो रङ्जो धम्मक्यं कवेत् इमं गाधमाह-

> 'सञ्च अञ्जेन रक्खन्तियो च अञ्जेन रक्खति। सवे राजसूक्षंसेति कामेसु अनपेक्खवा॥''ति।

तत्व यक्क अरुभे न रक्कासीति यं पुणालं अरुभे वहु पुणाला न रक्कास्ति । यो च अरुभे न रक्कासीति यो च एक्को अर्ह रज्यं कार्रसीति अरुभे वहु न रक्काति । य वे राजा ! मुखं सेतीती महाराज ! को पुणाले एको अद्वृतियो पविचित्तो कार्यिकनेत्रसिकसुक्कासमंगी हरवा मुखं सेति । इटरूज देसतासीक्षमेव न केवल पर मुखं सेति येव एक्क्यो पन पुणाले मुखं पच्छति तिर्दर्शत निवीदित सर्वतीत सिक्क्यियापथं मुख्यमत्त्रीव होति । कार्यकु अवश्वेषक्कासित वज्युकासिकनेवकामेषु अवेश-धारहितो विवादक्करपाले निविद्या पित्र प्रसार में स्वाद स्व

मुक्सविहारिजातकै ।

अपण्णकवन्त्रो निद्वितो

१. एककनिपातो

२. सीलवग्गवण्णना

१. लक्खणभिगजातकं

होति सीलक्तं अस्पोति इदं सत्या राजगह उपनिस्साय केत्रुवने विहरन्तो देवदाँ जारुभ कथेसि। देवदत्तस्य क्रत्युंगाव अभिमारप्ययोजना संडहालजातके आविभविस्सति। याव घनपालकं विस्मजना पन चुँर्ल्ड्सजानके आविभविस्सति। यात्र पठिषपक्षेसना मोलसनिपाते । समुद्दाणिजजानके आविभविस्सति।

पञ्चपन्नवत्थ

एकस्मि समये देवदत्तो पञ्चवत्थूनि याचित्वा अलभन्तो संघं भिदिन्त्वा पञ्चभिक्सुसतानि आदाय गयासीसे विहरति । अय तेसं भिक्सनं जाणं परिपाकं अगमासि ।

तं जत्वा [१२९] सत्या हे अग्मसावके आमत्तीस – सारिपुता ! तुम्हाकं निस्सितका पञ्चसना भिक्त्यू वेबदत्तस्स रुद्धि शेचेरवा तेन सर्द्धि गता । इतानि पन तेसं जाणं परिपानं गनं, नुम्हे बहूहि भिक्त्यूहि मद्धि तत्व गन्त्वा तेसं धार्म देनेरवा ते भिक्त्व मगफलेहि पकोषेत्वा गहेत्वा आगच्छथानि ।

ते तथेव गन्त्वा तेसं धम्मं देसेत्वा मगमफोहि पश्चोधेत्वा पुनरिवसे अरुणुगमानवेलाय ते भिनक् भाराय वेखुकामेव अगमम्। आगन्त्वा प पन सारिणुनत्वेरस्स भगवन्तं बन्दित्वा ठितकार्ज भिनक् थे १ पर्शसित्व। भगवन्तं आहेनु— मते । अन्दार्त केट्टकमातिको धम्ममेनायनि पञ्चभिनक्ष्मनेहि परिवृतो आगच्छान्तं। अनिविग मोभति वेबत्तां पन पहीनपरिवारो आताति ।

न भिक्तवे ! सारिपुत्तो इदानेव जातिसंघपरिवृतो आगच्छन्तोव सोभति पुरुषेपि सोभियेव देवदत्तोपि न इदानेव गणतो परिद्रीनो पर्व्यपि परिद्रीनो येवाति ।

भिक्ख तस्मत्यस्साविभावत्याय भगवन्तं याचिम् । भगवा भवन्तरेन पटिच्छन्नं कारणं पाकटमकामि-

अतीतवश्यु

अनीने मनथरट्टे राजगहरूनारे एको मनाधराजा रज्जं कारेमि । नदा बोधिमलो मिनायोनियं पटिसस्थि गठेत्वा बृद्धिनो मिनमहस्मार्गरिनारो अरच्छे जसनि ।नस्स लक्तकाो व कालो चानि द्वं पुना अहेन्। सी अस्तो महत्तक काले – नाता । अहं दशनि महत्त्वको तुन्हं इसं गर्ज परिहरधानि पञ्च पञ्च सिगसनानि एकेक पुत्त परिज्छामित ।

ततो पहराय तं इं जना मिनवार्ण परिहरन्ति । मनाभरहरुन्सिञ्च सस्ससमये किट्अम्बाधं अरब्धं मिनान परिण्यो होनि । मनुमा सस्तबादकार्ने मिनान मारणस्थाय तत्थ तथा ओपानं वर्णन्त मूलानि रोगेनि पातालयन्त्रानि सञ्जीनि कृट्यामादयो पासे और्ड्डेनि । बहू मिना विनामं आपञ्जीन्त । ओपिमानो किट्अम्बायममयं प्रत्या पुने पक्कोमापेरवा आह-ताता । अर्थ किट्उसम्बाधसमयो वह मिना विनामं पापुणाति । सर्थ महत्त्वका । येन केनुपायेन एकिस्म ठाने बीतिनापेस्साथ । पुन्हे तुम्हाकं मिनवणं गहेत्या अरब्धं पब्बनपारं गविसित्वा मन्मानं उद्धवकोले आनक्केयापाति ।

ते साधृति पितु वयनं पटिस्सुणिस्वा सपरिवारा निक्खमिसु । तेसं पन गमनागमनमग्गे मनुस्सा जानन्ति १ स्या०-वारस्रतिपाते । हर्मास्म कार्ले मिगा पञ्चतं आरोहिन्तः इमस्मि काले ओरोहन्तीनि । ने नन्थ नत्थ पटिच्छन्नट्ठाने निद्धीना बहुँ मिगे विज्ञित्वा मारेन्ति ।

काळिमिगोपि अत्तनो दरश्तांस इसाय नोम बेलाय गन्तब्बं इसाय वेलाय न गन्तब्बन्ति अजानतो मिगमणं आदाय पुत्रकर्षेषि सायकर्षेष [१३०] परोसेषि पच्चनेषि गामद्वारेन गच्छति । सनुस्मा तल्य तल्य प्रवन्ति याच ठिजा च निळीना च बहु सिगे विनासं गमेन्ति । एवं सो अत्तनो दरस्ताय बहु सिगे विनासस्परित्वा अप्यक्तेह्य मिगेहि अरुअं पावित्ति ।

लक्खणिमगो पन पंषितो ब्यत्तो उपायकुसलो इमाय बेलाय गलच्चं ६माय बेलाय ग गलच्चित्त जानाति । सो गामद्वारेतपि न गच्छति, दिवापि न गच्छति, पदोसेपि न गच्छिति, पद्मेसेपि न गच्छिति । मिगगणं आदाय अइडरत्तसमयमेव गच्छति । तस्मा एकप्पि मिगं अविनासेत्वा भण्डभं पाविसि ।

ते तत्य चलारो मामे विमत्वा र. भेसु उद्धटेषु पश्चवा श्रोवरिष्मु । कालो पच्छा 'गच्छत्तीरिष् पुरिमन-येनेव अवसेसिमरीपि विनास पापेन्ती एककोल आर्माम । कम्मणमिसो पन एकमिमािय अविनासेत्वा पञ्चिह सिमसर्वेहि परिवृतो मानापितुम्न सन्तिक आरामि । बोधिमत्तो हे पुने आगच्छत्ते दिस्वा मिगगणेन 'नोह मन्तेन्ते। इसं गाथ समस्टार्थिन-

> होति सीलवतं अत्यो पटिसम्यारबुलिनं। लक्खणं पस्स आयन्तं आतिसंघपुरक्कतं॥ अथ पस्ससि मंकालं सुविहोन व आतिहो'ति ।

तथ्य सीलब्रह्मिनः मुखमीलनाय सीलब्रन्तानं आचारम्यप्रमान । अत्यंनि बुर्ह् । परिमत्यार बृक्ति-नानं धम्मपरिमत्यारो व आमिसपरिमत्यारो च एतेम बृक्तिनीत परिमत्यारज्ञीत् । तेम परिमत्यारज्ञीत । । एत्य च पार्यानवारण्येवादानसास्तारिवनेन धम्मपरिमत्यारो च गोजन्याभामनिकानुष्ट्राञ्चामेमक-रम्बावमेन आमिमपरिमान्यारो र वेदितब्बो । इत् चुन हाँति । इसेमु हीनु परिमत्यारेम् ठिनान आचारम्यमप्रमान पण्डिनान बुर्हा नाम होति । इदानि त बुर्हेड दमेनु पुन्तानार चे आक्यनो विच वन्त्रचण परमानि आरिमाह । तत्राय मत्ये त्यां । आचारपरिमत्यारम्यस्य अननो पुन एक्मिमिष्य अविनामेत्वा आनिवर्षन पुरस्कान परिचारित आपञ्चन परमा । नाम पत्र आवारपरिमत्यारसम्पदाय विहीन दस्यपञ्च त्रच परमिष् म काळ एक्मिप आंति अनववंदेनेत्या च मुविहोनमेव प्रानीहिएककं आच्छनानि । एव पुनं अभिनन्दित्यापन बोधिमनो पावनायुक ठन्या यथारम्यं गतो ।

सन्यापित भिक्कवे 'सारिपुत्तो इदानेव ज्ञानिनवर्षांत्र्यांत्रेम भिभित, पुत्र्वेष सीभि येव। तच देवदत्तो एतार्गह्न स्व पण्यात् पारितीतो पुत्र्वेषि परिष्ठीतो स्वतित इस धम्मदेनन दस्सेववा इ क्यूनि घटत्वा अनुसीध धोवेत्वा ज्ञानक ममी [१३१] धार्नेमि। तदा काळो देवदत्ती अहीसि। परिसा पिस्स देवदत्त्रपारिमाव त्वस्थणा मारिपुत्ती परिमा पनस्य बद्वारित्या माना राष्ट्रणमाना अहीसि। पिता पन अहस्य अहानिनि।

लक्षण[मराजातक]

२. निद्रीधमिगजातकं

नियोषमेव सेवेय्याति इदंसत्या जेतवने विहरत्तो कुमारकस्वपत्येरस्य मानरं आरका कवेणिः। पक्षपत्नवान्

सा किर राजगहनगर महाविभवस्स सेट्टिनो बीना अहोसि । उस्सक्रकुसलमूला परिमहितसंसारा पश्चिममसिकस्तार। अलोल्ट्रे वर्षणो विद्य तस्सा हृदये अरुद्धपुणिसस्यो जलति । अय सा अलान जाननकालतो पट्ठाव से हे अनिभरता पस्वित्तिकास हृत्या मानापितरो आहु-अम्म ताता । मर्व्ह वरावासे चिनां नामि-रुपति अहं तिस्यानिकं बृद्धसासने पत्वितृत्वामा पच्चाजेय मन्ति ।

अम्म ! कि बदेति ? इम कुलं बहुविशवं । स्वञ्च अम्हाकं एकधीनिका । न रूम्भा तथा पत्र्वजितृति । सा पुरापुनं सावित्वापि माताविषुक सत्तिका पत्रकलं अरूममाना चिन्नीस— होत् पतिकुलं गता शामिकं आरापेरवा पत्रवित्सामिति । सा वयण्यता पतिकुल गत्त्वा पतिदेवता हुत्वा सीव्यति कत्याणमामा अपार्तं अरुवाविमा अयस्ता त वात्रमन्याय कुच्छियं ग्रमो पतिद्रहि । वा गरूमस्य पतिहृदितमाव न अञ्चावि अय तस्ति नगरं नवस्ता धोसविषु । सकलनगरबाविनो नक्सत कीळिमु । नगरं देवनगर विय अरुकतर्याद्यमं अहीति । सा पन ताव उठारायपि नक्सत्कोळाय बत्तमाताय अत्रतो मरीर न चिल्मपनि नालनगीन पक्ति

अय नं सामिको आह—भर्^{रे।} सकलनगरं नक्षत्रतिस्सित त्व पन सरीरं नप्पटिजग्गसि, अलंकारं न करोसि किकारणाति ?

सा आह-अय्यपुत्त ! इसिसाय मे कुणपेहि पूरित सरीर । कि हमिना अलंकनंत । अय हि कायो नेव देविनिम्मतो न बह्मिनिम्मतो, न सुवणमयो, न मणिययो, न हरिजन्दनमयो,न पुण्डगैककमलुणलगठसमभूतो न अमतोसमपुरित्ते । अय को कुणपे जातो मानापेत्तिकसम्भवी निच्चुच्छादनपरिमहन्मेदनविद्धंसनप्रम्मो कट-सिवह्वनो तण्कुपारिक्षो सोकानं निदान परिदेवान वस्यु सम्बरोगान आलयो कम्मकरणान परिग्महो अन्तोपूति बहिनिज्वरायणाणी किमिकुलान आवामो, मीविषकपरायणो, मरणपरियोमानो मम्बलोकस्स चक्क्यूप्य परिवन्त-मानोपि-[१३२]

"जट्ठीनहारुसंयुक्तो त्वभंमाबिरुपेयते । छिदया कायो पटिच्छत्रो यवाभूतं न दिस्सति ।। अन्तपूरी उदरपूरी यक्षणंळस्स बरियतो । हदयन्य पण्कास्स वक्षण्यत्व (पहरूस्स च ।। हिस्स पण्कास्स वक्षण्यत्व (पहरूस्स च ।। लेगिहतस्स लिकास्य पितस्स च बमाय च ।। अपस्स नवह् मोतेहि अनुची सवित सब्बदा । अस्स नवह् मोतेहि अनुची सवित सब्बदा । अस्सि स्मा स्मा क्षणाया कृष्णाया कृष्णाया कृष्णाया कृष्णाया । पियाणिका च नासातो मुझेन वसित एकदा । पियं सेस्ड च वसति कृष्णम्हा सेव्यविलक्षणः।

अथस्म सुसिरं सीसं मत्थलुगेन पूरितं। सुभनो न मञ्जिति बालो अविज्जाय पुरक्खतो ॥ अनन्तादीनवो कायो विसरक्ससमपमो। आवासो सम्बरोगान पुञ्जो दुक्लस्स केवलो ॥ सचे इमस्स कायस्स अन्तो बाहिन्तो सिया। दण्ड नुन गहेत्वान काके सोके च बारबे।। बुग्गन्धो असुची कायो कुणपो उक्करूपमो। निन्दितो चक्लुभृतेहि कायो बालाभिनन्दितो।।" अल्लचम्मपरिच्छन्नो नवहारो महावणो। समन्ततो पग्धरति अमुचिपूर्तिगन्धियो ॥ यदाच सो मतो सेति उद्दमातो विनीलको । अपविद्धो सुसानस्मि अन्येक्खा होन्ति आतयो ॥ खादन्ति न सूबाणा च सिगाला च बका किमि । काका गिज्ञा च खादन्ति ये चञ्जे सब्बपाणिनो ॥ मुत्वान बुढवचन भिक्क्यूच आणवा ६घ। सो खोन अभिजानाति यथाभूत हि पस्मिन ॥ यथा इम तथा एत यथाएत तथाइद। अज्झत्तञ्च बहिद्धा च काये नन्द विरुज्जह ॥

अय्यपुत्त । इसं कायं अलकरित्वा किं करिस्सामि ? ननु इमस्स अलकरणः गूथपुण्णघटस्स बहिचित्तकःमकरणः विय होतीति !

सेट्ठियुनो न तस्सा वजन सुख्वा आह— अहे । त्वं इमस्स सरीरस्स इमे दोमे पस्समाना कस्मा न पश्चजसीति ?

अय्यपुत्त । अह पञ्चञ्ज लभमाना अञ्जेव पञ्चजेय्यन्ति ।

सेट्ठिपुत्तो साधु अह त पब्बाजेस्सामीति बत्बा महादान पवतेत्वा महासक्कार कत्वा महत्तेन परिवारंत भिक्कुणीउएसम्य नेत्वा त पब्बाजेत्तो देवदनपश्कियान भिक्कुणीन सन्तिके पब्बाजेसि । सा पब्बज्ज जिभ्दा परिपुण्णसकृष्पा अत्तमना अहोसि । अपस्सा गक्ने परिपाक गच्छन्ते इन्द्रियानं अञ्जयत हत्यपादिष-ट्टीन बहळ्त उदरपटणस्स च महन्तत दिस्वा भिक्कुणियो तं पुष्क्छमु-अय्ये! त्व गन्भिनी विय पञ्जायिम, कि एनान

अय्य! इद नाम कारणन्ति न जानामि, सीलंपन मे परिपुण्णन्ति ।

अय न ता मिक्क्षणियो देवदलस्स सन्तिकं नेत्वा देवदल्त पुष्टियुन अय्य । अय्य कुण्यीता किच्छेन सामिकं आराभेत्वा पत्रकलं लिभ । इदानि पनस्सा गरुभो पञ्जायित । मय [१३३] इमस्स गरुभस्य गिहीकाले वा पञ्चजिनकाले वा लद्वभाव न जानाम कि दानि करोमानि ? देवदलो अनानो अबुवभावेन सन्तिमेसानुद्यान च नित्याता एव चिन्तीस-देवदलस्म पिक्किका भिक्क्षणी कुच्छिता गरुभं पादररित । देवदलो च त अज्युपेक्सति येवाति मस्ट गरहा उपपिजस्सति । मया इमं उपस्वाजेतुं बहुतीति । सो अवीमीसत्वाव सेलगुळ पवट्टयमानो विय पक्कित्वता गच्छप्य इमं उपस्वाजेत्वाति आह् । वा तस्स वचन शुक्ता उद्दाय चिन्त्या उपस्तय गता । अय सा दहरा भिक्क्षणियो आह्-अय्या! न देवदत्तत्येरो बुद्धो, न पि मस्ट तस्स सन्तिकं पम्बस्ता लोके पन अगणुरगलस्स सम्मासम्बुद्धस्स सन्तिके मरहं पद्धवज्ञा । सा च पन में बुक्खेन लढा मा नं अन्तरधापथ । एवं मं गहेरवा सत्य सन्तिक जेतवन गच्छवाति ।

ता तं आदाम राजगहा पञ्चलकाक्रीसमोजनं मागं अतिकलम्म जनुष्ठकोन जेनवन पत्ना सत्यारं विद्वत्वा नामध्य आरोजपुं । सत्या वितर्वित्त निरुचाले कित्रवा नामध्य आरोजपुं । सत्या वितर्वित्त निरुचाले कित्रवा नामध्य त्रित्वा निरुचाले कित्रवा नामध्य प्रतानि तित्यामानं जेकामो भविस्तति, तनमा इसं कंप मिल्लिन्तु सरामिः काव परिवाय मज्ये समं अधिकरणं वितिष्ठितुं वसामः काव परिवाय मज्ये समं अधिकरणं वितिष्ठितुं वसामः वितर्वे प्रतान परिवाय मज्ये समं अधिकरणं वितिष्ठितुं वस्ति । पुत्र वितर्वे राजान परीनविकोनलं महाजनायिणिष्ठकं जूळजापिरिष्टकं विमालं महाजनायिणिष्ठकं ज्ञानि व अभिक्षातानि महाकुलानि पक्कोसारेत्वा सायण्हसमये वृत्युप्तिसामु अभितरामु उपिल्लियं आमत्तिस-गण्ड जुपुर्णसमञ्जे इमिस्सा दहरमिक्कुणिया कम्म सोवेतीत ।

साध् भन्तेति थेरो परिसमक्षे गन्त्वा जतनो पञ्चतासनं निमीदित्वा रञ्जो पुग्नो विचालं उपामिक पत्कोसाधेत्वा इम अधिकरणं पटिन्छापेमि—गच्छ विसालं । अय दहरा अमुकमामे अमुकदिवसे पञ्चीजनाति तत्ततो जत्वा इमस्स गब्भस्स पूरे वा पच्छा वा ळद्मभावं जानाहीति ।

उपापिका साधृति सम्पर्शिक्केत्वा साणि परिक्षिपापेत्वा अन्तो साणिय दहरिमक्बृणिया हत्यपाद-नाभिजदरपरियोगानानि ओलोकेत्वा मामदिवमे समानेत्वा गिहीभावे गठमस्स लद्धमावं तत्तनो अत्वा थेरस्स मन्तिक गन्त्वा तमन्त्र आरोजेनि

थेरो चतुपरिसमञ्झे त भिक्खुणि मुद्धं अकासि ।

सा सुद्धा हुत्वा भिक्क्षमध सत्यारं च वन्दित्वा भिक्क्षणीहि सिद्ध उपस्मयमेव गता । सा गञ्भपरिपाकः-मन्दाय पदुमुत्तरपादमूलं पत्थितपत्थनं महानुभाव पुनः विजायि ।

अयेकदिवस राजा भिन्नजुण्यस्त्रसस्त्रसीपेन गच्छन्तो दारकसङ् सुरवा असच्चे पुच्छि । असच्चा न कारण अत्वा— देव $^{\mathrm{I}}$ सा दहरभिन्नजुणी पुन विजायि तस्सेमो सङ्गीत आहमु । [१३४]

भिक्कुणीनं अणे । सान्त्रगटिकामा नाम पिळबोशो सम न पटिकीमान्सामांत नाजा न दान्त्रं नाटिकत्यीन दारेव्या कुमान्यिहारेन बहुशांसि । नामगळ्णदिवले कस्स कन्यापीत नाम अकन् । अप न कुमान्यिहारेन बहुशना कुमान्यपीति न वजनित्र । हो सत्त्रदिक्षण्य क्ष्मान्यपीति वजनित्र । स्वान्तिक पेळव्यित्य पिर्णुणायीमान्य द्वारा उपस्था दिक्षण्य विकार स्वान्तिक पेळव्यित्य पिर्णुणायीमान्य द्वारा उपस्था दिक्षण्य क्ष्मा उपस्था दिक्षण्य विकार प्रमान्य निक्षण्य प्रमान्य प्रमान्य निक्षण्य प्रमान्य निक्षण्य विकार स्वान्तिक प्रदान पार्णुण मानापित्य निक्षण्य विकार स्वान्य स्वान्य स्वान्य प्रमान्य प्रमान्य प्रमान्य प्रमान्य प्रमान्य विकार प्रमान्य निक्षण्य विकार स्वान्य प्रमान्य प्रमान्य प्रमान्य प्रमान्य विकार प्रमान्य क्ष्मान्य क्षमान्य प्रमान्य प्रमान

सत्या बुद्धकीळ्हाय धम्मसभ आगन्त्वा पञ्जतासने निमीदित्वा- काय नृत्थ भिक्खवे ! एतराह कथाय सन्निधिज्ञाति मुच्छि ।

भन्ते ! तुम्हाकमेव गुणकथामाति सब्बं आरोर्चायमु ।

न भिक्लवे [।] नथागनो इदानेव इमेस उभिन्न पच्चयो च पतिट्ठा च जातो, पुब्बेपि अहोसि येवाति ।

१ अंगुत्तरिकाय, एतवन्नपालि । २ स्था०-मन्नकलं ।

भिक्ख तस्सत्थस्साविभावत्थाय भगवन्त याचिम् । भगवा भवन्तरेन पटिच्छन्न कारण पाकटमकासि-

अतीतवस्य

अनीते बाराणिनय बहादसं रज्जं कारयमानं बोधियसो मिगयोनियं पटिसान्य गण्डि । सो मातु कुच्छिनो निस्त्रमाने मुक्षणवणो अगोति । अक्षांनि चस्स मणिगुरुमिदसानि अहेतु । सिगानि रतनतण्णानि । मर्च रनकावन्यपुरुप्तवच्या हासार्था स्वार्यस्य स्वार्यस्य स्वार्यस्य स्वार्यस्य स्वार्यस्य करोसि । सोरारं पनस्य महत्त्र कस्पयोन्त्यमण अहोसि । सो पड्चस्तिमानियानियानी अराज्ञं अस्पर्योत् । नामेन नियोधीमगाजा नाम । अविद्वर्रे पनस्य अप्रोति । सोराप्त्रमाना साम्यव्यक्ता होति । स्वार्यस्य सहत्त्र स्वार्यस्य स्वारस

मनुस्सा चिन्तेमु - अय राजा अम्हाक कम्मच्छेर करोति । यसून मय उच्याने मिगान निवाप विदित्वा पानीय सम्पादेखा बहु मिने उच्यान पर्येमेत्वा द्वार बन्धित्वा रज्ञो निम्यादेस्सामाति ।

ते सब्बे उपयाने मिनान निवाप निच रोपेत्या उवक सम्पादेत्वा द्वार योजेत्वा वागुगति आदाय मृत्य-राविनानाबुषहत्वा अरञ्ज पविभित्वा मिनं परिसंसमाना सन्त्री दिवे मिनं गोष्ट्रसमामानि योजनमन राज्य परि-निवापित्वा मित्रपानाा नियोपमिनवासिमान वनसन्द्रश्रात मस्त्री करवा परिनिव्यप्ति । अत्र न मिनान दिक्वा कृत्वसुद्धादयो च भूमिन्ड मृत्याहि पहरन्ता मिनान गृत्वस्त्रात्वो नीहिरत्वा असिमत्तिपरुत्राद्वी । आवृत्याति विधित्वा महाताद नदन्ता न सिमानच उत्यान प्रवेशवा द्वार विधाय गजान उत्पन्तमित्वा—देव ! निव्य मिनव मन्त्रता अस्त्राक कम्म नामेश अस्तिह अरञ्जनी मिने जोनत्वा तृष्हाक उद्यान पूरित। इतो पट्राय नेव ममानि सारवानि राजान आधुन्कस्त्रा पक्किम ।

रात्रा तेम बचन मुख्य उच्यान गन्या मिर्ग ओठोकेस्ता हे मुक्कामिगे दिन्या तेस अभय अदागि । तो पट्ठाय पन कराचि माम गरवा एकमिश विधितवा आतेति । कदाचिसस भनकारको गण्या विधित्या आहर्गन । मिश्र पहिस्यास मरणभयेन तिज्ञता पळायन्ति । हे तथा पहारे लिभरवा किळमन्तिर्ग, गिरातािप होन्ति मरणािर पाषुणान्त ।

मिगाणो न पक्षीन बोधिसलम्ब आरोजेमि । सो साख पक्कोसापेखा आह्—सम्म । वह मिगा नस्मिन । एकनेन मिनाब्ये सीन इतो पट्ठाय मा कक्षेत्र मिगे विकासन् । धम्मगिक्यद्वाने 'मिगान वारो होतु एकदिवन मम पटिसाय वारो पाडुणातु, एकदिवम नव परिसाय वारो पाषुणातु । वारणनी मिगो गल्या धम्म-गिक्काय मीन ठवेल्या निवज्जतु । एक सन्ते मिगा भीता न भविसस्तिति ।

सो साधित सम्पर्टिच्छि ।

नतो पट्ठाय बारप्यत्तोव मियो गत्त्वा धम्मगण्डिकाय गीव ठरेत्वा निपञ्जित । भनकारका आगत्त्वा नत्य निपन्नकमेव गक्रेत्वा गच्छिति ।

अयेकदिवस साल मिगस्स परिसाय एकिस्सा गब्भितिमिगिया बारो पापुणि । सा साल उपसर्कामित्या-सामि ! अहस्हि सब्भिणी, पुनक विजायित्वा हे जना वार्र गिसस्सास, सदह बार अतिक्कामेहीनि आह ।

मो—न सक्का तब बार अञ्जेस पापेनुं, त्वमेव तुद्धः पत्त^{्र} जानिस्समि गच्छाहीति आह । सा तस्स्मिश्वरीसन्तिका अनस्मह अळभमाना बोधिमन् उपसक्तमित्वा तमत्य आरोजीस ।

मो तस्मा वचन मुल्ता [चिन्होसि-पुब्बे बोधिसत्ता हि परेसं दुक्व दिस्वा अत्तनो जीविन नापेक्वन्ति । अनहितनो परिहतमेव तेसं गहतरे होति ।

१ रो० – धम्मगण्डिकठ्ठाने । २ स्था० – पुर्ता

सयं जीवन्ति सकुणा पसू सब्बे वने मिगा। जीवयनि परे थीरा सन्ती सत्तिहते रता॥ वित्तं अंगञ्च पाणञ्च चत्ता तेहि हिताय च । स्त्राप्ते वहु सतं सन्तारेस्स महेदवेश ॥ इमिना सारहीनंन कायेन च अपुञ्जता। अहत्ते तुन् यं लाभं लिमस्सामि अर्थ थव ॥ न्ति ।

हित चिन्तेरना आह⁵]-होतु गण्छ त्व अहं ते वारं अनिकानिन्मामीनि सरं गत्तवा धम्मनण्डिकाय सीस करवा निर्माण्य । मत्तवारकोर् दिस्चा ज्व्यामयो मिनराजा गण्डिकाय निमन्नो किंदु यो कारणिन वेरेन गन्तवा रञ्जो आरोचेसि। राजानावदेव रथं आरख्ट सहन्तेन गरिवारेन आगन्तवा वेधिसनः दिस्वा आह-सम्म निगराज । नतु नवा तुस्दे अभयं दिश्वे केस्या त्वे इच निमन्नोति ?

महाराज [।] गरिभणी मिगो आगस्या मम बारं अध्यस्म निगस्स पाथेहीति आह । न सक्का खो पन मया एकस्स मरणदुस्स अञ्ञस्स उपरि पिक्खितनु । स्वाह असनो जीवित तस्सा दत्वा तस्सा सन्तक मरण गहेत्वा इथ निपक्षो । मा अञ्ज^र किञ्चि आसकित्य महाराजाति ।

राजा आह—सामि ! सुवण्णवण्णमिगराज ! मया न नादिसो खन्तिमेनानृहयमम्पन्नो मनुस्सेमुपि दिह्टपुब्बो,नं न ते पसन्नोस्मि । उट्ठेहि तुस्हञ्च नम्सा च अभय दम्मीनि ।

द्वीहि अभयं रुद्धे अवसेसा कि करिस्सान्त नरिदाति ?
अवसेसानीन्य अभयं दिम्म सामीति ।
मद्वाराज ! एवस्य उद्याने येव मिगा अभयं रुभिस्सन्ति, सेसा कि करिस्सन्तीति ?
एतेस्तिम अभयं दिम्म सामीति ।
मह्नाराज ! सगा ताव अभयं रुभभन्तु सेसा चनुष्यदा कि करिस्सन्तीति ?
एतेस्तिम्य अभयं दिम्म सामीति ।
महाराज ! चनुष्यदा ताव अभयं रुभभन्तृ दिजगणा कि करिस्सन्तीति ?
एतेस्तिम्य अभयं दिम्म सामीति ।
महाराज ! दिजगणा ताव अभयं रुभिस्सन्ति । उदके वसन्ता मच्छा कि करिस्सन्तीति ?
एतेस्तिम्य अभयं दिम्म सामीति ।

्व महामत्तो राजानं सब्बसतान अभयं याचिन्वा उट्ठाय राजान पञ्चमु मीलेषु पित्र्ठापेरवा "धम्म चर महाराज ! मानापितुमु पुनर्षानामु बाह्यणगहणितकेनु नेगमजानपदेषु धम्म चरको सम चरको कायस्स भेदा एरम्मरणा मुगति समा लोक गमिससमीति राज्यो बुळालेह्हाय पम्म देगेरवा कतिगाह उच्याने बाह्या चर्चा ओवाद दत्वा मिगगणपित्रिनो अराज्य पाचिस । मापि को मिगमेनु पुन्ककिकस्वित्त पुन बिजायि शो केलिमानो साव्योगस्स सन्तिक गच्छित । अयन माना तस्स मनिक गच्छक्त दिखा पुन ! इतो पट्टाय मा एतस्स मन्तिक गच्छ नियोषसीच सन्तिक गच्छित ।

> निग्रीघमेव सेवेय्य न सालमृपसवसे। निग्रीधस्मिमसंसेय्यो यण्वे सार्लास्य जीवित ॥ न्ति । [१३७]

नत्य **निग्रोधमेव सेवेय्यांति** तात[ा] त्वं वा अञ्जो वा अस्तनो हितकामो निग्रोधमेव सेवेय्य, भजेय्य उपसेकमेय्य। **न सावमपसंवसेति** सावमिगं पन न उपसेवसे, उपगम्म न संवमेय्य, एतं निस्साय जीविकः न कप्पेय्य।

१ सीहलपोत्थके न विस्सति ।

निमोविस्मं वर्तं सैय्योति निमोवरञ्जो पादमूलं मरणिप्प सेय्यो, वरं उनमं । यञ्चे साश्चरिमं जीवितन्ति यन्य न साश्चरस सन्तिके जीवितं तं नेव सैय्यो न वर न उत्तमन्ति अत्थो ।

ततो प्रट्राय च पत अभयलबका मिगा मनुस्सात सस्साति सादिना । मनुस्सा लढाभ्या इमे मिगाति पहरिष्तुं वा पलापेनुं वा न विसर्हान्त । ते राजगणे सिन्निपतित्वा रञ्जो तमन्यं आरोचेनुं। राजा मया पमप्रेन निग्नो-धमिगवरस्स वरो दिन्नो । अर्ट रज्जे जहेय्यं न चत परिञ्जो । गल्डप न कोचि मम विजिने मिगे पहरिन्तुं लजतीति ।

नियोधिमिगो ते पर्वत्ति मुल्बा मिगगणं सिन्निपातापेखा — इतो पट्छाय परेसे सम्सं लादितुं न लभ-याति मिगे वारैत्वा मनुम्मानं आरोवापेमि । इतो पट्छाय सस्मकारकमनुस्मा सस्सरक्षणस्यं वित मा करोन्तू स्रते पत आर्विधिशत्य पण्यासञ्ज बर्ग्यनूति । नतो पट्छाय किर सेनेमु पण्णावस्थ्रमञ्जा उदपाधि । ततो पट्छाय पण्यासञ्ज अर्तिकत्मनक्तिमागे नाम निष्य । अयं किर तेमं बोधिमत्तनो लद्धजोवारो । एव मिगगणं ओविदित्वा सोधमत्तो यावतायुकं टल्वा मद्धि मिगेष्टि ण्याकम्मं गतो । राजापि बोधिमत्तस्य ओवादे छन्वा पुष्टप्रानि करवा यथाकम्मं गतो ।

सन्या न भिक्कवं । दानेवाह पेरिया व कुमारकम्सपम्स च अवस्मयो, पुब्बेषि अवस्सयो एयाति । इसं धम्मदेसनं आहरित्या चतुष्वच्यम्मदेसनं वितिबद्देत्वा दे वत्युनि करेत्वा अनुसन्ति घटेता जातकं समोधानेसि। नदा संग्वमिमां देवदतो अहांसि परिमारिस्स देवदन्योग्साय, सिप्येम् यरी अहोंसि, पुन्तों कसारकस्मयो । राजा आन्तदा । निग्नोधिमाराजा पत्र जहांस्व अहोंसिन्ति ।

नियोध मिगजातक

३. कण्डिनजातकं

विरत्यकाण्डन सल्लानः इदं सत्या जेतवने विहरन्तो पुराणदुतियिकापलोभनं आरब्ध कथेसि । त अट्ठनिपाते इन्द्रियजातके आविभविस्सति ।

पच्चपन्नवत्यु

भगवा पन त भिक्कु एतदबोच[१३८]मिक्कु' पुब्बेपि त्व एत मातुगामं निस्माय जीवितक्कय पत्वा दीतिक्विकेसु अगारेमु पक्कोति ।

> भिक्ष्यू तस्सत्थस्साविभावत्थाय भगवन्तं याचियु । भगवा भवन्तरेनपटिच्छन्नं कारणं पाकटमकासि । इतो परं पन भिक्ष्यनं याचनं भवन्तरपटिच्छन्नं तञ्च अवत्वा अतीतं आहरीति एत्तकमेव ववस्वाम ।

हता पर पना ममसून याचन भवनत्त्रपाटच्छक्र तञ्च अवस्त्रा अतात आहराति एतकम्ब वक्षणाः । एतके वृक्षोपि आयाचनं यलाहरूकम्बतो चन्दनीहरणूपमाय भवन्तरपटिच्छक्रं कारणभावाचाति सब्यमेल हेट्टा कुत्तरमेव योजेत्या वैदितम्बं ।

अतीतवस्थ

अनीते मगधरट्टे राजगहे मगधराजा रज्जे कारेति । मगधवासिकानं मनमसमये मिगान महार्थार-पत्चो होति । ते अरज्जे पत्कपादं पिवसिन । तत्य एको अर्ज्ज्ञणवासी पत्रकरेया मागानं । एकाय गामन्तवासिनया मिगापीतिकाय सद्धि सन्यवं कत्वा तेसं मिगानं राज्यतपादनो ओरस्त पुन गामनं आंसरणकाने मिगापीतिकाय परिव्यक्षिनत्ता तेहि सद्धि वेषे जीतरि । अप नं सा आह- एक कासि अप्प ?

पब्बतेय्यो बालमिगो।

गामन्तो च नाम सासंको सप्पटिभयो मा अम्हेहि सद्धि ओतराहीति ।

सो तस्सा पटिबद्धवित्तताय अतिवन्तित्वा ताय सदियेव अगमासि

सगववासिनो इदानि मिगानं पञ्चतपादा ओनरणकाळीति ञात्वा सम्मे पिटच्छप्रकोट्टकंसुतिर्दर्शन ते सिम्प द्विश्वं आगमणमम्मे एको खुरको पिटच्छप्रकोट्टके टिनोहीत । मिगगोतिका मनुस्मागर्थ प्राविश्वा एका खुरको दिनो भविस्सर्वाति ते बालामगं पुरतो करवा सर्थ पच्छतो अर्थासा खुरको एकंत मरणद्वारेनेव मिगं तस्थेव पार्तीस । मिगपोतिका सन्विद्धानां ज्ञात्वा उप्पतित्वा वातगतिवा पर्लाय । खुरको कोट्टका निस्स्मित्वा सर्म ओककतित्वा अर्थिक करवा बीनच्चिकंसु अर्थार्येनु मधुरमंस पविस्वा वातित्वा पानीयं पितित्वा अवसेम कोहितविन्दृहि पचपरतिहि काजेवाराव वारके तोमतो वर्ष अगमास ।

तवा बोधिसत्तो तस्मि बनलण्डे देवना हुत्वा निब्बत्तो होति । सो तंकारणं दिस्वा इमस्म बालियनस्स मरणं नेव मातरं निस्साय, न पिनरं निस्साय अपलो कार्म विस्माय कार्मानीमत्त हि मत्तः मुताविया हत्वच्छेदादि दुमातियञ्च पञ्चविषयन्यनादितानय्पकारक दुस्सं पापुणन्ति परंगं मरणहुम्मूणादर्गार नाम इर्मास्म छोकं गरिहनमेव । यं जनपरं मातुणामी विचारेति अनुसामित सो इत्यिपरितायको जनपरोपि गरिहतोच सेस्ता मातु-सामस्म बनं चच्छन्ति तेषि गरिहत्ता यं बाति एकाय गावाय तीणि गरहबस्त्यूनि दम्मेतवा वनदेवतामु सासुकारं इत्या गव्यप्रपादीहि पुष्यमानासु मधुरेन सर्गन तं वनसण्डं उकारेत्वारं प्रमाय गावाय यस्म देसीस — [१२ स्

> धिरत्युकण्डिनं सल्लं पुरिसं गाळ्हबेथिन, घिरत्यु त जनपदं यत्थित्यी परिनायिका ।

तेचापि विकिता समा ग्रे इत्थीत क्या गर्नात ।

सत्या इमं धम्मदेसनं आहुरि वा सच्चानि पकामेति । सच्चपरियोसाने उवकाण्ठितिश्वक्ष सोतापति-फल्ने पतिट्रहि । सत्या हे बर्ग्यूनि कपेला अनुसन्धि घटेला जातकं समोधानेति । इतो परंपन हे बर्ग्यूनि कर्त्वेलाति इस अवत्या अनुनन्धि घटेल्यानि एसकनेव बस्थाम । अबुसन्धि पनः हेट्टाबुस्तयेनेव योजेला गहेताकं । तदा पन्यवेत्यो पिगो उक्कण्ठितभिक्षुकृतित । सिगपोतिका पुराणदुनियिका । बामेसु दोस दस्तेत्वा पम्पं दीसकदेवता पन अहमेव अहोसिनित ।

कण्डितजातकं

४. वातमिगजातकं

न किरस्थि रसेहि पापियोति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो चुल्लपिण्डपातिकतिस्सत्थेरं आरब्भ कथेसि ।

पच्चपञ्चवस्य

सत्यरि किर राजगई उपनिन्माय बेळुवने विवरूत्ते तिस्सङ्ग्रमारो नाम महाविभवस्य सेट्ठिकुलस्य पुत्तो एकदिवसं बेळुवनं गत्या सत्युधम्मदेसनं मुल्वा पञ्चिजनुकामो पञ्चज्जं साचिरवा मातापित्रहि अननुञ्जातता पटिन्मिक्तो सत्ताहं भत्तच्छेदं कर्त्वा उट्ठ्याल्वयेरो विद्य मातापित्ररो आनुजानापेत्वा सत्यु सित्यके पञ्चित्र व सत्यातं पञ्चालेत्वा अद्भारसम्पत्तं बेळुवने विद्यारत्वा जेतवनं अगमासि । तत्रातं कुळपुतो तेरसपूर्तगानि [१४०] समादाय सावस्ययं स्परानं पिष्टाय चरमानो कालं बीतिनाभित्त । नुन्तरिण्डपातिकत्तिस्पत्येरो नामाति बुत्तो यगनतके चली विवर्षद्वासने पाकटोपञ्चातो अद्योस ।

तिस्म काळे राजगहे नक्सलकीलाय बत्तमानाय येरस्स मानापिनरो वं तस्स गिठीकाले आहेशि । आभरणभव्यके से एसत्वयोग्येक निम्मिणिया यटे देशेला अञ्जासु नक्सलकीलासु अग्झके पुत्तो इमिना इमिना अलंकारेन अलंकतो नक्सलं कीलित ते नो एकपुत्तक गहेल्या समयो गोनमो सावस्थिनगरं गतो. कहे नुवो सो एतरहि निम्मिनो, कहे दिजांति बत्या रोटिना ।

> अथेका बण्णदासी त कुलंगन्त्वा मेद्ठिभग्यि रोदन्ति दिस्वा पुण्छि—कि अय्ये रीदमीति ? सातमत्यं आरोचेसि।

कि पन अय्ये । अय्यपुत्ती पियायनीनि ?

असुकञ्च असुकञ्चाति ।

सचे तुम्हे इमस्मि गेहे सब्ब इम्सरियं मध्हे देथ अहं वो पृत्त आनेम्सामीति।

गेट्ठिभरिया माध्नुत सम्पर्टिच्छस्वा परिब्बय दत्वा महलेन परिवारेन त उच्योजेगि-गच्छ असती बलनसमपुत्तं आनेहीरि।

सा परिच्छान्यानं निवासा सार्वास्त्र गन्या थरस्य भित्रकावारवीषियं निवास गहेला मेट्टिकुछा अगनमन्त्रस्य थरस्य अदरस्या अनतो गरिचारेग्व गरिवतो धरस्य पिष्ठाय पविट्टस्य आविशोव उक्कुद्वभिन्नवं रमकभिन्नकच्च दला रसतक्षाय वरिश्यता, अनुकामन गई निसीदापेखा भिन्नव ददमाना धरस्य असनो वसं उपननभावं अच्या गिष्यानात्र्य दस्सेवा अनोगस्ये निर्याज्य ।

थेरोपि भिक्काचारवेलाय मपदान चरना गेहडार अगमामि । परित्रनो थरस्म पन गहन्त्रा थेरं घरे निसीदापेसि । थेरो निसीदित्यान कहं उपासिकानि पृथ्छि ।

गिलाना भन्ते [!] तुम्हाक दस्सनं इन्छनीति ।

मी रसनग्हाय बढी अनतो बनसमादानं भिग्दरवा तस्सा नियन्तर्शन पार्विम । मा अन्तनो आगत कारणं कथेरवा तं गठोभेरवा रसनग्हाय बम्घिरवा उप्पत्वाबेरवा अन्तनो बमे ठपेरवा यानं निमीदापेरवा महत्तेत परिवारेन राजगृहमेव अगमासि ।

सा पबुत्ति पाकटा जाता । भिक्कु थम्मसभायं सन्तिसिन्ता चुन्लपिण्डपातिकतिस्सत्येरं किर एका बण्णदामी रसतण्डाय बन्धित्वा आदाय गताति कथं समुट्ठापेम् ।

सत्था धम्मसभं उपगन्त्वा अलकतासने निसीदित्वा कायः नृत्य भिवस्त वे ! एतरहि कथायः सन्तिसिन्नाति

ते तंपवत्ति कथयिस।

न भिनक्षत्रे ! इदानेव एमो भिनन्तु रसनण्हाय बज्जिस्वा तस्मा वसंगतो, पृथ्वेपि तस्मा वसंगतो येवाति बत्या अतीतं आहरि-

अतीतवस्थ

अतीते बाराणसियं रञ्जो बहादनस्य सञ्जयो नाम उच्यानशालो आहोषि । अयेको बानिमगो तं उच्यानं आगन्तवा सञ्जय दिस्त्वा पलायिन । सञ्जयोपि न तं तज्जेत्वा [१९१] नीहरनि । मो पुनपुनं आगन्त्वा उच्यानं येव चरति । उच्यानपालां पातांव उच्यानं नानप्यकारकानि पुष्पकलानि गहेत्वा दिवसे दिवसे रञ्जो अभिहरनि ।

> अथ नं एकदिवमं राजा पुष्छि-अस्थि पन सम्म उय्यानपाल ! उय्याने किञ्च अच्छरियं पस्ससीति । देव ! अञ्ज न प्रमामि एको न वानमिगो आगन्त्व। उय्याने चर्गत एतं पस्मामीति । सन्त्रिस्सामि पन तं ग्रोहतिन ?

थोक मध लभन्तो इम अन्तो राजनिवेसनम्पि आनेतः सविखस्सामीति।

गजा तस्स मधु दापेसि । सो तं महेत्वा उच्यानं गन्या वातमितम्य नग्णटाने निर्णातः मधुना मस्बेत्वा निर्लीय । मिगो आगन्त्वा मधुमिब्बतानि तिर्णानि त्यादित्वा ग्यतप्रहाय बढो अञ्जत्र अगन्त्वा उच्यानमेव आगच्छनि । उच्यानपालो तस्स मधमिब्बतनिर्णेस पञ्चभावं ऋत्वा अनुबक्तमेन जनातं इस्मेसि ।

मो ने दिस्या कतिपाह पैकायित्वा पुनप्पुनं पस्मतो विस्सासं आपिकारवा अनुकक्षेत उध्यानपालस्स हत्यं ठिनित्वानि सादिन् आरडो । मो तस्स विस्सासं आपत्मभाव अत्वा याच राजनिवेशना श्रीध किलक्रकेहि परिक्षिणत्वा नहं तह नावाभागं पातेच्या मधुकाकुकं असे लगोत्वा तिषक्तापां उपलब्धके उपेत्वा मधुम्मिक्ततानि निप्तानि मिगरन पुरतो पुन्तो विकित्ता अल्लो राजनिवेशनं येव अपमािम । मिगं अल्तो पविट्ठे हार पिदहितु । मिगो मनसो दिक्या करणमानो मण्णभयमिनो अल्लो निवेशनंत्रणे आधावित परिचावनि ।

राजा पासादा ओरुस्ह तं कम्पमानं दिस्वा वानिमगो नाम मनुस्मानं विट्ठट्ठानं सत्ताहं न गच्छित तिज्वनट्ठानं यावजीवं न गच्छिति , सो एवरूपो गहनिनिस्मतो वातिमगो रसनण्हाय बढो इदानि एवरूपं ठानं आगतो। नत्थि वन भो ' होके रसतण्हाय पापकतरं नामाति इमाय गाथाय धम्मदेमनं पट्टेपीस –

न किरत्थि रसेहि पापियो आवासेहि वा सन्यवेहि वा । बातमिरां गहननिस्सितं बसमानेसि रसेहि सब्जयो ॥ ति ।

तस्य किराति अनुस्यनवस्य निपातो । रसेहीति जिल्हाविञ्जेग्येहि मधुर्गम्बलार्दाहि । पापियोति पापनारो । आवासेहि वा सम्बबेहि बाति निवद्धवस्तरुठानसंखानेषु हि आवासेषुपि मित्रस्त्रवेश्वीप छल्दामो पाप-कोव नेहि एन सक्करदापारिभोगेहि आवासेहि वा मित्रस्त्रवेशि हा सत्तुपेन सहस्मणुगेन व पुत्रपिवेशनर्द्दन आवारो विज्ञान जीविनि-श्यवाननाय अभावेन व सक्करदापारिभोगरसाव पानतराति । वोधिसत्तां पन अनुस्त-वागनि मिर्ग विव इमान्य कत्वा न किरतिय स्तिष्ट पापियो आवासेहि वा सम्बबेहि साति आह । उदानि नेन पारिस्म भावं दस्सेन्तो वातिमान्ति आदिमाह । तत्य गहनिनिस्त्रतित् [१४२] गहनद्दाननिस्त्रतं, इदं वृत्तं होति—पस्तय रसान पापियमाव इमं नाम अस्त्रवातनी सहत्तनिस्त्रते वातिमा अन्त्रयो उथ्यानपान्नो मधुरसेहि अन्तनो वसं आतेमि । मक्वविप मच्छन्दरापारिभोगेहि न्येहि समं नाम अन्त्रे वापकतरं जामकनरं नत्यीति रस्तरुहाव आतेमि ।

सत्था न भिरुष्ये । सा बण्णदासी इदानेबेत रसनष्टाय बन्धित्वा अतनी वग्ने करोति पुत्र्वेषि अकामि येवाति । इमें धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जानकं समोधानंसि । तदा सञ्जयो अयं वण्णदासी अहोसि । बानमियो बल्लिपण्डपातिको, बाराणसि राजा पन अहमेव अहोसिन्ति ।

बातमिग जातकं

५. खरादियजातकं

अठट्सुरं खराबियेति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो अञ्जतरं दुब्बचिमक्खु आरब्भ कथेसि ।

पच्चपञ्चस्य

सो किर भिक्कुदुब्बचो ओबादंन गण्हाति । अथ नंसत्यापुच्छि-सच्चे किर त्वं भिक्कु [।] दुब्बचो ओबादंन गण्डसीति ?

सञ्चं भगवाति ।

सत्था-पुब्बेपि त्वं दुब्बचताय पण्डितानं ओवादं अगहत्वा पामेन बढोव जीवितश्खयं पत्तांति वत्वा अतीनं आहर्ष्ट--

अतीतवस्थ

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदलं रज्ज कारेन्ते बोधिमनो मिगो हुत्या मिगगणपिण्डानो अरङ्गे बसति । अयस्य भगिनी मिगी पुत्तकं दस्सेत्या भातिक [।] अयं ते भागिनेच्यो, एतं मिगमायं उत्गण्हा-पेणीत परिकारणिस ।

सो तं भागिनेथ्यं असकवेलाय नाम आगन्त्वा उग्गण्हाहीति आह ।

सो बुत्तवेलाय नागच्छति । यथा एकदिवसं एवं सन्तिदसं सत्तोवादे अतिकरूनो मो मिगमायं अनु-स्माष्ट्रत्वाद विचरन्तो पासं विक्रमः। सानापिस्म भानर उपसंकमित्वा कि ने भानिकः।भागिनय्यो मिगमायं ज्ञयणकापिकोति पच्छि ।

बोधिमलो च तस्स अनोबादकस्य मा चिन्तीय न तं पुत्तेन मिगमाया उग्गीहताति बत्बा इदानिप तं अनोबिदितकामोव हत्वा इमं गाथमाह-

> ''अट्ठखुर खरादिये मिग वकातिविकतः । सत्तकालेहतिककत्तः न न ओवदितुस्सहे ॥'ति ।

तत्व **अहल्एनित** एकेकॉम्स पार्ट द्विष्कं द्वित्रं लुरानं वसेन अट्ठकुरं। **सराव्यित** तामेन आठर्यात । मिसित सव्यसंगाहितवन्तरं। **बंकालिबॉकलित** सुरूँ वेकानि असंग अनिवंकानीनि कंगतिवंकानि । तारिसानि मिसीत अस्य अत्योति वंकातिवर्षी, तं [१४३] वंकातिवर्षितनं। स**त्तकारेहतिकक्तत्ति**स सत्तिह ओवादकारुहि ओवार्य अतिकरूनं। न ते वे**षित्यस्तिति** एवं ह्वचामिनं अहं ओवार्त्नं न उस्तहामि। एत्सम मे ओवादस्या

चिर्मास्य न उपार्श्वनीति दस्तेति । अव नं दुब्बचिमां पासे बद्धे लुहो मारेत्वा मशः आदाय पक्कामि । सन्यापि न व्यं सिम्बन् । इदानेब दुब्बचो पुत्वीष दुब्बचो देवाति । इसं धम्मदेमने आहॉरिस्वा अनुसांस्य भटेत्वा जानकं समोधार्तमा । तदा भागिनेय्यो मिगो दुब्बचभिक्च् अहोसि । भगिनी उपाल्यक्षणा । ओवादकमिगो पन अहमेय अहोसिति ।

जरावियज्ञातकः

६. तिपल्लत्थमिगजातकं

मिगम्ति परुक्तस्यन्ति इदं सत्या कोसम्बियं बदरिकारामे विहरन्तो सिक्खाकामं राहुलत्येरं आरब्भ कथेमि ।

पञ्जूपञ्जबस्यु

एकिस्स हि काले मत्यिर आळिवनगरं निस्साय अस्माळेचे चेतिये विहरनते वह उपासका च उपासिका च पित्रज्ञू च मित्रज्ञुणियो व बिहारं अम्मसवमाय गण्डिना। दिवा अम्मसवनं होति । गण्डल्ते पत काले उपासिका च मित्रज्ञ्गियो च न गाँच्छमु । भित्रज्ञु ज्ञेत उपासका अहेतुं । ततो पट्ठाय रत्ति अम्मसवनं जातं । अम्मसवनपरियोगाते चे रा भित्रज्ञु अनानो अत्तनो असन्द्रात्नानि गण्ड्यन्ति । वर्षा उपासकेहि सद्धि उपट्ठान-साल्य सर्यन्ति । तेषु निहं उपातेषु एकच्चे चुष्कुष्टस्सासा काक्ष्य्रक्रमात दन्ते खादन्ता निर्पाज्यसु । एकच्चे मुहृतं निहायित्वा उट्टोहमु । तेसे तं विष्यकारं दिस्सा भगवतो आरोचेसु ।

भगवा ''यो पन भिक्तनु अनुपसम्पन्नेन सह सेय्यं कप्पेय्य पाचित्तियन्ति'' सिक्लापदं पञ्जापेत्वा कोसम्ब अगमासि ।

तत्व भिक्क् आयस्मनां राहुलं आहंसु-आबुसो राहुल ! भगवता सिक्कापदं पञ्जतं, इदानि त्वं अन्तां वसनट्टानं जानाहीनि ।

पृथ्वं पन ते भिक्त भगविन च गारथं नस्म चायस्मतो सिक्बीकामत पटिच्च तं असनो बसन्द्रानं आगत श्रीतांवय संगर्शनः । लहुकमञ्चकं पञ्जापेत्वा उस्मीमकरणत्याय भोवरं देन्ति । तं दिवसं पन सिक्बा-पदभवेन वमन्दरानांग्य नारंगु ।

राहुळ्अहोपि पिना मित दमबलस्स वा उपज्यायो मेति धम्मसेनापतिनो वा, आवरियो मित महा-मोग्गन्छानस्स वा चुन्लपिना मेति आनन्दरवेरस्स वा सन्तिक अगन्त्वा दसबलस्स वलञ्जनवच्चकुटि श्रम्यविमानं पविसन्तो विय पविसित्वा वाग कर्णोस । [१४४]

ब्हान हि बल्डजनकुटिया डार्र भुपिहिन होति । गय्यभूपपिभग्टकता भूमि गय्यदाममालादामानि आमारिजानव होन्ति मख्यरित दीषो आयति । राहुलभदो पन न तस्सा कुटिया इमें सम्पत्ति पटिच्य तस्य वामें उपन्तो । भिक्षहि पन वमनट्ठान जानाहीनि बुनना ओवादगारवेन सिक्खाकामताप तत्य वाम उपगतो ।

अन्तरन्तरा हि भिक्कषि तं आगरमन्त हुरतोवागच्छन् दिस्वा तस्म बैसंमतस्थाय अन्तोमुद्धि-सम्भुञ्जात वा कचवरण्डद्दिनिकं वा दहि "बिरिस्वा तस्मि जात्ते आवृत्ती । दसं केन छहरितन्ति वदन्ति । तस्य केहिब राहुलो द्रमिता समोन गत्तीति कुले मो आगरमा नार्ट्भमन्ते । एनं जानामीति अवस्वाव तं परिसामस्वा समय मे अनेति सुद्धारित्वा प्रच्छित । एवसेम विस्वादासी । सो तै सिक्वाकामने वेव पटिच्य तस्य बार्स उपानती ।

अथ सन्था पुरे अरुण येव वच्चकुटिदारे ठत्वा उनकासि । सोपायस्मा उनकासि । को एसोति ?

अहं राहलोति निक्खमित्वा बन्दि ।

कस्मात्वं राहुल ! इध निपन्नोति ?

वसनट्ठानस्स अभावनो । पुब्बं हि भन्ते । भिक्क् मम संगहं करोन्ति, इदानि अलनो आपत्तिभयेन बसनट्ठान न देन्ति । स्वाह इद अञ्जसं असंघट्टनट्ठानन्ति इमिना कारणेन इभ निपन्नोति । ११४ जातकटूकथा

अय भगवतो राहुलं ताव भिवलू एव परिच्चजनता अञ्जे कुलदारके पब्चाजेत्वा कि करिस्सालीति धम्मसंवेगी उदयादि । अय भगवा पातोव भिवलू सन्तिगतेत्वा धम्मसेनापीत पटिपुष्टि—जानासि पन त्वं सारिपुत्त ! अञ्ज कत्यिच राहुलस्य बृत्यभावति ?

न जानामि भन्तेति ।

मारिपुतः ! अञ्च राहुलो बन्बसुटियं बसि । सारिपुतः ! तुम्हे राहुलं एवं परिच्यन्ता अञ्जे कुलदान्ये पब्बाजेत्वा कि करिस्सयः ? एवं हि हत्ता द्वारिम सासमं पत्वित्ता निप्पतिद्दा भविस्सत्ति । इतोदानि पट्ठाय अनुपसम्पन्ने एकडेव दिवमे अनानो सन्तिकं वसारेत्वा नित्यदिवसे तेमं वसनद्दानं ज्ञात्वा बहि वासे-सानि इसं अन्यज्ञ्ञातः करवा पन मिनकापदं एज्ञापेति ।

निस्म समये धम्मसभावं सिश्वसिन्ना भिनक् ग्रहुक्तत्व गुणकर्ष कवेन्ति—यस्यवाद्तीः । याव सिन्ना-कामो नगायं राहुको । 'तव समन्दुहानं जानाहीति' बुनी नाम अहं सम्बक्तस्त पुत्तो, तुन्हे के सेनासन्तरः 'गुन्हे येव निक्तमधानि एक निष्कृतिक अप्यटिप्कारित्वा वक्चकुटियं वासं कर्यस्तिनि । एवं तेनु कव्यसमानेमु सत्या अम्मसमे उपाण्या अर्केकतासने निसीरित्वा काय तत्य निक्कत्वं । एनरोह कपाय सिन्निस्न्राति आहः।

भन्ते । राहलस्स सिक्खाकामकथाय, न अञ्जाय कथायाति ।

सत्या न भिक्सवे [।] राहुलो इदानेव सिक्साकामो पृब्वे तिरच्छानयोनियं निब्बत्तोपि सिक्साकामो येवानि वत्वा अनीतं आहरि-[१४५]

अतीतवत्य

अनीने राजगहे एको मगधराजा रज्जे कारेति । तदा बोधिमनो मिगयोनियं निव्यत्तिवा मिगगण-परिवृतो अरञ्जे वसति । अथस्स भगिनी अननो पुनकं उपनेत्वा भानिक ! इमें ने भागिनेव्य मिगमाय सिक्वा-पेहीति आह ।

बोचिससी मायृति पटिस्सुणिखा-गच्छ तान । असुकंबेजाय नाम आगल्या सिक्खेट्यासीति आह् । सो मातुकेन बुतवेळं अनितकक्षिय्या नं उपमक्तिय्या मिगमार्थ भिक्खि। मो एकदियमं वने विचरत्नो। पासेन बढ़ो बढ़गर्व रिव । मिगगणो पट्टायिखा-''धनो ने पामन बढ़ोनि' नस्म मानया आरोचेसि ।

सा भातुसन्तिकं गन्तवा- भातिक ! भागिनेय्यो ते भिगमायं सिक्लापितोति प्रिच्छ ।

बोधिसमो मा त्वं पुत्तस्य किञ्चि पापकं आर्माकः । मुग्गहीना नेन मिगमाया । इदानि त हासय-मानो आर्गाण्डस्सनीनि बत्वा इमं गायमाह-

> "मिग तिपत्लत्यमनेकमायं अट्ठलुरं अड्डरसावपायि । एकेन सोतेन छमास्ससन्तो छहि कलाहतिभोति मागिनेय्यो ॥" ति ।

तत्य मिगति भागिनंद्यमिगं । तिवस्त्ययन्ति पत्कर्त्य बुण्यति सवनं उभोहि पत्सीह उजुक्षमंत्र व गोनित्तानकवर्षनाति तीहालारिह पत्कर्त्य अस्म तीचि वा पन्कर्त्याति अस्माति तिपत्कर्त्य । त तिपत्कर्त्य । अनेकसायिक बहुमायं, वह वण्यनं । अद्वुष्त्वर्त्ति एकेकस्मियं विद्याने वह नतं अद्वुष्त्वर्ति समझा-गतं । अद्वुरत्तात्त्रपायितित पुरित्तानां अनिकसीत्त्वा सोक्तम्यायां अरुण्यते आणानम् पानीत्त्रप्त प्रवनतो अद्वुरत्ते आपं पिवनीति अद्वुरत्तापपायी तं । अद्वुरत्ते आपं अपायित्ति अत्यो । मस मागिनेत्यं सिगं अहं सामुकं सिमायां उपाण्डापीत् । कर्ष ? यथा एकेन सोतेन हम्मात्त्रकाते छहि कासहित्यस्ति भागिनेत्यति । इर्थ वृत्तं होति अहं हि तव पुनं तथा उपाण्डापीत न यथा एकस्ति अपितासिकसीते वानं सिक्रिकिट्वा पटिवा अल्लोनेन एकेन हेट्टिमतोतेन तथा हमार्थे अस्मात्त्रो छहि कलाहि हुर्द्वक सिगोति छहि कोट्टावेहि अल्लोत्यन्ति, बज्वेतीति अत्यो । कतमाहि छिद्विं चतारो पार्च स्वारित्वा एकेन एसेन हैस्याय, बुपेहि तिष्यप्रवृत्यमेन्त्र, जिल्लानिकार्यने, उदरस्त उद्भुगानभावकरणेन, उच्चारएस्सान्यवस्तुज्यनेन वातसिम्नहम्भनेनाति । अपनो नयो-पादेसु । गुहेत्वा अभिमुचाकन्दनेन, गटियणामनेन उभनो पस्सेबु मञ्चरणेन उदरे उद्धे उन्तिचयनेन अयो अविक्यपनेनाति हमाहि छहि कछाहि यदा अनिभोगि मतो अयन्ति सम्भ उपपादेखा बञ्चित । एव तं मिगामाय उपण्यूपिसित्त वेशेनि । अपने नयो न उपण्यूपिसित्त वेशेनि । अपने नयो न उपण्यूपिसित्त वेशेनि । अपने नयो न उपण्यूपिसित्त वेशित । अपने नयो न उपण्यूपिसित्त वेशेनि । अपने नयो न उपण्यूपिसित्त वेशेनि । अपने नयो न अभिमुक्ति । अपने नयो न अभिमुक्ति । अपने विकासिक वि

एवं वेषियक्तो भागिनेव्यस्स मिपमायाय साधुकं उत्पाहनभावं दस्तेन्तो भागिन समस्तातेसि ।
मोपि मिपपोतको पासे बढो अविष्फरित्या येव भूमियं महाफामुकपस्सेन पादं पमारेत्वा निपन्नो पादानं आसन्न-दुशने मुहेब पहाँत्वा पंतु व तिषानि च उत्पाद्या उच्चात्त्रस्यायः विस्तव्यव्या तीसं पातेत्वा जिह्नं निन्नामेत्वा सरीरे लेलकिन्त्रसं करवा बात्महर्शन उदरं उद्धमातकं करवा अक्लीनि परिवर्तत्वा हेट्रानासिका-मोतेन वातं सध्वरापेन्तो उपरिमासिकासोनेन वातं सन्निष्ठाम्भवा सक्त्यसरीर यद्वभाव बाहापेरवा मनाकारं दस्तीसि । नीलस्मिक्वसापि नं परिवार्त्यः । तास्म तरिस्म श्रतः काला निकीरिया ।

छुद्दो आगन्त्वा उदरं हत्येन पहरिरत्वा पातोव बढ़ो अविस्त्वति पूतिको जातोति नस्म बन्धनरञ्जूक मोचेत्वा एन्येवदानि नं उक्कीनत्वा मम आदाय गीमस्मामीति निरामको हृत्वा साखापनामं गहेतुं आरडो । मिगपोतकोपि उट्ठाय चतुहि पादेष्टि ठत्वा कार्य विवनित्वा गीवं १मारेत्वा महावानेन छिन्नबलाहको

विष वेगेन मानुसन्तिकं अगमामि ।

सत्यापि न भिवनवे । राहुको इदानेव सिक्बाकामां पुढर्शन सिक्बाकामांयेवाति इमं धम्मदेवन आहरिन्या अनुसन्धि घटेत्वा जानकं समोधानेसि । तदा भागिनेव्यामगरोतको राहुको अहासि, माता उपछन्

वण्णा, मातुलिमिगो पन अहमेव अहोसिन्ति ।

नियहत्वस्थ कि गाउँ । जन्म

७. मालतजातकं

काले वा यदि वा मुन्हेति इदं सत्यां जेतवने विहरन्ती हे बुड्डपब्बजिते आरण्म कथेसि ।

पच्चपन्नवत्थ

ते किर कोसलजनपदे एकस्मि अरज्ञ्यवासे वसन्ति । एको काळत्येरो नाम, एको जुण्हत्थेरो नाम । अथेकदिवसं जुण्हो काळ पुण्छि–भन्ते काल ! सीर्त नाम कस्मि काले होतीति ?

सो काळे सीतं होतीति आह ।

अथेकदिवसं काळो जुण्हं पुच्छिन भन्ते जुण्ह !सीतं नाम कस्मि काले होतीति ?

सो जुण्हे होतीति आह।

ते उभोपि अत्तनो कंखं छिन्दितुं असक्कोन्ता सत्थु सन्तिकं [१४७] गन्त्वा सत्थारं वन्दित्या— भन्ते ! सीतं नाम कस्मि काले होतीति पृच्छिम् ।

सत्यातेसं कथं सुत्वा पुब्बेपाहं भिक्खवे! तुम्हाक इमं पञ्हं कर्यास, भवसंखेपगतत्ता पन न सल्लक्ख-यित्याति बत्वा अतीतं आहरि-

अतीतवत्थ

अतीते एकस्मि पब्बतवादं सीहो च व्याघो च हे सहायका एकिस्सा येव गृहाय वसन्ति । तदा वीधि-सत्तोषि इसिषक्वजं पञ्चितवा तरिस येव एव्यतवादं वसति ।अयेकदिवनं तेमं महायकानं मीतं निस्माय विवादो उद्यादि । व्याघो काळे येव सीतं होतीनि आह्—सीहो जुण्हे येवाति । नं उमीपि अत्तनो कंस छिन्दितु असन्कान्ता वीधिसनं चुण्डिस् । वीधिसत्तो इसं गायमाष्ट—

> "काळे वा यदि वा जुण्हे यदा वायित मालुनो । बानजानि हि सीतानि उभोत्थमपराजिता ।" नि ।

तस्य काले वा यदि वा जुक्षेति काळपत्रकं वा जुक्ष्यककं वा। यदा वायति मालुतोति यस्मि समय पुरत्तिमारिकोदो वानो वायति निस्म समय सीते होति। कि कारणा ? वास्त्वाति हि सीताति यस्मा वालं विश्व-संयेव मीताति होत्ति, काळे पत्रकं वा जुक्ष्यवस्य वा एत्य अप्यामाणित वृत्तं होति। उम्मोर्थमपराजिताति उमीरि तुन्हें द्वासिम पञ्छे अपराजिताति। एवं बोधिवताते न सहायकं पञ्चाति।

सत्वापि भिक्कवे । पुब्बेपि मया तुम्हाकं अयं पञ्हो कथित्रोति इसं धम्मदेमनं आहरित्वा संच्वानि पकावेसि, सच्चपरियोसाने द्वेपि ते थेरा सोनापत्तिफले पतिदृठहिसु । सत्या अनुसन्धि घटेत्वा जातक ममोधानेसि। तदा व्यप्यो काळा अहोसि, सीहो जण्हो अहोसि । पञ्हविस्सजनकनापसो पन अहमेव अहोसिन्ति ।

मासुतजातकं

८. मतकभत्तजातकं

एवं चे सत्ता जानेव्यन्ति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो मनकभत्तं आर्ब्भ कथेमि ।

पच्चपञ्चवत्यु

तरिम हि कार्य मनुस्सा बहु अजेळकादयो मारेन्वा कार्यकते अतिक उद्दिग्य मनकभत्त नाम देन्ति । भिक्क ते मनुस्से तथा करोन्ते दिस्वा सत्यारं पुज्छिमु-एतरहि मन्ते । मनुस्सा बट्टू पाणे जीविनक्षयं पापेन्वा मनकभत्ते नाम देन्ति । अरिय न स्त्रो अन्ते । एत्य बड्डीति ?

सत्या न भित्रक्षेत्रे । मनकभन दस्सामानि कर्तेषि पाणानिपाने कानि बहुढि नाम अस्ति । पुर्खोप पण्डिता आकामे निस्तर्ज्ञा १४८]धम्मं देसेत्वा एत्य आदीनवं कथेत्वा सकलजन्दुरीपवासिको एतं कामं जहापेषु । इदानि पन भवसंकेपनत्ता पन पानभृतन्ति बत्बा अतीते आहरिन

अतीत बत्य

अतीने बाराणमियं भृद्धास्त रज्जं कारेन्त्रों एको निष्णं बैदानं पारगू दिसापाभोक्को आवरियकाह्मणो मतकभन्तं सस्मामीनि एक एळकं गाहापेन्त्रा अन्तेवासिके आहु- ताना । इम एळकं नींद नेत्वा नहापेत्वा कण्टे मारु परितिवर्षारत्वा पञ्चंगलिकं रन्त्वा मण्डेत्वा आनेवानि ।

त माधूनि पटिस्मृणित्वा तं आदाय नदि गत्त्वा नहापेत्वा मण्डेत्वा नदितीरे टेपेमुं। सो एळको अतनो पुरुककम्मं दिस्ता एकस्या नाम दुक्का अञ्च मुिन्यस्सामीति मोमनस्मञ्जाो घट मिन्दन्नो विद्य महाहितते हिसत्ता, पुत्र जब शाह्याचो में घोनंत्वा मया लद्धं दुक्कं किमस्सतीति आहाणं कारुव्यं उपादेत्वा महन्तेन सहेत परोदि ।

अय न ते माणबका पुच्छिमु— सम्म एळक । त्वं महासद्देन हिंस चेव रोदि च । केन नुखो कारणेन हिंस केन कारणेन रोदीनि ?

तुम्हे मं इमं कारण अत्तनो आचरियस्स सन्तिके पूच्छेय्यायाति ।

ते त आदाय गन्तवाइद कारण आवरियस्य आरोचे मुं। आवरियो तेसंवचनं मुखा एळकं पुच्छि— कस्मात्व एळक । हिस, कस्मारोदीति ?

एळको अननो कतकम्मं जानिस्सरलाधेन अनुस्तरित्वा ब्राह्मणस्म कर्षे।स—अह ब्राह्मण् ' पुत्र्वे नादिनोध मन्त्रकासकाद्याणी हृत्या मतकमत्त दस्तामोति एकं एळक मारेवा अदासि । स्वार एकस्स एळकस्स धानिनना एकेनुनेसू पञ्चमु अतभावस्तरेनु मीनच्छंद पार्गुणा । अयं मे कोटिय टितो पञ्चमनित्रमा अन्त्रभावो । स्वार्ट् अञ्च एक्षणा कुष्ता मुच्चित्रमाभीति मोमनस्प्रजातो । दीमना कारणेन हीत्र । रोदन्तो पन अर्ज्ञ नाव एकं एळकं मारेरवा पञ्चकानित्तरानि सीमच्छेददुक्ष पत्वा अञ्च नन्मा दुक्ष्ता मूच्चिस्मामि । अय पन ब्राह्मणो मं मारेन्वा अह विच पञ्चकानित्तरानि मीमच्छेददुक्ष लिक्सम्मर्नानि निय कारञ्जेन रोदिन्त ।

एळक[ा] माभायि । नाहत मारेम्सामीति ।

द्राह्मण [।] कि बदेसि [?] तीय मारेन्तीप अमारेन्तीप न सक्का अञ्ज सया सरणा मुञ्चितृत्ति । एळक ! मा भागि [।] अह ते आरक्क गहेत्वा तया सद्धि येव विचरिन्सामीति ।

ब्राह्मण ! अप्पमत्तको तव आरक्क्बो मया कनपापं पन महन्तं बलवन्ति ।

बाह्मणो एळकं मुञ्ज्यित इसं एळकं कस्सविप मारेतुं न दस्सामीति अत्तेवासिकं आदाय एळकेनेव सिद्धं विवरि । एळको विस्सट्टमनोव एकं पासाणिय्ट्रेट निस्साय जातगुम्बं गीव उनिक्त[१४९] पित्या पण्णानि बाहितुं आरद्धो । तं वणं येव तरिम पासाणिय्ट्रेट असिन पित । ततो एका पासाणसक्तिका छिज्जित्वा एळकस्स पसानिसीवाय पितवा सीमं छिन्दि । महाजनो सिक्पति । तदा बोधिवसो निस्स छाने क्खदेवता हृत्या निकस्सो । सो पस्सन्तर्सने वतस्स महाजनस्स देवतानुभावेन आकासे पल्केनेन निसीवित्या इसे सत्ता एवं पापस्स फर्ड जानमाना अप्येव नाम पाणातिमातं न करेटसन्ति मधरेत स्टेन सम्मे देनेतो इसे गायमाह—

> एवं चे सत्ता जानेय्यु दुक्कायं जातिसम्भवो । न पाणो पाणिनं हञ्जे पाणघाती हि सोचतो ॥ ति ।

तत्व ज्वन्य सत्ता जानेप्युन्ति इमे सत्ता एवञ्चे जानेप्यु । वयं ? दुष्याय जातिसम्भवेति अयं तत्य ज्ञाति व जातस्य अनुक्षमेन वृद्धिस्वानो सम्भवो च जात्माश्चमत्य प्राप्तिमान्यप्रोगोप्पविष्यप्रोग्रहस्य पादच्छेत्राक्षेत्र वृद्धस्य अनुक्षम्य वृद्धस्य प्राप्त चुक्ति पर विभन्नो जातिसम्भवे वर्षः कात्रि पोळन्तो पीळ क्षत्रीति जातिसम्भवे वर्षः कात्रि पोळन्तो पीळ क्षत्रीति जातिसम्भवे वर्षः कात्रि पोळन्तो पीळ क्षत्रीति जातिसम्भवे वर्षः क्षत्र पोळन्तो पीळ क्षत्र पाप्ति कात्र क्षत्र व्याप्त वृद्धस्य वर्षः वर्ष

एवं महासत्तो निरयमयेन तज्जेरना धम्म देशीस ।मनुस्सा ते धम्मदेशनं गुला निरयमयभीता पाणा-तिपाता विर्त्तममु । शोधिसत्तीपि धम्म देशेला महाजनं सीलै पतिट्ठापेल्या यथाकम्म मतो । महाजनीपि शोधि-सत्तस्त श्लोबादे ठत्वा दानादीनि पुडशानि करवा देवनगरं पूर्वनि । सत्था इमं धम्मदेमन आहरित्वा अनुसन्धि प्रदेशा आहर्ष समीधानीम । अहं तेन समयेन हम्मदेशना अहोसिन्।

मतकभ सजातक

६ आयाचितभत्तजातकं

सबे मञ्चेति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो देवतानं आयाचनश्रलिकम्मं आरथ्भ कथेमि ।

पच्चपञ्चवत्थ्

नदा किर मनुस्सा वणिज्ञाय गण्छन्ना पाणे विश्वसा देवतानं बलिकस्मं करना ससं अनन्तराधेन अरबसिद्धि प्रदा आगल्या पुन तुम्हालं बलिकस्मं करिरसासानि जायाजित्वा गण्छनित। तत्व अनन्तराधेन अध्य-सिद्धि परवा आगल्या देवतानुभावेन दर्द जातन्ति मञ्ज्ञमाना वह पाणे वधिरदा आयाज्यनतो मृश्यितु बलिकस्मं करोत्ति । व दिस्या मिसल्य- अस्थि न लो भन्ते । एस्य अत्योति भावत्तं पुष्टिष्ठम् ।

भगवा अतीनं आहरि-

अतीतवस्य

अतीते कासिरह्टे एकस्मि गामके एको युट्टिको गामद्वारे टितनिश्रोधरूकवे अधिवर्थाय देवताय बिठकस्म पटिजानित्वा अनन्तरावेन आगन्त्वा बट्ट पाणे विधित्वा आयाचनतो मृश्चिस्सामीति रक्तगुरु गती । केक्सदेवता सत्यविटो टत्वा दर्म गायमाह-

> सचे मुज्चे पेच्च मुज्चे मुच्चमानो हि बङ्झति । न हेवं घीरा मृच्चन्ति मुक्ति बालस्स बन्धन ॥ स्ति ।

तत्य सचे मुण्ये पंच्य मुण्ये ति भी पृत्ति । त्वं सचे मृण्ये यदि मृण्यितुकामीति पंच्य मृण्ये यथा परलोक्तेन वक्तिति एवं । मृण्यमानी हि सम्मतिति यथा पत्तः त्वं गाणं विध्वा मृण्यित् हुण्याति एव मृण्याना हि पापकामेन बज्जतोति । तस्मा न हेव धीरा मृज्यन्तिति ये पण्डितपुरिसा ते एवं पटिस्तवती न मृण्यानि । निकारणा ? एवरपा हि मृत्ति बालस्स बन्यनं एसा पाणातिपातं करवा मृत्ति नाम बालस्स बन्यनमेव होनीति धर्मा देशीत ।

तनो पट्ठाय मनुस्सा एवरूपा पाणानिपानकस्मा विरता भ्रम्मं चरित्वा देवनगरं पूर्ययमु । सत्था इ.मं थस्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातवं समोधानेमि । अहं तेन समयेन रुक्खदेवता अहोसिति ।

आयाचितभत्तजातकं

१० नलपानजातकं

दिस्या पदमनृतिरुणिलः इदं सत्या कोसलेषु चारिकं चरमानो नळकपाणगामं पत्वा नळकपाण-पोक्यरणियं केतकवने विहरत्नो नळदण्डके आरच्या

पण्डपन्नवस्य

तदा किर भिक्क्षु नळकपाणपोक्करणियं नहात्वा सूचिपरत्थाय सामणेरीह [१५१] नळदण्डके गाहापेरवा ते सब्बत्यकमेव छिट्टे दिस्वा सत्थारं उपसंकमित्वा-भन्ते । मयं सूचिपरत्थाय नळदण्डके गण्हापेम । ते मुख्तो याव अग्गा सब्बत्यकमेव छिट्टा, किश्चुको एतन्ति पुष्टिकसु ।

सत्या इदं भिक्खवे । मय्हं पोराणकाधिट्ठानन्ति वत्वा अतीतं आहरि-

असीतबस्य

पुरुवे किर सो बनसण्डो अरञ्जो अहोसि । तस्सापि पोक्लरणिया एको दकरक्यसोओतिण्णोतिण्णे खादिति ।

तदा बोधिसत्तो रोहितमिगपोनकप्पमाणो कपिगाजा हुत्वा असीनिसहस्ममत्वानरपत्रिनुतो यूथं पत्तिहरत्तो तरिम अन्द्रञ्जे वसति । सो वानरगणन्त ओवार्थ अदासि-ताता ! दमस्मि अन्द्रञ्जे विमन्त्रवापि अमनुस्सपिटमहिता पोक्चरपियोपि तरवेष होन्ति तुन्हे अखादिनपुष्कं पश्चकलं वादन्ता वा अपीनपुर्व्व पानीय पिवता वा में परिष्कुकेष्टपाणाति ।

ते साधृति पटिस्सूणित्वा एकदिवमं अगतपृब्बट्ठानं गता ।

तस्य बहुदेव दिवसं चरित्वा पानीयं गवेसमाना एकं पोक्वरणि दिस्या पानीयं अपिवित्वाय बोधिसत्तस्स आगमनं ओलोकयमाना निसीदिमुं। बोधिमत्तो आगन्त्वा–िक नाना ! पानीयं न पिवपानि आह ।

तुम्हाकं आगमनं ओलोकेमानि । मुट्ठुनानानि बोधिमनो त पोक्सर्राण आविज्झित्या पटं परि-च्छिटदन्तो ओनिण्णमेव पस्सि न उत्तिण्णं ।

सी निस्मंमयं एमा अमनुस्मपरिग्गहिनाति अत्वा-मुट्ठु वो कर्न तान ! पानीयं अपिवन्नेहि. अमनुस्मपरिग्गहिना अयन्ति आह ।

दकरक्समीपि तेसं अनोतरणभावं अत्वा नीलोदरो पण्डरमुखो सुरसहत्वपादो बीभच्छदरमना हत्वा उदकं द्विधा कत्वा निक्समित्वा–कन्मा निसीदय ? इमं पोक्सर्राण ओनरित्वा पानीयं पिवथानि आह् ।

अथ न बोधिसत्तो पुच्छि-त्वं इध निब्बत्तदकरकलमोति ?

आम अह निब्बत्तोम्हीति ।

त्वं पोक्लारीण ओतिण्णके लभसीति ?

आम लभामि । अह इथोतिण्णं अन्तमसो सकुणिक उपादाय न किञ्चि मुञ्चामि । तुम्हेपि सब्बे खादिन्सामीति !

> न मय अत्तानं तुय्हं खादितुं दस्सामानि । पानीयं पन कि पिविस्सयाति ।

आम, पानीयं च पिविस्साम, न च तं वसं गमिस्सामाति ।

अथ कथं पानीयं पिविस्सधाति ?

कि पन त्वं मञ्जिस ओतरिरवा पिविस्सत्तीति ? मर्थ हि अनोतरिरवा प्रगीतिसहस्सापि एकसेकं नळबण्डकं गहेरवा उप्पणनाळेन उदकं पिवन्ता विय तव पोक्चरणिया पानीयं पिविरमाम । एव नो त्वं खादिवृं न सम्बिद्धससीति । एतमस्यं विदित्वा सत्वा अभिसाबद्धो हत्वा ६ मिस्सा गायाय पुरिमपदद्वय अभासि—

विस्वा पवमनृत्तिण्णं विस्वा नोतरितं पव । नलेन वार्रि पिविस्माम नेव मंत्र्यं विषस्तसो ॥ ति । १९५२]

तस्सत्यो-भिक्सते ! सो कपिराजा तस्सा पोक्सराजा एकप्तिय उत्तिष्णं परं नाहस । ओर्तारतं परं ओतिष्णपदमेव बहुत,एवं दिस्ता परं अनुत्तिष्णं दिस्तान ओर्तारतं गरं अडा अयं पोक्सरणो अमनुस्तपरिग-हीताति अत्या तेन सर्डि सल्कन्तो महापुरिसो आह-मळेन बर्गारं पिबिस्सामाति तस्सत्यो मयं तव पोक्सर्याण्या नकेन पानीयं पिवस्सामाति । पृत महासत्तरे आह-मेव मं त्वं विधससीति एवं नळेन पाणीयं पिवनं सपरि-सिम में त्वं नेव विधस्साति अत्यो ।

एवं बत्वा पन बोधिसत्तो एकं नळदण्डकं आहरापेत्वा पार्रामयो आवज्जेत्वा सच्चिकरियं कत्वा मुनेन धमि । नळो अन्तो किञ्चि गाँठ असेमेत्वा मजन्यकमेव मुनिरो अरोगि । डांगना नियामेन अपर्रामा अपर्रामा आहरापेत्वा धमित्वा अदागीति एवं गन्ने पन न मक्का निट्रेनेतु । नग्मा एवं न गहेनब्बं । बोधिमत्तो पन "इसं पोक्चराण परिवारेत्वा जाना मब्बेपि नळा एकच्छिट्टा होम्नू" नि अधिर्शाम । बोधिमत्तानं हि हितू-पवास्त्वा महत्त्वताय अधिर्शनं सीमिजमित । ननी पर्शव मब्बेपि न पोक्चराँच परिवारेत्वा उर्शना नळा एकच्छिद्वाव जाता ।

दमस्मि हि कणे बत्तारि कण्ट्रियशादिहारियानि नाम । कामानि बत्तारि ? (१) चन्दस्य ससल-स्वयां मकल्पीम इमें कण्टे दसति । (२) बहुत्वानके अभिगते निक्वत्दराने वकल्पार इमें कण्ड अभिन न साने-स्वति । (२) परिकारिनवेसन्दरानं सक्लिम्य इमें कण्डं अनोवस्मकं उस्मति । (४) इमे पोक्बराँग परिवारिस्वा उद्दिजनाळा सक्लिम्य इमें कण्डं एक्किट्स अविस्मतनीति इमानि बचारि कण्य्दिजिवणाटिहारियानिमाम ।

बोधिमत्तो एवं अविट्ठहित्वा एकं नळं आदाय निमीदि । तेषि असीतिसहस्मा बानरा एकेकं नळं आदाय पोस्वरीण परिवारित्वा निसीर्तमु । तेषि बोधिमनस्स नकेन आकर्ड्डिया पानीर्याप्यनकाले सब्बे तीरे निस्त्रात पित्वमु । एवं तेहि पानीर्य पीते देकरक्समो क्रिन्च अलिस्त्वा अनत्तमनो सकनिवेसनमेव गतो। बोधि-सनोपि सपरिवारी अरुक्तमेव पार्विसि ।

सत्था पन इमेर्स भिक्षक् । नळानं एकिन्छिड्साबां नाम सब्हमेवेतं पोराणकं अधिट्रानांना इसं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जानकं समोधानांव । तदा दकररूपमो देवदानो अहोसि। अमीतिसहस्स-बातरा बुद्धपरिसा । उपायक्रसलो पन कपिराजा अहमेव अहोसिन्ति ।

नलपानजातक

सीलवग्गो दुतियो [१५३]

३. कुरुंगवग्गवण्णना

१ करुंगमिगजातकं

आतमेत करंगस्साति इदं सत्या वेळवने विहरन्तो देवदत्तं आरब्भ कथेसि ।

पच्चपन्नवस्य

एकिस्म हि समये घम्मसभायं सन्नियनिता भिक्कु-आवृत्तो ! देवदत्तो तथागतस्त चाततत्त्वाय धनुमाहे पयोजेसि,सिलं पविजित, धनपात्रकं विस्स्वजेसि, सब्बधारि दसवलस्त वधाय गरिसक्ततीति देवदसस्य अवर्ष्यं कथेन्ता निर्दारित्तु । सत्या आगन्त्वा पञ्जतासने नितिष्ठो कायनृत्य भिक्कवे ! एतरहि कथाय सन्नि-सिम्नाति पृष्टि ।

भन्ते । देवदत्तो तुम्हाकं वधाय परिसक्ततीति देवदत्तस्स अगृणकथायः मक्षित्रिप्रम्हाति । सत्या न मिक्कवे | देवदत्तो इदानेव मम वधाय परिसक्तित पुब्बेषि परिसक्ति येव नच पन विधतुं असक्त्तीति बत्या अतीतं आहरि-

अतीतवस्यु

कतीते बाराणिसमं बहारते रज्यं कारेन्ते बोधिसतो कुर्धगरिमो हुस्या एकाँमा अरञ्जायतने फला-फलानि बादतो बसीता सो एकिंस काळे फलसम्प्रं सेपणियक्कं सेपणियक्कं पित बादित। अथेकां गामवासी अट्टक्ळाट्टको फलक्क्बमूलेलु सिनाने पदानि उपयारेत्वा उपरिक्कं अट्टमं बीध्य्वा तत्व्य निसीदित्वा फलानि बादिवुं आगतागते सिन्ते सीत्त्वा विकिथता तेमं मन विविक्तणतो जीविकं क्योंस।

सो एकदिवसं तस्मि इन्समूले बोधिसत्तस्स पदवलञ्जीदस्वानस्मि सेपीण्यक्वसे अट्टकं बनिधत्व। पातोव भुष्टिन्दत्वा सत्ति आदाय वर्ग पविस्तवा तं इन्स्सं अभिग्रह्मिता अपूर्व निर्माहि । बोधिसत्तोपि पातोव वसनट्टाना निन्त्वसित्त्व अपिष्णफलानि सिरसामीति आगम्मा तं हन्त्रमूलं महस्माव अपित्रिम्ततः नदानि अट्टक्लुइाइ पन्नेसु अट्टकं वस्यम्ति अत्यो नु सो एकद्यो उपद्वीति परिग्यस्तो बाहिरतोव अट्टासा ह्यूक्षीस बोधिसत्तस्स अनामनमाव अत्या अटटकं निम्माव संपीण्यकलानि विषात्वा विराग्व तस्त पुरतो पात्रीत ।

बोधिसत्तो इमानि फलानि जागन्त्वा मर्ग्ह पुरतो पर्नान्त, अस्यि नृत्तो तस्य उपि छृड्कोति पुनपूर्व कोकोरूतो छुड्कं दिक्वा अस्मत्त्तो विव हुन्ता-अम्मो रुक्तं । पुत्रे त्यं शोकप्रवयं जातारेतो । दिवा उज्युकसेव फलानि पार्तिन । अञ्च पन ते इन्तवसमो परिच्चतो एवं तया क्वत्वसम्मे परिच्चते लहाँग्य अञ्ज दक्क्वमूर्व उपसंकीमत्वा मर्ग्ह् आहारं परिशेसस्यामीति त्रत्वा इमं गायमाह-

> ञातमेतं कुरुंगरस यं स्व सेपण्णि! सेव्यसि । अञ्जं सेपण्णिं गच्छामि न में ते रुच्चते फलन्ति ॥ [१५४]

तत्व ञातन्ति पाकटं जातं। **एत**न्ति इदं कम्मं। कुश्चंगस्साति कुश्ंगमिगस्स। यं त्वं से**पण्णि!** सेय्यसीति यं त्वं हम्मो सेपण्णिश्वलः ! पुरतो पुरतो फलानि पातमयानो सेय्यसि, विसेय्यसि, विसिण्णफलो

१ रो०-चारेग्तो विद्य ।

अहोसि । तं सब्बें कुरुंगस्स पाकटं जातं । न से ते रुच्चते फलन्ति एवं फलं ददमानाय में तब फलं न रुच्चति तिट्ट रुबं अहं अञ्ज्यस्य गन्छिस्सामीति अगमासि ।

अधस्य ळुरूको अट्टके निसिन्नोव सत्ति विधित्वा गच्छ विरद्धोवानिम्हि तन्ति आह । बोधिसत्तो निवत्तित्वा ठिवोच आहु-हुम्मो पुरित्य ! इदानिष किञ्चापि मे विरद्धो अट्ट पन महानिरये सोळस उत्तवनिरद्धे पञ्चविधवन्यनावीनि च सम्मदरणानि अविरद्धो थेवासीति । एवञ्च पन वस्त्रा प्रकायिस्ता सवास्त्रींन गतो । ळुरूकोपि कोटरित्या यपार्थिष गतो ।

सत्यापि न भिक्कवे । देवदत्तो इदानेव मम वधाय परिसक्तित पुर्व्वेषि परिसक्ति नच पन वधितु । असक्क्षीति इमं धम्मदेशनं आहरित्वा अनुसन्धि षटेत्वा जानकं समोधानीस। तदा अट्टकळुद्दी देवदत्तो अहोति । कृर्कममिगो पन अहमेवाति ।

क्रुरंगमिगजातकं

२. कुक्कुरजातकं

ये **कुक्कुराति** इदं सत्था जेतवने विहरन्तो आतत्त्वचरियं आग्रूम कथेसि। सा द्वादसनिपाते भद्द-साळजातके आविभविस्सति । इदं पन बत्य पतिटठेपैत्वा अतीतं आहरि-

अतीतबस्यू

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिमत्तो तथारूपं कम्मं पिटिच्च कुक्कुरयोनियं निम्ब-तित्वा अनेकसनकुककुरपरिवृतो महासुसाने वस्ति । अयेकदिवसं राजा सेनसिन्यवयुत्तं सब्बालंकारपति मण्डतं रखं अभिक्ष्द उत्यागं नस्त्वा तस्य दिवसभागं कीळित्वा अत्यंगने मुस्यि नगर पार्विस । तस्स तं रथवरणं यथानद्वसेव राजंगणे उपियमु । सो रत्ति देवे वस्सन्ते तिन्तो। उपिर पासादतो कोलेस्यकमुणसा ओतरिस्वा तस्स चम्मञ्च ननिक्च्च बादिस् ।

पुन दिवसे रञ्जो आरोचिंससु-देव! निद्धमनमुखेन सुनला पविभित्वा रथस्स चम्मञ्च नन्दिञ्च सादिसति ।

राजा सुनलानं कृज्झित्वा दिटठदिट्ठट्ठाने सुनखे घातेथाति आह ।

ततो पट्ठाय सुनलानं महाश्यसनं उदपादि। ते दिट्ठिदिट्ठाने घातियमाना पलायित्वा सुसानं गल्त्वा बांधिसत्तरस सन्तिकं अगमंसु । बोधिसत्तो-नुम्हे बहु सन्तिपतिता किन्नलो कारणीत पूष्टि ।

ते-अन्तेपुरे किर रयस्स चम्मञ्च नन्दिञ्च [१५५] सुनलेहि खादिनाति कुढो राजा मुनलवत्र आणापेसि । वह सुनला विनस्सन्ति, महाभयं उपप्रतन्ति आहंसु ।

बोषिसत्तो षिन्तिस-आरक्सट्ठाने बहि मुणवानं श्लोकामो नत्यी अन्तोराजनिवेसने कोहर्य्यकमुन-बानं येथेनं कम्मे भविसत्ति। इदानि पन जोराते किष्टिय भयं निष्या अनोरा मण्ण कर्मात्ता यम्त्राह्न चोरं रच्नो दस्मेत्वा जातिसंघस्स जीविनदानं देदेयन्तः । मो जातके नमस्मास्ता-नुरंदे मा भावित्य छट्ट यो अभय आह-रिस्तानि । याच राजानं पस्मामि ताव हमें बहोचाित गर्गनियां आयश्येत्वा भेसाभावन पुरंचारिक करवा मम्हं उत्तरि होष्ट्रैंद्वा मुमारं वा मा कीचि विचित्तुं उस्माहीत अविद्रुशेष एककोस अन्तोनागं पावित्ति ।

अय नं दिस्वा एकसत्तोषि कुञ्जिस्त्वा ओलोकेन्तो नाम नाहोसि। राजापि मुनलवयं आणापेरवासय विानच्छये निर्मित्रो होति । बोधिसनो तत्येव परस्वा पक्कन्दित्वा रञ्जो आसनम्म हेट्ठा पाविमि । अत्र नं राज-पुरिसा नीहरितुं आरद्धा । राजा पन निवारेसि ।

सो बांक विसमेत्वा हेट्ठासना निक्सामित्वा राजानं विन्दित्वा—सच्च किर तुम्हे कुक्कुरे मारापेचाति पुच्छि ।

आम मारापेमि हन्ति।

को तेसं अपराधो नरिन्दाति ?

रथस्स में परिवारचम्मञ्च नन्दिञ्च खादिमृति ।

ये खादिसुते जानायाति ?

न जानामाति ।

इमे नाम चम्मसादकचोराति तत्ततो अजानित्वाय दिट्ठदिटठट्ठाने येव मारापनं न युत्तं दवाति ।

रषबम्मस्स कुन्कुरहि सादितत्ता दिट्ठिद्टि सब्बेब मारेवाति मुनस्रवसं अणापेसिन्ति । किं पन वो मनुस्मा सब्बेब कुन्कुरे मारोन्न उदाहु मरणं अलभन्तापि अस्थीति ? अस्ति अम्हार्कं परे कोलेव्यका मरणं न सम्पतिति ।

महाराज ! इदानि नुम्हे रथनम्मस कुन्कुरेहि सानितना दिर्ठिद्दे सत्वेत मारेपानि मृतक्षवर्धं अणापेक्षित्त त्रवोत्तुत्व। इदानि पन अन्द्रार्ण घरे कोलेक्यका मरण न लम्पतीत वृदेष । नतु एवं सन्ते नुम्हे छन्दा-दिवसेन आनितामनं पच्छ्यानि आनितामन्त्र नाम न पुत्ते, न च राजयम्मो । रञ्जा नाम कारणगवेसकेन जुलादिसेन भित्तुं वृद्धि । इदानि च कोलेक्यका मरणं न लभन्ति, दुव्वलमुनक्षाव लमन्ति । एवं सन्ते नार्यं सम्बनुनक्षपच्या दुव्यल्यानिम नामेसानि ।

एवञ्च पन वत्वा महासत्तो मधुरस्सरं निच्छारेत्वा-महाराज ! यं तुम्हे करोच नायं धम्मोति रञ्जो धम्मं देमेत्तो इमं गाथमाह~

ये कुक्कुरा राजकुलम्हि बढा कोलेय्यका वश्णबल्पपन्ना। तेमे न वज्हा मयमस्म वज्ज्ञा नायं सधच्चा दुम्बलयातिकायन्ति [१५६]

तस्य ये कुण्कृपाति ये मुनला। यथा हि धारण्हीणि पस्तावो पूनिमुत्तीन, तरहु नातोषि सिगालो जरिस-गालोनि, कोमलाणि गळीलिलता पूनिल्लाति, मुवण्णवण्णीणि कायो पूनिकायोति बुण्मिन, एवमेव बस्सस-तिकोणि मुनलो कुण्कुपोनि बृण्यित । तस्मा महल्लका कायबल्युपपनाणि के कुण्कुपारेवेव द्वाना । वदानि विश्वता। कोलेन्यस्तानि राजकुले जाना सम्भूता संबद्धा। बण्णबल्युपपनाति सरीरवण्येन वेव कायबलेन च सम्पन्ता। तमेन बज्जानि ते इने सस्यामिका सारल्लान वज्ञा। मयसस्य बज्जाति अन्सामिका अनारक्सा मयं वज्ञा नाम जाता। नायं सयब्बानि एवं सन्ते अयं अविमेनन सपन्या नाम न होति। दुख्यक्यातिकायन्ति अयं पन दुख्यन्ति वेव पातन्ती दुख्यल्यानिका नाम होति। राजूहिनाम चौरा निर्माण्डितस्वानो अवारा दय पन चाराने किञ्चि नरिस्य अचोगा मरणल्यान्ति बही! इमस्सिकार्क अपूर्त

> राजा बोधिमत्तस्म वचनं मुखा आह्-जानामि पन त्वं पण्डित । अमुकेहि नाम रचचम्मं खादितन्ति । आम जानामीति । केहि खादितन्ति ?

तुम्हाकं गेहें वसनकेहि कोलेय्यकसुनखेहीति । कथ तेहि बादितमावो जानितज्ज्ञीति आह ?

अह तेहि सादितभाव दस्सेस्सामीति ।

दस्सेहि पण्डिताति ।

तुम्हाक घरे कोलेय्यकसुनखे आनापेत्वा योकं तक्कञ्च दब्बतिणानि च आहरापेयाति । -

राजातथा अकासि ।

अथ नं महासत्तो इमानि तिणानि तक्केन मद्दापेत्वा एते सुनखं पायेथाति आह ।

राजा तथा करवा पायापेसि । पीतपीता सुनसा सद्धि चम्मीह बीमनु । राजा सब्बञ्जुबुद्धसः व्याकरणं विवाति पुद्धे बीधिसत्तस्य सेतन्छतेन पूत्रं बनाति । बीभिसत्तां 'सम्मे चर महाराज' गानाणितृमु स्नतिया'' ति बादीहि तेसकुणवातके आगताहि दसहि चम्मचरियगायाहि राज्ये धम्मे सेवेश्वा —महाराज' इतो पद्ध्य अप्मात्ती होहोति राजाने पञ्चा कीलेमु पतिद्राजेश्या सेतन्छतं रञ्जोब पटिजदासि ।

२ रो०-रञ्जो ।

राजा महासत्तस्य धम्मकयं शुरुवा सब्बसतानं अभयं दरवा बोधिसत्तं बादि करवा सब्बसुनक्षानं अत्तवो भोजनसदिसमेव निक्चभत्तं पद्यपेत्वा बोधिसत्तस्य ओवादे ठितो यावतायुकं द्वानावीनि पुठञ्जानि करित्वा कालं करवा देवलोके उप्पण्जि । कुनकुरोवादो दसवस्सहस्सानि पर्वत्ति । बोधिसत्तोपि यावतायुकं ठत्वा ययाकम्मं गतो । [१५६]

सत्था न भिक्सवे ! तथागतो इदानेव आतकानं अत्यं चरति पुत्र्वेषि चरि येवाति वत्वा इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेता जातकं समोधानेसि । तदा राजा आनन्दो अहोसि । अवसेसा बुद्धपरिसा । कुक्कुर-पध्वितो पन अहमेवाति ।

क्रक्करजातकं

३ भोजाजानीयजातकं

अपि पस्सेन सेमानोति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो एकं ओस्सट्ठविरियं भिक्खु आरब्भ कथीस ।

पच्चपन्नवत्थ्

तस्मि हि समये सत्या नं भिनस् आमन्तेत्वा भिनस्तु [।] पुच्चे पण्डिता अनायतनेपि विरियं अकंसु, पहारं स्द्रापि नेव ओस्सजिम्ति वत्वा जतीतं आहरि-

अतीतवस्य

अतीते बाराणितयं ब्रह्मक्ते रुज्यं कारेन्ते बोधिसत्तो भोजाजानीयसिन्धवकुळे निश्यत्तो सध्याकार-सम्पन्नो बाराणिसं रञ्जो मंगळन्सो अहोसि । सो सतसहस्यायिनवाय सुवण्णपातियं येव नानगरससम्पन्ने तिवस्ति-कान्यसाळिभोजनं भू रुज्यति । चतुजातिकान्यूपिलताययेव भूमियं तिद्कीत । ते कानं रतकम्बलसाणिपरितिकस्तं उपिर सुवण्णतास्त्रीनतं चेलवितानं समोसोन्तमन्यदासमालादामं अविजहितगण्यतेलण्यदीएं होति । बाराणानि-रुज्यं पन अपत्येनता राजानो नाम नित्य । एकं समयं सत्त राजानो बाराणानि परिक्षिपित्वा अम्हाकं रुज्यं वा देतु यूवं वाति बाराणासिरञ्जो पण्ण पेसियस् । राजा अमच्ये सन्तिमातापेरवातं पर्वात आचिनिकत्वा इतानि कि करोस ताताति पण्ळि ।

देव[ा] शुस्होह ताव आदितोव युद्धाय न गन्तव्यं , असुकं नाम अस्सारोहं पेमेत्वा युद्धं कारेय । तस्मि असक्कोन्ने पच्छा जानिस्सामाति ।

राजात पत्रकोमापेत्वा-सविखस्ससि नात ! सत्तिहि राज्हि सद्धि युद्धं कातुन्ति आह ।

देव[ा] सचे भोजाजानीयसिन्धव लभामि, तिट्ठन्सु सत्त राजानो सकलजम्बुदीपे राजूहि सद्धि युग्झित् सविवस्तामाति ।

तात! भोजाजानीयसिन्धवो वा होतु अञ्जो वा यं इच्छिसि तं गहेत्वा युद्धं करोहीति।

सो साथु देवाति राजानं विन्दत्वा पासादा ओष्टस्ह भोजाजानीयितम्यवं आहरापेत्वा सुबिम्मतं कत्वा असनापि सम्बस्तनाहसन्नद्धो लग्ग बिन्धत्वा निन्यविपिट्ठवरमतो नगरा निक्कम्म विज्कुलता विव बरमानो पटमं वककोट्टकं भिनिदत्वा एकं राजानं जीवनाहसेव महेत्वा आगस्त्वा नगरे बरुस्स नित्यादेत्वा पुन गत्त्वा दुरित बक्कोट्टकं भिनिदत्वा द्वीत्यन्ति एकं पञ्च राजानो जीवगाहं गहेत्वा छट्टं बक्कोट्टकं [१५८] भिनिदत्वा २८८ स्म १७८ मिन्दिको भोजाजानीयो पहारं क्रिभा लोहितं पण्यरित। वेदना वकवित्यो बस्तिन। अध्य अस्त सन्तरिहा तस्य पहरानां व्यत्वा भोजाजानीयसिन्धवं राजद्वारं निपन्नपरित्वा सन्नाह सिचिन्नं करवा अध्य

बोधिसत्तां महाराध्यक्तपस्तिन निपनांच अक्कांति उम्मीकेत्वा अस्तारीहं दिश्वा अयं अञ्च अस्त स्वन्यद्वति अयञ्च अस्तां स्वतं अक्कोट्टकां भिनिद्वा सस्ता राजां गण्डित् न सिक्सस्ति म्या कतकः मं विनिस्तस्तित अण्डिममो अन्यारोहोपि निम्मसति राजापि परहूवं गीमस्ति, ठेलेवा मं अञ्जो अस्तो तस्ते बक्कोट्टकां भिनिद्वा सत्तमं राजानं गहेनुं समत्यो नाम नत्योति निपनकोव अस्तारोहं पक्कोसापेत्वा—सम्म अस्तारोहं ! सत्तमं वक्कोट्टकां भिनिद्वा सन्तमं राजानं गहेनु समत्यो ठेलेवा मं अञ्जो अस्तो नाम नत्यि । नाहं मया कतकस्त्रमं नोहस्तापि मण्डने अटटार्याचा सन्तव्यति ब्वा इसे गायमाह— 886

अपि पस्सेन सेमानो सल्लेहि सल्ललीकतो । सेट्योब बलवा भोग्जो यञ्च मञ्जेब सारधीति ॥

तस्य अपि पस्तेन सेमानीति एकेन पस्तेन सयमानकोपि । सल्लेहि सल्लकीकतोति सल्लेहि विद्रोपि समानो । सेस्योव बल्खा भोज्योति वल्योति स्लयवकुले अन्नातो लकुकस्सो । मोज्योति भोजाजानीय-सिल्यवी । इति एतस्या बळवा सल्लेहि विद्योपि भोजाजानीयस्तियवोव इति एतस्मा बळवा सल्लेहि विद्योपि भोजाजानीयो सेय्यो यरो, उत्तमो। युक्ज मठजेव सारयोति यस्मा एवंगतोपि अहमेदसेय्यो तस्मा ममञ्जेव योजेहि. मा अञ्चेयोति वदति ।

अस्सारोहो बोधियस्तं न्द्रागेतवा बणं बन्धित्वा मुक्तन्त्वं सन्तर्व्हत्वा तस्स पिट्रियं निसीदित्वा सत्तर्भ बलकोट्यकं मिन्दित्वा सत्तर्भ राजानं जीवगाहं गहेत्वा राजबल्स्स निम्पादेशि । बोधिसत्तिम्र राजद्वारं जानयित्वु । राजा तस्स दस्सनत्वाय निकक्षि । महामत्ती राजानं जाह-महाराज ! यत्त राजानो मा धार्तियत्व । सपर्थ कारेत्व। निस्सन्त्रेय । मस्ट्रन्य अस्सारोहस्स च दातन्वं यसं अस्सारोहस्सेव देव । सत्त राजानो गहेत्वा दिन्नं योधं नाम नासेत् न बहुति । मुस्ति दानं देवा । सीलं रस्कव । धम्मेस समेन रज्यं कारेयाति ।

एव बोधिसत्तेन राज्यो ओवार्ट दिन्ते बोधिसत्तस्य सत्नाहं मांचियमु । सो सत्नाहं मुज्यते मुख्यते मुख्यत्ते येव निरुष्टिः । राजा तस्स सरीरिक्त्यं कारेस्वा अस्सारोहस्स महत्तं यसं दत्वा सत्त् राजानो पुन अपनो अदूर भाय सपयं कारेस्वा सक्वदानानि पेसेस्वा धम्मेन समेन राज्यं कारेस्वा बोधिवतपरियोसाने यथाकम्म गतो ॥ १५९ ॥

सत्या-एवं भिक्कः । पुत्रे पण्डिता अनायतनीप विरिध्नं अक्तंमु एवरूपं पहारं लद्यापि न ओस्सांजपु । हवं पन एवरूपे नीयानिकसासने पब्बजित्वा कस्मा विरिध्नं ओस्सजसीनि वत्वा वत्तारि सञ्चानि पकामेसि । मञ्चपरियोसाने ओस्सटठविरियो भिक्कं अरङ्गचरूले पतिटठामि ।

सत्या इमं घम्मदेसनं आहुरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा राजा आनन्द्रां अहोसि । अस्सारोहो सारिपुत्तो, भोजाजानीयसिन्धको पन अहमेब अहोसिन्ति ।

भोजाजानीयज्ञानकं ।

आजङ्ग्रजातकं

यदा यदाति इदम्पि मत्या जेतवने विहरन्तो ओस्सट्ठविरियमेव भिक्क् आरब्भ कथेसि ।

यक्व पन्नवत्थ

तं पन भिक्कु सत्था आमन्तेत्वा भिक्कु (पुब्बे पण्डिता अनायतनेपि रुद्धप्पहारापि हृत्वा विरिय अकंग्र ति वत्वा अतीर्त आहरि'—

अतीतबत्य

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदते ःश्वे कारेन्ते पुरिमनवेनेव सत्त राजानो नगरं परिवार्रायम् । अथेको रिथकयोषो द्वेगतिकसित्यवे रखे योत्रेत्वा नगरा निक्काम्म छ बल्कांट्टके मिन्दित्वा छ राजानो अगाहेशि । तिस्त क्षणे वेट्टकअस्सो पहार्र लिमि । रिकार पर्य योजेत्वा प्रत्नको र राजदार्र आगन्दा येट्टकभातिके रखा मोचेत्वा सन्नाहं निर्दिकं करवा एकेन पस्सेन निषश्चोपेत्वा अञ्चा अश्यो मन्तिहत् आरदो । बोधिसको ते दिस्ता दुरिमनयेनेव चिन्तेवा रिवर्कं पक्कोमारेवा निष्यनकोब इसे गाथमाहः-

> यदा यदा यत्थ यदा यत्थ यत्थ यदा यदा । आजञ्जो कृहते देगं हायन्ति तत्थ बाळवाति ॥

तत्त्व यद्या बदाति पुन्वश्वादिमु शिंम यांन्य काले । यस्याति यांन्य ठाने मणे वा संगामसीसे वा । यदाति यांन्य क्षेत्र मण्डे व्यवस्थाति सन्तवं वन्त्रांतुरुकानं वतेन वहुन गुद्धनण्डलेषु । यदा बदाति यांन्य संस् पद्मारं लद्धकाले वा अलद्धकाले वा । आजन्य श्रो कुरुत्ते वेगत्ति मार्गवरणं वित्यत्व कारणं आवानतस्थावो आज-ज्ञा वर्रात्मत्ववो वेगं करीति वायमति विगय आरमीतः । हायन्ति तत्त्व वाकवाति तस्मि वेगे करियमाने हतरे वलवसंस्तात बल्दुकस्सा हायन्ति परिहायन्ति । तस्या हमान्य मण्डनं व योजहीति आह

सारथी बोधिवासं उट्छारेका योजेका सत्तमं बण्कोट्टर्क मिन्दिका सत्तमं गजानं आदाय र्यं पाजेको १ १६० । राजदारं आपन्ता सित्यवं मोचेसि । बांधिवातो एकेन परसेत निपक्षी पुरिनायेनेव रूजे, जीवादं दस्वा निर्देश्व । राजा तस्स सरीरिकिच्चं कारेस्वा रियकस्स सम्मानं कर्ता धम्मेन रज्जं कारेस्वा यपाकम्मं गती ।

सत्या इम बम्मदेसनं आहरित्वा सच्चानि पकासेत्वा जातकं समोधानीस । सच्चपरियोसाने सो भिक्कु अरहत्ते पतिट्ठासि । तदा राजा आनन्दत्वेरो अहांसि । अस्सो पन अहमेव सम्मासम्बुद्धोनि ।

आजञ्जजातक

५. तिहुजातकं

अञ्चलक्जोह तिस्पेहीति इद सत्या जेतवने विहरत्तो धम्मसेनापतिस्स सद्धिविहारिकं एकं सुवण्ण-कारपुत्तं भिक्कु आरब्भ कंपेसि ।

पच्चुपन्नवत्थु

आसयान् सयञाणं हि बुद्धानं येव होति न अञ्जे सं । तस्मा घम्मसेनापति अत्तनो आसयान् सयञाण्यस्स निस्ताय सिद्धान्दिहारिकरस आसयान् सयञाणं अजानतो असुमकम्मद्द्वानमेव कर्षेषि । तस्स तं न सप्पाय-महोसि । कस्मा ? तो किर परिपादिया पञ्चजातिसतानि मुवण्णकारावेहै येव परिद्धानिय गर्षि । अवस्स दीघ-रसं परिपुद्धमुबण्यस्सतस्सेव परिचितता अभुमंन सप्पायमहोसि । सो तत्य िनीमतमस्तिम् उप्पादेतुं असक्कोन्तो बतारो मासे लेपेसि । धम्मसेनापति अत्तनो सिद्धानियस्स अरहार्तं दातुं असक्कोन्तो अद्धार्थं बुद्धवेनेय्यो भविस्तिन नयानस्स मन्तिकं नेस्सामीति चित्तेवा पातीव तं आदाय सय तयु सन्तिकं अममस्ति ।

सत्था- किन्नम्बो सारिपुत्त ! एकं भिक्ख आदाय आगतोसीनि पुच्छि ।

अहम्भन्ते [।] इमस्स कम्मट्ठानं अदासि । अयम्पन चतुहि मासेहि निमित्तमसम्पि न उप्पादेसि । स्वाहं बुढवेनेय्यो एसो भविस्सतीति चिन्तेत्वा तुम्हाकं सन्तिकं आदाय आगतोति ।

सारिपुत्त । कतरं पन ते कम्मट्ठानं सिद्धविहारिकस्स दिश्नन्ति ?

असुभकम्मट्ठानं भगवाति ।

सारिपुत्त । नित्य तव सन्ता 'ने आसथानुसयजाणं, गच्छ त्वं सायण्हसमये आगत्वा तव सद्धि-विद्वारिकं आदाय गच्छेय्यासीति ।

एव सत्था थेरं उध्योवेरवा तस्स भिक्कुस्स भनापांनवासनञ्च चीवरं व दापेरवा त आदायेव पिण्डाय पविसित्वा पणीतं बादतीयभोजनीयं दापेरवा महाभिक्कुलेपपरिवारो पुन विहारं आगत्वा गम्युकृदिय दिवत-भागं खेपेरवा सायण्डसमये तें भिक्कु महेरवा विहारचारिकं चरमानो अम्बवने एकं पोक्स्वरांग [१६१] मापेरवा तत्व महत्तं पदुर्मिनाच्छं, तर्भाणं च महत्तं एक पदुमपुण्कं मापेरवा निक्कु । इसं पुण्कं आंशोकंन्तां निसीदाहीति निसीदापेरवा गम्युकृटि पाविसि ।

सी भिक्कु नं पुष्फं पुनणुनं बोलोकेसि । भगवा तं पुष्फं करं पापेसि । त तस्स गस्सन्तस्सेव करं पत्वा विवच्चं अहांसि । अवस्स परियनतो पर्टाय पनानि पतन्तानि मृहनेन सब्वानि पतिनु । ततो किञ्जनस्व पति, किष्णकाव अवधिस्म । सी भिक्कु तं पस्मनो चिन्तिस, इदं पहुमपुःकं इदानेव अभिक्षं अहांसि दस्सनीय । अवस्स बच्चो परिणतो पतानि न किञ्जनबञ्च पतितं किष्णकमत्मनेव ठितं । एवक्ष्यस्य नाम पदुमस्स जरा पत्ता, मन्दं सरीरस्त कि न पार्षुणिस्सिति ? सन्वे संवारा अविक्वानि विपस्मनं पट्ठिपेसि । सत्या तस्स चिन्तं विपस्सनं आफ्ट्रहुन्ति ञात्वा गन्यकुटियां निसिक्षो व ओमासं फरित्वा इमं गायसाह-

> उच्छिन्द सिनेहमत्तनो कुमुदं सारदिकं व पाणिना । सन्तिमग्गमेव बहय निब्बाणं सगतेन देसितन्ति ।।

सो भिन्स, गायापरियोसाने अरहतं पत्वा मुत्तो वतिम्ह सब्बभवेहीति चिन्तेत्वा-

१ रो०-सत्तानं । २ घम्मपद, मग्गवग्ग ।

सो बुत्यवासो परिपुण्यमानसो, खीणासको अन्तिमदेहघारी । विसुद्धसीलो सुसमाहितिन्द्रियो चन्दो यथा राहुमुखा पमुत्तो ॥ तमोतर्त मोहमहन्धकारं विनोदयि सञ्चमल असेसं।

आलोकमुज्जोतकरो पभंकरो सहस्सरंसी विय भानुमा नभेति ॥

आदीहि गार्चाहि उदानं उदानेसि । उदानेत्वा च पन गन्त्वा भगवन्तं वन्दि । थेरोपि आगन्त्वा सत्वारं वन्दित्वा अत्तनो सिक्विहारिकं गहेत्वा आगमासि ।

अर्य पबुत्ति भिनवतुनं अत्तरे पाकटा जाता । भिनव् षम्मसभायं दसबकरस गुणे बण्णयमाना निसी-दिसु-आबुसी [।] सारिणुतत्थेरो आसयानुसयआणस्स अभावेन अत्तनो सद्विविद्यारिकस्स आसयं न जानाति । सरवा पन जस्त्रा एकदियक्षेनेव तस्स सह्पटिसम्भिदाहि अरहनं अदामि । अहो [।] बुद्धो नाम महानुभावोति [।]

सत्था आगन्त्वा पञ्जत्तासने । नसीदित्वा—काय नृत्य भिक्सवे एनरहि कथाय सन्निसिन्नाति पुच्छि ।

न भगवा । अञ्जाय, तुम्हाकञ्जेव पन धम्मसेनापनिनो सद्धिविहारिकस्स आसयानुसय-[१६२] जाणकथायाति ।

सत्था न भिनसवे ¹ एतं अच्छरियं स्वाहं एतरिह बुद्धो हृत्या नस्म आसय जानामि । पुत्र्वेपाहं तस्स आसयं जानामि येवाति बत्वा अतीतं आहरि--

अतीतवत्थ

अतीते बाराणित्व बहारत्तो रज्जे कारेसि । तदा बोधिसत्तो तं राजानं अर्थे च धम्मे च अनुसाग्रति । तदा रञ्जो मंगलस्ताहानितये अञ्जार रठमं खळने स्तृजे बरसे ' नहामेषु । मंगलस्तां बळने नहातित्व अतिरित्यानो जिमुण्डिस्ता ओर्तान्तु न इन्छि । अस्तागोपको गत्या रञ्जो आरोवेसि-देव । मंगलस्तो तित्व्य क्षोतिरित्यु 'त इच्छतीति ।

राजा बोधिसतं पेसेसि – गच्छ पण्डित ! जानाहि केन कारणेन अस्सो तित्थं ओतारियमानो न ओतरतीति ।

बोधिसत्तो साषु देवाति नदीतीरं गल्वा अस्सं ओलोकेत्वा निरोगभावञ्चसर् अत्याकेन नुषां कारणेन अर्थ दुर्म नित्यं न ओतरतीति उपपारेत्तो पठमतर एत्थ अञ्जो नहापितो भविरसति तेनस जिनुस्कः मानो³ तित्यं न ओतरति मञ्जेति चिन्तेत्वा अससोगके पुष्त्वि—हम्भो ! हमस्मि तित्यं कं पठमं नदापित्याति ?

अञ्जनरं वळवस्सं सामीति ।

बांधिसत्तो 'एम अत्तनो सिगारताय त्रिगुच्छन्तो एत्व नहायितुं न इच्छिति । इमे अञ्जिष्म तिरवें नहायेतुं बहुतीतिं तस्स आस्य ज्ञाना—भो अस्सगोषक ! सांध्यमयुकाणिता असंसत्त्रायानामिय ताव पुत्रपूर्त भूज्यन्तस्य तित्ति होति । अय अस्सो बहु बारे इय तिरवे नहाती अञ्जामिग नाव न तिरवें ओनरेत्वा नहायंव पायेव चार्ति वत्ता इसे गायमाह-

> अञ्जसञ्जेहि तित्येहि अस्सं पायेहि सारिय । अच्चासनस्स पुरिसो पायासस्सपि तप्पतीति ॥

तत्य अञ्जमञ्जेहोति अञ्जेहि अञ्जेहि । पायहोति देशनासीसमेतं, नहागेहि च पायेहि चाति अल्यो । अच्चासनस्साति करणत्ये सामिश्चनं । अतिअसनेन अतिभूत्तेनाति अल्यो । पायासस्सापि सप्यतीनि सप्पिआदीहि

१ रो०--खलुद्धकः। २ रो०-निरोगभावस्सः । ३ रो०-जिगुच्छियमानो ।

अभिसंस्रतेन मथुरपायासेन तप्पति तित्तो होति धातो सुहितो न पुन भुष्टिजतुकामतं आपज्जति तस्मा अयम्पि अस्सो इमस्मि तित्ये निवदं नहानेन परियत्ति आपन्नो भविस्सति । अञ्जस्य तं नहापेयाति ।

ते तस्त बचनं मुखा अस्तं अञ्जा तित्यं श्रोतारेखा पायिमु चेव नहापेमुञ्च । बोभिसत्तो अस्तस्त पानीयं पिवत्वा नहानकाले रञ्जो सन्तिकं अपमासि । राजा कि तात ! अस्तो नहातो च पीतो चाति पुष्कि? साम वैद्याति । पञ्जे कि कारणा न रुक्क्षतीति ? हमिना नाम कारणेनाति सम्बं आचिक्ति । राजा एवरूपस्त तिरुक्तानस्मापि नाम आसर्थं जानाति । अहो पण्डिजोति : बोभिसतस्स महन्तं यसं दत्वा जीवितपरियोग्राने ययाकृम्यं नती । बोभिसत्तोपि यथाकृम्यमेव गतो ।

सत्या न भिक्खवे ! अहं एतस्स इदानेव आसयं जानामि, पुत्र्येपि जानामि येवाति इमं घम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा मंगलस्सो अयं भिक्कु अहोसि, राजा आनन्दो, पण्डितअ-मक्को पन अहमेवाति अहोसिन्ति ।

तिद्रजातकं

६. महिलामुखजातकं

पुराणचीरान बच्ची निसम्माति इदं सत्था बेळ्वने विहरःतो देवदत्तं आरब्भ कथेसि ।

पण्चपन्नवस्य

देवदत्तो अजातसन्तुकुमारो पसादेव्या लाभसकारं निष्फादेसि'। अजातसन्तुकुमारो देवदत्तस्म गयासीमे विहारं कारेरवा नानगगरमेहि तिवसिसकगन्धसालिभोजनस्म दिवसे दिवसे पञ्चवालिपाकसतानि अभिहरि। लाभसकारो निस्साय देवदत्तस्स परिचार' महत्त्वो जातो । देवदत्तो परिवारेन सदि विहारेखेव होति ।

तेन समयेन राजगहवासिका हे सहाया । तेषु एको सत्यु सिन्नके पब्बिजितो, एको देवदलस्स । ते अञ्जासञ्जा तस्मि तस्मि ठानीप पस्सन्ति विहारं गल्वाणि पस्सन्ति येव ।

अयेकदियमं देवदनस्स निस्मितको इतर आह्र –आबुरो। 'कि स्वं दवसिकं वेदेहि मुख्यमानेहि पिष्डाय चर्गस ' देवदनो गागरीमं विहारे सिसीरिस्वाव नातमार्ग्योह सुभोजन भुटजीत। एव स्वो गामानो इस निस्यः। कि स्वं दुक्कं अनुभोत्तिः 'कि ने गातीच गयानीमं आगन्त्वा मजतारमगं यागु गिविस्वा अट्टारसविधं स्वज्यकं साहिस्या नातमारसीह सुगोजन भिज्यतुं न बद्धतीति ?

सो पुनप्पूर्न उच्चमानो गन्तुकामो हुत्वा ततो पट्टाय गयामीसं गन्त्वा भुज्जित्वा क्राञ्जित्वा कारुस्सेव बेळुवनं आगच्छति । सो सब्बकाले पटिच्छादेतुं नासिक्व । गयामीसं गन्त्वा देवदत्तस्स पट्ठीपतं भक्तं भुज्जतीति नचिन्त्सोव पाकटो जातो । अय नं सहाया पुच्छिसु-सच्चं किर त्वं आवृत्तो [।] देवदत्तस्स पट्ठीपतं भक्तं भुज्जसीति ?

को एवमाहाति ?

अमुको च असुको चाति ।

मच्चे अहं आबुनों ! गयामीसं सन्त्वा भुञ्जामि । न पन से देवदतो भत्ते देति, अञ्जे सन्स्वा देतीति । आवृत्ती । देव [१६४] दत्तो बुजार्न पटिकप्टको, दुस्तीलो अजातसत् पनारंत्वा अधस्मेत असनो लाभनवकारं उपारंदिम । त्वं एवरूपे नित्यानिकस्मानने पब्यक्तित्वा देवदत्तस्य अध्यमेन उपार्श्व भोजनं भुञ्जिति । एहि तं सर्व्यनत्तिक नेस्सामति तं निभव आदाय धम्मकों आपिस ।

सत्था तं दिस्वाव-कि भिक्कवे । गतं भिक्कु अनिक्ष्ठनाञ्जेव आदाय आगतन्थाति ? आग्न भन्ने 'अर्थ भिक्कु मुहार्क सैनिक एव्हाजेत्वा देवदतस्य अवस्मेन उपप्र भाजनं भुञ्जनीति। सक्वं किर त्वं भिक्कु ! देवदत्तस्य अध्यमेन उपप्र भोजनं भुञ्जमीति । म अन् । 'देवदत्तो मक्कं अस्वे देति, अञ्जे मनुस्या देनित तमहं भुञ्जमीति ।

सत्था—मा भिक्क । एत्य परिहारं करि। देवदनो अनाचारो दुस्सीको। कवं हि नाम त्वं इघ पब्ब-जित्वा सम सासनं भजन्तो येव देवदत्तस्स भन्तं भुञ्जीम ? निच्चकार्काम भजनसीलकोव त्वं दिर्श्दर्दे येव भजसीति बन्दा अतीतं आहरि—

अतीतवस्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्यं कारेन्त्रे बांधिसत्तो तस्स अमज्जो अहोसि । तदा रज्जो महिला-मुखो नाम मंगलहत्यी अहोसि सीलवा आचारसम्पन्नो न किञ्चि विहेठीत। अधेकदिवसं तस्स सालाय समीपे रत्तिभागसमनन्तरे चोरा आगन्त्या तस्स अविदूरे निसिन्ना चोरमन्तं भन्नायमु-ग्वं उम्मगां भिन्दितस्त्रो

१ रो०-निष्पादेशि । २ सी०-एवरूपो उपायो नश्यि । ३ रो०-मोरा । ४ स्था०-उम्मक्षणो ।

एनं सन्तिचन्नेदकस्मं कताव्यं उपमाणन्य सन्तिचन्नेदन्य मगसदिसं तिर्यसदिसं निज्यटं निग्गुन्यं करवा मण्यं हरितुं बहुति । हरन्येन मारेत्याव हरितव्यं एवं उद्शादुं समस्यो नाम म भविस्सति । चौरेन च नाम सीलाचारपुत्तेन न भवितव्यं कत्त्वद्वेन फस्सेन साहस्वित्तेन मवितव्यत्ति। एवं मन्तेत्या बञ्ज्यमञ्जं उग्ग-चनुष्तिया अगर्मसु । एदेनेव उपायेन नन दिवसे पुर विस्तेति बहु विवसे तत्त्य आगल्या मन्तिस्त ।

सो तेसं ववनं मुखा मं सिक्खापेन्तीति सञ्जाय इदानि मया कक्खळेन फरसेन साहसिकेन भवि-तब्बन्ति तथारूपोव अहोसि । पातीव आगतं हत्थिगोपकं सोण्डाय गहेत्वा भूमियं पोयेत्वा मारेसि । अपरिम्य तथा अपरिम्य तथाति आगतागतं मारेति येव ।

महिळामुको उम्मतको जातो दिद्र्यदिट्ये मारेतीति रञ्जो आरोर्चायसु । राजापि बोधिसत्तं पहिणि— गण्ड पण्डित ! जानाहि केन कारणेन सो इट्ठो जातोति ।

बोधिसत्तो गन्त्वा तस्स सरीरे रोगाभावं ञ्ल्वा केन नुष्को कारणेनेस दुर्ठो जातीति उपधा-रेन्तो' अद्या जीवदूरे केसञ्चि वचनं मुख्या मं[१६५]एते सिक्खापेन्तित सञ्जाय दुर्ठो जातीति सिन्न्द्रानं कत्वा इत्यिगोपके पुन्छि-अस्य नुष्को हत्यसालासमोपे रत्तिभागे कोहिचि किञ्चि कथितपुर्व्वन्ति ?

आम सामि ! चोरा आगन्त्वा कथयिमूति ।

कोविसत्तो गल्या रञ्ञो आरोचेसि-देव! अञ्जा हित्यस्स सरीरे विकारो नित्य। चोरानं कर्षं सुरवा दटठो जातोति ।

इदानि किं कातुं बट्टतीति ?

सीलवन्ते समगक्रार् मणे हत्विसालायं निसीदापेत्वा सीलाचारकथं कथापेतुं बट्टलीति । एवं कारोहि ताताति ।

बोधिसत्तो गन्त्वा सीठवन्ते समणबाह्मणं हत्यिसाठाय निसीदावेत्वा सीठकपं कथेष भन्तेति आह । ते हत्यिस्स अविद्दे निसिम्ना- न कोचि परामस्तित्व्यो, न मारेतब्बो सीठाचारमम्पन्नेन सन्ति-मेतामुद्दयासूत्तेन भवितुं बट्टतीति सीठकपं कर्यावत् ।

सो तं सुरवा मं एते सिक्सपोरित्त इतोदानि पटठाय सीचवना शवितम्बन्ति गीछवा अहोनि । राजा बोषिसत्तं पुच्छिनक ताता ! सीछवन्तो जातोति ? बोषिसत्तो आह्-आम देवाति । एवरूपो टुटठहृत्यो पण्डिते निस्साय पोराणकथम्मे येव पतिट्ठितोति बत्वा इमं गायमाह-

पुराणचोरान बचो निसम्म महिळामुखो पोषयमानुचारि ।

मुसञ्जतानं हि बच्चो निसम्म गजुतमो सब्बगुणेसु अहाति ॥

तत्व पुरावभोरानाति पुरावचोरानं । निसम्माति मुखा । पठमं चौरानं ववनं मुखानाति अत्यो । सिह्यामुक्तीत हिल्यानसूनित सिहसमूकी । अवदा-यदा महिला पुरतो ओलोकियमाना सोभिति न पच्छतो त्रात्व प्रताने अभित्य सिहसमून्त्र । अवदा-यदा महिला पुरतो ओलोकियमाना सोभिति न पच्छतो नाति पुरतो ओलोकियमानो सोभिति । तस्मा महिल्यामुक्तीत्त्व नात्र अन्त्र । विषयमानुवारीति योषयन्त्रो मारेतो अन्ववारी । अयमे वा पाठो । सुस्कात्रीत्ताति सुरह् सञ्चानां सीजवनानं । गमुक्तमोति द्वारामको भग्नवहत्यी । सम्बन्धाने अक्षात्र कामान्त्री । सम्बन्धाने अक्षात्र साथको प्रतान सिह्यान स्वानान्त्रीति स्वानान्ति स्वानानिति स्वानिति स्वा

सत्या पृथ्वेषि त्वं भिक्सु [।] दिर्ठादिठ्ये येव भिन्न । चौरानं वचनं सुत्वा चोरे भिन्न,धिमकानं वचनं सुत्वा धीम्मके भथीति । इसं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जानकं समोधानीति । तदा महिळामुखो विषमेखसेवकभित्रकु अहोति । राजा आनन्दो । असम्बो पन अहमेबाति । [१६६]

७. अभिण्हजातकं

नाल कवल पदालवेनि इदं सत्था जेतवने विहरन्तो एकं उपासकञ्च महल्लकत्येरञ्च आरम्भ कथेसि ।

पच्चपञ्चवत्यु

सावरिषयं किर इं सहायका। तेमु एको वस्बिजित्वा रेवसिकं इतरस्स घरं गच्छिति। सो तस्स भिनक्षं दत्वा समिभ् भूष्टिज्ञता तेनेस मिद्ध विहार आगत्वा मात्र बुरिएसस्तर्यममा अल्डापसल्डापेन निसीदित्वा नगरं निसिति। इतरोपि ने याव नगरद्वारा अनुगल्या निवसित। सो तेसं विस्पासी मिनक्षूनं अन्तरं पाकटो जातो। अकेविदक्तं मिनक् तेसं विस्तासक्तं कपेना मम्मसमायं निसीदिस्।

सत्या आगन्त्वा-काय नत्य भिक्खवे ! एतरिह कथाय सिन्नसिन्नाति पुच्छि ।

ते-इमाय नाम भन्तेति कथाँयस् ।

सत्या–न भिक्कवे [।] इमे इदानेव विस्साप्तिका, पुब्वेपि विस्साप्तिकाव अहेर्नुन्ति वत्वा अतीर्त लाहरि–

अतीतवस्य

अतीर्त बाराणसियं ब्रह्मदत्तं रज्यं कारेन्तं बोधिसतो तस्स अमञ्चो अहोसि । तदा एको कुक्कुरो मंगकहित्यसाळं गन्ता मंगकहित्यस्स गुच्चनद्शतं पतितानि भत्तसित्यानि खादित । सो तेनेत्र योजनेन संबद-मानो भंगकहित्यस्य विस्तासिको जातो हित्यस्येव सन्निकं मूट्यति । उभोपि विना वित्तिनुं न सक्कोन्ति । सो हत्यौ नं सोण्डाय गहेत्वा अपरापरं करोन्तो कीळित । अयेकदिवमं एको गामिकमनुस्सो हत्यिगोपकस्य मूलं दत्या गं कुक्कुरं आदाय अत्तनो गामं अगमासि ।

ततो पट्ठाय सो हत्थी कुक्कुरं अपस्सन्तो नेव लादित न पिवति न नहायित । तमत्यं रञ्जो आरो-विषयु । राजा बोधिसत्तं पहिणि-गच्छ पण्डित ! जानाहि कि कारणा हत्थी एवं करोतीति ?

बोधिसत्तो हृत्यसालं गल्या हृत्यस्य दुम्मनभावं ञात्वा इगस्स सरीरे रोगो न पञ्जाविति केनिव पनस्य सद्धि मित्तसत्यवेन भवितब्बं, तं अपस्मत्तो एम मञ्ज्ञं सोकाभिभृतोति हृत्यिगोपके पुन्छि-अत्यि नवो इमस्स केनिव सद्धि विस्सासोति ?

आम सामि [।] एकेन मुनखेन सद्धि बलवा मेत्तीति ।

कहं सो एतरहीति ? एकेन मनस्सेन नीतोति ।

जानाथ पनस्स निवासनटठानन्ति ?

न जानाम सामीति ।

बोधिसत्तो रञ्ञो सन्तिकं गन्त्वा-मस्थि देव । हत्यिस्स कोचि आबाधो एकंन पनस्स सुनन्नंन सद्धि बलविस्सासो । तं अपस्सन्तो न भूञ्जति भञ्जेति बत्वा इमं गाथमाह-

> नालं कवलं पदातवे न च पिण्डं न कुसे न घसतुं । मञ्जामि अभिगृहदसना नागो सिनेहमकासि कुक्कुरेति ॥ [१६७]

तरम नास्तित न समत्यो । कब्लित्त भोजनकाले पठममेव पित्रं कवलं । यदातवित पादातवे । सिन्ध-बसेन आकारलोगो नेदितव्यो । गहेतुन्ति जल्यो । न च पिण्डन्ति खादनत्याय बट्टेरवा दीममानं भत्तिण्डिम् नालं गहेतु । न कुसेति खादनत्याय दिक्षानि तिणानिप नालं गहेतु । न चंतिकुन्ति नहापियमानो सरीर्राम्य संसिनुं नालं । एवं यं सं हात्यो कानुं न समस्यो तं तं सब्बं रञ्जो आरोचेरवा तस्स असमस्यभावे अत्तना सल्ल-निक्षतकारणं आरोचेन्यो मञ्जामीति आदिमात् ।

राजा बोधिसत्तस्स वचनं स्त्वा-इदानि कि कातब्बं पण्डिताति पुच्छि ।

'अम्हाक' किर मंगळहात्यस्स सहायसुनुखं एको मनुस्सो गहेत्वा गतो यस्स घरे तं सुनखं पस्सन्ति तस्स अय अयं नाम दण्डोति' मेरि चरापेथ देवाति ।

राजा तथा कारीस । तं पर्वात्त सुरवा तो पुरिसो सुनक्षं विस्सज्जेसि । सुनक्षं वेगेन गन्त्वा हरियसन्ति-कमे वअगमासि । हत्यी तं सोण्डाय गहेत्वा कुम्भे क्येत्वा रोदित्वा परिदेवित्वा कुम्भा ओतारेत्वा तेन भूत्ते पच्छा अनुना भन्जि । तिरुच्छानगनस्य आस्य जानीति राजा बोधिसत्तस्य महन्तं यसं अदासि ।

सस्या न भिक्कते ! इमे इदानेव विस्मासिका पुळीप विस्मासिका सेवाति इमे वम्मदेरानं आह-रिस्वा चतुष्ठच्यकयात विनिवदृदेखा अनुसर्मिच पटेत्या जातक समोधानीस। इस चतुष्ठच्यकयाय विनिवदृदनं नाम सम्बन्नतिकेपुण अस्यि येव । मयम्पन सव्यस्म आनिसंत्री पञ्जापनि तत्येव दस्मयिस्सामाति। नदा मुनक्षी उपासको अहीसि, हृत्यी महत्वकरूपेंगे, गाजा आनन्यो, अनक्चपण्डितो पन अहमेव अहीसित्ता।

अभिष्ठ जातक

८. नन्दिविसालजातकं

सनुष्ठप्रमेव भासेय्याति इदं सत्था जेतवने विहरत्तो छब्यांगियानं भिनस्तूनं ओमसवादं आरब्ध कवेसि ।

वच्ख्यसबस्य

तिस्म हि समये छब्बिगाया निषक् कल्हं करोत्ता पेसले जिक्क् सु सेन्ति, बम्मेन्ति, श्रोबिक्यन्ति, स्विह अस्कीसद्ब् स्विह अस्कीसद्वृहि अस्कोशितः। भिस्कु भगवतो आरोचेषु । भगवा छब्बिगाये भिस्कु प्रकोसायेता सम्बं किर तुन्हे कल्हं करोय भिस्क्योति पुन्छित्वा सम्बन्ति चुत्ते विगरिहत्वा— भिस्क्षवे । फस्सा बाचा नाम अन्यस्कारिका विरस्कानगातानियः अस्मादा। पुन्धेषि एको तिरस्कानगतो अत्तानं फस्तेन समुदाचरन्तं सहस्यं पराजेसीति वस्या अतीतं आहरि-[१६८]

अतीतवत्य

अतीते गन्याररहरे तक्किसिलायं गन्यारराजा रच्चं कारीत । तदा बोधिसत्तो गोयोनियं निम्मति । अय नं तरुणवच्छककाले येव एको ब्राह्मणो गोदिक्ष्मणादासकानं सन्तिकं गन्त्वा गोणं लिशस्त्रा नित्वविसालोति नामं कर्त्वा पूत्तदुशने ठपेत्वा सिम्पयायमानो यागुभत्तावीनि दत्वा पोमेसि ।

बोधिसत्तो वयप्यत्तो चिन्तेसि-अहं इमिना ब्राह्मणेन किच्छेन परिज्ञाग्यता सवा व सरिक्षां सकळजाबुरीपे अञ्ञो समधुरो गोणो नाम नित्य, यञ्जूनाहं असनो बळं दस्सेत्वा ब्राह्मणस्स गोसार्वीनयं ददेव्यन्ति ।

सो एकदिवसं ब्राह्मणं बाह्म-गच्छः ब्राह्मण ! एकं गोविन्दकं सेट्ठि उपसंकमित्वा मध्हं बलिबहो अतिबद्धं संकटसतं पबट्टेतीति बत्वा सहस्सेन अन्भूतं करोहीति ।

सो ब्राह्मणो सेट्ठिस्स सन्तिकं गन्त्वा कवं समुद्रुशपेसि इमस्मि नवरे कस्स गोणो धामसम्पद्योति ? अथ नं सेट्ठी अपुकस्स च असुकस्स चाति वत्वा सकलवगरे पन अम्हाकं पोणेहि सदिसो नाम नस्यीति आह ।

बाह्मणो-मय्हं एको गोणो अतिबद्धं सकटसतं पबट्टेतुं समत्यो अत्यीति आह ।

सेट्ठी गहपति-कुतो एवरूपो गोणोति आह ।

ब्राह्मणो-मर्व्हं गेहे अत्यीति ।

तेन हि अब्भुतं करोहीति ।

साधु करोमीति सहस्सेन अब्भुतं अकासि ।

सो सकटसतं बाळिकासस्सरपासाणादीनं येव पूरेत्वा पटिपाटियो ठपेत्वा सब्बानि अस्स्त्रन्थन-ग्रोत्तेन एकतो यन्पित्वा नन्दिविसालं नहापेत्वा गन्धेन पञ्चेपूर्णि दत्वा कष्ठे मालं पिळिन्धित्वा पुरिमसकटभूरे एककमेव योजेत्वा सर्पे पुरे निसीदित्वा पतोदं उम्बिपित्वा-अञ्छ कूट ! वहस्सु कूटाति आह् ।

बोधिसत्तो अयं मं अक्टं क्टबादेन समदाचरतीति चत्तारो पादे धम्भे विय निज्वलं करवा अट्ठासि ।

सेट्ठी तं खण्डन्नेव बाह्मणं सहस्सं आहरापेसि । बाह्मणो सहस्सपराजितो गोणं मुञ्चित्वा घरं गत्त्वा सोकामिमूतो निपन्नि । नित्वित्सालो चरित्वा आगतो बाह्मणं सोकामिभूतं दिस्वा उपसंकमित्वा—ींक काह्मणं ! निहाससीति आहं । कुतो मे निदा सहस्यं पराजितस्साति ?

बाह्मण ! मया एत्तर्क कार्ल तव गेहे वसन्तेन अस्यि किञ्चि भाजनं वा भिन्नपुट्यं, कोचि वा महित-पुट्यो, अट्ठाने वा पन उच्चारपस्सावो कतपुर्स्थाति ?

तत्था ताताति ।

अय में कस्मा कूटवायेन समुदाबरित ? तथेवेसी दोसो मम्हं दोसो नित्य। गच्छ, तेन सिंह डीहि सहस्रिह-अन्भतं करोहि, केवलं में अकटं कटवायेन न समदाबरीति।

बाह्मणो तस्त वचनं पुरवा गन्त्वा डीहि सहस्तेहि अञ्चुतं कत्वा पुरिमनयेनेव सकटसतं अतिबन्धित्वा निस्तिवालं मण्डेत्वा पुरिमतकटपुरे योजेंसि । कयं योजेसीति ? सुर्गं [१६९] पुरे निज्जलं बन्धित्वा एकाय कोटिया निविद्यालं योजेत्वा एकं कोटिय पुरावित निविद्यालं योजेत्वा एकं कोटिय पुरावित निविद्यालं योजेत्वा एकं कोटिय पुरावित निव्यालं मण्डेत्वा तेन्यात्वा निव्यालं मण्डेत्वा तेन्यात्वा निव्यालं कर्षात्वा निव्यालं क्षात्वा तेन्या निव्यालं क्षात्वा निव्यालं निव्यालं कर्षात्वा निव्यालं कर्षात्वा निव्यालं स्वालं स्वालं स्वालं पुरावित निव्यालं स्वालं पुरावित निव्यालं निव्यालं प्रवित्यालं प्रवित्यालं स्वालं प्रवित्यालं स्वालं प्रवित्यालं स्वालं स्वालं स्वालं प्रवित्यालं निव्यालं स्वालं प्रवित्यालं स्वालं स्

बोधिसत्तो अतिबद्धं सकटवत एकवेगेनेव आकड्डित्वा पच्छा ठितं सकटं पुरतो ठितस्स सकटस्स ठाने ठपेसि । गोविन्यकसेट्ठी पराजितो ब्राह्मणस्स हे सहस्सानि अदासि । अञ्जीप मनुस्सा बोधिसत्तस्स वहुं धनम-देषु । तं सब्बं बाह्मणस्सेव अहोति । एवं सो क्रोधिसत्तं निस्साय बहुं घनं लिम ।

सत्या- न भिक्कवे ! फरसवचर्न नाम कस्सचि मनापन्ति छब्बाग्गिये भिक्कू गरहित्वा सिक्खापदं पञ्जापेत्वा अभिसम्बद्धो हत्वा इमं गाथमाह-

> मनुञ्जमेव भासेम्य नामनुञ्ज कुदाचनं । मनुञ्जं भासमानस्स गरम्भारं उदद्वरी ॥ बनञ्च नं अलब्भेसि तेन बलमनो अहति ।

तत्य **मनुष्ठ अमेव भासेच्याति** परेन सिंद्ध भासमानी चनुरोसिनिरहितं मभुरं मनापं साल्ं सुदुर्क पिय-वननमेव शासेच्या | **पद्धभारं उद्धारीति** नन्तिविसालबिलवही अमनापं भासमानस्य भारं अनुद्धरित्वा (च्छा मनाप पियवचनं भासमानस्य हालस्या पं भारं उद्धरित उद्धरित्वा कड्डित्वा पबट्टेसीति अत्यो । दकारो पनेत्य अञ्जनसम्बद्धतेन पद्धनिकरीति ।

इति सत्या मनुञ्जमेव भासेय्यानि इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । तदा श्राह्मणो आनन्दो अहोसि, नन्दिविसालो पन अहमेवाति ।

निविधिमालजातकं

९. कण्डजातकं

यतो यतो गरुषुरन्ति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो यमकपाटिहारियं आरब्भ कथेसि ।

पच्चपस्रवस्थ

तं सिंह देशेरोहणेन तेरवनिपातं सरभिगगजातकः भाविभविस्सति । सम्मासम्बुद्धे पन यमकपाटि-हारियं करता देशकोके वसित्वा महापवारणायां केस्सरनगरदारि भोस्स्ह महत्तेन परिवारंत जेतवनं पविद्रुटे थिस्कू धन्मसभायं सिम्मपिताा- आवृद्धो ! तथागतो नाम असमयुरो । तेत तथागतेन वृद्धहे पूर्व अच्यो बहितुं सम्बन्धे [१७०]नाम नित्य । छ सस्यारो मयमेन पाटिहारियं करिस्साम मयमेव पाटिहारियं करिस्सामाति बस्वा एकम्मि पाटिहारियं न अकंतु । अहो, सत्या असमन्दोति सत्युगणकर्यं कपेन्तो नित्तीरिष्

सत्या आगन्त्वा काय नृत्य भिनस्ववे ! एतरिह कथाय सिम्नसिमाति पुच्छि ।

न भन्ते ! अञ्जाय कथाय एवरूपाय नाम तुम्हाकमेव गुणकथायाति ।

सत्या भिक्षवे ! इवानि मया बूज्रहभूरं को वहिस्सति ? पुत्र्वेषि तिरच्छानयोनियं निब्बत्तोषि अहं अत्तना समभरं कञ्चि नालत्यन्ति बत्वा अतीतं आहरि-

अतीतवत्य

अतीतं बाराणसियं बह्यदत्ते रज्जं कारेन्तं बोधिसत्तो गोयोगियं पटिसन्य गिष्ट् । अध नं सामिका तहणावच्छककाले येव एकिस्सा महान्यकाय घरे वसित्वा निवासवेतनतो । परिच्छिन्दित्वा अदत्तु । सातं यागु- भत्तारिहं पटिजणमाना पुत्तद्दुलते ठरेन्द्वा बह्देष्ठी । सो अय्यकाकाळकोत्थेव पञ्जापित्व । बयण्यतो च अन्त्र- नदक्को हुंत्वा गामगोणीहं सिंढ चरित । सीलावारसम्पन्नो अहोसि । गामदारका सिनेतृषि कम्प्रेमुणि गळीप गहेत्वा अोल्पन्नित्तं गुरुठीण गहेत्वा कीळिन्त, पिट्ठियम्पि नित्तीदन्ति । सो एकदिवसं चिन्तीसि- मम्ब्रं माना दुर्गाना मं नुत्रद्दुलां ठरेन्द्वा दुक्कोन पोसेसि, यन्नूगाहं मति करवा इसं दुमतभावतो मोचेय्यन्ति । सो तती पद्शाम भृति उपधारेनो चरति ।

अयंकदिवसं एको सत्यवाहपुनो पञ्चिह सकटसतेहि विसमतित्यं सम्पत्तो । तस्स गोणा सकटानि उत्तारेतुं न सक्कोति । पञ्चमु सकटसतेषु गोणा युगपरम्पराय योजिता एकम्पि सकटं उत्तारेतुं नार्वाक्षयु । बोधिसत्तीशं गामगोणीह् साँख तित्यसमीपं चर्ता। शत्यवाहपुत्तीपं गोगुतवितको । सो अस्य नृत्यो एतेषं गृत्रं अन्तरे इमानि सकटानि उत्तारेतुं समत्यो उसमाजानित्योति उपधारयमानो योधिसत्तं दिस्या अयं आजानित्यो सिक्बस्सति मन्दं सकटानि उत्तारेतुं को नृत्यो अस्स सामकोति गोणाकके पुष्छ-को नृत्यो भी ! इमस्स सामिको अर्थु धर्म सकटंगु योजेत्या सकटंगु उत्तारितेषु वैतनं स्थानोति ।

ते आहंसु-गहेत्वा नं योजेब नित्य इमस्स इमस्मि ठाने सामिकोति ।

स्रो तं नासाय रञ्जुकेन बन्धित्वा कर्डक्तो चालेतुं नासिक्स । बोधिसत्तो किर भितिया कीशताय यमिस्सामीति न अगमासि । सत्यबाहपुत्तो तस्साधिष्पायं ञात्वा— सामि ! तया पञ्चसु सकटसतेसु उत्तारि-तेसु एकेकसकटस्स द्वे द्वे कहारणानि भति कत्वा सहस्यं दस्सामीति आह ।

तदा बोधिसत्तो सयमेव अगमासि ।

१ स्था०-सरभंगजातके । २ रो०-संकरसनगरे । ३, रो०-निवासवेतनं ।

अय नं पुरिसा सकटेमु योजेसुं। अय नं एककेगेनेव उनिकामित्वा यक्ते पतिट्रागेसि । एतेनुपा-[१७१] येन सम्बसकटानि उत्तारीत । सत्यवाहपुतो एकेकस्स सक्टस्स एकं कत्या पञ्चसतानि अध्यक्त कत्या तस्स गळे बन्यि ।

सो बर्च मब्हूं यथापरिज्ञिन्न मितं न देति न वानिस्स मन्तुं वस्तामीति गन्त्वन सव्वपृरिक्स्स सकटस्त पुरतो मम्पं निवारित्वा अद्वासि । अपनेतुं वायमन्तापि नं अपनेतुं नासित्वयुं । स्त्यवासुप्तो जानाति मन्त्रे एस असनो मतिया अनुभावन्ति एकस्मि साटके सहस्त्यमण्डिकं वन्धिरवा- अयं ने सकटुत्तारणमृतीति शीवाय सम्बोति ।

सो सहस्वभण्डिक आदाय मातु शन्तिक अगमासि । गामदारका कि नामेर्त थप्पिकाकाळस्व गळेति बौषिसत्तस्य सन्तिक आगच्छन्ति । सो तेहि अनुबन्धितो दूरतोव पळायन्तो मातुसन्तिक गतो । पञ्चकं पन सकट-सतानं उत्तारितता रतिहि अक्बोरि किळन्तक्यो पञ्चाधित्व । उपाधिका तस्य गीवाय सहस्यत्विक दिस्वा तात । अये ते कहं कद्वारि गोपाळरारके पुण्डिव्हात तमस्य सुरवा तात ! कि अर्थं तथा क्ष्यक्रमतिया जीविनुकामा ? किकारणा एववर्ष वुक्कं अनुभौसीति वत्वा बोषियत्तं उष्ट्रोदकेन नहायेत्वा सक्यसरीर ते लेकेन मम्बत्त्वा पानीयं पायेत्वा सण्यासं भोजनं भोजेक्वा जीवितपरियोगतः नहि बोधिकनेत स्वयासम्म गता

सत्या न त्रिक्कवे ! तयागतो इदानेव असमघुरो पुब्बेप असमघुरो येवाति इमें घम्मदेसनं आहरित्वा अनसन्त्रि घटेत्वा अभिसम्बद्धो हत्वा इमं गाथमाह-

> यतो यतो गरुषुरं यतो गम्भीरवत्तनी। तदस्यु कण्हं युञ्जन्ति स्वास्यु तं बहुते धुरन्ति ॥

तत्व बतो बतो वर्षपुरीन्त बहिम वहिम ठाने वुरं वहभारियं होति अञ्जे बिनवहा उनिवासितुं न सक्कोत्ति । बतो पम्भीरवननीति वर्तात्व एत्वाति वर्ताते । मगास्तेत नामं । बहिम ठाने उदकावनबस्टमहत्त्वाय वा विमम-च्छिनवद्यायोवन वा मगागे वस्मीरी होतीति वर्षा । तबस्यु कर्ष्यु युक्त्यस्तीति अस्ति निपातमने दात्व कर्ष्ट् पञ्चनतिति अस्ते । बदा चुरञ्च वर होति, मगां व नामीरी तदा अञ्जे बिन्नवहं अपनेत्वा कर्ष्युमेव योजनीति वृत्ते होति । स्वास्तु वं वृत्ते वृत्तीन एत्वापि अस्तुति निपातमत्त्रयं । वो तं पूरे बहुतीति अस्यो ।

एवं भगवा तदा भिक्लवे ! कण्होव तं वूरं बहुतीति दस्सेत्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोघानेसि । तदा मङ्ग्लिका उप्पलवण्या अहोसि, अध्यिकाकाळको पन अहुमेवाति ।

कण्हजातकं [१७२]

१०, मुणिकजातकं

वा मुनिकस्साति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो घुल्लकुमारिकपलोमनं आरब्भ कथेसि । तं तेरसनिपाते चल्लनारदकस्सपजातके आविभविस्सति ।

पच्चपञ्चनस्य

सत्यापन तं भिक्क् स्थ्यं किर त्यं भिक्क्षु । उक्कण्ठितीति पुष्टिष्ठः । आम भन्तेति । कि निस्सायाति १ ब्रस्लकृमगरिकपळोभनं भन्तेति ।

सत्या- भिक्कु ! एसा तव अनत्यकारिका, पुत्र्वेषि त्वं इभिस्सा विवाहदिवमे जीवितवस्त्रयं पत्वा महाजनस्य उत्तरिभागभावं पत्तीति बत्वा अतीतं आहरि-

अतीतवत्य

अतीत बाराणसियं बहादते रज्जं कारेन्त्रं बोधिसत्तो एकस्मि गामके एकस्स कुटुन्विकस्स गेहें गोमोनियं निक्वति महालोहिताति नामेन । कणिद्ठभातािएस्स चुल्ललोहितो नाम अहोसि । तेथेव द्वे मातिक निस्ताय तास्म कुले कम्मपुरं वहदति । तास्म पन कुले एका कुमारिका अदिय । नं एको नगरवासी कुलपुतो अतनो पुतस्य वारेसि । तस्सा मातािपतरो कुमारिकाय विवाहकाले मानातानं पाहनकालं वतारि-गंगी भविस्पतीति यातृभतं तथा मृतिकं नाम सुकरं पोसेसुं। तं दिस्सा चुल्ललोहितो भातरं पुल्लिल – इमस्मि कुले कम्मपुरं वहदमानं अस्ट्रेडभातिक निस्ताय वहदति , हमेपन अम्हाकं तिवायलालादीनेव देनित सुकरं यागुमत्तेन पोसेन्ति । केन नृक्षो कारणेनेस एतं लभतीति ?

अवस्त भाता – तात चुल्लजीहृत ! मा त्वं एतस्य भोजनं पिद्या । अयं मुक्ते भरणभर्त भुल्जित । एतिस्साय हि कुमारिकाय विवाहकाले अगतात पातृक्कानं उत्तरियंत्री भविस्ततीति इमे युत्तं सुकर्र पोदीन्न । इतो कितपाहस्याञ्चयेत ते मनुस्सा आपिस्सिति अय न सुकरं पारेशु गहेत्वा कर्ड्डेजा हेट्टा मञ्चती नीहृरित्या जीविष्तकार्य पारेजा पातृक्कानं सुच्याञ्जनं करीयमानं पीस्सरस्वीति वत्या इसं पायमाह—

मा मुनिकस्स पिहयि आतुरस्नानि भृञ्जति । अप्पोस्पुक्को भूसं स्नाव एतं बीधायुलक्काणन्ति ।।

तत्थ मा मुनिकस्स पिह्मीति मुनिकस्स भोजने पिहं गा उप्पादिय। एस मुमोजनं मुज्जतिति मा मुनिकस्य पिह्मि-कदा नुको अहिम्प एवं मुक्किनो भवेव्यक्ति। मा मुनिकमार्थ पत्थिय। अयं हि आवुद्धापि मुज्जतिति तप्प मोजने विष्कृत्यानि मुज्जतिति अपिक्षानि। अप्पोस्कृतको मुनं सादावित तस्य मोजने निष्क्षमुक्को हुत्वा अत्तना कुर्वं मसं साद। एवं मैधायुक्षमक्त मुनं प्रीयायुक्षमत्यस्य कारणं।

ततो त्राचरस्तेव ते मनुस्सा आर्गाममु । मुनिकं घातेत्वा नानप्पकारीह पांचेतु । बोधिसत्तो बुल्ल-लोहितं आहु-दिद्ठो ते तात! मुनिकोति? विद्ठं मे भातिक! मुनिकस्त भोजन [१७३] फलित । एतस्स भततो सत्तपुणेन सहस्यपुणेन अम्हाकं तिणपलालभूममेन उत्तपञ्च जनवज्जञ्च दीघायुकाव्यणञ्चाति ।

सत्या एवं तो त्वं भिनन् पुब्वेषि इमं कुमारिकं नित्साय जीवितन्त्रयम्पत्वा महाजनस्स उत्तरि-भीनकभावं नतीति इमं धमस्यमं आहरित्वा सन्त्यानि पत्तासीत् । सन्त्यारित्योसाने उक्किण्डिमन्त्व सौतापति-फले पतिद्रताति । सत्यापि अनुसन्धि पटेता जातकं समोधानेति । तदा मुनिकसूकरो उक्किण्डितिमन्त्र वहीति । युक्कुमारिका एवा एव. बुल्क्कीहितौ आनन्दो, महालोहितो पत लक्ष्मेवाति ।

मृतिकजातकं

कुरक्षवाची ततियो निट्टितो

४. कलावकव्रगवण्णना

१. कुलाबकजातकं

कुलाबकाति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो अपरिस्सावेत्वा पानीयं पीतं भिक्ल आरब्भ कथेसि ।

पण्चुप प्रवत्यु

सावित्यतो किर हे सहायका वहरिमक्त् जनपर्य गत्या एकिंस्म कायुक्ट्ठाने ययाश्वासयं विस्तवा सम्मासम्बूढं परिस्तरसामाति पुन नतो निक्त्यानिया जेतवनामिमुत्ता पायिमु । एकस्स हत्य परिस्सावणं अत्यि एकस्स नतिय । डेपि एकतो पानीयं परिस्तावेत्वा पिवति । ते एकदिवसं विवादं अकंसु । परिस्तावनसामिको इतरस्स परिस्तावनं जदत्वा सयभेव पानीयं परिस्तावेत्व । इतरो पन परिस्तावनं अलभित्वा पिपासं सम्बादेतुं असक्कोन्तो अपरिस्तावेत्वा पानीयं पित्तवि । ते उभीपि अनुपुत्र्येन जेतवनं आगन्त्वा सत्यारं वन्दित्वा निवीतिषु । सत्या सम्भोदनीयं कथं कत्वा—कुतो आगतत्वाति पुत्त्यि ।

> मन्ते ! मर्यं कोसल्जनपरे एकस्मि गामके बसित्वा ततो निक्शमित्वा तुम्हामं यस्सनत्याय आगताति । कच्चि पन बो समग्गा आगतत्त्वाति ?

अपरिस्सावनको आह-अयं भन्ते अन्तरामको मया सिद्ध विवादं करवा परिस्सावनं नादामीति ।

इतरो बाह-अयं भन्तं ! अपरिस्सावेत्वाव जानं सप्पाणकं उदकं पिवीति ।

सच्चं किर त्वं भिक्खु! जानं सप्पाणकं उदकं पिथीति ?

आम भत्ते ! अपरिस्सावितं उदकं पीतं मयाति ।

मत्या भिक्कः ! पुन्ने पश्चिता देवनगरे रज्जं कारेन्ता युद्धपराजिता समूर्शप्टरेन पटायन्ता इस्सरियं निस्साय पाणवर्धं न करिस्सामाति ताव महन्तं यसं परिन्वजित्वा मुपःषायोतकानं जीवितं दत्वा रथं निवक्तियभूति बत्वा अतीतं आहरि-

अतीतवस्य

अतीर्ते मगघरपुँ राजगहे एको मगघराजा राजं कारिस । तदा बोधिसत्तो यथा एतरहि सक्को पुरिम अत्तभावे मगघरपुँ राजगहे एको प्राचार विदेश विद्यास्त्र विद्यास के स्वित्तर है। एवं दिस येव मण्डलामके हिन्दर्श हो हुएवा निकारित । तामागहण-दिव वे सम्बन्ध मारिस्ते वामागहण-दिव वे सम्बन्ध मारिस्ते वामागहण-दिव वे स्वत्त के सामागहण-दिव वे सामागहण-दिव सामागहण-दिव सामागहण-दिव सामागहण-दिव सामागहण-दिव सामागहण-दिव सामागहण

तेनेव सर्वि बुड्बानि करोत्ता कालसेन्व बुट्टाय वासिकरसुमुसलहत्या चतुम्हारवाविश् मुसलेन पाक्षाचे उब्जनेत्वा पबर्ट्टिन। गानाने अक्काटिबातकत्त्वे हुएत्ति। विसमं सर्व करोत्ति। वेतु अत्वरतित। पोक्कार्राणयो जणित। मार्ज करोत्तित। वानानि देत्ति। वीलानि रक्कात्ति। एवं बेभूत्येन सकलगामवासिनो बोधिसलस्त कोवादे द्रव्या सीकानि रिक्वस् ।

अप नेसं गामभोजको चिन्तेसि-अहं पृथ्वे एतेलु जुरं पिचन्तेसु पाणातिपातादीनि करोन्तेसु चाटिकहा-पणादिवतेस चेव सम्बर्शिक्सेन च चनं कप्रामि, इदानि पन मधो माणको सील रुक्कापेसीति, तेसे पाणातिपाता-वीनि कार्नु न वेति । इदानि पन नो पञ्च सीलानि रक्कापेस्मतीति कुबो राजानं उपसंकमित्वा-देव बहू बोरा गामधातादीनि करोन्ता विचरप्तीति आह ।

राजा तस्त वचनं सत्वा-गच्छ ते आनेहीति आह ।

सो गल्ला सब्बेपि ते बन्धित्वा आनेत्वा आनीता आनीता देव ! चोराति रञ्जो आरोवेसि ।

राजा तेसं कम्मं असोघेत्वाव हृत्यिना ते मद्दापेथाति आह ।

ततो सम्बेषि ते राजंगणे निपन्शापेरवा हींच आनियमु । बीधसत्तो तेसं ओबादं अदासि नुम्हे सीलानि आवज्जेय पंसुङ्जकारकं च रञ्जे च हत्यिम्हि च अत्तनो सरीरे च एकघरिसमेव भेनं भावेषाति । ते तथा अकंसु ।

अय तेसे महनत्वाय हित्य उपनेसुं । सो उपनीयमानोपि न उपगच्छति, महाविरवं विरक्तित्वा पळायति । अय अञ्जामञ्जा हरिय जानियस् । तेपि तयेव पळासिस् ।

राजा-एतेसं हत्ये किञ्च ओसघं भवित्सतीति चिन्तेत्वा विचिनधाति आह ।

विचिनन्ता अदिस्वा नित्य देवाति आहंसु । तेन हि किञ्चि मन्तं परिवत्तेस्तन्ति [१७५] पूच्छय ते अस्यि वो परिवत्तनामन्तोति ।

राजपुरिसा पुन्छिसु ।

बोधिसत्तो अत्यीति आह । राजपुरिसा अत्यि किर देवाति आरोचिंयसु ।

राजा सब्बेपि तं पक्कोसापेत्वा तुम्हाकं जाननमन्तं कथेथाति आह ।

बोधिसत्तो अयोज-देव ! अञ्जो अम्हाकं मत्तो नाम नत्त्वि, अम्हे पन तिसमत्ता जना पाणं न हनाम, अदिसं नादियाम, मिच्छा न चराम, मुसाबार्ट न सणास, मज्जं न पिश्राम, मेत्तं भावेम, दानं देव, मन्गं समं करोम, योजवर्राणयो खणाम, सालं करोम । अयं अम्हाकं मन्तो च परित्तञ्च बहुढि चाति ।

राजा तेसं वसको पेसुञ्जकारकम्स सम्बं गेहै विमनं तञ्च तेसञ्जेव दासं करवा अदासि । तं हरियञ्च तेसञ्जेव अदासि । ते ततो पट्ठाय यथारुचिया पुञ्जाित करोत्ता चतुमहापये महत्त्तं सार्ज कारेस्सामाति बर्हाक वक्कासायेल्या सार्क पट्ठाय हुं। मानुपामेगु पन चिनाठक्वन्तात तस्सा साराय मानुपामानं पत्ति नार्द्ध । तेन च समयेत बोधिसतस्स गेहे मुगम्मा गुचिता गुनदा मुजाताित वर्तादिययो होत्ति तासु मुगम्म एक्ति । हर्षा पुच्च मुजाति वर्ता कञ्च वदासि । सो साधृति सम्यदिक्करवा प्रकार कर्म कर्माक स्वार स्वार सार्क मं जैट्ठिकं करोहीत वर्ता कञ्च वदासि । सो साधृति सम्यदिक्करवा परमयेत काल्करक्तं सुक्कारात तम्बद्धत्वा विज्ञात कर्म वर्दा अपन पढिनेकरेना ठमेसि । अप सार्ज निट्ठापेरवा कर्णकारीपनकाले—अहो अय्या । एकं न सरिस्हाति बाह् ।

किं नाम होति ?

कण्णिकं लद्धं बट्टतीति ।

होतु आहरिस्सामाति ।

इदानि छिन्नरुवसेन कातुं न सक्का, पुज्ये येव छिन्दिरवा तच्छेरवा विजिशत्वा ठपितकण्णिकं सञ्च बद्भतीति । इदानि कि कातव्यन्ति ?

सचे कस्सचि गेहे निद्धावैस्वा ठिपतविक्कायिककाँग्णका अस्यि सा परियेसितब्बाति ।

ते परियेवत्वा सुबस्माय मेहे दिस्ता मुकेन न क्षांम हु। सचे में सालायं पत्तिकं करोच दस्सामीति वृत्ते पन मयं मातुगामानं पत्ति नारमहाति आहंतु। अच ने बर्डकी आह-अप्या तुम्हें कि करेच ? ठेपेला बहुस्कोकं अञ्च्न सातुग्रमस्तिक्त वृत्ते वाम निव्य । गण्ड्य कण्णिकं एवं स्वतं अस्त्रकं कस्म निव्दं निस्स्त्रतिति । ते सामृति कण्णिकं गहेल्या सार्क निव्दं निर्माति । ते सामृति कण्णिकं गहेल्या सार्क निव्दं निव्यं नार्म निव्यं निव्य

"मातापैक्तिमरं अन्तुं कुरू बेहुपचायिनं । सर्व्ह सिक्कलसम्मासं पेतुपौरयप्यहायिनं ॥ मण्डेरविनये युलं सच्चं कोवाभिभुं नरं । संबेदेवा सावतिसा आह सप्पृरिसो इसी ॥" ते ति ।

एवं पार्शिसयमार्थं आपिज्यत्या जीवितपरियोद्याने तार्वतिसम्बने सक्की देवराजाहुरया निब्बत्ति ।
तेपस्य सहाया तत्येव निब्बर्तित्य तिस्म काले तार्वतिसमन्त्रने असुरा पटिवस्तित । तक्की देवराजाहुरया निब्बर्तित । तक्की देवराजाहुरया निब्बर्तित । तक्की देवराजाहुरया निब्बर्तित । तक्की देवराजाहुरया निब्बर्तित । तक्की देवराजाहुरया गर्भित । तार्वाद विवाद स्वार्यापुणियु । असुरायनने नाय वित्तेवस्त मत्ते सामार्ग्यापुणियु । असुरायनने नाय वित्तेवस्त मत्ते सामार्ग्यापुणियु । असुरायनने नाय वित्तेवस्त हेट्टिमतं ने तार्वाद्यवेदकाल्याप्ताप्त्रीय । तार्वाद देवलोस्ता विवाद विवाद विवाद । तार्वाद विवाद व

कुलावका मात्तिल ! सिम्बलिस्मि ईसामुझेन परिवज्जयस्यु । कार्न चजाम अमुरेसु पाणं माधिमे विजा विकुलावा अहेसुन्ति ॥

तत्व बुकाबकार्ति सुरण्यपोतका । मातकोति सार्राज आमन्तेसा क्रिस्विलिस्थिनित परस एते सिम्बलिक्स्वे ओलन्वन्ता ठिताति दस्सेति । **१ सामृत्रेन परिचण्यवस्त्रति** एते एतस्स रचस्स् [१७७] डैवामुलेन यथा न हरूव्वन्ति एवं ते परिचण्यपस्य । कार्म **चलाम अपुरेयु पाणन्ति** यदि अम्हेनु असुरानं पाणं चलन्तेषु एतेसं सोर्स्यि होति कार्म

१ संयुत्तनिकाय, सक्कसंयुत्त । २ स्या०-नलबनं ।

क्वास्त्र पृक्षेतेमेव सध्यं समुरेषु अपनृत्वं पाणं कवान । साधिये दिक्षा विकुकाबा बहेबुन्ति इसे पन दिवा इसे पन परल-प्रेतिका विकरतीक्ष्मिणतकुण्यकताया पिकुलावा मा अहेबु, मा अन्त्राकं दुक्तं पहोतं व्यारि तिव तिनत्तर नित्तर प्रविव । मातक्स्यंमानुको तस्त कर्मा कृत्या रणं निवतंत्र वा उत्तर्वित । मातक्स्यंमानुको काली । अपूरा पन तं निवतंत्रमानमेव विस्ता अदा अञ्चिद्धि चक्काबाद्वीह सक्ता आपकृति , क्ले लीभावा रणो निवती भवित्तर तीति म रक्मपर्मीता प्लायिका अदुरावनमेव पवित्तित्व । सक्कोपि वेवनगरं पवित्तित्वा द्वीषु देवकोकेमु देवगणेन परिकृते नगरपन्त्र अदुरावि । तिस्त क्षणे एठवि मिनिवता योजनसङ्क्ष्मिक्षेयो वेवनपत्त्रात्वाचे उद्दर्शि । विक्यमने वर्द्दहत्ता वेवन्यनो देवन गामं अर्कतु । अथ सक्को पुन अनुरानं अनागमनस्वाव पञ्चसु ठानेनु आरक्सं ठेवि । यं सम्माव कृतः

> "अन्तरा द्विन्नं अयुज्ज्ञपुरानं पञ्चिवचा ठिपता अभिरक्खा । उरगो करोति पयस्स च हारी मदनयत्ता चत्ररो च महन्ता ॥" ति ।

डे नगरानिय युद्धैन नहेतु असक्कुणैन्यताय अयुक्तपुरानि नाम जालानि,देवनगररूव असुरनगररूव । यदा हि असुरा वलक्ता होत्ति अय देवेहि पत्नायित्या देवनगरं पविसित्या डारे. पिहिते अमुराने अतसहस्याम्प किञ्चि मातुं न सक्कोति । यदा देवा बळ्यत्ता होत्ति अय अमुरेहि पत्नायित्या अयुरनगरस्स डारे पिहिते सक्कानं सत-सहस्याम्प किञ्चि कानु न सक्कोति । इति इमानि डे नगरानि अयुक्तपुरानि नाम । तेसं अन्तरा एतेसु उरवायितु पञ्चमुठानेसु सक्केन रक्ता ठरिया।

तत्त्व उरासद्देन नागा गहिता । ते उरगा उदके बलवना होन्ति । तस्मा सिनेकस्स पठमालिन्दे तेसं आरक्ता । करोति सदेन पुण्णा गहिता तेले किर करोटि नाम पानतोजने तेन ते नामं लिमम् । दुविवालिन्दे तेसं आरक्ता । पयस्तहारिसहेन कुम्भण्डा गहिता दानवर्षक्तमा किरेते । ततिवालिन्दे तेसं आरक्ता । मदा-सुनादेन मक्ता । पत्तिवालिन्दे तेसं आरक्ता । मदा-सुनादेन मक्ता । तस्ता पत्तिवालिन्दे तेसं आरक्ता । मदा-सुनादेन मक्ता । तस्ता प्रकाशक्ति तेसं आरक्ता । सहार्योक्त महार्योक्त सुनादे न महत्ताति चतारो महाराजानो बुना पञ्चमालिन्दे तेसं आरक्ता । तस्मा यदि अपूरा कुरिता आदिलवित्ता देवपूर उपयन्ति पञ्चित्रोत्ते । त्रिक्ति वित्तर्योक्ति स्वर्ते अपर्यान्ति पञ्चित्र वित्तर्योक्ति । तस्ता वित्तर्योक्ति स्वर्त्व अपर्यान्ति पञ्चित्र वित्तर्योक्ति । तस्ता वित्तर्योक्ति वित्तर्या प्रवित्तर्या प्रवित्तर्या प्रवित्तर्या वित्तर्या प्रवित्तर्या वित्रप्रवित्तर्या प्रवित्तर्या । तस्त्रा वित्तर्या वित्तर्या प्रवित्तर्या । तस्ता वित्तर्या वित्तर्या वित्तर्या वित्तर्या वित्तर्या वित्तर्या । तस्ता वित्तर्या वित्तर्या वित्तर्या वित्तर्या वित्तर्या वित्तर्या । वित्तर्या वित्तर्या वित्तर्या वित्तर्या वित्तर्या वित्तर्या । तस्त्रा वित्तर्या वित्तर्या वित्तर्या वित्तर्या वित्तर्या वित्तर्या वित्तर्या । तस्त्रया वित्तर्या वित्तर्य वित्तर्य वित्तर्या वित्तर्या वित्तर्या वित्तर्य वित्तर्या वित्तर्य वित्तर्य वित्तर्य वित्तर्य वित्तर्या वित्तर्या वित्तर्य वित्तर्य वित्तर्य वित्तर्य वित्तर्य वित

इमेमु तन पञ्चमु ठानेमु आरक्कां ठरेत्वा सक्के वेदानिमन्दे दिख्यसम्पत्ति अनुभवमानं मुषम्मा चित्रवा तस्मेव पादपरिचारिका हुत्वा निब्बत्ति । किण्यकाय दिल्तिसस्येत चस्सा पञ्चयोजनवितका सुवमाना नाम देवमणितमा उदपादि यत्य दिल्यसेतच्छतस्य हुन्दुरा योजनयमाणे कञ्चनपत्त्वके निस्तनो सक्को देवातिमन्दो देवमनुस्तानं कत्त्वबिक्चिन करोति । मुद्दितापि चित्रवा तस्मेव पादपरिचारिका हुत्या निव्यति । उपपासक करणनिस्मन्देन चस्सा चित्तकतावनं नाम उप्यानं उदयादि । मुनन्दापि चित्रवा तस्मेव पाद-परिचारिका हुत्वा निब्बत्ति । पोक्सरणिनिस्मन्देन चस्सा नन्दा नाम पोक्सरणी उदयादि ।

सुत्राता पन कुनलकम्मस्स अक्तता एकस्मि अरञ्जे कन्दराय बकसकुणिका हुत्वा निब्बता। । सक्ते मुजाना न पञ्जापिन, अस्य नुस्तो निब्बता ति आवज्येत्वी दिस्ता तस्य गरवा तं आदाय देवलोकं गरवा तस्सा रमणीयं देवनगरं नृषमानेदसमं वित्तलतावनं नन्दापोभ्च रिणञ्च दर्शन्दा एवा हुमलं करना मम्हं पाद-परिचारिका हुत्वा निब्बता त्वं पन कुमलं अक्त्या तिरच्छानशीनिमं निब्बता देनो पट्टाम सीलं रच्छात्रीति तें ओविदत्वा पञ्चमु सीलेमु पतिद्रापेदवा तत्वेव नेत्वा विस्सज्येति। सापि ततो पट्टाय सीलं रम्बादि । सक्के कित्याहण्ययेन सक्का नृत्वो सीलं पिक्वुनिम गरवा मण्डस्थन उत्तानो हुत्वा पुदतो निर्मण्य । सा मदमण्डकोति सन्द्राय सीक्षं आयोदिस । मच्छो नंगूर्ट वालेवि ।अस्य नं जीनति मञ्जेति विस्सज्येति । सक्को सामु सापु सम्बिन् स्विष्ठ सीलेक्युन्ति देवलोकं अगमापि। सा ततो चुता नाराणसिस्य कुम्मकाराहे निब्बत्ति । वक्को करूनुव्यो

१ रो०-सक्को देवानमिन्दे।

निक्कत्ताति तत्व निक्क्ष्तमार्थ अत्वा घुक्काएळ (जुकानं यानकं पूरेत्वा मक्को गामस्स महस्वक्रवेदीन निवीधिरवा एळाकुकानि गक्क्ष्याति एळाकुकानि मक्क्ष्माति उम्प्रोदेशि । मनुस्ता जामस्या देहिताताति जाहेषु । अहं सीक-रक्षकाका देशि, पुत्र हे शिंत रक्षकाति ? मर्य सीलं नाम न महत्व महित्ता । मम्ब्रं मुकेन क्यां सीलं एक्षकाकुक्षेत्र हुन्योति । मनुस्ता को चार्य १ एकाकुक्षिति पक्किम्यु । घुजाता तं पर्वत्त सुत्वा मन्द्र आनोत्ते मिक्स्वतीति गत्वा देशि ताताति आह । सीलं रक्ष्वित अम्माति ? आम रक्ष्यामित । हर्य मम्बा पृथ्वमेव अत्याय आमतन्ति वर्डि यानकेन वेहद्वारे ठरेत्वा पक्किमा । धारि यावतायुक्त शिंतर विकादमा त्री नति हर्य मम्बा पृथ्वमेव अत्याय आमतन्ति वर्डि यानकेन वेहद्वारे ठरेत्वा पक्किमा । धारि यावतायुक्त शिंतर विकादमा त्री नृति विकादमा विकादमा । क्या महत्त्ववित्त सामिकं गळ्डूति स्पृत्र होन्याचीति । सक्को कहन्युक्ते या निक्वताति ओलोक्नेतो तत्व निक्क्साव्य अत्या सुवाता विचक्तित गळ्डूती मुग्ने हन्तिपातीति । सक्को कहन्युक्ते या निक्वताति ओलोक्नेतो तत्व निक्क्साव्य क्षित्र । पात्रहरूने आनेत्वा चित्तर्वात सामिकं पळ्डूति अपूर्वात आहेषु । सा श्रेलोक्नेती सक्कि दिस्या पुत्र्योत पित्रह्वकेन अर्थ मे सामिक्कोति अग्यहेशि । सो तं देवनगर आनेत्वा अष्ट्रहितानं नाटिकाकोटोनं येट्टिकं करवा यावतायुक्त ट्रवा

सत्या इमें घम्मदेसनं बाहिरित्वा एवं भिक्सवे पुस्ते पण्डिता देवरज्जं कारयमाना असनी जीवितं परिक्वजन्नापि पाणातिपातं न करिष्ठु । स्थं नाम एकक्षे नित्यानिकसासने पळ्ळीज्ञा अपरित्सावितं सप्पापकं उदकं पिविस्सतीति ते भिक्सु गरहित्वा अनुसन्धि ण्डेटेशा जातकं समोधानेसि । तदा मातिकसंगाहको आनन्दो ळहोति, सक्सो पन ऋतेचाति ।

कुलावकजातक

२. नचजातकं

घर्व मन् अन्ति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो एकं बहुमण्डिकं भिन्ख्ं आरब्भ कथेसि ।

पण्जुपन्नवस्यु

वत्यु हेट्ठा देवधम्मजातके बुत्तसदिसमेव । सत्या तं भिक्कुंसच्चं किर त्यं भिक्कुं! बहुभण्डोति पुच्छि । आम भन्तेति । किंकारणा त्यं भिक्कुं! बहुभण्डो जातोति १

सो एत्तकं मुख्याव कुढो निवासनपाक्ष्यनं छड्केदवा इमिनादानि नीहारेन विचरामीति सत्यु पुरतो नग्गो जट्ठासि । मनुस्ता विश्वीति आहंसु । सो ततो पलायित्वाहीनायावतो । भिक्ख् वम्मराभायं सन्तिसिमा सत्यु नाम पुरतो एक्क्पं करिस्सतीति तस्स अगुणकर्षं कथेसुं ।

सत्वा आगन्त्वा – काय नृत्य भिक्लवे ! एतरिह कथाय सन्निसिमाति पुच्छि ।

भन्ते ! सो हि नाम भिनन्तु नुम्हाकं पुरतो चतुपरिसमञ्ज्ञे हिरोत्तव्यं पहाय गामदारको विय नगो ठस्या मनुस्सेहि जिग्चिष्ठयमानी हीनायावत्तित्वा सासना परिहीनोति तस्स अगृणकवाय निसिक्षम्हाति ।

सत्या- न भिक्सवे ! इदानेव सो भिक्खु हिरोत्तप्पाभावेन रतनसासना परिहीनो, वृब्बेपि इत्थिरतन-पटिलामतोपि परिहीनो येवाति बत्वा अतीतं आहरि-

अतीतवस्थु

अतीते पठमकप्ये चतुप्पदा सीहं राजार्ग अकंतु, मच्छा आनन्दमम्हं, मकुणा मुक्णमृहं । तस्स पन सुव-णमृंसराजस्स घीता हंसपीतिका अभिवधा बहोसि । सो तस्सा वरं अदासि । [१८०]मा अतनो चिन्न घीवतं सामिकं बारित । हंसराजा तस्सा वरं दल्बा हिमबन्ते सम्बन्धकुणे सिक्षराताधी । नानप्पकारा हंसपोरादयो सकुणणणा समा-लन्दा एकस्मि महन्ते पासाचतिक सिक्षरितिषु । हेसपाजा अतनो चिन्न घित्रचे निक्षणा आगल्दा गण्डृत्ति धीतरं पण्डोसापित । सा सकुणसंध को ओकोन्ती मिषवण्याणीरं विच्येषुणं मोरं दिस्ता अवयं मे सामिको होत्ति आरोबेसि । सकुणसंधा मोरं उपसंकीमस्ता आहंतु-सम्म मोरं ! अयं राजधीता एनकानं सकुणानं पत्रकं मामिनं रोचेन्ती तिव विच उप्पादेसीति । मोरो अञ्चापिताच मे बलं न पस्सतीति ' अतितुद्दिधा हिरोत्तव्यं भिन्दरः तात्रच महतो सकुणसंध्य सम्बन्ध पत्रकं पत्रारंखा निच्यु आरोध । नच्चतो अपिश्चको हिरीत्रव्यं भिन्दरः तात्रच महतो सकुणसंध्य सम्बन्ध क्षाच्या सामिक्षरा । हिर्म अधिन विच्या अधिन स्वाप्त क्षाच्या । नास्स

> रुवं मनुष्ठलं रिचराच पिट्ठी बेळुरियवण्णूपनिभा^२ च गीवा। व्याममत्तानि च पेक्सुणानि नच्चेन ते धीतरं नो दवामीति॥

तरक रुदं मनुष्ठ प्रस्ति तकारस्य दकारो क्लो। स्थं मनापं विस्तिनक्षी मणुगीत अल्थो। रिषया च
पिद्वीति पिट्टीपित विका चेव सोमता च । बेकुरियवण्यपितमाति क्ष्वीर्यमणियणप्रतिस्य । व्याममत्तानीति
एक-यमण्याणानि । येवबुणानीति पिञ्जानि । नच्चेन ते बोतरं नो बदामीनि हिगोनणं भिन्दित्वा निच्नतमावेवेव तं एक-पस्म निच्छञ्जस्य धीतरं नो ददामीति क्रत्वा हंसराजा तस्मि येव परिसमक्ते अन्तो भागिनैत्यहंसयोतकस्य धीनरं अदासि । मोरो हंसपोतिकं अष्ठभित्वा ळिज्जत्वा तति उर्दर्श्या प्रसाध । हंसराजापि
असतो समहरुठानमेव गती ।

सत्या न भिक्कवे [।] इदानेवेस हिरोत्तप्पं भिन्तित्वा रतनसासना परिहोनो पृब्वे दित्यरतनपटिलाभतोपि परिहोनोयेवाति दमं घम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा गोरो बहुभण्डिको भिक्खु आहोसि । हंसराजा पन अहमेवाति ।

नच्चजातकं [१८१]

३. सम्मोदमानवातकं

सम्मोदमामाति इदं सत्या कपिणवर्षां उपनिस्ताय निमोभारामे विहरन्तो आतककाहै । आरम्म कपेति । सो कुणानजातके आविमविस्सति । उदा पन सत्या जावके जामन्तेत्वा महानाजानी बातकार्तं अञ्च-मञ्जे विष्यहो नाम न युत्तो तिरच्छानगतापि हि पुन्ने सममकाले पत्नामिन सेम्पेबत्या होरियमत्ता यदा विवस्त्रापमा तदा महानिनासं पत्ताति कत्वा ब्लातिराजकुलोहे साणियो कतितं आहिर-

अतीतवत्थ

अवीते बाराणधियं बहुमबते रूजं कारेन्त्रे बोबिसत्तो षट्टक्योनियं निव्यक्तित्वा अनेकवट्टकसह-स्मपित्वारो बर्ज्जं बसति । तवा एको बट्टकस्टूको तेसं वसनदृष्टानं गम्ला बट्टकसस्तितं कस्वा तेसं सिर्फ-पतितमार्वे ज्ञालो तेसं च्यरि वार्लं बिगिस्वा परियन्तेतु सहन्तो सब्बे एकतो कस्वा पण्डि पूरेरवा वरं बन्त्वा ते विकिणित्वा तेन मकेन जीविक कम्पेति ।

अयंकदिवसं बोधिसत्तो ते बद्दके बाह- अयं साकृषिको अन्हानं मातके बिनासं पापेति अहं एकं उपायं जानामि यनेस आहे पणितृतं न सम्बिस्सति । इतौदानि बद्धाय एनेन अन्हानं उपि जाले बित्तमती एकेन एकेक्टिंस जालिस्सके सीसं टरेदवा जाले उम्बिसिया हिण्डतद्दानं हरित्वा एकेस्स कष्टकपून्वे पश्चिष्य । एवं सन्ते हेटका तेन तेन कानेन पाणिससामाति ।

ते सम्बे साधृति पटिसुणिसु ।

कुतिबारिक्से उपरि जाले रे किले बोधिसतीन कुलनयेनेव जालं उनिकारित्या एकस्मि कण्टकगुम्बे बिधित्वा बयं हेट्टामानेन ततो ततो पताधिम् । साकृणिकस्स गम्बतो जालं मोचेन्तस्वेन विकालो जातो । यो तुम्ब्रहस्योव अनुमाधि । कुनिवस्तती पट्टामाधि ने बट्टाना तथेव करोन्ति । सोधि याव सुरियस्त्रत्यंगमना आलमेव मोचेन्तो विकिन्न जर्कासत्या एच्ब्बरत्योव गेंडे गम्ब्रित ।

अप्यस्स भरिया कुञ्झित्वा त्वं दिवसे दिवसे तुच्छहत्यो आगच्छाम, अञ्चम्पि ते बहि पोसिसब्बर्ठानं अस्यि मञ्जेति आह ।

साकुणिको- भरे[।] मन अञ्जं पोसितब्बट्टानं नित्य। जिप च बो पन ते बट्टका समगा हुत्या विचरन्ति, मदा विकासने जालं जायाय कण्डना,चे बिग्तेप्ता गच्छत्ति। तबो पनेते सब्बकारुमेव सम्मोदमाना विद्दिरस्सिनि। त्वं मा विन्तिय। यदा ते विवादमार्थाजनस्सिन्त नदा ते सब्बेव जादाय तब मुखं हात्यसानो जागच्छित्सामीति वत्वा भरिताय इमं गायमाह-

> सम्मोदमाना गच्छन्ति खालमादाय पश्चित्रनो । यदा ते विवदिस्सन्ति तदा एहिन्ति मे बसन्ति ॥

तत्व यदा ते विवविस्तातीति यस्मि कालं ते बट्टका नाना लढिका नानागाहा हुस्ता विविदस्सन्ति कल्हं करिस्तन्तीति अत्यो । तदा पृहिन्ति में बसन्ति तस्मि काले सम्बेपि ते मम वसं आपिष्कस्सन्ति । अघाहं त गहेत्वा तय मुखं हासयन्तो आगष्किस्सामीति भरियं समस्तातीस ।

कतिपाहस्सेव पन अच्चयेन एको बट्टको गोचरभूमि श्रोतरत्तो असल्लक्खेरवा अञ्जस्स सीसं अक्काम। १ सी०-चुम्बटकलहं । २ री०-जार्थ । तरों को में सीचे अक्कमीति कुन्ति । अहं असन्धेमलेला अक्कान मा कुन्तिमित वृत्ति व कुन्तिस्वेव । ते पुत्तपुरं कर्षेन्ता स्ववेव मञ्जे जाल अन्तिस्वासीति अञ्चयमञ्जे विवासं करिष् । तेषु विवस्तरेषु सीधसत्ती चिन्तीस्तिवासके धीत्यमावो नाम नरिष्क, इदानेव ते जालं न जिक्कापिस्सीन्त, ततो महत्त्व विनासं पापुणिस्सन्ति, साकुणिको श्रोकार्ष्ठ कीमस्तिति, या प्रमास्त शत्ते न सकत्त विद्यतित । सो सन्तो परित्वे आदात अञ्चल्य गती ।

साकुणिकोसि को कविपाहरूबयेन आगन्तवा व्हटकविस्तर्ग वस्सरका तेसं सिम्पणितालं उपरि जार्थ उन्किपि । अपेको बर्टको-सुन्हें किर जार्थ उनिकापन्तस्सेव मत्पके छोमानि परितानि इदानि उन्तिपाति आह. ।

अपरो तुम्हें किर जाले उक्खिपन्तासेव श्रीमु वस्क्षेमु पत्तानि पतितानि इदानि उक्खिपाति आह । इति तेसे त्वे उक्खिप त्वे उक्खिपाति वर्षनातम्ब्येव साष्ट्रणिको जालं सीक्षिपता सब्बेव ते एकतो कत्वा परिच्य परिचा मध्यि हाययमानो गेडुं अपमाधि ।

सत्या एवं महाराजा ! आलकानं कलहो नाम न युत्तो, कलहो हि विनासमूलमेव होतीति इन धम्मदेवनं आहरित्वा अनुर्वोच्च घटेत्वा आलक्षं सभोधांनीति । तदा अपण्डितबट्टको वेवदत्तो अहोति । पण्डित-बटटको पन अद्वर्गवाति ।

सम्मोदमानजातकं

८. मञ्जजातकं

न मं सीतं न मं उच्छान्त इदं सत्या जेतवने विहरन्तो पुराणदुतियिकापकोभनं आरब्भ कथसि । पच्चपश्रवत्य

तदा हि सत्या तं भिन्न्यु सज्यं किर त्यं भिन्न्यु ! उनकष्ठितोति पुष्टि । सज्यं भगवाति । केनासि उनकष्ठापितोति ? पराणदतियका में मन्ते ! मच्परहत्यरसा तं वहित् न सन्कोमीति ।

अप नं सत्या- जिन्ह्युं । एसा हि इत्यी तब अनत्यकारिका । पुब्बेपि त्वं एतं निरसायं मरणं पापुणन्तो मं आगम्म मरणा मसोति बत्वा अतीतं आहरि-

अतीतवस्य

जतीते बाराणसियं अहादत्ते रज्जे कारेन्ते बोधिसत्तो तस्स पुरोहितो अहोसि। तदा केवट्टा निदयं जात्र जिंदि हो। जिस्स सा मण्डी गुरतो गण्डामा वापण्डाति । तस्स सा मण्डी गुरतो गण्डामा वाणण्डाति । तस्स सा मण्डी गुरतो गण्डामा जात्र है १८३ विजयं घोधिया वालं परिद्रामाना गता। सो पन कामगिद्यो लोलमण्डा वालकुण्डिक मेव पविद्रामें तस्त वालं परिद्रामा मण्डी गहिला अमारेत्वाल बाधिकपिद्दे जिल्हा सा मण्डी गहिला सा मण्डी गहिला परिद्रामा वाणण्डा सा मण्डी अन्त्र सो मृत्र रित्रवेल गतीति मिय बोगस्त सा मण्डी ति तदेव मा मण्डीत तदेव में बाधित परिदेवमानी इसे पायमाइन

न मंसीतंनमं उपहंन मंजालस्मि बाधनं। यं च मंग्रङ्जने मध्यी अञ्जंसो रतिया सतीति॥

तत्वन मं सीतं न मं उन्हींन मन्छानं उदका नीहरकार्व सीतं होति, तिस्मिम्प गते उन्हें होति । उदुभयं सन्धाय न मं सीतं न मं उन्हें बाच भीत परिदेवति । यिष्य अंगारेसु पच्चनमूत्रनं हुन्हं भविस्सर्ति तिम्म सन्धाय न मं उन्हींन्य परिदेवते । म मं बालांस्य बाष्मनीत्त यस्मि में जालांस्य बाध्म अक्षीरित तिम्प मं न बायेतीति परिदेवति । यं च मन्ति आदिगु अयं पिण्डत्यो—सा मन्छी मम प्रताले पिततस्य इमेहि केवर्टिह साहित्यामं अजानन्ती मं अपस्यामाना सो मन्छो इदानि अन्त्रं मण्डिक कामरतिया गतो भविस्सतीति चिन्तेति तं तस्सा दोमनस्यन्ताय चिन्तनं मं अध्योति वालिकापिट्टे तिपको परिदेवति ।

तिस्स समये पुरोहितो दासपरिसपरितुतो नहानत्याच नदीतोरं आगतो। सो पन सब्बहतञ्जू होति। तेनस्स मच्छपरिदेवनं मुख्या एतटहोसि- अयं मच्छो क्रिक्षेसपरिदेवनं परिदेवति। एवं आनुरांचनो को पनम मिस्समानोपि निरयेपेव निक्शितस्ति, जहमस्स अवस्तयो भविस्तामीति केवहटान सन्तिकं गन्दवा-क्रमो । तन्त्रे अन्हाकं एकदिवासिन् थ्यञ्जतस्याय मच्छेन देशाति आह ।

केवटटा- कि बदेथ सामि ! तुम्हाकं रुच्चनकमच्छं गण्हित्वा गच्छथाति आहंसु ।

अम्हाकं अञ्जेन कम्मं नत्यि, इमञ्जेव देवाति ।

गण्डथ साभीति ।

बोधिसक्तो त उभोहि हरथेहि गहेरवा - नीरतीरे निसीदिरवा- अस्भो मच्छ ! सचे ताहं अञ्ज न पस्से-व्य औवितक्सथं पापुणेय्यासि । इदानि इतो पट्ठाय मा किलेसवसिको अहोसीति बोवदिरवा उदके विस्सु०√स्वा नगरं पाविसि ।

सत्या रमं पम्मदेषनं आहरित्वा सञ्चानि पकामेसि । सन्वर्षार्थयोसानं उवकण्ठितमिक्कु सोतापत्ति-फ्ले पतिद्कासि । सत्थापि अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । तदा मच्छी पुराणदुत्तियिका अहोसि, सब्छो उक्कण्ठितमिक्कु, पुरोहितो जहमेव अहोसिन्ति ।

५. बटटकजातकं

सन्ति पक्काति इदं सत्था मगधेसु चारिकं चरमानो दाविगानिब्बापनं आरब्भ कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्य

एकिस्म हि समये सत्या मणधेषु चारिकं चरमानो अञ्जलराँस्म मणधगामके पिण्डाय चरित्वा विकास पिण्डागलपिक्ततो मिमकृगणपित्वो गर्मा पिटिजिय । तिस्म समये सहावानो उट्ठिह । पुरती च पण्डातो च बहु मिमकृ दिस्सति । तोपि को अस्मि एकबुमो एकजालो हुत्वा अवव्यरमानो आगण्डते । तत्वेकं पुष्ठजनिम्मकृ मरणमप्रभीता पर्टाग दस्साम, तेन बहुब्द्रटमं इतरो आगि न ओरण रिस्सतिति अर्पिमहित्वं नीहिर्द्धा आगि करोलित । अपरे आहंसु – आबुतो ! तुम्हे कि नाम करोण ? सगनमञ्जे ठितं चन्दं पाचीन-लोकघातुतो सगण्डत्वं तहस्सर्थासप्रतामिक्तं सुरियमण्डलं अताती ठिता, समूर्द सिनेवं निस्साय ठिता तिनेच- जन अस्मस्तता विय सदेवकं लोकं अगणुमण्डं अनाना सिद्धं गण्डनतमेष सम्मासम्बुद्धं अनोलोकेत्वा पर्टाग देमाति वदस्य, बुद्धवं नाम न बानाय ? एव सरस् सन्तिकं तमस्सामाति । ते पुरतो च पण्डतो च गण्डता सम्बेपि एकतो हत्या द्वावा व्यवज्ञता मान्वेपि एकतो हत्या व्यवज्ञता मान्वेपि एकतो हत्या व्यवज्ञता मान्वेपि एकतो हत्या व्यवज्ञता मान्वेपि एकतो

सत्या महानिनशुरोपपरिवारो अञ्जतरिमां पदेने अट्ठाति । दाविमा अभिभवनतो विध विरवन्तो आगस्टित । आगस्या तथागतस्य टितट्टर्ग पत्था तस्य परेसस्य सम्या कोळसक्तीसम्यतं टार्ग पत्तो उदके भौषिकाषिवतिपुक्ता विद्या तिब्बाचि । विनिन्नेषदो ईत्तिसक्तिसम्यत्वट्टार्ग अवस्परितु नासस्यि । भिनव् स्वप्तु गुणक्यं आरोभनु-अहो । बृद्धानं गृणा ने नाम अर्थ हि नाम अप्येतनो अणि बृद्धानं टितट्टार्ग अवस्परितुं न सक्कांति, उदके तिवक्ता विद्या निवासित । अही । बृद्धानं अनुभावो नामाति ।

सत्था तेमं कथं मुखा न भिक्सबे ! एतं एतरिह मध्हें बढ़े ये इमं भूमिप्पदेसे परबा एस अगि निब्बा-यति । इदं पन मर्ख् पोराणकसच्चवलं । इमस्मि हि पदेसे सकलम्पि इमं कप्पं अगि न जलिस्सति कप्पट्ठियपाटि-हारियं नामेतन्ति आह ।

अथायस्मा आनन्दो सत्यु निसीदनत्याय चतुगुणं संघाटि पञ्चपेसि । निसीदि सत्या पल्लर्क आभु जित्वा । भिन्नवुर्मयोषि तथागतं बन्दित्वा परिवारेत्वा निसीदि । अय सत्या इदं ताव मन्ते ! अम्हार्क पाकटं अतीतं पटिच्छतं तं नो पाकटं करोषाति भिन्नवृहि आयाचितो अतीतं बाहरि-

अतीतबस्य

अतीले मगभरद्हे तह्मियंव परेसे महाबोधिसाती बट्टमवीमियं पटिसा्चिय गहेला मानुकुष्वितो जातो ज्ञानक अवकासं प्रतादेवा निवास्त्रकाले महामेण्डुस्थ्यमाणे वट्टमवीमित अहारित। अच नं मानापितरी कुणावके निवास्त्रकाले महामेण्डुस्थ्यमाणे वट्टमवीमित अहारित। श्रेष्ठ नं मानापितरी कुणावके निवास किया निवास निवास निवास निवास निवास निवास मानवल्य वादा उपिस्पिया वाद्य उपिस्पिया वाद्य उपिस्पिया वाद्य उपिस्पिया वाद्य विद्यास निवास निवास

१ रो०-गुणं । २ स्या०-महाभण्डसकटनाभिष्यमाणो ।

गमनबर्क भेबेय्य उप्पतित्वा बञ्जारव गण्डेय्यं, सर्व पार्व उित्तविपत्वा गमनबर्क भवेय्य पदवारेन अञ्जल्य गण्डेय्यं।
मातापितरीपि स्त्री में मरणमयमीता में एकक पहार्ग वार्ति पत्तिरायन्ता पलाता। इदानि से अन्त्रभं एरिकरणं
नित्ति बत्ताणोगिन अतरणो, फिबूनो अञ्ज मवा कातुं "इट्रतीति। असरस एतरहाँगिन हमित्रम कोको सीलगुणो
नाम अरित्त सन्वयुगो नाम अरित । ततीते पारिमयो पूरेत्वा बोधितके नित्तीतित्वा अभिमृत्ता सीलस्यापिनः
ज्ञाविवृत्तितिवृत्तिनाणवरसनसम्पत्ता सन्वताहुरूकाराज्ञ्यकित्वसमाताता सम्बद्धतेनु व सम्प्यवत्तनेतामात्तमा
सम्बद्धसूत्र हम्माव्यस्य एक्टा परिविद्धा वम्मानुषा नाम अरित, मित्र वार्षि एकं सन्वं अतिव सीवज्ञमानो
एको समाव्यस्यो पञ्जापति तसमा अर्ताते बुढे चेद तिहि परिविद्धगुणे च आविज्ञत्वा मित्रविव्यमानं सम्बद्धस्य वहेत्वा सन्वकित्यस्य स्वयं विज्ञानानं सम्बद्धस्य वहेत्वा सन्वकित्यस्य स्वयं विज्ञानानं सम्बद्धस्य सन्वित्ति । तेन एतं —

"अस्यि लोके सीलगुणो सच्चं सोवय्यनृह्या । तेन सच्चेन काहामि सच्चिकरियमनुसर ॥ आविज्जित्वा घम्मबलं सिरत्वा पुब्बके जिने । सच्चवलमवस्साय सच्चिकरिय अकासह ॥" न्ति ।

अय बोधिसतो अरीते परिनिब्बनानं बुढानं गुणे आवज्जिस्वा अत्तनि विज्जमानं सच्चसमावं आरम्भ सच्चकिरियं करोन्तो इमं गायमाह-

> सन्ति पक्सा अपतना सन्ति पादा अवञ्चना । माता पिता च निक्कन्ता जातवेद ! पटिकस्मानि ।।

तत्य सिन्त पश्चा अपतनाति मध्हे पश्चा नाम अस्य उपलब्धानः । तो व स्रो सक्ता एनेहि उप्पतिनुं आकातेन मन्तृत्य अपता । सिन्त पावा अवक्वाति पादारि में अस्य । तीह पन में बठ्विनुं पादवारममनेन मन्तुं न सक्काति [१८६] अवञ्चा । साम्रापिता च निक्काताति में व में अञ्ज्यस्य नेस्युं तेरि मरणायेन मानापिता है। निक्काता । साम्रापिता किन्ता । साम्रापिता निक्काता । साम्रापिता निक्का । साम्रापिता । साम्

इति यहासती नम्बे मन्हें पम्बानं अस्थिनायों ते व पसारेत्वा आकामे अपतनभावों व सन्धं पादानं अस्थिमावों चेव³ उनिवासित्वा अवन्वनामावों मातासितुम्नं मं कुठावके येव छड्डेरवा पनातमावों च सम्बो सामाव-मृतों येव जातवेव ! एतेन सम्बेन त्वं इतो पटिनकसाति । कुठावके निपप्रका व सम्बोतिरां क्वार्ति । तस्त सह सम्बोतिराया सोध्यक्त सीमान्ते ठाने जातवेदों पटिनकमि पटिनकमनतों च पन सायमानों वने जन्मं गतो उदके पन ओपिकापिता उक्का विथ तत्वय निम्मादि । तेन वृक्त-

"सह सच्चकतं मय्हं महापज्जिलतो सिखी ।

वज्जेसि सोळसकरीसानि उदकं पत्वा यथा सिखी ॥" ति 3 ।

तं पनेतं ठानं सकलेपि इमिस्म कप्पे अभिना अनिभगवतीयता कप्पद्ठियपाटिहारियं नाम जातं । एवं बोजिसतो सज्यकिरियं कत्या जीवितपरियोसाने यथाकम्मं गतो ।

सत्या न निक्सते ! इसस्स बनस्स श्रीमता अनडकोत्यस्थं एनरिष्ठ मध्यं बलं पोराणं पनेतं बट्टक-पीनककाले मद्भमत सञ्चवनित इसं बम्मदेवनं बाहरित्या सम्बाति पकासेता । सम्बपरिकोत्ताने केवि बटेतापमा अहेतुं केवि सरुवारामिनतो, केवि अन्यामिनतो नहेलु, केवि बरहुसँ पत्ताति । संस्थापि अनुसाध्य बटेत्या जातकं समीथानेति । उदा मातापितरो एवरिष्ठ् मातापितरोत्य कहेतुं । बट्टकराजा पन अक्सेवाति ।

वटदकसातकं

१ चरियापिटक-बहुपोतकचरियं । २ रो०-से च । ३ चरियापिटक-बट्टकपोतचरियं ।

६ सङ्गणजातकं

यं निस्सिताति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो बहुदपण्णसालं भिनन आरवम कथेति ।

प्रवृपन्नवस्यु

एको किर भिक्कु सत्युसितक कम्मद्द्वानं गहेत्व। जैतवनतो निक्कम कोसनेषु एकं पच्चत्तामं उपनिस्ताय एकिस्म अरुव्ये तेनासने वसति। अयस्य पटममामे येव पण्यसाला डिस्ट्रण।सो पण्यमाला से दहृदा दुक्कं बतासित मनुस्तानं आविक्तः। मनुस्ता हराति नी सेतं परिसुक्कं केदारे पारंत्वा करित्साम एतिस्म पापिने बीजंपित्वा सीचे वर्षित बतिकत्वा निष्मा कामिया कर्माय निर्वेद्वा पार्यिने मीजंपित्वा नोह्यति एते तं कम्मं अपिसित्ता हिंदिती एते हिंदित केति किस्म विकास क्षेत्र क्षेत्र केति क्षेत्र केति किस्म विकास हिंदिती एते किस्म विकास हिंदिती एते हिंदिती हिंदिती

सत्या तेन सिंढ पटिमन्यारं कन्यां— कि भिक्ष्युं! मुखेन वस्मं बुखोर्मि ? कम्मट्ठानं ते मत्यकं पत्तान्त पुच्छि ।

सो तं पर्वृत्ति आचिन्सित्वा सेनासनसप्पायस्य मे अभावेन कम्मट्ठानं मत्यकं न पत्तीन्त आह । सत्या-पृत्यं भिनवः तिरुद्धानगर्नापि अननो मण्यासप्पायं ज्ञानिमु न्यं कस्मा न अञ्ज्ञासीति बत्बा अनीतं आहरि-

अतीतवस्यु

अतीने बाराणसियं उद्घारसे रज्यं कारेन्ते बोधिससो सकुणयोनियं निकासित्वा सकुणसंघरियुतो अरञ्जायनने सामामिरप्रसम्पत्रं महारक्षं निस्साय बस्ति । अवंकरिबयं नस्स रक्ष्मस्स सामागु अञ्जापन्त्रं यंसनित्मु नुष्णं पतित पूमी उट्ठाति । ते दिखा बोधिससो चिन्नीस—इमा हे सामा एवं वंसमाना ऑग्य विस्स-अस्मिति सो वित्वा पुराणपण्णानि पण्डिस्सितानो पट्ठाय इसन्यि रुक्षं झापेस्सित । न सम्का इप अम्हेंहि बित्तुं । इमो पन्नापित्वा अन्त्रत्य पन्नु बहुतीनि । मो समुक्रमंत्रस्य इसं गायसाह—

> यं निस्सिता जगतिरुद्धं विहंगमा स्वायं अग्गि पमुञ्चति । दिसा भजय वक्कंगा जातं सरणतो भयन्ति ॥

तत्त्व जणतिष्कृत्ति जगती बुज्बित गठवी । तत्त्व जातरुक्तो जगतिरुक्तीत बुज्बित । विश्वेषमाति विर्हे बुज्बित आकासं तत्त्व गामतो पस्त्री विर्हागमाति बुज्बित । विश्वेषमाति विर्हे कुज्बित आकासं तत्त्व गामतो पस्त्री विर्हागमाति बुज्बित । विराह्म कुज्बित । विराह्म विराह्म विराह्म । विराह्म वि

बोषिश्वसस्य वयनकरा पण्डितसकुणा तन सिंद्ध एकप्पहारेनेव उप्पतित्वा अञ्जल्य गता । ये पन अपण्डिता ते एवमेशं आहंमु एस विन्दुमत्ते उदके कुम्भीले पस्सतीति । तस्य वयनं अगहेत्वा नत्येव वसिस् । तती

२०

१ सी०-इतमङ्गं ।

निषरस्तेव बोषिवत्तेन षिन्तिताकारेनेव अनिग निब्बत्तित्वा तं रुम्बं अग्गहेसि । घूमे च जालामु च उट्ठितासु बुमन्था सकूणा अञ्जल्य गन्तुं नासम्बन्ध अगिमिह पतित्वा विनासं पापुणिमु ।

सत्या एवं भिक्त्यू ! पुब्ने तिरच्छानमतापि घवकाणे वसत्ता अत्ततो सण्यासप्पारं जानित, त्यं कत्सा न जञ्जावीति इमं बम्पदेवनं आहरित्या सच्चाति पक्तिसि । सच्चपरित्रोद्यानं [१८८] सो निक्क् संतापत्रिकले वितिद्दित्तो सत्यापि अनुसाँच घटेरवा जातकं सामोगरिष । तदा बोधिससस्स वचनकरा सकुणा बुवपरिता अहेतुं पण्डितसङ्गो पन अहमेवाति ।

सकू जजातकं

७ तित्तिरजातकं

ये वदमपवायन्तीति ^भ इयं सत्था सार्वास्य गच्छन्तो सारिपुत्तत्थेरस्य सेनासनपटिवाहनं आरब्भ कथेसि ।

पच्चपन्नवस्यु

अनाविषिण्डकेन हि विहार कारेत्या दूते वैसितं सत्या राजगहा निक्कमम वेसानि पत्वा तस्य यथाकिरत्तं विहरित्वा सार्वात्व गमिस्सामीनि मार्ग गटिपिज्ञ । तेन च समयेन छब्बीगावातं अन्तेवाशिका पुरतो गृरतो गण्डवा देशनं सेनासनेमु अगहितसेव दर्श तेनासनं अन्हार्क अन्यकासस्स दर्द आर्थात्यस्य इर्द अन्हारूपेव सर्वस्तातीति सेनासनाति पश्चित्रकारिता । पच्छा आगरा येदा नेनासनानि न लगन्ति । सारिपुपत्येरस्कापि अन्तेवासिका पंत्रम्य सेनासन परियमना : लीगमु ।

थेरो सेनामनं अलभन्तो सत्यु सेनासनस्य अविदूरे एकस्थि इक्वमूले निसज्जायः च चंकमेन च बीतिनामेसि । सत्या पच्चूससमये निक्चमित्वा उक्कामि । थेरोपि उक्कामि । को एसोति ?

अहं भन्ते [।] सारिपुलाति ।

मारिपुत्त ' इमाय वैलाय इध कि करोमीति ?

सो तंपवृत्ति आरोचेंसि ।

सल्या थे रस्त वचनं सुत्वा इदानि ताव मित्र भीवनते थेव भिक्क् अञ्जयन्त्र आगरवा अप्यतिस्सा निहर्तन्त, परितिक्षुने नृत्वो कि करिस्सत्तीति आवज्जेत्यस्य बम्मसंबेगो उद्यादि । वो पमाताय रित्तया भिक्कु-संयं सन्तिपातागेरवा भिक्कु पुष्टि – मन्त्रं किर भिक्कुनं । छव्विगया पुरतो पुरतो गत्त्वा बेरानं भिक्कुनं केनानां परिवाहत्तीनि ?

सन्वं भगवाति ।

तती छव्बिमायं गरहित्वा धीम्म कथ कत्वा भिक्क् आमलेसि- को नृत्वो भिक्क्त्रे । अग्गामन अग्गोदक अगापिण्ड अरहतीति ?

एकच्चे भिक्क् सात्त्रयकुळा पब्बजितोत आह.सु. एकच्चे ब्राह्मणकुळा, एकच्चे यहपतिकुळा पब्ब-जिनोति। अपरे विनयधरो, धम्मकविको, पटमस्स झानस्म लाभी, दुतियस्स, तितयस्स, चतुत्र्यस्स झानस्स लाभीति। अपरे मोतापत्रो, सकदानामी, अनातामी, अरहा तेविक्जो छळभिन्जोति आहसु।

एव तेहि भिक्कृष्टि अनानो अनानो रुप्तयमेन अप्यासनादिरहान कथितकाले सत्था आह— न भिक्कवे । सद्य आसने अभागनादिगि पदा सनिवकुण एव्यकितो प्रतास, ब्राह्म प्रकृता, न गृहपानुकुल, न गृहपानुकुल। प्रवास । सिन्ता, न विकाय प्रोत्त । न मुनापनाद्वा प्राप्त । सिन्ता, न विकाय प्रोत्त । सिन्ता मान्ति प्रतास । सिन्ता सिन्ता प्रतास । सिन्ता । सिन्ता प्रतास । सिन्ता प्रत

१ स्था०-बृड्डमपचार्यासः ।

अरथ तेसं जोवाददानत्वाप-पुखे निक्कवं ! तिरच्छानगतापि नको पनेतं अम्हाकः पतिरूप य अयं अञ्चनमञ्ज अम्मारवा अप्पतिसा असमागवृत्तिनो विहरेत्याम । अम्हेतु महत्त्वकतरं जानित्वा तस्य अभि-वादनावीनि करिस्सामाति सामुकं बोमंसित्वा अयं वो अहत्त्वकोति ज्ञात्वा तस्य अभिवादनावीनि कत्वा देवपयं पुरस्याना गताति कत्वा अतीतं जाहरिः-

वर्ती तवत्व

अतीतं हिमबन्तपस्सं एकं महानिश्रोचं उपनिस्साय तथा सहाया विहरिसु—िर्तितारो मक्करो ह-त्वीति । तो अञ्जयकञ्च अन्यारका अप्यतिस्था अतमायबुत्तियो अहेबुं । अय नेसं एतदहोसि-न युनं अम्हाक एकं विहरित् । कृत नवं यो नो महत्त्वकतरो तस्य अभियादनायीनि करोत्ता विहरेत्यामाति ।

को पन नो महत्ककतरोति जिन्तेत्वा एकदिक्स अत्येसो उपायोति तथोपि जना निवोधनुकै निर्धा-दित्या तिसिरो व मक्कटो च हॉन्व पुँच्छिमु- सम्म हिल्प † त्वं इमं नियोधकक्स कीवण्यमाणकालतो पट्ठाव जानामीति 2

सो श्राह— सम्मा! अहं तरुणपोतककाले इम निश्रोधगण्छ अन्तरसर्त्यासु करवा गण्छामि। अन्तरि-त्वा ठितकाले च पन में एतस्स अम्मसासा नामि पट्टेति। एवाहं इम गण्डकालतो पट्ठाय जानामीति।

पुन उभोपि जना पुरिमनयेनेव मक्कट पुच्छिसु।

सो आह— अह सम्मा [।] मक्कटच्छापको समानो भूमियं निसीदित्वा गीवं अनुकिक्षपित्वाव इमस्स निग्नोधपोतकस्स अग्गेकुरं खादामि । एवाहं इम खुइककालतो पट्ठाय जानामीनि आह ।

अथ इतरे उभोपि पुरिमनयेनेय नित्तिरं पुण्छिमु ।

सो आह-सम्भा ! पुत्ने अपुक्तिंग नाम ठाने महानिग्रोधरुक्को आहोता । आहं तस्म फलानि आदित्वा एतिस्म ठाने वच्चे पातेति, ततो एस रुक्को जातो । एवाहं इम अजातकारुतो पद्ठाय जानामि । तस्मा आहं तुम्हेहि जातिया महत्वकतरोति ।

एवं बृत्ते मक्कटी च हत्यी च तित्तिरपण्डित आहमू- सम्म ! त्व अम्हेहि महत्वकतरो । इतो पट्ठाय मय तब सक्कारगरकारमाननवन्दनपूजनानि चेव अभिवादनपञ्चुट्ठान अञ्जलिकम्मसामीचिकम्मानि च करिस्साम, अथवारे च ते ठस्साम । त्वं पन इतो पट्ठाय अम्हाक औबादानुसामीन दहेय्यामीति ।

तनो प्रदाय तिनिरो तेस अभाव अर्वास, सीलेसु पतिद्वापित, सयस्य भीलानि समादित । ने नयोपि जना पञ्चसु सीलेसु पतिद्वाय अञ्चमञ्च सगारवा सप्पतिस्सा समायबुत्तिनो हुन्या जीविनपरिन् योमाने देवलोकपरायणा अहेसुं ।

तेनं तिष्णं समादानं तितिरियबह मयिय नाम आहीत् । ते हि नाम भिरस्त्रवे ! तिरच्छानगता अञ्जानक्यां मनात्रवा सप्पतिस्सा विहरित्तु । तुम्हेपि एवं स्वास्त्रता सम्मविनये पम्मवित्त्वा कस्मा अञ्जामक्यः अनान्त्रा अप्यतिस्मा विहरत्य ? अनुजानािम भिन्नवे ! हतो पट्ठाय तुम्हाक यपावृद्ध अभिनादनपञ्चदद्यान अज्ञानिकम्म यपावृद्धं अमासनं अमोदकं अमापिण्डं । त हतो पट्ठाय च नवकतरेन बृह्दवतरो भेनासने परिवाहित्यको । यो पटिचाहेस्य आपिन दुनकटसािन । एवं सत्या इमं वम्मदेनन आहरित्वा अभिनस्त्रव परिवाहित्यको । यो पटिचाहेस्य आपिन दुनकटसािन । एवं सत्या इमं वम्मदेनन आहरित्वा अभिनस्त्रवे हुल्वा इमं गम्मतन्त्र

ये बद्धमपत्रायन्ति नरा धम्मस्स कीविदा । दिट्ठेव धम्मे पासंसा सम्पराये च स्म्मतीति ॥

तत्य ये बद्धमपचायनीति जातिबद्धो बयोबद्धो गुणबद्धोति तयो बद्धा ! तेमु जातिसम्पन्नो जातिबद्धो नाम । वये ठितो बयोबद्धो नाम । गुणमम्पन्नो गुणबद्धो नाम । तेमु गुणसम्पन्नो बयोबद्धो इन्नर्सम् ठाने बद्धोति जिषणेतो । जपत्रायन्तीति वेट्ठापचायिकक्यनेन पूत्रेन्ति । धम्मस्स कोविदाति जेट्ठापचायनवम्मे कोविदा कुसला दिट्ठेव धम्मेति हमस्मि येव जलमावे । पासंसाति पंससाति पंससाति पंससार । सम्पराये च सुमतीति सम्परेतव्यो इन्हें लोकं हित्या गमस्त्रो परलोकोपि तेसं सुगति येड होतीति । अयं पनेत्व पिण्डल्योः भित्रसवे । सत्तिया वा होन्तु बाह् सणा वा वेस्ता चा सुदा वा गह्ट्या वा पर्यात्रका वा तिरक्षणनाता वा ये केचि सत्ता जेट्ठापचितिकम्मे केका कुसला, पुनसम्प्रकानं वमोसुकानं कपचिति करोतिन, वे स्मान्तिम च असमावे बेट्ठापचितिकारमं स्वर्णा विकास विकास

एवं सत्या बेट्ठापचितिकम्मस्स गुण कथंत्वा अनुसन्धि घटेत्वा वालंक समोधानेसि । तदा हत्थिनागो मीम्माल्लानो अहोसि । मक्कटो सारिपुत्तो । तित्तिरपण्डितो पन अहमेबाति ।

तिनिरकातकं

S Con 18

माध्यन्तिनिक्रतिष्य अमेति इद सत्या जेतवने विहरन्तो नीवरवड्डक भिक्स भारत्भ क्येसि ।

पच्चपन्नवत्थु

एको किर जेतवनवासिको भिक्तन् यौकिन्य चीवरे कराव्यं छेवनघट्टनिवचारणस्विवनादिक कम्मं नत्य सुकुसले। भी नाय कुनलताय चीवरं बद्देति। तस्मा चीवरवद्दकीत्वेव प्रधायित्यः। कि पनेस करोतीति? विकार्यालोनिकानु हरणकाम दस्तेत्वा मुक्तिस्त मनाप चीवर करवा राजनारियोसाने पिट्टोक्कन रिजन्या मन्तेन प्रसादा उपकलं मनुष्यकों करवा निक्तिपति। चीवरणम्म अनुत आजानना भिक्त्व अहते सादके पहेत्वा नत्यं प्रसाद कारत्यं के शान्त्यं प्रसाद के प्रदेश निवस्त । सो चीवर आपूर्णों । कार्यन प्रसाद कारत्यं हरणका सात्र विवस्त आपत्यं । मन्त्र कार्यन वेत्रां ने वांवरं नो करवा देशांत वर्दन्तः। सो चीवर आपूर्णों । कायर मान चिरने निद्धाति । मया करवीवरमेव अस्त्र इमें सादके द्रशेत्वा गण्डित्वा गण्डवाति गीव्हिरत्य सम्मेति । ते तस्य कणासम्पत्ति येव दिवसा अन्तर एकानान्ता पिरनित मन्त्राय अहत्यादके पीवरण्डकस्त स्तर्यात गण्डित्वा गण्डवित्त । ने तिह योक किर्विद्धाति उपहित्त प्रसाद । तस्य तत्र विवस्ति । तस्य विवस्ति । तस्य विवस्ति । तस्य विवस्ति । तस्य तत्र विवस्ति । तस्य विवस्ति । तस

यया चेस जेनवरो तथा अञ्जातरीस्म गामकेषि एको चौबरवर्डको लोक वञ्चेतीति । तस्म सस्भता भिक्कु- भन्ते ! जेतवरो किर एको चीवरवर्डको एव लोक वञ्चेतीति आरोर्चायमु ।

अयस्स एनदहोसि हन्दाह तः नगरवासिक वश्चेमीति पिलोतिकचीवर अतिमनाप कत्वा सुरत्त रिजल्बा त पार्शपत्वा जनवन अगमासि ।

इनरो त दिस्वाव लोभ उप्पादेखा-भन्ते ! इस चीवर तुम्हेहि कर्नान्त पुण्छि ।

आम आवशोति ।

भन्ते चीवर मध्ह देथ, तुम्ह अञ्ज लभिस्मयाति ।

आवुमी ! मय गामवासिका दुल्लभण्यच्चया इमाह तुब्ह दत्वा अत्तना कि पार्शपरसामीति ?

भन्ते ! मम गन्तिके अहतमाटका अत्यि, ते गहेत्वा तुम्हाक चीवर करोथाति ।

आबुनी । मया एत्य हत्यकम्म दस्मित तथि पन एव वदन्ने कि मक्का कातु ? गण्डाहि नन्ति तस्म पिजीनकचीवर दत्या अहत्मारकं आदाम न क्ल्येत्वा पक्कामि । जेनवनवासिकोगित चीवर पार्थपया कति-पारण्ययेन उण्डादकेर पीवन्नी जिल्लापिजीतिकभाव दिस्ता लिजनो । गामबासिचीवरवहदकेन किर जेतवन-वासिको बल्लिनोति नस्म बल्लिनभावो मधमज्ञे पावटो जानो । अयेक दिवस भिक्ल्य धम्ममभाय न क्लाक्येत्सा निमीदिनु ।

सत्था आगन्त्वा- कायन्त्य भिक्ववे । एतरहि कथाय सन्तिमिन्नाति पुष्छि ।

ते तमत्थं आरोर्चियमु।

सत्या- न भिक्कवे [।] जेतवनवासी चीवरवह्दको इदानेव अञ्जे बञ्चोत गुब्बेपि बञ्चोसि येव । न गामवासिकेनपिददानेवण्सजेनयनवासी चीवरवह्दको बञ्चितो पुब्बेपि बञ्चितो येवाति बन्दा अनीन **आ**हरि-

अतीतवस्य

अतीनं एकस्मि अरञ्जायतने बोधिमत्तो अञ्जतर पदुमसरं निस्साय ठिते रुक्ले रुक्खदेवता हुत्वा

वेकशासकं १५९

निकाति । वदां अञ्चलर्रास्य नातिमहत्ते सरे निवाधसमये उदकं मन्तं शहीस्, बहु चेत्य मच्छा होन्ति । अथेको ककौ ते मच्छे दिस्वा एकेनुरायेन इमे मच्छे वञ्चेत्वा सार्यिस्सामीति मन्त्वा उदकर्पारयस्ते चिन्तेन्तो निसीदा । अव नं मच्छा दिस्वा- कि वस्य ! चिन्तेन्तो निसिश्रोसीति पुण्छित् । तुम्हाकं चिन्तेन्तो विसिश्रोम्हीति ।

अम्हाक कि जिल्लेसि अम्याति ?

इमसिम सरे उदक परित गोवरो व मन्दो निदाघो व महत्तो । इदानिमे मण्छा कि नाम करिस्सन्ती-ति तम्हाक विन्तेत्तो निसिश्रोम्हीति ।

अब कि करोम अय्याति ?

तुम्हे सचे मर्व्ह वचनं करेय्याथ अह वो एकेक मुखनुण्डकेन गहेत्वा एकं पञ्चवण्णपदुमसञ्खन्नं महा-सरं नेत्वा विस्सर्जेय्यन्ति ।

अस्य ! पठमकरिपकतो पट्ठाय मञ्छानं चिन्तनकवको नाम नस्य । त्व अम्हेसु एकेकं खादितुकासो-सीति, न सय तुस्ह सहहामानि ।

नाहं खादिस्सामि । सर्वे पन सरस्स अस्थियाव मयह न सदृष्टय एक मच्छं मया सींड सरं पस्सितुं पेसेचाति ।

मच्छा तस्स सद्दित्वा अय जलेपि थलेपि समत्योति एकं काणमहामच्छ अवंमु-इम गहेत्वा गच्छपाति । स्रोत गहेत्या नेत्वा सरे विस्सज्जेत्वा सब्ब सर दस्सेत्वा पुनानेत्वा तेस मच्छानं सन्तिकं विस्सज्जेषि ।

सोनंत मच्छान तरन्त करात्वाच्या के त्या कर के चुन्या गण्याचा पुनानत्वा तम अच्छान सालक विस्ताव्याचा सोनंत मच्छान सालक विस्ताव्याचा से सोनंत मच्छान सालक व्याचन क्षेत्र के स्वत्याचा कर्या है। सिक्ष सावच्या होति आहतु । को गण्या त काणसहामच्छानेय गहेल्या वरतीर नेत्या वर वस्तेत्वा सरतीर जात वरणस्वक निर्णादावा निर्णादावा निर्णादा प्रताप्त कर्या के स्वत्याची निर्णादावा निर्णादावा निर्णादा प्रतापता स्वत्याची कष्टक स्वत्याची आगण्याची निर्णादावा प्रतापता प्रतापता क्ष्याची स्वत्याची स

एको पर्नत्य करकटको अवसिट्ठो । बको तस्पि खादितुकामो हुत्वा— भो [†] करकटक[†] मया सब्बे मच्छ नंत्वा पदुमसञ्छन्ने महासरे विस्सज्जिता । एहि तस्पि नस्सामीति ।

म गहेत्वा गच्छन्तो कथ गण्हिस्ससीति ?

डमित्वा गण्हिस्सामीति ।

त्व एव गहेत्वा गच्छन्तो म पातस्मिसि । नाहं तथा सिद्ध गमिस्मामीति ।

मा भायि अह त सुगहित गहेत्वा गमिस्सामीति ।

कक्कटको निर्ताम-इमस्स मच्छे नेत्वा सरे विस्मज्जन नाम नित्व । सर्च पन म सरे विस्मज्जेस्मीन इच्चेत कुसल नो चे विस्मज्जेस्सित गीवमस्स छिन्दित्वा जीवित हिस्सामीति । अप न एवमाह— सम्म बक्त ! न बो त्वं मुगहित गहेतुं सिक्सस्मित । अम्हाक पन गहन मुगहण — सबाह अलेन नव गीव गहेतुं लिभन्सामि, तव गीव मुगहितं कत्वा तथा सद्धि गमिस्सामीति ।

सो न बञ्चेतुकामो एम मन्ति अजानन्तो ताष्ट्रित सम्पटिन्छ । कक्कटको अन्तनो अर्लाह सम्मा-रसण्डासेन विय तस्स गीवं सुगहितं कत्वा ददानि गण्छाति आह । सो तं नृंद्या मर दस्सेत्या वरणस्म्बाभिमुखो पायासि । कक्कटको आह्- मालुल ! अय सरो एसो त्व पन इतो नेसीति ।

वको पियमानुरुको अति भगिनिपुतािस में त्वति बरवात्व एस म उक्क्षिपत्वा विचरनो मस्ह दासोिन सञ्जं करोिस मञ्जे पस्सेत वरणस्क्षमून्त्रे कष्टकरासि, यथा मे सब्बमच्छा सादिता तम्पि तथेव वादिस्सामीति आह । . करकटको एउँ मच्छा अत्तनो बावताय तथा बावितता । शहं पन ते मृं कारियु, त इस्सामि । तरस्ये पन विनास पानेस्सामि । त्व हि बातताय यथा अध्यतमाब न्यानसिव। मरन्ता उमीपि ,मरिस्सामः। एस हे तीस छिन्दिता प्रामिष्टं विपित्सामीति वरदा सम्पासेन विव असेहि तस्त मीवं निप्पीलेखि ।

सो बतकतेन मुखेन अस्वीहि अस्तुमा पण्यप्तेन मरणमयंत्रिकतो- सामि ! आहं तं न सादि-स्तामि । जीवितं मे देहीति आहं ।

> यदि एव, ओतरित्वा सर्रोस्म म विस्सज्जेहीति । सो निवत्तित्वा सरमेव ओतरित्वा कक्कटकं सरपरियन्ने पंकपिटठे ठेपेसि ।

कनकटको कलरिकाय कुमुदनाल कप्येत्तो वियः तस्स गीवं कप्येत्वा उदक पाविसि । तं अञ्चरियं दिस्वा वरणहरूबे अधिवत्या देवता साधुकारं ददमाना वनं उन्नादयमाना मबुरस्सरेन इमं गायमाहः--

> नाच्चन्तनिकतिप्पञ्चो निकत्या सुखमेधति । भाराधेति निकतिप्पञ्चो बको कक्करकामिश्राति ॥

तत्य नाज्यतनिकतिष्यञ्जो निकत्यामुक्रमेधवीति निकति बुज्यति बञ्चना। निकतिष्यञ्जो बञ्चन-पञ्जो पुगालो, तास निकत्या निकतिया बञ्चनाय, न अञ्चलं सुनमेधवीति निज्यकाले सुन्नसिमञ्जेव धितद्शतु न सम्बन्धित एकंसेन पन विनास पापुणाति येवाति अस्यो। आरामेटीजिति परिल्यति। निकतिष्यञ्जीति केराटिक-भाषा निम्बलपञ्जी पापपुणाले जत्तान कतस्य पापस्स फर्ण एकंप्रति पत्ति तिक्ताति कत्या। कथ ? बक्ता कम्बर-रक्तामित थया बक्तो कम्बर्टमा पीवच्छेदनं पापुणाति एवं पापपुणाले अस्तान कत्यापती दिद्श्यम वा सम्य-गय वा अस आराधित परिल्यनतीति। इसमस्यं पत्रामेनो सहासाने वन उन्नादेनों धस्म देशीन।

मत्या -न भिष्मव [।] इदातेष गामवासीचीवरवहदकेनम बञ्चिना । अतीतीष चिच्चतो येवाति इम धम्मदेसन आहरित्वा अनुसारिष पटेत्वा आतक समोधानीस । तदा सो वको अंतवनवासी चीवरवहदको अहाँसि । कष्कटको गामवासी चीवरवहदको अहाँसि । क्ष्मब्देवता पन अदमेवाति ।

बक जातक

६. नन्दजातकं

्मक्**ने सोकण्यमी राजीति**-इदं संस्था जेतवने विहरनी सर्रापुत्तरचेरस्स सदिविहारिक आरव्य कथेसि ।

पण्युपलवत्यु

सो किर भिन्न शुवचो बहीति वचनन्त्रयो घेरस्य महत्तेनुस्साहेन उपकार करीति । अवेक समय भेरो सत्वारं आपुष्किरवा चारिक चरतो दक्षिणागिरिकापदं अपमाति । सो निक्कृतस्मरतकारुं मानवादी दुख्या वेरस्य बचन न करीति । आयुक्षी ! इद नाम करोहीति बुक्तं वन घेरस्य पटिएक्ची होति । येरो तस्य जावन न जानाति । सो तस्य कर्ता पुरु केदिक आपते होति चुक्तं परस्क जेतननिवृत्तरं आनतकालोतो पर्द्राय दुन महिकोच जानो । येरो तथामत्वस्य आरोचेति – मन्ते ! मन्द्रं एको सद्धिति सुर्ते एकिए ठाने सर्देन कीतदाती विय होति, एकिंस्म ठाने मानव्यक्षी हुत्वा इद माम करोहीति चुन्ते परिक्षको होतीति ।

सत्या- नावं सारिपुण ! भिष्कतु इदानेव एवंसीको, पुज्येपेस एक ठान गतो सतेन कीतदासो विय होति, एक ठानं गतो पटिपक्सो पटिसम् होतीति बत्वा थेरेन याचिनो अतीत आहरि-

अतीतवत्यु

अतीतं बाराणसिय बहादसं रुज कारंत्तं बोधिससो एकस्मि कुटुम्बियकुले परिवास्य गण्डि । तरसंक्षे सहायको कुटुम्ब्का सय महत्त्वको । भरिया पतस्स तरुणी । ता त तिस्ताय पुत्र परिवर्ण । सो चित्तंदि-अय दित्यका तरुणता ममञ्जयेन किञ्चदेव पुत्रिम गहेरवा इम धन विनासेय्य पुत्तस्य में न ददेव्य । यसूनाह् इमं धन पटिवानं करेव्यान ।

घरे सन्द नाम दास गहेत्वा अरुञ्ज गल्दा एकास्मि ठानं त घन निरहित्वा तस्स आविक्तिस्ता-तात नन्द ' इम धन मम अच्चयंन मध्ह पुत्तस्म आविक्त्तेद्यासि । मा चन परिच्चजित्या ति ओवेदित्वा कालमतीमा ।

पुनोपिस्स अनुकक्षमेन बयप्पत्तो जातो । अय न माना आह्—तान । तब पिता नन्द दास गहेरवा यन निर्धोत्त न आहरापेरवा कुटुम्य सण्डवंहीति ।

सो एकदिवस नन्दं आह्- मातुल ! अस्यि किञ्च मध्ह पितरा धन निर्दाहर्तान्त ? आम सामीति ।

कुहि न निदहितन्ति ?

अरञ्जे सामीति । तेनहि गच्छामाति कुङ्ग्लिपटकं आदाय निधिट्ठान गस्त्वा⊷ कह मानुल[ा] धर्नान्न आह ।

नन्दो आरुय्ह पनमत्यके ठरबा घनं निम्माय मानः उप्पादेन्याः—अरं ! दासिपुनः, ! चेटकः ! कुतो ते इसस्मि ठाने धनन्ति कुमार अक्कोमति ।

कुमारो तस्स फल्मवचन सुरवा असुणन्तो विय— तेनहि गच्छामानि— त गहेरवा पटिनिचनित्वा पुन हे तयो दिवसे अतिकक्षमिरवा अगमासि । नन्दो तथेव अक्कोसिति ।

कुमारो तेन सर्बि फरुसवचन अवत्वाव निवनित्वा अयं दासो इतो पट्ठाय धनं आचिक्खिस्साभीति

गच्छति गन्त्वापन अक्कोसित । तत्य कारणंन जानामि । अस्यिन्, को पन मे पितृसहायो कुटुन्बिको तंपटि-पुण्ळिल्या जानिस्सामीति । बोधिससस्स सन्तिकंगन्त्वासम्बंतंपर्वात आरोचेत्वा – किन्नुको तात ! कारणन्ति पृण्छः ।

ं वोषिसतों - यस्मि ते तात ! ठाने कितो गन्दो बक्कोसित तत्वेब से पितुष्ठन्तकं सर्ग । तस्मा ते यदा नन्दो अक्कोसित तदा नं एहि दास ! कि अक्कोसीति आकड़िडला कुरालं गहेत्वा त ठानं भिन्दित्वा कुलसन्तक धनं नीहिरित्वा दास उन्कियापेरवा धनं आहराति अत्वा इसं गायमाह -

- मञ्जे सोवण्णयो रासि सोवण्णमाला च नन्दको ।
- मत्थ दासो भागजातो ठितो धल्लानि गुज्जतीति ॥

तस्य मञ्जेति एवं अहं जानामि । सोकण्यवीति मुन्दरो वण्णो एतेसन्ति सोवण्णानि । कानि तीनि' एत्रवर्षणिकञ्चनपञ्चालदिरतानि । इमस्मि हि ठाने सब्बानेतानि सुवण्णानीति अभिण्यतानि । तेसं रासि सोवण्ण्यो रासि । सोवण्णाला चाति तुम्ह पितु सन्तका सुवण्णमालापि च एत्येवाति मञ्ज्ञानि । नरकते यस्य सासीत यस्यि उनितो नन्दको राखी । आजनातीति आग को रासीति एवं दासब्य उपनताय आमरासी-सब्बाताय दाख्या पुत्तो । ठितो युल्लानि गज्जतीति सो यस्य ठाने दिती पुल्लानि कहसव्यनानि वदित तत्येव ते कुलवन एयमहत्त मञ्ज्ञामीति । वोधिससी कुमारस्स भनगल्णायं ब्राविक्स ।

कुमारो बोधिसत्त बन्दित्वा घर गत्वा नन्द आवाव निषिट्ठान गत्वा यथानृहिट्ठ पटिपिञ्जत्वा त धनं आहरित्वा कुटुम्ब सञ्जेतवा बोधिसत्तम्स ओवादे ठिनो दानादीनि पुञ्जानि कत्वा जीविनपरियोसाने ययाकस्म गतो ।

सत्या--पुज्येषेस एवसीलो येवाति बत्वा इसं प्रम्यदेसन आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातक समो-धानेसि । तदा नन्दो सारिपुनस्स सद्धिविहारिको अहोसि । कुटुम्बिकपुनो सारिपुनो पण्डितकुटुम्बिको पन अह-मेवानि ।

सन्द जातक

कामं पतामि निरयन्ति-इदं सत्था जेतवने विहरन्तो अनाथपिण्डिकस्स दान आरब्भ कथेसि ।

पच्चपन्न बरध्

े अनाथिपिण्डको हि विहारभेव जारुण चतुपण्यातकोठियनं बृद्धसासने परिच्चित्रका विकिर्तरका
रोरवा तीर्गिण रतनानि कञ्चत्य रतनवञ्जनेव अनुप्यादेखा सत्यदि उत्तरने विहरन्ते देवसिक तीर्गिण सहाउत्तरहानानि
सानि गच्छित । पातीन एकवार गच्छित, क्वपातरासी एकवार, सायच्हे एकवार । अञ्जानिषि अन्तरुप्यदेशनानि
होन्तियेव । गच्छन्तो च किञ्चनी अदास आगतीति सामयेग बादहराचा सृत्यमिम से ओलोकेस्पृतित नुष्यद्धरोना नाम
न गतुब्जो । पाती व गच्छन्तो यागू गाहापेन्या गच्छित । कनपातरासो मण्यिनवजीतमधुकाणितादीनिषि सायच्यसमये गम्याग्णवन्यहुन्वीनि । गुर्व दिवसे दिवसे परिच्चजन्तस्य पत्तस्य पिण्ड्या पाण्यां निष्य । बहु बोहास्यविविद्या हुन्यते पण्यो आरोप्या अद्यागस्य अधिकातिस्य वर्षाम् परिच्चा प्रसादित । अञ्जा
पत्तस्य कुल्यनका अद्वारक्षियो मर्वातीरे निविद्या प्रपात वातोव्हेन नशीक् प्रिम्म महासमूर्य प्रवृद्ध ।
ता यथापिहनविज्ञ्चना व कोह्यादियो अण्यवकुच्छिय पब्युटन्ता विचर्रानः । गेहे पनस्स पञ्चमं विक्वसतान
तिच्चजन निवद्यस्य हानि । सेट्टिंगो हि गेह भिम्मुसम्यस्य चानुमहाप्य विणियोभवस्यमीविद्यां सम्बाभक्ष्यते
पत्त आपच्छन्ति व । तेनस्य परं सम्पामस्वद्धीय गच्छति, असीतिमहोष्यरीप पच्छित वेव । सेसीभवकृत
पत्र आपच्छन्तान च पमाण निव्य । त पत्त पत्त सम्बनुमक्त सत्ताइरहेक्यितमध्यः

तस्य चतुर्णे डारकोट्टके एका मिच्छादिट्टका देवना वसति । सा सम्मासम्बुद्धे सेह पविसत्ते अन्तर्ना विसानं ठानु न सक्कोनि, दारक गहेत्वा औनित्या भूमिय निट्ठिन । असीनिमहापेरेसुपि अवसेसपेरे-मृषि पविसन्ते यु च निक्समन्ते पु च नथेव चर्तित । सा चिन्तेनि-समणे च गोनमे सावकेषु सम्बद्धां सेह पवि-सन्ते सु सरह सुन्न ताम निव्य, निक्चकान औनित्य्वा औनित्य्वा भूमिय ठानु न सम्बन्ध्यामि । यथा इसे एन वर नणविस्तान तथा स्था कात् बहुनीति ।

अथेकदिवस सयन्पगतस्सेव महाकम्मान्तिकस्स सन्तिक गन्न्वा ओभास फरित्वा अट्ठासि । को एत्याति च वन्ते अह चतुत्पद्वारकोट्ठके निब्बत्तदेवताति ।

कस्मा आगतासीति ?

नुम्हे सेट्टिम्स किरिय न पम्सय अननो पण्डिमकालं अनोन्प्रेक्त्वा धनं नीहरित्वा समण गोनम यंव पूर्जीत, न बांणज्ज पयोजीत, न कम्मको पट्टबेंगि। तुम्हे सेट्ठि तथा ओवदथ यथा अत्तनो कम्म करोति यथा य ममणो गोतमो ससावको इस घर नापविसात तथा करोषाति।

अथ न मो आह-बालदेवने ! मेट्ठी धन विस्सरजेन्तो निय्यानिके बुद्धसासने विस्सरजेति । सो सर्वे म चुलाय गहेत्वा विकिशिन्सिति नेवाह किञ्चि कथेस्सामि । गच्छ त्वन्ति ।

सापुनेकदिवस सेट्ठिनो जेट्ठपुन उपसंकमित्वा नथेव ओवदि । सो पि न पुरिमनयेनेव नज्जेसि । सेट्ठिना पन सद्धि कथेतुं येव न सक्कोति ।

सेट्टिनोपि निरन्तर दानं देन्तस्य बोहारे अकरोन्नस्य अये मन्दीभृते घनं परिकवयं अगमाित । अवस्य अनुक्कमेन दालिहियप्पतस्य परिभोगसाटकसयनभोजनािनिप पुराणसदिसानि न भविसु । एवभूतोपि चिक्कुसंकरस दान देति । पत्रीतं पन करवा दातु न सक्कोति । अय न एकदिवसं वन्दित्वा निसित्रं सत्था⊷ दीयिति पन ते ग्रहपति ! कुछै दानन्ति पुच्छि ।

सी-दिय्यति भन्ते । तञ्च सौ कवाजिकं विसंयदुतियन्ति आह ।

स्थ नं सत्या- गहपति ! सूत्र दाने देवीति मा चित्तं सकोचयित्य, चित्तस्मि हि पणीते बुद्धपण्ये-कदुद्धबुद्धसायकानं दिश्व दानं सूत्रं नाम न होति ।

कस्मा ?

विषाकमहन्तत्ताति आह । चित्तन्पि पणीतं कातुं सक्कोन्तस्य दानं रूखं नाम नत्वीति चेतं एव चेवितक्य-

> "नत्यि चित्ते पसक्षम्हि अप्पिका नाम दक्षिणा । तयागते वा सम्बुद्धे अथवा तस्स सावके ॥ न किरस्थि अनोमवस्सिसु परिचरिया बुद्धेषु अप्पिका । सुक्खाय अजीणकाय च पस्स फल कृष्मासपिण्डिया" ति ।

श्वराध्य मं भाह- गहर्यात । त्वा ताव जून दान दरमानो अट्ठमं अटियमुमान्तानं देशि अहं वेका-मकालं सकत्वमञ्जूषिपं उन्त्र मूलं करवा सारतनानि दरमानो एञ्चमहानदियो एकोषपुणां करवा विद्य व महादाना पवत्तमानो तिसरणनत वा पञ्चतील रसकत वा क्राञ्च वाल्य दास्त्रवयेष्यपुणना मा एव दुल्लमा तस्मा जून मम दानित मा विस्तं संकोषियियाति एव च पन करवा बेलामपुना कर्षेति ।

अप को सा देवता इस्सरकाले सेट्डिना सिंड कथेतुष्पि असककोत्ती इरानायं दुणतत्ता मम ववनं गण्डिस्सतीति मञ्ज्याना बड्डरलसमये सिरियाकां पविसित्वा ओशास फरित्वा आकासे अट्डिस । सेट्डी त दिस्वा- को एसोति आह ।

> अह महासेट्ठि ! चतुत्यद्वारकोट्ठके अधिवल्था देवताति । किमत्य आगतातीति ? तुम्ह ओवादं कयेत्कामा हत्याति ।

तेन हि कथेहीति ।

महासेट्ठि ! त्व पण्डिमकाल न वित्तीस पुतर्धातरो न ओलोक्सि, समणस्त्र तं गोतमस्स सासने बहुषन विष्णिकण्ण सो त्व अतिबंत धनिबस्त्रज्ञनेन वा विण्जिकस्मान्तान अकरणेन वा समण गोतक निस्ताय पुगानो जातो। एवस्भूतारिय समण गोतम न मुज्यिम। अज्जापि ते समणा घर पिवसिन्त येन नित्ति हिनीत त सक्का पञ्चाहरायेनु गहितमेव होतु हो पट्ठाय पन सय व समणस्य गोतमस्स सन्तिक मा पित्रस्य सावकारञ्यस्त इम परं पविसिनुं मा अदामि, समण गोतम निवस्तित्वापि अनोलोकेन्तो अनानो बीहारे व विण्जं च कत्वा सुट्यमं सण्डोहीन।

अय नं सो एवमाह- अय नया मय्ह दानव्यओवादोनि ।

आम अयन्ति ।

तादिसान देवतानं सतेनिंप सहस्तेनिंप सतसहस्तेनिंप अकायनीयों अहं दसवर्कन करों प्रम हि सद्धा सिनेष्ठ विश्व अवका सुप्पतिहरिता। त्रमा नियापिके रतनतासने वन विस्तक्तिन अपूर्व ते कथितं। बुद्धसासने पहारों दिशों। एकस्पाव अनावाराय दुस्सीवाय कावकण्यिया सद्धि तथा मम एकगेहे बसनिकच्च नरिव, सीच मम बेहा निक्किमित्वा अक्टब्स्य गच्छानि ।

सा सोतापन्नस्स अर्थिसावकस्स वचनं सुत्वा ठातुं असक्कोन्ती असनो वसनट्ठानं गन्दवा बारके

हरवेन गहेरवा निक्कमि । निक्कमित्वा च पन अञ्जल्य क्सन्तर्शां बक्तममाना सेर्ट्राट समापेरवा तत्वेव वसिस्सा-मीति नगरपरिमाहकदेवपुतस्स सन्तिकं गन्त्वा तं बन्दिका अरठासि ।

केनत्वेन आगतासीति च वृत्ता अह सामि ! अनुष्यारेत्वा अनायपिण्डिकेन सिंह कर्योस्त, मी मं कृष्कित्वा वसनटठाना निक्कडि । मं सेट्टिस्स सन्तिकं नेत्वा खनापेत्वा वसनट्ठान में देपाति ।

किंपन तयासेट्ठिबुत्तो ति ?

इतो पट्ठाय बुढुपट्ठान संषुपट्ठानं माकिन, समणस्य गोतमस्स घरे पवेसनं मा अदामीति । एवं में बुत्तो सामीति ।

अयुनं तथा बुनं, सासने पहारी दिश्रो । अहं तं श्रादाय सेंट्ठिनी सन्तिकं गन्तुं न उस्सहामीति ।

सा तस्स सन्तिका संगृह अलिमत्वा चतुम्नं महाराजानं सन्तिक अगमासि । तेहिपि तमेव पटिनिक्सता सक्क देवराज उपसंक्रीमत्वा त पर्वीत आचिक्कित्वा- अहं देव ' वसनद्दानं अलभमाना दारके हत्येन गहेत्वा अत्तामा विचरामि गुम्हाक सिरिया मण्डै वसनद्दानं चापेवाति सुदृहतर माचि ।

सोपि नं आहु-तथा अयुत्तं कर्न. जिनसासने पहारो विषो । अहम्पि त निस्साय सेट्ठिना सर्ढि कर्षेतुं न सक्कोमि । एकं पन ने सेटठिस्स खमनपाय कथेस्सामीति ।

साध्देव ! कथेहीति।

महासेट्टिस्स हत्यतो मनुस्सेहि पण्णे बारोपेत्वा अट्ठारसकोटिसंस्रं चन गहित अस्थि त्वं तस्स आयु-त्तकसं महिता कञ्चि अनावेपेता तानि पण्णानि धादाय किवयरिंह सक्सतरुषिट गरिवारिता एकेन हत्यने पण्णं एकेन लेकिन गहेरवा तेस गेह गत्त्वा योहमज्ये दिता अतनो स्वन्तानुभावेन ते उत्तानेत्वा इस्तं दुनुस्त्र क्ष्य पण्णं, अम्द्राक संदेठी अतनी इस्तरनकार्ण तुम्हे न किञ्चि आह इसानि दुणानो जातो तुम्हेति गहितकसूपणानि देवानि अतनो सक्सानुभाव दस्तेत्वा सब्बाणिता अट्ठारताहिर ज्यक्तीदियो साधेत्वा संदिष्टम तुम्छकोट्ठके पूरेत्वा अब्बद्ध अस्तिरस्तानीतीति तिहतसक नरीक्के पित्रं समुद्द पविद्य अस्ति त्रीस्य कलानो आनुमावेन आहरित्वा कोट्ट पूरेत्वा अवस्थित अक्तिस्त्रम नरीक्के पित्रं समुद्द पविद्य अस्ति त्रीस्य कलानो आनुमावेन आहरित्वा कोट्ट पूरेत्वा अवस्थित अस्तिरस्त्रम त्राहित्वा

सा साम्रु देवाति तस्स वचनं सम्पटिच्छित्वा बुलनथेनेव सञ्च धन आहरित्वा अह्डरत्तसमये सेट्ठिस्स मिरिगब्भ पविसित्वा ओभास फरित्वा आकासे अट्ठामि ।

को एमोति बुत्ते जह ते महानेट्ि! चतुत्वारकोट्ठके अधिवत्या अत्मवालदेवता मया महामोहमू-ल्हाव बुढाणे जजानित्वा दुग्मिषु दिवसेषु तुम्हेहि सद्धि किञ्चि कमितं अस्यि तं मे देशे सम्म सक्कस्य हि मे देवराज्ञस्य कचनेन तुम्हाक इण सोधेदा अट्टारसकोटियो समूद् गता अट्टारसकोटियो तर्रिम तर्रिस ठाने अस्सामिकवनस्य अट्टारसकोटियोति चतुरण्यासकोटियो आहरित्वा तुण्डकोट्ट पूरणेन वण्डकम्म कन जेतव-निहार आरक्ष्म रात्क्वय गत्यव सम्म सम्मित्वत समुद्धान कम्माना किलमामि मया अञ्जाषताय कपितं मनीत अक्त्या समय महामेटटोनि आह ।

अनायपिष्टको तस्सा वचन सुरवा चिन्तीमः— अय च देवता दण्डकम्म च मे कतस्ति वदति अत्तनी च दोमं पटिजानाति सत्या इम चिन्तेत्वा अत्तनी गुणे जानापेम्सीत सम्मासम्बुद्धस्म न दम्मेस्सामीति । अय नं आहः— अम्म देवते ! सचीस मं समापेत्कामा सत्यसन्तिकं मं सामापेहीति ।

साधु एवं करिन्सामि सत्यु पन म सन्तिक गहेल्वा गच्छाहीति ।

सो सामूति बस्वा विभाताय रातिवा पातीव तं गहेरवा सत्वुसन्तिक गन्तवा ताय कतकम्प सम्ब तथागतस्य आरोवेसि । सत्था तस्त वचन सुरवा इच गहराति । पापपुगालीपि मान पापं न पच्चति ताव भग्नानि स्स्तीति यदा पनस्स पापं पच्चति तदा पापमेव परस्ति । भन्नपुगालीपि मान भन्न न पच्चति ताव पापानि परसति, मदा पनस्स भन्नं पच्चति तदा भन्नमेव परस्तिति तन्त्वा इमा धम्मपदे हे गाया अमासि--

> "पापोपि पस्सति महं याव पापं न पच्चति । यदा च पच्चति पापं अथ पापो पापाति पस्मति ॥ भद्रोपि पस्सति पाप याव भद्रं न पच्चति । यदा च पच्चति भट्टं अया भद्रो भटावि पस्मती" ति ।

हमासं व पन गाथानं परियोत्तानं सा देवता सोतापत्तिफले पतिद्दासि । सा चक्काक्कितेमु सन्यू पारंसु निपतित्वा मया भरते । रागरताय रोमदुद्दाय मोहमूल्हाय अविज्जन्याय तुम्हाक गुणे अवानन्तिया पापक वचनं वत्तं त मे कमयाति सत्यारं समापेत्वा महामेद्दि समापेति ।

तरिम समये अनाविपिण्डिको सत्यु पुष्ठो अननो गुणं कवेसि- भन्तं ! अय देवना बुदुपट्ठानादीनि मा करोहीनि वारयमानापि म वारेनु नामक्खि दानं न दानव्यन्ति इमाय वारियमानोषह श्रदासिमेव नन् एस भन्ते ! मख्य गणीनि ?

सल्या- स्व स्त्रोसि गहराति । मोतापक्षो अध्ययसावको अचलसढो विमुद्धस्सतो तुस्ह इमाय अप्यसम्बद्धेवताय वारान्त्रिया अवारितभावो नाच्छित्यां य पन पुत्वं पण्डिता अनुप्पन्ने बुद्धे अपरिपक्के आणे दिता कामाववरित्मगेत मारे न बाकामे ठन्वा गच्चे दानं स्त्मानि इम्पिन नित्ये पण्डिस्स्याति व्यत्तीतिहत्यागभीर अंगारकामु इस्सेत्वा मा दानं बदासीनि वाण्नि परुमकण्डिकमण्डे ठन्वा अदंगु इदं अच्छरियन्ति वत्या अनाय-पिष्पक्षेत्र वाण्निनो अनीतं आहर्ति-

अतीतबत्य

क्षतीते बाराणसिय ब्रह्मदत्ते राज्यं कारेन्ते बोधिमत्तो बाराणसीमेट्टिय्म कुले तिब्बत्तित्वा तानापकारोह सुणुपकरणहि देवकुमारी विस संवहित्यमानो अनुक्कमेन विकञ्ज पत्या नोशस्त्रसम्बाग्धेन वसस्य-सिप्तेषु निकर्तन पत्तो । सो पितु अच्चयेन मेट्टिट्टाने ट्ला चतुमुनगरडारेणु भनम्यो दानमाशयो मार्ग्य नाराम्य एकं अपनो निकर्सनद्वारी एकत्ति क दानसाशयो कारित्या महादान देति, सील रक्कान, उपोधवकाम कराति । अवेकदिवन पातरासयेलाय योधिमतस्य नात्रमण्यो मनुष्यभोजने उपनीयमाने एको पत्त्वेवसुद्धो सनाहच्ययेन निरोधा उद्दाश भिक्तवानायेल सत्त्वभावत्वा अज्य मया बाराणसीसेट्टिय्स सहस्रार मानु वट्टतीति नायस्यादनवर्द्ध सादित्वा अनोतानददे सुक्त थोबित्वां मानीसिलात्वे दिनो निवासेन्य कायस्यम्य विभावत्व चौवर पार्वपत्वा इद्विस्वमानिकरम्य आदासाकासोकाशस्य बोधिनसम्म भने उपनीमनमे सेह्यार अट्टारील

बोधिसत्तो त दिस्वाव आसता बुट्ठाय निपच्चाकार दस्सेत्वा कम्मकान्यं ओठोक्कीया कि करोसि सामीति च बुनं अय्यस्य पर्त आहरपाति आह । तं चाण्यवेक- चुढो हाते सिक्यम्पातो उट्टाय अयं पच्चेक- चुढो हतो सत्तमे दिवसे आहार लिम अज्ञ अल्यमनो विवासम्मिति इस च विजासिसामि सेट्टिनो च दानान- राम करिस्सामीति ते त खण्य्येव आगत्तवा अन्तरबर्धुम्ह अमीतिहरूचमत आगरकामु निर्ममाण । सा व्यदि- राम करिस्सामीति तत स्वयोतिभूता अवीचिमहानिययो विच वादित्व । त पन मापेत्वा सयं आकाम अट्टीमि । पत्तहरूपस्य अपायकाम प्रतिक्रमान प्रतिक्रमान

बोधिसत्तो- कि ताल ! निबत्तोसीति पुष्कि । अयं सामि ! अन्तरबरक्षिह महती अंगारकामु सम्पञ्जलिता सर्जातिभूताति । अयञ्जो अथञ्जोति एवं आगतागता सन्त्रेपि भ्रयपत्ता वेगेन पर्लायिस । बोधिससो चिन्तेमि- अञ्च मग्हं दानत्त्रगयं कानुकामां बमबसी मारो उय्युत्तो भविस्सात, त बो पन जानाति सारसतेन मारसहस्त्रेसारि कर्यु अकम्भियमामां । अञ्चताति मग्हं वा भारस्स वा बकमहत्त्रतं आनुनावमहत्त्रतं जानिस्सामीति त यथासिञ्जतमेव भत्तपाति सर्व ब्राह्मय गेहा निवसम्म अंगारकासुतटे ठस्वा आकासं उल्लोकेस्वा मार दिस्ता- कोसि स्वनित श्राष्ट ।

> अहं मारोति । अयं अंगारकासुतया निम्मिनानि ? आम मयाति ।

किमत्याग्राति ?

तव दानस्स अन्तरायकरणत्थाय च पच्चेकबुद्धस्स च जीवितनासनत्यायाति ।

बोधिसक्तो - नेवत अह अतनो दानस्स अन्तरायं न पञ्चेकबुढस्स वीवितन्तराय कातु दस्सामि । अञ्जदानि मस्व या तुरु वा वल्यहत्तः, आनुभावमहत्ततः वानिस्सामीति अंगारकामुमा तटे ठरवा- भरते ! पञ्चेकवरबुढ ! यह इमिस्सापि अंगारकाबुवा वथोसीसो पतमानोपि न निवक्तिस्सामि केवलं तुन्हे मया दिश्व-भोजनं पतिचण्डलाति वत्ता इम गायमाह-

> काम पतामि निरय उद्धपादो अवंसिरो । नानरिय करिस्सामि हन्द पिण्डं पटिग्गहाति ॥

तत्राय पिण्डल्यो अन्ते । क्लेक्कक्क्कुक ! क्लेक्क्क् कुल्हाकं विश्ववादों केली एकंसेनेव इस निरस उद्धपादो अवस्ति हुत्या त्वापित वापि पदिव अदान व असीलिय व अस्तिह्व वकातव्यता अनिर्देश कात-व्यत्ता अनिर्दाति कुल्वान न त अनिरसं किन्स्सामि हन्द इस असा दीयमान पिण्ड पटिगाह पतिगण्डाहीति । एत्य व हन्दाति ववस्तागत्ये निपातो ।

एवं बत्वा बोधिसतो दल्हसमादानेन भत्तपाति गहेल्ला जगारकामुमस्यकेन पक्सतो। ताबदेव अमीतिहत्यगमीराय अगरकामुमा तलतो उपस्पपि जात अप्तसत्तम एकं महापदुस उम्मत्वा बोधिसत्तस्य पादं सम्पटिच्छ । ततो महातुम्बमता रणुउम्मत्वा महात्तप्तस्म मुद्धनि अवापतित्या सकलसरीरं सुबच्चचूच्यसमोकिच्यामिव अर्जास । यो पदुमक्षिक्या उरवा नानगण्यसमोक्यनं च्च्चेक्युदस्व पते पतिहरापेसि । को त
पटिमहेल्वा अनुमोदन करवा पत्न आकामे लिपित्वा परसात्तरसेव महाजनस्स समीम्य वेहाम अभ्युममन्वा नानप्यकार बलाहकपत्ति महमानो विचा हिम्मत्तरीव गती ।

मारोपि पराजितो दोमनस्सं पत्वा अत्तनो बसन्द्रशनमेव शतो । बोधिसत्तो पन पदुमकण्णिकाय टिनकोव महाजनस्स दानसीलमवण्णनेन धम्म देसेत्वा महाजनेन पश्चितो अत्तनो निवेसनमेव पविसित्वा यावजीव दानादीनि पुरुजानि करिन्दा यथाकम्म गतो ।

सत्या-न इर गहर्गत । अच्छारिय य त्व एव दरमनसम्पको एनरहि देवताय न कम्पितो पुग्वेण पण्डि-तेहि कतमेव अच्छारियान इस थम्मदेषन आहरित्वा अनुसन्धि घटेला जातक समोधानेसि । तदा पच्चेकजुड्डो तत्येव परिनिव्वायि । मार पराजेत्वा पदुमकण्णिकाय ठत्वा पच्चेकजुड्डस्म पिण्डपानदायको बाराणसीहेट्डि पन अहमेवाति ।

> सविरङ्गारकातकं कुलावकवग्गो चतुत्थो

१. खोसकजातक

वो अस्यकामस्साति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो लोसकतिस्सत्येर साम आरब्भ कथेसि ।

पण्यपञ्च सत्य

को पर्नेस लोसकितस्त्यरो नामाति ? कोसलरट्टे एको असनो कुल्नासको केबट्ट्यासे एकिस्मा सिक्स् । सो किर तिब्बस्ट्रासे चुक्तिया कोसलरट्टे एक्किम कुल्मह्स्स्व स्वाद्द्र्यासे एकिस्सा केबट्ट्यासे प्रकाशनित्य पर्के केबट्ट्यासे प्रकाशनित्य में केबट्ट्यासे प्रकाशनित्य में केबट्ट्यासे प्रकाशनित्य प्रकाशनित्य में केबट्ट्यासे प्रकाशनित्य केबट्ट्यासे प्रकाशनित्य केबट्ट्यासे क्षा केबट्ट्यासे प्रकाशनित्य केबट्ट्यासे केबट्ट्यासे प्रकाशनित्य केबट्ट्यासे केबट्ट्यासे प्रकाशनित्य केबट्ट्यासे प्रकाशनित्य केबट्ट्यासे केबट्ट्य

अयस्य मास्य किच्छेन जीवनाना परिपक्के गव्ये एकास्मि ठाने विज्ञाय । पन्छिमभविकसत्तं न सक्व। नासेनुं अत्तोषटे दीपो विव हिस्स हृदये अन्हत्तस्य उपनिस्सयो अर्जान । मा न दान्द पटिअधिस्ता आधाक्तिना परिधावित्या विचरणकाले एकसस्य रूपालकं हत्ये दत्या पुनः एक चरं पविसानि पेसेत्वा पत्नाना ।

सो ततो पर्टाय एककोव हुत्वा तत्य भिक्त परियसित्वा एकस्मि ठाते सर्यात । न नहायित न सरीर पर्टिजगाति, पंत्रुपिताचको विश्व भिच्छेन जीविक कच्चेति । सो अनुक्कोत सत्तवस्थिको हृत्वा एकांस्म ग्रेहडाने उक्किथिवोवनस्स छड्डितर्ट्शने काको विश्व एकेकं सिरयक उच्चितित्वा खादति ।

अप नं धम्मसेनापति सार्वान्यय पिण्डाय चरमानो दिस्ता अय सत्तो अतिकारुश्ज्ञप्पनोकतरगाम-वासिको नुस्रोति तीर्स्म बङ्केला एहि रोति आह् । सो गल्या परं वित्रत्वा अट्ठासि । अय नं थेरो-कतरगाम-वासिकोसि कहं वा ते मातापितरोति पुरिष्ठ ।

> बहं भन्ते । निप्पच्चयो, मध्ह मातापिनरो म निस्साय किलम्तम्हाति म छङ्डेत्वा पलानाति । अपि पन पन्वजिस्ससीति ?

भन्ते ! अहं ताव पञ्चजेय्यं मादिम पन कपणं को पञ्चाजेस्सतीति ।

अहं पन्वाजेस्सामीति ।

साधु पञ्चाजेथाति ।

बेरो तस्स लाइनीयं भोजनीयं दत्वा नं मिलारं नेत्वा सहस्वेनेत्र नहानेत्वा पदवावेत्वा परिपूज्यवस्स उपसम्पादेसि । सौ महत्त्वकालां ठोसकीतस्मलेरोति पञ्चायित्व निष्णुञ्जो अपलाभो । तेन किर असरिस्तरासीयं कुर्ज्यपूरो न रुद्धपुत्वो, जीविनयदनम्बन्धेयं ठमति । तस्स हि रुप्ते एकरिसञ्जेय यापुत्रव्यके विषे पत्तो सर्वातितको तिव हुत्वा पञ्जायति । क्षत्र मनुस्त्वा इस्स्य पत्ती दूरिया व्याप्त नित्त । तस्स प्रते व यापु दानकाले मनुस्तानं भाननं यापु अन्ताप्तात्वितिष वयन्ति । सन्त्रकासियुषि एसेव नवी। सो सपरेन समयेन विषयननं वहरेत्या क्षाप्तके आदस्ते पतिद्वितिषीय अपलामोव कहोसि । स्वस्य जनुषुक्वेन आयुसंसारेषु पिष्टी-नेयु परिनित्वाधादिवनो सामापृत्ति । सम्मसेनापति आवज्जेस्तो तस्स परिनिज्याणभाव ज्ञात्वा श्रयं लोसकतिस्तरभेरो अञ्ज परिनिज्या-पिस्सति । अज्ज समा एतस्स मावदत्य आहार रातृ बहुतीति नं ज्ञात्वा मार्वास्य पिष्टाय पार्विषः । सरोत तिस्साय तात्व बहुमनुस्साय सावत्य्या हत्य पसारेश्वा जन्तमस्तिय नालत्व । अय नं वेरो गच्छावुमी आमनसालाय निसीदाति उत्योजिम । ततो आगतमेव मनुन्सा अध्यो आगनोति आमने निसीदायेखा भोजिन । वेरो ए इस छोसकस्य वेपाति लढाहार वेशेचि । त गहेत्वा गता लोसकरथेर अवस्थित सममेव भूण्यित् । अय पेरस्य उद्वास विद्यार गमनकाले लोसकतिस्मत्येरो गन्तवा थेर वन्ति, थेरो निवसित्वा ठितकोव लद्ध ते आवदो । भरति प्रक्रिक

चेरो सर्वेगप्पत्तो काळ ओळोकेसि । काळो अतिकक्त्तो । चेरो- होताबुसो ! इधेव निसीदार्ति कोसकत्वेरे आसनसाळाव निसीदापेत्वा कोसळग्रूओ निवेसन अगमासि । राजा चेरस्स पत्तः गाहापेत्वा अत्तस्स अकाळोति पत्तपुर चतुमधुर दार्घेति ।

बेरो नमादाय गल्वा एहाबुसो तिस्स ! इम बतुमपुर मुञ्जाति बत्वा पत्त गहेरवाब अट्ठासि । सो बेरे गारवेन लज्जन्तो न परिभुज्जति, अवन बेरो सहाबुसो तिस्स ! अह इम पत्त गहेरवाब ठस्सामि स्व निसीरित्वा परिभुज्ज, सर्वे इमें पत्ते हत्यते। मुज्बेय्य किञ्चि न भवेय्याति आह ।

अधायस्मा लोसकनिस्सर्थरो अभिगस्यरे पम्मसेनापतिन्हि पत्तं गहेत्वा ठिने चतुमपूर परिपृत्ति । त थेरस्स अरियिद्धिकनेन परिकार्यं न बगमासि । तदा लोसकतिस्सर्व्यरो सावदस्य उदरपूर करवा परिपृत्तिक । त दिवसमेव च अनुपादिसेमाप निकाणधानुवा परिनिकायि । सम्मामन्दुचो तस्स सन्तिके ठरवा । सरीरिनक्येप कारेसि । धानुयो गहेत्वा चीतित करिष्तु ।

तदा भिनलू घम्मसभाव सन्निपतित्वा-आवृत्तो ! लोमकत्वेरो अपुञ्जो अप्पलाभी एवरूपेन नाम अपुञ्जेन अप्पलाभिना कथ अस्यियममा लढोति कथेना निर्मादिम् ।

> मन्या धम्मसभाय गत्त्वा- काय नृत्यः भिक्तववे । एतरिह कथाय सिन्नसिन्नाति पुण्छि । ते इमाय नाम भन्तेति आरोचेम् ।

मत्था-भिक्तवर्व एसो भिक्तव् अत्तनो अप्पलाभिभावञ्च अरियधम्मलाभीभाव च अत्तनाद अकासि । अय हि पुत्रवे प्रेम लामन्तराय करवा अपलाभी जातो अनिक्चं हुक्कं अनताति विषस्सनाय युक्तभावस्म फलेन अरियधम्मलाभी जातोति बन्दा अतीत आहरि-

अतोतबस्य

अतीतं करसायसम्मामन्दुद्धकाले अञ्जतरो भिक्कु एक कुटुम्बिकं निस्ताय गामकावासे वसति एकततो मीलवा विषरस्ताम युत्तपयुत्तो । अयेको खोणानवरेरो समवनवाम वनमानो अनुगुक्केन तस्स भिक्कुतो उपद्राजकुटुम्बिकम्म वसनगाम मम्पतो । कुटुम्बिको येरस्म इत्यापये येव पसीदित्वा पत्त आदाय घर प्रवेसवा सक्तकुर्व भीजेत्वा योक घमकवर्ष मुत्ता थेर वन्दित्वा— भन्ते । अम्हाक धुरविहारमेव गक्कुय मृत्र मायलक्षमये आगन्त्वा प्रसिद्धानास्त्रीमाति आहु ।

थेरो बिहार गत्त्वा नेवासिकत्थेर बन्दिला आपुच्छित्वा एकमन्त निसीदि । सोपि तेन सिंद्र पिट-सत्त्वारं कत्वा- लद्भो ते आवसो ! भिक्बाहारोति पुच्छि ।

थाम लडोति ।

कहं लड़ोति ?

तुम्हाक बूरंगामे कुट्मिकघरेति । एवञ्च पन बल्बा अत्तनो सेनासनं पुष्कित्वा पटिजिम्मित्वा पन-चीवरं पटिसामेश्वा झानसुखेन फलमुखेन वीनिनामेन्तो निमीदि । सोपि कुटुम्बिको सायण्हे गरथमालञ्चेत दोपतेलञ्च गाहापेखा बिहारं गरुवा नेवासिकस्थेरं वन्दित्वा भरते ! एको आगन्तुकस्थेरो अस्थि आगतो न स्रोति पृष्टिष्ठ ।

> भाग आगतोति । इदानि कहन्ति ?

असुकसेनासने नामाति ।

सो तस्स मन्तिक गल्वा बन्दित्वा एकमन्तं निसिन्नो घम्मकथं मुखा सीनलबेलाय बेतियं च बोर्षि सूत्रेत्वा रोगे जालेत्वा उभीप जने निमन्तेत्वा गतो। नेवासिकत्यरोपि को अब कुट्टीम्बको परिमिन्ना सवाय मिक्कु दमस्मि बिहारे विस्साति न में एस किस्मि च गणियस्तितियि येरे अनतमनतं आपिकत्वा दस्मिन्त सिहारे एतस्स अवसनाकारो मया कात्ं बृहतीति तेन उपस्टानवेलाय आगलेन सद्धि किस्मिन कस्त्रीत।

स्त्रीणासवरवेरो तस्स अञ्झासय जानित्वा अय वेरो मम कुछ वा लाभेत्वा गणे वा अपनिवृद्धभाव न जानीतीति अत्तती वसन्द्रान गन्त्वा झानसुखेन फलमुखेन वीतिनामीस ।

नेवासिकोपि पुनिवबसे नल्लपिट्ठेन गण्डि पहरित्वा, नल्लेन द्वार आकोटेत्वा, कुटुम्बिकस्स गेह अग-मासि । सो तस्स पत्तं गहेत्वा पञ्जलासने निमोदापेत्वा-आगन्तुकत्येरो कृहि भन्तेनि, पुच्छि ।

नाहं तव कुनुषकस्म पबिन जानामि, । गण्डि पहरन्तो द्वारं आकोटेलो पबोधेनुं नामिक्व । हिय्यो जब पेहे पणीतभोजनं भुञ्जित्व। जीरापेतु असन्कोन्तो इरानि निहं ओक्कन्तो येव भविन्सति । त्व पमीदमानी एक्कपेम् ठानेम् येव पसीदमीनि आह ।

स्रोगासवत्थेरोपि अत्तनी भिक्ताचारवेलं सन्लक्ष्मत्वा सरीर पटिजागान्वा पत्तजीवरमादाय आकामे उप्पतित्वा अञ्जल्य अगमासि ।

सो कुदुम्बिको नेवासिकत्येर सप्पिमधुसक्कराभिसलत पायास पायेश्वा पन गन्धवृश्लीह उच्य-टटेस्वा पन पूरेत्वा- भन्ते । मो थेरो मग्गकिललो भविस्सति इदमस्स हरथानि अदासि ।

हतरो अपार्टिक्सिपरबाद महेला राज्यता सबे मो भिक्कु इम गायाम पिकस्मित गाँवार महेल्या तिक्काहियानोपि न गमिस्सित। सबे पनाह इम गायाम निक्क्स हाम गांवास गांवास्त्रीत। सबे उन्नहे को सिक्सिती । सुमेर उन्हरं क्षामा भावस्त्रीत। सबे प्रमुख उन्हरं क्षामा कार्यायाम्य निक्क्सिती । सुमेर प्रमुख उन्हरं क्षामा कार्यायाम्य पर्वायास्तित । कर्य नु नो इम छ इंड्यान उत्पारं नो एक झायक्षेत्र दिन्दा आगारे विवृहित्या तत्य पिक्ति पिक्सा प्रमुख उन्हरं क्षामा क्षामा क्षामा क्षामा क्षामा कार्यास्य विविद्या अन्तर्भ तत्वा नो भिक्स विवाय महत्त्व प्रमुख अपन कर्ताना । त्वार्य प्रमुख अपन कर्ताना । त्वार्य मा महत्त्व देशमत्स्य उत्पादि । तती पुट्ठावेद च मनुस्परीती हत्वा त्रीक्त्यस्य कार्णक्रवा निर्म्य निम्बीत ।

सो बहूनि बस्यमनसहस्मानि निर्मे पश्चित्वा पश्चावसेसेन परिपारिया पञ्चजानितनेसु यस्यो हृदवा एकदिवसिम् उदरपूर आहार न लिम । एकदिवस पर प्रकासल उदरपूर लिम । पुन पञ्चजानितनेसु नृत्वाबो लहीन । तस्य एकदिवस मर्प्यक्षमन् उदरपूर लिम । सेसकाले पन नेन उदरपूरो जाहारो नाम न लढ-पुन्ताबो लहीन । तस्य निर्माद्यक्ष महान्ताबी त्राम न लढ-पुन्ताबो निर्माद क्षाविक । तस्य निल्वितियो पट्टाय त कुलं परमदुग्गतसेन जानं । नामितो उढ उदनकिञ्चमत्तास्य न लिम । तस्य निम्तिवदकोति नाम सहोति । मातापितरी छातस्त्रस्य न प्रियानेसु असमकोत्ता नम्ब कालकाण्यकाति में पोषेत्वा नीहरिन्धु । सो अप्परितरणो विवचता नामित ।

तदा वोधिमत्तो बाराणसिय दिसापामोक्यो आवस्यि। हृत्वा पञ्चमाणबकसतानि सिप्पं बाचेति । तदा बाराणमिवासिनो दुग्गनान परिक्वयं दत्वा सिप्पं मिक्कापेन्ति । अयस्यि मित्तविक्वको बोधिसत्तस्स मन्तिकं पुत्र्ञिमप्पं विक्वति । मो कशमो अनोबादक्यमोनं न पहन्तो विचरिन बोधिसतेन ओविदयमानोपि ओवाद न गण्हाति । तं निस्साय आयोपिस्स मन्दो जानो । अय सो माणवकेहि सद्धि भण्डित्वा ओवादं अगण्हत्तो ततो पलायित्वा आहिण्डत्तो एक पचचनताम गत्त्वा भर्ति कत्वा जीवति । सो तत्व एकाय दुग्गितिषया सद्धि सवासं कप्पीसा । सात निस्साय द्वे दारके विज्ञायि । गामवासिनो अग्हा सुमासन इस्सासन आरोपेय्यासीनि मित्तविन्दकस्स मति दत्वा तामं डोर कृतिकाय बसापेसुं । त पन मित्तविन्दक निस्साय ते [२०] पच्चन्तगमवासिनो सनक्तन्तु राजद- ण्ड अद्धा । सत्तकस्त तालाक छिन्ज ।

ते चिन्तीयम् अन्हाक पुत्र्वे इसस्स मित्तविन्दकस्स अनागमनकाले एवरूप नत्यि इदानि पनस्स आ-गतकालनो पद्ठाय परिह्यायामाति त पोचेत्वा नीहीरसु । सो अतनो दारके गहेत्वा अञ्जल्य गच्छन्तो एक अमनु-स्सपरिगाह अटींव पाविसि । तत्यस्स अमनुस्सा हे दारके च भरियञ्च मारेत्वा मसं स्नादिसु ।

सो ततो पढ़ाधित्वा नतो ततो आहिण्डनो एक गम्भीर नाम पट्टनगामं नावाबिस्सञ्जनदिवसे येव पत्वा कम्मकरो हुत्वा नाव अभिष्ठहि । नावा समुपिद्दे समाई गन्तवा सम्मे दिवसे समुद्दमञ्जे आकोटेत्वा ठॉप-ता विद्य अट्टामि । ते कालकण्णिकणाकं विवासेतु "। सत्तक्षणुं मित्तिवन्दकस्येव पापुणि । मन्सा तत्सेकरं वेणुक्ठापक दत्वा हत्ये गहेत्वा ममुदे विविध्त । तिस्म कितमते नावा अगमामि । मिन्तिवन्दके वेणुक्ठापे निपिज्यत्वा समुद्गिद्दे गच्छनो कस्सपनम्मासम्बद्धकाके दिन्तदासीक्ष्य फलेन समुद्गिद्दके एकहिम फिल्ट-कविमाने वनस्सी देवधीतरो एटिलांस्वा नाम सन्तिकं मुख अनुभवमानो सत्ताह विस ।

ता पन विमानपेतियो सत्ताह सुख अनुभवन्ति सत्ताह दुक्य । दुक्य अनुभविनु गच्छमाना 'याव मय आगच्छाम ताव इधेव होहीति' वत्वा अगमस् ।

मित्तविन्दको नाम गनकाले वेणुकालाएं निपाजित्वा पुन्तो गन्छन्तो रजनविमाने अट्टर्देवधीतरो लिभ । ततीपि पर गन्छन्तो भणिविमाने सीळम, कणकविमाने इत्तिम देवधीनरो लिभ । तामिम वचन अकटवा पन्तो गन्छन्तो अन्तरदीप एक प्रकारम अद्भा । तत्थेका यिक्वणी अज्ञक्षेत्र विचरित । सित्तविन्दको तस्मा यिक्वणीभाव अज्ञानत्त्री क्षेत्रम व्यवस्थिति । तित्तविन्दको तस्मा यिक्वणीभाव अज्ञानत्त्री न जिम्मपत्वा । वित्तव । विवास प्रकार । तथ्ये विवास स्वति । सा यक्षानुभावेन त जिम्मपत्वा । विवास । तथा विवास महास्थानेन गन्त्वा वाराणसियं परिसापिट्ठे एकस्मि कण्डकगुम्बमत्यके पनित्वा पवस्टमानो भिम्म पनिटलीत ।

निम्म व समये तिस्म परिणापिट्टे रञ्जो अजिका वरमाना बोरा हरन्ति । अजिकगोपका बोरे गण्हिस्सामाति एकसन्त निर्णेता अट्ठमु । मिनाविन्दको पब्ट्टिव्ला भूमिम दिलो ता अजिका दिस्वा विन्ते- मि-अह समुटे एकस्मि दीएके अजिक पादे गहिला ताय लितो इप पतिती । वा वर्षानद्वाति एक अजिक पादे गहिस्सामि सा म परनो समुद्दिएट्टे विमानदेवतान सिन्कि विपस्तिति । सो एव अयोनिमां मनिविकरित्वा अजिक पादे गण्डिसामि सा म परनो समुद्दिएट्टे विमानदेवतान सिन्कि विपस्तिति । सो एव अयोनिमां मनिविकरित्वा अजिक पादे गण्डि । सा गहिनमना विन्ति । अजिकागोपका इतोचिनो च आयन्त्वा त गहित्वा एनक काल राज-कृष्ठे अजिकाय बादको एम वोरोर्गत न कोट्टेव्या विस्थला रञ्जो सिन्कि निता । [२०८]

तिस्म सणे बोधिमत्तो पञ्चमतमाणवकपरिवृती नगरा निक्यम्म नहायिम् पञ्छलो मित्तविन्दक दिस्ता मञ्जानित्वा ने मनुस्से आह । नाता । अयं अम्हाक अन्तेवामिको कम्मा न गण्डित्यानि ? अजिकवोग्को अय्य । एक अजिक गादे गण्डित तमा गडितानि । तेनहेत अम्हाक दाम कन्त्रा देव अम्हे निम्माय जीविस्मतीति । ते साथु अस्याति न विस्स्यजेत्वा अगयम् । अय न बोधिमत्तो मिन्नविन्दक त्व एत्तक काल कह वमीति पुण्डि । सो सम्ब अत्यात न वस्ता मत्त्रक्त स्वापेति । बोधिमत्तो अत्यवमान वसन अक्तरोत्नो एत दुक्य पापुणनीनि वत्वा इम गापमाह-

१ सी०-बारेसुं।

यो अत्यकामस्य हितानुकम्यिनो ओवक्जमानो न करोति सासनं, अजिया पादमोलक्षम मित्तको विय सोवतीति ।

तत्य अत्यकावस्ताति बृहाँढ इच्छत्यस्य । हितानुकम्पिनीति हितेन अनुकम्पनानस्स । ओवण्णनानोति मृदुकेन हित्तिचत्तेन ओवरियमानी । न करोति सावनत्ति अनुसर्वित न करोति दुव्वचो अनोवादको होति । विसको विध सोचतीति यया अय मित्तवित्वको अजाय पाद गहेत्वा सोचित किरुमिन एव निच्चकालं सोचतीति स्याग गायाय वोधिसनो प्रमा देशेनि ।

एव तेन बेरेन एतके अदाने तीसु येव अताभावेनु कुच्छिपूरी लक्षपुब्ली यक्सेन हुत्वा एकदिवसं ग्रव्स-मलं लद्ध, मुनखेन हुत्वा एकदिवसं भत्तवमनं, परिनिन्वाणदिवसे धम्मसेनापतिस्सानुभावेन चतुमधुर लद्धं। एव परस्म लाभन्तरायकरणं नाम महादोमिन् बेदिनब्ब ।

तस्मि पन काले सोपि आवरियो मितविनदकोपि यथाकम्म गता '। सत्या एव भिक्खवे अनना अप्प लाभीभावञ्च अरियधम्मलाभीभावञ्च सयमेव एसो अकासीति इम धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसत्य घटेत्वा जातक समोधानीस । तदा मितविन्दको लोसकतिरसत्येरो अहोसि । दिसापामोक्साचरियो पन अहमेवाति ।

लोसकजातकं ।

२. कपोतजातकं

यो जल्पकामस्साति इद मत्या जेतवने विहरलो अञ्जातरं लोलिशक्खु आरब्भ कथेसि ।

पञ्जूपन्नवत्यु

तस्स लोलभावो नवकनिपाने काकजानके आबीभविष्मिति । तदा पन त भिक्क्षू अय [२०९] भन्ते ! भिक्क्षु लोलोति सन्यू आरोचेस् ।

> अय न सत्या सच्च किर त्व भिक्क्षु । लोलोति पुच्छि । आम भन्तेति ।

सत्था पुरुवेपि त्वं भिक्लु !´्रोलो लोलकारणा जीवितक्लय पत्तो पण्डितापि त निस्साय अक्तनो वसनट्ठाना परिहीनाति बत्वा अतीन आहरि–

अतीतवस्य

अतीतं बाराणसियं ब्रह्मदतं २०ज कारेन्तं बोधिमत्तो पारापतयोनिय निब्बत्ति । तदा बाराणसीवासिनो पुञ्चामताया तीम निस्स ठाने मुकुणान मुख्यामत्याय बुषपण्डियो ओष्ट्रम्बिन । बाराणसीवासिनो निष्मापित्र हिन्ति । स्वाप्तासिन हिन्ति सुप्ति सुप्ति । स्वाप्ति । स्वप्ति । स्वाप्ति । स्वापति । स्वाप्ति । स्वापति । स्वाप्ति । स्वापति । स्वाप्ति । स्वाप्ति । स्वाप्ति । स्वाप्ति ।

अथ न बोधिसती-कस्मा त्वं सम्म ! अन्हींह मदि वरमीनि आह । सामि ! नुम्हाक किरिया मद्धं रूक्पि । इनो पट्ठाय नुम्हे उपट्ठिह्स्सामीनि । सम्म ! नृम्हे अञ्ज्ञातेचरा, मयं अञ्ज्ञानेचरा । नृम्हींह अहातमुपट्ठान दुक्करीत । सामि ! नुम्हाक गोवरमाहककाले अहस्य गोचर गहेत्वा नृम्हींह मदि येव गमिस्मामीति । माप, केवल्को अपमानेन असिनाव्यीति ।

एव बीधिसती काक ओविंदरवा गोचरे चरन्तो तिशबीबादीति बादित । बोधिमनस्म पन गोचर-गहणकाले काको गल्या गोमयिष्ण्ड अपनेत्वा गाणके बादित्वा उदर दुरेत्वा बीधिसत्तस्म सन्तिक आगल्या-सामि ! नुस्ट्र अतिवल चरच अतिबङ्गास्वन नाम अतिवु न बहुतीति बत्या बीधिसत्तेन गोचर गहेत्वा साम आगच्छन्तेन सद्धि वे महानम गाविमा । भत्तकारको अस्ट्राक क्योंनो अञ्ञामिग गहेत्वा आगतीति बत्या काकम्मपि पोच्छ ठर्थोष । तती पुट्टाय दे जना वसनित ।

अथेकदिवस संदर्शित बहु मण्डमम आहरित्मु । न आदाय भनकारको महानमे नन्य नत्य आंक्राके । काको त दिस्वा लोभ उप्पादेखा स्वे गोचरभूमि अतन्त्वा मदा इसंग्र लादितब्बन्ति र्रात तिनिगन्तो \निप-ज्ञि । पुन दिवमे बोधिवनो गोचराय गण्डनो-एहि सम्म । काकानि आह ।

> सामि ! तुम्हे गच्छथ मय्ह कुच्छिरोगो अन्थीनि । सम्म ! काकान कुच्छिरोगो नाम कदाचि न भूतपुब्बो । रत्ति तीसु यामेसु एकेकस्मि [२१०]यामे

१ स्या०-निद्ठुणंतो ।

जातकटुकथा

मुच्छिता होन्ति । दीपवट्टि गलितकाले पन नेसं मुद्दत तिनि होति । त्वं इम मच्छमसं खादिनुकामो मविस्सास, एहि मनुस्सपरिभोगो नाम नुम्हाक दुष्परिभुष्टिजयो मा एवरूप अकासि,मया सद्धि येव गोवराय गच्छाहीति ।

न सक्कोसि सामीति ।

तेनींह पञ्जायिस्सित्ति सकेन कम्मेन लोमबस्त अगन्त्वा अप्यमतो होहीति त आंबदित्वा बोधिसत्तो गोचराय गतो । अत्तकारको नानप्पकार मच्छमस्विकति सम्पादेत्वा उसुम निब्बायनस्य भाजनानि योक विद-रित्वा रसपरिस्सावनकरोटि भाजनमत्यके ठपेत्वा बहि निक्सीमत्वा सेर पुच्छमानो अट्ठासि ।

तिस्म खणे काको पिच्छतो सीस उनिकारिया भरागेहुँ भोठोकेन्तो तस्स निक्कमिनमाय आवाअयं बानि मयह मनोरथ पूरेला मय लाविजु कालो किमुलो महामय लावािम उदाहु बुण्णिकमसिन चिन्तेला
कुण्णिकमसेन नाम खिण कुण्णि पूरेलु न सक्ता महल्म मसलण्ड आहिरत्वा परिच्छय निक्कियित्वा लावसानो
निपन्निक्सामीति पण्डिक्तो उप्यतित्वा सक्तरेदिय निकीयि । सा किन्नीत सहमकासि । भरकारको त स् सुत्वा किमुलो एतन्ति पविट्ठो काल दिस्वा अय दुट्ठकाको मया सेट्ठिनो पक्कमस लाविजुकामो अह लो पन मेट्ठि निस्माय जीवािम न इसं बालं, किम्मे इमिनाित हार पिधाय काक गहत्वा सकलसरीर पत्तानि लुण्जित्वा अर्द्धाणिवर लोगजीत्वाय कोट्टित्वा ऑम्बलवर्किन आलोळेत्वा तनस्स सकलसरीर पत्तानि त काक पण्डिय लिपि । सो अधिमत्तवेदनािमभूतो तिल्लायस्तो निपािज । बोधिमतो माय आगन्या त व्यमनप्पत दिस्वा लोल काक ! मय वचन करूत्वा तव लोग निस्माय महादुक्त पत्तांगीिन बन्दा इसं गायमाह्न

> यो अश्यकामस्स हितानुकस्पिनो ओवज्जमानो न करोति सासनं । कपोतकस्स वचनं अकत्वा अमिसहत्यस्यगनोव सेतीति ॥

तस्य क्योतकस्स वयनं अकरवाति पारापतस्य हितानुसासीन वयन अकरवा अमिसहस्वस्थाती व सेतीति अमितान अनत्यकारकान दुक्बूप्पारकपुमालान हृत्यपय गती । अय काको विय पुगालो महत्त व्यसन पत्वा अनुसोचमानो सेतीति ।

बोधिसत्तो इम गाय बरवा इदानि मया च एतिस्म ठाने न सक्का बीसतुर्तित अरुकारव गतो । काको पि तत्येव जीवितक्सय पत्तो । अय न भत्तकारको सद्धि पश्चिया गहेरवा सकारट्ठाने छड्डोंन । [२११]

सत्यापि न त्व भिक्कु ! इदानेव लोलो पुत्र्वेषि लोलो येव तञ्च पन ते लोल तिस्साय पण्डितापि सकस्हा आवाना परिहोना ति इस धम्मदेनन आहरित्वा सच्चानि पकावेति । सच्चपरियोमाने सो भिक्कु अनापामिक्क पनी । सन्या अनुसन्धि घटेत्वा जानक समोधानेमि । तदा काको लोलभिक्कु अहोसि । पारापता पन अहमेनानि ।

कपोतजातकं।

३ बेलुकजातकं

यो अत्यकामसाति इद सत्या जेतवने विहरन्तो अञ्जातर दुब्बचिभक्त्व आरब्भ कथेसि ।

पच्चपद्मबस्य

तं हि भगवा सध्वं किर त्व भिक्षु । दुब्बचीति पुच्छित्वा सध्वं भन्तेति बुत्ते न त्व भिक्षु । इदानेव दुक्बची पुरुवेपि दुब्बची येव दुब्बचता येव पण्डितान वचन अकत्वा सप्पमुखे जीवितक्कय पत्तोसीति बत्वा अतीत आहरि--

अतीतवस्य

अतीतं बाराणसिय ब्रह्मदने रज्ज कारेतं बोधिमनो कासिरत्हे महाभोगकुले निस्वतो । विश्वतं पत्वा कामेमु आदीत्व नेक्कामे चानिसा दिक्का कामे रहाय हिमक्त पत्तिस्थित हासम्बन्ध्य पद्धवित्वा कासिक-परिकाम कत्वा पञ्च अभिज्ञा अट्ठ मंगपोनियो उप्पारेत्वा झानमुक्केन वीतिनामेन्तो वपरसापे महापरिवारो पञ्चित तासस्वतिष्ट परिवतो गणस्स सत्था हत्वा विहासि ।

अथेको आसिविसयोतको अजनो घम्मनाय चरनो अञ्चनरम्स तापसमा अस्ममपद पत्ती । तापसी निम्म पुतासिनेह उप्पादेखात एकस्मिबेळुप्ये सवापेखा पटिवागित। नस्स बेळुप्ये सवनतो बेळुको स्वेद नाम अकपु। न पुनासिकेहन पटिवागितानापतस्य बेळुकोपताखेब नाम अकपु। नदा बाधिमनो एको किर तापसी आसीविम पटिजागित मुख्य पदकोसित्या सक्व किर स्व आसिविस जगामीति पुच्छित्या सक्वति चुने बासिविसन सिद्ध सिक्मामी नाम निवाग मा गुवं जगामीति आह। नापसी आह. मो मे आविष्य पुनो नाह तेन विना वसिनुं सिक्मामी नाम निवाग मा गुवं जगामीति आह। नापसी आह. मो मे आविष्य पुनो नाह तेन विना वसिनुं सिक्ममानीति।

नेनहि एतस्मेव सन्तिका जीवितक्लय पापुणिस्मसीति ।

तापमो बोधिसत्तम्स वचन न गण्हि, आमिविसम्पि जहिनु नासविख ।

तनो किंपिशहरूबयेनेव सब्बे तापमा कड़ाफश्याय गन्या नतर्ठाने फ़ाफ़लम्म मुक्तभावं दिस्वा है त्यो दिवमे तत्वेव वीसमु । बेळुर्पिशांपि तीह सिंह गच्छन्मों [२१२) आसीविम बेळुराख्ये यव समापेवा पिरहारवा गता। सो पुन नापसीह साँढ डीहमोहरूबयेन आगन्या बेळुकस्स गोचर दस्सामीति बेळुराख्य उप्याटेखा - चाँह पन । छात्कोसीति हत्य प्यारीम ।

आमिविमो द्रीहं नीह निराहारनाय कुन्किस्वा पमारिनहत्वे डमित्वा नापम नत्वेव जीवित्रक्क्यं पार्वत्वा अरुब्य पार्विम । नापमा न दिन्वा बोधिमन्तम्म आगोचेमु । बोधिमत्तो नस्म भरीरिकच्च कारेत्वा इमिगणस्म मञ्जे निर्मादित्वा इसीन ओवादवमेन इम गाथमाह-

यो अत्यकामस्स हितानुकस्पिनो ओवज्जमानो न करोति सासनं ।

एवं सो निहतो सेति वेळ्कस्स तथा पिताति ॥

नन्य एव मो निहतो सेतीरित यो हि इसीन ओवाद न गण्डाति सो यया एस तापसो आसीविश्वसूसे पूर्तिसाय पत्था निहतो सेति एव महाविनास पत्था निहतो सेतीति अन्यो । एव बोधिससो इसिगण ओवदित्वा चतारो ब्रह्मबिहार भावेत्या आयुपरियोसाने ब्रह्मछोके उपप्रिज ।

सरवापि न स्व भिक्त । इदानेय दुख्वची युक्षिप दुख्वची येव । दुख्वचभावेनेव च आसीवितम् व पृतिकाव पत्तीति इम धम्मदेगन आहरिस्वा अनुमन्धि घटेन्या जानक समीधानेमि । तदा बेळूकपिता दुब्बचभिक्त्यु अहोमि, सेमपरिमा बृद्धपरिमा, गणसत्या पन अहमेवाति ।

बेळ्कजातकं

४. मकसजातकं

सेच्यो अभिस्तोति इदं सत्या मगधेगु चारिकं चरमानो अञ्ञातर्रास्म गामके बालगामिकमनुस्से आरक्त क्योंचि ।

वस्य वज्ञवस्य

तथागती किर एकॉस्स समये सावित्वती सगय रहठ गरूवा तरण चारिकं चरमानी अञ्जातरं नामक सम्पापृणि । सो च गामको ये मुध्येन अन्धवालसन्दसीह येव उस्तको । तत्येकदिवस ते अन्धवालसन्दसा सिन-पतित्वा-मो ! बम्हे अरञ्जं पवितित्वा कस्मं करोलं सकता वादित तपण्ण्या अस्हाक कस्मच्छेदो होति । सम्बेच चृति चेव आवृत्तानि च आदाय गरूवा सक्तिह सिंद युक्तित्वा सम्बमक्ते विशिक्तत्वा जिन्दत्वा च मारेसाति मन्तियवा अरञ्ज गरूवा मकते विज्ञास्तामाति अञ्जामञ्ज विशिक्तत्वा च पहिरत्वा च दक्कपणता आगरूवा अत्योगि च गामगजेह च गामदारे च निर्माजेख । १२१३ ।

सत्या भिनन्तुमधारितुवो त गाम पिण्डाम पानिति । अवसेसा पण्डितमनुस्सा भगवन्त दिस्ता गामद्वारे मण्डप करवा बुढण्युलस्य भिनन्तुस्तस्स महादान दरवा सत्यार विक्टवा निर्मादिसु । सत्या तरिस तरिस ठाने पतितमनुस्ति दिश्या त उपासके पुण्डि-बहु इसे गिलानमनुस्ता कि एनंहि कर्तान्त ?

भ्रन्ते ! एवं मनुस्सा मकसयुद्ध करिस्सामाति गन्त्वा अञ्जामञ्ज विश्वितवा सय गिलाना जाताति । सत्या-न इदानेव अभ्यबालमनुस्सा मकसे पहरिस्सामाति अत्तान पहरन्ति पुञ्जेपि मकस पहरिस्सा-माति पर पहरणकमनुस्सा अहेसु भेवाति वरवा तेहि मनुस्सिहि याचितो अतीनां आहरि-

अतीतवस्य

अतीते बाराणसिय बहुपस्तं रण्य कारेन्ते बोधिसत्तो विण्याय वीविकं कपेति । तदा कामिनर्टे एकस्मि पच्चत्तामे बहु बहुकि बनीना । तत्को जलातबहुब्बी १ क्वा तम्कृति । अथन्य गृक्षो मकसो तत्व-कोहुबाजकपियु विस्ति से मीन निसीदित्व ससिया पहरन्तो विय सीस मुख्युच्यकेन विस्ता । यो अवनो सन्तिकं निर्मा थे अवनो सन्तिकं निर्मा वे विकासि निवारित निता ।

तात । अधिवासेहि एकप्पहारेन त मारेस्सामीति ।

तरिम समये बोधिमनो पि अलेनो भण्ड परियेममाना त गाम पत्वा तस्म बहुदकीसालाय निरिक्को होति । अब सो बहुदकी पुत बाहु-नात ! इस मकसं बारेहीति । बो बारेस्मामि तार्तात तिर्वाच महाफरम् । उमिक्यपित्वा पितु पिर्टिऽपसे ठत्वा मकम पहरिस्सामीति पितृमत्यक द्विधा भिन्दः । बहुदकी तत्वेव जीवित्तवस्य पत्तो । बोधिमतो तस्म तं कम्म दिस्वा पत्वामिनोपि पण्डितोव मेस्यो । सो हि दण्डमधेनापि मनुस्मे न मार्ग-सम्पतिति चिन्तेवा इस गाममाह-

सेय्यो अभित्तो मतिया उपेतो न त्वेव मित्तो मतिविष्पहीनो ।

मकसं बिष्म्सन्ति हि एलमगो पृत्तो पित अविभदा उत्तमगन्ति ॥

तथ्य संस्थोति पनरो जनमो। सतिया उपेतोति पञ्जाय समग्रावनो। एनम्ग्रांनि कालामुणं वाला। पुत्ती पत्तु अभिनया उपमांनि कालामुणं वाला। पुत्ती पहुत्वा पिनु उत्तमंत्रं मन्यक मन्त्रं मारिक्सम्मीति द्विया । भिनिद। तस्मा बालिनतो पण्डिनो अनिनोव संस्थाति। इसं गाय करवा बोधिसनो उट्ठाय यथानस्म गती वद्दक्तिस्सार्य आत्रका सरीरिकच्य अन्त्रम्।

सत्या एव उपासका । पुरवेषि मकस पहिस्सामाति पर पहरणकमनुस्मा अहेर्मु येवाति । इसं धन्मदेसनं आहिस्स्वा अनुसन्धि घटेरवा जातक समोधानेसि । तदा गाव वस्वा पक्कन्सो पण्डितवाणिजो पन अहमेव अहोसिन्ति ।

मकसजातकं [२१४]

१ सि०---पलितवङ्की । २ स्या०---लालामूगो ।

रोहिसीजातकं

से स्यो जिमलोति इदं सत्या जेतवने विहरतो एकं अनाविषण्डिकसेट्ठिनो दासि आरश्म कयेसि । पश्चपन्नवस्य

अताथपिष्टिकस्स किर एका रोहिणी नाम दासी अहोसि । तस्सा वीहिपहरणट्ठाने आगन्स्वा महस्किका माता निपष्टित । तं मिक्का परिवारेखा सूचिया विज्ञामाना विय खादन्ति । सा धीतरं आह्— अस्म ! सम्बिका म खादन्ति । एता वारेहीति ।

सा बारेस्सामि अम्माति मुनल उनिकापित्वा मातुन्तरीरे मिनका मारेत्वा विनास पापेन्सामीति मातर मुसलेन पहरित्वा जीवितन्त्वय पाएं उ । नं दिस्ता माना में मताति रोदितु आरिम । तं प्रवृत्ति सेट्टिस्स आरोकेषु । मेट्डी तस्सा सरीर्राकेल्व कारेत्वा विहार गल्दा सब्ब त पर्वृत्ति सत्यु आरोजेसि । सत्या-नको । तह्यान । एमा मानुसरी-मिक्कत मारेत्वीत इटालेन मूनलेन पहरित्वा मानर मारेसि पुक्विप मारेसि वेबाति बन्वा नेन पाचितो अनीर्ण आरीर-

अतीतबस्य

अतीने बाराणिसय ब्रह्मदत्ते रज्ज कारेंन्ते बोधिसत्तो सेट्ठिकुके निम्मतिस्या पितु अस्चयेन सेट्ठिट्ठान पापुणि। तस्सापि रोहिणी नाम दासी अहोत्ति। सापि अत्तनी बीहिषहरणट्ठानं आगल्या निपन्नाय भातरा प्रसिक्ता मे अस्म बारेटीनि युना एवमेवे मुमळेन पहरित्या सातर जीविनवस्य पापेस्वा रोदितुं आरसि। बोधिससोन पद्मिन सुन्ता अभिनोपि हि दमस्मि लोके पण्डिनो व सेव्योनि विन्सेस्या इस गायसाह—

> सेय्यो अमित्तो मेवाबी यञ्चे बालानुकम्पको । पस्स रोहिणिकं जिम्म मातरं हत्त्वान सोचतीति ॥

तत्त्व संघावीति पण्डितो जाणी विभावी। यञ्चे बालानुकस्पकोति एत्य एत्य यत्ति लिगवियल्लाको कतो। चेति नामन्ये निपानो । यो नाम वालो अनुकस्पको ततो सत्पुचेन सहस्वमुचेन पण्डितो अमिनो होन्तोषि सेव्यो येवानि अल्यो। अवबा-यांन पटिलेचन्त्रत्व निपानो तो। चे बालानुकस्पकोति अल्यो। आव्या-यांन पटिलेचन्त्रत्व निपानो तो। चे बालानुकस्पकोति अल्यो। आव्या-यांन पटिलेचन्त्रत्व निपानो हन्त्वान इत्या आव्या-स्वस्पेच रोदित परि-वर्षना वाण्यान सम्प्रेच लोको अभिन्तोषि पण्डित सेव्योति। वोषिसतो पण्डित पस्सानो इमाय गायाय यस्य देशेनि।

सत्था न लो गहर्पात ! एसा इदानेब मक्किका मारेम्सामीति मातर वालेख पृथ्वेपि घातेखि येवाति इम धम्मदेमन आहरित्वा अनुनीत्थ घटेत्वा जातकं समोधानेमि । तदा माता येव माना अहोसि, धीता येव धीता, महासेट्ठी पन अहमेव अहोमिति ।

रोहिणीजातकं [२१५]

६. आरामदसकजातकं

न वे अनत्यकुषकेनाति इदं सत्या जेतवने विहरन्ती अञ्जलरास्मि कोसलगामके उप्यानहूसकं आरब्भ कर्येति ।

पच्चुपन्न बत्यु

सत्या किर कोसलेसु चारिक चरमानो अञ्चातरं गामक सम्पापृणि । तत्थेको क्रुटुम्बिको तथागतं निमन्तेत्था जतानो उद्याने निसीदापेत्वा बृद्धपनुलस्त्र संघम्स दानं दत्था-भन्ने । यथारुचिया इसस्मि उय्याने विचरपाति आह ।

भिन्नमु उट्ठाय उद्यानपालं गहेत्वा उत्याने विचरत्ता एक अंगणट्ठान दिस्वा उद्यानपाल पुष्टिषु-उपासक ! इसं उत्यान अञ्जात्व सन्दरशाय "इमार्स्स पन ठाने कोचि कन्तो वा गर्नेशो वा नित्य, किन्तु को कारणीन ?

भन्ते । इमस्य उत्थानस्य रोपनकाले एका गामदारको उदक् सिञ्चिका इमस्य ठाने घवसपीतके उम्मूल करूवा मूल्यपायाचा उदक मिञ्चि। ने कम्ययोगका मिलाविक्वा मता । इमिना कारणेन इट ठान अपण आपनिन । पिक्व मत्यार उदमेकमिला एनमस्य आरोचेनु । मत्या न भिक्ववे । सो गामदारको इटानेव आरा- महसको एक्वीप आरामदुसको से बानि

अतीतबत्य

अतीते बाराणसिय बह्यदने रज्जे कारेन्ते बाराणमिय नक्सत घोमायमु । नक्सतभिन्मिश्यवण-कालतो पट्ठाय सकलनारवामियो नक्स्तानिस्थितका हुत्वा विचरील । तदा रज्जो उय्याने यह मक्स्टा बसील । उय्यानपालो चिन्तीस-नगरे नक्सत पुट्ठ । इमे बानरे उदक मिज्यवानि बत्वा अह तक्सत कीटि-स्सामीति अंट्रक्टवानर उपसक्तियना-सम्म बानर्ग्जेट्टक म्ह उय्यान गृहाकिम्प बहुवकार, तुम्हे एथ्य पूणकक्त्यरुक्वानि सादय । नगरे नक्सत पुट्ठे, अह नक्सत कीटिस्सामि । यावाह न आगच्छामि ताव इसिम्प उद्यानो क्स्युनीतकेमु उक्त विज्ञित सासस्यायाति पण्डि ।

माधु मिञ्चिस्मामीति ।

नेनहि अप्पमत्ता होयानि उदक सिञ्चनत्थाय नेस चम्मकृटे चेव दारुक्टे च दन्या गतो ।

बातरा चम्मकट चेव दारक्ट च बहित्वा क्वववीतकेषु उदक मिञ्चित । अथ ने बातर प्रेट्टको एवसाह— भो बातरा उदक नाम र्गविवत्व, गुम्हे क्ववयोतकेषु उदक मिञ्चिता उपाटेत्वा उपाटेत्वा मृश्य आंशीकेषा गम्भीरमतेषु मुकेषु बहुं उदक मिञ्चय, अगम्भीरमतेषु अप । एक्छा अम्हाक उदक हुन्कर भविन्मुतीति ।

ने साधूनि सम्गटिष्कण्या तथा अकतु । तस्मि समय एको पण्डितपुरिसो राज्याने ने बानरे नथा करोन्ते दिख्या एक्साह-मो बानरा ! कस्मा तुम्हे राजयोगके उप्पार्टका उप्पार्टका मुख्यमाणेन उदके सिज्यपाति 'ते एव नो बानरानेहरुको ओवरतीति आहुन्। मो न चचन पुरवा—अहां बत भो ! बाना अप-णिवता अस्य करिस्मामाति अन्यपेष करोन्नीति चिन्तेत्वा इसे गायसाह-[२१६]

> न वे अनत्थकुसलेन अत्थवरिया सुवावहा । हार्वेति अत्थ दुश्मेद्यो कपि आरामिको यथाति ।।

१ स्या०--सण्डक्छायं । २ सी०-चमण्डे चेवः

तस्य बेति निपानमत् । अन्तवकुत्तस्यानि अनन्यं अनायनने कुतन्नेन अन्यं आधानने कारणे अकुत्त-लेन चाति अत्यो । अथवरियानि वर्द्दविकरिया । कुबाबहाति एवरुपेन अनत्यकुमन्नेन काधिकचेतिमकमुख-संखातस्य अयस्य चरिया न सुवाबद्धा, न सक्ता आविद्वित्तीत अय्यो । कि कारणा ? एकत्तेनेच हि हार्पनि अत्य टुम्मेशांति वाण्युग्गणे अत्य करित्सामीनि अय्य हार्पन्या अनत्यमेव करोति । क्षि आराधिको ययानि यया आरामे नियुत्तो आरामत्यक्षणको मक्कटो अत्य करित्सामीनि अत्यस्यमेव करोति । एव यो कोचि अनत्यकुत्तनो तेन म सक्का अत्यचरित्य अविद्युत्ते । सो तन्त्रमेव ने अत्य हार्पन्य विद्याति ।

एव सो पण्डितपुरिसो इमाय गायाय बानरजेट्ठक गरहित्वा अत्तनी परिस आदाय उच्चाना निक्व-मि । सत्या न भिक्ववे ! एस गामदारको इदानेव आरामदूसको पृत्वेषि आरामदूसको येवाति वत्या इम धम्म-देसन आहरित्या अनुसन्धि घटेत्वा जानक समोधानेसि । नदा बानग्जेट्ठको आरामदूनकगामदारको अहोसि । पण्डितपुरिसो पन अहमेवाति ।

आरामदूसकजातकः।

७ वारुणिजातकं

न वे अनत्यकुसलेनाति इद सत्या जेतवने विहरन्तो वाश्णीद्रसक आरब्भ कथेसि ।

पश्चपननदस्यु

अनायपिण्डिकस्स किर सहायो एको बाराणियाणिको तिसिण बाराणि योजेत्वा हिरञ्ञानुवण्या-त्रीनि गहेत्वा विकिकणतो महामने सीव्यप्तिते तात । त्वं दात्तवसूत्र गहेत्वा बार्यण देहित अनेतायिक आणापेत्वा सयं नहायिषुं अपमासि । अन्तेवासिको महाजस्य सार्यण देन्तो मनुस्से अन्तरन्तरा लोणसम्बर आस्त्रपोर्थ्या सार्यने हिस्सा सुरा अलोणिका भविस्सानि लोणसेल्य पिक्वपिस्सामीति मुराबाटियं नाळिमसं लोण पिक्वपित्वा तेसं मुर अशोणिका भविस्सानि लोणसेल्य पिक्वपिस्सामीति मुराबाटियं नाळिमसं लोण पिक्वपित्वा तेसं मुर अशोग । ते मुल पूरेत्वा छड्डेल्या-कि ते कतित पुण्डिमु ।

> तुम्हे सुर पिवित्वा लोणं आहराफेतो दिस्ता लोणेन योजेसिन्ति । एवरुपं नाम मनापं वार्राण नामेसि बालाति तं गरहित्वा उट्टायुट्टाय पकन्ता । बार्राणवाणित्रो आगन्ता एकम्पि जदिस्बा-वार्राणगायका कहं गताति पुष्छि ।

सो तमस्य आरोचेसि ।

अथ न आर्चारयो–बाल [।] एवहपा नाम ते सुरा नासितीति गरहित्वा गन्त्वा इम कारण अनायपि-णिकस्तम आरोचेसि ।

अताथपिण्डिको अस्थि नो इद कथापारअतस्ति जेतवन गन्स्वा [२१७] सस्यार बन्दिस्वा एतमस्थ आरोचेसि ।

सत्था-न एस गहपति ! इदानेव बारुणीदूमको पृथ्वेपि वारुणीदूसको येवाति वन्त्रा तेन याचितो अतीत आहरि-

अ तीतवत्थ

अतीत बाराणसिय ब्रह्मदन्ते रूज कारेन्ते बोधिसत्तो बाराणसिय सेट्ठी उहोमि । त उपनिस्माय एको बारुणीवाणिजो जीवात । मी तिथिण मुज्योजेरता इस विविक्णाहीति अन्तेवामिक बत्वा नहायितु ततो । अन्तेवासिको तिस्म गतमनो येव मुगय लोण परिचणित्वा इमिनाव नयेन मुर विनासिस । अवस्म आचरियो आगल्वा न कारण ज्ञात्वा सेट्टिस्म आरोचीस । मेट्टि अनत्वकुम्मला नाम बाला अत्य करिस्सामानि अनत्वसमेव करोन्तीति बत्वा इस गाथमाह—

न वे अनत्यकुसलेन अत्यवस्या सुलवहा। हापेति अत्यं दुम्मेबो कोण्डज्ञो वार्रोण यणाति ।।

तत्व कोण्डश्रो वार्का यथाति यथा अय कोण्डश्यानामको अन्तेवार्तिको अत्य करिस्सामीति लोण पक्ष्मिपित्वा वार्काण हापेमि परिहापेसि विनासेसि एवं सब्बोपि अतत्यकुमलो अत्य हापेतीति । बोधिसत्तो इमाय गायाय धम्म देसेसि ।

सत्यापि न एम गहपति ! हदानेव वारुणीदूसको पुरुवेषि वारुणीदूसको येवाति वत्वा अनुसन्धि घटेत्वा जानक समोघानेमि । नदा वारुणीदूसको इदानिषि वारुणीदूसको अहोसि । वाराणसीसेट्ठि पन अहमेवानि ।

वारणिजातकं

८ वेदब्भजातकं

अनुपायेन यो अस्यन्ति इदं मत्या जेतवने विहरन्तो दुब्बच भिक्ख आरदभ कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्थ्

तं हि भिक्कु सत्था न त्व भिक्कु । इदानेव हुब्बचो पुढ़बेश हुब्बचो येव । तेनेव च कारणेन पण्डितान वचनं अकत्वा तिण्हेत असिना डिधा कत्वा छिक्रो हुत्वा मग्गे निपनित्य । तः च एककः निरसाय पुग्तिसहस्स जीविनक्क्य पत्तीनः बत्वा अतीत आहरि-

अतीतवत्य

अतीते बाराणसिय ब्रह्मवत्ते राज कारेले एकस्मि गामके अञ्जातरो ब्राह्मणो वेदस्भै नाम मन्त जानानि । डो किर मन्त्रो अनग्धो महाद्वी नकस्त्रयोगे रुद्धे त मन्त्र परिवत्तेत्वा आकामे उल्लोकित आकासतो मन्तरतनवस्त सस्साति । तदा बोधिसत्तो तस्य ब्राह्मणस्य सन्तिके तिष्य उगण्हानि । अपेकदिवस बाहुणाो बोधि-सन्त आया कोन विदेव करणीयेन अन्तरो गामा निक्सीमन्त्रा [२१८] चेतिरहुँ अनगासि । अन्तरामणे च एकस्मि अञ्जाद्वाने पञ्चसता सम्मक्तेषा नामप्रभाग करोनि । वे बीधिमन्त च वेदस्प्रश्लाहण च गरिहुँ ॥

कस्मा पनेते पेसनककोराति बुच्चिता ? ते किर डे जने गहेत्या एकं धनाहरणत्याय पेमेन्त तस्मा पेमनककोरातेच बुच्चिता । तेषि च एकस्मि अरुक्कार्ट्झने ठिना पितापुने गहेत्वा पिनरे स्व अरुद्वाक धन आहारित्वा पुन गहेत्वा याहीनि वदिन । एनेनुपायेन मानुपीनरो गहेत्वा मानर विस्माउजेल्नि । जेट्ठकणिट्ठे पार्च्या बेट्ठकभानिक विस्माउजेल्नि । आचिर्यस्तेवानिक गहेत्वा अलेवानिक विस्माउजेल्नि । ते तिस्मिध्य कार्च वेदरुकमानिक विस्माउजेल्नि । आचिर्यस्तेवानिक गहेत्वा अलेवानिक विस्माउजेल्नि । ते तिस्मिध्य कार्च वेदरुकमानिक विस्माउजेल्न।

बांधिमनो आविष्यं वित्रवा-अहमैकाहद्वीहण्ययेन आगमिस्मामि तुम्हे मा भागित्य, अपि व वो पन मम वजन करोग । अज्ञ धनवस्मापनकनक्तरयोगो अविस्मानि । मा वो तुम्हे दुक्क्ष असहना मन्त परिवर्तनत्व धन वस्मापित्य । सर्व वस्मापनकन्त्रवाद्योगो भागित्य इत्रे व पञ्चमता बोरानि एव आविर्द्य ओविदिन्या मन्त्रयाय आमासि ।

चोराणि मुस्यि अत्थानी ब्राह्मण बन्धित्वा निषरजाणेम् । न खण्डलेब शाधीनलोकधातृतो परि-पुण्ण चत्यमण्डल उदर्शीं ॥ शाह्मणो नक्वता ओलोकेलो, धनवस्मापनकनक्वतयोगो लढी, क्रिम्मे दुक्वेत अनु-भूतेन मन्त परिचतेत्वा रतनबस्म बस्मापेत्वा चोरानं घन दवा यथामुक्त गमिस्सामीति चिन्तेत्वा, चोरे आय-नेतीन-भो चोगा ! तुस्त्रे स किस्पत्याय गण्डित्थाति ?

धनत्थाय अस्मानि ।

सचे वो घनेन अरुषो खिप्प म बन्धना मोचेत्वा सीस नहापेत्वा अहतवस्थाति अच्छादेत्वा गन्धेहि विकिम्यापेत्वा पुष्फानि पिकन्धापेत्वा ठपेषानि ।

चोरा तस्म कय मुख्ता तथा अकसु । बाह्यणो तक्कत्तवोग ञग्वा मन्त परिवर्तत्वा आकास उल्लो-केसि । ताबदेव आकामा रतनानि पतिसु । चोरा त थन मकड्डिग्बा उत्तरामगेसु भण्डिक करवा पायिसु । बाह्य-णोपि तेसं पच्छतोव अगमासि ।

१. स्था०-वेदम्ब । २. सी०-चेतियरटठं ।

अय ते चोरे अञ्जे पञ्चसता घोरा गण्डिसु । किमत्य अम्हे गण्ड्याति च बुत्ते घनत्थायाति आहंसु । यदि बी घनेन अत्यो एतं काह्यण गण्डम एसो अकास उन्लोकेरवा घन बस्सापेसि । अम्हाकप्येत एतेनेच विक्रान्ति ।

चोरा चोरे विस्सञ्जेत्वा अम्हाकस्पि धनं देहीति ब्राह्मणं गण्हिस् ।

ब्राह्मणो—अह तुम्हाक धनं ददेव्यं धनवस्सापनकनक्षत्तयोगो पन इतो सवच्छरमत्यके भविस्सति । यदि वो धनेन अल्पो अधिवासेथ तदा धनवस्म वस्मापेस्सामीति आह ।

चोरा कुण्कित्वा-अस्त्रो हुरुब्बाह्मण ! [२१९] अञ्जेसं इदानेव धन वस्सापेत्वा अस्त्रे अञ्ज संबच्छारं अधिवादापेसीति-तिपन्नेन अमिना हाह्मणं डिमा खिन्त्व्वा मने छड्डवेवा वेनेन अनुवास्त्रिता तिह् कोरोहि सद्वि बण्डितवा ते सब्बेष मारेवा धनं आदाय पुन हे कोट्टासा हुत्वा अञ्जासञ्ज युज्जित्वा अनुव-तिवाति पुरिस्ततानि चार्तवा एतेन उपायेन यात्र है जना अवसिन्द्रा अद्देसु नाव अञ्चासञ्ज चार्ताव्य ।

एवं त पुरिससहस्स विनासं पत्तं । ते पन हे जना उपायेन त घन आहरित्वा एकस्मि गामसमीपे महन्दरुतने घनं पटिच्छायेत्वा एकी साम महेत्वा रक्तवतो निसीदि । एको तण्डुले गहेत्वा भत्त पत्रापेतु गाम पाविसि । ठोभो च नामेस विनासमूलमेबाति । धनसन्तिके निसिन्नो विन्तिसिन्तिस्म आगते इम घन हे कोट्ठाभो भविस्सिन्ति यकुनाहत आगतमत्तमेव लग्गेन पहरित्वा घातेत्वतिन । सो लग्ग सन्नस्हित्वा तस्स आगमन अनिकोक्तो निसीदि ।

इतरोपि विन्तींस -त धनं द्वं कोट्ठासा भविस्सन्ति यन्नुनाह भत्ते विन पित्वपित्वा त पुरिन भोजेत्वा जीवितक्वय पापेत्वा एककोव धनं गण्हेय्यन्ति । मो निट्ठिते भने सय भुञ्जित्वा सेमके दिस पविख-पित्वा त जादाय तस्य जगमानि ।

त भत्त ओनारेन्वा ठितमत्तमेव इतरो खग्मेन द्विधा त पटिच्छक्ने ठाने छड्डेत्वान च भन्न भुञ्जित्वा सयस्यि तत्येव जीवितसम्बर्ध पापुणि ।

एव त यन निस्साय सम्बंधि विनास पार्षुणम् । बोधिमलोधि स्रो एकाइडीहरूबयेन यन आदाय आगतो । ताँम ठाने आवर्षिय अदिस्वा विष्यक्षिणं नम यन दिस्या आवर्षियेन सम वचन अकरवा धन समाधित सिद्धस्ति सम्बंदि विनास परोहि भवितव्यन्ति सहामणेन गायासि । गण्डलनो आवर्षिय महामणे द्विधा छिन्न दिस्ता सम वचन अकरवा भागीति वाकति उद्धारिया विनास करते आवर्षिय सामणेन दिस्ता पुरतो गण्डलनो अवितव्यव्य पुरतो गण्डलनो जीवितक्यय पत्त पित्वा विन्तिम् स्म होहि उन पुरिससहस्त विनास पत्तं अर्ज्योह देविह मोर्रेडि भवितव्य । गिरि सर्थामन्तु न सिक्तस्ति कह्युक्तो ते गताति गण्डलनो सेस मन आदाय गहण्यद्वापिद्वन्यम् दिस्ता गण्डलनो अर्थामन्त्र न सिक्तस्ति कह्युक्तो ते गताति वण्डलनो तेस मन आदाय गहण्यद्वापिद्वन्यम् दिस्ता गण्डलनो अर्थामन्त्र स्वत्य पत्ता पत्ता पत्ता विचान क्रिया पत्ता पत्ता प्रता प्या प्रता प्

अनुपायेन यो अत्य इच्छति सो विहञ्जति । चेता हमिसु बेवटभ सम्बेते व्यसनमञ्ज्ञाति ।।

तत्य **सो विहश्जतीति** सो अनुपायेन अक्तनो अत्य बुड्ढि मृत्य इच्छामीति अकाले वायामं करोन्तो

१. स्या०-द्वे कोट्टासं। २. स्या०-अपविद्वं। ३.स्या०-पट्टयमाना।

पुणाको विहरूकाति किलमति सहाविनास पापुणानि । चेताति चेतियरहरुवामिनो चोरा । हाँन्सु चेवस्मन्ति चेदरुमम्त्तवसेन चेदरुमीति लदनाम बाह्यणं हर्निमु । सन्धे ते व्यसनमञ्जसमृति ते पि च सन्धे अनवसेमा अरुअ-मञ्ज चात्रयमाना व्यसनं अधिगोच्छिसु पटिलीमसृति ।

एवं बीधिसत्ती—यवा अन्हार्क आविष्यो अनुगायेन अन्हार्य परक्कम करोत्नी धर्न वस्सापेखा अत्तना जीवितस्वयं पत्ती अञ्मेषञ्ज पञ्चक्रीमः वत्तसतात विनानपण्डवयो जातो । एवसेव यो अञ्जीषि अनुगायेन अत्तनो अत्य देखाञ्चला वाद्याम करिताति सब्बो सो अत्तना च विनत्तिस्त्याति परेस च विन्यापण्डवयो भविस्ततीति—वनं अप्रदेखा देवतानु साधुकार ददमानानु इसाय गावाय धम्म देसेखा न धन उपायेन अत्तनी गेहुं आहोत्या दातादीति पञ्चाति करीत्तो यावतामुक्क ठ्या जीवित्रपरियोगाने समाप्य पुरमानो अनुमाति ।

सत्यापि न त्वं भिक्तु ! डदानेव दुव्यको, पुव्येषि दुव्यकोव, दुव्यक्ता पन महाविनास पत्तोति इमे धम्मदेसनं आहरित्या जातकं समोधानेनि । तदा वेदरभवाद्याणो दुव्यक्तिक्त्वु अहोसि, अन्तेवानिको पन अदमेवानि ।

वेद स्भ जातकं

तक्खत्तजातकः

नक्खलं पतिमानेन्तित इद सत्था जेतवने बिहरन्तो अञ्जातरं आजीवकं १ आरब्भ कथेसि ।

पञ्चपन्नबस्ध्

साबस्थिय किरेक कुरुधीतरं जनपदे एको कुरुपुत्तो अत्तनो तुत्तस्त बारेत्वा असुकदिवसे नाम गण्डि-स्मामीति दिवसं ठरेत्वा तर्मिम दिवसे सम्पत्ते अत्तनो कुरुपकं आजीवक पुष्कि-भन्ते । अञ्ज सय एक सगरु करिस्साम सोभनं नस्तो नक्सतन्ति ?

स्रो अयं मं पठम अपुण्छित्वाव दिवस ठपेत्वा इदानि पटिपुण्छति २२१]होतु, सिक्लापेन्सामि नन्ति कुज्जितवा-अज्ज असोमन नक्खतं । मा अज्ज मंगलं करित्य । सचे करिस्सथ महाविनासो भविन्सतीति आह ।

तिस्म कुले मनुस्मा तस्स सदृहित्वा त दिवस न गण्डियु । नगरवासिनो मञ्च मगर्लाकरिय कत्वा तेस अनासमन दिख्वा तेहि अञ्ज दिवसो ठिपतो नो च खो आगता अस्हाकस्य बहु खयं कस्म पत । कि नो तेहि ? अस्हाक धीतर अञ्जस्स दस्सामीति ययाकतेनेच मगलेन धीतर अञ्जस्स अदम् ।

इतरे पुनदिवसे आगन्त्वा देथ नो दारिकन्ति आहंसू।

अय ने सावित्यवासिनो जनपरवासिनो नाम नुम्हे छिन्नगहशनिका पापमनुस्मा । दिवनं ठोरना अवञ्जाय नागता । आगतमस्मेनेव पटिपच्छय । अम्हेहि अञ्जेसं दारिका दिन्नानि परिभानिम् । ने नेन्नि सर्द्धि कलह कत्वा दारिक अलभिरवा यथागतमस्मेनेव गता ।

तेनपि आजीवकेन तेम मनुस्सान मगलन्तरायकतभावो भिक्कृतमन्तरे पाकटो जातो । ने भिक्क् धम्मसभाय सम्निपतिता आवुसो ! आजीवकेन कुलम्म मगलन्तरायो करोति कथयमाना निर्मीदिस् ।

सत्या आगन्त्वा-काय नृत्य भिन्छवे ! एतर्राह कथाय सन्निमिन्नाति पुच्छि ?

ते-इमाय नामाति कर्थायम् ।

न भिक्कवे ! इदानेव आजीवको तस्स कुलस्स मगलन्तराय करोति । पृब्वेपि एस तेम कृष्टिसत्वा मगलन्तराय अकासि येवानि वत्वा अतीन आहरि-

अतीतबस्थ

अनीने बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रुज्ज कारेन्ते नगरबासिनो जनपदवासिन धीनर बारेन्वा दिवस ठपेन्वा अत्तनो कुलुपक आजीवक पुच्छिनु-भन्ने । अञ्ज अम्हाक एका मगलकिरिया, सोभनं नुल्वो नक्वर्तान्त ?

सो इमे अतानो शिवया दिवम ठभेन्वा इदानि म पुच्छन्तीति कुज्जिन्दा अज्य नेस मगळनगय करि-स्वाभीति चिन्तेत्वा-अज्ज अक्षोभन नक्खत । सचे करोध महाविनास पापुणिस्सथानि आह् । ते तस्म मर्दाहत्वा नागमिस् ।

जनपदवासिनो तेस अनागमन अस्वा–ते अञ्ज दिवस ठपेस्वापि न आगता किन्नो तेहीति, अञ्जे-सं घीतर अदमु ।

नगरवासिनो पुनदिवसे आगल्वा दारिकं यार्चिमु । जनपदवासिनो-नुम्हे नगरवासिनो नाम छिन्नहिरिका गहपतिका दिवस ठपेत्वा दारिक न गण्डित्य । मयं नुम्हाकं अनागमनभावेन अञ्जेस अदम्हाति । मय आजीवक पटिपुच्छित्वा नक्खल न सोभनन्ति नागता । देथ नो दारिकन्ति ।

अम्हेहि तुम्हाक अनागमनभावेन अञ्जेस दिल्ला। इदानि दिल्लदारिक कथं पुन आनेस्सामाति । एव तेस अञ्जासञ्ज कलह करोल्तेस एको नगरवासी पण्डितपरिसो एकेन कस्मेन जनपद गर्नो

एक तहु अञ्चानञ्ज करूह करात्मुख एको नगरवाद्या पाण्डरापुराती एकत कम्मन जनपर गता तेन नगरवातीन मय आजीवक पुण्डिच्या नवस्तरस्य असोजनभावेन नागताति कथेन्तान सुरवा-नवस्त्रनेत को अत्यो ! नन दारिकाय रुद्धभावीव नवस्त्रसित वस्त्रा इम गायमाह-

> नक्तत्त पतिमानेन्तं । अश्यो बाल उपच्चना । अत्यो अश्यस्य नक्ततं कि करिस्मन्ति तारकाति ॥

तस्य पतिमानेस्तरित ओलोकेस्तं । इदानि नक्कसं प्रविस्सिति इदानि अविस्तरीति आगमयमानं । अस्यो बाकं उपक्रवाति एवं नगरवासिकं बाल दान्तिहिळाग्रसंसाती अस्यो अनिकस्तो । अस्यो अस्यस्य सक्कः स्तित य अस्यं परियेत्रस्तो चरित सो पटिळढो अस्योव अस्ययन नक्कस नाम । कि किस्सिनित तारकाति इतरे पत्र आकाते तारका कि कन्मिस्ति है कराज्य साधिनतीनि अस्यो । नगरवामिनो कन्मह कन्या दार्षिकं अस्थि- स्वाव अगमम् ।

सत्वापि न भित्रसवे ! एस आजीवको इदानेवस्य कुलस्य मगलन्तराय करोति पुत्र्वेषि अकासि ये-वाति इमं भम्मदेसन आहरित्वा अनुसन्धि षटेत्वा जातकं समोध।नेसि । तदा आजीवकोएतरहि आजीवकोव अहोति । नानिषि कुलानि इदानि कुलानेव गाथ बत्वा ठितो, पण्डितपुरिमो पन अहमेवाति ।

नक्ल तजातक

१०, दुम्मेघजातकं

दुम्मेभानित इदं सत्था जेतबने बिहरन्तो लोकत्थवरियं आरक्भ कथेसि । सा द्वादसनिपाते महा-कण्डवातके आवीभविस्सति ।

अतीतदस्य

जतीते बाराणिय बहाइते रज्ज कारेन्ते बोधियत्तो तस्य रञ्जो जणमहेसिया कुण्डिस्य परिसान्य गण्डि । तस्य मात् कुण्डिसो निषकतस्य नायगङ्गविषये बहादत्तकुगारोति नामं अबसु । वो सोळ-'वेषस्युदेसिको हुत्वा तक्कसिकाय सिण्य उपाण्डित्या तिष्ण वेदानं पार गन्यवा अर्टारसम्म विज्जट्ठानानं निष्फ-ति पार्श्रण । अपस्य पिता ओपरञ्ज अदाति ।

तस्य समये बारायधिवासिनो देवतामगळिका होन्ति । देवत नमस्सन्ति । बहुअजेळकर्डुक्कुटसूक-रादयो विश्वदा नागप्पकारिंह पुष्फाण्येहि सेव महाजीहितेहि च बळिकमम करोलि । बोधिसत्तो विन्तीय-दस्यान सत्ता देवतामगळिका बहु पाणवस करोलि । नहाजने सेतृय्येन अधममस्मियेव निविन्ठो । अह पितृ अच्ययेन राज क्रीमुखा एकप्ति अक्रिक्सेस्वा उदायेवेव पाणवस कातु न दस्मामीति ।

सो एकदिवस रथमभिष्ठस्तृ तगरा निक्सत्तो अहस एकिस्म महाने वटल्लं महाजन मित्रपतित तिस्म रुक्के निक्सतदेवताय सन्तिके पुत्रधोनुसमधनायिसु य य इच्छित त त पत्येन्त 2 । सो रणा [२२३] ओरुस्ह तं रुक्क उपसक्तिस्ता गत्थपुप्लेहि पुत्रेत्वा उदकेन अभिसेक कत्वा रुक्क पदिस्मण कत्वा देवता-मंगलिको विस्न हत्वा देवतं नमस्सित्वा रच आरुष्ट नगरमेव पाविसि ।

ततो पर्ठाव इमिनाव नियामेन अन्तरन्तरे तत्य गन्तव देवतामगलिको विष पूज करोति । सो अपरेत समयेन पितु अच्चयेन रज्जे पतिर्ठाय चनस्सी अपतियो वज्जेत्वा दम राजयम्मे अकांपन्तो प्रमेशन रज्ज कारेत्तो चित्तीस-मद्ध मनोरचो मत्यक पत्तो । रज्जे पतिर्ठाठोस्मि । य पनाह पुन्वे एक अन्य चिन्नांव इसनि त मत्यकं पापेस्सामीति । अमच्चे च बाह्यणगृहपतिकादयो च सन्नियानापेत्वा आमन्तिम-जानाय भो ! मया केन कारणेन रज्ज पत्तित ?

न जानाम देवाति ।

अपि बोहं असुक नाम बटरुक्वं गन्धादीहि पूजेत्वा अञ्जलि पग्गहेत्वा नमस्समानो (दिट्ठपुब्बोतिर) आम देवाति ।

तदाह परचन अकासि-सचे रज्यं पापृणिस्सामि बिलकम्म ते करिस्सामीति तस्ता मे देवनाय आनुभावेन इद रज्ज लद्धं । इदानि तस्सा बलिकम्म करिस्सामि तुम्हें पपञ्चं अकस्वा खिप्प देवताय बलिकम्म मज्जेणाति ।

कि गण्हाम देवाति ?

भो । अहं देवनाय आयाचमानो ये च मम्हं रज्जे पाणातिपातादीनि पञ्चदुस्सीलकस्मानि दक्ष अकु-सलकस्मपचे समादाय वित्तस्तानि ते घातेत्वा अन्तब्दटिमंसलोहितादीहि बलिकस्मं करिस्सामीति आयाचि । तस्मा नुम्हे एव भेरि चरापेच, अम्हाक राजा उपराजकाले येव एव आयाचि सचाह रज्ज पापुणिस्सामि ये मे

१. रो ः-सोळसबस्सपदेसिको । २ स्या०-पटठेन्त ।

रज्जे हुस्सीला प्रविस्तालि ते सब्बे पातेत्वा बिलकम्मं करिस्सामीति । सो इदानि पञ्चिषणं दसिषणं दुस्सीलकम्म समादाय वसमानानं बुस्सीलानं सहस्य पातापेत्वा तेसं हृदयमंतादीति गाहापेत्वा देवताय बिलकम्मं कारेतुकामी —एवं नयरवासिनी जाननृति । एषञ्च पन बत्वा ये बानि इतो पट्टाय दुस्मीलकम्मं बेत्सस्तित तेतं सहस्य पानेत्वा यञ्ज' विजया आयाजनतो मुच्चिस्सामीति एनमध्यं पकानेत्तो इम गायमाह्-

बुन्नेषानं सहस्तेन यञ्जो मे उपयाचितो ।

इवानि को हं यजिस्सामि वह अवस्मिको जनोति।।

तल्य दुम्मेयानं सहस्तेनाति इदं कम्मं कानु बट्टित इद न बहतीति अजाननभावेन दसमु वा पन अकुसनकम्मपरेषु समादाय चत्तनभावेन दुट्टा मेथा एतैसन्ति दुम्मेथा । तैस दुम्मेथान निपञ्चानं बालपुग-जानं गणित्वा गहिनेन सहस्तेन । बञ्जो ने जयसावित्तीति मया देवतं उपसंकित्तित्वा एवं वितस्तामिति दञ्जो पाचितो । इदानि को हं यानस्तामिति सो अदं इदानि आयायनेन रञ्जम पटिलद्धता दयानि यजिस्सामिति काराण ? इदानिहि बहु अधीमको जनो [२२४] तस्मा इदानेव नं गहैत्वा बिलकम्म करिस्सामीति ।

अनच्या बोधिसत्तस्स बचन मुख्या साधु देशति द्वादमयोजनिक वाराणनीनगरे मेरि चरापेमुं। मंरिया आण मुख्या एकिंग दुस्तीनकस्म समादाय ठिलो एको पुरिलोपि नाहोपि। इति याव बोधिसन्तो रुक्त कारेसि ताव एकपुमालोपि पञ्चमु वा दसमु वा दुस्तीनकस्मेमु एकिंग कस्म करेन्तो न पञ्च्याधियर। एवं सोधिसतो एकपुमालीस्म अनिकलेन्तो सकलट्डवर्सायरो सील रक्क्याप्त्य सामिय दानादीति पुञ्चानि करिरवा जीवितपरिदासानो अत्ततो परित आदाय देवनगरं पुरेस्तो अगमानि ।

सत्थापि न भिक्सवे । नथानतो इदानेव लोकस्म अत्य चरति पुरुवेपि चरि येवाति इस धस्पदेशन आहरिन्दा अनुसन्धि घटेन्दा जानक समोघानेसि । नदा परिना बुद्धपरिसा अहेसु । बाराणसीराजा पन अहसे-वानि ।

बुम्मेध जातकं

अत्यकामवरगो पञ्चमो पठमपण्णासको

६ आसिसवग्गवण्णना

१. महासीलवजातकं

आसिसेचेव पुरिसोति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो ओस्सट्ठविरियं भिक्खुं आरब्भ कथेसि ।

पञ्चपञ्चवस्य

तं हि सत्या सच्च किर त्व भिक्तु ! ओस्सट्ठिविरियोति पुण्छि । आम भन्तेति च बुत्ते-कस्मा त्व भिक्तु ! एवक्षे निय्यानिकसासने पब्बजित्वा विरिय ओस्सप्तित्र ? पुत्वे पण्डिना रज्या परिहायित्वापि अत्तनो विरिये ठतवाव नट्ठिप्प यस पून उत्पार्टीयसूति बत्वा अतीत आहरि-

अतीतबस्य

अतीते बाराणियं ब्रह्मदते रज्जं कारेन्त्रे बौधितत्तो रज्जों अगमहेतिया कृष्णिर्धस निक्वत्तो । तस्य नामतहणदिवते सीलवकुमारोति नामं अकंतु । मो मोळसवस्मपदेमिकोव सम्बस्तिप्येमु निप्कत्ति पत्वा अपरभागे पितु अक्चयेन रज्जे पतिद्िनों महासीलवराजा नाम बहासि धीमकां धम्मराजा । सो नगरस्स बहुदु ढारेषु चतस्यो, मज्जों एक निवेननदार एकिन्छ वानसालयो कारेल्या कपणढिकान वार्चेति सील रक्बति उपोस्थकममं करोति । बन्तिमोमानुहस्यमप्या अके निसिक्ष पुत्त विय सब्बसत्ते परिजोमयमानो धमेन रक्बं कारीत । तस्सेको अनच्चो अनोपुर पद्मित्या अपरमागे पाकटो जातो । अमच्चा रञ्जो आरोपेस् ।

राजा परिगण्हत्तो असता[२२५]पञ्चक्यतो ञत्या त अमञ्च पक्ष्कोसापेत्वा-अन्धवाल! अयुत्त ने कत न त्व समविजिते वसितुं अरहरिंग, असनो धनं च पुसदारे च गहेत्वा अञ्जाल याहीति रट्ठा पञ्चाजेसि ।

सो कासिरट्टं अतिकास्म कोसलराजान उपट्ठहतो अनुक्कमेन रञ्जो अध्मलरे विस्सासिको जातो । सो एकदिवस कोसलराजान आह-देव ! बाराणसीरज्ज नाम निम्मक्लिकमधुपटलमदिस राजा अतिमुदुको अप्येनेव बलबाहनेन सक्का बाराणसिरज्ज गण्डितांता ।

राजा तस्स वचनं सुत्वा बाराणसीरञ्ज नाम महा अयं च अपनेव बलबाहनेन सक्का गण्हतृन्ति आह । किमुलो पयनकचोरो सियानि चिन्तेत्वा–पयुत्तकोमि मञ्चेनि आह ।

नाह देव ? पयुत्तको, सच्चमेव वदामि । सब मे न मह्हव मनुस्से पेसेत्वा पच्चन्तगाम हनापथ । त मनुस्से गहेत्वा अननो सन्तिक नीने चोरान धन दत्वा विस्सञ्जेस्मतीति ।

राजा अय अतिबिय सुरो हत्वा कथेति बीमिबस्सामि ताबाति-अत्तनो पुरिसे पेसेत्वा पच्चलगाम हरापेसि । ते चोरे गहेत्वा बारागसीरच्यो दस्सेमु । राजा ते दिस्वा-ताता ! कस्मा गाम हनयाति पुष्छि । जीविनुं असक्कोत्ता देवाति ।

अथ करमा मम सन्तिक न आगमित्य ? इतो दानि पट्ठाब एवक्य माकरित्याति तेसं धन दत्वा विस्तवजीता । ते गत्वा कोसफरज्जो तो पर्वात आरोकेषु । सो एतकेनापि मन् अविसहत्तो पुन मज्को जनपद हनापेंचि । तेषि चौरे राजा नथेव धनं दत्वा विस्तवजीति । सो एतकेनापि अगन्त्वा पुन पेमेत्वा अन्तर्त्वाधिय विख्नमापेति । राजा तैस्तिम् चौरान धन रत्वा विस्तवजीति सेव । तदा कोसनराजा अनिविय धन्मिको राजाति अत्वा बाराणसीरुज्जा गहेस्सामोति वल्वाहुन आदाय निष्यासि । तद्या पन बाराणसीरञ्जो मतत्रारणेषि अभिमुख आगच्छन्ते अनिवसनयम्मा, असनिवाषि सीसे पनित्या असनसम्माना सील्यमहाराजस्स र्लयासित सक्कज्ञम्ब्रीयो रज्ज गहेतु समत्या सहस्स-सप्ता अमेज्जबरदूरमहायोषा होत्ति । केमल्याना आगच्छतीति मुखा राजान उपसक्तिस्ता-देव ! कोसल्याना किर साराणमीरज्जे गष्टिस्मामीति आगच्छति । गच्छाम सय अम्हाक रज्जसीमं अनोक्कल्य-सप्ताचित परिवाण परिवाण स्वाचित स्वाच स्वाचित स्वाचित स्वाचित स्वाचित स्वाचित स्वाच स्वाचित स्वाच स्वाचित स्वाच स्वाचित स्वाच स्वाचित स्वाचित स्वाच स्वाचित स्वाच स्वाचित स्वाच स्वाच स्वाच स्वाच स्वाचित स्वाच स्व

ताता ! म निस्साय अञ्जेसं किल्पनिकञ्च नत्थि । रञ्जित्यका रञ्ज गष्टन्तु । मा गमित्याति निवारीम ।

कोसलराजा रज्जसीम अतिश्किमत्वा जनपदमज्ज गाविस । असच्या पुनिष राजानः उपसक्तमित्वा तथेव वदिसु । राजा पुरिमनयेनेव निवारीन । कोसलराजा बाहनगरेटम्बा रञ्जवा देनु युद्ध वाति सीलव[२२६] महाराजस्य सामन पेसेसि ।राजा त सुलः नित्य सया सद्धि युद्ध, रञ्ज गण्हातृनि पटिसासन पेसेसि ।

पुनिष अमन्त्रा राजान उपसक्तिमत्त्रा-देव । न मयं कोसल्टरूको नगर पविसितु देम, बहिनगरे येव न पोचेत्वा गण्डामाति आहस् ।

राजा पुरिमनयेनेव निवारेत्वा नगरङ्गरानि अवापुरापेत्वा सद्धि अमच्चसहस्येन महातले पत्लक-मञ्जे निसीदि ।

कोमलराजा महन्तेन बलवाह्तेन बाराणीन पाबिनि । मो एकीम्य गटिसन् अपस्मन्तो रञ्जो निवेमनजार गल्दा अमण्डापणिद्वातो अपस्कादारे निवेमने अल्कनपटियस महातल आम्ब्रह निर्मिष्ठ निरप-गध मोलवमहाराजान सर्वि अमण्डमहस्मेन गण्डापेद्या गण्डव इसे राजान अम्ब्रह पच्छावाहे । गाल्हहत्वम्बन विभावा आमण्डामानं नेत्वा गळप्पमाणं आवाटे लाणित्वा यथा ग्रकीप हाथ उन्धिपतुं न नक्कीति एवं पसुं गरिवापित्वा जिस्ताप्य । र्गन मिराग्टा आगल्या गुनेन कानक्वत्वमक करिस्मानगीनि आह ।

मनुष्या चोररञ्जी आण मुखा राजान गाँव अमन्चेहि पच्छाबाह गाळ्हवस्यन बस्थित्व। निक्क-भिन्नु। निष्मिण काले मीव्यवमहाराजा चौररञ्जो आधानमनिष्य नाकामि । नेपृषि अमन्बेषु एव बीत्यत्वा नीयमानेमु एकांपि रञ्जो वचन भिरित्तु मामक्यो नाम नाहोसि । एव मुविनीना किरस्म परिष्या। अब ते राजपुरिया मामच्य सीलवराजानं आमक्युमान नेत्वा राळ्लमाणे आवादे विण्या सीलवर्षाराजानं मन्जे उभोन् प्रस्मेनु मेमामच्येनि एव सम्बेषि आवादे जोनारेत्वा पमु आकिरित्वा घर्म अकिरेट्वा बराममु। मीलवर्षा आवादे आमलेत्वा चौरराञ्जो उपरि कोष बरुव्या मेमचेव नातानि जोवदि ।

अय अङ्डरणसमये मनुस्मम साहित्सामानि सिनाला है आर्गामनु । ते दिश्वा राजा च अमञ्चा च
गरूपहारितंत्र बर्ह्सक्यु (सिनाला भीता एकासियु । वे निवित्तवा ओकोक्तेन्ता पण्डवी कस्तमि अनातमभाव
कावा पुन पण्चाणीममु । इनरेषि तर्यवे नष्टमक्तु । एव याव निष्य पण्डापित्वा पुन ओकोक्तेन्तो तेतु एकस्माणि
अनाममनभाव काव्या वाक्राप्पता एते भविस्सन्तीति मृत्र हुन्धा निवित्त्या पुन तेतु मुद्द करोन्तेनुषित न पण्डापितु ।
और्ठकिमाणो राजान उपलिक्छ । मेमा मेमान सनिक्त अगममु । उपायदुन्तणे राजा नस्म अतानी सन्तिक
आगनभाव काव्या इमितु ओकाम देन्तो विद्या गीव उस्त्रिपद्धा त गीवाय उसमान हनुकर्ठिकेन आकर्वृद्धित्व।
यन्ते पत्त्वपित्वा विद्या गाळकुक गण्डि । नामवकेन रक्त्रणा इनुकर्ट्यकेन आकर्व्यविद्या गीवाय दछ्ड गहितसियाको अनान मोचेतु (२२७) असक्कोन्तो सम्यणस्मराजिनो महावित्त्व विर्त्ति । अवसेसमिताला तस्त्र ते अर्दस्तर सुत्वा एकेन पुरिसेन रहितो भविस्तरीति असम्बे उपस्वक्रीनु असक्कोन्तो सरणस्मराजिन्त सब्से पण्डा

१.स्या०-पच्छाबाहु । २ स्या०-सिङ्गाला ।

विषु । रञ्जो हनुकर्दार्कन बन्ते पिक्सिपत्वा बिय बह्ह कर्त्ता गहितिसगाले अपरापरं सञ्चरलो पमु सिधि-ला अहोसि । सोपि सिमालो मरणमयमीतो चनुहि गार्देहि रञ्जो उपरिषमापे पंसु अपन्तृहि । राजा पसुनो त्रियिकमाय ब्रात्सा सिमाले विस्त्रज्ञेत्सा नागवको सामसम्पन्नो अपरापर संचरत्तो उमो हत्ये उन्निसीपता आबाटमुलबर्दाट्यं ओकृत्म बार्ताच्छक्रस्तवाहाको विष निस्किम्स्य ितो अमन्ते अस्सासेत्वा पसु विश्वहित्ता सब्ये उद्घरित्या अमन्त्रपरित्तो आमकस्ताने अट्ठांसि ।

तिस्म समये बनुत्सा एकं मतमनुत्सं आमकसुताने छड्डेला डिम यक्कान सीमलिस्काय छड्डेसु । ते यक्का त मतमनुत्सं मानेनु अवकोला-मय समे भाजेतु न सक्कोम अयं सीलवरावा परिमको एव तो भा-जेला दस्कति एतस्य सीलक राष्ट्रामाति-न मतमनुत्स पारे गहेला आकड्डन्ता रूको सिलकं गल्बा-देव ! अन्द्राक हम माजेला देवीति आहसु ।

भो यक्का ! अह इस तुम्हारूं भाजेत्वा दरेव्यं, अपरिमुद्धो पर्नान्त् नहापिस्सामि तावाति । यक्का चोररञ्जो ठपितवासितउदक अतनो आनुभावेन आहरित्वा रञ्जो नहातत्वाय अदमु । नहात्वा ठितस्स संहरित्वा ठपित चोररञ्जो साटकं आहरित्वा अदमु । ते तिम्बास्तित्वा ठितस्स चतुजातिमन्य-समूम आहरित्वा अदमु । नम्ये विलिम्पत्वा ठितस्म मुक्षणसमुग्ने मणिताज्वस्मु ठपितानि नानागुण्कानि आह-रित्वा अदमु । प्रकानि पिलिम्बवा ठिनकाले-अन्य कि करोमानि प्रक्रिम्

राजा अत्तनो छातकाकारं दस्सेसि ।

ते गन्त्वा चोररञ्जो सम्पादित नानगरसभोतन आहरित्वा अदसु । राजा नहानानृत्वित्तो भ मध्यतपदाधितो नानगरसभोतन सूञ्जि । यक्का चौररञ्जो अदिवासितपानीय पुवण्याभनानेत्व पुवण्या-सर्कनिष सद्भि आहरित्तु । अपस्य पानीय पिवित्वा मुल दिक्कालिया हन्ये थोवितकाले चौररञ्जो सम्पादित पञ्चसुत्तिमकपरिवास नम्बले आहरित्वा अरमु । त लावित्वा जिनसर्थ-अञ्जास करोमान पृथ्वित्र ।

गत्त्वा चोररञ्जो उस्सीसके निक्खित्त मगलखम्म आहरयाति ।

ते तिथ्य गन्ता आहरिसु । राजा लग्ग गहेत्वा न मतमनुस्न जजुरू ठपापेत्वा मत्यकमञ्जे आसता पहारित्वा हे कोट्टामें करवा हिन्स यक्कानं समिक्षभत्तमेव वित्रतिग्वा अदागि । देग्वा च पन लग्ग योगित्वा राज्यदित्वा अट्डामि । अय ते यक्क्या मनुस्समस बादित्वा मुहिना हृत्वा नुट्टिबना-[२२८] अञ्ज ते महाराज ¹ कि करोमानि पुष्किषु ।

नेनहि तुम्हे अन्तर्गे आनुभावेन मः बोररञ्जो सिरिंगङ्भे ओतारेथ । इमे च असच्चे असनो अन्तर्गे गेहे पतिह्ठापेषानि ।

ते साधुदेवानि सम्पटिच्छित्वा तथा अकसु।

र्नास्म समये चोगराजा अलकनीर्वाराक्षे विरिम्बक्तिपुट्टे निषक्षे निहाबनि । राजा तस्म पमनस्स निहासनस्स समानलेन दर र रहीं । मो भीती र्वाज्ञस्या दीपालोकेन सीलक्बाझाराज्ञान सल्वातित्वा समना बुट्टाय सर्वि अपट्टेला किर्ता राजना आहम्म्बाराज्ञ । एकस्पाय र्गन्तमा गहिलास्क्वे पिहतद्वारे भक्ते आरम्बयनुस्सेहि निरोकामे ठाने बणा मन्नास्कृत्वा अलकत्वाद्यसो कव नाम रव हम सस्तरिष्ट्ट आरातीति ?

राजा अत्तनो आगमनाकारं सब्बं वित्थारनो कथेसि ।

त मृत्वा चोरराजा सर्विसमानसो-महाराज । अह मनुस्मभूनीप समानो तुम्हाक गुण न आनासि । परेस कोहिनसम्बादकेहि पन कक्काळेहि फस्तेहि धक्केहि नव गुणा ञाना । न दानाह नरिस्द । एक्स्पे सील-१ सी०--महारवानुकिसो । २ रो०--पञ्चपुराधिकसरिदार । ३. सी०-धिति । सम्पन्ने तथि दुव्यिस्तामीति-सामं आदाय समयं करवा राजान क्षमापेत्वा महासवने निपज्वापेत्वा अत्तनो सुद्-कमञ्चके निपज्जित्वा पराताय रतिया उद्धिते मुर्ग्य भेरिञ्चरापेत्वा सब्बसेनियो च अमण्डकाद्वाणगङ्गतिके च साम्रप्रतापेत्वा तेस पुरतो आकासे पुण्णचन्य उनिकपत्ती विद्य सीलवरञ्जी गुणं करेत्वा परिसम्पन्ने येव पुन राजान समापेत्वा रञ्ज परिज्जापेत्वा हतो पर्द्याव तुम्हाक उप्पन्नो चोलपहुंचो महः भारो मया गहितार-क्वा तुम्हाक रुप्ज कोरोपाति क्वा पेषुञ्जाकारस्य आण कर्वा अननो बलबाहन आदाय ककर्ट्टनेव गते।

सीलवमहाराजापि को अलकतपटियतो सेतच्छत्तमः हेट्टा सरभपादके कञ्चनपरुचके निसिष्ठों अत्तनो सम्पत्ति ओछोकेरवा अयं च पवरूपा मम्पत्ति अभववसहस्सास च जीवतपटिलामो मिष विरिध अकरो-ले निकित्व अमंदिस्म, विरिधवनेत्र पनाह नट्ट च इम यस पटिलीम, अमच्चहहस्सस्म च जीवितदत्त अदाित, आसाच्छेट वन अकरवा विरियमेव कसस्ब, कतविरियस्म हि फल नाम एव समिज्ञननीति चिन्तेत्वा उदानवसेन इमं गायमाह-

आसिसेथेव पुरिसो न 'त्राव्यव्येय पण्डितो ।

पस्सामि बोह असानं यथा इष्टि तथा अहूति ॥

तस्य आसिसेचेबाति एवाह विरिय आरभन्तो इमाहा दुक्ला मुञ्ज्यस्तामीति अत्तनो विरियवले आस करोयेव । म निश्चित्येय्य पिष्टकोति पाण्डतो उपायकुल्लो युत्तरुकोतं विरिय करोत्तो अह हमस्य सिर्यस्य फल न लिभस्सामीति न उक्कहृदेय्य, आसान्वेदकम्म न करेग्यानि अत्यो । सस्याि बहु समान्ति एव्य भौति निपानमत्तं । अह अन्त्र अतान परसामि । यथा द्वांष्ठ तथा अहृति अह हि आवादे निवातो तम्हा दुक्का मुञ्ज्यिला पुत्र अतानो रज्जमम्यति इंक्डि सो अह इसं मर्याति पन अनान पन्मापि यपेवाह पुत्र्वे इंक्ष्य तयेव मे अत्ता जतानित । एव बोधिवानो अहो वत भो । मीलमप्त्रान विरियक्त नाम मिम्लानीति इमाय गथाय उदान उदानेत्या यावजीवं पुत्रवानि करित्वा यवाकम्म गतो ।

मत्यापि इम धम्मदेवन आहरित्या सच्चानि पकासेनि । सच्चपित्योसाने ओस्सट्ठिविस्यो भिनस् अरहने पतिट्ठानि । मत्या अनुसन्धि घटेत्या जातक ममोघानेसि । तदा पदुट्ठामच्ची देवदत्तो अहोसि, अमच्च-महस्स बद्धपत्मि, सील्वसहाराजा पन अहमेवाति ।

महासीलवजातक

२. चूळजनकजातकं

वायमेथेव पृरिक्षीत इदं सत्था जेतवने विहरन्तो ओस्मट्ठिवरियमेव आरब्भ कथेति । तस्य य व त्तन्वं तं सम्बं महाजनकजातके आवीभविस्सति । जनकराजा पन सेतन्क्रतस्य हेट्ठा निसिन्नो इस गाथसाह—

वायमेखेव पुरिसो न निध्यन्वेय्य पण्डितो । पस्सामि बोहं अलानं उदका चलमुब्भतन्ति ॥

तत्य **वायमेघेवा**ति वायामं करोथेव । उदका थलमुक्भतिन्त **उदक**तो थल**मृतिन्य** वले पतिद्**ठित** अत्तान पस्सामीति । इघापि ओस्सट्ठविरियो भिक्कु अरहनपत्तो । जनकराजा सम्मासम्बुद्धोव अहोसीति ।

ब्लजनकजातकं

३, पुण्णपातिजातकं

तत्य पुण्णपानियोति इद सत्था जेतवने विहरन्तो विसवार्राण आग्व्म कथेमि ।

पञ्जुपन्नवस्थु

एक समय सावित्यय मुरायुत्ता सन्निपनित्वा मन्तियसु—मुरामूलं नो लीण कहरनु क्षो लिभस्सामाति । अयेको कन्यलन्दत्तो आह–मा चिन्तियत्य, अत्येको उपायोति ।

कतरुपायो नामानि ?

अनायधिण्डनो अतृष्ठमृद्धिः विक्रभोत्वा सट्टमाटकनिक्यो गर्युपट्ठात गच्छति, सय सुरा-पातिय विस्वजीकरणसेस्वज्य पिक्कपित्वा आपाण सत्र्जेक्या निमीदित्वा अनायधिण्डकस्स आसस्तकार्णे हतो एहि महासेन्द्रीति पक्कोमित्वा त सुर पायेत्वा विसन्जीभूतस्म अर्गुलमृद्धिका च साटके च गहेत्वा सूरासूक करिस्मामाति ।

ने साधूनि राम्पर्टाच्छत्वा तथा कत्वा सेट्ठिम्स आगमनकाले पटिसम्ग गन्वा-सामि ! इती ताव आगच्छथ अस अस्त्राक सन्तिके अनिमनापा मुरा, थोक पिविन्वा गच्छथानि विदसु ।

सोनापन्नो अन्यिमावको कि मुर पिविस्मित । अनित्यको ममानोपि पन प्रेने युने परिगण्डिस्सामीति नेमं आपाणमूमि मन्त्रा तेन किरिय ओलोकेन्त्रा अय सुरा इसेहि इमिना नाम कारणेन योजिनाति प्रत्या इतो-दानि पट्टाय इसे इतो पलापेस्सामीति विस्तेत्वा आह्-अर्ग इत्तिहा । गुस्ते सुरापातिय भेमण्य पिक्सिपता आपनागले पायेत्वा विसन्ध्री कत्वा विव्हिस्थमामाति आपाणमण्डल मन्त्रत्वा निर्माश केन्त्र इस सुर वर्णेष । एकोपि वो उनिक्सिपता पिवित् न उत्सन्नरित । सर्व अस अयोजिनका अस्म नुस्ते व पिवेय्यापाति ।

ने घुने तब्बेन्या ननो पळापेत्या अननो गेट गस्त्वा घुनेटि कनकारणः तथागनस्य आरोचेस्मामीति अनवन गन्त्या सन्य आरोचेसि ।

सत्था—न इदानि ताव गहपति ! ते धुना त वञ्चेतृकामा जाता पृथ्वे पन पण्डितेपि वञ्चेतृकामा अहेम्निल वत्वा तेन याचितो अतीत आहरिं—

अनीतवस्य

अतीतं बाराणसिय ब्रह्मदत्तं रश्ज कारेन्तं बीधमत्तां बारणसीमंट्ठि अहीमि । नदापंते धुना एव-मेव सम्मत्तेत्वा मुर् योजेत्वा बाराणसीमंट्ठिस्स आगयनकाले पटिममा गन्दा एवमेव कथियमु । सेट्ठि अतस्वि-को हुत्वा ते पीटपष्टितृकामां गन्दा तेन किरिया ओलीकेत्वा इदशाम एते कातृकामा पलापेस्सामि ते दतीति चिन्तेत्वा एवसाह-मौ धुता ! भूर पिवत्वा राजबुळ गन्तु नाम न युत्त । राजान दिस्या पुन आगच्छन्तो जानिस्मामि । पुम्हे इथेव निमीदथानि ।

राजुपट्ठान गन्त्वा पच्चागञ्छ । धुना–इतो एय सामीति ।

सो तत्य गन्दा भेसः त्रयांत्रिता पातियो ओलोकेरवा एवसाह-भो धृता ' वुस्हाक किरिया सरह न रुच्चति तुम्हाक गुरापातियो यथापूरिताद ठिना, तुम्हे केवल मुर वच्चेय न पन पिवय । म बाय मनापा अस्स तुम्हीप पिकेय्याय इमाय पन विससयुताय अविनव्यन्ति तेम मनोरय भिन्दन्तो इस गाथमाह-

१. स्या० – सुराचाहियं ।

तयेव पुण्णयातियो अञ्जायं वत्तते कथा । आकारकेन जानामि न चायं भहिका ' सुराति ।।

तस्य सम्बाति यथा मया गमनकाले दिद्ठा इदानिषि इमा सुरागतियो तथेव पुण्णा। अञ्जासं बत्तते कवाति या अयं नुम्हाकं सुगवण्णनक्या वत्तति, ता अञ्जाव अनुता अतम्का यदि हि एता सुरा मनापा अस्स तुम्हीप विवेद्याव उपद्वशातियो अवस्तिस्त्रेय्य। तुम्हाक प्रग एकेनापि सुरा न पीता। आकारकेन जानामौति तस्मा इमिना कारणेन जानामि। न चावं अविका चुराति नेव अय महिका सुरा, विसयोजिताय एताय भवित-व्यन्ति। सुर्ते गहेला यथान पुत एवक्यं करोन्ति तथा ते तज्जेत्वा विस्तरजीस। सो यावजीवं दानादीनि पुञ्जानि करित्वा यथाकम्म गतो।

सत्या इमं धम्मदेसन आहरित्वा जातकं समोघानेसि । तदा धुत्ता एतरिह धुत्ता बाराणसीसेट्ठि पन अहन्तेन समयेनाति ।

पुण्णपातिज्ञातकं

थ्र. फलजातक

नायं वक्ती दुराकहोति ६६ सत्या जेतवने बिहरन्तो एक फलकुसल उपासकं आरक्स कथेसि। पक्तप्रवास्य

एको किर सावित्यवासी कुटुम्बिको बृद्धपमुखं संघं निमन्तेत्वा असतो आरामे निसीदापेत्वा यागुष-उजक दत्वा उय्यानपाल आणापेसि-भिक्खृहि सद्धि उय्याने विचरित्वा अय्यान अम्बादीनि नानाफलानि देहीति।

सो साधूति सम्पटिच्छित्वा निक्क्सघं आदाय उम्याने विचरन्तो रुक्क ओलोकेत्वाव एतं फल आम एत न सुपक्क एत सुपक्किन्ति जानाति । य सो बर्दान तं तथेव होति ।

भिक्क् गन्त्वा नथागतस्य आराचेमु -भग्ने । अय उथ्यानपालो फलकूमलो । भूमिय ठितोब रुक्क ओलोकेत्वा एन फल आम एन न मुपक्क एन मुपक्किन जानानि । य मो बदति त तथेव होतीति ।

मत्या⊸न भित्रववे । अयमेव उथ्यानपालो फलकुमजो पुब्बे पन पश्टितापि फलकुमला अहेमुन्ति वरवा अतीत आहरि⊸

अतीतबस्य

अनीनं बागणिय ब्रह्मारने राज्य कारेने बोधियनी मध्यवाहकुके निस्त्रीनत्वा वयणतो पञ्चिह् सक्टवनेहि वर्षणाज करोत्नी एकस्मि कार्ट महावतनिष्ठदिव पत्ता अर्टीवमूलं द्रस्ता सत्त्रे जनुम्से सहिष्याना-पेरबा--इमिरना अर्टीवया विश्वकता जाम होन्ति विश्वपत्तानि विसयुष्णानि विस्मकत्तानि विस्मक्षानि होस्ति यव । पुढेने मुक्टेहि अर्थीरभून य निश्चिपन वा पूर्ण वा पत्र वा म अन्तर्याकृष्टका मा स्नादित्यानि आहु ।

ते साधूति सम्पटिच्छित्वा अटवि ओतरिसु ।

अर्थावम् वे च एकं स्म गामदारे किम्कलकाची नाम जीत्य । तस्य खन्यसाखायनासपुष्ककलानि मत्यानि अस्वसहिमानेव होन्ति, न केवल वरणसण्डानती गन्धरसेहिपिस्स आसपकानि फलानि अस्वकल-मरिमानेव । खादिनानि पन हलाहलविस विच त खण येव जीवितमस्य पापेन्ति ।

पुरतो गच्छता एकडचे जोलपुरिसा [२३२] अग्वरक्को अवस्ति सञ्जाय फलाति बाहितु । एकडचे सन्यवाह पुच्छित्वा व कारिस्मामाति हत्येत गहेत्वा अर्टजु । ते मत्यवाहे आगते-अय्य ! इमाति अम्ब-फलाति खादामाति पुच्छितु ।

बोधिमनो नाय अस्बरुक्वोनि जत्वा-किस्फलरुक्क्वो नामेम नायं अम्बरुक्को मा लादित्यानि-बा-रेत्वा ये खादिम नीप बमापेत्वा चनुमधरं पायेत्वा अयोगे अकामि ।

पुरुषे पन दर्मान्य रुक्तमार्थ मनुस्सा निवास करपेत्वा अम्बक्तशानीति इमानि विसक्तशानि स्वादित्वा अवितनस्वय पापुणनि । पुन दिवसे गामवासिनो निक्तमित्वा मनमनुम्से दिन्वा पारे गण्डित्वा पटिच्छप्रट्ठाने छंड्डेस्वा मकटीह सद्धि येव सब्बन्तेस सन्तरूक पहेत्वा गच्छिनि ।

ने त दिवसाम्य अरुण्गमनकाले येव मस्हे बलिबद्दा भविस्मन्ति मस्ह मकट मस्ह भण्डन्ति वेगेन त रुक्तमूल गन्त्वा मनुस्मे निरोगे दिस्बा-कथ तुम्हे इम रुक्त नाय अम्बरुक्तोति जानित्याति पृण्डिमु ।

> ते मय न जानाम सत्थवाहजेट्ठको नो जानातीति आहसु । मनस्या बोधिसल पुन्छिम्-पण्डित, किन्नि कत्वा त्व इमस्स रुक्खस्य अनस्वरुक्खभाव अञ्जासीति ?

सो द्वीहि कारणेहि अञ्जासिन्ति बत्वा इम गाथमाह-

नायं रक्को दुराकहो मपि गामतो आरका । आकारकेन जानामि नायं साधकको दुमीति ।।

तत्व नायं वक्को दुराक्टोति अय विचयनको न दुन्कावही होति । उन्किपारवा ठांपतनित्सीण विय सुजेन जारोहिनुं सक्काति वदति । निष् गामतो जारकाति गामतो दूरे ठितोपि न होति गामदारे ठितो येवाति योपित । आकारके जानामीति इमिना दुन्चिनं कारणेनाई इमं केस्क जानामि किस्ति ! नायं सादकको दुन्नोति सन्दे हि अयं मपुराकले अन्वरुक्तो वस्ति । एव अहु ज्ञाकहे अविदूरे ठिते एतस्मि एकप्पि फल न तिद्ठेया, कळ्वादकमनुस्तेहि निष्य परिवृतीक सस्त । एव अहु अत्तनो जाणेन परिक्थित्ववा इमस्स विस्वस्वमाव अञ्चादिमित महाजनस्य धम्मं देशेवा सीविषामा गरते ।

सत्वापि एवं भिक्सवे ! पुब्वे पण्डिता फलकुसला अहेसुन्ति इम धम्मदेसन आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातक समोधानेसि । तदा परिसा बुढपरिसा अहेसु सत्यवाहो पन अहमेवाति ।

फलजातक

५. पश्चायुधजातकं

यो अलीनेन विस्तेनाति इद सत्था जेतवने विहरन्तो एकं ओस्सट्ठविरिय भिक्खू आरब्भ कथेसि ।

पञ्जूपञ्चल्यु

त हि भिक्क सत्या आमन्तेत्वा-सच्च किर त्व भिक्क ! ओस्सट्ठविरियोति पुच्छित्वा [२१०] सच्च भगवाति बुत्ते-भिक्क ! पुब्वे पण्डिता विरिधं कातु युत्तट्ठाने विरिध कत्था राज्यसम्पत्ति पापुणिसूति बन्वा अतीत आहरि--

अतीसवत्यु

अतीतं बाराणसिय बहादत्ते "उन कारेन्ते बोधिसतो तन्त्र रञ्जो अगमहेसिया कुष्ण्विस निव्यत्ति । तस्म नामतृष्णिदवे अट्ठतत् ब्राह्मणे सब्बकासीहं सन्तप्तेत्वा उन्वत्यानि परिपुष्टिमु । ज्यवणकुसला ब्राह्मणा लक्ष्यणसम्पत्ति दिन्दा पुरुवसम्पत्नो महाराज । कुमारो तुन्हाक अव्ययेन रज्ज पापुणिस्सति पञ्चा-वृत्रकम्म पञ्जानो पाकटो जम्बुरीपे अपापुरिसो भविन्सनीनि व्याकरिमु । ब्रह्मणान वयन सुत्वा कुमारस्स नाम पण्डाना पञ्चावयुक्तमारीति नाम अकनु ।

> अथ न विञ्जुत पत्वा सोळसबस्सप्पदेसे ठित राजा आमन्तेत्वा-तात ! सिप्प उम्मण्हाहीति आह । कस्स मन्तिके उम्मण्हामि देवाति ?

गच्छ तात ! गन्धाररह्ठे तक्किमिलानगरे दिसापामीक्खस्स आवरियम्स सन्तिके सिए। उष्मण्ड, इदमम्म आवरियस्म भाग ददेग्यासीति महस्म दत्वा उच्योजेसि ।

मो तत्थ गत्या सिप्प सिक्तरवा आवर्षिय दिन्न पञ्चावुधं गहेरवा आवर्षिय बिन्दरवा तक्किस-कानगराने निक्कीमन्त्रा सम्बद्धस्वावुधा बाराणसीमण परिपण्डि । हो अन्तरामणं सिन्दरकोमयवक्त नाम अपिट्रिन एक अर्राव पाप्रीण । अथ न अर्दावमुक्ते मनुस्ता दिस्वा—भो माणवे मा इस अर्टीव पार्विम सिन्नेम-कोमयवक्तो नामेरव अर्थित सी दिन्दर्शद्दरुवनुस्से जीविनक्वय पार्विनीत वार्यवम् ।

बोधिसत्तो अतान तक्केन्दो असम्भीनकंसरसीहो विष अर्टाव पाविसि येव । तस्मि अर्टावमझ सम्पत्ते मो यक्को नालमत्तो हुन्वा कूटागःमस मीस चक्कपमाणानि ' अक्किन कन्दछमकुल्यमता दे दाठा च मापेरवा मेनमुखो कवण्कुच्छि नीलहत्यपादो हुन्या बोधिसत्तस्स अत्तान दम्सेरवा–कह पामि, तिर्ट्ठ भक्को मेनि आह ।

अथ न बोधिमतो-पश्च 'अह अतान तस्केत्वा इथ पविद्वां । त्व अणमतो हृत्या म उपगच्छे-य्याति । विमर्पोतेन हि त मरेन विशिक्षत्वा एत्येव पातस्मामीन तन्त्रज्ञेत्वा हलाहलोक्सपीत सर सम्रहित्वा मुन्दि । सो पश्चस्त लोमेमु येव अल्लीिय। नतो अञ्चान्ति एव पञ्चा सरे मुन्दि । सन्धे नस्स लोमेसु येव अल्ली-विस् ।

यनको मन्त्रीप ने सरे पांठेखा असनो पादमूले येव पातेत्वा बोधिमना उपसर्काम । बोधिमत्तो पुनिष त तज्जेत्वा सपा कृष्टित्वा पहिंदा तीससुद्धायतो सपां लोमेषु येव अल्लीयि । अथ न कणपेन पहिंदा, सोपि लोमेषु येव अल्लीयि । तस्म अल्लीन [२३४] भाव ज्ञात्वा मुप्परेन पहिंदि । मोपि लोमेषु येव अल्लीयि । तस्म अल्लीनभाव अत्वा-भो यन्त्रवा । न ते अह पञ्चाबुष्कुमारो नामांति मुत्तपुर्वा रे अह नया अधिरृठित अर्टाव पविस्तानो न यनुवादीनि तन्नेत्वा पविर्टो अतान येव पन तन्नेत्वा पविर्टो, अञ्च त पोठेत्वा बुणाविष्कृण किरस्सामीति अभीतवीहनार्व नाम दस्सेत्वा उन्नदित्वा दिन्दग्रित्वान यत्वत्व पहिंदि हत्यो लोमेणु येव अल्लीयि बामहत्येन पहिर, सोपि अल्लीयि । दिनसणपादेन पहिर, सोपि अल्लीयि । वामपादेन पहिर, सोपि अल्लीयि । सीसेन त पोठेत्वा चुण्णविचुण्ण करिस्सामीति सीसेन पहिर, तीम्य लोमेषु येव अल्लीयि । सो पञ्चसु ठानेमु बढी ओलम्बलीपि निकस्यो निस्सारज्ञोव अहोसि ।

यक्को चिन्तेसि-अयं एको पुरिससीहो पुरिसाजानीयो न पुरिसमस्तोवः। मादिसेन नामस्य यक्केन ग्रीहतस्स सन्तासमसीस्य न प्रविस्तितः। मया इम मग्य हनन्तेन एकोपि एक्क्पो पुरिसो न दिट्ठपुब्बो । कस्मा कको एस न भावतीति । सो तं खादितुं अविसहन्तो-कस्मा नृत्वो त्वं माणवः ! मरणभय न मायसीति पुष्छः।

कि कारणा यक्क भायिस्सामि ? एकस्मि हि असभावे एकं मन्य नियनमेव,अपि च मयहं कुष्किहित् विज्ञात्वं कृतिय, सचे मं व्यविस्मिति तें च आवृत्तं औरेतृ त सक्किस्मिति। त ते अत्तानि खण्डालयः छिटिस्ता भीवितक्किय पापेस्सिति । इति उभीपि निस्म्स्माम । इमिना कारणेनाह न भायामीनि । इर किर बोधिसत्ती असती अलभन्तरे आणाव्य सन्दास कपेसि ।

तं तुत्वा वक्को चिनतेसि-अय माणवी सक्कमेव भणति इमस्स पुरिससीहस्म सरीरतो मृग्यवीजमलिय समलप्ड महर् कुष्टिक जीरेतु न सिक्कस्तिति विस्तरजेस्सामि नित्त मरणभयतिज्ञतो वीधि-वस्तं विस्तरजेदा-माणव । पुरिससीहो त्वा न ते जह सस कादिम्मामि । त्व अञ्ज राहुमुखा मृत्तनन्दो विष मम हस्यतो मुञ्जिका जीतिमहुज्यपण्डल तोमेलती राहीति आह ।

अप न बोधिसत्तो आह्-चक्का । अह ताब पाक्किस्सानि त्व पन पुत्नेशि अकुनत करवा छुदो लोहिन-पाणी परहिष्ठिपसम्भवस्त्री वक्का हुन्या निक्वमो । सबे ह्यापि छन्या अकुनतनेब करिस्सित अवकारा अव्य-कारसेब गरिस्सिति । में दिर्कालको पर्छाय पन न सका नथा अकुन कानु पाणीतमाकस्म नाम नित्ये तिरस्कानयोनिय पोत्तिसमये अकुरकाये च निक्बत्तिन मनुस्तेनु निक्बत्तर्छाने अपायुक्तवननिक होनीनि ।

एवमादिना नयेन पञ्चन्न दुस्सीन्यकमान [२३५] आदीनव पञ्चन मीलान आनिमम व कथंग्या नानाकारणेहि यक्ब तज्जेत्वा धम्म देनेत्वा दमेत्वा निक्त्यिक कत्वा पञ्चनु मोलेमु पनिट्ठापंत्र्या नस्मा येव नं अटविया बलिपटिगाहक देवन कत्वा अध्यमादेन ओवदित्वा अटवितो निक्क्यनानो अटवीमुले मनुस्मान आविक्तित्वा मन्नद्रपञ्चन दो बाराणीन गन्त्वा मानापिनरो दिस्या अपत्रभागे रुक्ते पनिट्ठाय धम्मेन रुक्त करोत्नो दानादीनि च पुत्र्यानि करित्वा यथाकम्म अगमामि । मत्यापि इम धम्मदेसन आहरित्वा अभिसम्बुढो हत्वा इमें गायमाह—

> यो अलीनेन चित्तेन अलीनमनसो नरो। भावेति कुसल धम्म योगक्लेमस्स पत्तिया॥ पापुणे अनपुण्वेन सध्वसंयोजनक्लयन्ति।

तत्थाय पिण्डत्थो। यो पुनिसो असीनैन असकु बिनेन विस्तृ विस्तृति विशेष असीनमनो अलीनम्झामयो हृह्या अनवज्जद्रेन हुससं मतिनस्बोधिपिक्यभेदं बम्म भावेति बहुदेनि विमालेन विनेन विषम्मन अनु-युञ्जति । बुद्धि योगीहि खेमस्स निक्षाणस्य पत्तिया सो एव सब्बमसान्यु अनिच्च दुस्स अनना नि निल्क्षण आरोपेत्वा तरुणविपस्सनतो पट्टाय उपन्ने बोधिपिक्तयभमे भावेत्तो अनुपुत्नेन एक सयोजनिम्य अनबसेमेत्वा सब्सयोजनान खपकरस्य चतुत्थमणस्य परियोमाने उत्पन्नता सम्बन्धयोजनक्षयोनि सन्त्र गन अरहत पापु-णव्याति ।

एव मरवा अन्हतेन धम्मदेमनाय क्रूट गहेत्वा मरवके बत्तारि मच्चानि पकासेसि । मच्चपरियोसाने सो भिक्क अन्हत्त पार्पुण । सत्यापि अनुसन्धि घटेत्वा जानक समोधानीम । नदा यक्को अगुलिमानो अहोमि । पञ्चावषक्रमारो नाम अहमेबाति ।

६. कञ्चनक्खंधजातकं

यो पहटठेन जिल्लेनाति इद सत्या जेनवने विहरन्तो अञ्जनर भिक्क आरब्भ कथेमि ।

पच्चपन्नवत्य

एको किर सार्वात्यवासी कुलपुत्तो सत्यु घम्मदेसन सुत्वा रतनसामने उर दत्या पश्चीज । अयस्य आव-रियुगज्जाया-आव्मो । एकियभेन सीछ नाम, दुविषेत, तिविषेत, बनुविषेत, पश्चिविषेत, ष्टाविषेत, ष्टाविषेत, स्रान-विषेत, अट्टिविषेत, नविषेत, दसविषेत, वहिषेयन मीलं नाम; इदं बुल्कसील नाम, इदं मिज्यसमीलं नाम, इदं महासील नाम, इदं पानिमोकस्पवरसील नाम, इद इन्द्रियसवरसील नाम, इदं अजीवपारिमुर्दिसीलं नाम, इदं पश्चपटिसेवनसीलं नामांत सील आविवन्यतित ।

सो [288] चिन्तेसि—इद सीलं नाम अतिबहु । अह गुत्तक समादाव बतितु न सिक्सस्सामि । सील पूरेतु असक्कोलस्स नाम पत्रबज्जाय को अत्यो 2 अह गिही हुत्वा दानादीनि पुरुजानि च करिस्सामि पुत्तदारुच पोसेस्सामीति ।

. एवञ्च पन जिन्तेत्वा-भन्ते । अहं सील रिक्षितु न सिक्षसमाप्ति, असक्कोन्नस्स च नाम पब्ब-ज्जाय को अत्थो ? अहं हीनायावनिस्सापि । तुम्हाक पसंचीवर गण्हणानि आहं ।

अथ न आचरियुपज्ञाया आहम्-आवुसो । एव मन्ते दमबल वन्दित्वा याहीति ।

ते त आदाय सत्यु सन्तिक धम्मसभ अगमसु ।

सत्यान दिस्वाव—िक भिक्कववे! अनित्थिक भिक्क्यु आदाय आगतत्यानि आह्।

भन्ते 'अय भिक्कुअह सील रक्किनु न सक्किस्मामीति पत्तचीवर निष्यादेति । अथ न मय गहेत्वा आगर्नाति ।

करमा पन तुम्हे (भक्कवे । इसस्य भिक्कुनो बहु मील आचिक्कव । यनक गम र्गक्किनु मक्कोत तनकमंत्र रक्किस्मति । इतो पट्ठाय तुम्हे एव मा किञ्च अवबुत्य । अहमंत्य कलक बानिस्मामीति । एहि स्व भिक्कु । किन्ते बहुना मीलेन ? तीणि येव मीलानि रक्किनु सिक्कसम्मति ?

सक्खिस्सामि भन्तेति ।

तेन हि त्व इनो पट्ठाय कायद्वार ववीद्वार मनोद्वारील तीणि द्वारीण रक्य । मा कायेन पापकम्म करि । मा वाचाय, मा मनसा । गच्छ, मा होनायावनि । इमानि तीणि येव मीलानि रक्याति ।

ण्नावना हो भिक्कू तुर्द्धमानसो-माधु भन्ने, रक्किमामि इमानि नीणि मीठानीनि मन्यार वन्दित्वा आचरियपञ्जायेहि मोद्धि येव अगमामि ।

मो तानि तोणि मीलानि पूरेनोव अञ्चामि-आचिरयुग्झायेहि मध्ट आचिन्श्वन मीलान्य एत-कमेव। ने पन अननो अबुद्धभावेन म बुद्धानेतु नातनित्तमु । सम्मानमबुदो अननो बुद्धमुद्धदारा अनुनरप्रम-राजवाय एतक सील तीसु येव द्वारेसु पत्तिचपित्वा म गण्हापेमि। अवस्मयो वन मे मन्या जानोनि विगम्मन बद्देव्या कविषादेतेव अन्द्रक्तं पतिर्द्धासि।

त पर्वोत्त अरबा घम्मसभायं सिषपितता भिन्छू-आबुसो । त किर भिन्न्य् सीलानि रिक्वनु न सक्को-मीति हीनायावतन्त सब्बसीलानि तीहि कोट्ठासेहि पश्चिपिरवा गाहापेरवा सत्था अरहत्त पापेति । अहो ! बुद्धा नाम अच्छरियमनुस्साति बुद्धगुणे कचेन्ता निसीरिन् । सत्था आगन्त्वा-काय नृत्य भिक्लवे । एतरिह कथाय सन्निसिन्नाति पुण्छि ।

इमाय नामाति बुत्ते-भिक्कवे ! अतिगरकोपि भारो कोट्ठासबसेन भाजेस्वा दिश्रो लहुको विय होति । पुक्षेपि पण्डिता महत्तं कञ्चननस्वन्य लिमत्वा उक्तिपणु असक्कोत्ता विभाग करवा उक्तिपरवा अगर्मसति करवा अतीत आहरि- [२३७]

अतीतवस्थ

अतीते बाराणसिय ब्रह्मदत्ते रज्य कारेत्ते बोधिसत्तो एकस्मि गामके कस्सको अहोसि । सो एकदिवस अञ्चतर्रास्त छड्वितगासके खेत्ते कसि कस्ति । दुख्येषि व तस्मि गामे एको विभवसप्पन्नी सेट्टी अस्मतपरि-माणं ^२ जतुहत्त्वामामं कञ्चनक्त्यत्व निद्धित्या कालमकासि । तस्मि बोधिसत्तस्य नगल लिगात्वा अद्योगि । सो मुक्तस्तानक सिस्स्ततीति पत्तु विश्वहृत्तो त दिस्वा पनुता पटिच्छादेत्वा दिवस कसित्या अत्य गते सुरिये युगवसकादीनि एकमन्ते निक्किपीत्वा कञ्चनक्त्य मण्डित्वा गण्डिस्तामीति त उन्हित्तान्त्र गासिक्व।

असक्कोन्तो निर्मादित्वा–एत्तकं कुष्टिमरणाय भविस्सति, एतक निदहित्वा ठपेस्सामि. एत्तकेन कम्मन्ते समोजेस्सामि, एत्तक दानादिपञ्जिकिरियाय भविस्सतीनि चतारो कोटठासे अकासि ।

तस्मेव विभक्तकानेसो कञ्चनस्वत्यो सल्लहको विय अहोगि । सो त उप्तिविध्या घर तत्वा चतुषा विभज्जिला दानारीनि गुञ्जानि कत्वा यथाकम्म गतोति । भगवा इम धम्मदेमन आहीरत्वा अभिमम्बुढो हुत्वा इम गायमाह-

> यो पहट्टेन चित्तेन पहट्टमनसो नरो। भावेति कुसल धम्मं योगक्तेमस्स पत्तिया॥ पापुणे अनुपुडवेन सःवसंयोजन क्लयन्ति।।

तस्य **पहस्ट्डेना**ति विनीवरणेन । **पहस्टमनसोति** नाय एव विनीवरणताय पहस्टमनमो मुवण्य विय पहसित्वा समुज्जोतितसप्पमायकनचित्तो हत्वानि अस्यो ।

एव सत्या अरहननिक्टेन देमन निट्ठपेत्वा अनुमन्धि घटेत्वा जानक समोधानीस । तदा कञ्चनक्वरूथ रुद्धपुरिसो अहमेव अहोसिन्ति ।

क उत्तरक्य रथ जातक

७. वानरिन्दजातकं

यस्तेते चतुरी धम्माति इद सत्था बेळवने विहरन्तो देवदत्तस्स वधाय परिसक्कनं आरब्भ कथेसि ।

पच्चपलवरम्

तस्मि हि समये सत्या देवदत्तो वधाय परिसक्कतीति मुत्वा न भिक्खवे ! इदानेव देवदत्तो मग्ह बधाय परिसक्किन पुक्कीप परिसक्कि येव, तासमत्तम्पि पन कार्तुः न सक्खीति बत्वा अतीत आहरि--

अतीतकस्य

अतीते बाराणसिय ब्रह्मवसे रञ्ज कारेन्ते बोधियसो कपियोगिय निव्यस्ति वृद्धिमन्त्राय अस्स-पोतकस्प्रमाणो धामसप्पक्षो एकचरो हुत्वा नदीतीरे बिहरति । तस्सा पन नदिया वेसक्से एको दीपको नानप्प-कारोह अन्यपणसादीहि फकरक्षेत्रि सम्प्रको वोधियसो नागवको धामसप्पन्नो नदिया ओरिसतीरलो उप्पतित्वा वीधकस्त ओरतो [२३८] नदीमण्डे एको पिट्ठियासाणो स्वित्य तस्मि निपति । ततो उप्पतित्वा तर्सम् संपक्षे पति । तत्व नानप्पकारानि फकानि स्वादित्वा साथे तेनेव उपायेन पत्वामन्त्वा असनो वसनट्ठाने वसित्वा प्रनिद्वविधि तथेव करोति । इमिना नियामेन तत्व वास कपेति ।

तिस्म पन काले एको कुम्भीको सपजापतिको तस्सा निर्देश बनाति । तस्स सा भरिया बोधिसत्त अपरापर गच्छन दिस्वा बोधिमनस्म हदयममे दोहळं उप्पादेखा कुम्भील आह—मय्ह खो अय्य [।] इमस्म वानरि-न्दरम हदयममे दोहळो उपप्रशीत ।

कुम्मीलो—साधु भोति । लच्छसीति बस्वा—अञ्ज त साय दीपकतो आगच्छन्तमेव गण्हिस्सामीति गन्तवा पिटिञ्यासाणे निपिञ्ज ।

बोधिमतो दिवस चरित्वा सायण्हसमये वीषके ठितीव पामाण ओलोकेत्वा-अय पासाणो इदानि उच्चतरो खायति, किमूलो कारणित विन्तीसि ।

तस्स किर उदक्षणमाणञ्च पामाणणमाणञ्च मुबबस्यापितमेव होति । तेनस्स एनदहोसि-अञ्ज इमिन्सा नदिया उदक नेव हासित न बढ्ढति, अथ च पनाय पामाणो महा हृग्वा पञ्जापित कच्चिनुसो एव्य मद्धं महण्याय कुम्मीन्ते निपन्नीति, सी बीममामि ताव नन्ति तस्येव उदबा पासाणेन सद्धि कचेन्तो विद्य भो पामाणाति वस्ता परिवचन अञ्जयन्तो यावतिष्य पामाणाति आहु। पामाणो कि पटिवचन न दस्सति ? पन्निय नं बातन्ते-कि भो पासाणा ! अञ्च मव्य परिवचन न देसीति आहु।

कुम्भीलो∹अदा अञ्जेसु दिवसेसु अय पासाणो वानरिन्दस्स पटिवचन अवासि, दस्मामिदानिस्स पटिवचनित्त चिन्तेत्वा–िक भो [।] वानरिन्दाति आह ।.

कोसि त्वन्ति ?

अहं कुम्भीलोति ।

किमत्यं एत्य निपन्नोसीति ?

तव हदयमंसं पत्थयमानोति ।

बोधिसत्तो चिन्तेसि-अञ्जो मे गमनमग्गो नत्य, अञ्ज मया एस कुम्भीलो वञ्चेतब्बोति । अथ नं

एवमाह– सम्म कुम्भील ! अह अत्तान तुरहं परिच्चजिस्सामि त्व मुख विवरित्वा म तव सन्तिकं आगतकाले गण्हाहीति ।

कुम्भीलानं हि मुखे विवटे अक्खीनि निमीलन्ति । सो तं कारण अमल्लक्षेत्वा मुखं विवरि । अधस्स अक्सीनि पिधीयस । सो मस्य विवरित्वा अक्खीनि निमीलेत्वा निपण्जि ।

बोधिसत्तो तथाभार अस्वा दीपका उप्पतितो गन्त्वा कुम्भीलस्स मत्यक अक्कमित्वा ततो उप्प-तितो विज्जुल्लता विय विज्जोतमानो परतीरै अट्ठासि ।

कुम्भीलो त अच्छरियं दिस्वा इमिना वानरिन्देन अतिच्छेरक कतन्ति चिन्तेत्वा भो वानरिन्द !
[२६९] इमिन्म लोके चतुहि प्रम्मेहि समझागतो पुगलो पच्चामित्ते अभिभवति ते सब्बेपि तुरह् अब्यन्तरे
अस्य मञ्जीति बत्वा इमें गाथमाह-

यस्सेते चतुरो घम्मा बानरिन्द । यथा तव। सक्वं धम्मो धिती चागो विष्टठ सो अतिबस्ततीति ॥

तस्य वस्साति यन्त्र कस्मानि भुगान्तसः । रुतेति इदानि वत्तव्ये पञ्चनकातो निर्द्रसति । चतुरो धन्माति वालारे गुणा । सच्चान्ति वशीमण्यः, मस सन्तिक आगित्रीस्तामीति हि बत्वा मुमावार् अक्तवा आगतो वैद्यानि । एतं ते वनीसण्यः । मामिति विद्याने पाण्यः । स्थितं कर्ते दस्ताम भविस्माति । एता ते विचारणाञ्जा । शितीति अब्बोच्छिष्ठ विदित्त कृष्णितः । एता ते विद्याने पाण्यः । स्थाति अत्याचिष्ठक विदित्त कृष्णितः । एता ते विद्याने प्राप्ति अत्याचिष्ठक विद्याने । स्थाति । स्थाति अत्याचिष्ठक विद्याने । स्थाति । स्थ

एव कुम्भीलो बोधिसल पर्समित्वा अत्तती वसतर्ठात गतो । सत्था-न भिनववे देवदत्ती इदानेव मस्ह् बधाय परिनक्किति पुर्वेशि परिस्विकसेवाति । इस धम्मदेसन आहीरत्वा अनुसन्धि घटेत्वा जानक समो-धानेमि । तदा कम्भीलो देवदत्ती अहोसि, भरियास्स चिञ्चामाणविका । वातरित्वो पन अहमेवाति ।

वानिश्रिटजानकं

८. तयोधम्मजातकं

यस्स एलेति इदस्पि सत्था वेळुवने विहरन्तो वधाय परिसवकनमेव आरब्भ कथेसि ।

अतीतवस्थ

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदलं रुग्धं कारेन्ने देवदत्तो वानरयोनिय निस्वत्तित्वा हिमवन्तपदेसे यूथ परिहरन्तो अन्तानं पटिच्चजानान वानरपोनकान बुढिप्पनानं डमे यूथ परिहरेय्युन्ति भयेन दर्न्नाह् इसिखा नेस बीजानि उप्पार्टीने ।

तदा बोधिससोपि तं येव पटिच्च एकिस्सा वानरिया कुच्छिम्हि पटिसन्त्रि गण्डि । अत्र सा वानरी गञ्भस्स पीतर्टिज्ञाव अला अलानो गञ्ज अनुरक्षमाना अञ्ज पद्धतपार अगमानि । सा परिपक्काल्या बोधि-नम् विजायि । सो बृद्धिमत्वाय विञ्जून पत्तो यामसम्पन्नो अहोनि । मो एकदिवम मानर पुण्छि- अम्म । मध्य पिना कहोत्त ?

तग्त[।] असूर्कास्म नाम पब्बतपादे युथ परिहरन्तो वसतीति ।

अस्म ! तस्म म सन्तिक नेहीति ।

तात । न सकका तथा (२४०) पिनु सन्तिक गन्तु । पिता हि ते अनान पटिच्च जातान आनर-पोतकान यथपरिहरणभयेन दस्तेहि डमित्वा बीजानि उप्पाटेनीनि ।

अस्म ' नेहि म तत्थ, अह जानिस्सामीति । ।

भा पुन आदाय तस्म मन्तिक अगमामि । यो बानरी अननो पुन दिखाव अय बहुबनो मञ्ह पाँर-हर्रिन्तु न दस्मीन। इदानेब मानेनक्ष्मीन एन आफिननो विच गाहुद पीळेला जीविनक्षय पापस्मामीनि क्लि-त्वा-पहिं नात । एनक काल कह गनोमीनि-बौधिसन ऑक्पिनो विच निपाळिस। बौधिसनी पन नाय-क्लो धामसगान्नी। मोपिन निपाळिस। अथस्य अट्ठीनि भिजनाकारप्यनानि अहेस ।

अथस्म एनदहोनि— अय बहुबत्तो म मारेस्मित । केन नुको उपायेन पुनेनरः केव मारंप्यांन्त । तनो वित्तिन-अय अबिदूरे त्रक्कपारित्माहीनो सरो तथ्य ने त्रक्षयेन लादानित्मासीति । अय न एवमाह्र-नातः । अह सहल्वको : हम यूच सुरह निय्यादीम । अपनेव न राजान करोगिम। अमुक्तिम नाम टाने मरो स्थि। तत्र्य के कुमुर्दिनियो निस्सो उपाजिनियो पत्रच पट्निनियो गुष्कान । नच्छ नतो गुष्कानि आहरानि ।

मों नापु नात ! आहरिस्सामीति गन्त्वा सहमा अनोतिरत्वा समन्ता पद परिच्छन्दक्तो ओतिन्छन् पद येव अहम न उत्तिचणाद । मो-हमिना सरेन रक्कसपरिग्गहितेन अविनव्य , मन्ह पिता अत्तना विषतु असभक्तोन्तो गन्त्यमेन म शारानुहामो अविन्याति, अह हम व सर न ओनिरम्सामि, पुण्यानि व गहेरनामीति— निष्टक टोन मन्त्रा वेच गहेल्या उप्पतित्वा पुग्नो गच्छन्तो निष्टके आकांय टिनानेब हे पुण्यानि गहेल्या परतीरे पित । परतो व ऑग्मिनीर आगच्छन्तो तेनेबुणायेन हे गिष्ट । एव उभोनु पम्मेमु गानि करोन्नो पुण्यानि च गिष्ट् रक्कमस्स च आण्टठान न अतारि ।

अधस्स इतो उत्तरि उनिविधनु न सन्त्रिन्मामीनि तानि पुष्फानि गहेत्वा एकस्मि ठाने रासि करो-स्तस्स सो रनवसो मया एतक काळ एवरूपो पञ्जवा अच्छरियपुरिसो न दिट्ठपुब्बो । पुष्फानि च नाम यावदि-

१ रो०- रक्खसपरिग्गहेन।

च्छकं गहितानि,मय्ह च आणर्ञन न ओतरीति उदक द्विधा भिन्दन्तो उदकतो उद्शय बोधिसतं उपसक्तित्वा-बानरित्द ! इसिस लोके यस्स तयो धम्मा अस्य सो पच्चामित्त अभिगोति ते सम्बेपि तब अन्मन्तरे अस्य मञ्जेति बत्वा बोधिसत्तस्स वति करोत्तो इम गायमा≾-

> यस्स एते तथो धम्मा वानरिन्द! यथा तव। दश्कियं सुरियं पञ्जा बिट्टं सो अतिवस्ततीति॥ [२४१]

तत्व **वश्विवान द**क्तक्रमावो सम्पत्तभय विधमितु जाननपञ्जाय सम्पयुत्तउत्तमविरियस्तेत नाम । **कृरियन्ति मुरभावो** निकमयभावस्तेत नाम । पञ्जाति पञ्जापन पटठपनाय उपायपञ्जायेतं नाम ।

एव सो दकरक्कसो इमाय गाथाय बोधिसनस्म थुति कत्वा–इमानि पुष्फानि किमत्य हरसीति पुच्छि।

पिता म राजान कालकामो, तेन कारणेन हरामीति ।

न सक्का तादिसेन उत्तमपुरिसेन पुष्कानि गहितुं, अह गण्हिस्सामीति उक्खिपत्वा तस्स पच्छतो पच्छतो अगमासि ।

अथस्स पिना दूरतोव तं दिस्वा अह् इम रक्वसभत्त भविस्सतीति पहिणि, सो दानेस रक्वस पुष्फानि माहापेन्तो आगच्छित इदानिम्हि नट्ठोनि चिन्तेन्तो सत्त्रधा हृदयफालन पत्वा तत्थेव जीवित्रस्य पत्तो । सेस-वानना सिवपतित्वा बीधिसत्त राजान अकस् ।

सत्या इम धम्मदेसन आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातक समोधानीस । तदा यूयपनि देवदत्ती अहोसि, युयपतिपुत्तो पन अहमेवानि ।

तयोध म्मजानकं

६ मेरिवादजातकं

धमें धमेंति इद सत्था जेतवने विहरन्तो अञ्जतरं दुव्यच आरब्भ क्येमि ।

परचपन्न वस्थ

तब्हि भिक्क मत्या-मच्च किर त्व दुव्यचोसीति पुच्छित्वा सच्च भगवाति बुत्ते – न त्वं भिक्क्षु ! इदानव दुव्यचो पुव्योप दुव्यचो येवाति वत्वा अतीत आहरि –

अतीतवस्य

अतीते बाराणिय ब्रह्मदते रज्ज कारेले बोधिमनो भेरिवादककुछे निब्बत्तिया गामके वसति । मो बाराणिय नक्कल पुट्टित सुला समस्यमण्डले भेरि बादेल्या प्रत आहरिस्सामीति पुत्र आदाय तस्य गल्दा भेरि बादेल्या बहु बन छीम ।त आदाय अत्तनो गाम पच्छलो चाराटीं पत्था पुत्र निरस्तर भेरि बादे-त बारेसि-तात । निरस्तर अवादेल्या मणपटिपन्न इस्सरभेरि विय अन्तरस्तरा बादेहीति । सो पितरा बारियमोगीर भेरिसहेनेव चोरे पणपेस्मामीति क्या निरत्तरसेव बादेसि ।

वोग पठमञ्जेव भेग्मिह मुखा इस्सरभेगि भविस्सतीति पर्णायित्वा अ**तिविय एकावर्द्ध सह सुरवा** नाय इस्मरभेगि भविस्मतीति आगन्त्वा उपधारत्वा द्वे येव जने दिस्वा पोधेपेत्वा विक्रांभम् १।

> बोधिनलो किच्छेन वत नो लढ घन एकावढ कल्वा वादेन्तो नासेसीति बत्वा इमं गायमाह— यसे असे नातियसे अतियस्तं हि पायकं।

धन्तेन सतं लखं अतिधन्तेन नासितन्ति ॥ [२८२]

तत्त्व **यसे भमे**ति भमेत्य नो न भमेत्य। भींत बादेत्य। न न बादेत्याति अत्यो। **नातिनमेति** अतिकक्त-मेत्वा पन निरन्तरमेव कत्त्वा न बादेत्य। कि कारणा ? अतिषम्त हि पपकार्तन्त निरन्तर भीरवाद इदानि अस्त्राक्तं पपकं ठामक जान। **पन्तेन सर स** बढिति नगरे भैरिवादनेन कहारणमन छढ़। अतिषम्त्रोन नातिस्तिन इवानि पन मे पुनेन वचन अकत्वा स्वीद अटिवाय अविधन्त लेन अनिषम्त्रेन कब्र नासित्तति ।

सत्था इम धम्मदेगन आहरित्वा अनुगन्धि घटेत्वा जातकं ममोधानेगि । तदा पुत्तो दुक्वचिमक्खु अहोसि । पिता पत अहमेवाति ।

भेरिबादजातक

१० सङ्ख्यमनजातकं

धमें धमेति इदं सत्था जेतवने बिहरन्तो दुब्बचमेव आरब्भ कथेसि ।

अतीतवस्य

अतीते बाराणियां बहारते रज्यं कारेले बोधियतो मङ्गधमककुले निब्धत्तित्वा बाराणिया नक्सते सुद्दे पिनर आदाय सङ्गधमकस्मेन धन लिभत्वा आगमनकाले चोराटिया पिनर निरत्तर सङ्गधमत्त बारेति । सो सङ्गसन्दे चोरे प्रकारेस्नामीति निरन्तरमेव धनि । चोरा पुरिमनयेनेव आगन्या विद्धार्मसु । बोधिसत्तोपि परिसनयेनेव गांव अमानि-

> धमे धमे नातिधमे अतिधन्तिः ह पापकं। धन्तेनाधिगता भोगाते तातो विधमी घमन्ति ॥

तस्य **ते तातो विषमी धम**न्ति ते सङ्क्ष धमित्वा लद्धभोगे मम पिता पुनप्पुन धमेन्तो विथमीति विद्ध-सेसि विनासेसीति ।

सत्था इम धम्मदेसन आहरित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातक समोधानेमि । तदा पिता दुब्बचिनक्वु अहोसि, पुत्तो पन अहमेवाति ।

स ह्व धमनजातकं

आसिसबग्गो छट्ठो

७ इस्थीवम्यवणाना

१ असातमन्तजातकं

असा लोकित्ययो नामाति इद सत्या जेतवने विहरन्ती उनकण्ठितभिवस् आरब्भ कथेमि । तस्म बत्य उम्मदन्तिजानके भावीभविन्सति ।

पच्चपस्रवत्यु

त पन भिक्कु सत्था-भिक्कु !: श्वियो नाम असा असतियो लामिका पिक्छिमिका । त्व एवक्र्य लामिक ६ त्थि निम्माय कम्मा उक्किष्ठितानि बत्वा अतीतं आहरि- [२४३]

अतीतवस्यु

अतीतं बाराणिया बह्यदने रुजं कारेन्ते बोधियतो गन्धाररट्टे तक्कमिलाय बाह्यणकुके निव्ब-नित्वा विक्रुन पत्नो । तोचु केरेषु सब्वसिर्णमु व निष्कानित्यतो दिनापामाक्की आवस्यो अहीति । तदा बारा-णीस्य एकस्मि बाह्यणकुके पुनस्म अतदिवसे आंग गहेत्वा अनिक्वायन रुप्रियम् । अपन बाह्यणकुमार सोक्ष्म-वस्सकारे सालाणितरी आह्यु –पुन ! मर्च तत्र कार्तदिवसे ऑग गहेत्वा ठपीस्महा तत्र बह्यारोक्सरायणो भविकृतामो त आंगा आदाय अरक्ज पविभिन्वा आंगा भगवन नमस्प्रमानी बह्यारोक्कररायणो होति । सन्व अगार अरक्षाविमतुकामी तकसिल गन्त्वा दिमापामोक्बस्स आवरियस्म मन्तिके निष्य उपाणिहत्वा कुट्टाव

माणवी-नाहः सिक्कस्सामि बरञ्जे आग्ग परिचरितु, कुटुम्बमेव सध्येस्मामीति-माता-पितरो बन्दित्वा आचरियभाग सहस्स गहेत्वा तक्कसिल गन्त्वा विष्ण उपाण्हित्वा पञ्चाणमि । मातापितरो पतस्म अत्रत्थिका चरावासेन । अरञ्जे आग्ग परिचरापेतृकामा होन्ति ।

अव न माता इत्वीन दोस दस्तेत्वा अरुब्ज ऐसेतुकामा सो आचिरयो पण्डिनो व्यत्तो मिक्कस्मिन भे पुनस्स इत्वीन दोसं कथेनुनि चिन्तेत्वा आहु –उगाहितन्ते तात ! सिप्पन्ति ?

आम अस्माति ।

असातमन्तापि ते उग्गहिताति ?

न उग्गहिता अम्माति ।

तात !यदि ते असानमन्ता न उग्गहिना किन्नाम ने मिप्प उग्गहिन [?] गच्छ उग्गहेत्वा एहीति । सो माष्रति पुन तक्कसिलाभिमस्यो पार्यास ।

तम्माप आचरियस्य माता महन्त्रिका वीभवस्मातिका। मो न सहत्था नहापेन्तो मोजेन्तो पायेन्तो पटिजमाति। अञ्जे मनुस्मा तं तथा करोत्त जिमुच्छीनः। सी चिनतिस यकुनाह अरञ्ज पविमित्वा तत्थ मानर पटिजमान्ती बिहरियति। अयेकस्मि विवित्ते अरञ्जे उदक्कामुक्त्रहाने पण्णमान कारेत्वा सप्पिनण्डुलादीनि आहरोपेत्वा मातर उर्विकापित्वा तत्थ मत्या मानर पटिजमणनी वागं कप्पेसि।

सोपि स्रो माणवो तक्कसिल गन्त्वा आचरिय अपस्मन्तो कह आचरियोति पुच्छित्वा त पर्वान सुरवा तत्व गन्त्वा बन्दित्वा अट्ठासि ।

१. स्या०-उम्मादयन्तिजातके ।

अथ नं आचित्यो-किमुको तात ! अतिसीयं आगतोसीति ? नन् अहं तुन्हेहि असातमत्तो नाम न उपाण्हापितीति ? को पन ते असातमन्ते उपाण्हितव्ये कत्वा कथेसीति ? सर्वे माना आचित्याति ।

बोधिसत्तो चिन्तेसि असानमन्ता **नाम केवि नत्वि । इ**मस्स पन माता इमं इत्यिदोमे जानापेनुकामा भविस्मतीति । [२४४]

अस नं-सामु तात! दस्सामि ते अक्षतमन्ते । त्व अन्य आदि करवा मम ठाने ठत्वा मम मातर सहत्या नहापेन्तो भोजेन्तो पायेन्तो पटिजगाहि । हत्यावादतीसपिद्दिसम्बाहनादीनि चस्सा करोन्तो-अय्ये ! जरं पत्तकालेपिताव ते एक्कर परीर, दहरकाले केरिस अहोतीति हत्यपिकममादिकरणकाले हत्यपादादीन चर्चक केर्ययादा । यं च ते मम माता करीति तं जल्जवतो अनिष्हृहत्यो मय्ह आरोचेच्यासि एव करोन्तो अमात- मन्ते लच्छिति । अकरोन्तो न रुच्छति ।

सो साषु आवरियाति तस्स वचनं सम्प**ित्युक्त्यः** ततो पट्ठाय मध्यं यषावृत्तविषानं अकानि । अयस्या तस्मि माणवे पुतप्पुन वष्णयमाणे अयं स्या सद्धि अभिगमिनुकामो प्रविस्सनीति अन्धाय जराविष्णाय अञ्मतते किलेसी उप्पष्टिज । सा एकदिवसं अत्ततो सरी रक्षणं कथयमानं माणव आह्-स्या सर्धि अभिरिम्तुः इष्ट्यक्षीति ?

अय्ये । अह ताव इच्छेय्यं आचरियो पन गरुकोति ।

सचे मं इच्छिस पुत्त में मारेहीति।

अहं आचरियस्स सन्तिके एत्तकं सिप्प उम्मण्डित्वा किलेसमत निस्साय किन्ति कत्वा आचरिय भारेस्सामीति ?

तेनहि सचे त्वं मं न परिच्यात्रसि अहमेव न मारेस्सामीति ?

एवं इत्यिमो नाम बसा क्षांसिका पश्चिमिका त्याच्ये नाम बसे ठिता रागचित उत्पादत्वा किलेम अनुवत्तामाना एवं उत्पादक पुन मारेतुकामा बाता। माणवी सम्बंत कथ बीधिसतस्स आरोचेसि। बोधिमत्तो सुदृह् ते माणव । कत मग्हें आरोचेलीताति बत्वा, मातुकायुमबार ओलोकेली अञ्चेव मिरमानीति अत्वा— एदि साणव । बीधिसास्सामि निन्ति एकं उदुम्बरस्च्यं छिन्दित्वा अत्तनी पमाणेन क्ट्ठस्थक रूप्या ससीम पारु-पिता अत्वानी समन्द्राम ति स्वान निपञ्जापेत्वा रज्युक बन्धित्वा अत्तेनी पमाणेन क्ट्रस्थक रूप्या पारुम पारुम प्राचा अत्तेनी समन्द्राने उत्तान निपञ्जापेत्वा रज्युक बन्धित्वा अत्योगिक आह्—नान । फरम्यु आदाय मन्त्रा माणवा सम्बन्ध देविति ।

माणवो गल्ला-अय्ये ! आचरियो पण्णसालायं अत्तनो सयनट्ठाने निपन्नो । रञ्जूमञ्जा मे बढा, इम फरमुं जादाय गल्ला सचे सक्कोसि सारेहि नन्ति आह ।

त्वं म न परिच्चजिस्ससीति ? कि कारणा परिच्चजिस्सामीति ?

सा फरसु आदाय पर्वेषमाना उठ्ठाय रज्जुसञ्जास गन्ता हत्येन परामसित्वा अय मे पुत्तीति सञ्जाय कट्ठकाकरस मुखती साटके अपनेत्वा फरमु आदाय एकप्पहारेनेव मारेस्सामीति गीवायमेव पहरित्वा टॉन्ज सटे ' उपासे रुक्तमाव' अञ्जाति ।

जय बोधिसत्तेन कि करोसि बम्माति **वृत्ते बञ्चित्रस्कृति तत्त्वेव म**रित्वा पितता । अननी किर पण्णसालाय निपन्नायिष तं वर्ण ताय मरितब्बमेव । सो तस्सा मतभावं **अत्वा स**रीर [२४५] किच्चं कत्वा

१. स्या०- थडसहे ।

आळाहन ' निम्मापेत्वा वनपुष्फीह वृत्रेत्वा माणवं अक्षाय पण्यसाळढारे निशीदित्वा-तात! पाटियेक्को असात-मत्त्वो नाम नित्य । इत्तियां अमाता नाम तव माता अवातमत्ते उत्पण्डाति मम द्वितक पेनयमाना इत्यीनं दोसं जाननत्वं पेसेमि । इदानि पन ते पण्यक्तमये सम मातु दोसा दिट्छा । इमिना कारणेन इत्यियो नाम असा-ळामिकाति जानेत्यासीति त औवरित्वा उत्योजेसि ।

सोपि आवरिय वन्दित्वा मानापिनुष्र मन्तिक अगमासि । अथ नं माना पुष्कि – उग्गहिना ते असातमन्ताित? आसः अम्मानि ।

इदानि कि करिस्मिसि पब्बजित्वा ऑग्ग वा परिचरिस्मिसि अगारमज्झे वा विसस्मसीति [?]

माणवो–मया अस्म [।] पच्चक्यतो इत्थीन दोमा दिट्ठा । अगारेन मे किच्च नित्थ पब्बजिस्सामह-न्ति असनो अधिष्याय पकासेन्तो इम गाथमाह–

> असा लोकिरिययो नाम बेला तासं न विज्ञति । सारता च पगव्या च सिस्ती सम्बद्धसो यद्या । ता हित्वा पव्यजिस्साभि विवेकमनुबहुयन्ति ।।

तत्त्व असारित अमितयो लामिका । अथवा, मान बुच्चित मुख । त तामु नित्य असित पटिबद्धचित्तान असातमेव देन्तीतिपि असाता दुक्चा दुक्चवत्युभुताति अत्यो । इमस्म पनत्यस्स दीपनत्थाय इद मुन्त आर्हारतत्व —

> "माया चेसा मरीची च सोको रोगो चुपह्बो, खरा च बन्धना चेता मञ्चुपामो गृहामयो। तासूयो विस्समे पोसो सो नरेसू नराधमो ति॥"

कोकिरियमीत लोके इत्यियो। बेका तासं व विकत्तिति अम्म । तास द्य्यीर्ग किलेमुर्यात पत्वा संवयं सरियादा प्रयाणकासेन तयि। सारत्वा व यास्त्रा व यास्त्र भाति केला व एतास निव । पत्र प्रमाणकासेन त्या कारत्वा व यास्त्र भाति केला व एतास निव । पत्र प्रमाण कार्य प्रामिश्येन स्वामाणकासेन व यासिश्येन समझानत्वा पत्र प्रामिश्येन प्रामिश्येन समझानत्वा पत्र प्रामिश्येन प्रामिश्येन समझानत्वा पत्र प्रामिश्येन प्रामिश्येन व समझानत्वा पत्र प्रमाण व विचा प्रमाण कार्य प्रमाण व स्वेत । अभि नाम प्रपाणां व स्वेति । सिश्री संस्वप्रसे व्याति अस्य । यथा जालिसवाय सिम्बीति मङ्क्ष पत्रो । अभि नाम प्रपाणां विचेत स्वामाणकासे व विचा व स्वेत ल अस्ति साम्य प्रमाणकासे व विचा व स्वेत ल अस्ति साम्य स्वामाणकासे व विचा व स्वेत ल अस्ति सम्ब प्रमाणकासे व व स्वेत कार्यात स्वामाणकासे व स्वेत कार्यात स्वामाणकासे व स्वेत कार्यात सम्म विचा व स्वेत कार्यात स्वामाणकासे व स्वेत कार्यात स्वामाणकासे व स्वेत स्वामाणकासे स्वा

सत्यापि एव भिक्यू ! इत्यियो नाम असालामिका दुक्वदायिकानि इत्योन अगुण कचेत्वा मच्चानि पकासीम । मच्चपित्योसाने सी भिक्क् सोनापणिकले पतिट्ठिह । मत्या अनुसन्धि घटेत्वा जातक समोधा-नेसि । तदा माता भद्दाकापिलानी, पिता महाकस्मपो अहोमि, अल्वेवामिको आनन्दो, आचरियो पन अहमेवानि ।

असातमन्तजातकं

२. अण्डभृतज्ञातकं

यं बाह्यणोति इदं सत्या जेनवने विहरन्तो उक्कण्ठितमेव आरब्भ कथेसि ।

पच्चपन्नवत्य

त हि सत्या सच्च किर त्व भिक्कु ! उक्कष्टितीति पुच्छित्वा सच्चन्ति वृत्ते—भिक्कु इत्थियो नाम अरक्किया। पुञ्जे पण्डिता इत्थि गञ्भतो पट्टाय रक्कन्ता रक्कित् नासक्किसूति कत्वा अतीतं आहरि—

अतीतबस्य

अतीते बाराणसिय बह्मादत्ते रज्ज कारेन्ते बोधिसत्तो तस्स अग्यमहेसिया कुण्छिरम निब्बत्तित्वा वयणस्तो सब्बसिष्पेमु निष्कत्ति पत्वा पितु अञ्चयेन रज्जे पतिदृठाय थम्मेन रज्ज कारीस । सो पुरोहितेन सिंब 'देत कीळति । कीळन्तो पन-

> सब्बा नदी वकगता सब्बे कट्ठमया बना । सम्बित्यियो करे पाप लभगाना निवातकेति ॥

इस दूतगीत गायन्तो रजतफलके सुवण्णपासके स्थिति । एव कीळन्तो पन राजा निच्च जिनाति । युरोहितो पराजियित । यो जनुकसेन घरे विभवे परिस्त्रय गण्डन्तो चिन्तीस-एव मन्ते मध्य हमीस्स घरे स्थिति स्तित गरियमित्व पुरिस्ततर अगत एक सातृगाम घरे करिरसामीति । अथस्य एनदहीिम-अञ्चपुरिस स्दित्य प्रतिस्तित इतिय रिक्षतु न सिक्स्सिमीं गरुभतो पर्रश्चेक मानुगाम रिक्सत्या त बयप्पत चर्च [२४७] छोत्रया एकपुरिसकं रूपाया विद्यास प्रतिस्तित । स्वाप्त चर्च [२४७] छोत्रया एकपुरिसकं रूपाया हम्म

सो च अपविश्वास छेको होति। अचेकं हुमातित्व ग्रांक्भीण दिस्वा धीतरं विज्ञाविस्सर्गाति अत्वा तक्कोसारोत्वा परिज्वय दत्वा घरे येव बसापेवा विज्ञातकाले धन दत्वा उच्योअंत्वा ते कुमारिक अञ्जेन गृरिसान दर्ह अदत्वा इत्सीन येव हत्वे दत्वा पोसापेत्वा वयप्यनकाले त अत्तनो वसे ठपेंसि। यावचेसा वद्वति ताव रञ्जा सिंढ हुत न कीळि।

> त पन बसे ठपेस्वा-महाराज । दूत कीळामाति आह । राजा साभूति पुरिमनयेनेव कीळि । पुरोहितो रञ्जा गायिस्वा पासक खिपनकाले ठपेस्वा मम माणविकन्ति आह ।

ततो श्हणत पुरोहितो जिनाति, राजा पराजियति । बीभिसत्तो इमस्स घरे एकपुरिसिकाव एकाय इंत्य्या भोकतव्यति परिणक्षणतो अलिमाशं अल्बा सीलमस्या भिन्दापस्तामीति एक पृत्त पक्कोसारेखा-सक्वसि पुरोहितस्स इत्यिया सील भिन्दितृति आह् । सक्कोमि देवाति । अपस्म राजा धन दन्वा तेन हि बिच्य निरहणपेतिति त गिहिण ।

सो रञ्जो सन्तिका घनं जादाय गन्धपूरकुणारुप्रादीनि गहेरवा तस्त घरतो अविदूरे सत्वयान्धा-जप पसारेसि । पुरोहितस्सिप गेहं सत्तभूमक सनदारकोट्टक होते । सब्बेशुनि द्वारकोट्टकोट्ट प्रतिनञ्जेव आर-स्को । ठरेन्वा पन ब्राह्मण अञ्जो पुरिसो ग्रेह पविसित्त लभनो नाम नित्य । क्वयण्डहनगरिक्विय सोध्येयायेव

१ स्याः - जुतं।

पवेकेन्ति । त माणविकं पुरोहिनो चेव दट्ठु रूभित, तस्सा च एका परिचारिका इत्यि । अथस्सा सा परिचारिक का गन्धपुष्कमूर्ल गहेत्वा गच्छन्ती तस्सेव धुत्तस्स आपणसमीपेन गच्छति ।

सो अय तस्सा परिचारिकाति सुट्ठु बत्वा एकविवस तं आगच्छन्ति दिस्वाव आपणा उट्ठाय गन्त्वा तस्सा पादमूले पतित्वा उभोहि हत्थेहि पादे गाळुहं गहेत्वा-अम्म ! एसक काळ कह गतासीति परिदेवि ।

अथ सेमापि पयुत्तकधुता एकमन्त ठत्वा-हत्यपादमुखमण्ठानेहि च आकप्पेन च मातापुत्ता एकमदिसा येवानि आङ्ग् ।

सा इत्यी तेमु नेमु कथेन्तेमु अननो अमहहित्वा अयं मे पुनो भविन्मतीति सयम्पि रोदितृ आरभि । ते उभौषि करिदत्वा रोदित्वा अञ्जनश्च आर्लिनित्वा अट्ठमु ।

अथ मो धुनो आह-अम्म । कह वससीति ?

किन्नरलीळ्हाय वसमानाव रूपमोभगणपत्ताय पुरोहितस्स दहरित्विया उपट्ठान कुरुमाना वसामि सानाति ।

ा। इदानि कह यासि अम्माति ?

तस्सा गन्धमालादीन अत्थायाति ।

अम्म † किन्ते अञ्जल्थ गतेन इतो पट्ठाय ममेव मन्तिका हराति मूल अगहेत्वाव बहूनि तम्बूल-तक्कोलादीनिचेव नाना पुष्फानि च अदासि । [२४८]

माणविका बहूनि गन्थपुष्कादीनि आहर्रान्न दिस्वा—िक अम्म । अज्ज अम्हाक बाह्मणी पसन्नोति आह ।

करमा एव वदसीति ?

इमेस बहुभाव दिस्वाति ।

न बाह्मणो वह मनं अदामि , मया पनेत मय्ह पुत्तस्म सन्तिका आनीतन्ति ।

ततो पट्ठाय सा ब्राह्मणेन दिन्न मूल अत्तनाव गहेत्वा तस्मेव सन्तिका गन्धपुष्कादीनि आहरित । घृतो कतिपाहच्चयेन गिलानालय कत्वा निपञ्जि ।

मा तस्म आपणद्वार गल्बा न अदिस्वा-कह में पुत्तोति पुच्छि ।

पूत्तस्य ते अफासुक जातन्ति ।

मा तस्स निपन्नट्ठान गन्त्वा निसीदित्वा पिट्ठि परिमञ्जन्ती–किन्ते तात! अफासुकन्ति पुच्छिः

सो तुण्ही अहोसि ।

किन कथेसि पुत्ताति ?

अम्म ! मरुन्तेनापि तुम्हंकथेतु न सक्काति ।

मय्ह अकथेत्वा कस्म कथेमि तानानि ^२

अम्म! मध्ह अञ्ज अफामुक नित्य, तस्मा पन माणविकाय वण्ण सुन्वा पटिबद्धचित्तोस्मि जातो त रूभन्तो जीविम्मामि अरूभन्नो इर्वेव मरिस्सामीनि ।

तात ! मय्ह एस भारो मा त्व एत निस्साय चिन्तयीति ।

त अस्मासेत्वा बहूनि गन्यपुष्फादीनि आदाय माणविकाय सन्तिक गन्त्वा—पुनो मे अस्म । सम् सन्तिका तव वण्ण सुत्वा पटिबद्धचित्तो जातो कि कातब्बन्ति ?

सचे आनेतुं सक्कोथ मया कतोकामो येवाति ।

सा तस्सा वचन सुत्वा ततो पट्ठाय तस्स गेहस्स कण्णकण्णेहि बहु कचवरं सकड्बित्वा पुष्फपिन्छ-

या गहेत्या गण्डमती सोधनकाले जारिक्यतिया उपरि छड्डेसि । सा तेन अट्टियमाना अपेति । इतरा तेनेव निया-मेन या या चिञ्चि कपेनि तस्सा तस्सा उपरि कचवरं छड्डेसि । ततो पट्ठाय यं यं मा आइरित वा हरित बात न काचि सोधेतु उस्सद्धित । तिस्म काले सातं चूत पुष्कपच्छिय निपञ्चापेत्वा माणविकाय सन्तिक आतिहरि । सुतो माणविकाय सील भिन्दित्वा एकाइडीह पासादे येव बहोत्ति । पुरोहिते बहि निक्यन्ते उमो अभिरामिन । तस्मि आतो सुनो निलीयित ।

> अथ न सा एकाहडीहण्ययेन-सामि । इदानि तव गन्तु बट्टनीति आह । अहं बाह्यण पहरित्वा गन्तुकामोति ।

सा-एव होतूति-धुत्तं निलीयापेस्वा ब्राह्मणे आगते एवमाह-अहं अध्य ! तुन्हेसु वीणं वादेन्तेसु निच्चतु इच्छामीति ।

> साधु भहे ! नच्चस्सूति बीगं बादेसि । तुम्हेमु ओळोकेन्तेमु लज्जामि मुखं पन वो साटकेन बन्धित्वा नच्चिस्सामीति । मचे लज्जासि एव करोहीति ।

माणविका घनसाटक गहेत्वा नस्म अक्लीनि पिदहमाना मुख बन्धि । बाह्मणो मुख बन्धापेत्वा वीर्ण वार्देसि । सा मुहुन निष्करवा-अस्य [।] अह ते एकवारं सीमे पहरिनुकामानि आह ।

इत्थिलोलो ब्राह्मणो किञ्चि कारण अजानन्तो-पहगहीति आह ।

माणविका धृत्तस्त सञ्जमदासि । [२४९] सो सणिकं आगन्त्वा बाह्मणस्य पिट्ठिपस्से ठन्या सीसे कप्परेन १ पहरि । अक्सीनि पतनाकारप्पत्तानि अहेषु । सीसे गण्डो उट्ठिह ।

> सो वेदनट्टो हुत्वा --आहर ते हत्यन्ति आह । माणविका अत्तनो हत्य उक्तिवित्वा तस्स हत्ये ठपेसि । ब्राह्मणो-हत्यो मुद्को पहारो पन यद्योति आह ।

युत्तो ब्राह्मणं पहरिस्ता निजीयि । माणिंका निस्म निजीने ब्राह्मणस्म मुखतो साटक मोधेग्या तेण आदाय सीसे पहार सम्बाहि^{*} । ब्राह्मणे बीह निक्सन्ते पुन सा डल्यी युत्त पच्छिय निपण्जापेत्वा नीहरि । सी रञ्जो सन्तिक गन्त्वा सम्ब त पर्वात्त कारोवेसि ।

> राजा अन्तनो उपट्ठान आगत ब्राह्मण आह-दृत कीळाम ब्राह्मणाति । साधु महाराजाति ।

राजा दूतमण्डल सञ्जापेत्वा पुरिमनयेनेव दूतगीनं गायित्वा पासे लिपति । बाह्मणो माणविकाय तपस्स भिन्नभाव अजानन्तो⊸ठपेत्वा मम माणविकन्ति आहे । एव वदन्तीपि पराजितो येव ।

राजा जानित्वा-बाह्मण । कि ठ्यंसि ? बाणिकाय ते तथी भिन्नो । त्व मातुनाम गरुभतो एटटाय रत्यसन्तो सत्तमु ठानेतु आरत्यक करोत्ता रिक्तनु अस्विस्तसामीति मञ्जति ? मातुनामो नाम कुष्किय्य पिक्तिपित्वा चरन्तेनाथि रिक्तिजु न सक्का एकपुरितिका इत्यो नाम नित्व । तव माणिकका निक्तिकामान्हीति तथा बीण वारेन्तस्त तव साटकेन मुख बिग्यत्वा अत्तनो जारं तब मीसे कप्यरेन पहरायेत्वा उच्योजेसि । इतानि कि ठ्यंसीति बत्वा इम गावमाह-

> य बाह्यको अवादेसी बीणं सम्मुखबेठितो। अण्डभूताभता भरिया तासुको जातु विस्सतेति।।

तत्य यं बाह्यणो अवादेशि बीणं सम्मृत्वदेशितोति येन कारणेन ब्राह्मणो घनसाटकेन सह मुखेन

१. स्था०-कप्पुरेन । २. स्था०-सीसं परिसम्बाहि ।

बेठितो हुत्वः बीण वार्देसः । त कारणं न जानातीति अत्यो । तिम्पि सा वञ्चतुकामा एवमकासि । ब्राह्मणो पत ते इत्योग बहुमायामाव न जानतो मातृतामस्म सहृद्दित्वा म एमा लञ्जजीति एव सञ्जो बहुोसि । तैनस्स अञ्जापभाव पकासेत्तो राजा एवमाह । अयमेत्व अलापायो । अयाक्षम् सा भारता सितासि लग्ड बुक्वित बीजं बीजमूना मातृ कुच्छितो अतिकालकालेत्रेये जामता आतीता । भताति वा पुट्ठाित वत्यो का सा ? अपिया पत्रापती पादपरिवारिका । सा हि भत्तवत्याविहि भरितव्यताय भिन्नसत्ताय लोकमम्मिह भरितव्यताय वा सरियाति बुच्चित । तासु को बातु विस्तसेति जातूर्ति एकनायिवचन । तासु मातृ कुच्छितो पट्ठाय रिक्वियताय वा सरियाति बुच्चित । तासु को बातु विस्तसेति जातूर्ति एकनायिवचन । तासु मातृ कुच्छितो पट्ठाय रिक्वियताय लिक्यमात् । त्रासु मातृ कुच्छितो पट्ठाय रिक्वियताय लिक्यमात् । त्रासु मातृ कुच्छितो पट्ठाय रिक्वयताय एता मस्यहित्व को सहहैस्याति अत्यो । असद्धम्यवसेन हि आमन्तकेतु तिमन्तकेतु विज्व-मानेत्र प्रात्मम्बित्व कर रिक्वतुत्ति ।

एवं बोधिसत्तो ब्राह्मणस्स धम्म देसेसि । ब्राह्मणो बोधिसनस्स धम्मदेसन मुत्वा निवेसन गत्स्वा तं माणविक आह—तया किर एवरूपं पापकम्मं कतन्ति ?

अय्य ! को एवमाह ? न करोमि, अहमेव पहीर न अञ्जो कोचि । सचे न सहहथ अह तुम्हे ठपेत्वा अञ्जम्स पुरिसस्म हत्यसम्फस्स न जानामीति सच्चिकरिय कत्वा ऑग पविसित्वा तुम्हे सहहापेस्सामीति ।

क्राह्मणो एवं होतृति महन्त दारुरासि कारेत्वा अग्गि दत्वात पक्कोसापेत्वा—सर्वे अलनो सद्-हमि अग्गि पविमाति आह ।

माणविका अननो पिन्वारिक पठममेव विक्कापीम-अम्म । तब पुत तत्व्य गत्वा मम आंगा पविमतकाले हृत्यात्व्यं मुन्त तत्व्य गत्वा मम आंगा पविमतकाले हृत्यात्व्यं गत्वा विद्यात्वे मानव्यं त्या अववः । पुतो आगत्वा परिसमको अट्ठामि । मा माणविका बाह्यां वञ्चेतुकामा महाजनमनको ठला बाह्यां व्याप्त ठलेवा अञ्चस्त पुरिसस्स हृत्यसम्प्रस्स नाम न जानामि । इमिना सच्चेत अय अगि मा म जायेशीति—आंगा पवितित् आरखा।

तस्मि लगे पुरा-पस्तय मां पुरोहितब्राह्मणस्त कम्म एवर्डाप माणवि आंग विसापेतीत-गत्त्वा त माणविक हत्ये गण्हि सा हत्य विस्वज्वापेत्वा पुरोहित आह-अय्य ! मम सज्बिकिया भिन्ना। न सक्का आंग पविसित्ति ।

कि कारणाति ?

अञ्ज मया एव सच्चिकिरिया कता ठपेत्वा मम सामिक अञ्ज पुरिसस्स हत्वसम्फरस न जाना-मीति । इदानि चम्हि इमिना पुरिसेन हत्ये गहिताति ।

ब्राह्मणो बञ्चितो अहं इमायाति अत्वा त पोधेत्वा नीहरापेनि । एव असद्धम्मसमन्नागता किरेता डांथ्या कीवमहत्त्तिप पापकम्म कत्वा अतनो सामिक वञ्चेतु नाह एवरूप करोमीति दिवसिप्प सपथ कृश्माना नानाचित्ताव होन्ति । तेन वृत्त-

"बोरीन वहबुद्धीन यामु सच्च मुदुल्लभ, श्रीन भावां दुराजानां मच्छरसंबोदकं गत । मुना ताम यथा सच्च तस्व था मुगा, गावां बहुतिचारांच आंगमन्ति वर वर । बोरियों कठिना हेना बाळा चलव्यसमान, न ना किंट्चन जार्नात्य समुरसेस् बच्चन-"ति ।

सरवा एव अरिक्तियो मातुगामीति इम धम्मदेसन आहरित्वा सक्वानि पकासिस । सक्वपरियो-साने उक्कण्ठिनभिक्कु सोनागसिकले पनिट्ठीह । सत्यापि अनुसन्यि घटेत्वा जातकः समोधानेसि । तदा बारा- . णमीराजा अहमेव अहोमिनि ।

3 तक्कजातकं

को उना अकतङ्ज्ञचाति इद सत्था जेतवने विहरन्तो उक्कण्ठितभिवल् च्जेव आरब्भ कथेसि ।

पच्च पन्नबस्य

तिक्ह सत्था सच्च किर त्वं भिक्खु । उक्किण्ठिनोति पृच्छित्वा सच्चित्ति इत्वियो नाम अकत-तक्क मिलदुभा कस्मा त। निस्साय उक्किण्ठिनोसीति बत्वा अतीत आहरि.–

अतीसवस्य

अवीते बाराणिसय बहादसे रुग्ने कारेन्त्रे बोधिसत्तो इसिपन्यग्र पञ्चीवत्वा गगाशीर अस्सम पापंत्रा समापात्त्रयो वेच अभिज्ञा व निव्यत्तंत्र्य आतरितपुक्तं विद्वराति । तस्सि समये बाराणिसीरहेळ्तो धीता दुरुकुमारी नाम चण्डा अहोसि फरसा दासकम्मकरे अवकोशाति पहरति । अपन एकिदिस् गिराम मनुस्मा महत्त्रया गगाय कीह्यसामार्गात अगममु । तेम कोह्यलान येच मुरित्यव्यामनवेळा जाता । मेची उट्छेह । मनुस्मा मेच दिग्चा हत्तीचितो च बेगेनपार्णायमु । मेन्द्रिश्चीनाय दासकम्मकरा अञ्चन्नेहि एनिस्सा गिर्दार्थ परिस्तु बहुतीति त अल्तो उदक्तिमञ्जेब छट्डेल्वा उत्तरिन्धु । देवो पावसिस । सुरियोधि अस्य गतो । अन्य-कारो आतो । तं ताय विनाव गेह गन्त्वो कह मानि चुते गगानो ताब उत्तिष्णा अय न न जानाम कह गतानि । आत्रका विविभित्वा पि न परिस्तु ।

सा महाजिरत विरक्ती उदकेन वृष्ट्रमाना अह्-४न्तनमये बांधिवनस्य पणमालाममीय पाएणि । स्रो तस्मा सह सुत्वा मानुपामम महो परिचाममस्या निर्मित्यानि नितृतक आदाव नदीनीर गन्या न दिस्वा सा भाषि मा भाषीति अस्मानेत्वा नापकणे थाममस्या निर्मित्यानो परवा त उनिक्षिपत्वा अस्मामप्र आने-त्वा अस्मा करवा अद्यक्ति । मीते विस्तत मध्रानि फालाफानि उपनामिन । तानि लादित्वा दिन कर्य वास्मि-कासि ? कथ च गगाय पनिनामीनि पुष्छि । सा त पर्वति आरोजेमि । अथ न त्व एत्येव वमानि पण्णमालाय वमानेता द्वेदित स्वय अभ्योकामे विस्तत महर्यानि मच्छानि आह । सा इस तापस सीरुभेद पापना महेत्वा गमिससामीति न गच्छिन । अथ नच्छन्त काले दरिवकुनं हरिवलीहरू दस्मेत्वा तस्स सीरुभेद परवा आन अन्तर-कापित । सो त गहेत्वा अरुभे येव बस्ति । (२५२)

अथ न मा आह-अय्य ! कि नो अरञ्जवासेन ? मनस्मपथ गमिस्सामाति ।

गो त आदाप एक पञ्चन्तगामक गन्त्वा तक्कप्रनियाय जीविक कलेखा त पोसेनि । तस्म नक्क विकिर्शणस्यः जीवतीनि तक्कपण्डितीनि नाम अकसु । अवस्म ते गामवासिनो परिव्यय दत्या अम्हाक मुयुन-दुवुनक आचिक्चन्तो एत्य वमानि गामद्वारे कृटिय वासेसु ।

तंत्र च समयेत चोगा पव्यता ओष्टह पण्यत्त पहरात्त । ते एकदिवस त गाम पहरिस्वा गामवासि-केहियेव भण्डाति उम्बियापेत्वा गण्डत्ता तरिम संदृष्टिकीतर प्रहेत्वा अनती बमत्ट्ठात गत्त्वा सेमजन विस्त-जमेतु । बोग्वेट्ठको पन तस्सा रूपे बोज्जत्त्वात अत्तती भरियं अकामि । बोधिमत्ती हत्त्वप्रामा कहित्त पुण्डि । वांग्वेट्टकेन पहेत्वा अत्तामि मिर्ग्वा कताति च मुत्वापि न साज्यत्व मार्वा विस्तासित त्वा आपान्त्व-स्मतीति तस्मा आपमत ओलोकेन्तो तत्येव विमा । सेट्ठिशीतापि चिन्नेसि-अह इथ मुख वसामि ।। कदाणि म तक्कपण्डिती किञ्चिद निस्साय आपान्त्वा हतो आदाय गण्डेय्य अवेतस्मा मना परिवाधिस्मामि युवसामें सम्पियायमाना विय त पक्कोसापेत्वा धातापेय्यस्ति । सा एक मनुस्स पक्कोमित्वा-अह इथ दुक्ख जीवामि, तक्कपण्डितो म आगन्त्वा आदाय गच्छतति-सासन पेदेसि ।

भो तं सासन भुत्वा सदृहित्वा तत्थ गन्त्वा गाभद्वारे ठस्वा सामन पेमेसि । मा निक्वियत्वा त दिस्वा अम्य । सन्ते मय देशिन गोक्कस्माम बोरजेंट्टको अनुकल्पत्वा उनोशि अम्हे धातेस्सति रानिभागं गांक्कस्सा-मातित अनेत्वा भोतेत्वा कोट्टके निस्मेयापिक्या साथ बोरजेंट्टकस्म आगन्त्वा मृत् विवत्वा मनकाले-माप्ति ! सन्ते द्वमाय केवाय तब सपन 'पस्पेव्यासि किलिन न करेय्यासीति आह ।

इदञ्चिदञ्च करिस्सामीति ।

किपन सी दूरे ? ननुकोट्ठके निसिन्नोति ?

चोरजेट्ठको उक्क आदाय नत्व गत्वा न दिन्या गहेत्वा गेहमज्ज्ञे पातेत्वा कपारादीहि यथार्गव पोषेमि । सो पोषियमानीपि अञ्ज िञ्च बन्या "कोधना अकतञ्जू च पिमुणा मित्तदूभिकानि" एनकमेव वर्दानि । बोरो न पोषेत्वा वस्थिता निषठजायित्वा सायमाम भूज्जित्वा मिष्य । पुबुद्धी जिल्लाय मृगय पुन त पोषेतु आपि । सोपि नानेव चनारि पदानि वर्दानि । बोरी चिन्तिस-अय एव पीषियमानीपि अञ्ज किञ्च अवत्वा इमानेव चनारि पदानि वर्दानि पुन्छस्मामि नन्ति त पुन्छि-अस्भो पुरिन । त्व एव पोषियमानीपि कर्कम । स्वाप्त पहने पहने पहने पहने पहने प्रतिवासनीपि कर्मा । स्वाप्त वर्दानि वर्दानि ? रिपशे

तदकर्गण्डतों—नेतिह सुणाहीति त कारण आदितो पट्ठाय कथेमि—अह पुख्ये अञ्चय-वामिको एको तामनो झानल्यामी । स्वाह एन गतास बुस्हमा उत्तारेखा परिवर्गण । अथ म एसा पलोभेरबा झाना परिवर्शमा । स्वाह अरच्य पहाय एतं पोखेरतो पच्यत्तामको वसामि । अथेसा चोर्रोह इधानीता अह दुक्ष्य वसामि, आरस्वा म नेतृति मध्ह मामन पेसेस्वा इदानि तब हस्थे पानेमि । इमिना कारणेनाह एव करेमीनि

चांगी चिन्तीय-वा एमा एवरणे गुणसमात्रे उपकारकं एव विश्वादिष्यित सा मध्ह कनरस्राम उपहव न करंद्र्य ? हारनस्त्रा एमापि। सी तनकर्षाण्डत अस्सासेत्वा त पद्मोषेत्वा स्त्या आदाय विक्ष्यम एव पुरिन्त गाम-हारे घानस्मामीपि क्या ताव मढि बहिगाम गस्त्वा एत हत्ये ग्रष्टापित तताय हत्ये गाहापेत्वा स्त्या आदाय तनक-परिट्यत पहरानी विस्त त हिथा छिन्दित्वा ससीम नहत्त्वा तकक्ष्याण्डत किताह पणीतभोजनेन सन्त्राणत्वा-ष्ट्यापित कह गीमस्मामीपि आह

नक्कपण्डिनो–घरावासेन में किच्च नरिथ इसिपब्बज्ज पश्चिजित्वा तत्थेव अरञ्जे वसिस्सा-मीति आह ।

तेन हि अहस्पि पब्बिजस्मामीति । उभीपि पब्बिजत्वा त अरञ्जायतन गल्त्वा पञ्चअभिञ्जा अर्ह च समापनिया निव्यन्त्वा जीवितपरियोगाने ब्रह्मलोकपरायणा अहेमु ।

मत्था इमानि हे वत्थिन कथेत्वा अनुसन्धि घटेत्वा अभिसम्बुद्धो हुत्वा इम गाथमाह-

कोधना अकतङ्ज् च पिसुणा च विभेविका । बह्यचरियं चर भिक्खु! सो सुखंन विहाहिसीति ॥

तत्राय विष्कर्या—भिक्तु [†] हन्यियो नामेना क्रीवना उपाप्त कोष निवारेनु न सक्कीति । अकत-ञ्चू च अनिमहत्त्रीय उपसार न जातिला विसुषा च पियमुञ्जभावकरणमेन क्य कर्वेतिन । विभोदका मिने भिन्दिनि मिन्येवस्व कवनमीलायेव । एवक्षेत्रि तपकस्मीह समझारता एना किन्ते एनाहिट्ट वहाव्यस्थि चर सिक्कु व्याह संयुन्तिनिर्म परिमुद्धदृदेन बहुवानिय नाम त चर सी मुन्न न विहाहिस सी न्य एत बहु

चरिसवासं वसत्तो झानसुत्रं मन्मनुत्रं फलकुत च न विहाहिसि । एतं सुत्रं न विवाहिस्ससि । एतस्मा सुत्रा न परि-हापिस्ससीति अत्यो । न परिहायसीतिपि पाठो । अयमेवस्यो ।

सत्या इम धम्मदेनन आहरित्वा सन्वानि पकासेसि । सन्वपरियोसाने उनकष्ठितभिन्त्र कोता-पत्तिकले पतिट्ठीह । सत्यापि जातक समोधानेसि । तदा चोरजेट्ठको आनन्दो अहोसि । तनकपण्डितो पन अहमेवाति ।

तक्कजातकं [२५४]

४. दुराजानजातकं

मास नग्द इच्छति मन्ति इद सत्था जेतवने विहरन्तो एक उपासक आरब्भ कथेसि ।

पचसपस्रवस्य

एको किर साबत्यिवासी उपातको तीन् अरणेमु पञ्चमु च मीलेम् पतिटूती बुढमासको धम्म-मामको समामको। अरिया पनस्त दुस्तीला पापधमा। य दिवस मिच्छाचा चरति त दिवस सतकीता दासी बिय होति। निच्छाचारम्म पन अन्तदिवसे सामिनी बिय होति चण्डा फरसा। सो तस्सा भाव जानित् न सककोति। अञ्च ताय उच्चाल्हा बुढ्पट्टान न गच्छित। अञ्च न एकदिवस गच्छप्णानि आदाय आगस्या बन्दिला निस्त्र मन्या आह-किन्न थो ल उपातक। सत्तृद्धिवसे बद्दपट्टान नामच्छाति ?

घरणी में भन्ते । एकस्मि दिवसे मतकीता दासी विय होति एकस्मि सामिती विय चण्डा फरुसा । अहं तरसा भाव जातित न सक्कोमि । स्वाह ताय उच्चालहो बृह्वपट्टान नागच्छाभीति ।

अथस्म बचन सुन्दा सत्था-उपासक ! मातुगामस्म भावो नाम दुग्जानोति । पुटबेपि ते पण्डिता कथीयम । न्व पन त भवसंबेपगतत्ता सन्तवस्वेत न सक्कोमीति बत्त्वा तेन याचितो अतीत आहरि-

श्रतीतवत्यु

अतीने बारणिस्तव बहादनं रण्य कारंन्ये शेषिमणी दिसारामीक्यों आविश्यो हृत्या परम्याणवस्त अस्तानि सिष्य सिक्यानित । अपेको निरोग्ट्रवासिको ब्राह्मणायवकी आगन्या तस्य सन्तिके सिष्य उत्तरगहन्तो गहाय दिख्या दिव्यविल्वो हृत्या न भीर्य बहुना तस्य सार्वाण्यानेत्य वस्ताने हे तिस्यों केश आविश्यास अगुन्त न सम्बद्धान । या पत्तस्य भीर्या दुर्माला पाष्यस्या । विष्यवासर् विकाशिक्षके दासी विद्य होति । अविक्यादिवसे सार्वित्ती विद्य कण्डा परमा होति । सो तस्या भाव जानित अगवकोलनो ता उद्यालाने अग्रवत्यको आवित्यस्य उपद्वान न गच्छति । अय न सन्तृद्विको अनिक्यास्य आयान-विद्याला । सार्वाण्य । गुर्कादिका इच्छति पत्र्योति दासी विद्य तिहत-स्ताना होति ग्रविद्यस्य सार्वित्य । यदा वण्डा परमा । अह तस्या भाव जानितृ न सक्कोमि । ताय उद्यालाहो अक्ट्रविक्षो नुस्त्राक उपद्वान गावगोहीति ।

आर्चारयो-एवमंत माणव ! इत्थियो नाम हुम्मीला अनाचार विष्णदिवसे मामिक अनुवत्ताल दामी विष निहत्तमाना होत्ति । अनाविष्णदिवसे पत्त मानत्यद्वा हुग्या मामिक न गणेति । एव इत्थियो नामेना अनाचारा दुम्मीला ताम भावो नाम दुरजानो । तामु रच्छत्तीमूणि अनिच्छत्तीमूणि मद्यसेनेत्व भवि-तव्यक्ति वत्या तम्मोबादवनेत इम गाथमाह-

मासुनन्दि इच्छतिमंमासुसोचिन इच्छति। योनंभावो दूराजनो मच्छस्सेवोदके गर्तन्ति।।

तत्व मासु निष्ट इच्छिति मिल गुरारो नियानम्म । अब इत्थी म इच्छित पत्थित मिष्ठ सिनंद करो-तीर्ति मा तृष्टि । मा सु सीचि न इच्छतीति अय म न इच्छतीतिष्टि मा मीचि तत्स्या इच्छानाय निर्देश अतिच्छानायाय परिष्ठ अत्या मज्यानो होहीति दीपेति । थीनं भावी दुरायोगीति व्याम निव्या भावी ना प्रतिक् मायाय परिच्छता दुरायानो । यथा कि ? मच्छासोसोदके ततित यथा मच्छ्यमन उदकेन परिच्छात्रत्वा दुरुबान तेनेव मो केव्हें आगते उदकेन गमन परिच्छादेत्वा पनायति । अनान परिच्छा ते दीत । एवमेच इत्थियां महत्तिम्य दुरसीलकम्म कत्या मय पवस्था न करोमाति अनना कनकम्म इत्थिमायाय परिच्छादेत्वा सामिके वञ्चित्त । एव इत्थियो नामेता पायकम्मा दुरायारा । तामु मज्यसो येव मिलनो होनीति । एव बोधिसत्ती अन्तेवासिकस्स ओवाद अद्यासि । ततो पट्टाच सो तस्सा उपरि मज्झतो अहोसि । सापिस्स भरिया आचरियेन किर मे हुस्सीनभावो जातोति ततो पट्टाय न अनाचार चरि । सापि तस्स उपास-कस्स इरवी सम्मासन्बुद्धेन किर मस्ह दुराचारभावो जातोति ततो पट्टाय पापकम्म नाम न अकासि ।

सत्यापि इमं यम्मदेसन आहरित्वा सच्चानि पकासेति । सच्चपरियोसाने उपासको सोतापतिफले पतिहुहि । सत्या अनुसर्गिय पटेत्वा जातक समोघानीस । तदा जयस्पतिका येव इदानि जयस्पतिका । आच-रियो पन जहमेव जहोसिन्ति ।

देराजानजातकं।

५. अनभिरतिज्ञातकं

यथा नदी च पन्थी चाति इव सत्था जेतवने विद्वरन्तो तथारूपं येव उपासक आरम्भ कथेसि ।

पच्चपञ्चवत्य

सो पन परिगण्हन्तो तस्सा दुस्सीलभाव अस्ता व भण्डितो चित्तव्याकृतताय सत्तदृदिवसे उपट्ठान न आगमासि । सो एकदिवस विद्यार गस्त्वा तयागत बन्दित्वा निमिन्नो कस्मा सत्तदृदिवसानि नागतोसीति वन-भिर्या मे भन्ते 'दस्सीच, तस्सा उपरि व्याकचित्रताय नागतोसीति ।

सत्या-उपासक[ा] इत्थीस् अनाचारा एताति कोप अकत्वा मज्यन्तेव भवित् बट्टतीति । पुत्र्वेषि ते पण्डिता कर्यायम् । त्व पन भवन्तरेन पटि-ज्यन्नता त कारण न सल्लबनेसीति बत्वा तेन याचितो अतीन आहरि--

श्रतीतवत्थ्

अतीने वाराणितय ब्रह्मादने रज्ज कारेरते बोधिसत्ती पुरिमनयेनेव दिसापामोक्सो आचरियो अहोसि । अयस्य अन्तेवासिको भरियाय दोस दिस्वा व्याकृतिचत्तताय कतिपाह अनागत्वा एकदिवस आचरियेन पुन्धितो त कारण निवेदेसि । (२५६)

अथस्स आचरियो-तात ! इत्थियो नाम सब्बसाधारणा । तासु दुस्सीला एताति पण्डिता कोपं न करोन्तीति बत्वा ओबादबसेन इम गाथमाह-

यथा नवी च पन्थो च पानागारं सभा पपा। एवं लोकित्थियो नाम नासं कज्भन्ति पण्डिताति ॥

तथ यया नवीति यथा अनेकतिनथा नदी नहानतथाय सम्पत्तसम्पत्तान चण्डालादीन व्हत्तियाधीनिय माघारणा, न तर्य कीचि नहामिन् न लक्षणि नाम । प्रचौति आदील्पि यथा महामम्पोपि सखेल माधा- रखा, न कोचि नेन मन्तृ न नर्भान । पानामादिय गुरागृत सखेस साधारणा । यो यो पानुकांभी सखेत तथा पर्वमति नुप्रश्निकेवित निवस्ति । प्रश्नाकिवित निवस्ति । प्रवासिक सम्पत्ति साधारणा । न तत्थ कोचि पवि सित् न नर्भात । महामम्पे पानीयचाटियो ट्रोग्वा कता स्वपास सम्प्री साधारणा । न तत्थ कोचि पानीय पिवित् न नर्भात । एवं सौकित्ययो नाम एवमेव तात माणव । इसमिन लोचे दृष्टियोपि सब्बसाधारणा । तेनेव साधारणा । तेनेव साधारणा । स्वपास माधारणा । स्वपास स्वपास स्वपास स्वपास स्वपास स्वपास । स्वपास स्व

एवं बोधिसत्तो अन्तेवासिकस्स ओवाद अदासि । सो तं ओवाद सुत्वा मण्डतो अहोसि । भरिया-पिस्स आर्चीरयेन किरम्हि ज्ञातानि ततो पट्टाय पापकम्म न अकामि । सम्मापि उपासकस्स भरिया सत्थारा किरमिस्ट ज्ञातानि ततो पट्टाय पापकम्म न अकामि ।

सत्या इम अम्मदेसन आहरित्वा मच्चानि पकामेसि । सच्चपित्योसाने उपासको सोतापांतपः स् पतिद्वासि । सत्यापि अनुसन्धि घटेत्वा जातक समोधानेमि । तदा जयम्पतिकाव एतरहि जरम्पतिका । आचरित्यब्राह्मणो पन अहमेव अहोसिन्ति ।

प्रतिभागिकातकः ।

६. मुदलक्खणजातकं

एका इच्छा परे आसीति इद सत्या जेतवने विहरन्तो संकिलेसं आरब्भ कथेसि ।

पच्चपन्नवत्थ

एको किर सावस्थिवासी कुनपुत्ती सत्यु धम्मदेसन सुत्वा रतनसासने उर^र दत्वा पश्चित्रसा पटि-प्रमको योगाववरो अदिसद्धुकम्मद्वानो हुत्वा एकदिवस सावस्थित पिष्ठाय वरमानो एक अनकतपटियत इस्थि दित्या नुभवतेन इस्तियानि भिन्दित्वा ओलोकेसि । तस्स्वभन्तरे किलेको नित्र । वास्ति आकोटि-तब्वीरकस्त्री विय अहीसि । सो तनो पट्टाय किन्येनसनिको हुन्या नेये नवस्सार न चित्तरसाद (२५७) नभति । भन्तिमनमपटिमागो मामने अनभिरतो पहलकुकैमणोभो दीचनको निजिद्धचीवरो अहीमि ।

अथस्स इन्द्रियविकार दिस्वा सहायका भिक्ष्यू—िक्षु खो ते आवृसो † न यथा पोराणानि इन्द्रियानीति पुच्छिस् ।

अनभिरतोस्मि आवसोति ।

अथ न ते सन्धुसन्तिक नियसु। सत्था कि भिक्त्यवे [।] अनिच्छमान भिवलुं आदाय आगतत्थाति पच्छि।

अय भन्ते ! भिक्खु अनभिग्तोति ।

सच्च किर त्व भिक्खु! अनभिरतोति ?

सच्च भगवाति ।

को त उक्कण्ठापेसीति ?

अह भन्ते $^{\dag}$ पिण्डाय चरन्तो एक इस्थि इन्द्रियानि भिन्दिस्वा ओलोकेसि । अत्र मे किलेसो चील । तैनिम्ह उक्कण्ठितोति ।

अथ न सत्या-अन्यक्तिरमेत भिक्कु । य त्व इन्द्रियानि भिन्त्या विभागागरमण स्पर्यनंत क्षेत्रीत किलेबीह किप्पत्ती । पुत्र्यं प्यव्याधिण्डाब्रहुसायानिलाभिक्तं झात्रवक्तं विक्तंसे विक्तस्यभेवा विसूद्धिका गंगनतत्वया बोधिसत्तायि इन्द्रियानि मित्त्या विक्षमागरमण ओलोक्समाना झाना गरि-हादित्या किलेमीह किप्पता महायुक्त अनुभीवम् । निह निनंदेडप्पाटनकवातो हित्यसत्तमृण्डग्यक्तक महा-अब्बुडम्मुक्तवानी विक्रमेट विक्तृहाच्युक्त महायमुद या पन मोन्यक्वानो ब्यूडमत्ताक किम्माचि देव गण्डात, एव उत्तमबृद्धीन नाम विमृद्धीचनात बोधिमनाल अञ्चाणभावका किलेमा तथि क निज्यस्मानि ? विमृ-द्वापि सत्ता मिक्तिस्तान । उत्तमयस्त्रसामीगोपि अयम पाषुण्यतीति क्वा अतीत आहीर-

प्रतीतवस्थ्

अतीते बाराणीमय बद्धादते रज्ज कारेन्ते बोधिमत्तोकामिरट्ठे एक्स्म महाविभवस्म बाह्यजन्म कृते निद्धतिन्त्वा विज्ञन्त पत्तो सब्बीसपान पार गन्त्वा कामे पहाय इमिपब्बज्ज पद्धजिन्दा कमिणपरिकम्म कन्दा अभिज्ञा च समापत्तियो च उत्पादेत्वा झानमृत्रेन बीनिनामेस्तो हिमबन्तपदेने वास कप्पीम । सो एक्सिम काले लोणपिन्यलमेवनत्थाय हिमबन्ता आंतरित्वा बाराणिमय पत्था राज्याने विस्तया पुनिद्यमे कत-सरीर-पदिक्षणाने रनवासमय निवसनपपायन सण्डलेखा अजिन एक्सिम असे करवा जटामण्डल बन्धित्वा बारिकामजादाय बाराणिसय भिक्साय बरमानो रज्ञी परद्वारं पापुणि । राजा चस्स चरियाविहारे^र येव पसीदित्वा पवकोसापेत्वा महारहे आसने निसीदापेत्वा पर्णानेन सादनीयभोजनीयेन सन्तप्येत्वा त कतानमोदन उच्यानं वसनत्थाय याचि ।

सी सम्पर्टिच्छ्रका राजगेहे भूञ्जित्वा राजकृत ओववदमानो तरिम उच्याने सोलसवस्मानि विस् । अवेबहिबस राजा कृति पण्डन्त वृत्तमेतृ गण्डनो मृतुनम्बण नास अगमहेसि (२५८) अप्पमता अव्यस्स उच्छान करोहीत क्या अगमामि । वीपमानी रञ्जो तनामानती पट्टा कताने रच्चानेत्वा गृह गच्छित । अवेबिदवस मृतुनम्बणा वीधिसतस्स आहार सम्पादेत्वा अञ्च अच्यो चिरामतीति गम्बोदकेन नहासिका सवानकारपनिमण्डिता महातने चृत्वमस्मन पञ्जापत्वा वीधिसत्तस्स आगमन ओलोकसमाना निवरिक्ष

वोधिसतीपि अत्तनो वेलं सल्वक्षण्या आना बृद्धाय आकासेनेव राजनिवेमनं अगमासि । सुवृत-ब्लाणा बालवीग्यह सुन्याव अवयो आनतीनि वेगेन उद्गृहि । तस्ता वेगेन उद्गृहिन्याय महत्ताटको मस्ति । तापमो मीहण्डवने पिक्सना देविका मिन्यान्याण्यान्याण दिस्या दिख्यानि भिन्दिरना सुमवनेन ओक्सो-केसि । अवस्य अग्मन्तरे किलेमो विन । वासिया पहटावीग्यन्या विव्यवहासि । ताववेस्सम् क्षान अन्तर-गायि । द्विष्यवस्या काको विव्य अहोसि । सो दिवकोव आहार ग्रोटवा अम्पिज्याव किलेसस्मिनतो पासाया अवस्य उच्चान गल्या पण्यामा पर्विमान्या पत्रक्यायमनस्स हेट्टा आहार उपेरवा विसमापारम्मणे बढो किलेमिंगना उद्यानाने निराहारताय स्वक्यानो समिद्यासि क्लक्स्यम्के निर्पाठन ।

सप्तमे दिवसे राजा पत्त्रपत्त वृत्तमोत्त्वा आगतो नगर पर्दास्त्रण बत्त्वा निवेसन अगत्वाव अग्र्य प्रसा-मीन उच्यान गत्वा पञ्चाना पितिस्ता न निपत्तक दित्त्वा एक अफामुक जात स्टेडोन पञ्चमाल मोबापेत्ता पारे परिस्ताजनो-कि अच्य | अलामुकान पृष्टि ।

महाराज ! अञ्घा मे अपासक नित्य, किलेसवसेन पर्नाम्ह परिवद्धचित्तो जातोति ।

कट परिवदन्ते अध्य ! चित्तन्ति ?

मदलक्षणाय महाराजाति ।

माधु अय्य । अह मृहुनम्बण तुम्हाक दम्भीति तापम आदाय निवेसन पविभित्वा देवि सुख्यालका रप्तिमण्डित करवा तापसम्म अदासि । ददमानो येव मृहुनक्षणाय सञ्ज्ञामदासि तया अत्तनो बनेन अय्य राध्यत थायासितःव्याना ।

साध नेव ! रक्खिस्सामीति ।

तायमो देवि गहेत्वा राजनिवेसना ओनिर । अथ न महाद्वारतो निक्खन्तकाले-अथ्य [।] अम्हाक एक गेह लढ वटटित । गच्छ राजान गेह याचाहीति आह ।

तायसो गरस्या गेह याचि । राजा मनुस्मान बच्चकृटिकिच्च साध्यमान एक छङ्डित गेह दावेसि । सो देवि गहेस्या तस्य अगमासि । सा पविसिन् न इच्छिनि ।

कि कारणा न पविससीति ?

अमुचिभावेनाति ।

इदानि कि करोमीति ?

पटिजमाहि तन्ति कथा रङ्गो मन्तिक पेमेत्वा गच्छ, नुहाल आहर, पच्छि आहराति आहरापेत्वा अनुचि व नकारङ बहुद्दाणेवा गोमय आहरातेत्वा निम्माणेवा पुनिष गच्छ मञ्च आहर, दीग आहर, अख-रण आहर, वाटि (२४६) आहर, पट आहराति एकमेक आहरापेत्वा पुन उदकारातिन कल्याय आगामेति । सो घट आहारा उदक आहरित्वा चाटि परेत्वा तहानोदक सञ्जेवा सबसे अण्यरि ।

अथ न सबने एकतो निर्मीदन्त फासुकामु गहेत्वा आकर्डित्वा तव समणभाव वा बाह्मणभाव वा न जानामीति ओनमेत्वा अननो अभिमुख आकर्डित सो तस्मि काले सीत पटिलाभ । एत्तके पन काले अञ्जा- २२२ जातकहुकचा

णो अहोसि । एवं अञ्जाणकरणा किलेसा नाम । "कामच्छान्यनीवरण भिक्कवं ! अन्वकरण अञ्जाण-करण "नि आदितेत्व वत्तव्व । सो सींत पटिलभित्वा चिन्तेसि । अयं तण्हा वहक्रमाना मम चन्हि अपायेहि सीस उम्बिचित् न दस्ति अञ्जेव मया इम रञ्जो निय्योदेत्वा हिमबन्न पविसित् वट्टतीति । सो त आदाय राजान उपसक्तित्वा—महाराज । तव देविया मय्ह अत्यो नित्य, केवल से इम निस्साय तण्हा वद्दिताति बत्वा इम गायमाह —

> एका इच्छा पुरे आसि म्नलद्वा मृदुलवलणं। यतो लद्वा मलारक्ली इच्छा इच्छं विजाययाति।।

तवाय विण्डल्यो —-महागज । मय्ह इम तव देवि मुदुसक्कण अलभित्वा पुरे अहो बनाह एन लभेग्यन्ति एका इक्काधानिस एकाव तय्हा उपारिज । यतो पन से अब अलगारको विसालनेता सोभनलोवना सद्धा अय से ता पुरिमिका इच्छा गोहनण्ड उपर्काणतण्ड उपयोगनण्डित अवस्थित अञ्च नानप्पकार इच्छा विकायण जनेति, उपपारिन । सा लो पन से एव वहडमाना इच्छा अपायतो सीसं उन्तिकानित् न दम्बति । अनस्ये इसाय भरियाय त्व येव तव भरिय गण्ड । अह गन हिमक्त गमिस्तामीति ।

ताबदेव नट्ठ झान उष्पदित्वा आकासे निसिक्षो धम्म देसेत्वा गञ्जो ओवाद दत्वा आकासेनेव हिम-बन्दा गन्त्वा पुन मनस्मपथ नाम नागमानि । ब्रह्माबिहारे पन भावेत्वा अपरिहीनज्झानो ब्रह्मालोके निर्व्वति ।

सत्या इस भम्मस्रेसनं आहरित्वा शब्जानि पकासिम। सच्चपत्रियोमाने सो भिक्क् अन्द्रतं येव पति-हासि । सत्यापि अनुसर्जिय घटेन्या जातक समोधानेमि । नदा रात्रा आनन्दां, मुद्दुनक्कणा उप्पनवण्या, इसि पन अहसेमारि ।

मुद्दनश्लगाजातकं।

७. उच्छङ्गजातकं

उच्छंगे देव ! मे पुलोति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो अञ्ञानर जानपदित्य आरब्भ कथेसि ।

पच्चपञ्च बत्यु

एकिस्म हि समये कोमलरहरे तथो जना अञ्जावर्गस्य अटबिमुचे कसन्ति । (२६०) तस्य समये अल्वोअटबिच चोग मनुस्में विवृद्धियाया । सनुस्मा ते वोरे परिवृद्धिया अपसन्तात त ठान आगल्या नुस्हे अटबिय बिक्यिया आरोति । ते चोग इसेनि विविद्या आरोति । कोमलरञ्जो अदम् । अयेका इत्यो आगल्या अच्छारण्यमें देश, अच्छादनम्ये देशानि परिवेदनी पुनपून गजनिवचन परिवृद्धि । गात तस्या झह् सुत्या वेधिमस्या अच्छादनित्त आह् । साटक गहेन्या अदम् । सा त दिस्वा नाह एत अच्छादनित्त आह् । सनुस्मा गन्त्या उप्यो निवेदियम् न किरेमा इस्य अच्छादन याचामित सामिक्य स्थानित । स्थानित स्

अथन राजा पक्कोमापेत्वा---त्व किर मामिकच्छादन याचसीति पुच्छि ।

आम देव ! इत्थिया हि सामिको अच्छादन नाम । सामिकम्हि असति सहस्समूलम्पि साटकं निवत्या इत्थी नग्गा येव नाम । इमस्स पनत्यस्स साधनत्य '—

> ''नग्गा नदी अनोदिका नग्ग रट्ठ अराजिक, इत्योपि विधवा नग्गा यस्मापि दम भानरो''नि ।

इद सुन आहरितब्ब । राजा तस्सा पसन्नो इमे ने तयो जना के होन्तीति पुच्छि । एकों मे देव [।] सामिको, एको भाता, एको पुनोति ।

राजा-अहन्ते तुट्टो इमेस् तीस एक देमि । कतमं इच्छसीति पृच्छि ।

मा आह—अह देव । जीवमाना एक सामिक लभिस्सामि, पुत्तस्मि लभिस्सामेव, मातापितुन्न पन मे मतत्ता भाताव इल्लभो । भातरस्मे देहि देवाति ।

राजा तुम्मत्वा तयोपि विस्मवजीस । एव त एकिक निस्साय तयो जना दुम्बती मुत्ता । त कारण भिक्चुमङ्गे पाकट जात । अवेकदिवस भिक्कु धम्ममभाय सन्तिपतिना—आवुमो [।] एक इत्थि निस्साय तयो जना दुक्का मुत्तानि तस्ना गुणकथाय निसीदिस् ।

सत्या आगत्त्वा कायनृत्य भिक्ववे एतरिह कथाय मन्निमिन्नाति पुच्छित्वा इमाय नामाति वृत्ते— न भिक्ववे । एसा इत्यो इदानेव ते तयो जने दुक्का मोचेसि, पुर्व्विप मोचेसि येवाति बत्वा अतीत आहरि—

ग्रतीतवत्यु

अतीने बाराणसिय ब्रह्मदने रज्ज कारेने तयो जना अटविमुखे कसन्तीति सब्ब पुरिससदिसमेव । तदा पन रञ्जा तीमु जनेमु क उच्छमीति वुन्ते सा आह—नयोपि दानु न सक्कोथ देवाति ।

आम न सक्कोमीति।

सचे तयो दातुन सक्कोथ, भातरम्मे देथाति।

पुक्तक वा सामिक वा गण्ह, किन्ते भातराति च वृत्ता—एते नाम देव ! सुलभा, भाता पन दुल्लभौति दत्वा इम गाथमाह —-

> उच्छंगे देव ! मे पुत्तो पर्ये घावन्तिया पति। तब्च वेसंन पस्सामि यतो सोवरियमानयेति॥(२६१)

सत्यापि न भिक्कवं [।] डदानेव पुब्बेपेसा इमे तयो जने दुक्वा मोचेसि येवाति इम धम्मदेसन आहरित्या अनुसन्धि घटेत्वा जातकं समोधानेसि । अनीते चत्तारो एतरिह चत्तारोव । राजा पन अह तेन समयेनाति ।

उच्छङ्ग जातकं।

८. साकेतजातकं

यहिम मनी निविसतीति इद सत्था साकेत निसाय अञ्जनवने विहरन्तो एक ब्राह्मण आरब्भ कथेसि । पच्चपन्नवस्थ

भिक्कु धम्मसभाय सिम्निम्बा कथ समृद्रायेम---आद्मी ! टाद्यणी तथानतस्य पिना सुढोदनो, माता (२६२) मद्रामायाति जानाति । जानन्त्रीय सद्धि ब्राह्मणिया तथागत अम्हायः दुणीति बदति । सत्यापि अगिवयनित । सिक्स गो कारणीला ?

सत्था तेम कथ गृत्यः- -भिक्तनो ! उभोषि ते अत्तनी पुनमेव पुनोति बदन्तीति बत्वा अतीत आहरि -स्रतीतबस्य

भिक्तवं ! अय ब्राह्मणो अनीने निरम्तर पञ्चजानिमनानि स्टर् पिना अहाभि । पञ्चजानिमनानि जुर्लापना, पञ्चजानिमनानि सहापिता, एसापि श्रह्मणो निरम्तरमेव पञ्चजानिमनानि सन्त अहीभ्, स्टब्स् जानिमनानि जुल्लाला, पर्चावनिमनानि सहामाना । ग्लाह रिक्टब्र्जानिस्हस्म श्राहमास्ह हस्ये सन्देश्यो विपष्टकानिस्हस्त्र अहारिया हरण सन्दर्शिति तीणि जातिमहस्मानि कथेर्सा अभिमम्बुद्धो हुत्वा दस गायमाह

याँस्म मनो निविसति चित्तं वापि पसीदति, ग्रदिहपुरुवके पोसे कामं तस्मिम्पि विरससेति ।

एव सत्था इम थम्मदेसन आहरित्वा अनुमन्धि घटेरवा जानकं समीधानेमि । तदा ब्राह्मणी च ब्राह्मणी च एने एव अहेस् । पुलीपि अहमेवाति ।

साकेनजानका

°. विस्तवन्तजातकं

धिरत्य तं विसं वन्तन्ति इद सत्या जतवने विहरन्ती धम्मसेनापति आग्ब्भ कथेसि ।

पच्चपन्नबस्थ

थे रस्स किर पिट्रवज्जक खादनकाले मनस्सा सघस्स वह पिट्रखादनीयं गहेरवा विहार अगमंस । भिक्त सङ्घरस गहितावसेस बह अतिरित्त अहोसि । मनस्सा-भन्ते । अन्तोगामगतानस्पि गण्डचाति आहस । तिसम् साणे थेरम्स मद्धिविहारी वहरो अन्तोगाम गतो होति । तस्म कोट्रास गहेत्वा तस्मि आनागच्छन्ते अति-दिवाहोतीति चेरस्स अदस् । चेरेन तस्मि परिभन्ने दहरो आगमासि ।

अथ न थेरी--मय आवमो । तुब्ह टिपतलादनीय परिभव्जिस्हाति आह ।

सो—मबर नाम भन्ते । कस्स अध्ययन्ति आह ।

महाथेरस्स मवेगो उदपादि । सो इतो पट्टाय पिट्टस्वादनीय न स्वादिस्सामीति अधिदृहि । ततो पट्टाय किर सारिपत्तत्वेरेन पिढलादनीय नाम न खादिनपञ्ज । तस्स पिटलादनीय अलादनभावो भिक्लमङ्खे [२६३] पाकटो जातो। भिक्ल त कथ कथेन्ता धम्मसभाय सन्निमीदिस।

अय सत्या--कायनत्य भिक्तववे ! एतरहि कथाय मित्रिशिक्षाति पुब्छि । इमाय नामाति च वने भिक्लवे ! सारिपत्तो एकवार जहितक जीवित परिच्चजन्तोपि न गण्हति येवाति वत्वा अतीत आहरि --

ग्रतीतवत्य

अतीते बाराणसिय ब्रह्मदत्ते रज्ज कारेन्ते बोधिसत्तोपि विसर्वेज्जकुले निज्बत्तित्या वेज्जकम्मेन जीविक कव्येति । अयोक जनपदमनुस्स सप्पो डसि । तस्म ञातका पमाद अकत्या सिप्प वेज्ज आनीयम ।

बैज्जो आह--किन्ताव ओसबेन, परिभावित्वा विस हरामि । दट्टसप्प आवाहेत्वा दट्टद्रानतो तेनेव विसं आकड्ढापेमीनि ।

मप्प आवाहेत्वा विस आकड्डापेहीति ।

सो सप्पं आवाहेत्वा तया अय दटठीति आह ।

आम मयाति ।

तया दददानतो त्व येव मन्त्रेन विस आकडकाहीति ।

भया एकबार जहितकविसं पुन न गहितपुरुव । नाह मया जहितविस करिडटस्मामीति ।

सो दारूनि आहरापेत्वा अभि कत्वा आह-मचे अत्तनो विस नाकहदसि इम अभिगय विसाति । सप्यो अपि अस्मि पविभिन्सामि नेवलना एकवार जहितविस पच्चाविस्सामीति वत्वा इम गाथमाह ---

धिरत्य तं विसं वन्त यमहं जीवितकारणा,

वन्तं पश्चावसिस्सामि सतस्मे जीविता वरन्ति ।

तत्य धिरत्यति गरहणत्ये निपातो । त विसन्ति यमहं जीवितकारणा वन्तं विसं पञ्चाविमस्सामि त वस्त विसं धिरत्य । मतस्मे जीविता बरन्ति तस्स विसम्स अपच्चावमनकारणा य आग्ग पविसित्वा मरण, त सस जीविततो वरन्ति अत्यो ।

एवञ्च पन बत्बा ऑग्ग पविसित् पायासि । अथ न बेज्जो निवारेत्वा न पुरिस ओसपेहि च मन्तेहि च निव्विस अरोग कत्वा सप्पस्स सीलानि दत्वा इतो पट्टाय मा कञ्चि विहेठेहीति विस्मरुजेमि ।

सत्यापि न भिक्लव^{े ।} सारिपुत्तो एकवार जहितक जिवितम्पि परिच्चजन्तो पुन गण्हतीति इस धम्म-देसनं आहरित्वा अनसन्धि घटेत्वा जानक समोधानेसि । तदा सप्पा सारिपत्तो अहोसि । बेज्जो पन अहमेवाति ।

विसवस्तजातकः ।

१०, क्रहालजातकं

न त जितं साथु जितनित इद सत्या जेनवने विहरन्तो चित्तहत्थसारिपुत्तत्थेर आरब्भ कथेसि ।

पच्चपन्नवत्यु

सो किर सावस्थिय एको कुनदारको। अवकादिवत किसत्वा आगच्छत्तो बिहार पविसित्वा एकस्स थेरस्त पत्ततो सिनिद्ध मथुर पणीनभोजन लिभित्वा चिन्नेसि—मय रात्ति दिव सहत्वेन नाना कम्मानि कुर-मानापि एकरूप मथराहार न लभाम, मयापि समणेन मवितव्यत्ति ।

सो पत्रविज्ञा मासदभासण्ययेन अयोनिसी मनसिकरोत्नो किलेसविधिक हत्या विक्रमित्वा पुन भत्तेन किलमन्तो आगन्त्वा पत्रविज्ञा अभिष्यम उत्पण्डि । इमिनाव उपायेन छवारे विक्रमित्वा पत्रवितो । तत्रो सत्तेम भिषकुमाव सत्तप्यकर्णाको हत्या बहुभिषण्च धन्म बांचलो विगस्तन बद्देश्ला अरहन पापुणि । अयस्स सहायका भिषक् —-किसुबो आबुसो ! चित्त । पुत्र्ये विय ने एतरहि किलेमा न बडबेन्तीति परिहास करिसा ।

आवुमो [।] अभव्वी दानाह इतो पट्टाय गिहीभावस्साति ।

एव र्नाम्म अरहत पन्ने घम्ममभाय कथा उदपादि—आधुसो ! एवङ्गपस्स नाम अरहत्तस्म उपनिस्सये सति आयस्मा चिन्नहत्त्रमारिपुन्तां छत्रखन् उपन्वजितो । अहो ! महादोसो प्यञ्जनभावोति ।

सत्या आगन्या कायन्त्य भिवनवे ! एतर्गाह क्याय सीनसिम्नाति पुन्विस्ता इमाय नामानि बुन्ते— भिवनवे ! पुर्वजनिय्त नाम लहुक दुन्निग्यह, आरम्भणबसेन गत्त्वा अन्तीयति । एक बार अल्लीन न सक्का होति विष्य भोनेन् । एवष्ट्यस्स चिनम्स दमयो साथु । दन्तमेव हि त सुख आबहुनीनि वत्या आहु---

> "दुन्निग्गहस्स लहुनो यत्थ कामनिपानिनो, चित्तस्स दमथो साधु चित्त दन्त सुखाबहु"।

तस्स पन दुन्निमाहणताय पुरुवेपि पण्डिता एक कुड्डालकं निस्माय त जहित् अमक्कोन्ता लोभवसेन छुनुबन् उपपृट्वजित्वा सत्तमे पुरुवजितभावे भान उप्पादेत्वा त लोभ निर्माण्डिमृति बरवा अतीत आहिरि —

द्यतीतवत्यु

अतीते बाराणसिय ब्रह्मदत्ते रज्य कारेले बीधिमनो मणिककुले निब्धनित्वा विज्ञान पाणि । कुहालपणिकातितम्म नाम अद्दीम । मे कुहालकेन भूमिपणिकम्म कल्या माकज्येव अनावृक्कपणिकणलाकुलाति व विज्या नानि विक्कणत्तो कपणजीविक कप्पान । न हिस्स एक बुहालक ठपेरवा अञ्ज्ञ धन नाम निव्य । सी एवदियम चिन्तीस विक्मे धरावानेन ? निक्चमित्वा पर्वाजस्मामिति । अवेकदिवस त कुहालक पटि-च्छप्रद्वाने ठरेत्या द्विषय्वज्ञ्ज पत्र्वाजिवा न कुहालकमन्मसित्वा लोभ छिन्तित् अमक्कोन्तो कुष्ट-कृष्ठप्रद्वाने निक्माय ज्याच्यांत्र । एव द्विषय निवयमीति छ बारे त कुहानक घटिच्छमे ठाने निविचणित्वा पत्रविज्ञों वेबप्यव्यविद्यो । १ दृश्यि निवयमीति छ बारे त कुहानक घटिच्छमे ठाने निविचणित्वा

समने पत्र बारे चिन्नीस अह मम इस कुण्कुहालक निस्साय पुतप्पुन उपप्खाजितो । इदानि त महा-निदय पित्सपित्वा पद्धाजित्समामीनि । नदीतीर गत्या सबस्स पतिनद्वान परिसद्धामि पुतामस्य उद्धान्ति । कामता भे देखानि त कुहालक रेड मेहेल्वा नामको थामसम्प्रको सीमस्य उपनिभागे निक्चन् आवित्रजेत्वा अस्वीति निम्मीनेत्वा नदीमर्थ्क विपित्वा जित मे तिन मित्रक्त संहिताद निर्

१ धम्मपद, चिलवग्गो ।

२ स्या०---श्राविज्ञितवा।

तिस्म खणे वाराणसीराजा पञ्चन्त वृत्तसमेरवा आगतो नदिया सीस नहायित्वा सब्बालङकारपित—
मण्डितो हित्यक्वस्थेन मण्ड्यानोत शीध्यानस्स सङ् सूत्वा अय पुरिसो जित मेति वदित, कोनुको एतेन जितते ?
पूर्वा अय पृत्ति जितते ?
अहं ताव विजितसङ्गामो इदानि जय गहेत्वा आपच्छामि,
तया पन को जिलोति पण्डिय ।

बोधिसतो—महाराज । तवा सङ्गाम-सहस्मध्य सङ्गामसतसहस्मध्य जिनन्तेन दुष्जितसेव किलेसान अजितत्ता। ब्रह पन अब्भनरे लोभ निर्मण्डलो किलेसे जिर्णाल कथेलो येव महानदि ओलोकेरब; आपोकिसिणारम्मण भाग निब्बलेरबा सम्पत्तानभावो आकास निर्सादिस्वा २०००। धम्म देसेन्तो इम गायमाह—

> न तं जितं साथु जितं यं जितं श्रवजीयति, तं खो जितं साथ जितं यं जितं नावजीयतीति ।

तत्व न सं जित साथु जिसं यं जिसं प्रवजीयतीति य पच्चामित्ते पराजिजित्वा रहु जित परिलद्ध पुन जितेहि पच्चामित्तिह अवशीयति त जित साथु नाम न होति । करमा 'पुन अवजीयतनो । अपरी नयो-जित युच्चित वहां ने सो प्रवचामित्तिह नाँद युग्निकत्वा अधिमतो त्रयो पुन त्तु जितन्तेसु पराजयो होति सो न साथु, न सोमते । करमा 'यम्मा पुन पराजयोव होति । न लो जिन नाथु जित य जिन नाथ जीयतीति य लो पन पच्चामित्ते तिमस्यवद्या जित पुन तेहि, नावजीयति, यो वा एक्चा लद्यो जयो पुन पराजयो न होति त जित साथु जिन मोमन । मो जयो साथु सोमनो नाम होति । करमा 'पुन नावजीयतनो, त्रान्मा व्यं महाराज ' सहस्यस्वन्तिम सनसङ्ग्नम्बच्चित्र सहतामसीम जिल्लाि महानाव्योच नाम न होति । कि कारणा ' अत्ततो क्रिनेमान अजितना । यो पन एक्बार्गम्य अननो अञ्चन्तरे किलेम जिनाित अय जनमो सङ्गामनीयदांधोति अकासे निसन्नकः एव बुद्धनेन्हाय एठ्डा धम्म देनीम । उत्तनमस्तामरुगंच-

> "यो सहस्स सहस्मेन सङ्गामे मानुसे जिने, एक च जेय्यमत्तान सर्वे सङ्गामजनमो"ति।

इद सुत्त साधक । रञ्ञो पन धम्म मुणन्नस्मेव तदङगपहानवमेन किलेमा पहीणा पव्यज्जाय चित्त नमि । राजवलस्मापि तथेव किलेमा पहीचिम ।

राजा--इदानि तुम्हें कह गमिस्सथाति ? बोधिसन पुच्छि ।

हिमवन्त पविभित्वा इसिपव्बज्ज पद्यजिस्मामि महाराजाति ।

राता नेतिह अहरीम पञ्जीकमामीनि बोधिसननेव सदि तिस्विम । वनकायो ब्राह्मणनहर्णात्का । स्ववा ग्रीणयोनि सर्व्वाप तिम्म ठाने सिंवपतिन्तो जनकायो रच्छा मदि वेत निक्कमि । वारणणेविश्वाना अस्त्राक किर राज कुरावणिवर्गस्य धम्मदेतन सुन्ता पावर्ज्ञाभिम्मूणी हुत्वा सदि वत्त्वकारीन तिस्वत्वापत्र प्रचार कि करिम्मामाति हादमयोजिनकाय वारणिमाया सक्तननगरवानिनो निक्कीमम् । हादमयोजिनका परिला कहोसि । त आदाय बोधिमतो हिमबन्त पाविम तिस्म लगे मक्कम देवरच्छा रे निमिन्नासन उण्हा-कार दस्त्रीस ।

सो आवज्जमानो क्ट्रालपण्डिनो महाभिनिक्समण निक्तनोनि दिन्दा महानमागमो भविस्सिति वसन्द्रान लढु ब्र्टुनीति विस्मकम्म आमन्तेला—तात । क्ट्रालपण्डिनो महाभिनिक्समण निक्सनो वसन-ट्रान लढु ब्रट्टीत। त्व हिसन्तन्पदेन नान मम्मुभिभाग रोगमो तिस्सोन क्रियोन विस्पारो पण्णम्मयोजन असमगद मापेहीति आह । मो मापु देवानि पटिन्सुला गन्दता तथा अकामि । अयंग्रेल्य सदस्त्रेपो । वित्यारो पत्त हत्यीपालकानके आदीभविस्सति । इट्य्न हिन्दुन्य एकपण्डिद्रमेव ।

१ धम्मपद्गसहस्सवग्गो ।

२. स्या०--विस्सकस्मं

ति ससकस्मीपि अस्समपदे पण्णसाल मापेश्वा दुस्सरे मिर्ग च सक्गे च अमनुस्सं च पटिवकमापेश्वा तेन ति सामापेन एकपिकमाप्या निर्मानित्वा अलानो बसलद्वानेष्य अमापि । क्ट्रालपण्डिलीपि न परित आदाय हिमबन्तं पिविस्तवा सकदरित्व अस्समपद गत्वा विस्तकस्मेन मापिन पळ्जिन-परिकवार गहेत्वा पठम अत्ताना प्रकारिता पर्वा विद्या पठम अत्ताना प्रकारिता पर्वा विद्या पठम अत्ताना प्रकारिता पर्वा पत्र । स्वा राजानो सन् राजाने इहिम्सण्डा निर्मा अस्ति । तिस्योजन अस्समपद पूर्ण , क्ट्रालपण्डितो सेसक्तिणेसुपि परिकम्म करवा ब्रह्मावहार भावेश्वा परिसाव कम्मद्वान आविस्ति । सक्त सामापित्वाभिनो हुन्या कृतिहारि भावेश्वा ब्रह्मानोक-परायाणा आहेस । ये पन तेस पारिचरियं अस्ति ते देवलीकरपाया अहेम । १६००

सत्वा एवं भिक्कवं ¹ वित्तप्रामेत किलेनवनेन अत्लीन दुम्मोचय होति उप्पन्न लोभयम्मा दुपजहा एवक्पेषि पिछते अञ्जालो करोन्तीति इस धम्मदेनन आहारण्या सम्बद्धानि प्रकारीम । मन्त्र परियोगाने केचि सोनापन्ना अहेन्, केचि सकदायामिनो, केचि अनाप्तामिनो, केचि अगहन पाष्ट्रीणम् । सम्बाधि अनुसन्धि प्रदेखा आतक समोभानीस । तदा राजा आनन्दो अहोसि । परिसा युव्यरिमा, कूर्नाणांखदो पन अहोसानि

> कुद्दालजातक । इत्थितको सनस्रो ।

=. "वरणवग्गवग्णना"

१. बरणजातकं

यो पुक्के करणीयानीति इद सत्या जेतवने विहरन्तो कृटुम्बियपुत्ततिस्सत्थेर आरब्भ कथेसि ।

पच्चुपन्नुबत्थु

एकिस्म किर दिवसे सावित्ववासिनो अञ्चानका साहायका तिसमत्ता कृमपुता गन्मपुणकात्यादीनि गहेला सल्यु धम्मदेवन सुणिस्तामाति महाजनपरिवृता जेववन गत्त्वा नाममातक-विसालमातकादित् योक निसीदिवा मायण्हस्पसे सत्वार नृपिन-पानकातित्व हित्त जिल्लानित्वा प्रमास्त्र गन्दा क्षात्र क

ते आवरियुवरुकाये आराधेत्वा उपसम्पद्ध लभित्वा पञ्च बस्सानि आविरियुवरुकायात सन्तिके विस्तिवा दे मातिका पूण्ण करवा काण्याकरिय ज्ञात्वा तिस्सी अनुभोदना उत्पाष्ट्रित्वा शोवरानि निम्बत्वा राजित्वा समाणभ्रम करिस्सामाति आणिरयुवरुकाये आपृष्टिद्धत्वा सत्थार उपस्कृतिका निरूप्त एकमन्ति निमिदित्वा—स्म भनेते । भवेमु उक्कष्टिता लाहित्वा एकमन्ति निमिदित्वा—स्म भनेते । भवेमु उक्कष्टिता लाहित्वा एकमन्ति निमिदित्वा—स्म भनेते । सत्या तेन अद्दीनमाय कम्मद्राने क्ष्यानि विदित्वा एक कम्मद्राने क्ष्यानि ।

ते सत्थु मन्तिकं कस्मद्रान गहेरवा सत्थार बन्दिरवा पदिनवण करवा परिवेण गन्या आविरियुपरुभाये ओलोकेरवा पत्तचीवर आदाय समण्डम्म करिस्सामानि निक्वांमस ।

अश्व केम अभ्यन्तरं एको भिक्क् गांगन कुटुम्बियपुरा तिस्सदंदरो नाम कुगीलो शीनविश्यो ज्यानिद्धी।

मे एव किसेनि अह नैव अञ्चले विष्कृत प्रधान पर्राहेद न (२६८) भिक्कावर्षण्यापरेग साक्तस्तार्गि,

को मे गमनेत अदि निवित्तस्तार्थिन। ने सी विषय अभ्यानिद्याने भिक्कावर्णस्त्रात्वाने । निव्य भिक्क्ष्य कोसलेमु चारिक चरमाना अञ्चातर पञ्चलगाम गस्दा न उपनिस्साव एकिम अञ्चलामाने कम्म उपगस्त्रा अस्ती नेमाम अप्याना घटेला वायमता विष्यनगाराक्ष्य गाहरोत्वा पर्दाद उकादमाना अञ्चल पंचा वृद्ध-बस्ता पराहेदा परित्तवागु क्यत् आप्रोक्तमाना नित्तानित्वा प्रदान पुर्वन तेवतन पत्ता पराचीदर परि-सामेत्वा आचित्तपुराक्तमं दिस्या तथागत दहुकामा मत्यु मनिक गल्वा विद्यान निर्मादम्। मत्या नेहि सिक्ष प्रमाना ।

क्ट्रुविवयनुनितम्प्येरो मलार नेस गुण्याल कर्लन दित्या मर्याण सम्प्रणस्य कानुकासो जातो । ति स्त्री मिलकु मर्याप्त भन्ते । तसेव अग्ड्यालास गल्या विग्तमामानि मत्यार आपुष्टित् । मत्या साधृति अनुवाति । ते सत्यार वीत्यत्या परिलय आगस्य । अय सो क्ट्रुविययुक्तित्सस्ययो तिनभागसम्मतन्ते अन्यारद्ववित्यो हुत्या अनिवेगेन समण्यस्य करोत्तो मण्डिसयासममनन्तरे आसम्बण्यत्य निस्साय ठिल-क्रीव निद्यान्त्री परिवर्तित्या पनि । उर्गृष्टक तस्म भिन्ति । वेदना महत्ता जाता । तेस भिम्मकृत ते पटि-अग्यताल मान न सम्पिज ।

अय ने उपट्वानवेलाय आगते सत्या पुच्छि----नन् तुन्हे भिक्खवे । स्वे गमिस्सामाति हिस्सो आपुच्छि, वाति ?

आम भन्ते । अपि च स्त्रो पनम्हानं सहायको कटुम्बियपुत्ततिस्तत्थेरो अकाले अतिवेगेन समणधम्मं करोन्तो निहाभिभूतो परिवन्तित्वा पतितो उरिट्टकरस भिन्ना त निस्साय अम्हानं गमन न सम्पन्नन्ति ।

सत्या न भिम्मबर्थे ! इदानेबेस अतनी हीनविरियभावेन अकाले अतिबेशेन विरियं करोलो तुम्हाकं गमनन्तराय करोति पुरुषेवेस तुम्हाक गमनन्तराय अकासि येवानि वत्वा तेहि याचितो अतीत आहर्रिः——

म्रतीतवत्थ

जतीते गन्धाररहुँ तककसिताय बोधिसतो दिवापामंक्यो आवरियो हुत्या पञ्चमाणककतताति सिप्प उपाण्यांचिति । अस्वत ते साणवा एक-दिवस दार आहरण्याच्या अण्डान् मत्या दाव्हिन उद्धांन्यू । तेश अन्यरे एको कूमीतमाणा महत्त वरणकक दिवसा मुक्कम्बन्धे एसोति सञ्चाया पुतृत ताव निर्वाज्ञवा पच्छा प्रकल्प अभिक्षित्वा दावित पातेत्वा आदाय गमिस्सामीति उत्तरसाटक पत्थिग्या निर्माण्यत्वा काकच्छमानो । तिर् ओक्कमि । इतरे माणकका दाककलापे बीम्पत्या आदाय मच्छन्ता त पारेन गिट्टिय पहरित्वा पद्योष्ठत्वा अग-मत्ता । दिवरे

महेला आपनी उद्घाय अवसीति पुन्छित्वा पुत्रिक्तवा अर्थितातिहोत न स्वस्य अभिवाहित्वा साख गहेला अतानी अभिमृत्त आवर्षिद्वत्वा भञ्जना भिजिजवा उद्दितकोटिया अनानो अर्थित भिज्याय एकेन हर्यये जान्या जान्या प्रकार अस्य अर्थित ते पिषाय एकेन हर्यये जान्या जान्याचित्र माने अर्थित क्षेत्र कार्याय केरेन गत्वा तेहि पानितान दास्त उपरि पानेसि । त दिवस च जनपदगास्त्र एक कुल स्व बाद्याणवाचन करिस्सामानि आचरियो माणवर्षे आह—नाता । स्वे एक गाम गत्व्य तुम्हे पन निराहारा न सिक्सस्य गन्तु पानेव यात्र पानेवा तत्त्व गत्वा मानेवा अर्थाय वात्र पानेवा अन्तर्भ पत्र प्रकार प्र

ने पातोच यापुपाचनस्थाय दासि उद्घापेन्या निष्ण नो यापु पचाडीति आहम् । सा दार्शन गण्डत्ती उपिर जिर्मान अन्नवरणवाहनि गहेत्वा पुनप्पन मुखान दहमानापि और्मा उज्जानेन अमक्तानो सुरियं उद्घापि । माणवका अनि दिवा जानो उदानि न सक्का गर्नुनि आविष्यम्म सन्ति अमाचा । आविष्यो कि ताना । न मनत्यानि । कि कारणानि ? असुको नाम क्सीतमाण्यो अहींम साढि दाहवन गन्त्वा वरणस्थ्यम् ने निहासित्वा पच्छा वेषेनास्थ्य अनिक रिण्दापेत्वा अन्ववरणस्थाम् ने निहासित्वा पच्छा वेषेनास्थ्य अनिक रिण्दापेत्वा अन्ववरणस्थाम् ने नामानिका नामान मुक्तवरणस्था महेत्वा याचा सुरियम्पुणमा उज्जानेन नामानिका । दीमाना नो कारणीन ममनत्वरायो जातीनि । आविष्यो माणवेन कनतसम्म सत्वा अन्यवाता कर्मा निरामा एक्साच प्रतिका ।

यो पुब्बे कारणीयानि पच्छा सो कानुमिच्छति, वरणकटठभञ्जोव स पच्छा ग्रमतप्पतीति।

तर्य-स्त पच्छा प्रमृतपतीति यो कोचि पुगानो इट पुज्ये कत्तव्य इट पच्छाति अधीममिरवा पुज्ये करणोवाति पटमनेव कत्त्वकत्माति पच्छा करोति अय बरणकट्ठभञ्जो अन्हाक माणवको विय सो बालपुगानो पच्छा प्रमृतपति सोचानि परिवर्गीत अर्थो । एव बोपिमतो अनेवातिकान इम कारण कथेत्या दानादीनि पञ्चाति कत्वा जोवितपरियोगाने यथाकम्म गतो ।

सत्या न भिक्कवं ! टटानेवेस तुम्हाक अन्तराय करोति पुख्येष अकासि येवाति वन्या इम धम्म-देसन आहरित्या अनुगरिष घटेत्वा जातक समीयानींग तदा अधिक्यभेदम्पती माणवी उरुभेदम्पती भिक्क् अहोसि । सेसमाणवा बृद्धपरिसा, आवस्यिकाद्वाणी पन अहमेवाति । (२०२)

वरणजातक

२. सीलवनागजातकं

ग्रकतञ्ञास्स पोसस्माति इद सत्था बेल्बने विहरन्तो देवदत्त आरब्भ कथेसि ।

पच्चुवन्नुबस्यु

षम्मसभाय भिक्क् आयुनो । देवदत्तो अकतंत्र्ञ्जा न्वागतस्म गुणे न जानातीति क्षेत्ता निर्सादिसु । सत्वा आगस्या कायनुत्व पिक्क्दे । एतर्गात कवाय सर्विसस्राति पुष्किद्वा इमाय नामाित बुत्ते-न भिक्क्ष्वे । इदानेव देवदत्तो अकतञ्जा पृथ्वेषि अकतञ्ज्येव । न कदाचि मध्य गुण जानातीति बदवा तेहि याचिनो अतीत् आहितः

ग्रतीतवत्थ

अतीनं बाराणसिथ ब्रह्मदत्तं रज्ज कारंन्ते बोधिमनों हिमबलाणदेसे हिण्यधीतिय निष्यति । सो मातु-कुच्छितों निक्वतो सब्बनेतो अहोसि रज्जपुञ्चमिश्रमो । अक्बीति पतस्य मणिगुनगरिसाति पञ्चायमान-पञ्चप्पतादानि अहेत्, मुख्य रनकस्वनतिदम्, मण्ड नृबण्णिबन्धुर्गनिमण्डिन रज्जदाम विच चतारो पादा कत-ताबापित्कमा विच्य एवसम्स दसहि पारमीहि अलडकतो क्ष्याप्यतो अत्रभावो अहोति । अश्र न विञ्जात् पत्त सक्वहिस्तने बाणा सुव्यत्तित्व उपहुक्तमा विचारम् । एव सी अमीनितहस्मवारणपत्रियारे हिस-वन्तप्यदेसे बसमानो अपरमानं गणे दोम दिस्या गणम्हा कार्याविक गन्या एककोव अरञ्जो बास सप्पत्ति । सीनवन्तनाय च पत्रस्मानेजबाताराजात्वेव नाम अहोसि । अश्रको बाराणमोवामिको वनवर्गको हिम्बन्त पत्तिसत्वा अत्रतो आजीवभण्डक गवेसमानो दिसा वबत्यपंत् अमककोतो मग्गम्नहो हुन्या गरणभयभोतो बाहा पत्रस्व परिवसानो वरति ।

बोधिसनी तस्म न बनवपरिदेविन मृत्वा इस पुरिम्म हुम्ला भोषेस्मामीति कारङ्गे न बोदितां तस्म सित्तक आमानि । मोन दिन्ताव भोतो पालाधि । बोधिसनो त प्रवासन दिन्दा नथेव अद्विता । भोष्टानां पुरिसो बोधिसना छित्र दिन्ता अपेटा । बोधिसनो पुरिसो बोधिसना छुत्र प्रतासिक । बो कुप प्रतासिक्ष । बोषु प्रतासिक्ष । बोषु प्रतासिक्ष । बोषु प्रतासिक्ष । बोषु प्रतासिक्ष । बोधिसनो प्रवासिक्ष । विकास स्वासिक्ष । स्वस्तिक । स्वसिक । स्वस्तिक । स्वसिक ।

सामि । दिसा त्रवन्थापेत् असक्कोन्तो मग्गम्ल्हो हत्वा मरणभयेनाति ।

अप न बोधिमलो अननो समस्तुम नेत्वा कौनपाह फलाफलेहि मन्तपंता भो पुण्य । या भावि अह न मन्तप्ता भो पुण्य । या भावि अह न मन्तप्त्वा भो पुण्य । स्वाचित्र स्वाचित्

अथ सो पुरिसो बाराणीस गल्या अनुविचरलो दलकारवीथी पत्वा दलकारे दलविकतियो क्रमाने दिस्ता—किस्पन भो । जीवदलीस्य लिक्स्वा रण्डेय्याथाति ?

भो कि वर्दास ? जीवदन्तो नाम मनहत्विदन्तनो महत्त्वतरोति ।

तेनहि अह वो जीवदन्त आहरिग्सामीति पाथेय्य गहेत्वा लग्ककच आदाय वाधिसत्तस्स यमनद्वान अगमाप्ति । योधिसत्तो त दिस्वा—िकमत्थ आगतोसीति पुच्छि ।

अह मामि [।] दुग्गतो काणो जीवितुममक्कोत्तो तुम्हे दत्तत्वण्ड याचित्वा सचे दरसथ त आदाय गत्त्वा विक्किणित्वा तेन मुलेन जीविस्सामीति आग्नोति ।

होत् भो । दस्त ते दस्सामि सचे दस्तकप्पनत्थाय ककच अत्थीति ।

ककच गहेत्वा आगतोम्हि सामीति ।

तेनहि दन्ते ककचेन कन्तित्वा आदाय गच्छाति ।

बोधिसत्तो पादे सम्मिञ्जेत्वा गीनिसिन्नकं निसीदि । सो तस्स द्वेपि अग्गदन्ते छिन्दि ।

बोधिमतो ते दन्ते सोण्डाय महेत्वा-भो । युगिलः ! नाह एते दन्ता मयह अपिया अमनापाति दीम्म, क्षेत्रि एन मे दनीहि सहस्याणेन ततसहस्माणेन मध्यधमपटिबचनसम्पर्ध सव्वञ्चान्त्रमाण रियतर, तस्स मे इदं दन्तदा सव्वञ्चान्त्रभाणपटिविज्ञभतत्वाय होतृति सव्वञ्चानुन्नाणस्स आवज्वनः करवा सन्तवान अवस्ति ।

सो त आदाय गल्वा विकिणित्वा तिस्म मुले सीणे पुन बोधिसत्तस्म सिनाक गल्वा-सामि ! तुम्हाक वन्ते विकिणित्वा लद्धमुल मस्ट इणसोधनमत्तमेव जात, अवसेसदन्ते मे देवाति आह ।

बोधिसत्तो साधूति पटिस्सुणित्वा पृरिमनयेनेव कष्पापेत्वा अवसेमदत्तो अदामि । सो तेपि विक्कि-णित्वा पून आगन्त्वा-सामि । जिवित न सक्कोमि, मलदाठा मे देहीति आह ।

योधितानी माण्ति वत्वा पुरिमान्यनेव निगीदि । यो रापपुरिमो महामतस्य रजनदामसदिसं सोण्डं स्थानित स्वाप्ताने केलादक्ट्रमित्व कृष्ण अभिन्दित्व कृष्ण आरुष्ट् वरकक्षेत्रम् तुवारा कर्यन्या पर्वाप्ति । वोधिमान्यन्य स्वाप्तुच्या विकर्ण विज्ञन्ने वित्र वर्षा पन तिस पाप्पुरिसे चतुनतृत्तापिकानि वियोजनस्तमहस्मानि बह्नसप्तप्रद्वा मिनेस्पुगन्धराद्यो महासादे दुगग्न्थनेषुण्कानि [२०२] गृयम्तापीति वर्षाप्ते नमस्यापि तत्व आप्तराप्ति घारेन् अमस्यापित व्याप्ति प्राप्ति प्राप्ते अमस्योजित विया पिञ्चल्या विवास्ताति । त्रावे अविवास्ताति । त्रावे मिन्नस्यापित । त्रावे मिन्नस्यापित । त्रावे मिन्नस्यापित । त्रावे स्वाप्ति । एव तस्य पाण्युग्यनस्य पर्वाद्य (पिक्वप्ति कृत्यन्तिके कृत्यन्तिन पास्पति विद्य परिक्विप्ता गाण्ड । एव तस्य पाण्युग्यनस्य पर्वाद्य (पिक्वप्ति कृत्यन्तिके कृत्यन्ति पास्पति विद्य परिक्वप्तिका स्वाप्ति । त्रावे तस्य वाष्ट्यम् वस्य परिक्वप्तिका स्वाप्ति । त्रावे नस्य चनस्य अविवस्या स्वयवदेवता अक्तप्रद्या, मिन्दिभ्युग्यन चक्वविनाग्यक्ष स्वापिति निम्नस्व नस्वकोति वत्र उष्प्रादेश्व धम्म देसयमाना इस गायमान्ति ।

प्रकतञ्ञास्स पोसस्स निच्च विवरदस्सिनो, सद्य चे प्रतिव वज्जा नेव नं प्रभिराध्येति।

नत्य-मकतञ्ज्ञा स्साति अत्तनो कतगुण अजाननास्स । पोसस्साति पुरिसस्स । विवरवस्सिनोति छिट्ठमेव ओकाममेव ओसोकेन्स्स । सब्ब वे पठाँव दश्जाति सर्वोप तारितस्स गुणालस्स तकल वकतविन-ज्ज इम वा गम महापठाँव परिवर्तन्वा पठजोज दरेय्य । नेव वं स्विन्दाधयेति एव करोन्तोरि एवक्प कत-मुणाबिद्धस्क कोचि पर्गिनोसंत् वा पसादेत् वा म सक्कृणेत्याति अत्यो । एव सा देवता तं वन उन्नादेत्वा सम्म देतीस । वोधिमानो यावनायुक ठला युवाकम्म अग्रमानि ।

सत्या न भिम्मवव^{े ।} देवदभो इदानेत अकतञ्जू पुत्र्वीप अकतञ्जू येवाति बन्ना इस धम्मदेसन आहीरत्या अनुसन्त्रि वरेन्या जानकः समोधानेसि । तदा मित्तदुभी पुग्गलो देवदत्ती अहोसि हक्बदेवता सारि-पुत्तो, सीलवनागराजा पन अहमेबाति ।

सीलवनागराजजातकं।

३ सच्चंकिरजातकं

सच्चं किरेवमाहंस्ति इद सत्था वेलवने विहरन्तो वघाय परिसक्कनं आरटभ कथेसि ।

पच्चपञ्चवस्य

भिक्कुसहर्थास्म हि धम्मसभाय निसीदित्वा बाबुसो । देवदत्तो सत्यु गुण न जानाति वधायेव परि-सक्कतीति देवदत्तस्स अगुण कथेले सत्या आगत्वा कायनुत्व भिक्कव । एतनहि कथाय सिमिमाति पुन्निद्धत्वा इमाय नामाति बुत्ते न भिक्कव । इदानेव देवदत्तो मध्ह वधाय परिसक्कित पुटबेपि परिसक्कि येवाति बत्वा अतीत आहरि-

स्रतीतबत्थ

अतीते बाराणसिय बद्धादने रज्ज कारेले तस्स दुष्टकुमारो नाम पुत्तो अहोमि। कबबलो फरसो पहटामीबिमोपमो अनक्कोसित्वा वा अपहरित्वा वा केनिच सिंढ न कर्योत । मो अलोजनम्म च बहिजनम्म च अक्किमिद्र पतितरजं विद्य खादित आगतिपिसाचो विद्य च अमनापो अहोसि उटबेजनीयो।

सो एकदिवस नदीकील कीलितुकामी महत्तेन परिवारेन नदी तीर अगमासि । तन्मि खणे महावेधो उद्गृहि । दिसा अन्धकारा जाता । सो दासपेस्सजन आह-एव मणे ' म गहैरवा नदीसक्क नेत्वा नहापेटा अम्बिति ।

ते तं तत्य नेत्वा कि नो राजा करिस्मति, इम पापपृत्ति एत्येव मारेमाति-मलयित्वा एत्य गच्छ, कालकण्णीति उदके न ओपिलापेत्वा पच्चत्तरित्वा तीरे अदस् ।

कह कुमारोति च बुत्ते न मय कुमार पस्साम मेघ उद्वित दिस्वा उदके निम्ज्ञित्वा पुरतो आगतो प्र**विस्सती**ति। अमञ्चा रञ्जो सन्तिक अगममु।

राजा-कह मे पुत्तोति पुच्छि ।

न जानाम देव[ा] मेघे उद्विते पुरतो आगतो भविस्सतीति सञ्ज्ञाय आगतम्हाति ।

राजा द्वार विवरापेरवा नदीतीर गल्या विविधायाति नत्य नत्य विविधारेति । कोचि कुमार नाहम । सी पि जो मेघरधकारे देवे वस्मन्ते नदिया बुख्नमानो एक दारुक्यन्य दिस्या तत्य निमीदित्या मरणभयनिज्ञनो परिदेवमानो गच्छति ।

त्रिस्स पन काले बाराव्यसिवासी एको सेट्ठी नदीतीर वतालीमकोटियन निर्देहरवा धननण्डाय धन-पिट्ट सप्पो हुस्सा निक्क्षण । अपरो तांस्स येन पदेवे निमकीटियो निर्दिहरवा धननष्ट्या तरवेच उन्दर्श हुरवा निक्क्षण । नेसं बसस्द्रान उक्त पार्विस । ने उदकस्स पविद्वास्पोने निक्सियिया योग शिक्ष्यणा नात्ना न राजकुमारेन अभिनिसियं स्क्लक्ष्यभ्य पत्ना एको एक कोटि इतरो इनर आब्ध्यः व्यवस्थिद्वे निर्पाण्यम् । तस्यायिक को पन निर्देशा गीरे एको सिम्ब्लीस्थलो अलिए । तथ्येको मुख्योतको बसति । साणि इक्क्षो उदक्षेन घोतमूनो नदीपिट्ट पित मुख्योनको देवे बस्सानं उप्यतिस्था गन्न असक्कोत्रो गन्न्या तस्येव सन्यस्स एकपस्से निकीषि । एव ते चलारो जना एकनी बद्धाना गन्न्युलि ।

बोधिससीपि को तस्मि काल कासिरहुँ उदिक्व ब्राह्मणकृत निब्बत्तित्वा बृद्धिपमो इसिपव्यक्त पद्ध-कित्वा एकस्मि नदीतिवनने पण्णसाल मार्थत्वा वसति । वो अङ्गढरतसमये वहकमानो तस्म राजकृत्तारस्म वसकपरिदेवसम् सुन्वा क्लितीस—मारिसे नाम मेनानुदृश्यस्म, तपने पस्पत्ते गृनस्स पुरिसस्म पण्णव्यन्त उक्तो उद्धित्या तस्म जीवित्रयान स्स्मानीति । मो ना मार्गिया भाषीपि अन्यानिवा उदस्सीत छिन्दन्ते। गन्दा त दाक्कलम् एकाय कोटिया गहेत्वा आकड्ढलो नागवनो याससम्पन्नी एकवेगेन नीर पत्था कृमार उक्ति-पित्वा तीरे पतिद्वापेस्म । तेपि मण्यादयो दिस्ता (२७४) उक्तिविपत्ना अन्समपद तेवा अगि जालेवा ते दुक्तमतराति पठम सप्पादीन सरीर सेदेत्वा पत्था राजकृत्तारस्म सरीर सेदेव्या तीन्प अगेग कत्या आहारे देनोपि पठमे सप्पादीन येष्ठ व्यवा पत्था सम्बन्धाति उत्यमिति राजकुमारो अर्थ कूट तापसी में राजकुमार अगणेखा तिरच्छानथतान सम्मान करोतीनि बोधिसत्ते आधानं बन्धि । तनी कतिपाहच्येन सब्देस्पि तेसु बामबलपनेसु नदिया ओपे पच्छिते मणी नापस विस्त्वा आह.

भन्ते [।] तुम्हींह मम्ह महाउपकारो कतो न को पनाह दिलिहो । **असुकट्टा**ने में क्सालोस हिरञ्जाकोटियो निरहित्वा ठपिता । तुम्हाक धनेन किच्चे सिन मब्बमेत घन तुम्हाक दानु सक्कोमि, न ठान आगन्त्वा दोषाति पक्कोसेय्यापाति वत्वा पक्कामि ।

उन्दुरोपि तथेव तापस निमन्तेत्वा अत्ये सित अमुकट्टाने ठत्वा--उन्दुराति पक्कोसेय्याथाति क्रवा पक्कामि ।

सुत्रो पन तापस वन्दित्वा—भन्ते । मध्ह धन नित्य रत्तसासीहि पन वो अत्ये सित असुरुक्षाम मस्ह समद्रान नत्य गन्दता सुवाति पक्तिसेव्याम । अह जातकान आरोपेदता अनेकसकटपुरमता रत्तसालियो आहरगरेव्य दान सक्तोसीत बत्या पक्तिमा ।

इनरो पन मिनदुरीधम्मेन घमनाय किञ्चि अवस्ता एव त अनतो सनिक आगत मारेस्मनमीति विन्नेला—भन्ते । मिथि रुस्त्रे पनिर्दिते आगच्छेस्याय अह वो चतुर्हि पचवर्षीह उपदृहिस्मामीति बस्त्रा पक्तामि ।

मो गल्या न विज्येस रज्ये पिन्हामि । बोधिमनो बोमिनस्मामि नाव नैति पठम सण्यम्म सन्तिकं अगन्या अधिकृरं श्वा रोधानि पक्कामि । मो एकवयन्त्रेव तिक्क्षमित्वा बोधिमता विज्यास माने । इमिम्म जाने वानामित्वास्य स्थापित साहित्य एक्यानि आह । बोधिमनो एक्यस्य उपमे किक्क्ये ज्ञानिस्मामीनि त निवत्तपत्रेवा उत्तुरस्म सन्तिक गल्या सृद्धकासि । सोपि यो तथेव परिशाणि । बोधिमनो निस्म नित्तपत्रेवा उत्तुरस्म सन्तिक गल्या सृद्धकासि । सोपि एकवचनेनेव स्क्क्यमतो ओनित्या बोधिमन विज्या क्षिम सन्ति । स्थापित स्थाप

तास्म नणं मां मितदुभी राजा अवक्रतिश्वस्थावस्थानी महत्तेन पाँग्वारेन नगर पर्यक्तिका कराति । मे वाँचित्तन हुग्ली वस्ती—अय कुटतापना मन मित्रके [२७४] भूत्वा भूत्वा विमनुकामो आगतो, याव पाँग्यम्यके अत्रती मध्य करण्य मध्यक्षिमी कार्यक्ति वावस्थान मीन व्हिट्यस्थानीति पृतिसे ओगोकीमा । कि करोज देवाित व वृत्ते—एम कृटतापसा म किञ्च वाचितुकामो आगच्छित मञ्ज्ये । एतस्य कालक्षिणक तापसम्म म पाम्मन् अदल्वा एत गहेत्वा पन्छाबाह वर्षस्थ्या चतुक्के चतुक्के पहग्ला नगरा निक्वामेत्वा आधातने मीमासस्था क्षित्रस्था मांग्यान में स्थानिक स्था

तं सार्यात सम्पर्टिच्छत्वा गत्वा निरमराध महासत्त बन्धित्वा चतुकके चतुकके पहरन्ता आधातन नंतु आर्राभम्। बोधिमलो पहरपहरद्वाने अम्म ताताति अकन्दित्वा निब्बिकारो इमं गाथमाह —

सच्चं किरवमाहंसु नरा एकच्चिया इध, कट्टं निष्फविनं सेय्यो नत्वेवेकच्चियो नरोति।

तथ-सम्ब किरेबमाहसूति अवित्तयोव कि. एव वर्दाना । नरा एकच्चिया इपात प्रथम वाधिक नत्य-सम्बद्धाः विद्यान प्रश्नमा तुम्बसा निष्पात्र नार्यन्त वाधिक त्याने स्वाधिक तीयान वृद्धाः । कहु निष्पाद्धान क्षेत्रयोन स्वाधिक त्याने स्वाधिक त्याने

एव पहटपहटट्टाने इम गाथमाह ।

त सुरवा ये तस्य पाण्डितपुरिसा ते आहंसु किंपन भी ! पब्कजित ! तया अव्हाकं रञ्ञो जित्य कोचि गुणो करोति ?

बोधिसत्तो त पर्वात्त आरोचेत्वा एविममं महोघतो उत्तारेत्तो अहमेव अत्तनो दुक्तं अकार्सि । न बत मे पोराणक पाण्डितान वचन करन्ति अनस्सरित्वा एवं बदामीति आह ?

त् सुत्वा बत्तियशाह्मणावयो नगरवासिनो स्वाय मिन्तदुभी राजा एव गुणसम्पन्नस्त अतनो जीवित-वायकस्त गुणसत्तिभ न जानाति त निस्साय कृतो अन्द्राक बहिड । गण्यय निन्न कृषिता समस्ततो उडुहिस्वा अकुस्तित्तासाणमृत्यादिप्पहारिह हित्यक्तव्यगतमेव त धानेत्वा पारे गहेत्वा कहिड्रत्वा परिखापिट्टे छड्डेता कृषि सत्तं अभिसिष्टिकत्वा रूज पतिरागेस ।

सौ बम्मेन रज्जं कारेन्सो पुन एकदिवस सप्पादयो परिगाण्हितुकामो महन्तेन परिवारेन सप्पस्स वसन-द्वानं गन्दवा⊸दोषाति पक्कोसि ।

सप्पो आगन्त्वा वन्दित्वा-इदन्ते सामि ! धन गण्हाति आह ।

राजा चतालोसहिरञ्ञाकोटिधन अमच्चे [२७६] पटिच्छापेरवा उन्दुरस्स सन्तिक गन्त्वा उन्दुराति पक्कोसि ।

सोपि आगन्त्वा वन्दित्वा तिमकोटिधन निय्यादेमि । राजा तम्पि अमञ्जे पटिच्छापेत्वा सुवस्स वसनद्वानं गन्त्वा सुवासि पक्कोसि ।

सोपि आगन्त्वा पादे वन्दित्वा-िक सामि । सालि आहरामीति आह ।

राजा सालीहि अस्ये मित आहाँग्स्सीम एहि गण्डामाति मत्तात्वा हिरञ्जकोटीहि मिद्ध ते तथोषि जने गाहापेखा नगर गन्त्वा पासादवरे महातन आस्म्ह धन मगोपपिन्ता मप्पम्स नमन्त्र्याय मुक्कणनाित उन्दुरस्स फिनिकाहु सुबस्स मुक्कणप्रज्ञय कारागेखा तप्पम्स म सुबस्स च भोजनत्याय देतीमक कञ्चनतहुकै स्वत्र्या उत्तर्यास प्रमानिकालपुन वापिस । दानादीिन च पुञ्जानि करोति । एव ते चनारोिप जना यावजीव सम्माना मम्मोदमाना बिहारिया जीवितनस्य यथाकम्म अपाम्।

सत्या न भिक्कवे । देवदत्तां इदानेव मध्ह वधाय परिसक्तित पुख्तेति परिस्तविक येवाति कावा इस धम्मदेसन आहरित्वा अनुसीत्व घटेत्वा जातक समोधानेमि । तदा दुदुराजा देवदन्ते अशीमि, मण्यो सारि-पूत्ती, उन्दूरी मोग्गल्लानो, सूबो आनन्दो, रज्जं पत्ती धम्मराजा पन अहमेवाति ।

सच्चंकि रजातकं।

४. रुक्सवधम्मजातकं

साथ सम्बद्धारा जातिकीत इर सत्या जेतकने विहरन्ती उरक्कलहेत असतो जातकात महाबिनास एक्यु-पट्टिजं जात्वा आकारित गत्त्वा रोहिणिया निदया उपरि एत्लक्ष्केत निमीदित्वा नीतरसि विस्सज्येत्वा जातके सबेशेत्वा आकासा जीरूह तरीतीरै निसिषो तं कलहं आरब्भ कथेसि । अयमेर्य सक्क्षेपो । विस्थारो पन कणालवानके आवीमित्ससित ।

पञ्च पञ्च वस्थ

तदा पन सत्या जातके आमन्तेत्वा-महाराजा ! तुन्हेहि जातकेहि नाम समगेहि सम्मोबमानेहि भनेत् बट्टित जातकार हि सार्माण्या सित पत्वामिता र अभेकार जभीता । तिहन्तु ताव नमुस्सभूता अभेत-नानं कक्कालिया सामगी । नज् बहु ति अतीतिस्य हि हिमवन्तपदेवे महाबादो सातवन पहिर । तस्य पन सातवनस्य अञ्जापञ्चालकापश्चमुम्बलताहि सम्बद्धता एकरक्षस्य पातंतु असकोत्तो मत्यकमत्यकेनेव आगामि । एक पन अजाणे कि सावादिद्यसम्पर्भीय महाक्क्स अञ्जाहि क्काहि असम्बद्धता उम्मुलेत्वा भूमिय पातेसि । दीना कारणेन तुम्हेहिषि समग्गेहि सम्मोदमानेहि भांवतु बहुतीति बत्वा तेहि याचितो अतीत आहरि (२००) ।

ग्रतीतवस्यु

अतीते वाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्ज कारेन्ते पठम उप्पन्नो वेस्तवणो महाराजा बिन । सनको अञ्ज वेस्तवण ठपेसि । एतर्सिम वेस्सवणे परिवत्ते पच्छा निब्बत्तवेस्सवणो रुक्खगच्छमुम्बनतान अत्तनो अत्तनो रुक्बनदाने विमान गण्डमूति सासन पेमेसि ।

तदा बोधनत्ती दियनताप्येसे एकांस्म सातवनं क्लबदेवता हुत्वा निक्वसि । सोञातके झारू—मुन्हें हाःमानि पक्टला अवार्णाटनरक्तेम् मा गण्डित्य, इसीम्प पत्त सातवने मा गहित्यमान परिवारत्वाव गण्डसाति । तत्य बोध्मतत्तस् बननकरा पण्डितदेवता बोधियतस्य विमान गरिवारत्वाव ठित्र विमानी गण्डस्म । अर्पाण्डता पत्त कि अन्दात अरञ्जे विमानेहि ? मय मनुस्मपये च गामिनामराज्ञभनिद्वारेसु विमानीन गण्डित्साम्, गामादयो हि उपनिस्साय वसमाना देवता लामगायसमाप्यसा होन्तीति वस्या मनुस्स-पत्रं अद्राणद्वान्ति निक्वममहास्थस्य [समानीन गण्डित

अपेकिम्म दिवसे महती बानवृद्धि उप्पञ्जि । बातस्स अतिपद्धताय दन्हमूना बनजेटुकरुमसापि सम्भागनास्त्रादित्या समूना निर्पातत् । त पन अञ्चामञ्जा सम्बन्धनेन दित सासवन एत्या इतीयत्ती च पहुरत्तो एकरुक्तिप् पातेनु नासिम्ब । भगविमाना देवता निर्पादसरणा द्वारेक् हस्त्रेमु महेत्वा हिमसन गन्त्वा असनो पर्वात्ति सामवने देवनान कर्षायेषु । ता तास एव आगतभाव बोभिसासस्स आरोपेसु ।

बोधिमत्तो पण्डितान वचन अगहेत्वा निप्पच्चयद्वान गता नाम एवरूपाव होन्तीति बत्वा धम्मं देसेन्तो इम गायमाह –

साचु सम्बहुला जाती श्रपि एक्सा धरङजाता। बातो बहति एकट्टं बहन्तम्पि वनप्पतिन्ति।

तरय-सम्बद्धाना कातोति बनारो उपावध ततुन्तरि सत्तमहस्त्वस्थि सम्बद्धाना नाम । एवं सम्ब-हना अञ्जानञ्ज निस्ताय बनता जातका । साबुत्ति सोमना रास्त्या परिष्ठ व्यवधानायति अत्यो । प्रति विकास सरञ्जलाति तिंदुन्तु मृत्यस्त्ता अरञ्जे जातरुक्ताचि सम्बद्धा अञ्जानञ्ज त्यवधमेन दिला साध्-येव क्लानस्थि हि सम्बन्धनानाने सब् बहुति । बातो बहुति एक्टुत्ति पुर्राचमाधिसेदो बातो बायन्तो अङ्गानद्वाने दिल एक्ट्य एक्कमने दिल । बहुन्तास्य बन्त्यतिनित साक्षा विटयनस्यन्न महास्वन्नास्य वहति उद्मत्वेत्वा रातिसीति अत्यो ।

बोधिसतो इस कारणं करेवा आयुक्तये यवाकम गतो । सत्यापि एव महाराजा । जातकानं ताब साममिययेव [२७४] तद्ध बृहति । सामगा सम्मोदमाना पियतवासयेव वस्त्राति इसे धम्मक्षेत्रनं आह-दिस्त्रा वात्तक समोधानेवि । तदा देवता बृद्धपरिता अहेत् । पित्यतवेत्तता पन अहमेवाति ।

रक्तधम्मणातकं ।

५ मञ्जूजातकं

प्रभित्यनय पञ्जुषाति इद सत्या जेतवने विहरन्तो अत्तना वस्सापितवस्स आरब्भ कथेसि ।

पच्चपञ्चवत्थु

एकॉन्म किर समये कोमनरट्टे देवो न बस्सि । सस्सानि मिलायन्ति । तेसु ठोनेपु तलाकपोक्क-राणसरा सुस्तिन्त । जेतवनडारकोट्टकसमीपे जेतवनपोक्करणियापि उदक क्षिज्य । कलसगहर पविसित्वा निपन्ने मच्छकच्छर काककुललादयो कणसग्मसस्सिहि तुण्डेहि कोट्टरवा नीहरिरवा नीहरिरवा विष्फरसमाने सम्बद्धन

सत्या मच्छकच्छपान न व्यसनं दिश्वा महाकरणाय उस्साहितहृदयो अञ्च गया देव वस्सापेतृ बट्टतीति पमाताय रात्त्रमा सरीरपटिकागन करवा भिक्ताचारवेल सल्लक्त्यत्वा महाभिक्तुसङ्घपरिवृतो बृद्धलीलृताय सावस्थि पिण्डाय परिसित्वा पच्छाभन पिण्डपानपटिककतो मावस्थितो विहार गच्छरसो जेनवनपोक्तरणिया सीपान ठत्वा आनन्दरवर आमनोस-आनन्द! उदस्साटिक आहर जेनवन पोक्तरणिया नहास्मिमीन।

नन् भन्ते । जेतवन पोक्खरणिय उदक छिन्न कललमत्तमेव अवसिद्धन्ति ?

आनन्द ! बुढबल नाम महन्त आहर त्व उदकसाटिकन्ति ।

थेरो आहरित्वा अदासि । सत्था एकेन अन्तेन उदकसाटिक निवासत्वा एकेनन्तेन सरीर पारुपित्वा जेतवनपोक्सर्राण्य नहायिस्सामीति सोपाणे अद्वासि ।

त साणञ्जो व सक्कस्त पण्डुक-वर्तामशासन उण्हाकार दस्सीसः । सो किन्नु सीति आवज्जेत्यो त कारण ञत्त्वा बस्सवलाहरूवेरगाजा प्यक्तांसापेरवा तातः । सत्या जेतवनपोक्कार्गणय नहाधिरसम्मीति धुर-सोपाणे ठितो, विषय सक्कसकोसलरटट एकमेष कत्त्वा वस्तापेहीति ।

सो साधूति सम्पर्टिण्ड्स्वा एक वलाहक निवासेत्वा एक पार्शपरवा मेघगीत गायन्ता पाचीनतोक-पातुमुखी पक्चित् । पाचीनांदिसाभागे खत्रमण्डसमत एक मेघपटल उद्घाय सप्तप्रदसमहस्माटल हुन्या अभिस्थमन्त विज्ञुनत निच्छारेत्न अधोमुख ठाँपत उदककुम्भाकारेत वससान सकल कांसलग्ट महाधेन विस्व जञ्मीन्यिर । देवो अस्किश्चमार बस्सन्तो मुहत्तेव जेतवनपोक्चराण पृगेसि । युग्मोपान आस्च उदक बद्वासि । (२०६)

सत्या पंगकराणिय नहायित्वा रानदुष्ट्र निवासेत्वा कायवन्थन बन्धिन्ता मृत्यमहार्थाव एकन करवा मिक्क्सक्षपरिवृतो गान्या गम्बक्टिपरिवृत्व पञ्चानवाबुद्धान्त निर्मादित्वा भिक्क्सक्षपरिवृतो गान्या गम्बक्टिपरिवृत्व पञ्चानवाबुद्धान्त निर्मादित्वा भिक्क्सक्षपरिवृत्तो गान्या गम्बक्स्तिय अवाद दिग्यने कृति पाणकानके ठत्वा भिक्क्सक्षपरिवृत्ता मृत्यमाय्वकृति पविमात्वा दिग्यने जेन गान्यमाय्वकृति पविमात्वाद्धाने । दान्यन्त्रस्य बन्धिमानान्त्रस्यम्पति विविध्यम्यम् मृत्यस्य विवासिनान्तुद्द्यम्यात्वा विविध्यम्यस्य प्रमात्वावा मिक्क्सक्ष्यस्य पाणुकान्त्रस्य विवासिनान्त्रस्य प्रमात्वा विविध्यमस्य प्रमात्वा विवासिनान्त्रस्य मिक्क्सक्ष्यस्य प्रमात्वा प्रमात्वा प्रमात्वा मिक्क्सक्ष्यस्य प्रमात्वा प्रमात्वा मिक्क्सक्ष्य प्रमात्वा क्ष्यस्य प्रमात्वा क्षयस्य मिक्क्सक्षयः प्रमात्वा क्षयः महाजने क्षयस्य मिक्क्सिन्तं विव्यविद्यानिव्यविद्यान्त्रस्य स्थापनिविद्यान्त्रस्य स्थापनिविद्यान्त्रस्यान्त्रस्य स्थापनिविद्यान्त्रस्य स्थापनिविद्यान्त्रस्य स्थापनिविद्यान्त्रस्य स्थापनिविद्यान्त्रस्य स्थापनिविद्यान्त्रस्य स्थापनिविद्यान्त्रस्य स्थापनिविद्यान्यस्य स्थापनिविद्यान्यस्य स्थापनिविद्यान्यस्य स्थापनिविद्यान्यस्य स्थापनिविद्यान्यस्य स्थापनिविद्यस्य स्थापनिविद्यस्य स्थापनिविद्यान्यस्य स्थापनिविद्यस्य स्थापनिविद्यान्यस्य स्थापनिविद्यान्यस्य स्थापनिविद्यान्यस्य स्थापनिविद्यान्यस्य स्थापनिविद्यान्यस्य स्थापनिविद्यान्यस्य स्थापनिविद्यान्यस्य स्थापनिविद्यान्यस्य स्थापनिविद्यस्य स्थापनिविद्यान्यस्य स्थापनिविद्यस्य स्थापनिविद्यस्य स्थापनिविद्यस्य स्थापनिविद्यस्य स्थापन

ग्रतीतवत्यु

अतीते डमन्मि येव कोसलरहरे डिमस्साव सावरिषया इमस्मि येव जेतवनपोक्षयरणिट्ठाने एका विन्तर-गहनपणिक्सना वन्दरा अहोति । तदा बोधिसत्ता मच्छ्योनिय निब्बत्तित्वा मच्छ्यणपरिवृतो तत्व पटिवमति । यथा पन इदानि एवमेव तदापि नीस्मि ग्ट्ठे देवो न वस्सि । मनुस्सान सस्मानि मिलायिसु । बापि आदिसु उदकं ख्रिज्जि । मच्छकच्छपा कललगहन पविसित् । इमिम्सापि कन्दराय मच्छा कललगहन पविसिन्वा तस्मि तस्मि ठाने निलीयिस् । काकादयो तुण्डेन कोटटेन्वा नहिरित्वा खादिस् ।

बोधिससी ञातिवाद्धसस्त त व्यसन दिस्वा इम हि एतेस दुश्य ध्यंत्वा म अञ्जोमोचेतु समत्यो नाम नित्य, सम्बन्धित्यं करवा देव वस्तापेत्वा जाति मन्यजुद्धस्ता मोधेस्तामीति साववत्य कह्म द्विष्ठा विद्याहित्वा निक्समित्वा अञ्जातन्त्रस्त्वामध्यिक्त व्याप्ते निक्समित्वा अञ्जाति अस्वीति उम्मीलेवा सात्रासं उत्त्वीक्तेत्वा पञ्जूबदेवानाम्स सह दरवा—मो पञ्जूष ! अह जातके निस्ताय दुश्यस्ति, व मित्र मीत्र सोत्त वन्ति कितमन्ते कस्मा देव न वस्तापेति ? मया समानजातिकान खादनट्टाने निब्बत्तित्वा तब्दुलयमाणिय सन्द्र आदि करवा सादितपुत्वो नाम नित्य, अञ्जोष [५००] मे पाणो सञ्ज्ञिक्त जीवता न बोरोपित-पुत्रवो । इमिना सन्त्रवे देव सस्तापेत्वा जातिसद्धपं में दुस्का मोनहीति वत्वा परिचारकनेटक आणापेन्तो विय पञ्जूष्ठ वेदावाना आवपन्ती इम गायमाह —

श्रीभत्यनय ्यज्जुन्न! निधि काकस्स नासय, काके सोकाय रम्धेहि मञ्च सोका पमोचयाति ।

तरय-प्रमित्वन्य पञ्जूकाति पञ्जूको बुन्तित मेथो, अय पन मेथवसेन सद्धनाम वस्ववनाहकदेवरा-जान आनवाति । अय किरस्त अधिपायां । देवो नाम अनिमित्यनतो निवजूनत अनिष्ठारेत्तो पस्सत्तोधि न मोमित, तस्मा त्व अभियनना विज्यूनन निव्युत्तो वस्मास्त्रीति । निष्कं काकस्त नास्त्राति कान्न कतन पविसित्वा दिते मच्छे नुष्टेन कोट्टरवा नीहरित्वा खादनित, तम्मा नेस अन्तोकनने मच्छा निधीति युन्तित्त , व नाक्तद्रभ्रस्त निधि देव दस्साग्तो उदक्त पटिन्छादेत्वा नासेहिति । काक्तं सोकाय रच्येहीिक नास्त्रद्ध चा इंग्लिस्त कन्दराय उदक्र पुण्याय मच्छे अन्तभागो सोचन्यति, त काक्त्रण व स्व कन्दर पूरेत्वो। पि मोकाय रच्येहि । सोकस्त्रस्थाय गाय्य । यथा अन्तो निज्ञतनस्वत्या सोक पापुणानि एव करोहिति अत्यो। सञ्च सोका प्रमोच्याति एव्य वकारो सम्पिष्टनत्यो । एव म च मम आतके च सम्बेव इमन्द्रा मरणसोका

एव बोधिमत्तो परिचारकचेटक आणापेन्तो विय पञ्जुक आलपिरवा सकलकोसलरट्ठे महावस्स वस्सापेत्वा महाजन मरणदुक्का मोचेत्वा जीवितपरियोसाने यथाकम्म गतो।

सत्था न भित्रकवे ¹ तवागतो इदानेव देव वस्सापेति, पुज्वेपि मच्छ्योतिय निव्वत्तीपि वस्सापेसि ये-वाति वत्वा इस धम्मदेसन आहरित्वा अनुसांच घटेत्वा जातक समोघानेसि । तदा मच्छुगणो **बुडणरिस्स** अहाँाम, पञ्जवस्वराजा आन्तरी, मच्छुराजा पन अस्त्रेवाति ।

मञ्ख्यजातकं।

६ असक्रियजातकं

श्वातंकियरेक्टि मामन्त्रित इदं सत्था जेतवने विहरन्ती एक सावत्यिवासि उपासकं आरब्भ कथेसि ।

सो किर सोतापन्नो अरियसावको केनचिदेव करणीयेन एकेन सकटसस्यवाहेन सर्वि मगां पटिपञ्चित्वा एकस्मि अरुञ्जद्वानं सकटानि मोचेत्वा समाधारावण्यं कते सत्ववाहस्य अविद्वर् अञ्जातरीस्य क्रस्त्रमूलं क्रक्कमति । अत्यने काल सत्ववस्वत्य [२६१] एकस्वानं सार्वा सत्यावार विवृत्तिस्यामाति कृत्सुमारादि हत्या त ठानं परिवारित्व । उपायकोपि चटकसि येव । चौरा न दित्वा अद्या एस सम्यावार स्वस्त्रो प्रह्म स्तित इसस्य निद्द ओक्कनलालां विवृत्तिस्यामाति अञ्जोत्यारित् असक्कोन्ता तत्य तत्वव अद्व सु । सोपि उपा-सक्को प्रवेत अपिता स्वर्त्व अपिता । पञ्चस्त्रमात्र अप्ताव सक्को प्रवेत अपिता । स्वन्त्रमात्र अप्ताव सक्को प्रवाव अपिता सक्को प्रवाव स्वर्त्व अप्ताव सक्को प्रवाव । स्वन्त्रमात्र स्वर्त्व अपिता । स्वन्त्रमात्र स्वर्त्व अप्ताव सक्को प्रवाव स्वर्त्व अद्याव स्वर्त्व स्वरत्व स्वर्त्व स्वर्त्व स्वर्त्व स्वर्त्व स्वर्त्व स्वर्त्व स्वर्त्व स्वरत्व स्वर्त्व स्वरत्व स्वर्त्व स्वर्त्व स्वर्त्व स्वर्त्व स्वर्त्व स्वर्त्व स्वर्त्व स्वरत्व स्वर्त्व स्वर्त्व स्वर्त्व स्वर्त्व स्वर्त्व स्वर्त्व स्वर्त्व स्वरत्व स्वर्त्व स्वरत्व स्वर्त्व स्वर्त्व स्वरत्व स्व

उपासकोपि अत्तनो कम्म निद्वापेत्वा पुन सार्वात्य आगन्त्वा सत्थार उपसङ्कामत्वा——भन्ते ! अत्तान रक्तमाना पररक्तका होन्तीति पूच्छि ।

आम उपासक ! अत्तान रक्खन्ता पर रक्खित, पर रक्खन्तो अत्तान रक्खतीित ।

स्त्रो याव सुभासितमिव भन्ते ! भगवता।

अह एकेन सत्यवाहेन सद्धि मभा पटिपन्नो रुक्खमूले चक्कमन्तो रक्षिक्सामीति सकलसत्यं रिक्खिन्ति बाह ।

सत्या उपासक ! पुञ्जीप पश्चिता असान रक्खन्ता पर रक्खिसृति बत्बा तेन याचितो अतीत आहरि --स्रतीतवस्य

ततीते बाराणसिय बहुददोर एज कारेन्ते बोधसक्तो बाह्यणकुर्णे निब्बतित्वा ववणक्तो कामेसु आयो-नवं दिवाब इतिपत्काच्य पत्कांज्यता हिमबन्तं कसन्तो नोणांस्वानतेवनायाय जनगद आगत्वा जनपद्यानिक बन्तो एकेन तस्ववाहित सहि सम्मा पदिविज्ञाला एक्ताम्म अरच्छाहाने सत्तं नित्वहं, नाततो अबिद्ध रोमा-सुबेत बीतिनामेक्तो अच्छातर्रास्य इत्याचना इत्याचना अध्याचना प्रवास क्षेत्र का प्राप्त स्वाचना कोण साथमासभानस्स भृतकाले त सक्टसस्य विक्तामस्यामाति आगन्त्वा परिवारिस्स । ते त तागस दिखा गयं अय आहे प्रस्मि-स्वति सत्ववासिकान आरोबेस्सनि एतस्स निद्युपतवेलाय विवृधियस्मामाति तत्येव अट्टस् । तापसो सक-लाम राति चट्टक्सियव ।

चोरा ओकाम अलभिस्वा गहितगहिते मुगगरपामाणे छह्रहेच्या सण्डसस्यवासीन सह दत्या—मो सत्य-वामिनो । सर्च एस स्वयमूने चर्कमणस्वापसी अञ्च नाभविस्स सन्त्रे महाविलोप पना अमितस्सण, स्वे तापसस्य महासक्कर करेट्याणील खता पक्कीमह् ।

उ पभाताय गित्या चारेडि छड्डिते मुग्गरपासाणादयो दिस्वा भीता बोधिमत्तस्य सिन्तिक गन्त्वा विन्तत्वा—भन्ते । दिहा वो चाराति पूच्छिम् ।

आमावसो । दिद्वाति ।

भन्ते ! एत्तके वो चोरे दिस्वा भय वा सारज्ज वा न उप्पज्जीति ?

बोधिसत्तो–आबुमो [।] चोरे दिस्वा मय नाम सघनस्स होति, अह पन निद्वनो, स्वाह कि मायिस्सामि ? मय्हं हि नामेपि अरञ्ञोप वसन्तस्स भय वा सारज्ज वा नत्थीति दत्वा तेस धम्म देसेन्तो इम गाघमाह [२६२]

> स्रतिक्रवोम्हि गामस्हि सरङ्को नित्य मे भयं, उजुमन्नं समारुल्हो मेलाय करुणाय साति ।

तस्य-समझक्योम्ब्रि गायम्हीति सङकाय नियुत्तो पतिदृत्तीति सङक्यियो, न सङक्यो असङ्क्रियो, स्व स्वान्ये असङ्क्रियो, स्व स्वान्ये असङ्क्रियो, स्व स्वान्ये अस्य स्वान्ये स्व स्वान्ये स्व स्वान्ये अस्य स्वान्ये स्व स्वान्ये स्व स्वान्ये स्व स्वान्ये स्व स्वान्ये स्व स्वान्ये स्व स्वान्ये अपन्यत् स्वान्ये स्वान्ये स्वान्ये अपन्यत् स्वान्ये स्वान्ये अपन्यत् स्वान्ये स्वान्ये अपन्यत् स्वान्ये स्वान्ये अपन्यत् स्वान्ये स्वान्ये स्वान्ये अपन्यत् स्वान्ये स्वान्ये अपन्यत् स्वान्ये स्वान्ये अपन्यत्वान्ये स्वान्ये अपन्यत्वान्ये स्वान्ये अपन्यत्वान्ये स्वान्ये अपन्यत्वान्ये स्वान्ये स्वत

एव बोधिसत्तो इमाय गाथाय धम्म देसेत्वा तुट्टीचत्तीह तेहि मनुस्सेहि सक्कतपूजितो यावजीव चत्तारो बद्घाविहारे भावेत्वा ब्रह्मालोके निष्यत्ति ।

सत्या इस धम्मदेसन आर्ड्डारत्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातक समोधानेसि । तदा सत्यवासिनो बुद्धपरिसा अहेस्, तापसो पन अहमवाति । . .

ग्रसङ्क्रियजातकं ।

७. महासुपिनजातकं

लापुनि सीदन्तीति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो सोलसमहासूपिने आरब्भ कथेसि ।

पस्यपन्नवत्थ्

एकदिवस किर कोसलसहाराजा राँत निहूपनतो पण्डिसे यामे सोलस महासुपिन दिस्वा मीततसितो पद्युफ्सित्वा डमेस सुपिनान दिट्टता किन्नुलो मे अविस्सतीति मरणभयतज्जितो सयनपिट्टे निसिन्नकोव वीति-नार्यमः।

अब नं पभाताय रतिया बाह्यणपुरोहिता उपमडकमिरवा सुबमर्साबस्य महाराजाति पुष्टिक्सु । कृतो मे आर्चारया सुख ? अज्जाह पच्चूससमये सोलस महासुपिनं परिस । सोम्हि तेस दिट्टुकालतो पट्टाय भवणतोति ।

बदेश महाराज [।] सुत्वा जानिस्सामाति वृत्ते बाह्मणान दिट्टसुपिने कथेत्वा–किञ्चलो मे इमेस दिट्टका-रणा भविस्स्तीति पुच्छि ।

ब्राह्मणा हत्ये विश्वनिम् । कस्मा हत्ये विश्वनयाति च वृत्ते—कक्खला महाराज ! सृपिनानि । का नेस निष्फत्ति भविन्सतीति ?

रञ्जन्तरायो जीवितन्तरायो भोगन्तरायोति^र इमेम तिष्ण अन्तरायान अञ्जातरोति । सप्यटिकस्मा अप्यटिकस्माति ^१

काम एते सृषिता अतिकरुसता [२६३] अप्यटिकम्मा, मय पन ते सप्यटिकम्मे करिस्साम, एते पटि-क्कमापेत असक्कोत्तान अम्हाक सिक्खितभावो नाम कि करिस्सतीति 2

. किपन कत्वा आर्चारया पटिककमापेस्सथाति ?

सब्बनुवकेन यञ्ज यजिस्माम महाराजाति ।

गाजा भीततिस्ति। तेन हि आचरिया मम जीवन नुम्हाक हत्ये, विष्ण मे सोधिय करीथानि आह । अब सो मस्तिका देवी न कारण व्यत्या राजान उपसङ्किमस्त्वा पृष्टिः किसु सो महाराज ! ब्राह्मण पुनापुन सञ्चारतीति ?

मुखिता त्व अम्हाक कण्णमूले आसीविस चरन्त न जानासीति ।

किएत महाराजाति ?

मया एवरूपा दुस्सुपिना दिट्टा श्राह्मणा तिष्ण अन्तरायान अञ्जातरो पञ्जावतीति बत्वा तेम पटि-घानाय यञ्जा यजामाति बत्वा पुनप्पुन सञ्चरत्तीति ।

कि पन ते महाराज । सदेवके लोके अग्गन्नाश्चणो सुपिनपटिकम्म पुच्छितोति ?

कतरो पनेस भट्टे सदेवके लोके अग्गबाह्मणोति ?

सदेवके लोके अगगपुग्गल सध्यञ्जा विसुट निविकलेश तथागत गोतम महाबाह्मण न जातासि ? मो हि भगवा मुपतन्तर जानस्य, गच्छ त पुच्छ महाराजाति ।

साध देवीति राजा विहार गन्त्वा सत्यार वन्दित्वा निर्सादि ।

मत्या मधुरस्सर निच्छारेत्वा—किन्नुक्षो महाराज ¹ अतिप्पगेव आगतोसीति [?]

अह भरते । पञ्चूमसमये सोतस महापूषिने दिस्या भीतो ब्राह्मणान आरोबीत । ब्राह्मणा नक्सता महाराज । मूपिता, एतेन पटिषादतनस्याम सम्बज्युक्तेन यञ्ज विजनसामाति यञ्ज सर्जाति । बहु पाण मरणभयतिज्ञता । तुम्हे च सर्देवके तोके अम्पपुरमातो, अतीतानायत पञ्चूपण उपादाय निष्य सो ज्ञेयसम्मी यो वो जाणमूले आपाय नातज्ञ्जति । एतेस मे सूपितान निष्कत्ति कथेय भगवाति ।

१. स्या० रोगन्तराको ।

एक्मेतं सहाराज । सदेवके लोके म ठपेत्वा अञ्जो एतेस सुपिनान अन्तर वा निग्फित्त वा जानिनु समस्यो नाम नस्यि अहं ते कथेस्सामि । अपि च खो त्व विट्वनियामेनेव सुपिने कथेहीति ।

साधु । भन्तेति राजा दिट्टनियामेनेव कथेतु आरमि.-

"उसमा रुक्का गावियो गया व अस्सो कसो मिगाली च कृम्भो पोक्करणी च अपाकचन्दन [२८४] लापृनि सीदिन्त सिला प्लवन्ति मण्डूवियो कण्हमप्पे गिलन्ति, काक सुकणा परिवारयन्ति

इ.म. मातिक निक्लिपत्वा कथेसि :

(१) भन्ते ¹ गरू नाव सृष्तिनं गुल अहस—बनारो अञ्चनवणा कालउसभा युज्यस्थामाति चतुर्हि दिसाहि राजदराण आगल्वा उपभयुद्ध पिम्मस्सामाति सहयने सिष्ठपतित युग्यमात्रार दसरेवा नदिव्या गण्जिक्वा अयुज्यस्थाव परिकर्णता । इस एटम गणिन अहसं । दमस्य को विश्वानीत ?

एव सत्था मृपिनस्स निष्फत्ति कथेत्वा आह—दूतिय कथेहि महाराजाति ।

(२) दुतिय भन्ते । एव अहस—खुइका रुपक्षा चेव गच्छा च पटिव भिन्दिरवा विदित्यमत्तिम्प रनतमत्त्रीम्प अनुगन्त्वा व पुष्किन चेव फलिन्त च । इस दुतिय अहस । इसम्म को विपाकोनि 2

महाराज¹ इमस्मापि विपाको लोकस्स पिन्हीतकालं मतुस्मात पिन्तापुककालं भविस्सित । अतागतिस्म हि सना निस्वरागा भविस्मित्, असम्पत्तवयाव कुमारियो पुरिमतद रात्वा उतुनियो चेव गठिभ-तियो च हुत्वा पुनर्पोताहि बडिडरमिति । बुदक रुक्वात पुष्क विषय हि ताम उनुनीभायो, एल विय च पुत्त-पीतदो भविस्मिति । प्रतीनिदार्तापा ने भय निष्य । तित्य कर्येहि सहाराजाति ।

(३) महागावियो भन्ते तदहजातान बच्छान स्वीर पिवन्तियो अह्स । अय मे तितियो सुिपतो । इमस्म को विपाकोति ?

इमरवापि विचाको अनागते एव मनुस्मान जेड्डापचायिककम्पस्य नटुकाले भविस्सति । अनागतिस्य हि सत्ता मानापितुम् वा सम्भूतस्युरंस् वा तञ्ज अनुपृष्ट्रोरवा सद्यमेत कृद्ध्व मांबदहित्वा व धायच्छादनमत्तिम्य , महत्त्वचान दातुकाम दिलालि (२०५४) अदातु कामा न दस्सति । महत्त्वका अनाया अक्षयवसी दापकं आरा-भव्देत्वा जीविस्सतित । तदहजानान बच्छकान स्त्रीर पिवोत्तिया महागावियो विय । इतोनिदानिम्य ते भय नत्ति । चतुत्व कपेहीति ।

(४) युरवाहे मन्ते । आरोहपरिणाहसम्पन्नं महागोणे युगपरम्पराय अयोजेत्वा तरुणे गोदम्मं भुरे योजेन्ते अहस् । ते भुर बहित् असनकोत्ता छड्डेत्वा अट्टस् । सकटानि नप्पर्वतिस् । अय से चतुत्वो सृपिनो । इसस्स को विपाकोति ? इसस्साणि विषाको अनागते एव अधानमकराजून काले पविस्तिति । अनावतिस्य हि अधीनमकरू-पराजांनो पाण्टितान पवेणिक्सकान कम नित्वरणसम्प्रधान बहामसान यस व स्वस्तित धम्मसमामां विक्रं-च्छायहांनोंप पिष्टते कोहार-कुल में महत्त्वके अमच्चे न ठपेस्सतित, तिष्यापितान पन तदकरणान यस दरसति, तथा क्ये एव व विनिष्ठप्रदृत्तां ठपेस्मति । ते राजकम्मानि चेव मुतायुष्टच अनानता नेव त यस उपिक-पित् प्रविक्तसतिन, न राजकम्मानि नित्यत्ति । ते अवस्थाति कम्मपुर छ्वेश्वेशति सहत्वकाणि पण्टितामच्या यसं अवस्मता किव्यानि नित्यत्ति मुस्तापि कि अपद्वानि एक् प्रविक्ति प्रविक्रित जाता अभ्यत्तिक तत्त्वन यारका जानिस्सत्तीति उपाद्मानि कम्मपिन न करिस्सिन्त, एव स्थ्यपापि तेस राजून हानियेव मविस्तित पुरं विह्न असम्पतानि व्याप्तिक सम्मपिन न करिस्सिन्त, एव स्थ्यपापि तेस राजून हानियेव मविस्तित पुरं विद्यानिस्सति । हानियानिमानि से यथा निवास पुरवाहिल महागणित युगपरम्पराय अयोजितकाली

(४) भन्ते ! एक उभतो मुख अस्स अहस तस्स द्वीमु पस्त्रेसु यवस देन्ति । सो द्वीहि मुलेहि खादित । अयं मे पञ्चमो सपिनो । इमस्स को विपाकोति ?

इससापि अनागतं अधिमकराजकालें येव विधाको भविस्सति । अनागताम्म हि अधिमकवाल-राजानी अधिमके लोजमनुसः विनिच्छा छेरसिति । ते पापपुट्यों सु अनादरा बाला सभाय निसीदिखा विनिच्छारं देत्ना उभिक्षपिय अत्यपच्चित्यकान हरकाते नव्य गहेता खादिस्सन्ति । अस्स्रो विद्य वीहि मुस्नेहि यवसं । इतीनिवार्ताम्य ते भय नित्य । छटठ रुपेहीति ।

(६) भन्ते [।] महाजनो सतसहस्सायिक मुवण्णपाति सम्मिज्जित्वा इध परसाव करोहीति एकस्स जरसिगालस्स उपनामेसि । त तत्य परसावं करोन्त अहस । अयं मे छट्ठो सुपिनो । इमस्स को विपाकोति ?

सम्सापि विपाको अनागते येव भविस्सति । अनागतिस्म हि अर्धास्मका विज्ञातिराजानो जाति-सम्पन्ना कृतपुत्तान आस्काय यस न दस्सत्ति अकुक्षीनानमेव वह्नेस्मितः । एव महाकुर्जानि हुगताति भविस्स्मित्त लामक [२-६] कृत्वानि दस्स्यानि । ते च कुलीन-पुरिसा जीवन्य अक्षनकोस्ता दमे निस्साय जीवस्सामिति अकुक्षीनान धीतरो दस्सन्ति । इति तास कुत्यशितान अकुनीनेहि सदि सवाभो अर्थास्मा-क्षस्स मुवण्णातियं पस्माकरण्योदियो भविस्सनि । इतीनदानिंग ने भय नत्य । तसम क्रबेटीति ।

(७) भन्ते [।] एको पुरिसो रज्ज् बट्टेस्बा बट्टेस्बा पादमले निक्किपति, तेन निसिक्ष्पीठस्स हेट्टा सीयना एका खातसिगाली तस्स अजानन्तस्सेव त खार्दात । एवाह अहस । अय सत्तमी सुपिनो । इमस्स को विपाकोति ?

इससापि अनावने येव विश्वाको भविस्मति । अनामर्तास्य हि इत्यियो गुरिमलोला मुननोलाअल-काराकोता विस्त्रणालोका आर्थिमक्षलाला अधिस्त्रित्व दुस्त्रीया दुरावारा । ता सामिक्षेह व्रत्योक्षरा अक्षान्त्रकार्यात्त्र कम्मानि करवा विक्रेश निवस्त्र मध्यान्त्र प्रात्यान्त्रात्त्र कम्मानि करवा विक्रेश निवस्त्र प्रार्थामाना अन्तीयेहे अच्चायिकिम्प किच्च अनोलोक्षेत्वा गेहै परित्रकेषस्य उपरिभागेन छिद्वहुनिहिष् वारे उपधारस्याना स्वे वर्षाण्यवस्त्रका सीर्वाम्य कोट्टेला यागुभत्तकज्वकारीति सम्पादेत्वा सावसाना विल्विप्सर्वान्त हेहु पिठके नियम्ब्राधातिष्यानी विषय बट्टेला वट्टेला पादमूले निम्बत्तरज्ञु । इतो निवानीम्य तं भय निवस्त । अट्टम क्येब्रीति ।

(८) भरते । राजदारे बहुहि तुच्छकुम्भेहि परिवारेका टिपल एक महत्त पृत्तिकुम्भ अइन, चत्ता-रोपि पत कणा चतुहि दिसाहि चतुहि अनुहिसाहि च चटेहि उक्क आहरित्वा आहरित्वा पृत्तिकुम्भोव पृर्गति, पृतिवारित उक्क उत्तरित्वा पत्तापित, ततोपि पुत्तपुत तथेव उक्क आहित्वत्ति, तुच्छकुम्भे ओलोकेत्सापि तरित्व । अस् मे अद्भती सुणिते । इमस्त को विषाकोति ?

इमस्मापि अनाग्ने पेत्र विपाको भविस्मति, अनागतिस्म हि लोको परिहायिस्सति, रह्ठ निरोजं भवि-स्सति, राजानो दुग्गता कपणा भविस्सत्ति, यो बन्सरी भविस्सति तस्स भण्डागारे सतसहस्समत्ता कहापणा भविस्सत्ति, ते एव दुग्गता सब्बे जानपदे अत्तनीव कम्मे^र कारेस्सत्ति उपदृदुता मनुस्सा सके कम्मत्ते छब्देहेदवा

१. स्था०-प्रसनो बप्पकरमं ।

राजूनच्ये व अत्याव पुत्रकागरप्तानि च क्येत्वा रक्कारता तायन्ता महत्ता पवेसेन्ता उच्छुमचेतानि करोत्ता यम्तानि करोत्ता आणितामित एक्ता पुष्कारामे च फलारामे च करोत्ना तत्त्व तत्त्व निष्क-भ्रानि वृज्वकायिति आहरित्वा रच्छा केद्रामारकेव पूरेस्तान्ति, अत्तनो मेहेसु बुच्छुमोहकेन् ओलांकेन्तामि न स्रोक्सानित, बुच्चुतुच्चकुत्तमे अनोलोकेत्वा प्रितकृत्ये पूर्णसदिसमेव भविस्सति। इतो निदानांग्य तं स्वय निष्य । तक्षां क्येग्रेति । [२८७]

(१) मन्ते ¹ एक पञ्चवण्यपुमसञ्झ्लं गम्भीर सब्बनोतित्वं पोक्बरीण अहस, समनतो द्विपद-बतुष्पदा श्रोतित्वा तत्व पानीय पिवन्ति । तस्सा मञ्जे गम्भीरद्वानं उदक आवित, तीरणदेशेसु द्विपद-पुण्यान अक्कमनद्वानं अच्छ विपससमनावित, एवाह अद्दर्शः । अयम्मे नवमो सुपिनां । इसस्स को विधा-क्रोति ?

इसस्पापि अनागते एव विशाको प्रविस्तित । अनागर्नास्म हि राजानो अधी-मका प्रविस्त्रानि छ्रदा-दि बसेन अगति गच्छला प्रज कार्रसमिन धामेन विनिष्ध्य नाम न दस्सति लश्चितका प्रविस्तित धन-सीना, पृद्वामिकेसु नेस सिनोमानानुद्या नाम न प्रविस्तित क्षक्तवा करसा उच्छ्यपेन उच्छापिकता विध मन्स्से पीलेना शीलेना नामप्यवारिह बीन उपादेश्या घन गण्टिम्मिन । भनुस्सा बिलगीकिता किञ्च वात्र असक्कोता गामिनमादयो छ्रद्वांचा एच्चन गन्वा बाह कप्पेम्मिन, अभिम्नजनपदी सुञ्जो भिवसति। । पञ्चनती प्रवासो सेट्यवापि योक्कपणिया मञ्जे उदक आविन गरियन्तै विष्यवस्त्रं। इती निदानिम्प ते स्व निक्ष । दसम करेडीनि ।

(१०) भाने । एकिन्सा येव कृष्णिया पञ्चमान ओरन अपाक अदस । अपाकिति विचारत्वा विभिज्ञत्वा ठपिन विथ नीहाका⁷हि पञ्चमानं एकिस पन्से अतिकित्तिष्ठो होति, एकस्मि उत्तष्ट्रको एकस्मि मुपककोति । अयम्मे दममो मिपनो । इमन्स को विपाकोति ⁷

स्मस्मारि अनानने येन विचानो मिलस्मित । अनायनस्मि हि राजानो अधिस्मका प्रविवस्तित, तेम् अधिसक्तेम् गजपुनापि ब्राह्मणमहर्पतिकापि नेममजातप्रधारीति समण्याहाणे उपायाय सब्ये समृस्सा अधिसक्तेम गजपुनापि ब्राह्मणमहर्पतिकापि नेममजातप्रधारीति समण्याहाणे उपायाय सब्ये समृस्सा अधिस्मक्तेम अधिस्मित । प्रविवस्तित विकास स्वयः मानुस्सा अधिस्मक्ता अधिस्मक्ता गति विकास स्वयः मानुस्ति । अधिस्मक्ता न्य राज्य नात विकास स्वयः वाधिस्मित, ते आकासद्व विमानाित नम्येस्मित, तेम् किंपनोम् देवता कृषिता देव विस्तित त दस्सति । वस्समाति। सन्याप्ति स्वयः विकासस्य वाधिस्मित, ते अधिस्मित, ते अधिस्मित, विकासस्य वाधिस्मित, व्यवस्था निवस्तित । वस्सायनीित एवस्य क्रिक्तस्य क्रिक्तस्य विकासस्य वाधिस्मित, विकास्य विकासस्य स्वयः प्रविवस्तित । विकासस्य विकासस्य स्वयः वाधिस्मित, विकास्य विकासस्य स्वयः विकासस्य स्वयः वाधिस्मित, विकास्य विकासस्य विकासस्य स्वयः विकासस्य विवस्य । विकासस्य विवस्य । एवसस्य । एवसस्य प्रविद्यानि । २००० ।

(११) भन्ते ! सतसहस्यत्र्यनिक चन्दनसार पूर्तितक्केन विकिशणने अइस । अय मे एकादसमो सिपनो । इमस्स को विपाकोति ?

अस्मार्गा अनागने एव मय्ह सासने परिहायन्ते विचाको भविस्तात । अनागतिस्त्र हि पच्चयनोक्षा अवस्वित्रभिक्ष बह भविस्तानित, ने मया पच्चयलोल्या निर्मायन्त्रा विध्वयभ्यस्ति । विचारिवस्त्रभ्यस्ति । विचारिवस्त्रभ्यस्ति । विचारिवस्त्रभ्यस्ति । विचारिवस्त्रभ्यस्ति । विचारिवस्त्रभ्यस्ति । केवल पद्ययञ्जनस्पानि वेव सप्तानि । विचारिवस्त्रभ्यस्ति । केवल पद्ययञ्जनस्पानि वेव सप्तानि । विचारिवस्त्रभ्यस्ति । अपरे अन्तरबीधिचनुकराजद्वारादिस् निसीदित्वा कहापण्ड्डकहापण पाद मासकस्यादीनिप निस्साय वेविस्तर्तात् । इति मया निवस्त्रभ्यस्ति

(१२) मन्ते ! तुच्छलापुनि उदके सीदन्तानि अद्दर्स । इमस्स को विपाकोति ?

इसस्मापि अनामते अविमाकराजकाले लोक विपरिवत्तस्ते येव विपाको भविस्सति, तदा हि राजानो जातिसम्भानां कुलपुतान यस न दस्सील, अक्लीनाल येव दस्सील, ते इस्तरा मिक्सिलेत । इतरे दलिइर. राजसम्मुलेपि राजहारिष अमन्वसम्भुलेपि विनिक्तस्त्रहानेपि तुक्क्यलासुस्तिसान अकुलीनालञ्जे क कथा अभितीदित्वा ठिता विद्य निक्चल स्पानिहता भविस्साल, सङ्घसिक्यानेपुत्ति महस्यकम्मणकम्मष्टानेस् वेच पत्तवीवरपरिवेणार्थीयो नक्ष्यकम्मणकमम्प्रानेस् वेच पत्तवीवरपरिवेणार्थीयो नक्ष्यक्रप्रानेस् च दुस्सीलात पाणपुणलालञ्जो कथा निव्यानिका सविस्सति न लज्जी- विस्तरमाल एव सन्वयापि तुक्क्ष्यापुसीदनकाली विद्य भविस्तरि । इतो निदानिम्प ते भव निव्य । तेरसम कर्जनीति ।

(१३) भन्ते [।] महन्तमहन्ता कूटागरप्पमाणा घनिक्षला नावा विय उदके प्लश्नमाना अह्स । इमस्स को विपाकोति [?]

इस्सापि नारित्ते येथ काले विधानो भिक्साति । तथा हि अधी-मकराजानो अक्नीनान २१ रस्यति , त इस्सा भिक्सीन्तं, इसीना दुग्गतां तथा केचि नाएक करिस्सानि इतरीय श्रेष करिस्सान्ति गाजसमूखे वा अस्वयनस्मृत्तं वा विक्तिष्ठ युर्हा वा विक्रिच्छवक्तुम्पान चर्ताक्षनास्मितान कुन्यूनातं कथा न अरेपाहित्वा पतिद्वृद्धिस्मति । तेसु कथेनेसु कि इसे कथेनोति उत्तरे परिहासमेव करिस्सन्ति, भिक्सुपांत्रपार्वाप्त वृत्तप्त करिस् ठातेसु तेव पंतर्गे भिक्सु एककालव्ये भट्टा निस्मानि गापि नेम कथा परियोगाहित्वा पतिद्विस्मति । सितान पत्तवनकालों विच भिक्सान्ति । उत्ती निदानिय ते स्था नियं च वद्यस्म कथेहीन । १८६२ ।

(१८) अस्ते ! खुडकमध्कपुष्पत्पमाणा मण्डकियो सहस्ते कण्डमप्पे वेगेन अनुविध्यत्वा उप्पत्ननाने विद्य छिन्दित्वा छिन्दित्वा सम खादित्वा गिर्लान्तियो अहस अय चर्डुसमो मुपिनो । इमस्स को विपाकोति १

प्रमामापि लोके परिहायन्ते अनामते एवं विषाको भिजनानि । तदा हि मनुस्मा निवयराग दुण्जातिका किलोतान्वतिका हुन्दा तम्मतरुवान् अनामते प्रार्थान वसे वित्तमानि येदे वास-मन्तरप्रदेशि पारिद्यान्त्र सोपि दिल्ञ्ञान्वत्रम्भिम सक्व तास येव आपन भिजनाति । असुक हिल्ङ्गान्वण्य वा परिच्छेदादि जान वा कहान्ति बुनै यन्य वा तत्त्व वा होनु कि तुर्दिमिना व्यापारेन ? त्व सर्ट परे सन्त वा असना वा जानितृकामो जानीति बच्चा नानप्पकारीद अक्कोसिल्या मुब्बन्तीति कोट्टिया दामचटके विश्व च असनो वसे कत्वा जानतो स्मारिय पवसेस्मान्त । एव मणुकपुष्पमाणान मण्डक्योतिकान आमीविम कण्हमापं गिननकातो विय भिजमति । इत्ती विदानिय ते भय निष्य । पण्णसम कपद्वीति ।

(१४) भन्ते । दसिंह असद्धम्मेहि समन्नागत गामगांचर काक कञ्चनवण्णतायः स्वण्णाति लद्ध-नामेस्वण्णराजहसे परिवारेन्ते अहस् । इमस्स को विपाकोति ?

इसस्पापि अनागने बुज्जनगङ्गकाले येव विशासो भवित्यांत । अनागतांस्य हि राजानां हरिबािनच्या-दिस् अक्सना युवेस् अविध्यायदा भवित्यांति । ने अनाने गरंके विधान आसक्यामा समानजानिकाल कुल-पुनात इम्मार्ट्य अद्भावा वात्रांत्र पादम्भिकतहारक्षणकादीन दस्मिलः । वानियोत्तमाश्राक कुल्युना राज-कृते पारिट्र अनुभावाना जीविक कृष्येत असमस्या १२वा इस्मार्ग्य विके वानियोगहीने अकुलीने उपहुहत्या विवारम्यानि । युष्णणगळहेमेटि काकस्य परिवारिनकाली विद्य भवित्याति । इतो निदानिस्य ने अस्य निस्य । सोलदास क्येशीन ।

(१६) भन्ने [।] पुत्र्वे दीपिनो एलके लादन्ति । अह पन एलके दीपिनो अनुवन्धिरदा मुरुस्कृति लादन्ने अर्थनं, अथञ्ज्ञे तसावका एतके हरनो दिन्दा तसिता भयपना हुत्वा एलकान भया पलायित्वा गुम्बगहुनानि पविभिन्दा निलीयिम् । एवाह अर्ह्स । इसस्स को विषाकोति ।

डमसापि अनागने अश्रीस्मकराजकाने येव विपाको भविस्सति । तदा हि अकुलीना राजवन्तमा इस्सरा भविस्मन्ति कुलीना अप्यञ्जाता दुग्पता । ने राजवन्तमा राजान अननो कष गाहायेत्वा विनिच्छ- यद्वानादिस् बलक्तो हुत्वा कुलीनानं पवेणिश्वागतानं बेलक्त्यादीनि अन्हाकं सन्तकानि एतानीति अभियुण्भित्वा ते न तुम्हाकं अम्हाक्ति आगान्त्वा विलिच्छ्यद्वानादिस् विवदन्ते वेत्तकातिदि एत्रापोवा गीवाय गहेवा अप-कृद्वगोरवा [२६०] अत्तनो पमाणं न जानाय अन्तेहिं सर्वि विवदय ? इदानि वो एञ्छो कलेव्हा हत्यपाद-च्छ्रेद्वनादीनि अगेस्सामाति मन्तञ्जस्तिन । ते तेत्र भवेन अत्तनी सन्तकानि अपूनि नृष्काक येवतानि गण्ड-याति नीत्यादेव्या अत्तनो गेहानि पविनित्वा भीता निप्रिज्यस्तितः । पापीमक्कुपि पेसले भिक्कु यदार्वव विहेटस्तिन ते पेसना भिक्कु परिवरणं अलभागा अप्यान प्रविनित्व गहण्डानेस्नु निर्कारियम्ति । एव होनजच्येहि वये पापीमक्यूरि च उपस्कृता आसिमतक्त्रमुतान वेव पेसलान भिक्कुनं च एतकान भयेन तमावकान पत्रापनकालो विव भविन्मति । इतो निदानाम्य ते भयं नित्य । अपस्य हि सुपिनो अनागतञ्जे व आरक्ष रिट्टें । बाह्मणा पन न वस्मे सुरम्मताव तिय निनेहेन त कर्यायम् । बहु पन लिमन्सामाति आसि-

ण्व मत्या मोलमात्र महामृश्विनान निष्कृति कथेत्वा न सो महाराज । एतरहि त्वञ्ञो व इसे गृश्विन अहस, पोरागकराजनीयि अहसम् । बाह्मणापि तेस एवसेव इसे मृश्विन गहेरवा यञ्जासके विश्वित, ततो पण्डितीह दिश्तेन गयेन गत्वा वीजिसन पुण्डिस्तु । पोरागकापि तेस इसे मृश्वि कथेन्ता इमिनाव निद्यामेन कथेनाित बत्वा तेन याचिनो अतीत आहरि.—

ग्रतीतवत्थ

अतीने वारागमिय ब्रह्मदन् रज्ज कारने बोधिमनां उदिष्ठ ब्राह्मणकृते निव्वनिश्वा बश्यानं इति-एववज्जं एवजिल्या अभिक्वाचेव समापानयो च निव्यनेत्वा हिसबनापदेन स्नानकील कीलनां चित्रति । तदा बाराणामिय ब्रह्मदनो इमिनाव नियामेन इसे सुंपने दिस्वा ब्राह्मणे गुष्टित्र । ब्राह्मणा एवसेव यञ्जा यजिनु आर्राभम् ।

नेस पुरोहितस्स अस्तेव।सी मागावो पण्डिनो ब्यत्तो आचरिय आह—आवरिय । तुग्हेहि मय तयो वेदे उस्पण्डापिता । नव तस एक मारेत्व। एकस्स सोस्थिकस्मस्स करणन्नाम नत्थीति ?

नान ! डॉमना उपागेन अम्हाक बहु थन उष्पिज्यस्मति । त्व पन रञ्ञा घनं रस्थिनुकामो सञ्ज्ञाति । मागाची-नेना हिल्लावर्षिय ' गुरुटे तुम्हाक कस्म करीय अटे तुम्हाक सन्तिके कि करिस्सामीति विच-रुको उर्ज्ञा उर्ज्ञाता अस्मागित

त दिवसञ्जो व बोधिमनोपि न कारण जात्वा अञ्ज मित्र मनुम्मपण गर्ने महाजनस्म वर्षमा मोक्यो भविस्मनीति आकामेन गत्वा उय्याने ओर्नारम्या मुक्कणपटिमा विष्य मह गत्नमित्रानले निमीदि । माणवो बोधिमन उपमञ्जनमित्वा बन्दित्वा एकमन्त निमीदित्वा पटिसन्यारं अकामि ।

कोधिसन्तीपि तेन [२६१] सर्कि सबुरपटिसन्यार कल्वा—किन्नुको सामाव ! राजा धम्मेन रज्ज करोनीति पुन्छि ।

भन्ते । नाजा नाम धाम्मको अपि व यो पन त श्राक्षमा अनित्ये पत्तन्त्रयोगीन । राजा सोलससूपिने दिरबा बाह्मणान आरोवेसि । बाह्मणा यञ्जा यिज्यमामानि आरदा । कित्रु यो भन्ते । अप नाम इसेस सपितान विपक्तीरि नाजान सञ्ज्ञापेत्या सुद्राहरू महाजन भया मोचेनु न वृत्रतीरि ?

मय को मागव ! राजान न जानाम, राजापि अम्हे न जानाति । सचे पन इधागस्त्वा पुच्छेय्य कथ-स्थासस्स मयिन्त ।

माराचो अह भन्ते [।] आनेरसामि । तुम्हे सवागमन उदिबक्तना मृहुन निसीदचानि बोधिसत्त पटि-जानापेत्वा रञ्जा सिन्तक गन्त्वा--महाराज[ा] एको आकासचारिको नाएसो तुम्हाक उय्याने ओतिरित्वा तुम्हीह हिट्टमूपिनान निष्कित्त कथेस्सामीनि तुम्हे वक्कोमनीनि आह ।

राजा तस्स कथ सुरवा ताबदेव महन्तेन परिवारेन उत्यान गरुवा नापम बन्दिन्वा एकमन्त निसिन्नो पुष्टि—नुस्हे किर भन्ते । मया दिहुसुपिनान निष्कांन जानावानि ?

आम महाराजाति !

तेन हि क्येकाति ।

कविक महाराज ! यथादिट्ठे ताव सुपिने मं सावेहीति ।

उसमा रुक्ता गावियो गवा च अस्सो कसी सिगाली च कुम्भो, पोक्सरणी च अपाककस्पर्न । सापूर्ति मीदाल सिला प्लवन्ति मण्डकियो कश्रसप्पे गिलालित.

मण्डूकियो कण्हसप्पे गिलन्ति, काक सुबण्हा परिवारयन्ति तसावका एलकानं भयाहीति।

क्त्वा पसेनदि कोसल रङ्गो कथितिनयामेनेव सपिने कथेसि ।

कौधिसलीपि तेस इदानि सत्थारा कथितनियामेनव वित्यारतो निष्फत्ति कथेत्वा परियोसाने सयं इद कवेसि —

"विपरियासी वसति न इधमत्यीति"

राजापि तस्स ओवादे ठिनो दातादीति पुरुष्टाति कत्वा ययाक्रम्म यत्तो। मण्या इस धम्मदेसन आह-रित्ता सुवित्तवच्चाते अस्त निर्वेष त्राच्ये यरुष्टानि यरुष्टा हारेत्वा महाजनस्म जीवितदात दत्ता अनुगीय स्टेत्ता जातक समोधानेति । तदा राजा आनन्यो अहोति, सालाबो साण्यिनो, तायस्य तत्त अस्त्रेयाति ।

परिनिब्द्ते पन भगवति सङ्गीतिकारका उसभा रुक्बादीनि एकादसः पदानि अट्टकथ आरोपेत्वा "लापूनी" ति आदीनि पञ्चपदानि एक गाथ कत्वा एककनिपातपालि आरोपेसन्ति ।

महासुपिनजातक ।

८. इल्लीसजातकं

उभो सञ्जाति इद सत्या जेतवने विहरन्तो मञ्छिरिय कोसियसेट्टि आरब्भ कथेसि ।

पच्चपञ्च बत्य्

राजगहनगरस्य किर अविदूर सक्कर नाम निगमो । तत्यको मच्छिरियकोसियो नाम सेटठी अमीति कोटिवियवो परिवर्सीत । यो तिगागन तेलविन्दुमत्तिम्य नव परस देनि न अन्ता परिभूञ्जति । इति नस्स त विभवजात नव पुनदारादीन न समगवाद्वाशान अत्य अनुमोति । रचससपरिमाहितपोक्चरसी विघ अपरि भोग तिद्वति ।

सत्या एक दिवस पञ्चूमसमय महाकरुगाममापत्तिनो बुद्धाय सकललोकधातुय बोधनय्यबन्धव ओलो केन्तो पञ्चवत्तालीसयोजन मत्यके बम तस्स तस्स सेद्विना सपजायतिकस्स सोनापत्तिफलस्मूपनिस्सय अद्दस।

नतो पुरिमनरदिवसे पन मा राजान उपद्वातु गाजार नप्तवा राजुणद्वान करवा आगच्छातो एक ख्वात
कक्त जनपदमनुस्म कुम्मासपूर कपन्नपूत्र स्वादन दिस्वा नन्य पिगाम उप्पादेखा अत्तनो घर गन्या चिन्तिस
मचाड कपल्याय सादिद्वामोमजीति वश्यामि बहु मया सिंढ सादिद्वामा अविस्पत्ति एव मे बहुति तण्डुल
मिपपाणिगातादीनि परिक्षय मीमस्तिन । न क्षमाचि कथस्सामीनि तण्ड प्रधियानी विकरति । सो गण्डुल्ते
कात् (२६३) उपाण्य-एक्जाता धर्मानस वनपनो जातो । ततो तण्डु अधिवासेनु अस्तकोनो गण्डम्
पवितिस्ता मञ्चल उपपृहिषा निर्याज्य । एव गानीप धनहानिस्यम कस्सचि किञ्चित्र न क्षेत्रीस ।

```
अथ न भरियाँ उत्तमः कमिन्या चिट्ठि परिमण्डित्या—िक ते सामि । अकामुकत्ति पुण्छि ।

त में विज्ञ्ञ अकामक अत्योगि ।

किन्नु यो ते राजा कृषिताति ?

राजापि में न कृष्यतीति ।

अय कि त पुण्योताहि वा दासकम्मकरादीहि वा किञ्ज्ञि अमनाप कत अत्योगि ?

पवस्तमिय म नतिय ।

किस्मित पन त तण्डा अत्योति ?

एव बुत्तिप अन्दानिभयन विञ्ज्ञि अवस्ता निस्सदोन निपिज्ञ ।

अय न भरिया—नपदि सामि । किष्मित तण्डानि आह ।

सो बचन परिया—नपदि सामि । किष्मित तण्डानि आह ।
```

कि ते तण्डा सामीति ? नपत्लपूर्व खादितुकामोम्हीति । अत्र किम च न कथिसि कि स्त्र दलिहो ? इदानि मकलसक्लप्रतिगमवासीन पहोनके कपत्लपय पित्र स्यामीति ?

```
कि ते नहि त अत्तनी वम्म कत्वा खादिस्सत्तीति।
तेन हि एक रच्छवासीन पहानके पवामीति?
जानामहत्त्व महद्वनाविन।
इमिन्म गहमावे: सब्बस पहोनक क्रवा पवामीति?
जानामहत्त्व महरुक्षात्वप्रभावन्ति।
तेन हृत्ते पुरादारमत्त्तसेव पहोनक क्रवा पवामीति?
कि ते पुरादारमत्त्तसेव पहोनक क्रवा पवामीति?
```

१ स्या० गेहसामन्ते ।

किं पन तुय्हं च मय्हं च पहोनकं कत्वा पचामीति ?

त्वं किं करिस्ससीति ?

तेन हि एकस्सेव ते पहोनकं कत्वा पचामीति।

इमॉस्म ठाने पञ्चमाने बहु पञ्चासिसित । सकलतण्डुले ठांत्वा भिन्नतण्डुले च उद्धनकपस्तादीनि च बादाय योकं खोरसिप्पमचुकारितं च गहेत्वा सत्तभूमकस्स पासादस्स उपरि महाततं बारुग्ह पच। तत्थाह एककोव निसीदित्वा खादिस्सामीति ।

सा साबृति पटिस्सृशित्वा गहेतम्बं गाहापेत्वा पासाव अभिरुद्ध दासियो विस्सन्जेत्वा सेट्टि पक्कोसा-पेसि । सो आदितो पट्टाय द्वारानि पिरहत्तो सम्बद्धारेषु, सूचिघटिकानि दत्वा सत्तमं तलं अभिर्काहत्वा तत्यपि द्वार पिरद्वित्वा निसीदि । अरियापिस्स उद्धने ऑग्ग जालेश्वा कपस्तकं आरोपेत्वा पुत्रे पित्तु वारिम ।

अस सत्या पातीच महामोगाल्लानत्येर आमन्तेसि-एसो मोगाल्लान ! राजगहस्य अविदूरे सक्स-रिनामे मच्छरियकोसियसेट्ठी कपलपूर्व सारिस्सामीति अञ्जो स दस्तनमयेन सत्तमूमकपातारे कपलपूर्व पाचापेति । त्व तत्य गत्वा तं सेंहुं दर्भत्वा निक्यतेवन करवा उमोपि जयमतिके पूर्व चत्रीत्रस्यमुम्माण्यात् तादीन व गाहारेव्या जताने बनेन जेतवन जानेहि । अज्जाहं पञ्चिति भिक्क्यतेहि सर्वि विहारे येव निमी दिस्सामी, पूर्वहेव भव्यक्तिच्च करिस्सामीति आह् । येरो साधु भनेति सत्यु वचन सम्पर्टिच्छत्वा तावदेव डांब-बलेत निगम गत्वा तस्म पासादस्स सीहरञ्जरदारे सुनिक्त्यो सुपास्तो आकासे येव मिएस्पक विव अञ्जाति । रिस्थी

महासेट्टिनो येर दिस्वा हदयमस किय । सो अह एवडपानञ्जो व प्रयेन इम ठान आगतो, अयं च आगन्त्वा वातपानद्वारे ठितोति गहेनज्वगहरा अपस्सत्तो आगिमिह पश्चित्ततोरासम्बरा विच रोसेन तटनटायन्तो एकमाह-समस्या ! आकासे ठवा ताव कि लिमस्सिस ? आकासे अपरे यद दस्सेत्वा चड्कमन्तोपि नेव लिमममीति अहा ।

थेरो तस्मि येव ठाने अपरापरं चङकमि ।

सेट्टि-चडकमन्तो कि लिभस्सिस ^२ आकासे पत्लडकेन निसीदमानोपि न लिभस्सिस येवाति आह । थेरो पत्लक क आभजित्वा निसीदि ।

अथ नं-निर्सिष्ठो किं लिभस्सिसि ? आगन्त्वा वातपानजम्मारे ठितोपि न लिभस्ससीति आह ।

अय थेरो उम्मारे अट्टासि ।

अथ न-उम्मारे ठितोपि कि लिभस्सिसि ? धूमायन्तोपि न लिभस्सिसि येवाति आह ।

षेरो घूमायि । सकलपासादो एकथुमो अहोसि । सेट्टिनो अक्कीन सूचिया विज्ञक्तकानो विय जातो । मेहज्जायनमयेन पञ्जलत्तीपि न लिभस्ससीति अवत्वा चित्तेस अय समयो सुरुठु लग्गो अलदा न गमिस्सति, एकमस्स पुत्रं दापेस्सामीनि, मरिय आह—भट्टं । एक खुटुप्व पचित्वा समग्रस्स दत्वा उच्योजेहि नन्ति ।

सा योकञ्जों व पिट्ठ कपल्लपातिय पिक्सिप । महापूनो हुत्वा सकलं पाति पूरेत्वा उद्धमातो अहासि । सेट्ठी तं दिस्वा बहुं तथा पिट्ठ गहित भविस्सतीति सयमेव दिव्यकण्णेन योक पिट्ठ गहेत्वा पिक्सिप । पूचो पुरिमपूनतो महन्तवरो जातो, एव य य पचित मो सो महन्तमहन्तोव होति ।

सो निब्बिन्नो भरिय आह–भद्दे ! इमस्स एक पव देहीति ।

तस्सा पच्छितो एकं पूर्व गण्डानिया सब्बे एकाबद्धा अल्लीयिसु। सा सेट्टि आह–सामि ! सब्बे पुत्रा एकतो लग्गा विस् कातु न सक्कोमीति।

अह करिस्सामीति सोपि कातु नासन्ति । उभो जना कोटिय गहेत्वा कड़व लापि वियोजेतु नास-क्खिसु येव । अथस्स पुवेहि सर्ढि वायमन्तस्सेव सरीरतो सेदा मुच्चिसु । पिपासा च पच्छिकिज ।

ततो भरिय आह-भद्दे । न मे पूर्वेहि अत्थो, पिच्छ्या सींद्ध येव इमस्स भिक्खुस्स देहीति ।

सा पिंच्छ आदाय येरं उपसङ्कमित्वा सम्बे पूर्व थेरस्स अदासि ! थेरो उभिक्रमिण धम्मां देसेसि । तिष्णां रतनानं गुरो कपेसि । अस्पि दिम्नं अस्पि यिट्टन्ति दानादीनं फल गगनतले पुष्णवन्दं विद्य दस्सेसि । तं सुत्वा पसन्नवित्तो सेट्ठी-अन्ते ! आगन्त्वा इमस्मि पल्लङ्के निसीवित्वा पूर्वे परिभुञ्जवाति आहः।

येरो-महासेष्ट्रि ! सम्मासन्दुद्धो पूर्व चाहिस्सामीति पञ्चिह मिक्कुसतेहि सद्धि विहारे निर्मिष्ठो तुम्हाकं घिषमा स्रति सेष्ट्रिमारंप पूर्व च बतारावीन च गण्हामेच सत्यु सन्तिक गमिस्सामाति [२६४] आह । कहं पम मन्ते ! एतर्राह सत्याति ?

इतो पञ्चचत्तालीसयोजनमत्थके जेतवनविहारे सेटठीति ।

भन्ते ! काल अनतिक्कमित्वा एत्तक अद्धान कथ गमिस्सामाति ?

महासेट्टि ! तुम्हाक राचिया सति वहं वो अत्तनो इद्विबलेन नेस्सामि, तुम्हाक पासादै सौपाणसीसं अत्तनो ठाने येव भविस्ताति सोपाराणियोसान पन जेतवनद्वारकोट्टके भविस्सति । उपरि पासादा हेट्टापासार्व ओतररणकानमत्तेन वो जेतवनं नेस्सामीति ।

सो साथ भन्तेति सम्पटिच्छि ।

येरो सोपारासीस तत्येव करना सोपारापादमूल जंतवनद्वारकोट्टके होनूति अधिदृत्ति । तयेव अहोसि । इति येरो सिट्ट व सेट्टिअस्टिय च उपरिपासादा हेट्टा पासाद ओतरराकालतीव किप्पारत वेजवन सम्मापेसि । ते उमोपि सच्यार उपराद इसिम्बत काल आरोजेषु । सच्या प्रतम्प प्रतिस्ताय पञ्चाणवाद्वारानी निसीदि सर्वि भिक्कुसद पेन । महासेट्टी बुट्यमुक्स भिक्कु नदश्यन दिन्तवहोदक अदासि । सेट्टिअस्या तथाणतस्स यत्ते पूर्व पतिद्वार्थीस । सच्या अनती याणनस्त गोष्ट्रि । यञ्चसता भिक्कृष तथेच गण्डिस् । सेट्टी सीरस-एसम्बर्धाराज्ञवाद्वारीद दश्यान अगमार्थि ।

या पञ्चित्त भिक्कुसनेहि सर्वि भत्तिकच्च निद्वापेसि । महासेद्दीपि सर्वि भरियाय यावदत्य साथि ।
युवान परियोशानमेस न पञ्चायित । सक्कार्महार निक्कुत च विधासादान च विश्रपि परियानी न पञ्चायाँ । भन्ते ' भून पानिक्यम न पञ्चतीति भावतो आरोजेस । तेन हि जेतनबढाइत्तेष्ठेके छुद्देशासि ।
अय ने डारकोट्टकस्स अविदूरे पन्धारद्वाने छुद्देशिस् । अज्ञापि त ठान कपल्यपूबयभारतेन पञ्चायित ।
महासेद्दे सह भरियाय भावत्त उपगडकमित्रवा एकमन्तं अद्भूति । भगवा अनुमोदत अकासि । अनुमोदनापरियोमाने उभोपि सोतापनिकने पतिद्वाय सत्याद वनित्वा द्वारकोट्टके सोपाए आयस्क अतनो पासादे येव पतिदृष्टिष्ठ । तत्रो 'पद्राय महासेद्दे अनीतिकोटियन बुद्धसासने येव विकित्त ।

पुत दिवसे सम्मासम्बद्धे सार्वात्यय पिण्डाय चरित्वा जेतवतं आगम्म भिक्कृतं सुगतीवार्दं दत्वा गन्य-कृटि पवितित्वा पतितात्वीने सायण्हसमये धम्मसभाय सिष्पात्वा भिक्कृत्यस्थावृत्ती । महास्मागत्वा-तत्वरं रम्मानुभाव मण्डारियमेहिं गृहुतेनव सेस्वा निम्बिद्धेन करवा यूने सार्वार्यवा जेतवन आनेत्वा तत्व्यु सम्मुणं करवा सोतापत्तिकते पतिहुर्वस्ति । अहो । महानुभावो येरोति वेरस्स गूराक्य कर्वना निसीदिषु ।

सत्या आगत्त्वा कायनुत्य भिक्ववे ! एतर्गह कथाय सिप्तिस्त्राति पुण्छत्वा इमाय नामाति वुत्ते भिक्ववे ! कुलदमकेन [२६६] नाम भिक्कृता कुल अविहंद्रेत्वा अकिनमेत्वा पुण्कतो रेएं गण्हत्तेन भमरेन विय उपसङ्क्रमित्वा बृद्धगुर्णे जानापेतव्यन्ति वत्वा थेर पससत्तो .-

> यथापि भसरो पुष्फं वण्एागन्ध अहेठय, पलेति रसमादाय एवं गामे मुनी चरें'ति।

इम धम्मपरे गाय बत्वा उत्तरिम्प थेरस्स गुणं पकासेतु-न भिक्सवे । इदानेव मोगगल्लानेन मच्छरियसेट्री दमिती पञ्चेषि त दमेत्वा कम्मफलसम्बन्ध जानापेसि येवाति वत्वा अतीत आहरि -

प्रतीतवत्यु

अतीते बाराणसिय ब्रह्मदत्ते रज्ज कारेंन्ते बाराणसिय इन्लीसो नाम सेट्टि अहोरि, अदीरिकोटिविभावो पुरिस्रदोससम्प्रागतो खञ्जो कृणी विसमजिक्समण्डनो अस्सद्धो अप्यसन्नो मच्छरी, वेब अञ्जेसं द्वेतिन स्वय परिभुज्जित । रक्कसपरिग्गहितपोक्तरणी वियस्स गेह अहोसि । मातापितरो पनस्स याव सत्तमा कृतपरिवट्टा

१ स्या०-अनुपहच्च सद्धं अनुपहच्च भोगे मञ्जूरिसेट्टिं।

तेन हि एककस्सेव ते पहोनकं सुरं करोमीति पन बुने गेहेसुराय कारियमानाय बहू पच्चासिसिना। अन्तरापणा आहरापंत्रापिन सक्का वर्ष निवित्तने पातृति मासकस्य दवा अन्तरापणतो सुरावारकं बाहरा-पंत्रा चेटकेन गाहापंत्र्यापारा निक्कस्म नदीति र गन्त्वा महामग्यसमीपे एक गृथ्व पविस्तित्वा सुरावारकं अवस्थित्वा गण्यं त्राप्त्र प्राप्तारकं क्राप्तित्वा गण्यं त्राप्ति स्वाप्तिका स्वाप्ति स्वाप्तिका स्वापतिका स्वाप्तिका स्वाप्तिका

पिता पनस्य दानादीन पुञ्जान कतना देवलोके मक्को हत्वा निव्यत्ति । मो तस्मि क्षमे पवत्तिन नुषो में दानण उदाहु नोति आवज्येको तस्स व अप्यति हिस्सा पुनस्म व [२६) कुल्यन मामेल्या दानमाल कापेन्य याचके निकत्ति हुस्ला मन्द्र्यात्र्यामेले वितिद्यात्र अञ्चले दानमाल कापेन्य याचके निकत्ति हुस्ला मन्द्र्यात्र्यामेले वितिद्यात्र अञ्चलेले दानमाल मन्द्रिया मोने प्रतिद्यात्र प्रकार माने प्रतिद्यात्र प्रकार माने प्रतिद्यात्र करोमीति मनुस्थाप्य ओर्टात्ला हल्योममेहिता निव्यत्तेष्ट प्रतिद्यात्र वित्यत्त्र वित्यत्त्र वित्यत्त्र प्रतिस्थात्र प्रवित्यत्त्र प्रतिस्थात्र प्रवित्यत्त्र प्रतिस्थात्र प्रवित्यत्त्र प्रतिस्थात्र प्रवित्यत्त्र प्रवाद्यत्त्र प्रतिस्थात्र प्रवाद्यत्त्र प्रतिस्थात्र प्रवाद्यत्त्र प्रतिस्थात्र प्रवाद्यत्त्र प्रवाद्यत्त्र प्रवाद्यत्त्र प्रवाद्यत्त्र प्रवाद्यत्त्र प्रवाद्यत्त्र प्रवाद्यत्त्र प्रवाद्यत्त्र प्रवाद्यत्त्र प्रतिस्थात्र प्रवाद्यत्त्र प्रवाद्यत्ति ।

राजा कि महासेट्टि । अवेलाय आगतोसीति आह ।

आम आमनोम्हि देव ! घरे मे असीतिकोटिमन घन अस्थि, त देवो आहरापेत्वा अत्तनो भण्डागारे पुरापेतृति ।

अलं महामेद्रि ! तब धनतो अम्हाकं गेहे बहुतरं धनन्ति ।

सचे देव ! तुम्हाक कम्मं नित्य यथारुचिया नं गहेत्वा दान दम्मीति ।

देहि महासेट्ठीति ।

सो साथु देवाति राजानं विन्तवा निक्सिमत्वा इल्पीसवेट्टिनो गेहं अरमाति । सब्ये उपट्टाकमन्स्सा परिवारेषु । एकोपि नायं स्लोसोति जानिनुं समत्यो तिय । सो गेहं पविमित्वा अन्तो उम्माने रुत्वा दोवार्गिक पक्कोसापेत्वा—यो अरूपो मया समानरूपे आगन्त्वा ममेत गेहिन्त पविमित्तु आगच्छित त पिट्टिय पहरित्वा निहरेप्याचाति बस्वा, पासाद आरम्द्र महारहे आसने निवीदित्वा सेट्टिशिय पक्कोसापेत्वा सिनाकार देशसेत्वा— अहे । दानं देमाति आह ।

तस्स तं वचन सुत्वाव सेट्टिभरिया च पुत्तधीनरो च दासकम्मकरादयो च एत्तकं काल दानं दातुं चित्तम्यि नित्य, अञ्ज पन सुर पिवित्वा मुदुचित्तो हुत्वा दानुकामो जातो भविस्सतीति वदिम् ।

अथ न सेट्ठिभरिया-यथारुचिया देथ सामीति आह ।

तेन हि भेरिवादकं पक्कोसापेत्वा सुवण्णरजतमरिणमुत्तादीहि अत्थिका इल्लीससेट्टिस्स घरं गच्छल्तूति सकलनगरे भेरि चरापेहीति ।

सा तथा कार्रीता । सहाजनो पिन्न्यपितन्वकारीनि गहेल्या गेहृद्वारे मिन्नपति । सक्को सत्तरतनपूरे गर्को विवरणेखा तुम्हारूं दीम्म यावदर्थ गहेल्या गम्ब्रप्यति आह । महाज्तो धन नोहरित्वा महाज्ते रासि कत्वा आध्वतभावनानि पूरेला गम्ब्रप्ति । अञ्चतरो पन जनपदमनुस्सो हत्नीसमेहिनो गोणे तस्सेव रखे योजेला समिह रतनीहि पूरेला नगरा निम्नसम्म सहामगं परिपण्जिया तस्स गुम्बस्स अविद्रारेत रखे पानेन्ते-

१. स्या०--सिवसं । २. स्या०--बाराणसीनगरं । ३. स्या०--सेट्ठि झाकारं ।

बस्सवतं त्रीव सामि इल्लीवरीट्ट ! तिप्तस्तायदानि मे यावणीयं कम्मं अकत्वा जीवितव्यं बात, तवेव रथो तवेब गोखा तबेब गोहे सत्तरतनानि ! नेव मातरा [२६८] विश्वानि न पितरा तिष्रस्ताय लढानि सामीति— सेटिनी वराक्रय कथेन्तो गच्छिति ।

सी त बहु सुत्वा भीततिसतो विन्तिसं अयं मम नामं गहेत्वा इद्यिज्वरच्य वदित, किच्च नुस्रो रञ्जा मम चन लोकस्स दिक्षत्ति गुम्बा निक्कमित्वा गोएं च रघञ्च सञ्जानित्वा—अरे ! दुटुचेटक ! मण्हं गोएग मण्डं रसोति क्त्वा गन्ता गोएं नासारञ्जूयं गीष्ह ।

गहपतिको रथा ओरुह-अरे! दुहुचेटक! इल्लीसमहासेट्ठी सकलनगरस्स दानं देति, स्वं कि अहोसीति ? पक्कान्यत्वा अर्तान पातेन्तो विग्र खन्मे पहरित्या रथ आवाय अगमासि ।

स्रो पन कम्पमानो उद्घाप पत् पुष्टिब्ह्स्चा पुष्टिक्क्स्चा वेगेन गन्त्वा रखं गण्डि । गहरतिको रखा जीत-रित्वा केसेसु गहेत्वा नामेत्वा कप्परप्पहारोहि गले गहेत्वा आगतमग्गाभिमुलं खिपित्वा पक्कामि । एत्तावता-पिस्स सुरामदो खिज्जि ।

सो कम्मानो बेगेन निवेतनद्वार गन्त्वा यनं आदाय गच्छन्ते महाजने दिस्वा—अम्भो । कि नामेतं ? हे राजा मम धन विनुम्पापेतीति त. ता गन्दा गच्हाति । गहितगहिता पहरित्वा पादमूले येव पातेन्ति । स्रो वेदनामनो गें नेहं पविसितं आरिभ ।

द्वारपाना-अरे दुरुगहपति । कहं पविससीति वसपेंसिकाहि पोपेत्वा गीवाय गहेत्वा नीहरिस् । सो ठोरवा हदानि राजान नित्य मे अञ्जो कोचि पटिसरएग्रेति रञ्जो सन्तिक गन्त्वा-दैव ! मम गेहं तुन्हें विजनपारेपाति ।

नाह सेट्टि । विलुम्पापेमि ननु त्वमेव आगन्त्वा सचे तुम्हे न गण्ह्य अह मम धन दान दस्सामीति नगरे भेरि चरापेत्वा दान अदासीति ?

नाहं देव । तुम्हाक सन्तिक आगच्छामि, कि तुम्हे मण्डारियभाव न जानाथ ? अहं तिरागमेन तेलबिन्द्राम्प न कस्सचि देमि । यो सो दान देति तं पक्कोसापेत्वा बीमसथ देवाति ।

राजा सक्क पक्कोसापेसि । द्विन्न जनान विसेस नेव राजा जानाति न अमच्चा ।

मच्छिरियसेट्ठी-कि देव ! न जानाथ अह सेट्ठी, अय न सेट्ठीति आह ।

मय न सञ्ज्ञानाम, अस्थि ते कोचि सञ्जाननकोति ⁷

भरिया मे देवाति ।

भरिय पनकोसापेत्वा कतरो ते सामिकोति पुन्छिम् । सा अयन्ति सक्करसेव सन्तिके अट्टासि । पुस-धीतरो दासकम्मकरादयो पक्कोसापेत्वा पुन्छिस् । सब्बे सक्करसेव सन्तिके तिट्टन्ति ।

पुन सेट्टी चिन्तेसि मध्ह सीसे पिनका अस्य केसेहि पटिच्छन्ना । त खो पन कप्पको एव जानाति त पक्कोसापेस्सामीति । सो-कप्पको मं देव । सञ्जानाति त पक्कोसापेहीति बाह ।

तिस्म पन काले बोधिसत्तो तस्स कप्पको होति । राजा तं पक्कोसापेत्वा—इल्लोससेिंहु जानासीित पुण्छि । $\lceil \xi \xi \xi \rceil$

सीस ओलोकेत्वा सञ्जानामि देवाति ।

तेन हि द्विन्नम्पि सीसं ओलोकेहीति।

तिस्म खरो सक्को सीसे पिलक मापेसि । बोषिसत्तो दिम्नामि सीसं ओलोकेन्तो पिलका दिस्वा महा-राज ! हिम्नामि सीसे पिलका अत्येव । नाह एतेषु एकस्सापि इल्लीसभाव सञ्जानितु सक्कोमीति बत्बा इम गायमाह:-

> उभो खञ्जा उभो कृणी उभो विसमचक्खुला, उभिम्नं पिलका जाता नाहं पस्सामि इल्लिसन्ति ।

१. स्था०--वेदनाप्पत्तो ।

२ स्या०-विसमचव्युका ।

तत्य-जमोति द्वेपि जना। सञ्जाति कृष्ठकपादा। कृषीति कृष्ठहत्या। विसमयक्कुलाति विस-सर्वाभिक्षपथ्वता केकटा। पिक्काति द्विष्ठीम एकाँस्य वेद सीत्यपदेव एकस्यानाव है (पत्तका वाता। सर्वाभिक्षपथ्वता केकटा प्राप्त इत्योतित स्पन्नामि । एक्सप्तिप्त इत्योतिस्याव न जानागिति असोच ।

बोधिसत्तस्त वचनं सुत्वा सेट्ठी कम्पमानो धनसोकेन सर्ति पण्चपट्टापेत् असकोन्ता तत्येव पित । तिस्मं बण्णे सक्को-नाह् महाराज ! इल्लीसां सक्कोहमस्त्रीति महत्वाया सक्कोगहरस्य आकार्त सद्दाधि । इल्लीसस्त मुखं पुञ्क्किया उदकेन सिर्टण्यम् । सो उद्दाय सक्कं देवराजानं वन्दित्वा अद्दासि । अय नं सक्को सहन्यक्त । अयं नं सक्को सहन्यक्त । स्व इत ने पता त्यं मा पुत्तो । अवं द्वारामीते पुञ्जानि कृत्या सक्कत पत्तो त्यमन मे वेसं उपिष्धनिदत्वा अदानसीलो हृत्या मण्डिरोय पतिद्वाय दानसानायो आपेत्वा याचके निक्कदृत्विता मत्येव सण्योभि । ते नेव त्य परिभूज्याधिन अञ्जाने सेति । रक्कतपरिपाहित विय सरं तिद्वति । सेव ने दानसान्या पाणकिका कर्त्वा दानं दस्तिद इज्येतं कृत्यतः ने वे दस्ति सम्बंदो प्रमान स्वव्यवित्या स्वर्णेतः । स्वर्णेत स्वर्णेतः स्वर्यतः स्वर्णेतः स्वर्यतः स्वर्णेतः स्वर्यतः स्वर्वतः स्वर्यतः स्वर्यतः स्वर्यतः स्वर्यतः स्वर्यतः स्वर्य

इल्लीससेट्टी मरण्भयेन सन्तज्जितो इतो पट्टाण वानं दस्सामीति पटिञ्ज अदासि । सक्को तस्स पटिञ्जं गहेल्वा आकासे निसिन्नकोच धम्मं देसेत्वा तं सीनेसु पतिट्रापेत्वा सकट्टानमेव अगमासि । इल्लीसीपि दानादीनि पञ्जानि कत्वा सम्परायणो अहोसि ।

सत्या न भिक्कवे । इदानेव मोगगत्सानो मच्छिरयसेट्टि दमेति, पुक्वेपेस इमिना दमितो येवाति वत्वा इम धम्मदेसने आहरित्वा अनुसारिय घटेत्वा जातक समोधानेसि । तदा इल्लोसो मच्छिरियसेट्ठी अहोसि । सक्को देवराजा मोगगत्नानो । राजा आतन्त्रो । कप्पको पन अहमेवाति । १०००

इल्लीसजातक ।

हे. खरस्यरजातकं

बतो विलुक्ता च हता च गाचोति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो अञ्ञतरं अमञ्चं जारव्म कपेसि । पच्चपद्मबस्य

कोसमरञ्जा किर एको अमच्चो राजान आरायेला पच्चतगामे राजनवर्षान' लिमला चोरेहि सर्कि एकतो हुत्वा अह मनुस्से आदाव अरञ्ज पिविसस्सामि तुम्हे गाम विजुम्मित्वा उपहुदं मस्हं ददेव्याचाति वस्वा पपेब मनुस्से सिव्यातेत्वा अरञ्ज गन्त्वा चोरेसु आगन्त्वा गावियो घातेत्वा मंसे लादित्वा गामं विजुम्मित्वा गतेसु सायम्हसमये महाजगरित्वती आगच्चति । तस्त न चिरोज तं कम्म पाकटं जातं । मनुस्सा रञ्जो कारोचेसु । राजापि त पक्कोसापेत्वा दोलं पितिद्वारेत्वा सुनिगाहितं निग्गहेत्वा अञ्जा गामभोजक पेसेत्वा जैतवनं भन्त्वा तथागत वन्तित्वा भगवतो एतमस्य आरोजेसि ।

भगवा—न महाराज । इदानेव एस एवंसीलो, पुज्बेपि एवंसीलो येवाति वस्त्रा तेन याचितो अतीतं श्राहरिः—

श्रतीत बस्यु

बतीते बाराएसियं ब्रह्मदत्तो रज्य कारेत्तो एकस्स अमच्चस्य पच्चत्तगमं अदासि । सर्ब्य पुरिमस-दिसमेव । तदा पन बोभिसत्तो वरिएज्वाय पच्चत्ते विचारतो तिस्य गामके निवासं कप्पेसि । सो तिस्य गाम-भोजके सायण्हसमये महाजनपरिवारेन भेरिया वज्यमानाय आगच्छत्ते अय दुरुगामभोजको चोरेहि एकतो हुत्वा गामं विनुम्पापेत्वा चोरेसु पत्नायित्वा अटींव पविद्ठेसु इदानि उपसन्तुपसन्तो विय भेरिया वज्यमानाय आगच्छतीति इम गायमाह-—

> यतो विलुत्ता च हता च गावो दड्ढानि गेहानि जनो च नीतो, प्रयागमा पुत्तहताय पुत्तो खरस्सरं देण्डिमं वादयन्तोति।

तात्य-मतीति यदा । विस्तृता च हता चाति विस्तृत्यित्वा च नीता मस सादनत्याय च हता । गावोति गोरूपानि । बढ्वामोति ऑगा दत्वा ऋषितानि । कनो च नौतोति करमरणाहै गहेत्वा नीतो । पुत्तहताय पुत्ताति हतपुत्ताय पुत्तो । निरुप्जवीति अत्यो । ब्रिक्सहिरोत्तप्यस्त हि माता नाम नत्यि । इति जीवनोषि हतपुत्ताय पुत्तो । निरुप्जवीत अत्यो । मान्यक्षित । क्षारस्तित यद्वादः । श्रीव्यम्ति पट्टमेरि ।

एव बोधिसत्तो इमाय गायाय त परिभासि । न चिरेनेव च तस्स त कम्म पाकट जात । अथस्स राजा दोसानरूप निगाह अकासि ।

सत्या-न महाराज ! इदानेबेस एवंसीको पुब्लेषि [३०१] एवं सीलो येवाति वत्वा इमं धम्मदेसनं आहरित्ता अनुर्काल्य घटेत्वा जातकं सत्तोधानेति । तदा अमच्चो इदानि अमच्चो येव, गायाय उदाहारएा-कपण्वितमनस्त्री पन अद्रमेवाति ।

खरस्सरजातकं।

| १ स्या०—ा | M |
|-----------|---|
|-----------|---|

१० भीमसेनजातकं

यं ते पविकारियतं पुरेति इद सत्या जेतवने विहरन्तो अञ्जातरं विकारियकं भिन्न्युं आरब्भ कथेसि ।

पण्च पञ्च बत्य

एको किर भिनसु-आनुसो ! अम्हाकं जातिसमा जाति, गोत्तसमं गोत्तं नाम नित्य । मयं एनस्पे नाम महासत्तियकुले जाता, गोत्तेन वा घनेन वा कुलप्यदेसेन वा अम्हीह पविसो नाम नत्य । अम्हाकं सुबण्ए-एजतादीनं अत्यो नित्य । सासकम्मकरापि नो सालिमंसीदन मूल्जित्त । कासिकस्य निवासीत्त, कार्यि-कासेवेनयं सित्ममन्ति, मय पक्वजितमानेन एतरहि एयक्शानि नूसानि प्रश्नानि मुक्तान्ति वीवराणि धारेमाति-स्टलकमण्किमान भित्मकुन अन्तरे विक्त्येन्तो जाति आदिवसेन सम्मेत्तो वञ्चेन्तो विचरति ।

अयस्म एको भिक्कु कुलपदेस परिगण्हित्वा त विकत्यनभाव भिक्कुन कर्षेति । भिक्कु धम्मसभाय सिप्रपितता–आबुसो ! असुको नाम भिक्कु एकरूपे निय्यानिकमासने पञ्चजित्वा विकत्येन्तो बम्भेन्तो बञ्चेन्तो विचरतीति एतस्स अगरा कर्यायस ।

सच्या आगत्वा कायनुष्य भिक्कवं । एतर्राह कयाय सिन्निसप्तांत पुन्धित्वा इमाय नामाति वृत्ते न भिक्कवं ! सो भिक्ष्यु इरानेव विकल्पेनतो बन्भोन्तो बञ्जेनतो विचरति, पुत्र्वेषि विकल्पेनतो वम्भोनो बञ्जेनतो विचरीति बन्ता अतीत आहरिः—

प्रतीतवत्थ

जनीते बाराएसिय बहारसे रज्ज कारेले बोधिमतो एकस्मि निगमगामे उदिक्वजाद्वागकुले निव्व-तित्वा बयपपती तक्कितियाय दिवापामोक्बम्स आकृषियस्य सिनके नयी बेटे श्रृहान्य विज्ञाद्वानाति उप-हेत्वा सक्किष्णे निफक्ति पत्वा चुन्त्वभृत्महर्वाथिको नाम अहोसि । को तक्कित्यनाती निव्यमित्वा स्वव्य-सम्पत्तित्वानि परियोग्तानी महिसक्यरहरू अपामिति । क्रमिस्म पन आतके बोधिमतो श्रोक रम्मो ओनता-कारो अहोसि । वो विन्तीस सवाह कच्चित राजान उत्तमद्रकांमस्यामि मो एव रम्मगरीरो त्व कि अम्झक कम्म करिस्ससीति वस्त्रति । यश्चनाह आरोहशिनाहत्वमत्र अभिक्ष्य एक पुरित्व फनक कत्वा तस्य पिच्छा-याय जीविक क्रप्येयस्ति । १०२१

सो तपारूप पुरिस परियेममानो भीस्तेतस्त नामेकरस तत्रवायम्म तत्त्रविनन्द्रान गत्वा तेन सींद्र परिस्थारं क्रवा सम्म । व्य कि नामोसीति पुण्डा । इह भोमसेनां नामानि । कि पन व्य एव अभिक्यां उपिससम्प्रमे हृत्वा इम नामकस्म करोसीति ? जीविन् अनक्तंन्त्रीति । सम्म । माए कम्म करि सक्तजबदुरीपे मया सींदसी धनुमाहो नाम निव्य, सचे पनाहे किंक्च राजान परमेध्य सो म एव रस्सो अप कि अम्हाक कम्म करिस्तीति कोपेय्य । त्व गजान दित्त्वा अह पनुमाहीत वस्त्रेत्यासि । राजा ते परिक्वय दस्ता बुन्ति निबद्ध दस्तित । अह ते उप्प्रक्रसम् करोत्तो तब पिट्टिन्द्रायाय जीविस्मामि एव उमोपि सुन्तिता भवित्यास । करोहि मन वचनित आह । मो माधूति सम्परिन्छ ।

अब न आदाम बाराणांन मन्त्रा मय चूलवन्गपट्टाको हुत्वा त पुरती करवा राजद्वारे द्रत्वा रञ्जो । कारोनाभीमा । आगन्धपूर्ति व बूत्ते ज्योपि प्रविशित्वा राजान विन्दत्वा अट्टम् । कि काराणा आगत्याति च बूत्ते भीमसेनो आह-अह धनुम्मही मया सिंदगो नाम सकत्वन्वद्वीय प्रमुग्हो तस्वीति । कि नम नस्ये ! सभन्तो म उपदृक्ष्त्विमीति ? अद्भासि सहस्स नभन्तो उपदृष्टिस्सामि देवति । अय ते पुरिस्तो को होतीति ? यूल्लक्युक्ति देवति । सायु उपदृक्षति । ततो पट्टाय भीमसेनो राजान उपदृक्षति । उप्पर्न किच्च पतस्स सीमिसानि तिस्वरति । तेन को पन समयेन कासिस्ट्रे एकाँसा अरुष्टां बहुझं मनुस्सानं सब्चरहामणं व्यन्धो झ्रह्यांति । बहु मनुस्से गहेला गहेलां कार्यात । तं पर्वात रुष्टा आरोचेषु । राजा मीमसेनं पक्कोसापेखा-सिक्स-स्पष्टि तात ! नं व्यन्य गण्डितन्ति आह ।

देव ! कि धनगाहो नामाह यदि व्यग्धं गहेत्ं न सक्कोमीति ?

राजा तस्स परिब्बयं दत्वा उय्योजेसि । सो घर गन्त्वा बोधिसत्तस्स कथेसि । बोधिसत्तो-साधु सम्म [।] गच्छाति आह ।

त्वस्पन न गमिस्ससीति ?

आम न गमिस्सामि, उपायं पन ते आचिक्खिस्सामीति ।

आचिक्स सम्माति ।

स्व व्याधस्त वसनद्वान सहसा एककोव मा अगमासि । जानपदमनुस्ते पन सिक्षमतेत्वा एक बाढे वा
पन्तहस्सानि माहापेत्वा तत्व गत्वा व्याधस्त अद्वितमावं जत्वा पतासित्वा एकं गुन्वं पविशित्वा उदरेन निगअवैद्यासि । जानपदा व्याप पोर्थेत्वा गोहस्सित्व तेहि व्यापे महितं वन्तीह एक बेलि विविद्या कोर्ट्यगहेत्वा मतव्यायस्स सन्तिक गन्त्या—मो ! केनेस व्यापो मारितो ? अह इसं व्याप गोग् विय बिल्सया वियत्वा रच्छा । सन्तिक नेस्सामीति बल्ति [३०३] अत्याय गुम्बं पविद्ठो । यथा बिल्या अनामताय
एव केनेस व्यापो मारितोनि कथेय्यासि । अय ते जानदा भीतनिसता सामि ! मा रच्छा आविस्ताति
बहु यन दसस्ति । व्यापो तथा गाहिनो भविस्ताति रच्छा गिर सन्तिका बहुं यन लिस्सतीति ।

सं साभूनि गःखा बोधियनेन कपिदानियामेनेव व्यार्थ गहेत्वा अरञ्ज्ञं क्षेमं करवा महाजनपरिकृतो बाराण्मिय आगत्त्वा राजान दिस्वा गहितो मे देव ! व्याप्यी अरञ्ज्ञ खेम कतित्त ब्राहः । राजा तुरुठो बहु धन अदाप्ति ।

पुनेकदिवस एक माग महिसो छ्रह्मणेतीत रञ्जो आरोचियत् । राजा तयेव भीमसेनं पेसेसि । सांपि बंधिसत्तेन दिवनवेन व्यापं विच तीमा गहेत्वा आगन्छि । राजा पुन बहुं पन अदासि । महत्तं हस्त-रिय जा । 1 हस्पियमदम्तो बोधिसत्ते अवञ्च क्या तस्स वचन न गण्हाति । नाहं त निस्साय जीवािम, कि त्वञ्जो बुरिसोति आदौत फल्सवनािन वरति ।

अप मितपाहण्ययेनेवेको सपत्तराजा 'आगान्या बाराग्यास उपयोग्यास राज्य वा देतु युद्धं वाति रञ्जा । माना पंसीम । राजा युरुभाइतिन भोमनेत पेसीस । सो सब्बस्थाहतमञ्जी भटवेस गहेरवा सुसम्बद्धस बार-णम्म पिट्टे विस्ति । वोधिनत्तीप तस्य मरामाञ्चन सव्यवसाहसम्बद्धो भमिनसेक्ष पद्धिमामति निर्दाशि । बारयो महाजनपत्वितो नगरद्वारेन निक्कमित्वा सङ्गामसीस पापुरिए । भीमसेनो युद्धभीरसङ् सुत्थाव कांम्यतु आरद्धी । बीधिमती इदानम हिप्योग्युत्त पतित्वा मरिस्सतीति हिप्यतो अपतत्वत्य भीमसेन बोरोन परिक्सियाला गण्डि । भीमसेनो सम्पहारद्वान दिस्वा मरस्यभयतिज्ञतो सरीरवनञ्जेन हित्यपिट्टि दूनीस ।

बोधिसमो—न लो ते भीमसेन [।] पुरिमेन पिच्छिम समेति । त्व पुब्वे सङ्गामयोषो विय अहोसि । इदानि हत्यिपिट्टि दूमेसीति वत्वा इम गाथमाह —

> यं ते पविकत्यित पुरे भ्रम्भ ते पूर्तिसरा सर्जन्ति पड्या. उभय न समेति भीमसेन! युद्धकथाच हवञ्च ते विहञ्जान्ति।

तत्य—यं ते पविकत्यितं पुरेति य तया पृत्वे कि त्वञ्ञो व पुरिसो नाह पुरिसो । सगामयोघोति विक-त्यित, वस्भवचन बुत्त इद ताव एकं । **बया ते पूर्तिसरा सजस्ति पञ्चाति**श्य ते इमे पूरिभावेन सरएाभावेन ख

१. स्या०-सामन्तराजा ।

पृतिकराति लक्ष्मामा सरीरक्षकञ्चारा सवन्ति वलञ्चाति एगवरन्ति । वच्चाति ततो (२०४) पुर विकल्पिततो अपरमारे इसानि इसस्मि सह्यानितिति अल्यो । जनवंन समिति भोक्सेनाति इस् भीमवेतः ! अस्म नसमिति । कर्तरे ? युक्तवा व हृत्यं निवृत्यः । विकल्पो इत्यिपिटटं दसनाकारण्यो विचारोति अल्यो ।

एवं बोधिसतों ते गरिहत्वा मा भाषि सम्म ! कस्मा मिष ठिते बिह्ण्यासीति भीमधेनं हित्यिपिट्वितो स्रोतारत्वा नहामित्वा गेहसेन बच्चाति उत्योजेत्वा अञ्च मया पाकटेन भवितुं बट्टोतित सङ्गामं पंविसत्वा सीहनां डमहित्या बन्दोहुर्क मित्तवा सपताराजा वेबेनाहग हाहरोवचा बारापविष्ट्या नितास्व कामानी । राजा तुट्ठो बोधिसतस्य महन्तं यस अदासि । ततो पट्टाय बुल्लघनुग्गहपण्डितोति सक्तजन्द्वीपे

राजा ठुट्ठा बाधिसत्तस्स महत्त् यसं अदाक्ष । तता पद्वाय चूल्लघनुगाहपाण्डताति सक्तजन्त्रुचाप पाकटो अहोसि । सो भीमसेनस्स परिज्यय दत्वा सक्ट्वानमेव पेसेत्वा दानादीनि पुरुष्मानि कत्वा ययाकम्मं गतो ।

सत्या-न भिक्कवे ! इदानेवेस भिक्कु विकरणित पुग्नीप विकरित येवाति वत्वा इमं घम्मदेसन आह-रित्वा अनुसन्धि घटेत्वा जातक समोघानीस । तदा भीमसेनो विवरियकभिक्कु अहोसि, चुल्लधनुगाहपण्डितो पन अहमेवाति ।

> भीमसेनजातकं। वरणवन्नो ग्रहमो ।

६. अपायिम्हवग्गवगणना

१. सुरापानजातकं

सपायिम्ह समिच्चम्हाति इदं सत्या कोसम्बिय उपिनस्साय घोसितारामे विहरन्तो सागतत्थेर आरब्भ करोति ।

पच्चपन्नवस्थ

भगवित सावत्थियं वस्सं विस्तवा चारिकागमनेन भइवितकं नाम निगमं सम्मत्ते गोपालका पसु-पालका कस्सका पद्माविनो व सत्यारं दिस्वा बन्दित्वा-मा भन्ते ! भगवा अम्बतित्यं अगमासि । अम्ब-तित्ये जटिलस्स अस्समे अम्बतित्यको नाम नागो आसीविसो घोरविसो, सो मगवन्तं विहेटेग्याति वार्रीयसु ।

भगवा तेसं कयं अस्पुणनो विय तेसु यावतितयं वारयमानेसुपि अगमासिये । तत्र सुदं भगवित भद्द-वितकाय अविदूरे अञ्जातर्रास्म बनसण्डे विहरन्ते तेन समयेन बुदुण्ट्वाको सागतो नाम येरो पोषुज्जनिकाय इंद्रिया समझागतो तं अस्यम उपसङ् कृमित्वा तस्स नागराजस्स बसनद्वाने तिशसन्यारक् पञ्जापेत्वा पस्स-इ.केन निसीदि । नागो पञ्जलि, बेरोपि पञ्जलि । नागस्स तेजो येर न बाचित । येरस्स तेजो नाम बायित । एव सो खर्णेन तं नामराजान बमेत्वा सररिषु वेब पतिट ठापेला सन्यु सन्तिकं अगमासि ।

सल्वापि भह्वतिकाय यथाभिरन्त विहरित्वा कोर्डाम्ब अगमासि । सागतत्वेरेन नागस्स दमितभावो सकलजनपदं पत्वरि । कोर्नाम्बनगरनाचिनो सत्यु पञ्चुलागनं करवा सत्यारं वन्दित्वा सागतत्वेरस्स सन्तिकं गन्त्वा वन्दित्वा एकमन्त ठिता एवमाहसु-मन्ते ! य तुम्हाक दुल्तभ त वेदस्याय तदेव मयं पटियादेस्सामाति ।

थेरो तुण्ही अहोसि । ख्रब्बिग्गिया पनाहंसु-आबुतो ! पब्बिजितानं नाम कापोतिका सुरा दुल्लभा बेब मनापा च सचे तुम्हे थेरस्स पसन्ना कापोतिक सुर पटियादेशाति ।

ते साधूति सम्पर्टिन्छस्या सत्यारं स्वातनाय निमन्तिया नगर पवितित्वा अत्तनो अत्तनो तेहै घेरस्स स्सामाति कागीतिक सूर पक्ष पटियादेखा थेरं निमन्तेत्वा घरे घरे पक्ष अदसु । धेरो पिवित्वा सुरामदमत्तो नगरतो निक्कमन्तौ द्वारत्तरे पतित्वा विध्यनसमानो निपन्त्वि ।

सत्या कराभत्तिरूचो नगरा निक्समत्तो थेरं तैनाकारेन निषम्न दिस्वा—गण्ह्य भिनस्ववं । सामर्तान्त गाहापेत्वा आराम अगमासि । भिक्कू वेरस्स सीसं तथापातस्स पादमुले करूवा र निषण्यापेसुं । सो परिवक्तित्वा पादे तथापताभिमुसं करवा निपञ्जि । सत्या भिक्कू पटिपुज्यि—किमुखो भिक्सवं । य पुख्ये सागतस्स मिर्य गारसं त दशानि अत्योति ?

नित्य भन्तेति । भिनकादे ! अम्बतित्यकं नागराजानं को दमेसीति ? सागतो पंग्तेति । किंप पंग्तेति | भिनकादे ! सागतो उदकदेबृहुभकीम्प दमेतु सक्कूऐम्याति ? नोहेत भन्ते ! अपि नृ को भिनकादे ! एवरुपं पातृ युत्त य पिबित्या एव विसञ्जा होतीति ? अयुत्तं भन्तेति ।

वर्ष को भगवा थेर गरहित्वा भिक्क् आमन्तेत्वा सुरामेरयपाने पावित्तियन्ति सिक्कापर्थ पञ्जापेत्वा उद्घायसमा गन्यकृटि पाविति । सम्मवभाग सिक्तपिता भिक्क् सुरामेरयपानस्य अवस्य कर्षयस् । याव महायोकञ्जेत आवृत्तो । सुरापानकाम ताव पञ्जासम्पर्धः नाम प्रदियन्ते सागत यथा सत्यु गृएमन्ताम्य न जानाित तथा अकासीित ।

सत्या आगत्वा कायनृत्य भिक्कवे ! एतरिह कथाय सिन्निस्त्रिता पुण्डिस्ता इमाय नामाति वृत्ते न भिक्कवे ! इदानेव सुरं पिवित्वा पब्बजिता विसञ्जितो होन्ति ! पुब्बेपि अहेसु येवाति बत्वा अतीतं आहोर - [३०६]

ग्रतीतवत्यु

अतीते बाराणसिय बहादते रञ्ज कारन्ते बोधिसतो कासिरद्हे उदिच्च-ब्राह्मणकुले निब्बत्तित्वा बयणतो हसिरव्यञ्ज पश्चित्वा अभिज्ञा च समापतियो च उथादेत्वा भानकील कीलत्तो हिमबन्तव्यदेसे बसति पञ्चिह अनेवासिकसर्तीह। अथ न बस्सानसमये सम्मते अन्तेवासिका आहसु-आचरिय । मनु-समयम गन्त्वा तोणान्विन वेशित्वा आगण्डामाति।

आबुनो । बहु इधेव बितस्यामि दुर्दु एन गरन्ता सरीर सन्तरोत्त्वा क्सन्त वितिनामेता आणक्क्यानि । ते सामृति आविर्ग्य वित्तवा बारासिय गरन्ता राजुत्याने वित्तवा पुनिवन्ते बहिद्वारागांचे येन भिक्काय चरित्वा सुहिता हुत्या पुनिवन्ते नगर पितिस्त्र मुन्तिस्त्र सित्यायामाना भिक्त अदस् । क्रिपाहरूच्येन च रुञ्जोपि आरोपेम् –देव ! हिमकन्ततो पञ्चसता इसये आगल्या उद्याने वसन्ति मोरन्त्रा परिवारित-द्विया सित्वन्तीति । तो तो समुग्ते सुन्ता उत्यान गर्न्या विस्त्वा करावित्यम्यारो सस्तान चानुमान त्यंव वसन्तराया परिज्ञार स्त्रान चानुमान त्यंव वसन्तराय परिज्ञार सुन्ति । तो तो पुर्द्वा प्रावेहें थेव सुन्तिस्त्र अपनिवन्ति । ते तो पुर्द्वा प्रावेहें थेव सुन्तिस्त्र अपनिवन्ति । ते तो पुर्द्वा प्रावेहें थेव सुन्तिस्त्र अपनिवन्नित्र ।

अपंकदिवस नगरे सुरानक्यलं नाम अहोसि । राजा पञ्चित्तान सुरा दुल्लभाति बहु उत्तमं सुरं दाधिस । सापसा सुर विविद्या उद्यान नरूवा सुगमदस्ता हुत्वा एकक्वे उद्यान निष्कृत (फक्के वार्षिय) निष्कृत व्यानिव्या नामियता सार्गिया सिक्त विद्यान अन्तर्गे विष्णकार दिस्ता न अन्तर्गे विष्णकार दिस्ता न अन्तर्गे विष्णकार दिस्ता न अन्तर्गे विद्यान अन्तर्गे विद्यान प्रकार कार्यकार कार्यकार कार्यकार कार्यकार विद्यान कार्यकार कार्यकार विद्यान प्रकार विद्यान प्रकार विद्यान कार्यकार विद्यान कार्यकार विद्यान कार्यकार विद्यान कार्यकार विद्यान विद्यान कार्यकार विद्यान विद्यान कार्यकार विद्यान कार्यकार विद्यान कार्यकार विद्यान कार्यकार विद्यान विद्यान विद्यान विद्यान विद्यान कार्यकार विद्यान विद्यान

द्यपायिम्ह सनिचम्ह प्रगायिम्ह रुविम्ह च,

विसञ्ज्ञाकर्रांग पोत्वा विट्ठा नाहुम्ह वानराति ।

्तरण अपाध्यक्षाति सुरिम्पविम्ह । अविश्वश्वाति त सुर पिविरवा हरपुणादे लोलेता निष्वम्ह । अपाधिकृति सुर्व विवरित्वा आयतकेन सरेन गाधिम्ह । श्रीवस्त् वाति पुन विष्पटिसारिनो एवरूप नाम अम्हीह कतिन रोहिन्ह । बिट्डानाकृष्ट् बानराति एवरूप सञ्जाविनासनतो विसञ्ज्ञकर्राणसुर पीत्वा एतदेव साधु यं वानरा नाहस्तृति ।

एव ते अत्तनो अगुरा कथेसु । बोधिसत्तो गरुमंबासरहितान नाम एवरूप होति येवाति ते तापसे गर-हित्वा पून एनरूप मा करित्याति तेस ओवादं दत्वा अपरिहीनज्ञानो ब्रह्मलोकपरायराो अहोसि ।

सत्या इस धम्मदेसन आहरित्वा जातक समोघानीस । इतो पट्टाय हि अनुसन्धि घटेत्वार्ति इदम्पि न वक्खाम । तदा इसिगरोा बुद्धपरिसा अहोसि, गएसत्या पन अहमेवाति ।

सुरापानजातकं ।

२. मिस्रविम्दजातक

श्रीतकारम रमणकाित इदं सत्या जेवने विहरत्तो एकं दुष्त्रप्रामिनव आरव्भ कथीत । इमस्त पन जातकस्य कस्यपसम्मासम्बुद्धकालिक वत्यृ दसकािनपाते महािमत्तविन्दजातके आयीभविस्सति । तदा पन बीविसत्तो इमं गायमाहः-

ग्रतिकारम रमणकं सदामलं च दूभकं,

स्वासि पानाजनासीनो ग्रस्ता जीवनं मोक्ससीति ।

तत्य-रमणकन्ति तस्य काले फलिकस्स नाम फेलिकपासाद व अतिकक्तांमीति दीपेति । सद्या-मतं बाति रजतस्य नाम, रजतपामाद च अतिकक्तांमीति दीपेति । द्वभक्तित मणिनो नाम, मणिपासादं च अतिकक्तांसीति दीपेति । स्वासीति तोमि त्व । यासावेमासिकोति उचकक्क नाम पासायमय वा होति रजतमय वा मणिमय वा तपन पासायमय सो च तेन आसीनो अभिनिविद्धो अञ्कोत्वदी, तस्या पासायम् असीनना पासायासीनोति वत्तव्यं व्यव्यव्यविवदीय मकार आदाय पासायमासीनोति वृत्त । पासायः वा आसीनो तं उपनक्क आसाव पापुरीयना जिलीति अच्यो । यस्या बौर्ष न मोक्कसाति,यस्या उपन्कका याव ते पाप न सीयति ताव जीवनो येव न मण्डिनसाति त आसीनोसीति ।

इम गाथ बत्वा बोधिसनो अननो देवहानमेव गतो । मित्तविन्दकोषि उरवक्क उक्कियित्वा महा-दुक्क अनुभवमानो पापकम्म परिक्कीरो यथाकम्म गतो । सत्या उमे धम्मदेसन आहरित्वा जातकं समोधा-नेसि । तदा मित्तविन्दको दुक्क्चभिक्क अहोसि । देवराजा पन अहमेवाति ।

मित्तविन्दजातक ।

3. कालकविवाजातकं

मिलो हवे सत्तपडेन होतीति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो एकं अनायपिण्डिकस्स मिलं आरब्स कथेसि ।

पञ्चपञ्चवत्यु

सो किर अनाधिपण्डिकेन सिंद्ध सहगंसुकीलितो एकाचरियस्सेव [२०८] सन्तिके उपाहितिषयो नामेन कानकच्यी नाम । यो पण्डस्ते काने दुम्यतो हुत्वा जीवितुं अपनकोत्यो तेष्ट्रिनो सन्तिकं अगमाित । यो तं समस्तात्र्या परिज्यम्य दत्वा अतनो कुट्म्यं पटिच्छापेसि । सो सेष्ट्रिनो उपकारको हुत्वा सम्बक्तिच्यािन कर्राति । तं सेष्ट्रिस्य सन्तिकं आगतकाये—तिट्ठ कानकिय्या निसीद कानकिय्या भूज्य काल-कर्ष्याति वर्षति ।

अयेक दिवस सेंद्रिनो मित्तामच्चा सेंद्रि उपसङ्कमितवा एवमाहसु-महासेद्वि $^{\prime}$ मा एत तब सिन्तिकं किरि । तिंद्र कालकिष्णः $^{\prime}$ निसीद कालकिष्णः $^{\prime}$ भुञ्ज कालकिष्णीिति हि इमिना सदेन यक्क्षोपि पना-येय्य न चेस तथा समानो दग्यतो दुरूपेतो कि ते इमिनाति $^{\prime}$

अनायपिण्डिको-नामं नाम वोहारमतं न तं पण्डिता पमारा करोन्ति । सुतमङ्गिलिकेन नाम भवितु न बट्टीत । न सक्का मया नाममत्त निस्साय सहभमुकीलित सहाय परिच्चिजनुन्ति । तेसं वचन अनादाय एकदिवस अत्तनो भोगगाम गच्छन्तो त गेहरकक्षक कत्वा अगमासि ।

भोरा सेट्ठी किर गामक गती गेहमस्स विल्विग्यस्सामाति नानाबुधहत्या रक्तिमागे आगन्त्वा गृह परि-बारेतुं । इतरोपि भोरानञ्जां आगमन आलड कमानो अनिहायनोच नित्तीदि । मो भोरान आगतमाव अल्या मृत्से पयोधेत्वा त्व सङ स धम, त्वं आलिङ ग्र⁴ वादेहीति महासमञ्ज कारेन्तो विय सकलिनेवेनन एकसई कारेवि । भोरा सुर्ज गेहिन्त दुस्सृत अन्हेहि इधेव महासेट्ठीति पासागमुग्गरादीनि तत्वेव छड्डेता पलाधिम ।

पुनदिबसे मनुस्ता तत्व तत्व छड्डिते पासारामुग्गरादयो दिस्वा संवेगण्यता हृत्वा—सचे अञ्ज एकस्पो बृद्धिसम्पन्नो पार्यबरास्तो नामविस्स चोरेहि यथार्शिया पविशित्वा सख्योह विज्ञामित अस्स । इसं चलुस्मित्तं निस्साय सेट्टिनो बिड्ड आनाति तं पर्ससित्वा सेट्टिस्स भोगगामतो आगतकाने सख्य त पर्वोत्त कारोचियत् ।

अप ते सेट्डी अवोच-नुम्हे एवरूपं मग गेहरन्सकं मित्त निक्कड्वापेथ । सचाय तुम्हाक वजनेन ममा निक्किड्डिंसी अस्स अज्ज मे कुटुम्ब किञ्चि नाभविस्सा । नामं नाम अप्यमाग्ग, हित्वित्तमेव पमाग्गित्व । तस्स उत्तरितरं परिक्यय दल्वा अल्पि दानि में इद कथागाभतिन्त सल्यु सन्तिक गन्त्वा आदितो पट्टाय सब्ब तं पर्वत्ति अगन्ती वारोवेसि ।

सत्या-न लो गहपति [।] इदानेव कालकाण्यामित्तो अत्तनो मित्तस्स घरकुटुम्ब रक्खति पुब्बेपि रक्खि-येबाति बत्वा तेन याचितो अतीतं आहरि:-[३०६]

द्मतीतवस्य

अतीर्ते बाराएसिय बहुउदमें रज्ज कारेले बोधिसत्तो महायसो सेट्ठी अहोसि । तस्स कालकप्पो नाम मित्तीति सज्जं पंज्युप्पप्रधिदसमेव । बोधिसत्तो **बोध**नामतो आगती त पर्वीत मृत्या सचे मया तुम्हाकं वचनेन एवस्पो मित्तो निक्कहिंडतो अस्स अज्ज मे कुटुम्ब किञ्चि नामविस्साति वत्वा इम गाथमाह.─

१. रो०, स्या०-प्रालिङ्गं ।

कालक ज्यालक

मित्तो हुचे सत्तपदेन होति सहायो पन डावसकेन होति, मासद्धमासेन च ञाति होति। तदुर्जाट प्रस्तमापे होति तदुर्जाट प्रस्तुस्तस्त हेतु, चिरसन्पर्ता कालकण्णी अहेय्यन्ति।

तत्व हबेति निपातमत, मेतायतीति मित्तो । मेति पच्चपृट्टापेति सिनेह करोतीति अत्यो । सो पनेस सत्तपदेन होतीति एकतो सत्तपदनीतिहारागमनमतेन होतीति अत्यो । सहायो पन द्वादसकेन होतीति स्वत्यो । साव्यो पन द्वादसकेन होतीत । सव्यक्तिचार प्रकार के स्वत्यो । स्वत्यो पन्यक्तित सहायो । सो पनेन द्वादपकेन होति । द्वाद- साहं एकती निवासेन होतीति अत्यो । साव्यक्ति सहाय । स्वत्य स्वत्य । स्वत्यक्ति होति अत्यो । साव्यक्ति सहाय । स्वत्यक्ति सहाय । स्वत्यक्ति सहाय । स्वत्यक्ति सहाय । स्वत्यक्ति होतीति उत्तरि एकस्य सहाय क्रय यहेय्यन्ति । स्वत्यक्ति । स्वत्यक्

ततो पट्टाय पुत कौचि तस्सन्तरे वत्ता नाम नाहोमि । सत्या इम धम्मदेसन आहरित्वा जातक समो-धानेमि । तदा कालकण्गी आनन्दो अहोसि, बारागसीसेटठी पुत अहमेवाति ।

कालकण्जिजातकं ।

४. चत्थस्सद्वारजातकं

पच्चुपन्नवत्यु

द्यारोग्यमिद्धे परमं च लाभस्ति इद सत्या जेतवने विरहन्तो एक अत्यक्सल कुलपुत आरब्भ कर्येमि ।

सावित्यय हि एकस्स महाविभवस्स सेट्ठिनो पुनो जातिवा सत्तवस्सो पञ्जवा अत्यक्त्सतो । सो एक-दिवस पितर उपसङ्क्षमित्वा 'अत्यस्स द्वारपञ्ड' नाम पुन्छि । सो त न जानाि । अयस्स एतइहीसि-जय पञ्जो अतिसुसुमो । ठरेव्या सम्बञ्जानुबु अञ्जो । उपरि प्रवर्गेन हेट्टा च अवीचिता गरिनछ्क्ष नोकस्तिस् वासे एत पञ्ड क्येतु समत्यो नाम नत्योगि । सो पुन आदाव बहु मानागन्यविषेपन गागपंत्वा जैतवन गन्त्वा सत्यार पुत्रेत्वा वित्तवा एकमन्त निसिक्षो भावना गत्ववांच [३१०]-अय अते । दारको पञ्जवा, अत्य-स्वार 'अत्यस्स द्वारपञ्ड' नाम पुन्छि । अह त पञ्ड अजानन्तो नुम्हाक सन्तिक आगतो, साधु मे भगवा त पञ्च कर्येतृति ।

सत्था-पुब्बेपाह उपासक[ा] इमिना कुमारकेनेत पञ्ह पुट्ठा । मया चस्स कथितो । तदा न एम जानाति । इदानि पन भवसङ्बेपगतता न सल्लक्खेतीति बत्बा नेन याचितो अतीत आहरि –

श्रतीतबस्य

कतीले बागराणिस्य ब्रह्मदत्ते रज्ज वारेल वीधिमत्तो महाविश्ववो सेट्ठी अहीसि । अथस्स पुत्तो सत्त बस्सिको जातिया पञ्जाबा अत्यब्रुमलो सो एकदिवस पितर उपसङ्कमित्वा—तान । अत्यस्स द्वार नाम किन्ति 'अत्यस्य हारपञ्च' पुनिक्

अथस्स पिता त पञ्ह क्येन्तो इम गाथमाह ---

ब्रारोग्यमिच्छे परम चलाभ सील चयुद्धानुमत सुत च. घम्मानुबती च प्रलीनता च भ्रत्यस्तद्वारापमुखा छलेतेति।

नत्य — **भारोपयिवच्छं परम व लाभ**न्ति वकारो निपातमत । तान । गठममव आराप्यसङ्कान परम लाभ इच्छेव्याति इमन्यन दोपेला एक्साइ । तत्व आराप्य नाम सरीरस्म वव चित्तस्म व अरापभावा अलादुता । सती हि रोपाहुने तेव अलढ भोगामा उपपादेनु सक्कोत न लढ परिभृञ्जितु अतानुर पत उपपादेनु सक्कोत न लढ पुत्र समापान-विकेत परिभृञ्जितु , णतीस्म रोमे सति अलढीण लाभा न लकती , वढीण निरस्का हाति, अमित पेतिस्म अलढीण लाभो लक्मति, लडीण सार्वका हाति , अमित पेतिस्म अलढीण लाभो लक्मति, लडीण सार्वका हाति , अमित पेतिस्म अलढीण लाभो लक्मति, लडीण सार्वका हातीनि आराप्य परमो लाभा नाम । न पत्रवप्य इच्छित्तव्य इर केम्सत्यस्म हार्यन्ति अपमेल अल्यो। स्रोत बाहि आत्रवास्म । इमिना जोक्शास्ति र दिस्मित । सुत्र वाति वारणानि-स्मित् सुत्र । इपिता जोक्शास्ति । सुत्र वाति वारणानि-स्मित सुत्र । इपिता इसिता अल्यो स्थान अल्या स्थान । स्वर्म न अलेवाद स्मेति । सुत्र वाति वारणानि-स्मित सुत्र । इपिता इसिता क्षत्रवास्म अलेवाद स्मेति । सुत्र वाति वारणानि-सम्म हम्मत्य । इपिता इसिता दुव्यत्तिस्म वव्यत्वेता सुवित्तस्म सम्मत्वकात्रस्म प्रति हिसस्म अलीवता अनीवता । इपिता इसिता इस्ति वास्म अलीवता अनीवता । इपिता इसिता इस्ति स्वरस्म अलीवता अनीवता । इपिता इसिता इस्ति स्वरस्म अलीवता अनीवता । इपिता इसिता इस्ति वास्स अलीवता अनीवता । इपिता इसिता इस्ति स्वरस्म अलीवता अनीवता । इपिता इसिता इस्ति । स्वरस्म इस्ति सुत्र स्वरस्म अलीवता अनीवता । इपिता इस्ति स्वरस्म अलीवता अनीवता । इपिता इसिता इस्ति स्वरस्म अलीवता अनीवता । इपिता इसिता इस्ति स्वरस्क अलीवता अनीवता । इपिता इसिता इस्ति स्वरस्क अलीवता अनीवता । इपिता इसिता इस्ति स्वरस्क अलीवता अनीवता । इपिता इसिता इसिता स्वरस्क अलीवता अनीवता । इपिता इसिता स्वरस्क अलीवता अनीवता । इपिता इसिता इसिता स्वरस्क स्वरस्क स्वरस्क स्वरस्व स्वरस्क स्वरस्वरस्क स्वरस्क स्वरस्क स्वरस्क स्वरस्व

अल्बो नाम विहंड, तस्स विहंडसङ्खातस्स लोकियलोकुत्तरस्स अत्यस्स एते पमुखा उत्तमा छ द्वारा उपाया अधिगममुखानीति । [३११]

• एवं बोधिसत्तो पुतस्त अत्यद्वारपञ्हं कथेसि । सो ततो पद्वाप तेसु खसु धम्मेसु वित्त । बोधिसत्तोपि दानादीनि पुञ्जानि कत्वा यथाकम्म गतो । सत्या इमं धम्मदेसन आहरित्वा जातक समोधानेसि । तदा पुत्तोव पञ्चपक्ती पुत्तो, महासेट्टी पन अहमेवाित ।

ग्रत्थस्सद्वारजातकं।

கொரைகளாக்

बायति दोसं नाञ्जायाति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो एकं उक्किष्टितभिक्खुं आरब्भ कथेसि ।

पच्चपन्नबन्यु

अञ्चातरो किर कुलपुत्तो बुद्धसासने उर दत्वा पत्रबिजतो एकदिवस सावत्थियं पिण्डाय चरन्तो एकं अलढकत्तर्दात्य दिस्वा उक्कण्डि । अस्य नं आचरियपज्ञाया सत्य सन्तिक आनीयस् ।

संत्या-सच्चं किर त्वं भिक्त्यु ! उक्किण्ठितीत पुण्डित्या सच्चित वृत्ते-पञ्चकामगृणा नामेते
भिक्त्यु । परिभोगकाले रम्ग्गीया । सो पन तेसं परिभोगो निर्यादितु परिसोन्यत्यकत्ता किम्पक्कफलपरिभोगविद्यां होति । किम्पक्कफले नाम वण्णागन्यत्तसम्पर्ध लादित पन अन्तानि खण्डेत्वा जीवितक्कयं
पापित । पुष्टे बहुजना तस्स दोस अदिस्ता वण्णागन्यरसेसु विज्ञित्वा त फलं परिभुञ्जित्वा जीवितक्कयं
पापितासित वत्वा तेदि याचितो अतीतं आहरिः-

द्यतीतबत्य

अतीते बारागासिय ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधियत्तो सत्यवाहो हुत्वा पञ्चहि सकटसनिह पुब्बन्ता-परन्त गञ्च्यन्तो अटविमुख पत्वा मनुस्से सिप्रणतित्वा-हिमस्सा अटविया विमरुत्तवो नाम अन्यि । मा खो मं अनापुच्छा पुब्बे अखादिनपुब्बानि फलाफटानि खादित्यानि ओवदि ।

मतुस्सा अर्टाव अतिकक्षित्वा अर्टावमुखे एकं किम्पनकक्ष्य फतभारनिमतमान अङ्ससु । तस्स सम्बसासापत्तफलानि सण्ठानवण्णारसाग्येहि अश्वसदिमानेव । तेसु एकचे वण्णानयरसेम् विभिन्नवा अस्य-फलसञ्जाप फलानि सादिस् । एकचे सत्यवाह पुच्छित्वा सारिरमामानि गहेत्वा अट्टम् ।

बेषिससो त ठान पत्वा ने गहेत्वा ठिते क्यांनि छड़ापेत्वा ये लाध्माना अट्टमू ने बमन कारेत्वा तेम भेसज्ज बसामि । तेम् एसज्जे अरोगा जाना एउममेव साध्न्या ठिना पन जीविनस्वय पना । बीधिमस्तापि सच्छतहान सोविबना गन्या लाभं लभित्या पुन सम्हानमेव आपन्या दानादीनि पुञ्जानि करवा ययाकम्म गतो । सत्या त वत्य कपेवा अभिसामब्दो हत्वा इम गायमाह —

द्यायतिदोसं नाञ्जाय यो कामे पतिसेवति, विपाकन्ते हनन्ति नं किम्पक्कमिव भक्षितन्ति ।

तत्य-मायितवीसं नाष्ट्रशायाति अनागते दोस नाष्ट्रशाय अजानित्वाति अत्यो । यो कासे पतिसेवतीति यो वत्युकामे च किलेसकामे च पतिसेवति । विषाकन्ते हनन्ति नत्ति ते वामा त पुरिस अत्तनो विषाकमदृद्धाते अत्ते निर्पायित् उपमा नाणकारेत दुस्त्वेन योजयमाना हन्ति । कथ ? किम्पस्कमिय भक्तिवति यथा पिरोगिकाले वण्णाण्ययसमम्पतिया मानाप किम्पस्कक्तिय अगागत दोल अदिवत् । भिक्ति नति । विष्

देसन ययानुसन्धि पापेत्वा सच्चानि पकांमीत । सच्चपरियोसाने उनकच्छितभिनक्षु सोतापत्तिकल पापुरिया । सेसपरिस्थायि केचि सोतापन्ना, केचि सरुदार्गामिनो, केचि अनुसामिनो केचि अरहन्तो अहेसु । सत्यापि इसे धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेमि । तदा परिसा बुद्धपरिसा अहोसि । सत्यवादो पन अहमेवाति ।

किम्पक्कजातक।

६. सीलवीमंसनजानकं

सीलं किरेव कल्याणन्ति इद सत्था जेतवने विहरन्तो एकं सीलवीमसकं ब्राह्मएं आरब्भ कथेसि ।

पस्चपन्नवस्थ

सो किर कोसलराजान निस्साय जीवति । तिसरण्गतो अखण्डपञ्चसीलो, तिष्ण वेदानं पारगू । राजा अयं सीलवाति तस्स अतिरेकसम्मान करोति ।

सो जिन्तेसि.—अय राजा मस्ह अञ्जों हि जाह्मणीहि अतिरेक्सम्मान करोति जतिबिय म गरं कत्वा पस्सति, किन्नु जो एस मन जानिगोनकुनपदिः विष्णमर्मान निम्माय इम सम्मान करोति, उबाहु सीलसम्पत्ति, बीमसिस्सामि नावानि।

भी एकदिवस राजुण्डुान गत्वा घर आगच्छलो एकस्म हेर्गञ्जाकम् एकवतो अनापुण्छित्वा एक कहापरा गहेला अगमामा हेर्गञ्जाको साहार्यग गराभावित किञ्च अवत्वा निवीदि । वृत्तिवस्त्रे हे कहा-परो गिहा हेर्गञ्जाको तर्वेव अधिवासित । तेराभित्वस्त्रे कहाराप्यापुष्ट अमहोति । अब न हेर्गञ्जाको अज्ञ ते तित्यो दिवसो गजकुटुव्व विनुस्तनस्मानि गजकुटुव्वविनुस्त्रकचोरो मेगहितीति तिक्वनुं विरिव । अपन मनुस्ता इतो नितो चागन्या चिरम्दानि त्व सीलवा विच विचरीति हे समी पहारे दत्वा बन्धित्वा राज्जो । इत्सेत ।

राजा विष्यटिसारी हुन्दा-कस्मा ब्राह्मग[ा] एवरूप दुस्मीलकम्म करोसीनि [?] वत्वा गच्छ तस्स राजास करोषानि आह ।

बाह्यरगो-नाहं महाराज! चोरोति आह ।

अथ कस्मा राजकुदुम्बिकस्म फलकतो [३१३] कहापएो गण्हीति ?

एत नया निय मन अनितम्मान करोले किन्न थो राजा मन जानिज्ञादीनि तिस्माय अनितम्मान करोति,
व्याह मील निस्सायिति वीमंतन्व्यायकर, इटानि पन स्वा एकनेन ज्ञान यथा सीनमेव निस्साय तथा सम
सम्मानो कतो न जातियादीनि, तथाहि से इदानि राजाए। कारेसीति वत्या स्वाह इमिना कारएंग इमिन्स सो सीनमेव उत्तमं शील परमुली निवद्गान गती, प्रमत्स पनाह सीनस्स अनुच्छानिक करोलो मेहे किनो किसेसे परिमुज्जतो न मनिन्यस्थामि कातु, अज्ञेब जेतवनं गल्या सत्यु मिनाके पब्यजिस्मामि पब्यज्ज से देहि देवाति बत्या राजान अनुजानारंग्या जेतवनाभिसूली पायादि

अप न आरिनपृष्ठ-जबन्धवा सिष्ठपत्तिस्या निवारित्, असकोत्ता निर्वासन् । सो सत्यु सन्तिकं सत्वा पब्बन्धं सावित्वा पव्यज्ञन व उपसम्पर च लिस्तवा अविस्तिष्टसम्प्रहानी विषस्तन वहेन्द्रेणा अरहत पत्वा सत्यार उपसद्धक्तिम्या सन्ते । मध्य एवज्ञा मत्यक पताति अञ्जा व्यक्तिमान सन्ति । अव्यक्तिस्वता प्रत्यार प्रस्तु स्दर्भ पाकट जात । अवेकदिवस धम्मसभाव सिंवपतिता पिक्न्यू-आवृत्ते । असुको नाम रञ्जा उपहानका-स्राणो अपनते सोल बीमानत्वा राजानं आपुष्टिक्क्या प्रव्यजित्वा अरहते पतिद्वित्तीत तस्त गुग कथ्यमाना निसी-दिम ।

सत्या आगन्त्वा-कायनुत्य भिन्नबन्ने । एतरीह कथाय सिन्निस्ताति पुष्टिक्वा इमाय नामानि बुत्ते-न भिन्नबन्ने । इदानि अयमेव बाह्मण्यो अत्तनो सील बीर्मासत्वा पब्बजित्वा अननो पतिट्ठ अकामि । पुब्बेपि पण्डिता अत्तनो सील बीर्मसित्वा पब्बजित्वा अत्तनो पतिट्ठ करिस्तृति बत्वा तेहि याचिनो अतीत आहरि.-

ग्रतीतवत्थ

अतीते बारागुसिय बहादत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो तस्स पुरोहितो अहोसि दानाधिमृत्तो सीलज्का-सयो अखण्डपञ्चसीलो । राजा सेसबाह्मगुद्धि अतिरेकं तस्स सम्मान करोतीति, सब्ध पुरिमसदिसमेव । बोधिसत्ते पन बन्धित्वा रञ्जो सन्तिकं निय्यमाने अहिगुण्ठिका अन्तरवीधियं सप्पं कीलापेन्ता तं नङ्गुट्ठे गण्डन्ति गीवाय गण्डन्ति गले बेठेन्ति ।

बोधिसत्तो ते दिस्या—मा ताता ! एतं सप्पं नडगटठे गण्डयः, मा गीवायः, मा गले वेठेयः, अयं हि बो

डसित्वा जीवितक्खयं पापेय्याति आह ।

अहिगुष्टिका-अयं ब्राह्मण् . सप्पो सीलवा आचारसम्पन्नो तादिसो दुस्सीलो न होति । त्वं पन असनो दुस्सीलताय अनाचारेन राज कटम्बबिलम्पकचोरोति बन्धित्वा नीयसीति आहस् ।

सो विन्तेसि-सप्पापि ताव अडस्वा अविहेठेला सीलवन्तोति नाम लभन्ति । किमझग पन मनुस्स-भता ? सीलं येव डमस्मि लोके उत्तम । नित्य तती उत्तरितरन्ति ।

साल पत्र इसारम लाक उत्तम । नात्य तर अथ नं नेत्वा रञ्जा दस्तेसु । [३१४] राजा—कि इदंताताति ? पच्छि ।

राजकटम्बविलम्पक चोरो देवाति ।

तेन हिस्स राजारा करोथाति ।

ब्राह्मणो-नाहं महाराज ! चोरोति आह ।

अप रूसमा कहारारो अंगाहेसीति च बुत्तो पुरिमनयेनेव सब्ध आरोचन्तो स्वाह दमिना कारहोत दर्मास लोके सीनमेव उत्तमं मीलं पामोक्खान्त मांब्रह्मा क्तोति वन्त्रा तृत्वा, त्वाद, दश्च आगीतसोपि नाव अदमन्तो अविहेटेन्तो सीनवाति वत्तव्वत नमति। इमिनापि कारहोत मीलमेव उत्तम, सील पवर्रान्त सील वण्णेन्तो इमें गायमाह —

सीलं किरेव कल्याणं सीलं लोके अनुसरं

पस्त घोरविसी नागी सीलवाति न हुञ्जानीति ।

तत्व-सीनं विशेषाति कायवाचाचितीह् अवीनिकसमागदयात आचारमीत्मेव । किराति अनुस्सवबसेन वदित । कर्मवाणित मृत्यतर । अनुतरित्त अंदुक तव्वग्णदायक । पस्ताति अतना विदुकारण
अभिमुख करोन्तो कमेसि । तीलवाति न हुञ्जाती पार्यवसीगि मानो अञ्चनअविहेत्नमत्तने मिलवाति
पस्तम समिति । न हुञ्जाति विहुञ्जनतीति इमिनापि कारणोन मीलमंत्र उनमानि ।

एव बोधिसत्तो इमाय गाथाय रञ्जा धम्म देदेश्या कामे पहाय इमिष्काञ्ज प्रव्यक्तिया हिम्बस्त पवि-सित्त्वा पञ्च अभिञ्जा अहु समापित्यो निकत्तेत्वा ब्रह्मांकारपायया अहापि । सत्या इस धम्मदेस्त आहु रित्ता जातक समोभागेसी । तथा राजा आनदो, प्रावर्षस्या बद्धार्थस्या अहासि, राजेहीस एवे अहमेबारि ।

सीलबीसंसनजातकं ।

७. मङ्गलजातकं

यस्स मञ्जला समूहताति इद सत्था वेलुवने विहरन्तो एक साटकलक्खराब्राह्मरा आरब्भ कथेसि ।

पच्चपन्नवत्य

राजगहवासिको किरेको बाह्मणों कोन्नहलमञ्जलिको तीसु रतनेसु अपसक्ती मिच्छाविद्धि अब्दो मह्द्यो म महाभोगों। तस्स सद्मा ठेपत साटकवृग मुस्तिक लाहिस् । अपस्त सीस नहाबित्वा साटके आहरणाति बुन्क-काले मुस्तिका बातिदमाव आरोजीयस् । सो विन्तीम-चे इद मुस्तिकव्दट शाटकवृग सम्मा गेह मीस-स्सिति महाबिनासो मिक्सिति । इद हि अवरा-गन, कालकण्णीतिस्स पुत्तभोतादीनिम् वासकम्मकरादीन वान सकत दात्रु । यो हि इद गण्टिमाति सब्बस्त महाविनायो मिक्सिता । आमकसुमाने त झ्ड्डापेस्सामि । न स्त्री पत सकत दात्रादीन हत्ये यात्रु । ने हि एत्व लोभ उपादेत्वा इम [३१४] गहत्वा विनास पापुणेव्यु । पुतस्तत त हत्ये दस्सामीति ।

सो पुत्त पक्कोमापेत्वा तमस्य आरोचत्वा-स्विम्प न तात !हर्यन अफुसित्वा दण्डकेन गहेत्वा आम-कसुसाने छहुडेत्वा ससीसं नहावित्वा एहीति पेसेसि ।

सत्यापि सो त दिवस पञ्चससये बेन्यवययो आयोकन्ता इसेष वितापुता सोनापत्तिककस्त उप-तिस्सा दिखा मिगवीचि गहेला मिनानुका विव गल्या आसकन्तामतदारे निसीदि ख्वचणणुद्धत्रिम्यसे दिस्स-ज्जेन्तो। भारावो गितु वचन सम्परिच्छ्या अगारमण विव न तुमानाक बिद्धाद्वीद्या गहेला आमकस्तानाद्वार पापुनि। अस न मन्या-कि करांसि माणवाति आह्। भो मोतम । इद माटकसूप मूसिकाय दट्ट, काल-कर्णासिदिस हलाहलांबपूम्यं। भम पिता अच्छा। एत छट्टक्तो लोभ उपादेश्वा गर्णस्थानि भवेन म पहिणि। अहमेत छड्डक्वा सोम नहायिला गर्मस्सानीत आस्तानिह मो गोजमाति

तेन हि छडडेहीति।

कप्पासिक्ष मा गाँछ, मा गाँकी तहाँ अमहाकत्वानि बर्ट्सीनि तस्म सम्मुलाव अवमङ् गल भो गोतम । एत कालक-कप्पासिक्ष मा गाँछ, मा गाँकीति तस्मि बारस्याने येथ गाँहला बेलुबनाभिमुली पायाचि । माराखी बेनेन गल्खा पितु जारोवैसि-तान ! स्वा आमकत्वमाने छुईडित साटकसून समग्री गोतमी अम्हाक बट्टतीति स्वा बारियमानोपि गहेल्या बेलुबन गतोनि ।

बाह्याणो चिन्तेसि-त साटकयुग अत्रमङ्गल कानकण्णिसरिस । त बलञ्जेत्तो समर्गापि गोतमो निस्सिसिति, बिहारोपि निस्मस्सिति । ततो अम्हाक गरहा अविस्सिनि । समर्गस्स गोतमस्स अञ्जो बहू साटकं दत्वा तं खुड्डापेस्सामीति ।

सो बहू साटके गाहापेत्वा पुत्तेन सिद्ध वेनुवन गन्त्वा सत्थार दिस्वा एकमन्त ठिनो एवमाह सच्चं किर ते भो गोतम[ा] आमकसुसाने माटकयुग गहिनन्ति ?

सञ्च ब्राह्मशाति ।

भो गोतम[ी] त साटक युग अवमङ्गल तुम्हे न परिभुञ्जमाना निस्सस्सथ, सकलविहारोपि नस्सिस्सति ।

सचे वो निवासन वा पारणन वा नणहोति इमे साटके गहेत्वा त छर्डापेथाति । अप न सत्या-स्थय श्राह्मण् । पब्बिलता नाम अन्हारू आमनसुसाने अन्तरवीषिय सकारद्वाने नहा-नतित्ये महामणेति एक्कपेसु ठानेसु छर्डाका वा पतिता वा पिलोतिका वट्टित, त्वस्पन न इदानेव पुज्येषि एवं लढिको येवाति कत्वा तेन याचिता अतीत आहरि –

प्रतीतवत्थु

अतीते मगधरट्ठे राजगहनगरे थम्मिको मगथराजा रज्ज कारेसि । तदा बोधिसत्तो एकस्मि उदिच्च-ब्राह्मएाकुले निब्बत्तित्वा विञ्ज्युतं पत्तो इसिपब्बज्जं पब्बजित्वा अभिज्ञा च [३१६] समापत्तियो च निब्ब- त्तंत्वा हिमक्ते वसमानो एकस्मि काले हिमक्ततो निक्खीमत्वा राजगहनगरे राजुष्यानं पत्वा तत्व बीसत्वा दुतियदिवसे भिक्खाचारत्वाय नगर पाविसि । राजा तं दिस्वा पक्कोसापेत्वा पासादे निसीदापेत्वा भोजेत्वा उच्याने येव बसनत्वाय पटिञ्झा गण्डि । बोबिसत्तो रञ्झो निवेसने भूज्जित्वा उथ्याने वसति ।

तांहम काले राजगहनगरे दुस्तानम्बाणाह्माणो नाम अहोसि। तस्त समुम्मे ठिपतं सटकपुगन्ति सम्बं पुरिस्तिदिसमेव । माणुवे पन सुतान गच्छन्ते बोधिसत्तो पठमतर गन्त्वा सुनानदारे निर्मीदित्वा तेन खर्द्रहित साटकपुग गहेत्वा उत्थान अगमासि । माणुवो गन्त्वा पितु आरोबेसि । पिता राजकुन्तुमको तापसो नस्त्रेत्याति बोधियतस्त सन्तिकं गन्त्या—तापस ! तथा गहितसाटकं खडुबेहि मा नस्त्योति बाहु।

तापसो-अन्हाक सुसाने छट्डिपिनोतिका बट्टिन न मय कोतूरुलमङ्गलिका कोतूरुलमङ्गल नामेतं न बृद्धपचेकबुद्धबोधिमतीहि बथ्यिन, तस्मा पण्डितेन कोतूरुलमङ्गलिकेन न भवितन्बन्ति ब्राह्मसास्म सम्मं देवेति ।

बाह्मणो धरमं सुखा दिद्धि भिन्दित्वा बोधिसत सरण् गतो । बोधिसत्तीपि अपरिहीनज्भानी बह्य-लोकपरायणो अहोसि । सत्यापि इम अगीत आहरित्वा अभिसम्बुढो हुत्वा ब्राह्मणुस्स धरम देसेन्ती इम गायमाह—

> यस्स मङ्गला समूहता उप्पाता मुपिना च लक्ष्यणा च, स सङ्गलदोस वीतिवसो युगयोगाधिगतो न जातु मेतीति।

तत्व यससमञ्ज्ञना समूहतासि यस्स अरहतो खीलाग्यस्य हिट्टमण्यल मृतमण्यलं मृतमण्यलं मृतमण्यलं मृतमण्यलं एतं मण्यला समृत्यक्षता । उत्पाता सृषिता क लक्ष्यला खाति एकस्यो भरत्याहा भिवस्तित, एकस्यो नकस्याहा भिवस्ति, एकस्यो नकस्याहा भिवस्ति, एकस्यो नकस्याहा भिवस्ति, एकस्यो नकस्याहा भिवस्ति, एकस्यो नकस्याहा अर्थाः स्वाध्याव स्वाध्य स्वाध्याव स्वाध्याव स्वाध्याव स्वाध्याव स्वाध्याव स्वाध्याव स्व

सूपयोगाधियती न अनुवेतीरित कोणी च उपनाही च मनतो च प्रनासो चानि आदिना नयेन हे हे एकतो आगतिकतेसा युगा नाम । कामयोगो, [११७] भवयोगो, विद्वयोगो, आवक्यायोगोति इसे ससारे योजनभावती चलारो योगा नाम । ते युगा च योगा चानि युगयोगे अभिगतो अभिभवित्या गत्रो वीतिकासी समितककत्तो लीए।।गवी भिनक्ष । न आनुक्रेनीरित पूर पटिवन्थियतेस एकतेनेव इस लोक न एति नामञ्क्रतीता ।

एव सत्या इमाव गायाच बाह्मएस्स यम्म देशेत्वा पुन सञ्चानि पकासिमि । सञ्चवरियोसाने ब्राह्मएरो सिंद्ध पुत्तेन सोठापस्तिकले पितट्विहि । सत्या जानक समोघानेसि । तदा एतेव पितापुत्ता अहेसुं । तापसो पन ब्रह्मेवाति ।

मङ्गलजातकं।

८. सारम्भजातक

कल्याणमेव मुञ्चेय्याति इद सत्या सावित्यय उपनिस्साय जेतवने विहरन्तो ओमसवादिसिक्कापदं आरक्त्य कर्योस ।

द्वेपि बल्यूनि हेट्टा नन्दिवसालजातकं बुत्तसदिसानेव । दर्मास्म पन जातके बोधिसत्तो गन्वाररद्दे तक्कसिलायं अञ्जातस्य बाह्यसम्य तारम्भी नाम बनिवद्दो अहोमि । सत्या इदं अतीतवरणु कवेत्वा अभिसम्बद्धो हत्वा इम नायमात्रः

> कत्याणमेव मुरुय्वेय नहि मुज्वेय्य गापिकं, मोक्लो कत्याणिया साथ मत्वा तपति पापिकन्ति ।

तत्य-करवाणमेव मुञ्चेयपाति चतुरोगार्वातम्युन कत्यागा मुन्दर अनवज्ज वाचमेव मुञ्चेय्य, विस्त-ज्ञेय्य, क्षेत्र्या बाहि मुञ्जेय्य पापिकांत गापिक सामक गरेश आंजय अमनाप न मुज्जेय्य, न करेय्या भौचली कत्याणिया सायृति कत्याणवाचाय विस्ताजनमेव दर्गारम सायु स्वत्य प्राम् तत्य स्वत्य । भूगा तस्य पापिकांत पापिक करत बाच मुज्जित्या विस्तुजलेशा कथन्या गो पुमानो तस्यति सोचिन किमस्तरिति।

एव सत्या इम धम्मदेमन आहरित्वा जातक समोधनींम । तदा बाह्माणो आनन्दो अहोसि, बाह्माणी उप्यतवण्या, सारम्भो पन अहमेवाति ।

सारम्भ जातकः ।

९. क्रहकजातकं

बाचाव किर ते धासीति इद सत्था जेतवने विहरन्तो एक कृहक आरब्भ कथेसि । कृहनवत्यु उद्दा-लजातके आवीभनिस्सति ।

द्यतीतवस्य

अतीते वाराण्तियं बह्मदत्ते रज्य कारेनो एकं गामकं उपनिस्ताय एको कूटबटितकूहरूतापसी वसति। एको कुटुम्बिको तस्स अटच्यो पण्णालानं कारेना तत्य न वासेनो अत्तनो गेहे पणीलाहारेन पटिज्याति। स्रोत कुटबटिलं सीतवा एसोति सहित्व वाराभयेन सुबण्णानक्खसत तस्स पण्णासा नेत्वा भूमिगत कत्वा इट बोलोकेस्पासि भन्तेति आह। अय न तापसी-पव्यजितान नाम आवुसो। एवक्प कपेनु न बट्टित अम्हाकं परस्तके लोभो नाम नत्यीति आह।

सो-साधू अन्तेति तस्स वचन सर्दोहत्वा पनकािम । हुट्टवापसो सक्का एतकेन जीवितुत्ति कविषाह् अतिककित्वा त सुक्षण गहेत्वा अन्तरामणं एकािम ठाने ठाेत्वा आगत्वा प्रणुताावायमेव वसित्वा पुनविवसे तस्स गेहे अत्तिकच्च करवा एवमाह-आवृत्तां । मय नुम्हे निस्साय चित्र वसिम्ह, अतिचित्र एकािस ठाने वसत्तान मनुस्तेहि यदि सस्यो होित । सस्याो च नाम पन्वजितानं मत्त । तस्मा पच्छामहन्ति वत्वा तेन पुनप्तुन याचियमानोिप निवतितु न इच्छि ।

अथ न सो-एव सन्ते गच्छप भन्तेति याव गामद्वार अनुगन्त्वा निवत्ति ।

तापसी योक गन्त्वाव इम कुटुम्बिक मया वञ्चेतु बट्टतीनि चिन्नेत्वा प्रटान अन्तरे तिए। ठपेत्वा पटिनिवत्ति ।

कुटुम्बिको-कि भन्ते ! निवत्तित्थाति पुच्छि ।

आबुसो ! तुम्हाक गहेच्छदनतो मे जटासु एक तिगा लग्गं, अदिन्नादान च नाम पर्व्याजतान न बट्टित त आदाय आगतोम्हीति ।

कुटुम्बिको-छहडेत्वा यच्छय भन्तेति वत्वा तिरामलार्काम्य नाम परसन्तक न गण्हति, अहां कुक्कु-च्वको मे अम्मोति पसीदित्वा वन्दित्वा उच्योजेसि ।

तदा पन बोधियतीन भण्डरवाय पच्चत्त्व गर्हम्पत्तेन तीस्म निवेसने निवासी गहितो होति । सो ताप-सस्स वचन सुरवाब अद्या दीमना हुद्रुतापनेत इसस्स किञ्चि हट भनिस्सतीति कुटुम्चिक पुष्चिर-अस्थि पन ते सम्म ! किञ्चि पुरस्स तापसस्स सन्तिके निर्विचतन्ति ?

अत्थि सम्म ! सुवण्णनिवस्तसतन्ति ।

तेन हि गच्छ न उपधारेहीति ।

सो पण्णसाल गन्त्वा त अदिस्वा वेगेनागन्त्वा नित्य सम्माति आह ।

म ते सुबच्छा अञ्जोन गहिल, तेनेब कूटनापसेन गहिल । एहि त अनुवान्यत्वा गण्हामाति बेनेन गन्त्वा कूटतापस गण्हित्या हरवेहि च पायेहि च पोयेत्वा मुबच्छा आहरापेत्वा गण्हिम् । बोबिसत्तो सुबच्छां दिस्वा निक्ससत नाम हरमानो असीज्जत्वा तिरामसे सत्तोसीति वत्या त गरहत्तो इम गाथमाह.—

> बाचाव किर ते स्नासि सण्हा सिंखलभाणिनो, तिणमत्ते ग्रसज्जित्यो नो च निक्ससतं हरन्ति ।

तत्य-वाचाव किर ते प्राप्ति सण्हा सजिलभाणिनीति पत्र्यजितान तिरामस्तिम् अदिषं आदानुं न बट्टतीति एव समिलं मुदुवचनं वदन्तस्त बाचा एव किर ते सण्हा आसि । वचनमस्तमेव मट्ट अहोसीति अत्यो। तिणमत्ते भ्रसिण्जरवोति कूटजटिल! एकिस्सा तिरासलाकाय कुक्कुच्चं कुरुमानो त्वं सत्तो आसत्तो लग्गो अहोसि । मो च निक्कसतं हरन्ति इम पन निक्कसतं हरन्तो असत्तो निल्लमोव जातोसीति ।

एवं बोषिसत्तो त गर्राहत्वा मास्सु पुत कृटबटिल । एवरूपमकासीति ओवाद दत्वा यथाकम्म गतो । सत्या इमं धम्मदेसन आहरित्वा-न भित्रकावे ! इदानेवेस भित्रकु कृहको पुत्र्वेषि कृहको येवाति वत्या जातक समोषानेसि । तदा कृटतापसो कृहकभित्रकु अहोसि, पण्डितपुरिसो पन अहमेवाति ।

कहकजासकं ।

१०. अकतञ्ज्जातकं

यो पुग्ने कतकत्याणोति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो अनायपिण्डिक आरब्भ कथेसि ।

पच्चपन्नवस्थ

त्तस्य किरेको पञ्चलवासिको सेट्ठी अदिद्वश्वराणे अहोति । सो एकदा पञ्चले उद्घानकभण्डस्य पञ्च सकटसतानि पूरेत्वा कम्मानिकमनुस्से आह्—माञ्चल भो ! इमं भण्ड सार्वात्व नेत्वा अम्हाकं सहायस्स अनायपिण्डकमहासेठिस्य पञ्चल्येन विकित्तीसाता पटिभण्डं आहरयाति ।

ते सामूर्ति तस्त बचन राम्पटिच्छिता सार्वात्व मत्त्वा महारोहि दिस्वा पण्णाकारं दस्ता त पर्वात झारो-चेतु । महारोहि ह्वामत वीति तेस आवास च परिव्या च प्रतिस्ता सहायस्स सुख पुच्छिता प्रण्ड विकिरीणवा परिक्रमण्डे वोष्टीत । ते पचन्त गन्तवा तमत्यं असनो सेट्टिस्स आरोजेस ।

अवापरमागे अनाविपिण्डकोपि तथेव पञ्च सकटसतानि तत्य पेमेसि । मनुस्सा तत्य गन्त्वा पण्णा-कारं आदाय पण्चन्तवासिकवेष्टि परिससु । सो कृतो आगण्डव्याति पुण्डिस्त साविण्यो तुम्हाक सहायस्स अनाविपिष्ठकस्स सित्तकाति बुत्ते अनाविपिण्डकोति कस्सवि पुरिसस्स नाम भविस्सनीति प्रिहासं करवा पण्णाकारं गहेत्वा गण्ड्य तुम्हेति उपयोजीस । नेव निवास न परिज्य यापिम । ते सयमेव भण्ड विकिक-णिल्या पटिभण्ड आदाय सावित्य आगन्त्वा सेठिस्स त पर्वात आरोबेस ।

अब सी पञ्चलनासी पुनिप एकबार तथेब पञ्च सकरसनानि सार्वास्य पेसेसि । मनुस्सा पण्णाकार बादाय सहारोहु परिसत् । ते पन दिस्ता अनापांपिष्टकस्य गेहु मनुस्सा मय [३२०] सामि । एतेस निवा-सञ्च भतन्य परिक्वयञ्च जानिस्सामाति बस्या तेस सकरानि बहिनगरे तथारूपं ठाने भोचापेखा तुम्हे इम्रेव बस्य अन्दाक वो घरे यापुम्पराञ्च परिक्वयो च भविस्मतीति गत्या वास्क्रमानरे सीक्रपातेखा मिण्य-भयामसपनन्तरे पञ्चेब सकटसतानि विज्ञित्यक्ष निवासनपाश्मनानिप नेम अन्त्रित्विद्या मोरो पलापेखा सकरानि विश्वकानि कर्त्या भूमिय ठरेखा चक्कानिष् गिष्ट्रित्वा अगमत् । एज्वत्वासीमते निवासनमत-स्वापि सामिका अङ्कुला भीता बेगेन पनायित्वा पञ्चलनेव गता । सेट्ठिस मनुस्सापि त पर्वति महासेट्ठिनो आरोचेल् ।

सो अस्यि दानि कथापाभतन्ति सत्यु सन्तिकं गन्त्वा आदितो पट्टाय सम्ब त पर्वात आरोवेसि । सत्या – न वो गहराति ! सो पश्चनतवासी इदानेब एबसीलो पुत्र्येषि एबसीनकोव अहोसीति बत्या तेन याचितो अतीते आहरि.–

भतीतबत्य

अतीते वाराणितयं बहारते रज्जं कारले बोपिसतो बाराणिसयं महाविभवो सेट्ठी अहोति। तस्सेको पञ्चतनासिको सेट्ठी अहिद्वसहायोति सब्ब अतीतवत्यु पञ्चयत्रवत्यारिकावे । बोधिसतो पन अत्तनो मनुस्तिहि बज्ज अरहेहि इद नासकतित बारोचित एक्जं बनोक तं उपकार अजानना पञ्झापि एवक्यं सभित्त येवाति करता सम्पत्तपरिवाय सम्मे सेटेलो इमं गायबाह-—

यो पुरुषे कतकस्याणी कतस्यो नाववृत्सति, पण्या किण्ये समुपन्ने कत्तारं नाविगञ्यतीति ।

तत्रायं पिण्डत्यो-स्तियादिस् यो कोचि पुरिसो पुत्रसे पठमतरं अठन्त्रने कत्तक्याणो कतूपकारो कतत्त्वो निप्कादिताकिण्यो हुत्या तं परेन जतिन कत कत्याणे चैव अत्याज्य न जानाति सो पण्डा अत्तनो किण्ये समुख्यत्रे तस्स किण्यस्य कतारं नाधगण्डाति न तमतीति । एवं बोधिसत्तो इमाय गायाय धम्म देशेखा दानाशीन पुरुव्यानि करवा ययाकम्मं गतो । सत्या इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । तदा पच्चन्तवामी इदानपि पच्चन्तवासी येव वाराणसीसेट्टी पन बहसेवाति ।

> **ग्रक्तञ्ज्ञुजातकं ।** अपायिम्हवागी नवमो । [३२१]

१० लिचवग्गवगणना

१. जिल्लातकं

लिलं परमेन तेजसाति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो अपच्चवेनिसतपरिभोगं आरब्भ कथेसि ।

पञ्चपञ्चवत्थ

त्रस्मि किर काले भिक्क् चीवरादीनि लभिन्वा येभुय्येन अपञ्चवेक्खत्वा परिभुञ्जन्ति । ते चत्तारो पञ्चये अपञ्चवेक्खित्वा परिभञ्जमाना येभय्येन निर्मातरञ्जानयोनितो न मञ्चन्ति ।

सत्या तं कारण ज्ञात्वा निम्मूनं अनेकपरियावेन धम्मकण कमेरना अप्यन्यवेनिकतपरियोगे आदीनव इत्तेत्वा—निम्मलवं । मिमकूना नाम चतारी पच्चयं तमित्वा अपच्चवेनिकत्वा परिपृतिजत् न बहुति। तम्मा इतो पहाय पच्चवेनिकत्वा परिपृत्रकेयायाति। पच्चवेनेकपाविध दस्तेनती "इप मिमस्ते । निम्मलवं । निम्मलवं । निम्मलवं । निम्मलवं । निम्मलवं । निम्मलवं । परिद्यक्रमायोगिमां चीवर परिदेवति सीतस्त परिधातायाति" आदिता स्पेत निम्मलवं । चतारो पच्चयं एव पच्चवेनिकत्वा परिमृत्रिजनतुं व्हर्टित । अपचचवेनिकतपरियोगो नाम हलाहनविक्यपरि-मोगविदियो। पोराणका हि अपचचवेनिकत्वा दोस अज्ञानित्वा विस परिमृत्र्यिकात्वा विशावन्ते महादुक्त अनु-परिवर्षित व्याव अतीन आहरि —

श्रतीतवत्य

अतीने बाराणिय ब्रह्मदने रज्ज कारंत्ने बीधिसतो अञ्जादरीस्म महाभोगक् ने निब्धतित्वा वयण्यतो असम्बन्ध अहोसि । अवापरी कृटक्वणूपो बीधियतेन सिंद्ध कीवत्यी असतो वर्षे वसामाने केनिवाण्डल म अस्वत्वं, वाराज्ञकार्य कि स्वित्य क्षात्रकार्य निव्यत्व कार्यकार्य कार्यकार का

लिलं परमेन तेजसा गिलमक्सं पुरिसो न बुज्सति, गिल रे! गिल पापपुत्तक! पच्छा ते कटक भविस्सतीति।

तथ्य-सितानिक पन्तित रिक्कित। परमेत तेजनाति उत्तमतेजसा सम्पन्नेन हलाहनविसेत। पितानिक पित्रतो। अस्पति तुत्रक। न बुक्कातीत अय में गित्रतो इर नाम करिस्सतीति न जानाति। धिता दिति गिजाहि अरे! गिलाति पुनिष चोदनो व्यक्ति। व्यक्का ते कहुकं भीवस्ततीति हमस्मि ते अस्ते गिलिते पन्त्रा एव सित तिविक्तं भीवस्ततीति अस्त्यो। [३२२]

सो बोधिसतस्स कपेन्तसंब विसर्वमंन मुम्ब्द्धतो अन्तर्शीन परिवर्तत्वा सन्त्र नामेखा पति । बोधि-सत्तो इदानिस्स जीवनदान दातु बद्दवीति ओषण्यिरमावित वमनसंग दत्वा बमेस्वा सीप्पकाणितम-पुतकस्यां तत्र्व वादापेता अरोग करवा पुन एकस्य मा अकासीति ओवदित्वा दानासीनि पुत्रज्ञानि करवा प्रयाजमा गती ।

सत्या इम पम्परेयनं आहरित्वा भिक्खवे [।] अपन्ववेशिक्ततपरिभोगो नाम अपन्ववेशिक्ततप कराविसपरिभोगसदिनो होतीति बत्या जातक समोधानीस । तदा पण्डितचुत्तो अहमेब अहोसि । कृटपूतो पनेत्य न कमीयति । यया नेत्य एवं सब्बत्य । यो पन इमस्मि काले न पञ्जावति स्रो न कपिय्यतेवाति ।

२. महासारजातकं

उक्कट्ठे सुरमिच्छन्तीति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो आयस्मन्तं आनन्दत्थेरं आरब्भ कथेसि ।

पच्चपस्रवस्थ्

एकहिस हि समये कोसनरञ्जो इत्थियो चिन्नर्यिम् बुद्धुणादो नाम हुन्नभो नया मनुस्परिटलाभो परिपुष्णायननता च, मयञ्च इम हुन्तभ स्वणतमयाय लिभ्तवाधि अत्तरो त्येवया विदार गत्वा धम्म वा मोनु यूज वा कानु दान वा त्यान न नभाभा । मण्डत्वाय पिक्तना विद्य वदाम । रञ्जो कवेदवा अम्हाकं धम्म देवीह्य अनुष्वविकं एकं निक्क्य एककोसापेत्वा तम्म मन्तिकं धम्म मोम्बाम। ततो य मिक्नस्माम न उमाण्हिस्साम दानादीति च पुञ्जानि करिस्साम । एवं नो अय खपपटिनाभो सफनो मविस्मनीति ।

ता सब्बापि राजानं उपसङ्कामित्वा अत्तना चिन्तित कारण कथीयम् । राजा साधृति सम्पटिच्छि ।

अवेकदिवस राजा उच्यानकील कीलिनुकामी उच्यानगान पत्कोमगरेखा उच्यान मोपेहीति आह । उच्या-तपाली उच्यान सोपेली सत्यार अञ्चानर्रास्य स्वत्यमुले निमित्र दिस्ता रञ्जो भानिक ग्रन्था सुद्ध देव । उच्यान अपि नेख कञ्चानर्रास्य रुवस्तुले भगवा निमित्रोति आह । राजा-माणु मम्म । सन्धु मिलके घम्मध्यि सोस्सामानि अक्टकूरस्य अभिकृत उच्यान गरन्या सत्य मनिक अमामि ।

तस्मिञ्च समये छुत्त्वाणी नामेको अनावामी उपामको मत्यु नानिके धम्म गणपानो निमिन्नो होनि । राजा न दिन्या आमञ्जूमानो सूहन ठला पून पचाय पापको भवेष्य न तरत् गोनिको निमीदिन्या धम्म गुरुख्य । अपापकेन दीमना अविनव्यन्ति चिन्तया मन्यार उपसञ्जूमान्या विन्त्या एक्स्पन निप्तीद । उपामको बुद्धतार्यका रुठ्या पच्चुद्वान वा बन्दव वा नाकामि । तैनस्म राजा अनतमनी अहोसि । [२२३]

बुद्धााश्वन रञ्जा पण्युद्धान था बन्दन वा नाकााम । तनम्म राजा अनतमना अहाता । [२२२] सत्या तस्स अनतमनभाव ब्रन्था उपामकम्म गुण कर्यमि—अय महाराज ¹ उपामको बहुस्मृतो आगनाममो क्रामेस् वीतरागीति ।

राजा न इमिना ओरकेन भवितब्बं यस्म सत्या गुणं बण्णेनीनि चिन्नेत्वा—उपायक ! बदेख्यासि येन ते अत्योति आह ।

उपासको साधूति सम्पर्टिञ्छ । राजा सत्यु मन्तिके धम्म मुत्वा मत्यार पदिन्वण कत्या पक्कामि ।

सो एकदिवस उपरिपासादे महावानपान विवरित्वा िनो त उपासक भूनपातराम छत्तमादाय जेतवन गच्छन्त दिस्वा पक्कोसापेत्वा एवमाह—त्य किर उपासक । बहुन्मुनो अन्हाक च इत्थियो धम्मं सोतुका-मा चैव उपाहेतुकामा च । साथू वतस्स सचे तासं धम्म वाचेय्यासीति ।

देव । गिहीन नाम राजन्तेपुरे धम्मं देसेतु वा वाचेतु वा नप्पतिरूपं, अय्यानमेव पतिरूपन्ति ।

राजा सच्चमेस बदनीति त उप्योजेत्वा इत्थियो पक्कोसापेत्वा-महे ! अह तुम्झाक धम्मदेसत्त्वाय च धम्मबाचनत्थाय च सत्यु सन्तिक गन्तवा एक भित्रसु याचामि । अमीतिया महामावकेमु कतर याचामीति बाहु ।

ता सब्बापि मन्तेत्वा धम्मभण्डागारिक आनन्दत्थेरमेव आरोचेसु ।

राजा सत्यु सिनाक गन्तवा बिन्दावा एकमत्ता निसिन्नो एवमाह-भन्ते [।] अम्हाक गेहे इत्यियो आनन्द-त्येरस्स सिनाके धम्म सोतुञ्च उग्गव्हितु च इच्छन्ति । साथु वतस्स सचे थेरो अम्हाक गेहे धम्म देमेय्य चेव बाचेय्य चाति ।

सत्या साधूति सम्पटिन्छित्वा थेर आणापेसि । ततो पट्टाय रञ्ञो इत्थियो थेरस्स सन्तिके धम्मं सुणन्ति चैव उत्पाव्हन्ति च । अथेकदिवस रञ्ञो चूलामणि नट्ठो । राजा तस्स नट्टभाव सुत्वा अमच्चे बाणापेति सब्बे अन्तोवलञ्जनकमनुस्ते गहेत्वा चूलार्याण आहरापेयाति । अमञ्चा मातुगामे आदि कत्वा चलार्माण परिपुञ्छल्ता अदिस्वा महाजनं किलमेन्ति ।

तं दिवसं आनन्दरूपेरो राजनिवेसनं पविद्ठो। यथा ता इत्थियो पुष्के षेरं दिस्ताव हृदुसुद्द्रा धर्म्म सुणितं बेब उत्पाहतिन च तथा अवस्ता तथ्या दोमनस्यप्ताम अहेतु। ततो थेरेन कस्मा तुम्हे अञ्ज एवक्या जाताति पुण्डिता-एवमाहेसु—अस्ते। रञ्जो चूलामीण परियेसिस्सामाति अम्बन्धा मातुगामे ज्यादाय अस्तीवकञ्चनके किलमेरित न जानाम कस्त कि भविस्मति। तेसहा दोमनस्वप्ताति।

थेरो मा चिन्तेपाति ता समस्मासेत्वा रञ्ञो सन्तिकं गन्त्वा पञ्ञात्तासने निसीदित्वा मणि किर ते महाराज ! नटठोति पन्धि ।

महाराज ! यसकेम् आसङका अरिय ने गहेत्वा एकेकस्स एकेक पतालिण्डं वा मत्तिकापिण्डं वा स्त्वा इम पच्चुनकाले आहोत्त्वा असुकृति नाम पातेपाति वस्तवः । येन गहितो अस्सिति सो तस्मि पर्विस्त पित्वा आहोत्स्तिति । सचे पटमदिवसे येव पातिति रच्चेत कुमल, नो चे पातित्त दुतियदिवसिवसिपि तथेख कातक्षं । एवं महाजनों च न किलमिस्सित मिणिज्य लभिस्सति । एव वन्या थेरो अगसासि ।

राजा बुक्तनयेनेव तयो दिवसे दापेसि । नेव माँग आहरिसु । थेरो ततियदिवसे आगन्त्वा---र्कि महा-राज ! पातितो मणीति पन्छि ।

न पातेन्ति भन्तेति ।

तेन हि महाराज ! महात्विमाञ्चो व पटिच्छान्द्राने महाचाटि द्यापेत्वा उदकस्य पूरापेत्वा साणि परिक्कियापेत्वा सब्दे अन्तोबलञ्जानमुन्मा च इन्वियो च उत्तरासङ्ग कत्वा एकेकोव अन्तो साणि पविमित्वा इत्यं भोवित्वा आगच्छतित वेदेहीति ।

थेरो इमं उपाय आर्थिनिकाला परकाशि । राजा तथा कारीसि । शिकारोरी विन्तीस धम्मभण्डागारिको इमं अध्यक्षण आराम शिक्षण अस्मापेत्व औस्मिनिकस्मतीति पतितु दानि बटटतीति मणि पटिच्छूसं करवा आराम अन्तोसाणि पविसत्वा चाटियं पतित्वा निकाशि । सक्चेस निकाशनाको उदक छडेरवा मणि अहस्स ।

राजा थेरं निस्ताय महाजुन्न अकिलमेत्वाव मे मणि लढ़ोति तृस्सि। अन्तोबनञ्जनकमनुस्सापि थेर निस्ताय मय महाजुन्कतो सुनन्दानि तृस्तिम् । थेरस्सानुभावेन रञ्जो चूनामणि लढ़ोति थेरस्सानुभावे। सकनन्दने वेष भिन्नसुद्धे न पाकटो जानो । अम्ममभाय मिश्रिसित्रा भिन्नसु वेरस्तानुभ कर्णायम् — आवुसी ! अलन्ददेशे अननो बहुस्सुननाय पण्डिन्चेन उपायकुसलताय महाजन अकिनमेत्वा उपायेनेव रञ्जो मणि हम्मेतित ।

सत्या आगन्तवा—कायनुत्व भित्रकके । एतर्राह कयाय सम्निसिम्नाति पुण्डिहता इसाय नामाति बुने न भित्रकवे । इदानि आनन्देनेन परहृत्थानं भण्ड दिस्ति, पुत्रवेषि पर्षिटता महात्रनं अकिलमेत्वा उपा-मेनेव तिरुक्कानद्वत्यपनम्थळ दस्तियसित बना अतीन आहिर्ग-

ग्रतीतवत्य

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रुज कारेन्ते बोधिसत्तो सम्बन्धियमु निष्कांत पत्तो तस्येव अमण्यो अहोति । अयेकदिवसं राजा महन्तेन परिवारेन उध्यान गन्त्या वनन्तरानि विचारत्वा उदककीलं कीलितुकामो मङ्गल-गोक्कर्राण बोर्जीरत्वा इत्यागारीम्य पक्कोसि । इतिययो अत्तनो अत्तनो [३२५] सासूपनगीवृपगादीनि आभ- रणानि बोमुञ्चित्वा उत्तरासङ्गेसु पनिस्तपित्वा समुगापिर्ठेसु ठदेस्वा वासिको पटिच्छापेत्वा पोक्सर्राण ओत-रिस् ।

अयेका उप्यानमक्कटी साखत्तरे निर्मिषा देवि पिलन्यनानि ओमुञ्चित्वा उत्तरासङ्गे पिरुविपत्वा समुगापिट्ठे ठपयमानं दिस्ता तस्सा मुताहारे पिलन्यिनुकामा हृत्वा दासिया पमादं ओलोकयमाना नित्तीदि, दासीपि ते रस्वमाना तह तहं शोलोकयमाना निर्मित्वा येव प्रवासित्वापारीम । मक्कटी तस्सा प्यापस्मावं ज्ञाल्वा वात्रवेगनं ज्योतित्या सालव्यत्वे तस्सा प्यापस्मावं ज्ञाल्वा वात्रवेगनं ज्योतित्या सालव्यत्वे तिसा प्यापस्मावं ज्ञाल्वा वात्रवेगनं ज्योतित्या सालव्यत्वे तस्ति प्रवासाव्याप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स

सापि लो दानी पटिवृण्भित्वा मुनाहार अपस्मत्नी कम्पमाना अञ्ज उपायं अदिस्वा पुरिसो देविया मुताहार गहेत्वा पनानीति महावित्वं विरिष्ठ । आरक्षवनुस्सा ततो ततो सम्मितित्वा तम्मा वचनं सुत्वा रुञ्जो आरोबियम् । राजा चोर गण्हयाति आह । पुरिसा उध्याना निक्चमित्वा चोरं गण्हय गण्हयाति इतो चितो व श्रीकोकेनि ।

अपेको जानपरो बनिकारकपुरिमो न सहं मुल्ता करनमानी पनायि । त दिस्वा राजपुरिसा अस बोरो स्रोतस्तिति जनुबन्धियावा त गहेन्या पोथेत्या—अरे दुटुबोर । एव महासार नाम पिनन्यन अवहरिस्स-सीति परिभाविताः।

सो चिन्तेंसि सलाह न गण्हामीति वक्लामि अञ्ज मे जीवित नित्य, पोयेन्तो येव मं मारेस्सन्ति । सम्प-टिच्छामि नित्ति । मो---आम सामि [।] गहित मेति आह ।

```
अथ न बन्धिरता रञ्ञो सन्तिक नियमु । राजापि न पुच्छि—-गहितं ते महासारपिलन्धनन्ति ?
आम देवाति ।
इदानि त कर्वन्ति ?
```

देव ! मया महामार नाम मञ्चपीठिष्य न दिटुपुब्ब, भेट्ठी पन म महामारपिनन्थन गण्हापेसि । सोह महेत्वाव तस्स अदासि ! मो त जानातीति ।

```
राजा सेर्डि पक्कोमापेरवा--गहिन ने इमस्य हरवतो महासारपिनन्यनिन पृच्छि ।
आग देवानि ।
कह तन्ति ?
पुरोहितस्य में दिश्चनित ।
पुरोहितस्य पक्कोसापेरवा तचेव पुच्छि । सोपि सम्पटिच्छित्वा गन्यब्बस्स में दिश्चनित आह ।
निम्प पक्कोसापेरवा-पुरोहितस्य ते हरवतो महासारपिन्थन गहितन्ति पुच्छि ।
आम देवाति ।
कहं तन्ति ?
```

किलेसवसेन से सणदासिया दिश्ननि । तिस्प पक्कोसापेल्वा पुण्डि । सान गण्डामीनि आह । ते तञ्च जने पुण्डिन्तानञ्जो व सृण्यि अर्त्य गतो । [३२६]

राजा इदानि विकानो जातो स्वे जानिस्सामाति ने पञ्चलने क्रमण्यान दराज नगर पाविसि । बोधि-सत्तो चिन्तीस—प्रद पिन्तम् कलोजनञ्जे नट्ठं अप च महासिको बहिवनञ्जो, हार्रेप वनवा नक्को, तस्मा कलोचनञ्चनक्तानाम् न गहेदा पश्चीसन् न सकता । एव नेव बहिवनञ्जनकाना न अनो ज्याने वनञ्च-नकान गहण्यायो दिस्सति । दीमना दुग्ततमनुस्सेन सेट्विस्स मे ख्रिप्तीत कपेनोन अननो मोन्सत्याय कियतं भविस्सति । बेट्ठिनापि दुर्गहिलस्स मे दिप्तीत कपेनोन एकतो हुत्य नित्यरित्सामीति चिनतेवा क्रीयतं भवि-सति । युर्गहिलेनापि राज्यव्यस्तापि वण्यासिया मे दिप्तीत कपेनोन अनुक्तिप्टना विस्तामाति चिनतेवा कियते जनिस्सति । गण्यव्यस्तापि वण्यासिया मे दिप्तीत कपेनोन अनुक्तिप्टना विस्तामाति चिनतेवा

१. रो०-परिहासिस्।

कथितं मिकस्पति । इमेहि पञ्चिहिपि अचोरीहि भवितब्वं उप्याने मक्कटा बहू पिलन्धनेन एकिस्सा मक्कटिया हरवे आक्लहेत भवितब्बन्ति ।

सो राजानं उपराक्ष्मित्वा-महाराज । चोरे अन्हाकं निय्यादेव मयं त किच्च सोधेस्तामाति-आह। राजा साथु पण्डित । सोधेद्वीति तस्म नियादेवि । बोधियत्तो अत्तनो दालपुरिते पक्कोसित्वाते पण्ड् जने एकस्मिन्टने व ठाने वसायेत्वा समन्ता जारमक करवा कव्यं दत्वा य ते अञ्जानञ्जं कथेन्ति तं मय्हं जारो-वेषाति-व्यवा पक्कामि । ते तथा अकंसु ।

ततो मनुस्सानं सिम्नसिक्षवेलाय सेट्ठी त गहपतिक आह-अरे दुद्रगहपतिक ! तया अहं मया वा त्वं कहं दिद्रपुरुवो ? कदा ते मश्हं पिलन्धनं दिक्षन्ति आहे ।

सामि महासेट्टि ! अहं महासार नाम रुक्खमारपादकं मञ्ज पीठकस्पि न जानामि ! तं निस्साय पन मोक्स लिभस्सामीति एवं अवच । मा मे कृञ्क सामीति ।

पुरोहिलोपि मेड्डि आह-महासेट्डि त्व इमिना पिलन्थन अत्तनो अदिसकमेव मय्हं कथं अदासीति ? मयम्पि हे इस्सरा अम्हाकं एकतो हत्वा ठितकाले कम्म खिप्पं निप्पजिस्सतीति कथेसिन्ति ।

गन्धक्वोपि पुरोहित आहु-आह्मण । कदा तथा मय्ह पिजन्थन दिश्रन्ति ? अह त निस्साय वसनद्वाने सब वसिस्सामीनि कथेमिलि ।

्रवण्णदासीपि गन्धवत्र आह-अरे इट्टगन्धवत्र । अह कदा तत्र मन्तिकं गतपुब्द्या त्वं वा भम सन्तिक आगतपुद्यो, कदा ते मध्हं पिलन्धन दिक्षत्ति ?

भगिति । कि कारणा कुञ्क्रसि 2 अन्देमु पञ्चमु एकतो वसन्तेमु घरावासो भविस्सति अनुक्कण्ड-माना सख विस्सामाति कथेसिन्ति । [३२७]

बोधिमतो पयोजिनमनुस्मानं मेनिका त क्य मृत्या नेस तत्थ्यते अचोरभावं ज्ञान्य मक्कटिया गहित-पित्रस्य ज्यायेनेव पातेस्सामीत भेष्डमयानि वहूनि पित्रस्थनानि कारायेन्वा उथ्याने मक्कटियो गाहापेत्वा हत्थ्यादायीवाम् भेष्ट्यित्यस्थानि पित्रस्यापेत्वा विस्तर्वेति इतरा भक्कटी पित्रस्थनं रक्क्यमाना ज्ञास्यानेवेव निर्माटि ।

बोधिसतो मनुस्ते आणापेसि गच्छय तुम्हे उप्याने सब्बमक्कटियो उपघानेथ यस्मा न पिनन्धन पस्माष्ट तं उत्तानेश्या मिनन्धन गम्हवानि । नापि खो सन्कटियो पिनन्धनं नो लढिन्त नृहिरुमहरूद्वा उप्याने विवर्रान्तयो तस्सा सितक गन्त्या पस्मय अम्हाक पिनन्धनन्ति आहुम् । मा मन्य अगहमाना कि इमिना भेण्डुपिनन्धनेनाति मनाहारं पित्यन्त्रिया निक्समि ।

अय न ते पुरिसा विस्ता पिलन्धन छुड्डापेन्ता आहरित्वा बोधिमत्तस्स अदम् । सो त आदाय रञ्जो दस्सेत्वा–इद ते देव[ा] पिलन्धन, ते पञ्चपि अचोरा । इद पन उच्याने मक्काटया आभनन्ति आह ।

कय पन ते पण्डित ! मक्कटिया हत्य आरूल्हभावो ज्ञातो ? कथ ते गहितन्ति ?

सो सब्ब आचिक्सि । राजा तुटुमानसो सङ्गामसीसादिसु नाम सूरादयो इण्छितब्बा होन्तीति बोधि-सत्तस्स वृति करोन्तो इम गायमाह .--

उक्कट्ठे सुरमिच्छन्ति मन्तीसु श्रकुतूहलं, पियञ्च श्रव्याणम्हि श्रत्ये जाते च पण्डितन्ति ।

 अस्यगम्मोरे किस्मिचियेव कारण वा पञ्हे वा उप्पन्न पण्डितं विचक्चण इच्छन्ति, तथारूपां हि तीस्म समये पत्थतस्त्रो होतीति ।

एवं राजा बोधिरात्त वर्णात्वा थोमेत्वा चनवस्यं यस्सेन्तो महामेघो विय मत्तिह रतनेहि पूजेस्वा तन्सोबादे ठत्वा दानादीनि पुञ्चानि कत्वा यथाकम्म गतो । [३२६]

बोबिसतोपि ययाकस्म गतो । सत्वापि इम धम्मदेमन आहरित्वा थेरस्स गुण कथेरवा जातक समो-धार्नेसि । तदा राजा आनन्दो अहोसि, पण्डिनामच्चो पन अहमेवाति ।

महासारजातक ।

3. विस्सास मोजनजातकं

न जिल्लासे अविल्लात्येति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो विल्लासभोजनं आरब्भ कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्यु

तस्मि कर समये येभूव्येन भिक्कु मातरा नो दिन्नं पितरा नो दिन्नं भातरा भगिनिया चुल्लभातरा चुल्लपितरा मातुन्तेन मातुन्नानिया दिन्नं, बन्हाकं गिहीकावेपि भिक्कुकालेपि एने दातु युनक्ष्पा बाति ज्ञातीहि विन्ने चनारो एक्वये विस्तराया हत्वा अपन्त्रवेकिकत्वा परिभज्जीतः।

सत्या त कारणं ज्ञात्वा भिक्कृतं स्या घस्मदेवनं कात्ं बहुतीति भिक्कृ सिक्ष्यातापेत्वा-भिक्क्ववं । भिक्कृत ना नाम जातीहिष कञ्जातीहिष दिश्वके कतारो एक्वयं पक्क्ववेक्तत्वाव परिभोगो कातव्वो । अपञ्चवेक्तियन परिभोग करवा हि कालं कृष्मानो भिक्क्ववक्षप्रेतज्ञतभावतो न मुच्चित । अपञ्चवेक्तवपरिभोगो नामेस विवारिभोगसितियो । वसं हि विस्सातिकेन विश्वक्रीय अप्तर्माकेन विश्वकृष्य । पुर्वेषि विस्सान्धे सेन विश्वविद्या परिभोग नामेस विवारिभोगसितियो । वसं हि विस्सातिकेन विश्वकृष्य वस्त्रात्व वस्तरात्व वस्त्रात्व वस्त्र वस्त्रात्व वस्त्र स्त्रात्व वस्त्र स्त्रात्व स्त्रात्व स्त्र स्

द्यतीतसस्य

अतीते बाराणसियं ब्रह्मप्तरे रच्चं कारेन्ते बोधिसतों महाविभवों सेट्ठी अहोसि । तस्येको गोपालको किंदुसम्बाधसमये गावो गहेत्वा अरञ्ज पबिसित्वा तत्य गोपित्वक कत्वा रसवत्तो वसति । सेंद्रिगो च कार्येन कार्ये मार्सि आहर्तत । अपस्स गोपित्वकाय अविद्रूरे सीहो निवासं गिष्ट् । गावीन सोहयन्तासेन मिलातान खीर मन्त्यं अहोसि । अय ने एकदिवस सर्पिय आदाय आगत सेट्ठी पुष्टि, किन्नुको सम्म गोपालक ! मन्द सप्पीति ? सो ते कार्यं आपितका आपित सेट्री पुष्टि, किन्नुको सम्म गोपालक ! मन्द सप्पीति ?

अत्यि पन सम्म ! तस्स सीहस्स कत्यचि पटिबद्धोति ?

अत्थि सामि ! एकाय मिगमातकाय सद्धि संसग्गीति ।

सक्का पन तं गाहापेतुन्ति ?

सक्का सामीति ।

तेनहि नं गहेत्वा तस्सा नवाटती पद्भाय सरीरे लोमानि वियेन पुनप्पन रवित्वा सुम्बापेत्वा हे तथी विवसे अतिक्कामेत्वा त मिगमानुकं विस्तज्वेहि । सो तस्सा सिनेहेन सरीर लेहित्वा जीवितक्वय पापुणिस्सित । अथस्स चम्मनबदाल चेव वसञ्च गहेत्वा आपच्छेय्यासीति हलाहलविसं दत्वा उप्योजेसि ।

सो गोपानको जार्न विपित्वा उपायेन ते निगमातुक गौर्कहत्वा तथा अकासि । सोहो [२२१] त दिन्याव बन्वसंत्रिकृत तस्या सरीर तेहित्वा जीवतक्कयं पापूणि गोपानकोगि चन्मादीनि गहेत्वा बोधिसतस्य सन्तिक अगमासि । बोधिसतो त कारण शत्या परेस सिनेहो नाम न कराव्यो । एव बतसम्पन्नोगि सीहो निगराजा किलेस-बन संसम्प निस्साय मिगमातुकास ते लेहनो विसर्परिभोगं करवा जीवितक्षय पत्तोति वत्वा सम्पन्तपरिसाय सम्म देसेनो इम गायमाह .---

न विस्ससे अविस्सत्थे विस्सत्थेपि न विस्ससे,

विस्सासा भयमन्बेति सीहं व मिगमातुकाति ।

तत्राय सद बेपत्यो । यो पुन्ने सहायो जत्तांत अविस्तात्यो अहोति तिस्मं प्रविस्तात्ये यो पूर्व्योप निक्रमो जत्तांत विस्तात्वेष निक्रमो जत्तांति विस्तात्वेष निक्रमो जत्तांति विस्तात्वेष विद्यात्वेष करिया । कि कारणा विस्तात्वा भवमन्वेति यो हि मित्तिपि जनित्वेषि विस्तात्वेष त्राण्यात्वेति । कण ? सौहंब मित्रमाशुक्ता यया मित्ततत्त्वव्यवेतं कर्तविस्तात्वात्वा मित्रमाशुक्ता यदा मित्तत्त्वव्यवेतं कर्तविस्तात्वात्वा मित्रमालुकाय सन्तिक सोहस्त भयं अन्वेतं उपगत सम्पत्तात्व अर्थो । यदा वा विस्तासव्येत सीहं मित्रमात्का अन्वेतुकामा उपगतात्वि अर्थो ।

्षं बौषिसातो सम्पत्तपरिसाय धम्मं देसेत्वा दानादीति पुञ्जाति कत्वा यथाकम्मं गतो । सत्या इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानेसि । तदा महासेट्ठी अहमेव अहोसित्ति ।

विस्मासभाजनजातकः ।

४. खोमहंसजातकं

स्रो तत्तो सो सौतोति इदं सत्या बेसालि उपनिस्साय पाठिकारामे विहरन्तो सुनक्खत्तं आरब्भ कथेसि ।

पञ्चपञ्चवत्य

एकरिस हि समये सुनक्ततो सत्यु उपट्ठाको हुत्वा पत्त्रचीवरमादाय विचरमानो कोरक्पतियस्स धम्मं रोचेन्तो दमबनस्य पत्त्रचीवर निय्यादेत्वा कोरक्सत्त्रच निस्ताय विस्ता तस्स कालकञ्चकअधुरयोनियं निब्बत्त-काले गिही हत्वा नित्य मण्यस्य गोतासस्य ज्ञतिमन्तुस्यम्याः अन्नसर्ययास्यम्यस्यिते तक्कर्यात्याहृतं सम्योगोनोन्नो धम्म देति वीमसानुचरित १. उपटियाण यम्म च रब्बस्य अस्याय धम्मो देसितो सो न निय्याति तक्करस्स सम्मा दुक्वकश्वयाति वेमानियं विषयं पाकारानं अन्तरे विचरन्तो सत्यु अवयणं भावति ।

अवायस्मा सारिपुत्तो पिण्डाय चरन्तो तस्सेवं अवण्ण भासन्तस्स मृत्वा पिण्डपानपटिककन्तो तमत्यं भगवतो आरोचेसि ।

द्यतीतवस्य

अनते । एकनवृनिकप्पास्यके बोधियातो वाहिरकतएं बोधिसासामीति आजीवकाण्यन्त्र पस्वजित्वा अनेतको अहोिम रजोजिनको । पिविनित्तो अहोिस एकविद्यारी मृत्युसे दिन्दवा मिमो विद्य पत्राधि । महाविकट-भोजनो अहोिम रजोजिनको । पिविनित्ते अहोिस एकविद्यारी मृत्युसे दिन्दवा मिमो विद्य पत्राधि । महाविकट-भोजनो अहाि एकविद्यारी प्रति प्रति हिस्ता सुरिये उपने विकास कर कि स्वाधि का स्वित्त सुरिये उपने विकास एक प्रति । स्वित्त सुरिये उपने विकास एक प्रतिकृति । स्वाधि हिस्ता सुरिये उपने विकास एक प्रतिकृति । स्वाधि हिस्ता सुरिये उपने विकास हिस्ता हि

सो तत्तो सो सीतो एको भिसनके वने।

नग्गो न चिंगमासीनो एसनापसतो मुनीति ॥

त्थ-सो समीति सुरियसन्तापेन सुततो । **सो सीतोति हिमोरकेन सुनीतो सुट्**यृतिन्तो । **एको भिसक्के** स्रवेति यत्य पिंद्युनं येसुर्थ्यन लोमानि हसन्ति तपारूपे भिसनके [३३१] वनसम्बे एको अटुतियोव अहोसिन्ति दीपेति ।

नग्गो न चिग्ममासीनोति नग्गो च न च अग्गिमासीनो तथा सीतेन पीलियमानोपि नेव निवासनपारुपन वा आर्दिय न ऑग्ग आगम्म निसीदिन्ति दीपेति । एसनापसुतोति अब्रह्मचरियेपि तर्सिम ब्रह्मचरियसञ्जी हुत्वा ब्रह्मचरियमेवेतं एसना च गवेसना व उपायो ब्रह्मोकस्साति एवं ताय ब्रह्मचरियेसनाम पसुनो अनुसून्तो उस्सुक्कं आपको अहोसित्ति दस्त्रेति । मुनीति सुनि लो एस मोनत्याय पटिपन्नोति एव लोकेन सम्भावितो अहोसित्ति कोर्पेत ।

एवं चतुरङ्गसमन्नागतं पन बद्याचरियं चरित्वा बोधिवत्तो मरणकालें। उपद्वित तिरयनिमित्त दिस्वा इद बत्तसमादान । निरत्यकन्ति अत्वा तं खण्डको व तं तद्धि भिन्दित्वा सम्मादिद्धि गहेत्वा देवलोके निक्वत्ति । सत्या इम धम्मदेसन आहरित्वा जातकं समोघानेसि । अह तेन समयेन सो आजीवको अहोसित्ति ।

लोमहंसजातकं।

५. महासदस्यनजातकं

भ्रतिच्चा बत-संकाराति इद सत्था परिनिब्धाणमञ्चके निपन्नो आनन्दत्येरस्स मा भन्ते ! भगवा इमिस्मं खृहकनगरकेत्यादिवचनं आरब्भ कथेसि ।

पच्चपञ्चवस्थ

तथागते अेतवने विहरन्तं सारिपुत्तस्येरो कत्तिकपुष्णमाय नालकगामके जातोवरके परिनिब्बायि । महामोगाललानो किकसासस्येव कालपस्य आमार्वसिय परिनिब्बायि । एवं परिनिब्ब्तुं अणसावकयुपे जहरिय कृषिनाराय परिनिब्बायिस्सामीति अनुसूखेन चारिकं चरमानो तस्य गन्तवा यमकसावानमन्तरे उत्तरसीसके मञ्जके अन्तरानिस्याय निपण्डि ।

जय न आयरमा आनन्दर्थरो—मा भन्ते । भगवा दमस्मि जुद्दकनगरके विसमे उज्जञ्जननगरके सालानगरके परितिक्वायि । अञ्जो स चम्पाराजगहादीनं महानगरानं अञ्जातरीस्म भगवा परिनिब्बाय तति वाचि ।

ग्रतोतबत्य

तदा पन महापुदस्सन धुधम्मासादा ओतिरखा अबिदुरे सत्तरतनमये तासबने पञ्जातस्मि कष्पि-यमञ्जकं शिक्षणेन परतेत अनुदाननेप्याय निषश दिस्वा हमानि ते देव ! [३२२] चतुरावितिनगरसह-स्म्मानि कुनावतीराज्ञपानिपम्नावानि । एया छन्दं करोहित सुमृस्य विश्वया चुने समुद्धस्तनो, ना देव पूर्व अवच । अच वो एव्य छन्द विनिष्ट मा अपेस्व अकासीति एवं मं ओवदाति बत्वा कि कारणा देवाति पुष्टिको अज्ञाह कार्याकिर्य करिरणामिति आह । अय न देवी हरमाना अस्त्वीति पुण्डिक्श किन्छेन कविरेत तथा बत्वा रोदि परिदिन । सेसापि चनुरासीतिसहस्मा दिसयो रोदिमु परिदेविमु । अमच्चादिसुनि एकोपि अधि-वासेत नार्वास्त्व । इस्त्वीप रोदिस ।

बोधिसत्तो--अल भणे मा सहमकत्वाति सब्बे निवारेखा देवि आमन्तेत्वा मा त्व देवि ! रोदि मा परिदेवि । तिलमत्तोपि हि सङ्खारो निज्जो नाम नित्य सब्बेपि अनिज्जा भेदनधम्मा एवाति बत्वा देवि ओवदन्तो इम गावमाहः--

ग्रनिच्चा वत सङ्खारा उष्पादवयधम्मिनो । उप्पण्जित्वा निदन्तानि तेसं वपसमो सखोति ॥

तथ—प्रतिच्चा वत सङ्काराति भट्टे! मुगद्दादीव । यत्तर्वेहि पण्वयेहि समागत्वा कता सम्याय-ततादयो सङ्कारा सम्बद्ध अंतिरूची येव नाम। एतेम् हि ह्य अंतिरूच-पे-विक्रणाण अंतिरूचे। पस्क अंतिरूचे-पे-धमा अंतिरूचा। य किंक्ति संविक्रणाणकस्वित सम्बद्ध त अंतिरूचमेव । इति अंतिरूचा वत्त सङ्काराति गष्ट् । करमा ? उप्याववयधाम्मनीति सन्त्रेहेते उप्पादधामनी चेव वयधामनी च उप्यञ्जन भिक्रमतस्यावा येव। तस्मा अंतिरूचाति वेदितव्य। सस्मा च अनिष्या तस्मा उप्यक्तिस्वा निक्रमन्त्रनीति उप्यक्तित्वा किंति पत्तापि निक्रमति येव। सन्वेवहेते निक्ष्यसमाना उप्यज्जनित नाम भिक्रमाना निक्रमन्त्रनीत

तेसं उप्पादे सति येव ठिति नाम होति, ठितिया सति येव भङ्गो नाम होति। न हि अनुप्पन्नस्स ठिति नापि ठितं अभेज्जनक नाम अत्यि। इति सब्येपि सखारा तीणि खणानिः पत्वा तत्य तत्येव निरूप्कान्ति। तस्मा

१. सी०--लक्खणानि ।

२८६ जातकटुकयां

सम्बोदिये अनिच्या सणिका इत्तरा अबूबा पशब्दुना ने जिलता समीरिता अनबनिया पयाता ताबकालिका निस्सारा ताबकालिकट्टेन मायामर्दीपक्षेणधरिसा । तेषु महे ! सुमहारिष ! कस्या सुस्रतक्रां उप्पादिस ? एवं पन गपट्ट । तेसं बुरससो शुक्षोत सञ्चब्द्रयुपसमनतो तेसं वृपसमो नाम निम्बाण तदेवेकं एकन्ततो सुस्रं अञ्चन सुक्ष नाम नत्यीति ।

्षं महासुबस्सनो अमतमहानिष्वाणेन देसनाय कूटं गहेत्वा अवसेसस्सापि महाजनस्स दानं देव, सीलं रक्बस, उपोसपकम्म करोपाति ओवार्य दत्ता देवलोकपरायणो अहोसि। सत्या इमं धम्मदेवनं बाहरित्वा जातक समोधानीस। तदा सुभहादेवी राहुत्तमाता अहोसि, परिनायकरतनं राहुतो अहोसि, सेसपरिसा सुद्धपरिसा, महासुदस्सनो पन अहमेवाति।

महासुदस्सनजातकं । [३३३]

६. तेलपत्तजानकं

समितित्तकं धनवसेसकितः ६६ सत्या सुम्भरट्ठे सेतकं नाम निगमं उपनिस्साय अञ्ञातरस्मि वनसक्टे विहरन्तो जनपदकल्याणिसुत्तं आरब्भ कथेसि ।

पञ्चपन्नवत्य

तत्रिह मगवा-सेय्यगांप भिक्सवे ! जनपदकस्याणी जनपदकस्याणीत स्तो भिक्सवे ! महा-जनकायो सिंपरोत्यः । सा स्तो पनेसा जनपदकस्याणीय रसपासाबिनी नच्चे परमसासावनी गोतं जनपद-कस्याणी नच्चति मानेतीति को विस्ववे ! भीगो सोम्याय सहाजनकायी सिंपरोत्यः । अव पुरिस्तो आयार्थ्यः श्रीवितुकामो अमरितुकामो सुक्कामो डुस्कर्पाटक्क्स्तो । तमेन एवं वरेय्यू अयं ते अम्मोपुरिस ! समितिस्यो तीवपत्ती अन्तरेन व महासम्य अन्तरेन व जनपदकस्याणिया हारत्व्यो। पुरिसो च न दुष्टिकासासिको पिद्वितो पिद्वितो अनुवन्धिस्सति यत्येव न योकम्य छुट्टेस्सित तत्येव ति पातेस्यामीयो त किम्मञ्ज्य भिक्सवे ! अपि न ओ सो पुरिसो अमृ तेनपत्तं अमनिकारित्वा बहिद्वा पमाद ब्राह्येयाति ?

नोहेतं भन्ते ।

उपमा को म्यायं भिस्कवं ! कता अत्यस्स विञ्ञापनाय । अयमेत्य अत्यो-समितित्योतेलपत्तोति को भिस्कवं । कायगरायेत सतिया अधिवचन । तत्मातिह भिस्कवं ! एवं विनिचतन्त्रं कायगता नो सति भाविता भविस्सति सुमारद्वाति एवं हि वो भिस्कवं ! तिस्कितन्त्रं नित इमं जनपदकल्याणिमुतं सात्यं सव्य-ञ्ञानं कवैति ।

तथा सङ्ग्रोपयो । जनपदरुत्याणीति जनपदिम्ह रूत्याणि उत्तमा स्वरिरिश्तेस्तरित पञ्चरूत्याण-सम्प्रागना । या हि यसमा नार्वादोषा नार्विदस्सा नार्विष्क्ता नातिषुत्वा नार्विकाली नाज्योदाता अतिकस्ता मानुक्तं कणं अत्याना दिव्यं कण तस्ता स्वरिरोद्धातिह्या । स्विकत्याणं मंग्रक्तर्याणं नार्वाद्धात्रा स्वर्षक्त्याणं नार्वाद्धात्रा स्वर्षक्त्याणं नार्वाद्धात्रा स्वर्षक्त्याणं स्वर्यक्रत्याण्यतः । स्वर्षाद्धात्रा स्वर्षक्रत्याणं त्राचे स्वर्षात्रा स्वर्षक्रयाण्यतः । ह्यापान्यत्वाच्यात्रा स्वर्षाद्धात्रा स्वर्षात्रा स्वर्षात्र स्वर्षात्रा स्वर्षात्र स्वराप्यतः । स्वर्षात्र स्वर्णात्र ।

परमवासाधिनतीत एत्य पन नमनं पत्रने पननीति जयो। पसनोधे पामावो। परमो पामावो परमपासावो, सो क्षसा अव्योति परमपासावीनी। । नच्च व गीते च उत्तपपत्रति सिट्ट्रिकिरिया उत्तमित्र तच्चे नच्चित गीतच्च गायतीति वृत्तं होति । अय पुरिसो आगच्चेत्याति न अचनो विचा आगच्चेत्य। अयं पनेच अपिपायो। अयेव महाजनमञ्के जनपदकस्थाणिया नच्चमानाथ सामुसाधृति सामुकारेतु च अङ्गृतिपोठनेतु वेनुक्केष्य च पत्रमानेतु तं पर्वति सुत्वा राजा बच्चमागारतो एकं पुरिसो पक्कोमायेवा निगतानि मिन्दिला ममितिक्तं सुपरिपुण्णं तेनपतं तस्स हत्ये दत्वा उनोहि हत्येहि दक्तं शाहरोप्ता एक अविहत्यं पुरिसं आमा-भेति एतं गेहेवा जनपदकस्थाणिया सम्बद्धानं पच्च अयेव चेत्र पमायं आगम्म एकम्पि तंत्रसिद्ध इहित्या तत्त्रवेस्तर सीच विद्याति । सो पुरिसो असि उविद्यात्वित तंत्रभेतो तत्व नेति । सो नरणभवतिकातो जीविद्ध-कामताय पमादक्षेत्र तं अमनविकत्या सम्बद्धानं पत्रक्षित्रस्थं। जम्मवत्यात्वं तंत्रभेतो क्ष्यं नेति । सो नरणभवतिकातो जीविद्ध-स्वत्रस्थावेतं वर्ष्यु । सुते पन परिकण्यववेतेतं कृत्यात्वि वेदिस्तव्यं। वशन को स्थायिन एत्य पन तेलपत्तस्स ताव कावगतासतिया कोपम्मसंसन्दर्ग कतमेव । एत्य पन राजा विष कम्मं दरुवं, असि विष क्लिया, जिस्हतासिकपुरिसी विष मारो, तेलपतहृत्यपुरिसी विष कायगता-सतिमावको विषरसक्योगावचरो । इति भगवा कामगतासति मावेलुकामि नक्सुना तेलपतहृत्येन तेन पुरिसेन विष सति अविसम्बन्देता अप्यानेन कायगतासति मावेतव्याति इस सत्तं आहोत्या स्सीसे ।

भिक्क् इमं सुतं च अत्यं च सुत्वा एवमाहंसु—दुक्करं भन्ते ! तेन पुरिसेन कर्त तथारूपिं जनपदकत्याणि अनोलोकेत्वा तैलपतं आदाय गच्छत्तेनाति ।

सत्या न भिनकाने ! तेन दुनकरं कतं, सुकरमेमेसं । कस्मा ? उनिसत्तासिकेन पुरिसेन सत्तज्जेत्वा निध्यमानताय । य पन पुत्रने पण्डिता अप्यमादेन सति अविस्तरजेत्वा अभिसङ्ख्ट दिब्बरूपिय इन्द्रियानि भिन्दित्वा अनोलोकेत्वान गत्वा रज्जं पाष्ट्रीणस् एत दुनकरन्ति कत्वा तेद्वि याचितो अतीतं आहरि :—

धानीत समा

स्वतीते बाराणिसमं बहादते रज्य कारेन्ते थोधिसतो तस्स रज्जो पुत्तसतस्स सम्बक्तिन्द्रों हुत्या सम्बन्धित्तात्वा अगुप्तवेत विज्जाद पार्णिण । तदा व रज्जो गेहे चन्केकबृद्धा मुज्जित्तं । बोधिसत्तो तेस वैय्या-वन्यं करोति । प्राप्तवित्तर्स चित्रीत मा यहुं भारते जन्नप्रति मृत्रे अह हामित मार्ग्य कुनसत्तवः रज्ज उदाहु नोति । अयस्य एतदहोत्तं । पच्चेकजुद्धे पुच्चिक्ता जानिस्मामीति । सो [३३४] पुतियदिवसं पच्चेक-बृद्धेत आगतेसु पमकरफ आदाय गानिय परिस्तावत्वा पारे थोबित्वा तेलंग मग्वतेत्वा तेत अत्तरे सज्जक साहित्वा निस्त्रमका वेन्द्रस्य पारक्तात्त्व निम्नित नाम्यत्वे विज्ञा

अब मं ते अबोचुं — मुनार ! न त्व इसीस्म नगरे र उर्ज विभागीन इता पन बीसवीजनतमावको पाषारहे तक्किसवानार, नाम अध्य तव पन सुनाको होता सामे दिवसे राज लच्छिता । अलगमान पत्त महावति अवदिव परिवार । अलगमान अधिका अवदिव परिवार । अलगमान अधिका अध्य त्या होता हो अधिका स्वार प्रविचित्र । अलगमान अधिका अध्य त्या होता हो अधिका स्वार प्रविचित्र । अलगमान भागे त्या स्वार प्रविचित्र । अलगमान भागे स्व सालावो व मापेत्वा उपिर मुक्किताल क्षित्र अस्मान परिवार त्या हा स्वार प्रविचित्र । सामे प्रविच प्रविच प्रविच । सामे प्रविच प्रविच । सामे प्रविच प्रविच प्रविच । सामे प्रविच प्रविच । सामे प्या सामे प्रविच । सामे प्या सामे प्रविच । सामे प्या सामे प्रविच । सामे प्रविच ।

बोधियतोः—होतु भन्ने ! तुम्हाकं ओवाद महेत्वा कि ता ओवोकेस्सामीति पच्चेकबुद्धेहि परित्त कारा-पेखा परित्तवालिकञ्चेव परिताउदकञ्च परितसुत्तञ्च आदाय पच्चेकबुद्धे च मार्तापितरो च बन्दित्वा निवेसन गन्दवा अत्तवी परिसे आह—अह तक्कांसलायं रज्यं गहेतु गच्छामि, तुम्हे दथेव निद्वयाति ।

अध नं पञ्च जना आहम मयस्यि अनगच्छामाति ।

न सक्का तुम्हेहि अनुगन्तु अन्तरामगो किर यक्किणियो रूपादिगोचरे मनुस्ते एवञ्चेवञ्च रूपादीहि पक्तोभेत्वा गण्डन्ति, महापरिपन्यो अह पन असान तक्केत्वा गच्छामीति ।

किम्पन ते देव ! मयं तुम्हेहि सर्द्धि गच्छन्ता अत्तनो पियानि रूपादीनि श्रोलोकेस्साम ? मयं हि सर्पेव गमिस्सामाति ।

कोषिसको —चेनहि अप्पाना होपाति ते पञ्च कने आदाप माग परिपश्चि । यक्षियणियो गामादीनि मापेला निर्मादित् । तेव क्यागेनरो पुरिसो ता यक्षियणियो ओवोक्त्या क्यारमणे परिवदी पोक्तं ओहोिय । कोपिससी—कि भी ! योक ओहोपसीति आह ।

देव ! पादा मे रुजन्ति थोकं सालाय निसीवित्वा आगच्छामीति ।

अम्भो ! [३३६] एता यक्खिणियो मा स्वो पत्थेसीति ।

यं होति तं होतु न सक्कोमि देवाति ।

तेनहि पञ्ञायिस्सस्सीति इतरे चत्तारो आदाय अगमासि ।

कोमारसामिको मे अय्याति ।

अम्भो ! अय एव सुकुमारा पुष्फदामसदिया सुवण्णवण्णा कुमारिका अत्तनी कुर्ल छड्डेत्वा भवन्त तक्केत्वा निक्वन्ता, करमा एत किलमेत्वा आदाय न गच्छमीति ?

नेसा अस्या ! मयह पजापती, यक्खिणी एसा । एताय मे पञ्चमनुस्सा खादिताति ।

अव्या! पुरिसा नाम बुद्धकाले अस्तो बजारितयो सर्ववर्षाण्योगि करोतिन गोर्तानयोगिति । सा पञ्चमाना मिमणीकण दस्सेत्वा पुन सिंह विजानकण करवा पुत्त अरुकेनादाय बोधिमत्त अनुबस्धि । दिदृदिदृ। पुरिसन्तेतेव पुष्टित्ता । बोधिमत्तीप तयेव बरवा नष्टस्तो तकसित्तव पापुणि । मा पुन अलग्यापत्ता एक्ति । काव अनुबस्धि । बोधिमत्तो नगदार गन्वा पार्कस्सा सामाय निर्माद । सांधीपसन्तस्स नेवेन पविचित्तं अनक्कोत्ती दिव्यर्थ मापेत्वा सानादारे अद्वासि । तस्सि समये तकस्त्रीवातां गजा उत्यान गच्छातो त दिस्वा परिद्विचित्तां हुस्त शिच्छीमसा सस्सामिकअस्मामिकभाव जानाहीते मनुस्य पेति ।

सो त उपसङ्कमित्वा—सस्सामिकासीति पुच्छि ।

आम अय्य ! अय मे सालाय निसिन्नो सामिकोति ।

बोधिसत्तो--नेसा मय्ह पत्रापती, यक्खिणी एसा । एताय मे पञ्च मनुस्सा खादिताति आह ।

सा-पुरिसा नाम अय्यो । कृद्धकाले य इच्छन्ति त वदन्तीति आह ।

सो उभिन्नमिण बचन रङ्गो आरोचेसि । राजा अस्मामिकभण्ड नाम राजसन्नक होतीनि यस्त्रिण पत्रकोसामेत्वा एकहित्वपिट्टे निवीदापेत्वा नगर पर्यविष्यण कत्वा गासाद आरुस्ह तं अपमहित्रद्वाने ठमेसि । सो नहातानुनित्तो सायमाग भूडिजरबा [३३७] सिप्तियमं अभिन्दि । सापि यस्त्रियणी अनते उत्तरुपनक आहार आहरित्वा अनडक्तपरिट्याना सिम्तियमे रङ्गा सिंद निर्माण्यवा रङ्गो रनिवसंन गुनसमिणतस्स निपन्नकाले गुरूत परसेन परिवर्तित्वा परीदि । अथ न राजा—िंक भट्टे ! रोदसीनि पुन्छि ।

देव । अहं तुम्हीह मणे दिस्वा आनीता। तुम्हाकःच्य गेहे बहु द्दिययो साहं सपत्तीनं अन्तरे वस-माना कथाय उपप्रधाय के सुद्ध मानर वा पितर वा गोत वा जाता वा जानाति ? त्व अन्तराममंगे दिखा आनीता नामानि सीमे गहेला निप्पीलियमाना विय मङ्कु भविस्सामि । सचे तुम्हे सकलरञ्जे इस्सरियञ्च आणञ्च सद्धं दर्देव्याय कीचि सद्ध चिन कोचेला कनेतृ ने सिक्सस्तरीति ।

भद्दे ! मर्व्ह सकलरट्टबासिनो न किञ्चि होन्ति । नाहं एतेसं सामिको ये पन राजाणं कोपेत्वा अक-त्तव्यं करोन्ति नेसञ्ज्ञोबाह सामिको इमिना कारणैन न सक्का तुब्ह सकलरद्दे इस्सरियञ्च आणञ्च दानुन्ति ।

तेनहि देव ! मचे रट्ठे वा नगरे वा आणं दातु न सक्कोष अन्तोनिवेसने अन्तोवलञ्जनकान उपरि मम वसे वत्तनत्थाय आणं देय देवाति ।

राजा दिव्यफोट्टब्येन बढ़ी तस्सा वचनं अतिकामित् असकोन्तो साधु भहे । अन्तांवलञ्जनकेसु तुम्हं आणं दम्मि, त्वं एते अत्तनो वसे चत्तापेहीति आह । सा साधृति सम्पटिच्छित्वा रञ्जा । निद्द ओकन्तत्काले यम्बनगरं गल्वा यम्बे पक्कोसित्वा अत्तरी राजानं जीवितस्वयं परिस्वा सिट्टमतं सेसेत्वा सम्बं नहास्त्वममर्गनः लीहित बार्षि । अवसेत्वमस्त्वा महादार्श्व प्रदाय अत्योगनेत्वस्त्र नृष्कुरुक्क्कुरे आर्थि रूप्ता सन्त्र कारित्वस अदिसेत अर्कः, पृत्रिवर्वे द्वारं यमारिहितमेव दित्तम मृत्या फराहित काराति कोई त्या अत्यो पवित्तमा सम्बं निवेसन अद्विक्यरिपुण्यं दित्ता सन्त्रं वत तो प्रतिस्वा सम्बं निवेसन अद्विक्यरिपुण्यं दित्ता सन्त्रं वत सो प्रतिस्वा प्रता प्रति । राजा प्रत्य प्रकाशितवा सम्बं वनं सादित्वा गता प्रवि-स्वतीति आहत्व।

स्था ने विस्ता हिन्त हो त्यसं होना ये सानायं परिस्तवानिकं सीते पन्धिपता परिस्तुसं परिनिक्षिपता स्था गृहित्व हिन्तुकोव अरुपं उद्वापीत । मनुस्ता सरकराजनिवसनं सोधेवल हिन्तुपतिसं कवा उपरि तम्बेहि विकित्साव्य पुत्रमानि विकिर्दाल पुरुष्कामानि कोशांद्रला पुत्रं स्वता नवमाना विभवता सम्मानिष्कु—मो । हिस्सो तो पुरिसो विक्वस्थ मापेवल पञ्चतो आगन्धर्तिन यन्धिकं प्रतिस्थानि हिन्तिया अोलोकनमसम्पि न अकार्ति, सो अतिबय उलारसर्रो धितमा आगलसम्भो ताविसे पुरिसे रच्छे जनुसावले सब्ब रहे सुष्का प्रवि-स्वित राजानं करोमाति । अप सब्बे अमन्त्रा च नामरा च एकच्छता हुत्वा वोधिसत्त उपसङ्कित्तवा तक्कित्तवा के प्रविद्वा राज्यनर्राधिक हुने हमें रच्छे कोशिसिन्त्रित्वा तकस्तिलाराजानं अरुप्तं ।

सो बत्तारि अगतिगमनानि वज्जेत्वा दस राजधम्मे अकोपेत्वा धम्मेन रज्जं कारेत्तो दानादीनि पुञ्जानि कत्वा यथाकम्मं गतो । सत्या इम अतीत आहरित्वा अभिसम्बद्धो हत्वा इम गायमाह —

समितित्तिकं श्रनवसेसकं तेलपत्तं यथा परिहरेय्य । एवं सर्वितमनुरक्ते सतिया पत्ययानो दिसं प्रगतपुरवन्ति ॥

तर्य-समितितिकानित अन्तो मुखबट्टिनेखं पापेरवा सम्भरितं । अनवसेसकानित अनवसिञ्चनकं अपिरस्थाननकं कर्या । तेरसमानित पित्रवातितिनतेरापः । परिहरस्याति हरेय्य आदाय गच्छेय्य । एवं सिक्तमनरक्वेतित तेरातर्देश परिवादि । परिहरस्याति हरेय्य आदाय गच्छेय्य । एवं सिक्तमनरक्वेतित तेरातर्देश परिवादि । प

दुन्निग्गहस्स लहनो यत्थ कामनिपातिनो । चित्तस्स दमयो साधु चित्तं दन्त सुखावह ॥ सुदृहसं सुनिपुण यत्थ कामनिपातिन। तस्माः— चित्तं रक्खेष मेधावी चित्तं गुत्त सुखावहं॥ इदं हि:---दूरद्भगमं एकचर असरीरं गृहासय। ये चित्तं सञ्जामेस्सन्ति मोक्खन्ति मारबन्धना ॥ इतरस्स पन.-- अनबद्वितचित्तस्स सद्धमं अविजानतो । परिप्लबप्पसादस्स पञ्जा न परिपुरति॥ बिरकम्मद्रानसहायस्स पनः---अनवस्सृतचित्तस्स अनन्वाहतचेतसो । पुञ्जापापपहीनस्स नित्य जागरतो भयं।। तस्मा एतः -- फन्दनं चपल चित्तं दूरक्खं दूषिवारयं।

जर्जुं करोति मेघावी जमुकारोव तेवलं ॥ एवं जनु करोत्तो सिवसम्बुरूक्वे । पत्थयालो दिसं व्यातपुत्र्वतित हर्मास्य कायगतावितिकस्मष्टाने कस्मं आर्टीभत्वा अनमतर्गे संदारे जगतपुरूव दिसं पत्थेत्तो पिहेत्तो वृत्तनयेनेव सक वित्तं त्वक्वेत्याति अत्यो । का पनेसा विद्या नाम ?:— [३३६]

> मातापिता दिसा पुरुषा आचरिया दक्षिणा दिसा। पुत्तदारा दिसा पञ्छा मित्तामञ्चा च उत्तरा।

दासकम्मकरा हेट्टा उडं समणवाह्यणा, एता दिसा नमस्सेय्य अप्यमत्तो^र कुले गिहीति^र।

एत्य ताव पुत्तदारादयो दिसाति वृत्ता---

दिसा जतस्सो विदिसा चतस्सो उद्धं अघो दसदिसा इमायो, कतम दिसं तिट्टति नागराजा यमइसा सुपिने छब्बिसाणन्ति।

एत्य पुरत्थिमादिभेदा दिसाव दिसाति बुत्ता ।

आगारिनो अन्नदपानवत्यदा अव्हायिकानस्पि दिसं वदन्ति, एमा दिसा गरमा सेतकेतु ! यं पत्वा दुक्खी सुखिनो भवन्तीति ।

एत्य पन निष्वाणं दिसानि वृत्तं । इथापि नदेव अधियोतं । तं हि सर्थं विरागन्ति आदीहि दिस्सति, तस्मा दिसाति बुच्चति । कमसतमे पन ससारे केनिच बात्रभूवकनेन हृपिनेतिष अगतपुष्वताय अगतपुष्वा दिसा नामाति वृत्तं । त प्त्यपनेन कायगतासतिया योगो करणीयोति । एव सत्या निष्वाणेन देसनाकृटं गहेरना आतक समोधानिष । तदा राजपरिसा बुद्धपरिसा अहोति, रज्जप्यतकृतार्थे पन अहमेवाति ।

तेलपत्तकातकं ।

१. सी०-प्रतमत्वो । २. दीघनिकाय । ३. खदुन्तजातक । ४. सेतकेतुवातक ।

७. नामसिद्धिजातकं

जीवकञ्च मतं विस्थाति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो एकं नामसिद्धिकं भिक्खु आरब्भ कथेसि ।

पच्चपन्नवत्य

एको किर कुलपुत्तो नामेन पापको नाम । स्रो सासने उर दत्या पब्बजितो भिक्कृहि एहाबुसो पापक ! विद्वासुसो पापकारि बुल्बमानो बिन्तेसि लोके पापकं नाम लामकं कावकण्णिमूतिल बुल्बलि, अञ्ज्य मङ्गस-परिसयुत्त नाम आहरापेस्सामीति । स्रो आचिरयुप्त्रभाये उपस्वक्रमित्वा—भन्ते ! मस्ह नामं अवसङ्गलं अञ्ज्यमे नामं करिमाति आह।

अथ नं ते एवमाहंसु—आवुतो ! नामं नाम पण्णत्तिमत्त । नामेन काचि अत्यसिद्धि नाम नित्य । अत्तनो नामेनेव [३४०] सन्तद्दठो होहीति ।

सो पुनप्तुन याचियेव । तस्सायं नामसिद्धिकभाषो निनन्तुसङ्के पाकटो जातो । अयेकदिवसं धम्म-समाय सिसिस्मा निनन्तु कर्ष समुद्रापेषु—आवृत्तो ! अस्तो किर निनन्तु नामसिद्धिको मङ्गल नामं आहरा-पेतीति । अब सत्त्वा धम्मसभ आगन्त्या काय नृत्व निजन्तवे ! एतरीहं कथाय मानिस्मानि पुन्स्ह्र्ला इमाय नामाति वले न विनन्तवे ! सो इयोचे नामसिद्धिको पृथ्वेषि सो नामसिद्धिको येवाति वला अतीन आहि —

द्मतीतवत्य

अतीने तक्किसलाय श्रीमतत्त्रो दिसापामोक्को आर्किरयो हुत्वा पञ्चमाणवकसतानि मन्ते वांचित्र। तस्सेको माणवो पापको नाम नामेन । सो एहि पापक ! साहि पापकानि बुज्जमानो चिन्तेनिन्मरह नाम अव-महत्तलं अञ्ज्ञ नाम में आहरापेरसामीति। सो आर्किरय उपमहरूमित्वा—आर्किरय ! मरह नाम अव-महत्तल अञ्ज्ञाने नाम करोणाति आह ।

अथ न आचरियो अवोच—गच्छ तात । जनपदचारिक चरित्वा अननो अभिरुचित एक मदणल नाम गहेला एहि, आगतस्स ते नामं परिवत्तेत्वा अञ्जा नाम करिस्सामीति ।

सो साधृति पाचेय्यं गहेरवा निक्खन्तो गामेन गाम चरन्तो एक नगर गापृति । तस्य चेको पुरिसो सासकतो अरिको नाम नामेन । सो त ज्ञातिकनेन आलाहन नीयमान दिश्वा—किनामको नामेस पुरिसोति पच्छि ।

जीवको नामेसोति।

जीवकोपि मरतीति ?

जीवकोपि मर्गत अजीवकोपि मर्रात । नामं नाम पण्णत्तिमल । त्व बालो मञ्जोति ।

सो त कय मुखा नामे मञ्जलो हुत्वा अलोनगर पाविनि । अयेक दांति भीत अदरमान सामिका द्वारे निसीदांपत्वा रञ्जूया पहरन्ति । तस्सा च घनपालीनि नामं होनि । सो अन्तरवीविया गच्छन्तो त पोवियमान दिस्वा---कस्मा ६म पोथेयानि पुच्छि ।

भति दात न सक्कोतीति।

किम्पनस्सा नामन्ति ?

धनपाली नामाति ।

नामेन धनपाली समानापि भतिमत्तं दातु न सक्कोतीति ?

धनपालियोपि अधनपालियोपि दुग्नता होन्ति । नाम नाम पण्णत्तिमत्तं । त्वं पन बानो मञ्जाति । सो नामे मञ्कततरो हुत्वा नगरा निक्खम्ममण पटिपन्नो अन्तरामणे मणपूल्हं पुरिसं दिस्वा— अस्मो ! किं करोन्तो विचरसीति पुण्छि ।

मग्गमलहोस्डि सामीति ।

किम्पन ते नामन्ति ? पन्थको नामाति ।

पन्यकापि मग्गमल्हा होन्तीति ?

पत्यकोषि अपत्यकोषि मत्यमूल्हो होति । नाम नाम प्रण्यत्तिमतं । त्वं बालो मञ्जोति । सो नामे अतिमञ्कतो हुत्वा बोधिनत्तस्य सन्तिकं गल्या कि तात ! नामं रोचेत्वा आगतोसीति च बुत्ते—आचरिय ! जीवकाणि नाम मर्रान्त अजीवकाणि, धनपानियोणि दुग्गता होत्ति अधनपानियोणि,

पन्यकापि [३४१] मगम्भृत्हा होन्ति अपन्यकापि । नाम नाम पण्णत्तिमत्तं । नामेन सिद्धि नित्य । कम्मेनेव सिद्धि । अलं मय्ह अञ्जोन नामेन । तदेव मे नामं होतृति आह ।

बोधिसत्तो तेन दिटुञ्च कतञ्च ससन्देत्वा इमं गाथमाह — जीवकञ्च मतं विक्वा धनपालिञ्च दग्गतं.

जावकञ्च मतः । वस्याः धनपालञ्च दुग्गतः, पन्यकञ्च वर्ने भलहं पापको पुनरागतोति ।

तत्त्व पुनरावतीति इमानि तीणि कारणांनि दिम्बा पून आगनो। रकारो मन्धिवमेन दुत्तो। सत्त्वा इस अनीत आहरित्वा न भिवववे ! इदानेबेस नाममिद्धिको पुववेस नामनिद्धिको पेवानि वत्या जातकं समोधानीस। तदा नाममिद्धिको देवानि वत्या जातकं समोधानीस। तदा नाममिद्धिको इदानिपि नाममिद्धिको येव आवरियपिना बुद्धपरिमा। आवरियो पन अस्मेबाति।

नामसिद्धिजातकं ।

८. क्रटबाणिजजातकं

साथ सो पण्डितो नामाति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो एकं कूटवाणिजं आरब्भ कथेसि ।

वस्त्रवस्य

सार्वास्य हि हे बना एकतोव बणिज्यं करोत्ता मण्डं सक्टेनादाय जनपरं गत्त्वा सहसामा पच्चाव-मिस् । वेतु कुटवाणिजो विन्तिस-अयं बृह दिवसे कुमोवनंत वेव दुस्क्षेद्रयाय व किलतो इदानि कसतो वरं नानणरसिंह यावदत्यं सुमोवनं मुञ्जित्वा अविरोक्त मिस्सिति क्याहं इम सन्यं भण्डं तयो कोहुासे करता एक तस्य दारकान दस्सामि हे कोहुासे अलनो यहेस्तामोति । सो अन्य भाजेस्साम स्वै भाजेस्सामार्ति भण्ड भाजेतु न इच्छि । अय नं पण्डितवाणिजो अकामकं निज्योतेत्वा भाजपरेखा विहारं गत्त्वा सत्यारं विन्दिया करणदिस्त्यारो अतिपण्डचो ते कतो इयानत्वाणि चिरेत बृद्गुदृतं आगतोसीनि बुसे त पर्वास अगवतो आरो-

सत्या---न स्त्रो सो उपासक ! इदानेव कूटबाणिजो पुब्बेपि कूटबाणिजो येव इदानि पन त बञ्चेतु कामो जातो पुब्बे पण्डितीप वञ्चेतु उस्सहीति बत्वा तेन याचितो अतीतं आहरि---

म्रतोतवत्य

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो बाराणसिय वाणिजकुले निब्बत्ति । नामगहणदिवसे सम्स परिवतीत नामगकत्। सो वयपप्तो अञ्जोन वाणिजेन सिंढ एकतो हुत्वा वणिज्ज करोति । नस्स अतिपण्डितीति नाम अहोसी । ते बाराणसितो पञ्चीह सकट [२४२] सर्नोह भण्ड आदाय जनपद गन्दा विणिज्जं करवा लढनाभा पुन बाराणसि आर्गामस् । अय नेस भण्डभाजनकाले अतिपण्डितो आह—मया ढे कोहुमा लढन्वाति।

किकारणा?

त्व पण्डितो, अह अतिपण्डितो । पण्डितो एकं लद्ध अग्हति । अति पण्डितो द्वेति ।

ननु अम्हाक ढिन्नस्पि भण्डमूलस्पि गोणादयोपि समसमायेव । कस्मा त्व ढे कोट्टासे लढ् अरहसीति ? अतिपण्डितभावेनाति ।

एव ते कथ कट्टें त्वा कतह अकसु। ततो अतिपण्डितो अत्येको उपायोति चिन्तेत्वा अतनो पिनर एकाँस्य सुसिररुक्ते परेसेत्वा त्व अप्टेस, आगनेन आगिण्डितो है कोहासे तद्ध अत्हातिक वेदप्यावीति बच्चा बांधिमत्त उपसक्तिमित्वा सम्म । सम्हें हिम्ने कोट्टासान युत्तभाव वा अयुत्तभाव वा एसा रुक्त्यदेवना जानाति । एहि न पुण्डिस्तामाति त तत्व नेव्या—अप्प । क्ल्यदेवन । अस्ट्राक अट्ट पण्डिस्टाति आहं।

अयस्स पिता सर परिवत्तेत्वा तेनहि कथेथाति आह ।

अय्ये ! अय पण्डितो अह अतिपण्डितो, अम्हेहि एकतो बोहारो कतो, तत्य केन कि लद्धस्त्रन्ति ? पण्डिनेन एको कोहासो, अतिपण्डितेन हे कोट्रासा लद्धस्त्राति ।

बोधिमनो एव विनिष्धित अट्टं सुत्वा इदानि देवताभाव वा अदेवताभाव वा जानिस्वामीति पताल आहरित्वा सुनिर पुरेत्वा अग्नि अदाति । अतिपण्डितस्स पिता जानाय फुटुकाले अद्वरुकायेन सगैरेन उपरि आरुष्ट् साथ गहेत्वा ओलम्बत्तो भूमिय पतित्वा इम गायमाह.—

साधु स्त्रो पण्डितो नाम नत्वेव म्रतिपण्डितो,

म्रतिपण्डितेन पुत्तेन पनम्हि उपकृत्तितीत्।

तरय--साथु को पिकतो नामानि हमस्मि लोके पिथक्वेन समझानतो कारणाकारणञ्जा पुग्नको साथु सोमनो । प्रतिवर्धिकतीति नाममंति अर्थापिकतो कृष्टपुरिसी नत्वेव वरे । पनस्त्रि अवकृषिकतीति योकेन-सिरु आमो अब्बन्ध्यमकोव मुसोति अर्था । ते बन्नीप मण्मे निन्तवा समञ्जे बकोट्टासं गण्डित्वा ययाकम्मं रुता। सत्या पुज्येपेस इटबाणिजो सेवासि बत्वा इमं अतीतं आहरित्वा जातकं समोधानीसः। तदा कूटवाणिजो पज्बुपारो कूट-वाणिजोव, पण्डितवाणिजो पन अहमेवाति।

कृटवाणिजज्ञातकं।

६. परोसहस्सजातकं

परोसहस्सिम्य समावतानिस्त इदं सत्या जेतवने विहरन्तो पुयुज्जनपुच्छकं पञ्हं आरब्भ कथेसि । वत्य सरभञ्जजातके आवीभविस्सति । [३४३]

प च सुप सबत्यू

एकहिम पन समये भिक्क बम्मसभावं सिन्नपिता आवृत्ती ! दसवनेन सिन्नुत्तेन कथितं धम्मसेना-पित्सारिकुत्ते विवारित खागागीति वेरस्स गुणकवाय मितीदित् । सत्वा आगन्या काम नृत्य भिक्कवे ! प्रतरिह कथाम सिनिस्त्राति पुण्डिस्ता दमाय नामानि वृत्ते न भिक्कवे ! सारिपुत्ती इदानेव ममा सिन्नुत्तेन मासितं वित्यारित व्याकरीति, प्रवर्षित्र क्याकासि येवाति बत्वा अतीते आहरिः—

द्मतीतवत्य

सक्ति वाराणिसयं बह्मदते रज्यं कारेने बोधिसतो उदिक्वब्राह्मणकृते निव्यत्तित्वा तक्कियनायं सक्तियानि उपाणिहत्वा कामे पहाय इतिस्ववज्ञं पव्यजित्वा पञ्चानिभञ्जा अनुमापात्तियो निकात्तेवा हिमबन्ते निर्हाति । परिवारोणिस्स पञ्चतापससतानि अकेसुं । अस्यस केट्रनेवासी वस्तारतसम्य उपाड्य इतिमणं आवाय लोणिन्वत्येवनत्याय नतुस्तपय अगमाति । तदा बोधिसत्तस्स कालकिरियसमयो जातो । अय तं अस्तेवातिका आपरिष, कतरो वो गुणो तद्योति अधिमम पुण्डिस् । सो नित्य विज्ञ्यति वत्वा आमसरकहातोके निक्वति । बोधिसता हि अरूपसमापत्तिलाभिनो हृत्वापि अमञ्ज्ञुतत्ता आरुप्ये न निज्ञतित्त । अनेवातिका आवरियस्स अधिममी नत्यीति आलाहने सक्तार न करिए।

जेटुस्ते वासिको आगस्त्वा कहं आचरियोति पुच्छित्वा कालकतोति सुत्वा---प्रिप आचरियं अधिगमं पुच्छित्वाति आह ।

आम पुन्छिम्हाति ।

किं कथेसीति ?

मत्यि किञ्चीति तेन बुत्तं अथस्स अम्हेहि सक्कारो न कतोति आहंसु ।

जेट्टन्तेवासिको---तुस्हे आचरियस्स वचनत्थं न जानित्य, आकिञ्चञ्ञायतनसमापत्तिलाभी आचरि-मोति आह ।

ते तहिम पुनप्पूनं कपेलीपि न सर्हित् । बोधिसत्तो तं कारणं ज्ञाता अन्यवाला मम जेट्टलेवासिकस्स न सर्हित्त इसं तेर्चं कारणं पाकटं किस्सामीति बह्यलोका आगल्वा अस्समपदमस्यके महन्तेनानुभावेन आकासे ठत्वा जेट्टलेवासिकस्स पञ्जानुमार्व वर्णन्ती इसं गाधमाहः—

> परोसहस्सम्पि समागतानं कम्बेध्युं ते बस्ससतं ध्रपञ्जा, एकोव संस्थो पुरिसो सपञ्जो यो भासितस्स विजानाति श्रद्धान्त ।

तत्य--परोसहस्सम्पीति अतिरेकसहस्साम्य । समायतार्गन्ति सन्नियतितानं भासितस्स अत्यं जानितुं अपकानाना वालान । कन्देया ते बससत्ततं स्पष्टकाति ते एवं अत्यं वालाना अपञ्जा इमे बाला तारासा विय बससततिय अस्मतत्त्रान्ति रोदेया परिदेशेयां रोदानातापित अत्यं वा काण्यं नो वाला तारासा विय एक्षित्र ते रोदेया परिदेशेयां रोदानातापित अत्यं वा काण्यं नो वे जानेत्यानित रोदित एक्ष्यानं [३४४] बालानं परोसहस्ततीपि एको पीक्ष्यपुरिसो संस्थाने सम्यो वरतरीति अर्था । कोरियो सम्योक्त नियानि

्य महासत्तो आगापे ठितोव धम्मं देसेत्वा तापसगणं बुग्मापेत्वा ब्रह्मलोकमेव गतो । तीप तापसा जीवितपरियोसाने ब्रह्मलोकपरायणा अहेत्। सत्वा हमं हमम्बेदमं ब्राह्मरित्वा जातकं समोघानेसि । तदा जेद्रलेवासिको सारिप्सो ब्रह्मीस । महाब्रह्मा पत्र अहमवाति ।

?०. असातरूपजातकं

श्रक्षातं सातक्ष्येकाति इदं सत्था कृष्डियनगर उपनिस्साय कुण्डधानवने विहरन्तो कोलियराजधीतरं सुप्यवास उपासिकं आरक्स कथेसि ।

पञ्चपननवत्यु

सा हि तरिंम समये सत्तवस्तानि कृष्टिना गर्क्स परिहरित्वा सत्ताह मृल्हगव्मा अहोसि । अभिमत्ता वेदना वर्तिस् । ता एवं अभिमत्तवेदनामिनुत्राधि सम्मासम्बद्धी वन मो भवता यो एवरूएस्स दुस्वस्स पहा-लाप धम्मे देवेति । मृष्टिपत्रो वनत्स भगवहो सावकान हुई। यो एवरूपस्स दुस्वस्स पहाणाय पटिपत्नो । सुमुख वत निव्याणं यत्येव रूप दुस्त नत्यीति हमेहि तीहि विनवकीहि दुस्तं अभिवासिय । सा मामिकं पक्कोसापेदवा तं च क्षतनो पर्वात वन्दनमाननं च आरोवत्, सत्य मनिक गेमीस ।

सस्था वन्दरमामन सुत्वाव मृत्वितो होनु मृत्यवासा कोनियधीता सृषिती अरोगा अरोग पुत्तं विजाय-तूर्ति आह् । सह्वचनेनेव पन भगवतो सुत्यवासा कोनियधीता मृष्यिनी अरोगा अरोग पुत्तं विजायि । अयस्ता सामिको गेष्ठं पत्त्वा त विजात दिन्या अच्छित्यं वत मोति अतिविय तथागनस्मानुमायोति अच्छित्यिक्त्वचित्तः कातो अहोति । सुत्यवासापि पुत्त विजायित्वा सत्ताहं बुद्धयमुबस्स सङ्खस्म महादान दानुकामा पुन निमन्त-णत्याय त पेगीन ।

नेन स्रो पन ममयेन महामोपाल्नानमा उपहुक्ति बुद्धपुणी सङ्घो निमन्तितो होति । तत्था मुप्प-बानाय दातमा ओकामदात्रावयाय येरं तम्म मनिक पेनेत्या त मञ्जापायेला मत्ताह तस्या दान गोटणहीम मादि भिक्तमुद्धेत्व । मनमे पन दिवसे सुप्पवासा पुत मोबनीकुमार मण्डेत्या सत्थारञ्चेत्व भिक्तमुद्धज्ञ्च कदार्थित । तरिम्म पटिगाटिया सार्गिगुत्तयेरस्म सन्तिक नीते येरो तेन गदि—किच्चिते मे सिमनी-प्रानि पटिमन्यारं अकामि ।

सो—कृतो में भन्ते । [384] सुख स्वाहं सत्तवस्सानि लोहकुम्भिय विसन्ति थेरेन सद्धि एवरूप कर्यं कथेसि ।

सुष्पवासा तस्स वचनं सुत्वा सत्ताहजातो मे पुत्तो अनुबुद्धेन धम्मवेनापतिना सर्दि मन्तेतीति सोमनस्स-प्पत्ता अहोसि ।

सत्या---अपिनु सूप्पवासे [।] अञ्जोपि एवरूपे पुत्ते इच्छसीति आह् ।

सचे भन्ते ! एवरूपे अञ्जो सत्त पुत्ते लभेन्यां इच्छेन्यामेवाहित ।

सत्या उदान उदानेत्वा अनुमीदन करवा पकामि । वीचलीकुमारीपि सो मतविस्मकाने येव मानने उदार्वा पब्बित्वा परिपुण्णवस्त्री उपसम्य लिम्ब्ला पुञ्जावा लाभगयसम्पणनो हुन्या पर्गव उद्यादेखा अरहत पत्रा पुञ्जावनात अन्तरे एत्रप्राद्वान पार्गुण । अर्थेक दिवस भिक्त धम्मभग्य सिक्पित्वा-अत्युत्ती ! मीवित्ययेरो नाम एवरुपो महापुञ्जारे परिवत्यत्वयो गर्विद्यमधिवन्तानो ननवन्मानि लोह-सूनिय विस मनाह मृत्हराज्यभाव आपष्टिक अहो ! माता सहल दुक्त अनुभवि, विस्तुता रूम्म अकर्मृति कर समुद्राप्त्र

सत्या तत्यगन्या कायनृत्य भिमवये । एतर्राह कथाय मित्रिनिम्नानि पुन्छित्या हमान नामानि बुने भिमवये । सीवनिनो महापुरुटायतो च सानवस्मानि लोहकुनिमय निवासो च सत्ताह मुन्हरालभावय्यत्ति च अत्तना करकम्ममुनकाव, तस्ता मुण्यासायपि मत वस्मानि कुच्छिता गर्भपरिहरण दुम्बरूच सत्ताह मृनहरालपुरुवयन्त्र अनाना करकम्ममुनकोमानि वया नेहि याचितो अनीन आहरि—

१. स्या०---पटिसण्ठारं ।

मतीतवत्यु

अतीते वाराणसिय बहुदत्ते रज्यं कारेन्ते बोधिसत्तो तस्य अग्यमहेसिया कृष्श्विस्य पटिसस्यि गण्डित्वा वयणतो तक्किसलायं सम्बक्तिगानि उम्मण्डित्वा सितु अष्ण्यस्य रज्यं तत्वा धम्मेन रज्यं कारेसि । तस्ति समये कोसलमहाराजा महत्तेन बलेन आगल्या वाराणसि गहेत्वा तं राजान मारेका तस्तिव अग्यमहेसि अत्तनो अम्मणहेसि अकासि । वाराणसियन्त्राज्यो पन पुनो पितु मरणकाले निज्ञमत्वारेन पनायित्वा बस्ते संहरित्वा बाराणसि आगल्या अविदूरे निमीदित्वा तस्स रञ्जो पण पेसेसि—रज्यं वा वेतु युद्धं वाति ।

सो यद्ध देमीति पटिपण्णं पेसेसि ।

राजकुमारस्य पन माता तं सासन सुरुवा युद्धेन कम्मं नित्य सब्बदिसासु सञ्चारं पिच्छिन्दित्वा बाराणसी-नगरं परिवारेत, ततो बाक्वकभक्तपरिक्खयेन किलन्तमनस्सं नगरं विनाव यद्धेन मण्डिस्समीति पण्णं पेसेसि ।

सो मानु सावतं सुन्वा सत्तिविवानि सञ्चारं पिष्ठद्वित्वता नगर शिष्य । नागरा मञ्चारं अनभमाना सत्तमे विवसे तस्त रञ्जो शीसं गहेला [३४६] कुमारसा अवसु । कुमारो नगर पिषिल्वा रञ्ज गहेला आवुपित्योक्षाने यथानसम्म गतो, सो एतर्राहे वस विवसीन सञ्चार पिष्ठद्वित्वता नगरं शिष्वता गहितकम्मित्तस्त्रेन नतस्त्वसानि नोहक्तिम्म वित्तत्वस्त्रा नागरं शिष्वत्वस्त्रा नागरं शिष्वत्वस्त्रा नागरं शिष्वत्वस्त्रा नागरं हिम्सत्वस्त्रा नाम् विवस्त्रा स्ताह सुत्तृहाध्यभाव आर्थिज । यं पन सो पद्मतृत्तरपावश्ये लाभीनं अप्यो अवेष्यनित महादान दत्वा पत्थनं अकासि यञ्च विषस्त्रीवृद्धकाने नागरेहि सद्धि सहस्त्रापनक मुत्रदिष दत्वा पत्यनं अकासि तस्तानुभावेन लाभीनं अप्यो बातो मुण्यवात्रापि नगरं शिष्यत्वा गण्ड तालावि पेसित- भावेन सत्त्र तस्त्रानि कृष्धिता गर्भ परित्रत्वा सत्ताहं मुक्तृहाध्या जातानि । सत्या इमं जतीतं आहरित्वा अभिसावद्यो हत्वा इम गायमास —

ग्रसातं सातरूपेन पियरूपेन ग्रन्पियं, दृश्कं सुखरम रूपेन पमलमतिवस्ततीति ।

तत्व प्रसातं सातक्ष्येनाति अमपुरनेव मधुरपिक्यकेन । वसत्तवतिवत्तवोति अमात अणिय दुक्वान्त एतं तिविवस्थि एतेन सातक्यादिना आकारेन सतिविष्णवासवसेन प्रमत दुग्गन अतिवर्तात अभिभवति अञ्मो

इस मगनता बञ्च ने मातापुना इमिना गञ्जपरिहरण गञ्जवासमङ्कातेन असातादिना पुञ्चे नगर स्थनसाताबिप्पतिस्पत्तेन अक्तोलबटा बञ्च इदानि सा उपासिका पुनिष्ठ सत्तकस्तु एवस्प असात अध्यय दुक्खं मेबस्त्यूमूतेन पुत्तसङ्कातेन साताबिपतिस्पकेन अञ्चोलबटा हुचा तथा अवच, त सम्बस्पि सन्धाय बुत्तात्ति वेदित्वनं । सत्ता पण इसं धम्मदेसनं आहरित्वा आतकं समोधानीस । तदा नगरं रुप्यित्वा रज्जप्यतकृमारो सीवनी बहासि, माता सुप्यवासा, थिता पण बाराणसिराजा अहमेबाति ।

बसातरूपवातकं ।

१८ परोसतवग्गवरणना

१. परोसतजातकं

परोसतञ्जोप समागतानं भायेग्युते बस्ससतं ध्रपञ्ञा । एकोव सेग्यो पुरिसो सपञ्जो

यो भान्तिस्स विजानाति श्रस्यनि । [३४६]

इद जातक बत्युतो च बेय्याकरणनो च समोधानतो च परोसहस्मजातकसदिसमेव । केवलं हेल्य क्षाबेर-इस्ति पदमसमेव विसेसो । तस्सत्यो वस्सपतिष्य अपञ्चा क्षायेन्य श्रीलोकेय्यु उपधारेर्य्यु एव श्रोलो-केन्त्रापि पत अन्य वा कारण वा न गम्सन्ति, तस्सा यो भासितस्म अन्य जानाति सो एकोव सपञ्चा सेय्योति ।

परोसतजातकं।

२. प्रक्रिसक्जानकं

मो हुक्सकुट्ठाय अवेश्य ताणित इदं सुत्या जेतवने विहरन्तो एकं पण्णिकं उपासक आरब्भ कथेसि । पण्डपक्षकृष

सो किर सावस्थिवासी उपासको नानप्पकारकानि मूलकृष्णादीनि चेव लावकुम्भण्डादीनि च विकिक्ष्मण्डा की कि क्षेत्र । तस्सेका धीता अभिकृषा पासारिका आचारतीलसम्प्रया हिरोलप्पसमग्रागता केवल निक्चप्यहितमुखा । तस्सा समानकृतेस बारेख्याबाव आगतेस् मा चिन्तीस—हमिस्सा वारेखां वनति अयन्व निक्चप्यहितमुखा । तस्सा समानकृतेस् वारेख्याबाव आगतेस् मा चिन्तीस—हमिस्सा वारेखां वनति अयन्व निक्चप्यहितमला कुमारिकायसमे पन असित कुमारिकाय परकृतं गनाय मातापितृत्व गरहा होति । अस्यि कुमारिकाय परकृतं गनाय मातापितृत्व गरहा होति । अस्यि कुमारिकाय परकृतं गनाय मातापितृत्व गरहा होति । अस्यि कुमारिकाय कुमारिकायसमे नव्यक्ति वीमिसिस्सामि गनित ।

सो एकदिवसं चीतरं पण्डि गाहापेत्वा गण्णत्याय अरञ्ज गत्त्वा वीममनवमेन किनेस निस्सितो विय हुत्वा रहस्तकथं कदेव्या तं हत्ये गण्डि । शा गहितमत्ताव रोदन्ती कन्द्रनती—अमुनमेतं तात ! उदकतो अमिपातमावादितंत, गा एवक्न करोयानि आह ।

अस्म ! मया वीमसनत्थाय त्व हृत्ये गहिता, बदेहि अत्थिदानि ने कुमारिकाधस्मोति ? आम तात ! अत्थि स्या हि लोभवतेन न कोचि परिसो ओलोकितपञ्चीति ।

सो श्रीतर अस्सामेन्या घर नेत्या मङ्गल करवा परकृत पेतेत्या सत्यार बन्दिस्मामीनि गन्धमानादिङ्ग्यो अंतबन गल्दबा सत्यार बन्दित्या पुलेन्दा एकमन्त्र निमीदि । चिरस्मानतेमीनि च बुने तमस्य भगवनी आरोजीन् । सत्या-अपासकः ! कृमारिका चिर्च पृत्रा आचारसीनमम्पन्नान, त्य पन न इम उदानेव एवं बीमेमीन पृत्र्योप कीमीस वैवाति कर्त्वा तेन वार्षितो अतीन आहरि —

ग्रतीतयत्य

अतीते बाराणित्य ब्रह्मदने राज कारेन्ते बोधिमत्तो अरङ्गे रुक्यदेवना हुत्वा निव्वति । अथेको बाराणित्यं पर्णिकउपासकोति बत्युं पञ्चुपाश्वसदिसमेव । तेन पन सा वीमसनत्थाय हृत्ये गहितमत्ता धीता परिदेवमाना इमं गायमाह —-

> मो वुष्णकुट्ठाय्य अवेध ताणं सो मे पिता बुध्भि बने करोति, सा कस्त कन्यामि बनस्त सब्से यो तायिता सो सहसा करोतीति ।

तत्व-यो **दुण्कर्**राण भवेष्य ताणिक कायिकवेनसिकेहि दुस्वीहि कुट्राय तायिता परितायिता पतिट्ठा भवेष्य सो मे पता हुक्ष्म वने करोतीति सो मध्द दुस्वानिनायको विनाव दमीस्म ठाने एक्स्प मित्तदुव्यिकमम करोति, अतनो जाताय थीनिर योनिकत कान् मञ्ज्ञाति अत्यो सा कस्स करवासंगीन कस्त रोदामि, को मे पतिट्रामिविस्ततीति सीपेति । यो तायिता सो सहुना करोतीति यो मध्दं तायिना रिक्प्ता अवस्मयो भवितु अरहति सो शिता येव नाहिसिककार्य करोतीति जन्यो ।

भय न पिना अस्तातित्वा अम्म ! रिव्यतनामीति पुण्छि । आम तात ! रिव्यतो मे अताति । स्रोत घर तेव्या मण्डेव्या मङ्कल कत्वा परकूल पेसीम । सत्या इम धम्मदेमन आहर्तित्वा सच्याति पकसेचा जावक समोभातीय । सच्यपियोसाने उपासको सोतापतिकले पितिट्वाह । तदा पिताब एतरहि पिता, धीताव धीता, तै कारण पण्यवस्तती दिहरुक्कपदेवना पत्र अहर्तवाति ।

3 बेरिजानक

यत्य वेरी निवसतीति इद सत्था जेतवने विहरन्तो अनाथपिण्डिकं आरब्भ कथेसि ।

पञ्चपस्रवस्थ

बनायपिष्टिको किर भोगगार्च गत्त्वा आग^{च्छ}त्तो अन्तरासग्गे नोरे दिस्ता अन्तरासग्गे निस्तृं न वृत्तं सावित्येव गमिस्सामीति कोन गोगे पालेत्वा सावित्येव आगस्वा पुत्र विवसे विहारे गतो सत्त्व एतक्त्वं आरोवेक्सि । सत्या पुत्रेविंग गृहर्शत । पाण्डिता अन्तरासग्गे नोरे दिस्ता अन्तरा अवितम्बमाना अत्तनो वसनदानमेव गर्मिमति वत्या तेन याचितो अनीतं आहीर ——

श्रतीत वस्थ

अतीते बाराणसियं बहारते राजं कारेले बोधिसतो महाविजवो तेर्डी हुत्वा एकं गामकं निमन्तण भुञ्जनत्याय गरुवा पञ्चापक्रतो अन्तरासमं जोरे दिश्वा अन्तरासमं अविशिवाब वेगेन गोणे पाजेन्तो जतनी गेहमेंव जागत्वा नानगरवेहि भृज्जित्वा महास्यते निषश्चे। वोरान हत्वतो मृज्यित्वा निक्सबहान जतनी गेहमें आगोतिहीत उदानवेसेन इसं गायमाह—

> यत्य बेरी निवसति न बसे तत्य पण्डितो, एकरलं द्विरलं वा दृष्णं वसति वेरिसृति ।

तत्य-वेरोति वेरचेनतासमस्यो पुगानो । निवसतीति पतिहानि न बसे तत्प पण्डितीति सो वेरी पुगानो परिम अने पतिहिनो हृत्वा वर्मात तत्व पण्डिता पण्डिच्चन समझागती न वसेय्य । कि कारणाति ? एक रसंद्वित्तत्त्व वर्षां वसित वेरिसति वेरीन हि अन्तरे वसन्तो ण्काहिन्य दीहिन्य दम्बसेव वस्तीनि अस्यो ।

एव बोधिसत्तो उदान उदानेत्वा दानादीनि पुरुज्ञानि कत्वा येथाकस्म गतौ । सत्या इम धस्मदेसन आहरित्वा जातकं समोधानेसि । तदा अहमेत्र बाराणसीयेदि जहोसिनि ।

वेरिजातकं।

४. सिम्बिन्दजानकं

चतु किम चाइ प्रसास । ति इस सत्या जेतन ने निहरती एकं दुवन निम्म जारका करेति । तत्युं हेट्टा मितियन्द्रवाको बुत्तनमेने वित्यारेत्वन । इस पन जातकं कासमुबद्धकानिक । तिस्म हि काले उत्त्यनक विनविपत्या निर्देष प्रचमानी एकी नेरियको सत्तो भन्ते । किन्नुको पाप जकासिन्त बीधि-सत्ते पश्चित । क्षेत्रिकतो तथा इस्टिन्दरूच पापकाम करनित वस्ता इस गायमाहः—

चतुन्मि म्रद्ठज्यसमा म्रद्ठाहिषि च सोलस, सोलसाहि च बॉलस मित्रच्छं चक्कमासदो; इच्छाहतस्स पोसस्स चक्क भमति मस्यकेति।

तत्व--चतुष्केष भ्रद्धकानमानि समृहत्तरे चतत्सी विमानपेतियो मनित्वा ताहि असन्तुरहो अतिच्छताय परतो गत्वा अपरा अद्वाधितनीसीति अरवो । सेतपद्ववेषि एमेव नयो । सन्त्रिकं स्वकासावसीति एव सन्त्राभेत असन्तुरहो अतिच्छं अन अत्र इन्छत्तो पुरतो ताभं पद्येन्तो । ट्यानि गक्कमासदीति इदं उरचका रहोति । तस्त ने एव इच्छाहतस्य पोसस्ताति तष्ट्राय हनत्स उपहुतस्त नव । चक्क भनति स्वक्षेत पासाचचकं अयवक्रिन इसेतु हीस् सुरक्षार अयवक्त तस्त्र सन्त्रके पुनरपुन पवत्तनवसेन भमन्तं दिन्दा एवमाह ।

बत्वा च पन अननो देवलोकमेव गतो। सोपि नेरियकसत्तो अत्तनो पापे लीजे यथाकरमं गतो। सत्या इम धम्मदेसन आहरित्वा जातक समोधानेसि। तदा मित्तविन्तको दृष्यवभिवल, देवपुनो पन अहमेवािन।

मिलविन्दजातकं [३५०]।

५, दुब्बखकट्टजातकं

बहुम्पेतं वने कटठिन्त इद सत्या जेतवने विहरन्तो एकं उत्तसितिभिक्लुं आरब्भ कयेसि ।

पच्चेपच्च वत्य

सो किर सावित्यवासी एको कुलपुत्तो सत्यु अम्मदेसन सुत्वा पब्बवित्वा मरणभीरको अहोति । रति-हानिदाहानेसु वानम्स वा बीवन्तस्य मुक्बदण्डकस्य वा परवनत्स्य पिक्वबनुष्यदान वा सह सुत्वा मरणभय-तिष्वतो महारव रवन्तो पनायिन । तस्स हि मरितब्ब मयाति सतियत्तिष्य नित्य । सचे हि सो अह मरिस्सा-मीति जानेस्य न मरणवो भायेस्य, मरणक्षित्कम्पद्वानस्य पनस्य अमावितताव भायित । तस्स सो मरणभीरुक-भावो भिक्वबरक्के पाकटो जावो।

अप्रेकिवन प्रस्मतभाग भिन्नू कय समुद्रापेनुं आनुसो! अनुको तान निन्नु मरणभीरुको मरणं भागित, मिननुता नान अरुक मरा मरितन्वसिन मरणनितक सद्दान भानेतु बट्टती ति । सत्या आयन्त्वा काय नृत्य भिन्नु वे एराहि कथाय सामितिकाति पृण्डियः हास्ता नागीति नृते त निन्नु पन्तेतिस्ता सच्च किर त्व मरणभीरुकोति पृण्डिक्षता सच्च मन्तित नृत्ते भिन्नु में मा एनस्य भिन्नुनो अनत्तनना होय, नाय इरानेव मरणभीरुको पृच्नित मरणभीरुको येवानि नृत्या अतीत आहरि —-

मतीतवस्य

अनीने वाराणसिय बहुद्दते रज्यं कारेन्ते बोधिततो हिमबन्ते घनबदेवता हुत्या निक्वति । तस्य कालं बाराणगीराजा अतनोमङ्गलहीत्य आनजनारण विश्वसायेत् हत्यावरियान अदासि । त आलाने निक्वल बोधियान तोमरहूल्या मृत्यूम परिवारेत्या आत्रकारण कारिया । मो नं कारण कारियमानी बेदना अधिवामेनु अमक्कोल्नो आलानं मिन्दित्या मनुस्ते पलायेत्या हिमबन्त पाविति । मनुस्ता न यहेत् असक्कोत्ता निवानिम् । सो नत्य मरणभोकको अद्रोशि । वानवहानि सुस्ता करमालो मरणप्रवाहित कारणकार्योक्त सोध्य विद्यु

बहुम्पेतं बने कट्ठं वातो भञ्जति बुब्बलं, तस्स चे भावति नाग! किसो नन भविस्ससीति ।

तत्यायं पिण्डत्यो---यं एतं बुक्बलं कट्ठ पुरत्यियादिभेदो बातो अञ्ज्ञाति त इमीस्म वने बहुं मुलअं तत्य तत्त्व सर्विञ्जति सचे त्व तस्स भाषति एव सन्ते निज्ज भीतो मंसलोहितस्वय पत्वा किसी नृत भविस्साति इमीस्म पन वने तब अयं नाम नित्य तस्मा इनी पद्धाय मा भाषीति । [३५१]

एव देवना तस्स ओवार्द अदांति । सीपि तती पट्टाय निक्समें अहीसि । सत्या इम धम्मदैसनं आह-रित्वा सच्चानि पत्तासेत्वा आतर्क समोघांनीति । सच्चपरियोसाने सो भिनन्तु सोतापतिकने पतिदृद्धि । तदा नातो अर्थ निक्ष अहोति, रुक्तदेशा पन अहमेवाति ।

दुव्यलकर्ठजातकं ।

६ उदश्रनिजातकं

सकं वत मं जीवन्तन्ति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो यत्लक्मारिकपलोभनं आरब्भ कथैसि ।

पच्चप स्रवत्य

बत्यु तरसकितपानं चुल्लनारदकस्सपजातके आवीमिकस्सिति । तं पन भिक्खु सत्या सच्चं किर त्वं भिक्ख ! उक्कण्ठिनोति पुण्छित्वा सच्च भगवाति वसे—कत्य ते चित्तं पटिबद्धन्ति पुण्छि ।

ँ सो एकिस्सा थल्लकुमारिकाबाति आह ।

अय न सत्या—अय ते भिनक्तु ! अनत्यकारिका पुन्नेपि त्व एन निस्साय सीलन्यसन पत्ना पज्कायन्तो। विषयमानो पण्डिने निस्साय मुख लभीति बत्ना अतीतं आहरि —

प्रतीत बत्य

अतीत बाराणिय बहादमें रञ्ज कारेलीत अतीतवर्ष्युप्प चुल्लनारदकस्वपत्राक्त येव आवीर्भावस्वित । तदा पन बीधिसमी साथ फलाफले आदाय आगल्या पणसाल पविसत्वा विवरित्वा 'पुन चुल्लनापस एत-दवांच-—तात । त्व अञ्जोस् दिवसेम् दार्शन आहर्रास पानीय परिभोजनीयं आहर्रास आँगा करोसि अञ्ज पन एकप्रिय अक्टवा कस्मा इम्माओं पञ्जायनी निष्मोसीति ?

तान ' तुम्हेन् फलाफनस्याय परेस् एका इत्यी आगन्या प पनोभेत्वा आदाय गन्तु आरढा, अर्ह पत्त तुम्हेहि विस्तिज्ञितो गर्मिन्छामीति न गर्चिछ् । अमुकट्टाने पन ते निमीदाधेत्या आगतोम्हि, इदानि गच्छा-मह ताताति ।

बोधिमत्तां न सक्का एव निवनेतृन्ति बन्या तेनिह् तात । पच्छ एसा पन त नेत्वा यदा मञ्चमसा-दीनि वा बादिनुकामा भविस्तित सण्यिणावण्डुवादीहि वा पनम्सा अत्यो भविस्तित तदा इर्याञ्चदञ्चाहरानि तं किलमेस्स्ति तदा मस्ह गुण सण्टित्वा पर्गायत्वा इथेवाण्ड्येत्यामीनि विस्मार्कोम।

सो ताय सिंह मनुस्मेग्ध अगमासि । अथ न सा अत्तनो वमं गमेन्वा मंग आहर मच्छे आहराति येन येन अस्थिका होति त त आहरापेरि । नदा मो अयं मं अननो दाम विष कम्मकर विय व कन्या पीलेतीति पत्ना-यित्वा पितृ मिलक आगन्त्वा पितर बन्दित्वा टिनकोव डम गाथमाह —

सुखंबत बत मंजीवन्तं पचमाना उदञ्चती ।

चोरी जायप्पत्रादेन तेल लोणञ्च याचतीति ॥

लन्ध- मुख बत स अधिवानि नात । तुम्हाक गॉलकं म मुख जीवला । पश्चमानार्ति नागयमाना । गोलवमाना य मारितृकामा होति ते न पत्ममाना । उदक अञ्चलि एनायाति उदञ्जित । चारितो वा कृषतो वा उदक उत्पत्निकार होति । कृषतो वा उदक उत्पित्निकार्यत नाम । मा पन उदञ्ज्यनी उदक वित्र घरिकार येन पेतिस्का होति । ते ते आकड्वित थेयाति अप्यो । चौरो आयण्यवादेनाति भरियाति नामेश एकाचारी म मधुप्वचनेन उपला-पेत्र वित्र के नोणाञ्च गण्य अञ्चलित । स्वर्णात त सब्य साचित दास विश्व कम्मकर विश्व च करवा आहु-राणनीति तस्या अगुण कर्नोन ।

अप न वोधिसनो अस्मातत्वा होतु नात ! एहि त्व मेत्त भावेहि करण भावेहीनि चनारो ब्रह्मांबहारे आविविक्त, कमिणपरिकाम आविविद्य । मी न विरस्मेव अभिञ्जा च समापतियो च निब्बतेत्वा ब्रह्मांबहारे भावेत्वा सिंढ पिनरा ब्रह्मानोक निब्बत्ति ।

सत्या इम धम्मदेमन आहरिन्या सञ्चाति पकासेत्या जातकः समोधानिमः । सञ्चपरियोत्ताने सो भिक्खु सोतार्धानकने पतिद्वद्वि । तदा अुल्लक्मारिकाय एतर्राह श्रुल्लक्मारिका बुल्लतापमो उक्कण्टितभिक्खु अहामि पिना पन अहमेवाति ।

उदञ्चनिजातकं ।

७ सावित्तजातकं

साधु को सिप्पक नामाति इदं सत्था जेतवने विहरत्तो । एकं हमपहरणक भिक्क्षु आरक्स कवेसि । पब्ख्यन्नवत्यु

सो किरेको सावस्थिवासी कृतपुत्तो सामित्तकसिप्पे निष्कत्ति पत्तो। सामित्तकसिप्पन्ति सक्कराबि-पत्तिसम्पं कुकति । मो एकदिसस धम्म सून्ता सासने उर दला पत्तिक्षत्त्वा उपसम्परं निम । न पन सिक्काकामो न न पटिपत्तिसारको अहोमि । सो एकदियम एक दहर्गभक्त् आदाय अकिंग् वित गन्दा नहायित्वा नदीतीरै अद्वादि । तस्मि समये हे नेतहसा आकामेन गन्द्रानि ।

सो त दहरमाह---इम पश्चिमहंसं सक्खराय अक्खिम्ह पहरित्वा पादमृत्रे ते पानेमीति ।

इतरो-कथ पातेस्ससि । न सक्खिस्ससि पहरितृन्ति आह ।

इनरो-निदुनु ताबस्म ओरनो अस्ति परतो अस्तिहित न पहरामीति । इदानि पन न असन्त कवेमीति । तैनिक्क उत्तरारेहीति एक तिवय मक्यरं महेला अव्यानिका पंत्रतास्त्र तस्त्र ज्ञंतस्त पञ्जतो निर्मि । सा रुन्ति सङ्क्षामि । हमो परिस्मापेन अंविकटोल्ति निर्वानित्वा सङ्गोत् आर्थम । इतरो नीस्म स्वणे एक क्ट्रमस्त्रण सहेत्वा तस्म निर्वानित्वा अंविकेत्यस्य अपरभागे अस्ति पहिर । सम्बर्ग इनर्गाय अस्ति विनिक्तवा गाना । हमो महास्य चन्तो पादमुन्येय पनि । [३५३]

ननो तनो भिन्न आगल्वा गर्नाहत्वा अनुनुष्क्रश्चिक ने कर्नान्न मृश्यु मन्तिक नेत्वा भन्ते । इमिना इर कर्तान्त नमत्व आरोपितम् । रण्या भम्बन् गरिह्वा न भित्रव्यवे । इरानेवेम ध्वरिम मिर्ण कृमनो पृत्वीप कृमनोव अहोभीनि वन्दा अनीने आहोर —

अतीतवत्य्

अजीते वाराणिसय बहादसं रज्ज कारंते बोधिससो तस्य अम्ब्यां अहाँसि, तांस्य काले रञ्जा । पुरो-हितां अतिसुमरो होति सुमाणी। तांस्य कवेतुमारदं अञ्जा ओकासमंत्र न सानीत। राजा विस्तित करा नुवो गुनस्य वन्तुपब्छेदक किंग्न लिभ्सपोति। सो तत्रा रहुएत नवास्य एक उपारंदतो विकारित । तिस्य काले वाराणिसय एको पीठमणी। मन्वराविष्यनीस्प्ये निष्कित पानो होति। गामदात्का त रबक आरोपेखा आकर्डमाना वाराणीतिस्यादास्पृते एको विद्यासग्यो महानिग्रीसो अन्ति त्यानेव्या सम्पित्वारिक्या कार्याण कासीत दल्वा हित्यस्यक कर, असस्यक कराति वर्दास्त । सो सक्करा निर्माय्वा निर्माय निर्माय निर्माय निर्माय सम्पित

अय बाराणमीनाजा उच्यान मच्छल्नो न ठान पापुणि । उम्लारणभयेन सब्बे दारहा पनासिसु । तिसप्पीतत्वेष निपरिज्ञ । राजा निप्रोधमून पत्वा गर्वे निमित्रो पनान छिट्टाना छाण कवन्त्रवन दिस्या उल्लो-केसो सब्बेस पनान छिट्टामा दिस्सा—कैनोर्नाण एव कतानीनि पृष्टिद् ।

पीठसप्पिना देवाति ।

राजा इम निस्माय ब्राह्मणस्म वचनुरच्छेर कानु मक्का भविस्मानीनि चिन्नेत्वा कह भणे ! पीठसप्पीति पुण्डि । विचिनन्ता मुलन्तरे निपन्ने दिस्वा अय देवानि आहम् । राजा न पक्कोमापेत्वा परिस्म उस्मारेत्वा पुण्डि—अस्हारु सन्तिके एको मुखरबाह्मणो अस्य सण्विस्मासि न निरसङ् कार्तुन्त ?

नालिमत्ता अजलिंडका लभन्तो सक्खिस्सामि देवाति ।

राजा पीठमप्पि घर नेव्या अन्तीमाणिय नियीदापेत्वा साणियं छिद्द कारेत्वा ब्राह्मणस्य छिद्दािभमुख सातं पश्चारेत्वा नालिमता सुक्या अवलिष्टिक पीठमियास्य सन्तिके ठपापेत्वा ब्राह्मण उपट्ठानकाले आसत् तरिष्य आसने निसीदापेत्वा कव समुट्ठापेसि । ब्राह्मणो अस्त्री स्वे अस्त्री स्वार्टिक स्वेतं अस्त्री अपस्त सो पीठसप्पी बाणिष्श्रहेन एकेकं अजनिष्डकं मिक्ककं पवेसेन्तो विय तानुतलिम्हयेव पातेति । ब्राह्मणो आगतागतं नानियं तेलं वयेसेन्तो विय गिक्ति । सध्या परिक्ययं गॉमसू । तस्स ता नानियत्ता अजनिष्डका कृष्टिक्यं पविद्वा अइडाल्फिक्सता अहेसू । राक्षा तालं परिक्यीक्याच जत्वा आह—आचरिया । तुम्हे अवित्वास्ति में तुम्हे अवित्वास्ति में त्राहे अवित्वास्ति में त्राहे अवित्वास्ति में त्राहे अवित्वास्ति में त्राहे अवित्वास्ति मानियत्ता अजनिष्डको पिक्ता किन्ति न (३४४) जानित्य इतोदानि उत्तरि जीरापेतु न सिक्तस्त्य पाक्ष्य पिक्तास्त्र पिक्ता अस्त त्या जानां अरोपं करोधाति ।

ब्राह्मणो ततो पट्टाय पिहितम् बो विय हुत्वा कमेन्तेनापि सर्ढि अक्यनसीलो अहोसि । राजा द्रामिना मे कम्मलूचं कर्तात्त पीठसप्पिस्स सतसहस्सुट्टानके चतुस् विसास् चतारो गामे अवासि । बोधिसत्तो राजानं उपसङ्कीमवा—देव । सिप्पं नाम लोके पण्डितीह उमाण्डितन्त्र, पीठसप्पिना सालित्तकसत्तेनापि अय सम्मत्ति स्वानि जना इस गायमार्ड—

> साधु को सिप्पकं नाम प्रिंप वादिसकीदिसं पस्स कञ्जप्पहारेन लक्का गामा चतुहिसाति।

तत्थ--पस्स सङ्कप्पहारेनाति पस्स महाराज । इमिना नाम सञ्जस्स पीठमप्पिनो अजलिङका-पहारेन चतुहिसा चत्तारो गामा सदा अञ्जोस सिप्पान को आनिमसपरिच्छेदोति सिप्पग्न कथेमि ।

सत्या इमं धम्मदेसनं आहरित्वा जातकं समोधानीस । तदा पीठसप्पी अयं त्रिक्यु अहोसि । राजा आनन्दो पण्डितामच्चो पन अहमेवाति ।

सालित्तजातक। (३४४)

८. बाह्रियजातकं

सिक्केस्य सिक्किसतस्थानीति इद सत्था बेसानि उपनिस्साय महावने कूटागारसालायं विहरन्तो एकं लिच्छवि आरक्स कथेसि।

पञ्चपन्नवत्य

सो किर विच्छवी राजा सद्धो पत्रमो बुद्धमुक्त भिक्तुसङ्घ निमन्तेत्वा अन्तनो निवेसने महादान पव-त्तेति । मरिया पत्रस्य पूनङागण्यच्छा उद्धमातकनिमित्तसदिसा अनाकप्पसम्पन्ना बहोति । सत्या मन्त-किक्वाव्यानि अनुमोदन कर्तवा विहार गन्त्वा निषकुन ओवाद दत्वा गण्यकृष्टि पावित्ति । भिक्त् प्रमस्तभाय कर्ष समुद्वारेतु—आवुन्ता । तस्म नाम विच्छवित्यक्ता ताव अभिक्यस्स तादिसा भिग्या पूनङगप्यच्छा। अनाकप्पसम्पन्ना कर्ष यो नाय साँढ अभिरास्तीति ?

संप्या आगन्तवा कायनुत्व भिक्सवे ! एतनीह कवाय मनिनिम्नतित पुष्टिक्या इमाय मामाति बुत्ते न भिक्सवे ! एम इदानेव पुत्र्वेपि यूलमरीराय एव इत्थिया मढि अभिग्मीति क्वा तेहि याचितो अतीत आहीर.—

ब्रतीत बस्थ

अतीते वारागासिय बद्धादने रज्ज कारेन्ते बोधमन्तो तस्स अमञ्जो अहोसि । अपेका जानपदिःशी यूतमरोरा असकल्यसम्बन्धा भाने कृत्माना राजक्रमणन्स अविदुरंन गच्छमाना सरीरवलरूजपीतिवा हुत्वा निहादनाटकेन मरोर पटिच्छादेश्वा [३१४] निसीदित्वा सरीरवलरूज मुश्चित्वा खिप्पमेव उद्गासि ।

र्तस्य बार्ग वारायाचीराजा वारायांचेन राजकारण ओयोकेस्तो त दिस्ता क्लितीस अयं एजक्के अका-महाने सरीरवण्डन मुख्याना हिरीराच्य अपहाय निवासनेत्व परिच्छक्ता हृत्या सरीरवण्डन मोचेत्वा विचार उद्विता हमाव निरीराच्य मिक्नका । एतिमहा वच्यू विवाद मिक्नवित । विवादे पन वच्यूमिस एक्ते पुत्तो लक्ष्मवानो विसदी पुत्त्याचा भावस्याने । इस मवा अपगर्देशि कातु बहुतीर्ता । सो तस्सा अपरिच्य-हित्तसात्र कारण आपायेत्वा अपगरेशिक्षान अवस्ति । सा तस्स पिया अहीर्ति मानारा, न चिरत्सेव एक पुत्त विस्ति । सो परस्ता पुत्तो चक्कवती राजा अहीर्ति । बीधिसत्तो तस्सा सम्पाद विस्ताव वचनोकास लिभत्वा देत्र ! सिन्द्यतन्त्रवृत्तक नाम सिप्पक कस्मा न सिन्द्यतन्त्रव ? यत्र हि नामाय महापुक्त्या द्विरोत्तप्य अपहोस परिच्छक्षेत्राकारेत सरीरवल्डन कृत्माना नुम्हे आरायेत्वा एक्क्यं सम्पत्ति पत्ताति वस्ता सिन्दात्ववस्त्रवस्त्रवान वच्या कर्याच्यावस्त्राम्

सिक्खेय्य सिक्खितब्बानि सन्ति सच्छन्दिनो जना, बाहियापि सुहन्नेन राजानमभिराधयोति ।

तत्थ-सन्ति सम्बन्धिनिति तेषु तेमु सिप्पेसु सम्बन्धा वना अश्यियेव । बाहियाति वाहियजनपरे जाता सब्बह्व स्थ्यो मुलेमाति हिरोपात्य अपहारा पिन्छक्षेनाकारेन हम्न सुहमन्नाम । तेन सुहमेन । राजानस्विराधयोति देव अभिरायेख्या इम सम्पन्ति पताति ।

एवं महासत्ती सिक्लितब्बयुत्तकानं सिप्पानं गुगां कथेसि ।

सत्या इमं थम्मदेसन आहरित्वा जातक समोधानेमि । नदा जयम्पतिका^र एतरिह जयम्पतिकाव पण्डितामण्**वी पन अहमेवाति** ।

बाहियजातकं।

१. कुएडकपूर्वजातक

ययन्त्रो पुरिस्तो होतीति इदं सत्या सावत्थियं विहरन्तो महादूग्गतं आरक्म कथेसि ।

पस्चपन्नबत्ध

सो सत्यार परिपृच्छित्वा जानिस्सामीति सत्यु सन्तिक गन्त्वा तमत्य अरोचेमि ।

सत्था धन गहेत्वा वा अगहेरवा वा मञ्जनसानं पाँत देहीति आह ।

सो थन गरेन् आरिन । ननुस्मा दिगुगावरुग्गृगाबदुग्गा दिवसेन ददन्ता नव हिरञ्ञाकोटियो अदसु । सरथा अनुमोदन करवा बिहार गन्तवा भिक्खूहि वसे दिन्सते सुगताबाद दरवा गन्यकृटि पाविमि ।

राजा सायण्डसमये सहादुगन पक्तोमागोत्त्रा सेंद्विष्टानेन पूर्वीता । भिराल् धम्मसभाय कब समुद्रापेम् आवसा । सत्या प्रहार्ट्यानेत दिसं कृण्डकां अविष्ण्यती अपना विव परिमूचित्र महाद्रुगतीयि बहु पत् न मेट्ट्रिटान विभागिता महास्त्राप्त सीत्र बहु पत् न मेट्ट्रिटान विभागिता महास्त्राप्त सीत्र न मेट्ट्रिटान विभागिता स्त्राप्त सीत्र प्रहार्पत सीत्र सीत्र प्रहार्पत सीत्र सीत्र प्रहार्पत सीत्र सीत्य सीत्र सीत

प्रतीतवस्य

अनीने बारागासिय बह्यदसे रज्ज कारेले बोधिसत्तो एकस्मि एरण्डरूक्षं रुक्खदेवता हुत्वा निज्ञित । त्वा तीस्म गामके मनुमा देवनामक्रालिका होिन । अपेकस्मि व्यंग सम्पन्ने मनुस्का अत्तनो अत्तनो रुख-देवतान बिकटम्म अक्तु । अवेशे दुर्णाननुस्ती ने मनुस्क स्ववेदवता परिज्ञगाने दिवसा एकं एरण्डरूक्ष परिज्ञींग । ने गनुस्का अत्तने अतनी देवतान नानपकारानि मानानप्रिक्पेपनार्दीति चेव खज्जभोज्ज्जकाने ब आदाय मञ्जिष् । मी पन हण्डरू इज्जेव उत्तुन्केन च उदक आदाय मन्त्वा एरण्डरूक्षस्स अनिद्धे ठत्या विन्नेति, देवना नाम दिव्यवज्ञकानि लाइनित । [३४३] मण्ड देवता इम कृष्डकपूव न खादिस्सारि । कि इमिना कारणुन नोसीम अद्देश न लादिस्मार्भाति त्वाच निवर्ति ।

बाधिसतो सन्धविटपे ठरवा भो पुरिस ! सचे त्व इस्सरी भवेय्यासि मस्तू मधुरसन्जन्न दरेस्यासि त्वं पन दुग्गतो अहं तव पूर्व न खादित्वा अञ्चा कि खादिस्मामि ? मा मे कोट्ठास नासेहीति बत्ना इम गायमाह –

१. स्या०-महापेत्वा ।

क् ण्डकपु वजातकं

ययन्नो पुरिसो होति तथन्ना तस्स देवता, स्राहरेतं कणंपुत्र मा मे भागं विनासयाति।

तत्य —यथन्नीति यथारूपभोजनो । तयन्नाति तस्स पुरितस्स देवतापि तथारूपभोजनाव होति । श्राहरेतं कण प्रशित एक कृण्डकेन पक्कपुवं आनेहि मस्ह भाग मा विनासेहीति ।

सो निर्वातस्या बोधिमसः जोलोकेत्वा बलिकम्ममकासि । बोधिसत्तो ततो जोज परिमुञ्जित्वा— पुरिसः! त्व किमस्य म पटिजगमसीति आहं ।

दुग्गतोम्हि सामि [।] त निस्साय दुग्गतभावतो मुञ्ज्ञितकामनाय पटिजग्गामीति ।

भी पुरिस्तं । मा चिन्निय तथा क्लञ्ज्युम्म कनबेदिनो पृत्रा कता दम एरण्ड परिविद्याख्या निधि-कृम्मियो गीवास योव आहम्म टिना, त्व रञ्जो आचित्तमस्था मकरेहि पन आहित्त्वा राजकार्गा गीव कारेहि, राजा ते नुस्तित्वा सेट्टिट्टाच दस्तर्गीति बच्चा बोण्यनतो अलग्यायि, सो नथा अकामि । राजा तस्स मेट्टिट्टाच अदासि ॥ इति सो बोधपत निस्साय महासम्पत्ति पत्वा यथाकम्म मतो।

सत्या इम धम्मदेमन आहरित्वा जातक समोधानीम । तदा दुग्गतोव एतरहि दुग्गतो, एरण्डस्वस-देवता पन अहमेवानि ।

कण्डकपृवजातकं।

तत्य---सद्दृष्ट्गसीति सद्हेसि । अयभेव वा पाठो । पत्तियायसीति अत्यो । सिप्पिकामं सतं मत्योति एतस्स हि सिप्पिकान् सत्तिम्य नित्य । कतो कंससता इवेति हु कहापरणस्तानि पनस्स कलोयेवाति ।

बोबिसतो इसं गाव बत्वा गच्छ क्षांकृष्ण ! तव बाटक घोबित्वा नहायित्वा अत्तनो कस्म करोहीति विवास अत्तनो क्राम करोहीति विवास विवास

तदा सिगालो देवदत्तो अहोसि । रुक्खदेवता पन अहमेवाति ।

मिगालजातकं ।

४. मित्रचिलीजातकं

बहुबिन्ती अप्यविन्ती चाति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो हुं महत्लकत्येरे आरट्स क्येसि ।

पन्चपन्नबस्थ

ते किर जनपरे एकस्मि अरङ्गावासे बस्स वीसत्वा सन्य दस्सतत्वाय गांच्छस्मामाति पार्थस्य सञ्जेत्वा अग्र गच्छाम न्व गच्छमाति मास अतिरकामेत्वा पुन पार्थस्य सञ्जेत्वा तथेव साम पुन मासित एव असत्तो कसीनमावेत चेव तिवासद्वाने च आंक्वाय वयो मासे अतिरकामित्वा तथे तिवस्म तेरवत गरूवा सभाषद्वाने पत्रचीसमावेत स्थार गोंच्सा । अप जिक्त पुन्तिका चित्र ने अवसा । बहु सहात अकरोभामक कस्मा एव विशासित्वा तथा गोंच्सा । अप जिक्त पुन्तिका चित्र समित्वा सम्बाद्धित । अप सम्बद्धित प्राचित्र समित्वा सम्बद्धित पावटो जाती, समस्मावाधित तथा विश्वनत्वाव आंत्रीसमाव निस्ताय कर्षा सम्बद्धान ।

सत्या आगन्या काष्मुन्य भिक्कवं । एनगहि नवाय सिप्तान्याति पुन्छत्वा इमाव नामाति वृत्ते ते पक्कोसापेत्वा गच्च किर तुन्हे भिक्कवं । अनमा क्योनानि पुन्छिन्। सच्च भनेति वृत्ते न भिक्कवं । इरानेवेने अनमा, पृथोग अनमा चेव निवासहानं च सान्या सापेन्याति वन्ता अनीत आहोन —[५६०]

श्रतीतवस्य

अनीरे वार्रवासित इग्रुप्तरं रज्य कार्रेन्सं वार्यमामीनदिव नयो मच्छा अहेस् । बहुचित्तं अपिकासी सामिवानीति तेम तार्यामित है अर्ज्जाता अस्य मनुस्मयतं नाम मायाजो रापियां, केन्द्रा नाम्यवस्थ आसिस् । तथ्य मिनविस्त इनरे हे एवपाह स्थ मनुस्मयतं नाम मायाजो रापियां, केन्द्रा नाम्यवस्थ क्षात्रा स्थ मनुस्मयतं नाम मायाजो रापियां, केन्द्रा नाम्यवस्थ क्षात्र क्षात्र मच्छामानि
स्मयतं नाम अस्यवस्था । पण्य केन्द्रा निरंत ज्ञान निर्माम् । वस्य स्थापितती व सोचर पण्याप्ता पुर्मा
रण्याने । अस्य केन्द्रा निरंत ज्ञान क्षात्र क्षात्र क्षात्र स्थापित निर्माम । समिवानी पण्ड्या
प्राप्त । त्रात्र सम्याप्त स्थाप्त वान्य अस्यवस्थ ज्ञानक्ष्य विमाम् । मिनविन्ती पण्ड्या
प्राप्त क्षात्र अस्य स्थापित स्थापित विन्तान अस्यवस्थ ज्ञानक्ष्य स्थापित निर्माम् । मिनविन्ती पण्ड्या
प्राप्त क्षात्र स्थापित विन्तान अस्यवस्थ ज्ञानक्ष्य अस्य प्राप्त ज्ञानक्ष्य विनाम निर्माम् विनित्त स्थापित स्

बहुचिन्ती ग्रत्पचिन्ती च उभी जाले ग्रवज्भरे, मिन्नचिन्ती ग्रमोचेसि उभी तत्य समापताति।

तत्य—बहुक्तिनीतं बहुक्तितनताय वित्तवकबहुत्ताय एवं लढनामो । इतरेसूपि दीम् अयभेव नयो । उभो तत्व समागवाति मिनचिन्ति निस्साय लढनीविना तत्व उदके पुन उभोपि जना मितचिन्तिना सद्धि समा-गताति अत्यो ।

एवं सत्या इम यम्मदेसन आहरित्वा सच्चानि पनासैत्वा जानक समोषानेमि । सम्बपियोःसाने महत्त्वका भिन्छ, संातापितकने पतिद्वहित्त् । तदा बहुचिन्ती च अप्पचिन्ती च इमे हे अहेस् । मितिषाती पन अस्मेबानि ।

मिनचिन्तीजातकं ।

५. अनुसासिकजातकं

बायञ्ज्ञाननुसासतीति इद सत्या जेतवने विहरन्तो एकं अनुसासिकं भिक्क्तुनि आरब्भ कवेसि । पण्डपम्नबन्ध

सा किर सावित्यवासिनी एका कृतयीता। पब्बिक्त उपसम्पन्नकासतो पट्टाय सम्एक्शमे २०न्-युत्ता अमिसगिडा हुत्वा यत्य अञ्जा जिन्दिनियो [३६१] न गच्छिन्ति तादिसे नगरस एकदेसे पिण्डाय वरित। अवेरसा मन्तुमा पणीत पिण्डात होन्ता। मा नवनद्वाय बीस्थेता सचे द्रमीमा पटेने अञ्जािति पिनस्वित्यो विश्वाय वरित्वतित सप्त नामो पिह्यिक्सति, यवाएनं पेत्र अञ्जा नागच्छिन्त एव मया कात् बहुक्षेति विस्तेत्वा विश्वसुनी उपस्मयं नत्या—अस्कृति चच्छो हुन्यो, चण्डो अस्सो, चण्डो कृतकृतो चरित। सपिहस्वद्वानियो । मा तत्य पिण्डाय चरित्वाति, सिम्ब्लीन्यो अनुसामति।

तस्सा मुंखा एका भिष्युनीपित परेस पीत पत्त्वित्वा न ओलोकेमि । तस्मा एकस्मि देवसे तिम परेसे रिग्डाय वर्गत्वादी रेनेकं नेह पत्रिवित्तवा चड़ते मेडक्ते पहित्त्वा ऊर्गहरू सिन्दि । सनुस्सा बेनेत उद्दर्शास्त्रादेश क्रिक्त ऊरहिक एकती बन्धिया त भिष्युनित सन्बेगाराय भित्र्युनित उपस्या नियस्। सिच्छ तिसी बद त्र त्रात्रा विश्वपत्रियो अनुसासित्वा सर तस्मि परेसे चर्गती ऊर्गह सिच्यपेत्वा आगताति पश्चिस अकस। तस्मि ताय करकारणा न चिरस्तेव भिक्तमध्ये पाषट अहोति ।

अपनेतिवस धम्मसभाय निक्क् आवृत्ता । अनुमामिकांत्रकल्ती अञ्जा अनुमामिका रूप तिम परेसे बर्धाना चाडे मेण्डकेत कर भिन्यपिसीनि तस्मा अराणुष्य कर्षन । मत्या आमान्या काय तत्त्व भिन्नकृत्व । पृत्यकृति कारा गानि हात्रिका दुन्ति वादाया वास्ता तत्त्वे न भिन्नके । इशनेत पुर्वेशेसा अञ्जा अनुसा-स्तिवेत, सर्व पन न बनति निक्काले दुक्षपेत्र अनुसर्वाति कर्षा अतीर आहि —

ग्रतीतवत्यु

अतीते बाराणुसियं ब्रह्मदत्ते रज्ज कारेन्ते बोधिसत्तो अरञ्जो सक्णयोनिय निव्यक्तित्वा वयपानं सह् खुबेहुक्के हुत्वा अनेस्मह्त्णुसतपरिवारो हिम्मदत्त पार्वितः । तस्म तत्य बसनहां एका चल्टा मह्त्रिक्का मह्नादत्तित मा गत्वा गोषद प्रकृति । सा तत्व स्टब्टेहि तिन्तानि वीहिम्पावीवादीति हिस्सिट स्टब्स्टिट इस् परेस अञ्जो सक्णा तपाव्यक्ति तया करिस्सामीति विनत्तेत्वा सक्णायद्यस्य ओवाद देति । महावत-निम्हास्योगो नाम वर्ष्णाटम्यो, हरिवमस्यादयो चेव चण्डगोगमृत्यनावीतीन चष्टज्यगित, हरुवा उपवित्ति। न सक्का होति, त तथा प्रत्यक्ति । सह्युवार्ड्या स्वासा अनामित्राद्येव नाम अक्षानी

सा एकदिवस बत्तिमहामणे बरन्ती महामणे बेगेनाणेच्छन्तस्य यानस्स सद् गुरवा निर्वत्तिः हा अं.सः-केःबा दूरे तावाति चरित्तवेव । अय न यान बांतवेगेन सीधमय सम्पपुणि । सा उद्घात् नासिक्य । नवेन दिवा ख्रिन्दिरवा नारी । महाजेद्रहेलो सक्गुणे समानेनोत ज अदिन्या अनुवासिक्य निर्द्याति उपयोग्धय नरित [६२२] आह् । सक्गुण उपयारेन्तात महामणे हेथा ख्रिक्त दिक्ता मक्गुणेद्रहकस्य आरोचेस् । सक्गुणेक्ट्रको सा अञ्ज्ञा सक्गुण उपयारेन्तात महामणे हेथा ख्रिक्त दिक्ता मिन्नाणेद्रकस्य आरोचेस् । सक्गुणेक्ट्रको

यायञ्ञामनुसासति सर्वं लोलुप्पचारिणी, साय विपक्षिका सेति हता चक्केन सालिकाति ।

तत्त्व—<mark>यायश्यमनुसासतीति य</mark>कारो पदसन्धिकरो। या अञ्जो अनुसासतीति अस्यो। सर्य सर्यति **। हता चश्केन सांत्रकाति** यानचक्केन हता सालिका सक्शिकाति ।

सत्या इप धम्मदेसनं ब्राहरित्वा जातक समोघानेसि । तदा अनुसासिका सकृणिका अय अनुसासिका भिक्कृती ब्रहोसि, सकृए।बेट्रको पन ब्रहमेबासि ।

धनुसासिकजातकं ।

६. दुव्यचजातकं

स्रतिकरमकराचरियाति इद सत्या जेतवने विहरन्तो एक दुब्बचिमक्ख् आरब्भ कथेसि ।

परस्पन्नवत्य्

तस्त बत्यु नवकिनशने गिरुक्तवातके आयोभिवस्तित । सत्या पन त भिक्कु आमन्तेत्वा भिक्कु । न त्व इदानेव दुश्ववी पुश्चिम दुश्ववी । दुश्चवभावेनेव पश्चिनान ओबाद अकरोन्तो सत्तिप्पहारेन जीवि-तक्षवयं पनोसीति बत्या अनीत आहिरि ---

ग्रतीतवत्य

जनीने बाराणिमय ब्रह्मदन राज कारेले बोधिसमी लक्ष्यनगटक्योतिय पटिसाँख गहेत्वा बयणसो पञ्जाब उग्राक्तमतो अत्रोति । मो रृजम्म तत्कस्य सर्तिके सनिमक्ष्यनित्रण सिक्क्षत्वा आवर्षियस सर्कि स्थि दर्भमेलो विवरति । आवर्ष्यां गत्म्य बतुष्ठञ्जो व मतीन लक्ष्यनीम्प जानानि न पञ्जम् । सौ एक-विवस एकाम्म गामके मिल्य स्सेलनो नामन्यमनो एञ्च सत्तियो लक्ष्यस्थाभीति पटिश्रविश उपेति ।

अथ न वोश्विमत्तो आह---आचरिय । स्व पञ्चमनिलङ्ग्यनसिप्प न जानासि, एक सर्ति हर । सचे लङ्ग्यिस्पमि पञ्चमण्य मनिका विदरो परिस्मामीत ।

मो मृरामदमननार त्व हिमस्य पमासान जानांमीति तस्स वचन अनाविधित्वा चतरसो लड्डपेत्वा पञ्चनायम् तन्त्रा १९५६ स.क.१७६ विश्व अनुनो पिटेवमानो निपरिज्ञ । अचन बोधिसत्तो पण्डितान वचन अकत्वा इम स्वान प्रामिति इस ग्राधमार — स

श्रतिकरमकराचरिय! मय्हम्पेत न रुच्चति,

चतुत्ये लर्ङायत्वान पञ्चमायसि ब्राबुतोति ।

न्य--प्रोक्तन्यकराकराजी स्वादित । अत्रव त्व अनिकर अकरि अतनी करणानी अतिरेककरण अकरीनि अत्यो । सहस्वेत न रुवसीति सार्व अनेवासिकत्यपि नमानस्म एन नव करणा न रुच्चति, तेन ते अर पठन्येत करोगिन्त रीति । अनुत्ते सद्वराधनाति चतुन्ये मेनिकने अपितन्य वाना नद्वस्थिता पठ्यसार्वास आहुनीति पण्डिनान चन्त अण्डलती इदानि पठ्यसाय सनिया आबुतीसीति ।

इद वन्त्रा आवरिय सत्तिनो अपनेन्त्रा कत्तव्ययुक्तक अकासि । सत्या इम अतीत आहरिस्त्रा ज्यातकं समोधानेमि । नदा आवरियो अय दुव्यचो अहोमि । अन्तेवासिको पन अहमेवाति ।

द्रवचनातकं ।

७. निक्तिरज्ञानकं

धक्कुमाता प्रतिबलताति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो कोकालिक आरब्भ कथेसि ।

पच्चपन्नवत्य

तस्स बल्य नेरमनिपाते तक्कारियज्ञातके आवीभविस्सति । सल्या पन न भिवस्ववे ! कोकानिको इदानेब अत्तनो बाच निस्साय नटठो, पृथ्वेपि नटठो येवाति वत्वा अतीतं आहीर ---

श्रतीतवस्य

अतीने बारागृष्ठियं बद्धादने रज्जं कारेने बोधिमत्तो उदिश्चबाद्धागुक्नं निव्यन्तित्वा-वयपत्तो तथक-मिलायं स्ववः मिलामि उपाणिकृत्वा कामे पद्धाय इमिपकाज्ञ पश्चित्वाचा पञ्चामिञ्जा अट्ठ समापत्तियो निक्वत्ति मि । हिमबत्वरदेसे सख्यो इसिरागृगो स्वित्यतित्वा त ओवादाविष्य कर्त्वा परिवारेमि । सां पञ्चन्न इसिरतान ओवादावरियो हत्वा भ्रानकीलाय कील्या हिमबत्ते विम ।

तदा एको पण्डुरोगी तापसो कुठारि गहेत्वा कट्ठ कावित । अवेको मुक्रग्तापमो तन्स मन्तिके रिसी-दिस्वा इथ पद्गार देहि इच पहार देहीति त तापस रोसेसि । सो कृज्यित्वा न दानि मे त्व रास्कालनकमिप्प सिक्सापनकाचरियोति तिष्ठ कुठारि उक्विमित्वा एकपहारतेव जीविसक्वय पार्थमि । वोधिमत्ता तस्स सरोर-क्रिक्य कार्रोध ।

तदा अस्मानो अबिहुरे एकस्मि बीमकपादे नितिनो बयनि । मो साथ पान बीमकमन्यके ठस्वा महाबिस्तित बस्मि । न मुल्ला एको लुक्को तिनिरंज यवितव्यक्ति सहसञ्ज्ञाय गन्या न बीम्ब्या आदाय गर्ता। बीधसत्ती तस्म मह अनुगन्नी अनुकट्टाने तितिरो वयति, किनुनो तस्म गदो न मवर्गीन नापमे पुष्टि । ने तस्स तमन्य आरोपेम ।

स्रो जमोपि तानि कारगानि ससन्देत्वा इमिगगमज्ञे इम गाथमाह --[३६४]

ग्रच्चुग्गता ग्रतिबलता ग्रांतवेलं पभासिता,

बाचा हनति दुम्मेथं तिसिरं वातिवस्सितन्ति ।

तस्य--प्रच्याताति अति उपाता । श्रतिबन्तताति पुनपुन भासमानेन अतिवलसभावा । श्रति-बेसं पभासिताति अतिवकत्त्वेना पमाणातिकस्मेन भासिता । निसिर वातिबस्सितीन यथा तिनिर अतिवस्सित हनति नवा एवरूपा वाचा दुस्मेघ बालपुग्यन हन्तीति ।

स्व बोधिमतो इनिगणन ओवार दश्या चनारो ब्रह्मांवहारे भावेत्या ब्रह्मांनक्षरायागी अहोमि । सत्वापि न—पिक्कते । कोशांनिको इदानेब अनतो बचन नित्माय नट्ठो, पुत्रेपि नस्तियंशांति इस पम्म-देवन आहरित्वा बानक समीरानेसि । तदा दुश्यचनापमो कोकांनिको अहोमि, इसिगरो। बृद्धपरिसा । गए-सत्या पन ब्रह्मिवांति ।

तिसिरजातकः।

८. वहकजातकं

नाचिन्तयन्तो पुरिसोति १द मन्या जेतवने विहरन्तो उत्तरसेट्रिपूत्त आरब्भ कथेसि ।

प्रच्यस्य

साबित्यव किर उनर्भर्ती नाम अहाँमि महावित्रवा । तस्म भरियाय क्षिद्धय एको पुञ्जाब सत्तो ब्रह्मलोका बबित्वा परिमरित गहेरबा वयणनो आंभ्रक्तो अहाँसि ब्रह्मयणी । अवेकदिवस मावित्यय किन-क्षद्धणो नवस्त्रे दुर्दे मध्यो नोको नगलातींनास्त्री बर्डोमि । तस्स सहायका अञ्जे मेहिषुता सप्यापितका अहेस् । उन्तरसिद्धिपुतस्म पन दीयरन ब्रह्मगोक बसितना क्लियेस् चिन्न न अल्लीयति । अयस्स सहायका उन्तरसिद्धिपुतस्मापि एक डीन्थ आनेत्वा नक्सन कीसिन्मामानि सम्मत्तियवा न उपसदक्किप्सा—सम्म ! दमीस्म नगरे कीनकरीतवारख्यो पुरुठो तुरहीम एक इन्थि आनेत्वा नक्सन कीसिस्सामानि स्राह्म

प्रतीतवस्थ

न मनश्यो इिश्यानि च नुने १ न पुरुपुत निर्वाभ्यत्वा सम्पटिच्छायेत्वा एक वृष्ण्यासि सरबालककार-पार्विक्त कर्या तस्य पर रेवा स्व मेट्रिइतम्य मानकः गव्हानि सयनपर पंत्रेखा निक्षमित्रु। त सय-नवर पार्विष्ठमा पिष्ठपुत्तो नेव खांताकेति नात्वानि । सा चित्रमित अया एक स्थानपत्त वक्तमित्रसम्पर्धस्य स नेव आंत्रोकेति नात्वानि इराति न अनता इंग्युत्तकात्वानाय आंत्रोकारेस्सामीति इण्यिनीकारे दस्मेली पहरूक्त कार्यक अम्यक्ते विविन्त्वा मिन अका्म । मेट्रिपुत्तो आंत्रोकत्वा दन्तिके निमित्त गण्डि । अपस्स अद्धिक-स्वञ्जा उत्याजि । स्वरुत्तिथन सर्थार बर्धुकत्वर प्रतानका विवा पञ्जाति । मो नम्म परिच्य दत्या गच्छाति उत्याजिम । १९११

न नस्म घरा ओतिष्ण एको इस्मरा अन्तरनीयिव दिखा परिव्यय दल्बा अन्तरो घर नेसि । सत्ताहे बीनियनं नक्ष्यन ओसि वरणदासिया माता थी रुआगवन अदित्वा मेहियुनान सन्तिक गल्बा कह सानि पुण्छि। ने उत्तरमेहिरानस्म पर गल्या कह नानि पुण्छिस ।

नडल्बरायेव तस्मा परिव्यय दत्या उथ्योजेसिन्ति ।

अयस्मा माता रोडली धीतर मे न पस्मामि धीतर मे समानेषाति उत्तरमेहिपुत्त आदाय रञ्जो मस्तिक अगमासि । राजा च अट्ट विनिच्छितस्यो-—डमे ते मेहिपुत्ता बष्णदाप्ति आमेरेबा अदस्ति पुरिछ ।

आम देवाति ।

इदानि मा कहरित ?

न जानामि, तबसाञ्जो व न उथ्याजेसिन्ति ।

इदानि त समानेत सक्कोसीति ?

न सक्कोमि देवाति ।

राजा--सबे समानेत् न सक्कोति राजासमस्य करोबाति आह ।

अय न पञ्जाबाह बन्धित्वा राजागा कॉरम्मामाति गहेत्वा पक्कीमसु । सेहिपुत्त किर वणावासि समा-नेत् असक्कीन्त राजा राजागा कारेतीिंग सकतन्त्रग एककोलाहत्वमहोसि । महाजनो उरे हस्ये ठथेला कि नामेत सामि । अतनो वो अनन् च्छविक न दोन्न परिदेवति । सेट्ठीपि पुत्तस्य पच्छतो पण्डितो परिदेवन्तो सच्छति । मेहिपुत्तो चिन्नीस इस मध्य एवश्य इक्त अगारं वसनभावन उपान्न, सचे इतो मुच्चिस्सामि महा-गोतमसमासस्यद्वस्य सन्तिके पच्चित्रसामीति ।

सापि खो वण्णवासी त कोलाहलमद् मुन्बा कि सद्दो नामेसोति पुष्कित्वा त पर्वात्त सुत्वा वेगेन ओत-रित्वा—-उस्सर्य उस्सर्य सामि ! म राजपुरिसान दटठ देशांति अत्तान वस्सेसि । राजपुरिता तं दिश्या मातर पटिण्डाभेरवा तेष्ट्रिपुल मुज्यित्वा पर्कामसू । सो सहायपरितृतोव नांद गल्या ससीस नहायित्वा गेह गल्या मृतपातरासो मातानिपरी पम्बज्य अनुजानपरवा चीवरसारके आयाय महत्तेन परिवारेत सल्यु सत्तिक गल्या विस्तवा पब्बज्य पावित्या पव्यज्जन्य उपसम्पदन्य निभत्या अवि-सद्गुक्तमाद्वानो विपस्सन वहवेत्या न विरस्सेव अरहत्ते परिद्वासि ।

जातकटठकदा

अपेकदिवसं पम्मसभायं सिम्नपतिता भिक्क् —आवृत्तो ! उत्तरसिट्टिशुतो अत्तनो भयं उप्पन्ने सामनस्स गृह्यं बानित्वा इमम्हा दुक्वा मुक्कानानो पञ्जिबस्सामीति चिन्तेत्वा सुचिन्तितेन मरणभूतो चेव पब्बिवितो च अग्यफकं पैतिद्वितीति तस्स गृह्यक्व कथेतु । सत्वा आगत्त्वा काय मृश्य भिष्यक्व ! एत्रिक्टि कथाय सिम् सिक्नाति पुण्कित्वा इमान नामाति बुने निकस्तवे । उत्तरिद्वान अन्तर्भ ये उप्पन्ने इमिना उपायेन इमम्हा दुक्बा मुच्चित्सामीति चिन्तेत्वो मरणभया मुत्तो अतीते पण्किशापि अत्तनां भयं उप्पन्ने इमिना उपायेन इमम्हा दुक्बा मुच्चित्सामीति चिन्तेत्वो मरणभयत्वक्वतो ग्राच्यियवित्ति वर्षा अतीत आहि — (३५६)

ग्रतोतवस्थ

अतीते बाराग्सिय बह्यदते रज्ज कारेन्ते बोधिसत्तो चृतिगिटसिधिवसेन पिश्वसत्तो बहुकयोनिय निम्बत्ति । तदा एको बहुकत्तूको अरङ्गे बहु वट्टके आहिंग्या गेहेठगेया गोचर दखा मृते गहेखा आगतान हल्पेहकके विक्किण्तो जीविक कर्मति । सो एकदियस वहति वटटकेहि सद्धि बोधिसत्तिंग गहेखा आनेषि ।

बोधिसती चिन्तेसि — सबाह द्दीमन दिश्रगोवर पानेथञ्च पांत्र्याञ्चलमामि अय म गहेरवा आगतान मनुस्तान तस्ताति । सवे पन व परिसृष्टिक्सामि अह मिनासिस्तानि । अव म मिनात दिश्वा मनुस्ता न पिक्ससिति, एवं से सोस्य प्रविद्यानि । इम उपाय कांत्रसामिति । सो तथा करोनती मिनाधिता अधिवान मन्त्रसा न अहीं । मनुस्तान दिश्वा न पाँच्ल्य । जुदको बोधियत्त ठारेला वेसेस् वट्टकेस परिक्शीनोस् परिन्द्यानि । स्तित्र कांत्रसामिति । अवस्य प्रमानाभाव जाला बोधियत्ती पत्त्रसामित करात्रसामित अधिवान आग्रह्या । अवस्य प्रमानभाव जाला बोधियत्ती पत्त्रसामित अपायना अञ्चल वांत्रियत्त्रसामित करात्रसामित अधिवान पत्रसामित अधिवान पत्रसामित व्यवसामित अधिवान स्वामित विद्यान प्रमानि विद्यान पत्रसामित अधिवान । वीधियत्ता अधिवान अधिवान

नाचिन्तयन्तो पुरिसो विसेसमधिगस्छ्रात, चिन्तितस्स फलं पस्स मसोस्मि वधवन्थनाति ।

तत्त्वाय पिण्डत्यो । पुरिसो दुक्ब पत्वा इमिना नाम उपायेन इमम्हा दुक्खा मुच्चित्सामीति ब्रांचन्त-वन्ती अतनी दुक्खा मोक्सस्कात विसेसं नाधिगच्छति । इदानि पन मया चिन्तितकस्मस्य फलं पस्म । तेनेव उपायेन मुलोस्य व्यवस्थना मरण्ती च वन्यनती च मुलो अहन्ति ।

एव बोधिसनो अत्तना कतकारण आचिक्छ ।

सत्या इम धम्मदेसन आहरित्वा जातक समोधानेसि । तदा मरणमूत्तो बहुको पन अहमेवाति ।

बट्टकजातक ।

९ अकालराविजातकं

व्यमातापितरि संवद्वोति' इद सत्था जेतवने विहरन्तो एक अकालरावि मिक्खु आरब्भ कथेसि ।

सी किर सावित्यवासी कुलगुनो सासने पत्र्यक्तित्या बत्त वा सिनखं बा न उमाण्डि। सो इमर्रिम काले मया वत्त कातल्य, इमरिम काले उपहातल्य, इमरिम काले सम्भातिकव्यनि न जानाति। पठमयाभिष् [३६७] मण्डकपवामीप पन्धियनवामीप पन्दुव्यनुबन्धापेय महास्व करोति। भिनक्तृ निह न लभन्ति। धम्मसमाय भिन्दु—आवृत्तो । अनुक्तिभन्तृ एवरूणे रात्नतासनं पत्र्यक्रिया वा सिन्धल वा काल वा बक्ताल वा न जानातीति तस्स अगुग्कथक्षेत् । अथ्या आमन्त्या कायनुष्य भिन्मल्य । एतन्हिक्याय सिन्धलिखाति पुन्धिल्य इस्ताय मार्गाति वृत्ति क्रिया स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त मार्गाति वृत्ति क्रिया स्वप्तिक्षाति पुन्धिल्य इस्ताय मार्गाति वृत्ति विकास क्षेत्र । अथ्या आमन्त्या प्रवास वृत्ति क्षात्र साव सिन्धलिखाति पुन्धिल्य । इस्ताय मार्गाति वृत्ति विकास क्षेत्र स्वाप्त मार्गित वृत्ति विकास क्षेत्र स्वाप्त सावित्य । कालाकाल अञ्चाननमावन गार्गाय वित्या विज्ञानिक स्वाप्त सावित्य । कालाकाल अञ्चाननमावन गार्गाय वित्या विज्ञानिक स्वाप्त सावित्य ।

प्रतीतवत्थु

अनीन वारंगासिय बद्धारने रुउन कारेनो बोधिसतो उदिल्लबाह्याणुक् निक्वसित्वा वयापत्तो सब्ब-ते रुप्त पर नः'वा बारंगासिय दिसापामिकको आचरियो हुत्वा पञ्चतते मारणे निष्ण वाचित्त । तेस मारण-वान एको कार्यवाची कुक्ट्टो अस्ति । ने तस्य विस्तित्वहें बद्धाम प्रसिक्षसि । से कारकाशि । ते अञ्च कक्ट्र पारंगेमत्ता चरिना । अयेको मारणवको सुवानवने दास्ति उद्धरन्तो एक कृष्कृट दिस्वा आनेत्व पञ्चतं रुरेत्वा परिज्ञणानि । मो मुसान वर्डदितना असुक्तंत्राय नाम बास्तित्वकि अभागती करिक्ष अति-राज वस्ति क्रिंग क्रिंग अस्तामान्त्रने । मारणवा तस्स अतिरात्ति वस्तित्वकाले सिष्प विस्वन्तता यां व अस्तुणामाना निवित्तत्र न तक्क्षीणि निद्यायाना गहिन्दद्वानीम् वस्तु स्वत्ति अतिप्रमाने वरिस्तवनाले मण्डावस्त्रकोलि क्षान स्व न नर्वावा । मारणवा अच्य अतिरात्ति वा वस्तित अतिप्रमाने वा इम निस्ताय अम्हाकं सिप्प न निद्वाविस्तवनीत ना क्षान

ग्रमातापितरिसंबद्धो ग्रनाचरियकुले वसं, नायं कालं ग्रकालं वा ग्रभिजानाति कक्कटोति ।

तत्व-प्रमातापितरिसवद्वीति गांतापितरी निस्साय तेस ओवाद अगहेत्या संबद्धो । अनाचित्वकृते समित आचरियमूनीप अवसमानी आचरतिकाषाणक कञ्चितसमाय अवसितत्ताति अरणो । कालं प्रकासं साति इमीस्म कालं वस्तित्वल्य, इमीस्म कालं न वस्तित्वले एव वस्तितव्यमुत्तकाल वा अकाल वा एस कुनकृतो न जानाति । अजाननमावनेव जीवित्यक्षय पत्तीति ।

इद कारसा दस्तेत्वा बोधिसत्तो यावतायुकं ठरवा यथाकामं गतो । सत्या इस धम्मदेसन आहरिस्वा जातकं समोधानेसि । तदा अकालरावी कुक्क्टो अय भिक्क्षु अहोसि । अन्तेवासिका बृद्धपरिसा । आचरियो पन अहमेवाति ।

थ्रकालराबीजातकं। [३६**८**]

१. स्या०-ग्रमातापितुसंबद्दोति ।

१० बन्धनमांक्खजातकं

सबद्धा तस्य बज्भःतीति इद सत्या जेतवने विहरन्तो चिञ्चमाराविक आरब्भ कथेलि ।

पश्चपञ्चवत्यु

तस्सा बत्यु द्वादसकनिपाते महापदुमजातके आवीभविस्सति । तदा पन सत्था न भिवस्ववे ! विरुच-माताविका इदानेव म अभूतेन अन्भाचिनस्रति पुञ्चेपि अन्भाचिवस्यवेवानि वत्वा अतीत आहरिः——

प्रतीतवत्थ

अतीते बारासामिय बद्धादत्ते रज्ज कारेन्ते बोधिसत्ती पुरोहितस्स गंहे निब्बत्तित्वा वयप्पत्ती पितु अच्च-येन तस्सेव पुरोहितो अहोसि । तेन अस्ममहेमिया वरो विन्नो होति—-भहे । य इच्छिन त बदेय्यासीति ।

सा एवमाह—मन्द अञ्जो वरो नाम न दुल्लभो इतो पन ने पट्टाय अञ्जा उत्थी किलेसवसेन न ओलोकेतब्बात ।

सो पटिक्किपरवा पुनपुन निर्पातिकमानो तस्या वक्त अनिक्क्षीमन् असक्कोग्ना सम्पटिक्क्ष्विवा ततो पट्टीय सोलबस् नाटिकिथ्बहरमम् किन्तयनेन गृकिष्यिध्य न आंताकेति । अवस्म पञ्चती कृषि । पञ्चति तिवयोषा चौरीह बद्धि दे तयो सहवामे कत्वा देवी उत्तरि मन नक्का आंतर्गत राष्ट्रा । परणा पेरेस । राजां तत्व नमुक्तामो वक्काय महीरव्या त पक्तोमोविव्या—महें । अह पञ्चमन मज्ज्ञप्रीत तत्व नामणानी यद्वानि होत्व त्ववराजयोषि अनिबद्धो तारिसेस् ठानेस् मातुगामो दुर्पारहारो, त्व इथेव निवसाहानि आह ।

सा न सकता देव ! मया निर्वतितृतिल पुनप्पन रङ्झा पटक्किना आह—भेगीट एकक योधन गल्या सम्बद्धसक्ष जाननत्त्र एकक मनस्स पंसेय्यायाति ।

राजा साथृति सम्पटिनिक्कत्या बोधियन नगरे ठरेत्वा ग्रहमंन यक्ताधेन निकाणिका धन्छन। याअनं योजनं रहेक पुरित्त अन्नाक आरोप्य आरोपंत्रचा देविया मुलदुक्त ज्ञानिका आपकानि गंगीय। । यो आपता-तत्त पुरित्त राजा न कम्पत्य रेसेसीति पुन्तिक्त्या तुम्हाक मृत्यदुक्त्य ज्ञानन्थ्यपति नृत नंतरि एत्तीन नन सदि असदम्प परित्तर्यनित्

राजा इतिसयोजनमम्ग गण्डम्मो इत्तिसजने रेशीम । सा सब्बाहिपि तिह यदि तथेव अवाभि । राजा पञ्चनत बुपसमेरवा जनपद समस्सासेरवा पुन आण्ड्यनोपि नथेव इतिस जने पेगीम । मा नेहिपि मदि तथेव विष्पटिपञ्जियेव ।

गत्रा आगस्त्वा ज्यसम्भावारद्वागं ठरवा नगर परिज्ञगापेतृति वीधिनत्तरम् पण्ण पेगीत् । बाँचि-सत्तो सकतनगर परिज्ञगापेत्वा गत्रनिवेसन परिज्ञगापेत्तो देविया वमतद्वान अपगामि । मा बांधिसत्तरम् रूपगण्यन काय दिस्या मध्यनुसमस्त्रोली---गृहे ब्राह्मणः । यसन् अभिरहारि आग्रः।

बोधिसनो——माएव अवच, राजापि मे गरु अकुसलापि भाषामि, न सकका मयाएव कानुन्ति [३६९] आहः।

चतुमद्विया पारम्भिकान नेव राजा गरु, न अक्मला भायन्ति, तबेव राजा गरु न्व येव च अक्सला भाय-

आम सचे नेसम्पि एवस्भवेय्य न एवरूप करेय्यु, अहस्पन जानमानो एवरूप साहसिककस्म न करि-स्सामीति ।

कि बहु विष्पलपसि सचे मे वचन न करोसि सीस ते छिन्दापेस्सामीति ।

िहतु ताव एकस्मि अत्तभावं सीस अत्तभावसहरसेपि सीसे श्रिञ्जने न सक्का मया एवरूप कातुन्ति । सा होतु जानिस्सामीति बोधिसत्त तज्जेत्वा अत्तनो गन्भ पविसित्वा सरीरे नक्षवलञ्ज बम्सेत्वा नेलेन गत्तानि अन्यञ्जेत्वा किलिष्टुमानुक बत्य निवासेत्वा गिसानास्य करवा दासिया आणापेसि रञ्जो कह देवीति बुत्ते मिलानाित कवेय्यावाित बोधिसत्तोषि रञ्जो परिष्य अगमाित । राजा नगर पर्दावक्तम् करवा पासार अभिकस्ह देवि अपस्सन्तो कह देवीित पुष्छि । गिलाना देवाित । मोपि सिरियब्स पर्विसत्वा नम्सा पिट्टि परिसञ्जन्तो-र्—िक ते भहें ! अफासुकाित पुष्छि ।

सा तुण्ही अहोसि । ततियवारे राजान ओलोकेत्वा---त्वाम्प महाराज । जीवसि नाम । मादि-सापि इत्वियो सस्सामिका येव नामाति !

किएत भड़ेति ?

तुम्हेहि नगर रक्षणस्याय ठिपतो पुरोहितो निवेसन पटिजन्मामीनि इधागन्त्वा अक्तनो वचन अकरोन्ती म पहरित्वा अक्तनो सन परेत्वा गतोति ।

राज अभिष्मित् पिंत्रवर्ताणसक्तार विष्य क्रोधेन तटतटायन्तो सिरिगरमा निक्समित्वा दोवागिक-पादमुक्तिकादयो पक्कीसिवला----मञ्चय सर्ग ! पुरोहित पञ्छावाह बन्धित बन्धस्तावण्यन करवा नगरा नीह-रित्वा आधानन नेत्वा सीसमस्य सिव्यवारि ।

तं वर्गन गरवा न पश्चाबाह विश्ववा वश्कमें र बादायेम् । बौधिसत्ती विश्तोम ब्रह्मा ताब बुट्टसैब्बा राज पुरेतर परिभिन्ना अञ्चरानाह अतनो बनेवव अत्तान मोधस्त्रामीति । सा तं पुरिसे—आह मो ! तुम्हे म मारेन्ता रङ्गो इस्तेवयाब नारेवानि ।

किकासमाति ?

अह राजकम्मिको बहुम्मे कम्म कत बहूनि गहानिधानानि जानामि राजकुरुम्ब मया विचारित संच म रञ्जा न दस्सेम्मय बहु वन निम्मरमित मया रञ्जा । मापनेय्वं आविनिधने पच्छा कानव्य करोधानि ।

ते त रञ्जो दस्सपिस् । राजा त दिस्याय—वस्थाभा क्राह्मरा ! मधि लज्ज न अकासि ? कस्माते एवरूप पापकस्म दर्शतः आहि ।

महाराज ! जह सोश्वियक्तुने बानो सथा कुरबीकिय-लक्कानोपि पास्पानिपासो भ कनपुत्र्यो, निरमस्वाद-सत्तास्य अदिन्न नादिन्नपुत्र्य, लोभसंसन परेस इत्या अस्वीति उस्मीनेत्वापि न ओलोकितपुत्र्या, हासबसेनापि सुना न सामतपुत्र्या, कुरमत्वापि ५७ जन पोनपुत्र्य। अहे तुम्ह्रस्य । ३००) निरम्पायी । सापन्रधाना लोभस्येन सहत्ये गहेत्वा स्थापिटिक्यला म नश्केत्या अत्तना कनपप्प उनान कन्या सम्आविक्सत्वा अनोगस्थ पिद्धा । अहिन्तप्रपार्था । पण्पा गहेत्वा पन आसना चनुमद्विना सागाया ने पक्तीसन्या सम्सा वो वयन वत न कत्तित पुत्रकृ देवाति ।

गांजा ते चतुसद्विजने बन्धापेत्वा दीव पक्कोमाभेत्वा तथा एनेहि सद्धि पाप कत न कतिन्त पुष्टिछ । कन देवाति व से त पण्डाबाह बन्धानेत्वा चनुसद्विजनान सीमानि छिन्दथाति आएगपेसि ।

अप न वीधिमतो आह सिंश महाराज । एतेस दोसो । देवी अन्तर्नो इति कारापेसि । निरणगधा एते । तस्मा तेस लगव । रणार्गि दासो तांद्र । देशियो मा मेद्रगयम्मेन अतिना, जारियमावो हि एस एसास अवितर्वकृत्यकं श्रोंत । रमार्ग्ग एति । तस्मा तेस अवितर्वक्षां से श्रीत । रमार्ग्ग एति । तस्मा प्रतिकारि कार्यो त्या त्राप्त नाष्ट्रभावि । अते तस्म वोधिमतो राजा राज्यकंत्रिया—महाराज । अध्यानान नाम अवस्थित वयने अविवरत्यप्रता पश्चित । पश्चा वाह वदा, पश्चित । कार्यापतेन वयनेन पश्चावाद वदापि माग, एव बावा नाम अववितर्वक्षात्रकी पश्चामी नि, पश्चित वदीप मोक्तीनि यत्वा इस गाथमाह ——

ग्रबद्धातस्य बज्जनित यत्थ वालापभासरे, बद्धापितस्य सच्चन्ति यत्थ घीरापभासरेति ।

तत्य--मबद्धाति अवन्धितन्वयुत्ता । पभासरेति पभासन्ति वदन्ति कयेन्ति ।

एवं महासत्तो इमाय गाथाय रञ्जो धम्म देसेत्वा मया इम दुक्क अगारे वमनभावन लद्ध इदानि मे अगारेन किच्च नत्थि पश्त्रज्ञ मे अनुजान देवाति पश्चज्जं अनुजानायेत्या अन्सुमूल जातिजन महन्तञ्च विभव

१ स्या० चारापेसु ।

३२२ जातकट्ठकमा

पहांच इसिपन्यस्यं पत्र्वजित्वा हिमबन्ते वसत्तो अभिन्न्ना च समापत्तियो व निक्बतेत्वा ब्रह्मलोक्सपायणो अहोति । सत्या इम पन्मदेशन आहित्त्वा जातकंसमोघानेसि । तदा दुट्टेवी चिन्न्यमास्पविका जहोति । राजा आनन्दो अहोति । पूरोहितो पन अहमेबाति ।

> बन्धनमोक्खजातकं। हसीवग्गो द्वादसमो।

१३. क्रसनालिवग्गवगणना

१ क्रसनाविज्ञातकं

करे सरिक्सोति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो अनाविपिण्डिकस्स निच्छयमित्त आरब्भ कथिस ।

प उच्चपन्न बत्य्

अनायपिण्डिकस्स हि भित्तसूरुजजातिकध्वा एकता हुत्वा---महासेट्वि ! अय तया जातिगोत्तघन-घञ्जादीहि नेव सदिसो न उत्तरितरो कस्मः एतेन सिंढ मन्यव करोसि ? मा करोहीति पुनप्पुन निवारेसु ।

अनायपिण्डको पन-मिलसन्यवां नाम होनेहिपि समेहिपि अनिरकेहिपि कत्तरबोधेवानि-तस वस्त अगहेत्वा भोगगाम गण्छन्तो त कुटुम्बरस्कक कत्वा अगमासीति सस्य कालकप्पिगवरगृस्मि बुक्तयनेव वेदितस्य ।

इन पन अनावपिण्डकेन अननो परपबित्तया आरोजिताय मत्या—गहपित ! िमत्तो नाम सुद्को तत्य, विस्तरम र्रव्यन नमयन्त्राया जेल्य पराणा मित्तो नाम अनना समीपि होनोपि विस्तरहोपि सहेत्यली, सन्देपि हिं ते अतनो पन भार निव्यर्गन रेत इदानि नाव त्य अननो निज्ज्यपित निस्ताय क्टुम्बस्स साम्बो जातो, पोराणा पन निज्ज्यपिन निस्ताय विमाननामिका जातानि वस्त्रा तेन याचितो अतीत आहीर —

ग्रतीतवत्य

राज्ञा बहुज्जी पक्कोसायेत्वा ताना ! मम एकत्यम्भकस्म मदशचपामादस्स बम्भो चिनतो, एक तारत्वम्म आहरित्वान निक्वत करोषाति आहु । त माधृ देवानि रञ्जो वचन सम्पर्टिच्छत्या तदसुच्छितिक कश्च परिवेसमाना अञ्जाला औदश्वा उथ्यान पविसित्वा त मुश्चकल्लेख दिखा रञ्जो सिनक आगल्या क ताता ! दिट्ठो वो तदनुक्षविको कश्चोनि वृत्ते रिट्ठो देव ! अपि च खा त ख्रिन्दित् न विसहामाति आहुत्त ।

किकारसाति ?

मय हि अञ्झत्य रुश्स अपस्सन्ता उय्यान पविसिन्हा तत्रापि ठपेत्वा मङ्गलरुवस अञ्झ न पस्साम इति नं मङ्गलरुवस्त्रताय छिन्दित् न विसहामाति ।

गच्छ्रप छिन्दित्वा पामाद थिर करोथ मय अञ्जा मङ्गलस्तस करिस्सामाति ।

त मानूति बनिकम्म महेला उच्यान नात्त्वा रवे छित्त्रिसामानि रुक्तस्व विवक्रम बहवा निरम्नमिस। इस्त्वदेवता तकारणु अल्वा स्वे मरह विमान नामेस्सान्त दारके गहेला कहि गोमस्यामिति गन्त्रबट्टान अपस्यती पुनके गीवाय अहेला परीदि। तस्या सन्दिहा मध्यसा अन्वदेवना बन्तरेला आगन्त्वा कि एतित पुरिक्षवा न कारण मुद्रवा सर्वाप्य बङ्गमीन पटिन्तिष्य गुनाय अस्सानियो त परिस्पत्तित्वा रोदिन, आर्राम्सू।

तरिंम समये बोजिसत्तो रुक्खदेवत परिसस्सामीति तत्य गन्त्वा त कारण् सृत्वा होतु मा चिन्तयित्य अहं तं रुक्ख खिन्दितु न दस्सामि स्वे वड्डकीन आगतकाले मम कारण् परसयाति ता देवता समस्सासेत्वा पुन-

> करे सरिक्को प्रथवापि सेट्ठो निहीनको चापि करेय्य एको, करेग्यूं ते व्यसने उत्तमत्य यथा ग्रहं कसनाली रुचायन्ति ।

तत्व-बरे सश्कितीत जानिआवीह सरिसीपि मित्तपम्म करेय्य । अपवादि सेट्ठोति जानिआवीहि सरिसीपि मित्तपम्म करेय्य । त्रिवासि मित्तपम्म करेय्य । त्रिवासी अविकासि करेय्य । त्रिवासी स्वासी स्वासीय स्वा

मत्या इम थम्मदेमन आहरित्वा जानक समीयानेसि । तदा रुवा देवता आनन्दो अहोसि । कुमनालि-देवता पन अहमेवानि ।

कसनालिजातक।

२, दुम्मेघजातकं

यसं लद्धान दुम्मेथीति इद सत्था वेल्वने विहरुनी देवदत्तं आरब्भ कथेमि ।

पच्चपन्नवत्थ

चमममभाय हि भिक्क् — आवृमो । देवदत्तो तथागतस्य गुष्णाचन्दमस्सिरक मृख असीतिअनु-व्याञ्जतितमस्युरीत्मक्क्षणपुणिमभिवत आमणभाषारिकिचन आवेलावेना अमकगमकःशृता चनवुद्धरस्मियो विस्सञ्जेत परमसोभगणपत अत्तभावञ्च ओलोकेत्वा चिन पमादेत् न मक्कोति उमुस्मेव करोति बुद्धा नाम प्रवस्तेन सीलेन समाधिना पञ्जाय विमृत्तिरण विमृत्तिज्ञारणस्मितेन समप्रणानानि वृच्चमाने वण्णा सहित न मक्कोति जसमेव करोतीति—देवदनस्य अस्तावश्च वजेम ।

सत्या आगन्त्वा काय नृत्य भिक्कवं । एतर्गह कथाय सन्निमन्नाति पुन्छित्वा इमाय नामाति बुन्ते न भिक्कवं । इरानेव देवदनो मम वश्यु भञ्जामाने उस्य करोति पुत्र्वेषि अकामियेशाति बत्वा अतीत आहीर --

धतीतवत्य

अतीने माधरण्डं राज्यहरूपरं एकिम माधराजं रण्ड वारेन्तं वोधियानां होत्यांनिय निव्यक्तिया सद्ध-नेतां होतीं में हों बिल्पानियाद रूपमार्गीन्या गमझानो। अस्त न तक्ष्मागममाझे अवित्त मी राजा मध्यक-हीत्य अकासि । अवेकीस्य झालिवने मक्तवनार देवनार दिव अक्ताराने वा अव्यक्तकारागीत्या अव्यक्तकारागीताध्यक्त मध्यक्त मध्यकार्जित्व अभिनिहत्वा प्रकृतेन राजानुसावेन नगर रदिन्या अकासि । महाको तत्व तथ्य ठवा मध्यक्त हीत्यां रूपमण्ड सरी दिया—अही । पर आहो । मीत, अही । नीत्य, अही । व्यवस्थानमास्यात एव-स्थो नाम सर्वानियवारणां वस्तावित्रकारों अव्यक्तिकारीन मध्यकारीव वस्तावित्रवारां । [२०४]

ाजा महत्तवहन्तिस्य कम्पा गुला सहित् असकोत्तो उत्तय उपादेत्वा अप्रजेच न पत्रनगपाना पानेस्वा जीविनकाय पारेस्पासीति तथावस्यि वनकोत्रापेश्वा—किल्ल कत्वा तथा अय नामो सिक्वापितीति आह । संपन्तवासीतो तेवानि ।

म्।मक्त्यापता दवात । न समिक्कितो दुस्मिक्कितोति ।

न सुन्धाक्यता दुक्ति। मसिक्खितो देवाति।

यदि सुमितिखतो, मक्खिस्माम न बेपुल्लपव्यतमस्यक आरोपेतन्ति ?

आम देवाति।

तेनहि पृष्ठीनि मय जोनिरन्या हत्याचित्र आरोपेत्या पळातपाद गत्त्वा हत्याचरियेन हत्यिपिर्टे निसी-दित्वाव हत्यिम्हि बेपुरलपळातमश्वक आरोपितं नयम्पि अमञ्चगणपरियुत्ती पळातमश्वक अभिक्रहित्या हीत्य पपाताभिम्स कारेत्या-त्य मया एग मुगिक्यापिनीति बदेगि नीहियेव ताव न पार्टीह टपेरीनि आह ।

हत्थार्चारयो पिट्टिय निगीदित्वाय भी नीति पार्वेडि निद्वाति इन्यिस्म पीफ्काय सञ्ज्ञ अदानि । सो नीडि पार्वेडि अद्वानि । पुन गजा डीडि पृष्टिमपारेडियेच रुगेडीनि आह । महामत्तो हे पिछ्मपारे उनिकपिश्वा पृष्टिमपारेडि अद्वानि । पौन्क्यपारेडिट येवानि वृत्तेषि हो पृष्टमपारे उनिकपित्वा पौन्दिमपारेडि अट्टानि एकेनानि वृत्तेषि तयो पार्वे उनियपित्वा एकेनेव अट्टानि । अथस्म अपननभाव ज्ञान्या —सचै पहाँमि आकामे नट पेहीति

हत्वाचरियो जिन्तेसि सकलजन्द्रीपे टीमना सरियो सुमिनिक्तो हत्वी नाम नित्य, निस्ससय गनेत एस पराते पातेला मारेजुक्तामे भविक्सतीति। मो तत्म कथ्णमुलं मन्तेसि,—नात । अय राजा त पराते पातेस्वा मारेजुकामो, न त्वं एक्टम्य अनुच्छिकि। । मचे ने आकानेन गन्त् यल अन्यि यथानिसिप्रमेव में आदाय बेहासं अक्समन्तवा बारासामि गच्छाति।

पुञ्जिद्धिया समन्नागतो महासत्तो तं खराञ्जोब आकासे अट्टासि ।

हत्यावरियो—महाराज ! अयं हत्यो पुठ्ञिद्धिया समझागतो न तादिसस्समन्यपुठ्ञास्य हुन्बुद्धिनो अनुम्बद्धिको पिष्यतस्य पुठ्ञासम्प्रसस्य रञ्जो अनुम्बद्धिको तादिसा नाम मन्यपुठ्जा एवक्ये बाहुनं समिस्या तस्स यूयां अजानन्ता तञ्जेव बाहुनं अवसेसं च स्ससस्यान्तं नासेन्तियेवाति वत्या हत्यिक्काचे निरिष्ठोव इसं गाय-माहः :—

यसं लद्वान बुम्मेघो सन्तर्यं घरति झल्तो, स्रलनो च परेसं च हिसाय पटिपक्ततीति ।

तथानं सहस्रेपत्यो—महागज! तारिसो हुम्बेयो निष्यञ्जो पुरवसो परिवारसम्पत्ति सिन्त्य **प्रसमो प्रतस्य परति**। कि कारणा ? सो हि यसमरमत्तो कत्तव्य प्रधानन्तो **प्रतमो च परेसं च हिसाय** प**रिपञ्जित**। हिसा वच्चति किसमनं इसस्यपावनं तदत्याय एव परिपञ्जतीति। [३७४]

एव इसाय गायाय रञ्जो धम्मे देशेत्वा तिट्ट दानि त्वन्ति आकासे व्यवित्वा बाराएति गत्वा रावद्वराखें आकासे बहुनि । सकतनगर रक्षवृत्तिवा अवाहर रञ्जो आकासेत सेतवत्वारयो आगरन्वा रावद्वराखें कितीत एककोलाहक अवहीत । बेतेन रञ्जां गिं आरोनेस् । रावानित्वसीयका सेन स्वरू उपपोत्त्राच्या आगरोति पृथियं पतिदृहिति । आविरायो आंतरित्वा राजान वन्तित्व सूत्री आग-तांदि तातानि वृत्ते रावत्वत्तीति क्वा सब्ध पवित्त आरोनेसि । राजा मनगपने तात ! कत इधानण्डते- नांदि हुदुहित नार र स्वरायेक्ष वार्चा स्वर्णा क्वानित हुदुहित नार र स्वरायेक्ष वार्चा महान्या हिता है। विश्वस्त स्वरायक्रानेस्त नाति हुदुहित नार र स्वरायेक्ष वार्चा स्वरायक्ष स्वर्णा क्वानित्व स्वरायक्ष स्वरायक्ष

तदा मगधराजा देवदनो अहोसि । बारास्त्रसीराजा सारिपुत्तो । हत्थाचिरयो आनन्दो । हत्थी पन अहसेवाति ।

दुम्मेषजातकः ।

३. नङ्गलीसजातकं

व्यतस्वरगाम वाचन्ति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो लालुदायित्थेरं शारङभ कथेसि ।

पस्त्रपन्नवस्य

भी किर सम्में करेनी इमिंस्म ठाने इर करे एक इमीस्म ठाने इर त करेने व्यक्ति पुत्तापुत न जानाति । मझपते अवमझण वहनी निरोह हुईन निष्टृति सम्मित्तक्षपटकेमु चाति इस अवमङ्गले अनुमोदनं करति । अवमङ्गलेसु अनुमोदन करोत्तो बहु देश महस्ता च मङ्गलानि प्रविक्तपृत्ति वत्वा एवस्पान मङ्गलानी सतिम्य सहस्यमि कात्, समस्या होषाति व नि

अभेकेदिवसं धम्मनभायं निक्क् —जावुसो । नान्वायी सुनामुत्तं न जानाति सक्बत्य अमासिकः वास सब्बत्य आमानीति कथ समुद्राग्म । सन्या आगन्या कान्तृत्व विज्ञान्ते । एतरिह कथास सिनिष्णाति पुण्डिका सम्या नामानि वृत्तं न भिक्बवे । नान्तुरायी इदानेव दश्यिरसम्बन्धित क्षेत्रते मुतासुत्त न जानानि पुर्वेपि एक्क्पो अहोति निक्कानान्त्वेष्ठये । एमोति वन्या—(३०६) अतीन आहोरि —

ग्रतीतवत्थ

असीने बाराणियय ब्रह्मदन्ते रज्ज कारेन्त्रे सीधमनो ब्राह्मणावहामानकुने निक्वित्तरा वस्पनो तक्तिमाया सब्बित्तपानि उत्पिद्धत्व बाराणिय दिवापामीकानो शाचियो हुन्या पञ्चमायावकहतानि सिप्प याचैनि । नदा नेतु माणवेन् गुक्को दत्यपणित्यकतो जावनायाचा प्रधाननिवास्थित हुन्य निप्प उत्पास्ति । दन्यभावेन पन उप्पिद्धतु न मक्कोति । बोधियतसम पन उपवारो होति । दासो विय सम्बिक्चानि करोति । अवेकेचिवस बोधिसतो मायमास भूञ्जित्व सबसे निपन्नो न मारायं हत्यपादिषिद्वपिकम्मानि करवा मण्डस्त आह.—तात । मञ्चपादे उपसम्भेत्य बासीति ।

मारावो एक पाद उपल्यम्भेत्वा एकस्स उपल्यम्भन अनभन्तो अत्तनो ऊरुम्हि ठपेत्वा रॉत्त खेपेसि । बोधिसत्तो पच्चमसमये उद्गाय त दिम्बा—िक तात । निसिन्नोसीति पुच्छि ।

आवरिय । मञ्चपादस्य उपत्थम्भन अलभित्वा ऊरुम्हि ठपेत्वा निसिन्नोम्हीति ।

बोधिनती मिविन्यानास्त्री हुन्वा अब अति विष मध्द उपकारो एत्कान पन माएाकान अत्तरे अयोधि द्रायो सिप्यं मिविस्तृत सम्बोति कथनुष्त्री अह. इम पण्डित करेयानि चित्तीम । अपस्य स्वरहारिया—अविश्वो अपायो अहुँ इस माएाव राअक्ष्याय पण्णाया सन्त्रत्व आगत अजन ते कि विहु कि कर्तान्त पुन्ध्युस्तामि । अय मे इमं नाम अज्ञ मवा रिट्ठ इद कर्तात्व आचिषिसस्यति अय नंत्रपा दिट्टज्य कत्त्रच्य कीरिस्तित पृच्छिस्सामि सो एक्बल नामाति उपमाय च कारणेन च क्यरेसाति । इति न नव उपम च कारणञ्च कप्यं पेवा इमिना उद्योगने पण्डित करिस्तामीनि । सोन पक्तीमित्त्या—नान मानाय । इतिहासुक दास्त्रमाय वा पण्एखाया वा गतद्वाने य ते तत्र्य दिट्ट वा मृत वा मृत वा पीन या कायित वा होनित आगन्त्वा मस्ट्र आरोजेय्यासीनि आह ।

सो साधूनि पटिस्सुरिगत्वा एकदिवस मागग्वेहि सिंद दाधअन्याय अरघ्टा गतो तत्य सप्प विस्वा आगन्त्वा आवस्यि—सप्पो मे दिट्ठोति आरोचेसि ।

सप्यो नाम तात ! की दिसो होतीति ?

सेय्यथापि नङ्गलीसाति ।

साघु तात ! मनापा ते उपमा आहटा सप्पा नाम नडगनीससरिसाव होन्तीति । अय बोधिसत्तो मारावकेन मनापा उपमा आहटा सम्बरस्पामि न पण्डित कार्नान्त चिन्तीस । मारावी पुन एकदिवस अरञ्जो हरिय दिस्या—हत्यी मे आचरिय ! दिद्छोति आह ।

१. स्या०-लोलुदायित्थेरं । २. स्था०-लोलुकोयेव ।

हत्थी नाम तात ! कीविसो होतीति ? सेव्यथापि नक्ष्मलीसाति ।

बोधिसत्तो हत्यिस्स सोण्डा नङ्गलीससदिसा होति दन्तादयो एवरूपा च एवरूपा च । अयं पन बाल-ताय विभाजत्वा क्येत असक्कोन्तो सोण्डं सन्धाय कथेसि मञ्ज्ञोति तण्डी अहोसि ।

अयंकदिवसं निमन्तने [३००] उच्छ् ं तभिरवा—आचिरय ! अज्ज सथं उच्छ् सादिस्हाति । उच्छ् नाम कीदिसीति वृत्ते सैन्ययापि नकानीसाति आह । आचित्यो योकं पतिकपकारएां कपेसीति तुच्हीवातो । पुनेकदिवसं निमन्तने एकच्चे मारावा गुल दिष्टा भूञ्चिस एकच्चे सीरेन । सो आगन्तवा—आचित्य ! अज्ञ ! सथं दिष्टा सीरेन च भूञ्चिन्दाति वत्वा दिष्टिंग नाम कीदिसं होतीति वृत्ते सैन्ययापि नक्ष्यसी-साति आह ।

आवरियो--अयं मारावी सच्यो नहरात्त्रीससिदसीति कचेन्तो ताव सुकचित कयेति । हत्यी नहरा-सीसमिदसीति करेनेनापि सीएट मन्याय सेतेन कदित, उच्छ नहरात्तीससिदसित कचनेपि लेचो अस्थि, दिध-सीराति पन निच्च पण्डराति पश्चितनाजनसण्डानातीति इस सब्बेन सस्य उपम न कथेसि, न मनका इस लालके विश्वसोदिति बल्बा इमं गाचनाहः--

> ब्रसस्बत्य गामि वासं बालो सम्बद्ध भारति, नागं विध वेदि न नङ्गलीसं दक्षम्पयं मञ्जाति नङ्गलीसन्ति ।

तत्राय मङ्बेपत्यो । मा बाचा ओप्प्मवसेन सब्बन्य न गच्छति तं **ग्रसब्धत्यगामि वाचं वालो** दन्य-पुग्मनो सब्बन्ध भारति । विधा नाम कीदिमानि पुर्धे सेययपापि नङ्गलोमानि बदनेव बदन्तो ना**यं दांव देदि** न नङ्गलोसे । कि कारणा ? यस्मा दांबम्पदं सङ्गलाति नङ्गलोसी यस्मा अयं दीधीम्प नङ्गलोसभेव सम्मानि । अथवा दयीनि दांगिमेव । पयनि लीर । दांचि च पयञ्च दांघम्पदं । यस्मा दिखालीरानिय अय नङ्गलोसभेव मञ्जानि तादिसो चाय वालो कि दांमनानि अन्वेसानित नाम कोवला परिच्यव दत्वा न उत्योजेसि ।

ें सत्या इम धम्मदेसनं आहरित्वा जानकं समोधानेमि । नदा लालमास्त्रतो लातुदायी अहोसि । दिसा-पामोक्खाचरियो पन अहमेवाति ।

नङ्गलोसजातक ।

४. सम्बजातकं

वायनेयेव प्रिसोति इद सत्था जेतवने विहरन्तो एक वनसम्पन्न बाह्यरा आरब्भ कथेसि ।

पञ्चपन्नवस्थ

सो किर सार्वाल्यवासी कृतपुत्ती मामने वर दराव पब्यक्तियो बत्तसम्पन्नो अहोसि । आवरिष्युव्यक्ताय-वत्तानि वानीपपरिप्रोजनीयवरोपरपाताच्यावादाविवतानि व सापुक करोति । बुद्दसमु महावनस् असीतिबन्धकवनेन् च परिप्रिकारीनेव अहोसि । विहार सम्मञ्जति परिवेश वित्वक्तमासक विहारम्मा सम्मञ्जति । सनुम्मान पानीयं देति । मनुस्मा तस्य बत्तसम्पत्तिय वर्षाविव्या वस्यक्तमत्तानि धुक्मताति अदम् । सहानाभत्तकारो उत्पर्विच । त [- =] निस्साय बहुन्न कागृविहारी जातो । अपेकदिवस सम्म-समाय विक्कृतक समृद्धवेन् आवृत्तीं आवृत्ती माम विक्कृतन्ताने वत्तमान्यानिया महन्त नाभत्तकार निम्ब-तेति, एन एक नित्तमाय बहुन्न कामगिहारो आवीति ।

सत्या आगस्या नायनुत्य भिक्त्यते । एतर्राह् ज्याय सिक्तिम्नाति पुन्वहत्या इमाय नामाति वृत्ते सक्तव्य । इदानेव पुन्धेयायं भिक्त्य सत्तमात्रो पुन्धेयेन एकक नित्याय पञ्च इसिमतानि फलाफलस्याय अरुञ्ज अनस्या गरेनुक शानित्रफलाफलेहि यांधनित क्या अनीत आहरि —

ग्रतीतवत्थ

अतीत बारागासिय बह्यदने रज्य कारेन्ते बोधिमतो उदिष्वबाद्धाणकुमे निकासिम्बा वयणतो इसि-पव्यज्ञ पत्र्वजित्वा गज्यस्पर्कासपार्वादारे पञ्चलपार्वे बिहासि । तदा हिसबले चण्डो निदाधो अहोसि । तस्य सन्य पानीवार्ति (छोज्यम् । तिरच्छाता पानीयसप्रमामाता किनमिल । अय नेमु नापसेमु एको तस्याति । पिपामावस्य दिस्वा गक्त स्थव द्वितिस्या दोशि कृत्वा पानीय उम्मिष्टिस्या देशिग वरेश्या तेम पानीय अदासि ।

बहुन् प्रक्रियतिन्व । पानीय शिवलंम् नायसम्य फलाफलन्याय गमनीकारी गांगीत । मी निराहारोधि । वितियत । नियानमा विलेम् अद अहांक पानीय देनी स्मानमा विकास न सर्मान । नियान हान्याय अनिवयति कन्यति हृद्य पानीय देनी स्मान क्षानीय प्रकास कर्या । नियान हान्याय अगिवयत् कर्या कर्या कर्या कर्या विवास प्रकास कर्या अग्राम्य स्मान क्ष्या क्षान क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्षान क्ष्या क्ष्य क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्य क्ष्या क्ष्य क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्य क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्य क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्य क्ष्य

बोधिसला त दिस्वा एक नाम बत्तसम्पन्न निस्साय एत्तकान तापसान फलाफलत्याय अगन्त्वा यापन उपपन्न विनियं नाम कानक्वमेवाति बत्वा इम गायमाह —

वायमेथेव पुरिसो न निस्मिन्देय्य पण्डितो , बायामस्स फलं पस्त भसा ग्रम्बा ग्रनीतिहन्ति ।

ननाय नदालंगन्यो । पश्चितो अतनो वतरूरणादिके कस्मिन्ध बायमेथेव न उक्कण्डेप्य, कि कारणा ? वायामस्य निष्कत्वताय अभावतो । इति महासत्ती बायाभी नाम मफलोव होतीति इसिनणा आवश्यती बाया-सस्स कर्म वस्साप्त आह । कीदिस ? भूता ब्रास्था प्रमीसिहं । तत्य अस्वाति देमनामल नेति एन नात्य-काराति फलाक्षतानि आभातानि नेत्, सम्प्रक्रतान [६०६] उत्सक्रतान वा वसेत अस्तानि बुत । ये देमेहि एक्चीह इसिनतीत तय अरञ्ज अगल्वा एक्स्म अल्याय जानीता अम्बा भूता इद बायासस्य फल । तञ्च स्वी पन अतीनिह इतिह आस इतिह आसाति एव इनिहोतिहेन गहेनत्व न होति पञ्चत्वमेव त फल पस्साति । एव महासनो विशिणास्य क्रीयाद अवाति ।

सत्या इम यम्मदेसनं आहरित्वा जातक समोधानेसि । तदा वत्तसम्पद्मो तापसो अय भिक्कृ अहोिन । गरमसत्या पन अहमेवाति ।

५. कटाहकजातकं

बहुत्यि सो विकल्पेध्याति इदं सत्या जेतवने बिहरन्तो एक विकल्पिक भिक्तलुं आरक्भ कथेसि । तस्स बत्य हेट्टा कथितसदिसमेव ।

प्रतीतवत्यु

अर्जाते पन बाराग्।सियं ब्रह्मदसे रज्ज कारेग्से बोधिसत्तो महाविभवो सेट्टी अहोसि । तस्स भरिया पुत्तं विजायि । दासीपिस्स तं विवस येव पुत्त विजायि । ते एकतीव विद्वस् । बोहुपुत्ते लेख विवसले एव दामीपिस्स कलकं बहुमानी गन्दवा तेनेव सिंह मेल्स निम्ल गणनं सिन्स्ति । हे तथा बोहारे अकासि । सो अनक्सनेन वम्बनकसनो बोहारस्त्रसनो यवा अनिक्शो अहोसि नामन कटाहरूनो नाम ।

सो सेट्टिकर भण्डापारिककम्मं करोन्तो चिन्तेसि—न म इमे सब्बकाल अण्डापारिककम्मं कारेस्सन्ति किञ्चिदेव दोस दिस्ता तालेखा बीम्यद्वा लक्क्सऐन अडकेल्या दोसपरिओगर्निप परिमूज्जिस्सिन पच्चन्ते स्त्रों पन सेट्टिम्स सहायको सेट्टी अस्त्रि यञ्चनाह सेट्टिस्स वचनेन लेखं आदाय तत्व गल्या अहं सेट्टिप्रनोति क्या ते सेट्टि उच्चेत्वा तस्य भीतर गहेत्वा सथं वसेय्यन्ति ।

सो सबसेव पण्ण गहेरवा अहं असुरू नाम मम पुन तब सन्तिकं पिर्हाण आवाहिववाहाम्बरधो नाम मग्ह व नाम तुरूढ़े व मना बाँद पिनक्षो, तस्मा दुव इसस्य दारकत्म असनो धीनर दत्त्वा एत तस्येव वमापेहि अहाँमा अकासं जीभरवा आमामस्सामीति सिनित्वा सिहुस्तेव मुहिकाद लच्छेरवा यथार्गव परिव्वयञ्चेव गन्यवन्या-दीति च गहेरवा पञ्चारं गन्त्वा शैटि दिस्या बन्दिरवा अदाति।

अथ न सेटडी---कतो आगतोसि ताताति पच्छि ।

बाराग्यसितोति ।

कस्स पुत्तोसीति ? बारारासीसेद्रिस्साति ।

केनस्थेनागतोसीति ?

तस्मि लग्गे कटाहको इद दिस्वा जानिस्सथानि पणग् अदासि । सेट्ठी पष्ण् वाचेत्वा इदानाह जीवामि नामानि नद्रचित्तो धीतरं दत्वा पतिद्वापेसि ।

तस्स परिवारी महत्ती [३६०] अहोषि । तो यागुलज्जकादिनु का वरवगर्न्यादिनु वा उपनीनेतृ एवर्षिप नाम यागु पर्वाल ? एवं बज्जकं ? एव भन्त ? अहो ! पच्चनवासिका नामानि यागुआवीत गरहित । इसे पच्चलवासिमावं नेव साटके व तेन् ! न जानिन, गर्च्य पिसिन्, पुष्पापि पन्विन् न जाननतीति बच्चा वस्थ-कम्मन्तिकादयी गरहित ।

वोधिमतीपि बाम अपस्मानी-कटाहको न दिस्सति, कहं गतो. पश्चिमव निल-मामला मनुस्से पयो-कीम । नेमू एको तथ्य गत्वा दिस्सा मञ्जामित्वा अनान अज्ञानपित्वा गरुवा वोधिमनस्स आरोविम । वोधिमनो त यसिन सुवा अबून तेन कर्त गन्वा न कृत्व आपान्छस्मामीनि राजान आपुन्छद्वा माहनेन पश्चिमरेन तथ्यानि में नेट्री दिर परूचत गरुछतीति मुख्य पाष्ट्री जातो । कटाहको मेर्ट्री किर आपस्य-तीति मुला विनीस-— सो अञ्जोत कारगोन आगच्छित, म निस्मायेवस्स आगमनेन भवितव्य संघे पनाह पलाधिस्सामि गुनागन् न सम्बन्ध भविस्मिति, अल्पि पत्नेस उपायो मम मामिकस्स पटिएय गन्वा बासकस्म कर्वा तांस्व आपुनीति ।

मो नतो पहाय परिग्रमञ्के एवं भामनि---अञ्ञो वालमनुस्सा अननो बालभावेन मानापिनुष्रं अजानन्ता तेम भोजनवेलाय अपनिनिकम्मं अकल्या तेहि सिद्धियेव भुज्जन्ति, मयं पन मातापिनुष्रं भोजनकाले पटिमाह

१. स्या०-ग्रहतसाटके वलञ्जितुं ।

उपनेम, खेलसरक उपनेम, भोजनानि उपनेम, पानीयिम्प बोर्जानिम्प गहेत्वा उपतिद्वामाति याव सरीरवलञ्जन-काले उदककलस आदाय पटिच्छप्रद्वानगमना सब्बं दासेहि सामिकान कत्तव्वकिच्च पकासेसि ।

सी एव परिस उम्मण्हापेत्वा बोधिसत्तस्स पच्चतः समीग आगतकाले ससुरं अबोच—तात । मस कर पिता तुस्हाक दस्तात्वाय आगच्छति, तुम्हे सावनीयभोजनीयं पटियादापेत्र, अह पच्चाकार गहेत्वा पटि-पथं गच्छामीति ।

भी माधु नातानि सम्पर्टिच्छ । कटाहको बहु पण्णाकारमादाय महुन्तेन परिवारेन गन्त्वा बोधिसस् विस्तावा पण्णाकारम्यासि । बीधिसतीए पण्णाकार गहेत्वा तेन सदि परिसम्बाद कत्वा पानरामकाले लग्धा-वार निवारेत्वा सरीरवनञ्जनत्याय परिच्छलहान पावित्तः । कटाहको अत्तनो परिवारं निवारेत्वा कनस् आदाय बोधिसतस्स मोलकः गन्त्वा उटकाकिच्यारियोगाने पारेनु पतित्वा—नामि । अहु नुस्कृतः पत्तकं स्क्यस् तत्तकं वन स्मामि, मा से यस अन्तरपायित्याति आह । बोधिमनो तस्स वनसम्पराय पत्तीरित्वा मा भायि नित्य [२०१] ते मम मन्तिका अन्तरपायित्याति आह । बोधिमनो तस्स वनसम्पर्याय पत्तीरित्वा मा भायि कटाहकोपिरस रिग्न्तर दामित कन्तव्यक्तिच्च करोति ।

अप न एकाय वेलाय सुणितिसन्न पञ्चलमेट्ठी आह—महासेट्ठि । यद्या तुम्हाक पण्ण दिस्ताव तुम्हाकं पुत्तस्य सारिका दिस्तान । वीधिसनी कटाक पुत्तस्य करवा तर्रमृड्यीकः विश्वववन बत्ता सेट्ठि तोसीत् । तथा त्राह्म कटाक्टम्म मुल उल्लोकेत् प्रसन्ते नाम गहाँसा । अवश दिवस महासक्ती सेट्ठियीतर स्वक्तिस्तिवा एटि अप्ता ! सीसे में अका विचिनाहीति बत्या तं आगल्या अका गहेत्या जिन पियवचन बत्या—क्यहि अप्सा ! कण्यित ते सार्याक्ष अप्ता से अप्ता हो अप्ता हो अप्ता सार्याक्ष सार्याक्ष सार्याक्ष सुण्या हो सुण्या ।

तात । मेट्रिपुत्तस्य अञ्जा दोसो नाम नत्यि केवल आहार गरहतीति ।

अम्म । निज्ञानमंस दुरुवातीलोव, अपि व ते अह तस्स मुख्यन्यनमन्न दस्सामि। त त्व साधुकं उम्माह्म्या मम पुनन्म भोजनकाले राष्ट्रस्मस उमाह्यनियामेनेव पुरवी ठत्वा बेदप्यासीति साथ उमाण्हा-पत्वा कनिवाह वसित्वा बारासीमधेच अनुमामि।

कराहकोणि बहु लादनीयभोजनीय आदाय अनुमण गन्या बहुं धन दन्या बन्दित्वा निवत्ति । सो बीधिमतस्य गनकालता पृद्राय अतिरेकमानी अदीति । मो एकदिवम मेट्टिपीनाय नानमग्यभोजन उपनेत्वा करुव्ह्यमादाय पत्रिवमन्त्रिया भल गरीहन् आर्रीम । मेट्टिपीना योधिसतस्म सन्तिके उम्महितनियामेन इम गायमाह —

बहुम्यि सी विकत्येय्य ग्रञ्जं जनपदं गती, ग्रन्वागन्त्वान दूसेय्य भुञ्ज भीगे कटाहकाति।

त्तर--बहुम्म सो स्वक्त्येय्य प्रष्ठको वनसर्व महोति यो अत्तती जातिभूमितो अञ्ज जनस्व गतो त्राति यत्यस्य जाति न जात्तिन हो वहुम्पि विक्त्येय्य वम्भनववनं वञ्जनवन देख्य प्रस्तामस्वान हुसैय्याति इस ताव बार ज्ञासिकस्य परिध्य नमावा शाविक्त्यस्य तत्त्रता कराहि प्रतित्वा पिट्टिक्यमूपाटनतो व लक्क्युण्ड कर्नानो व पूर्वेष्यान्त्र कर्मा क्ष्यान्त्वान हुसैय्य इस में क्ष्यान्त्वान क्षय्य इस में अनुजान्त्वा कर्मा क्षयान्त्र कर्मा क्षयान्त्र क्षया इस क्षयान्त्र क्षयान्त्र क्षया क्षयान्त्र क्षयान्य क्षयान्त्र क्षयान्त्र क्षयान्त्र क्षयान्त्र क्षयान्त्र क्षयान्य क्षयान्य क्षयान्त्र क्षयान्य क्षयान्त्र क्षयान्त्र क्षयान्य क्षयान्त्र क्षयान्य क्षयान्त्र क्षयान्त्र क्षयान्त्र क्षयान्त्र क्षयान्त्र क्षयान्य क्षयान्त्र क्षयान्त्र क्षयान्त्र क्षयान्त्र क्षयान्य क्षयान्त्र क्षयान्य क्षयान्य क्षयान्य क्षयान्त्र क्षयान्त्र क्षयान्य क्षयान्य क्षयान्त्

सेट्रिक्षीता पन एतमस्य अजाननती उप्पहितनियामेन व्यञ्जनमय पियण्डाहामि । कटाहको अद्धा सेट्रिना मम नाम्' आचिक्तित्वा एतिस्सा सम्य कांचन भविस्सतीति ततो पट्टाय पुन भत्त गरीहतु न विसहि निहीनमानो यथालद्व भ्रिज्जत्वा यथाकम्म गतौ ।

सत्था इमं धम्मदेसन आहरित्वा जातक समोधानेमि । तदा कटाहको विकरियकभिक्खु अहोसि । बारारासीसेटि पन अहमेवाति ।

कटाहकजातकं।

६. श्रसिलक्खणजातकं

त वेवेकस्स कश्याणील इदं सत्या जेनवने विहरन्तो कोसलरङ्गा असिलक्खगपाठकं ब्राह्मग्रं आरक्भ कवेसि ।

पक्च पस्रवस्य

सो किर कम्मार्टेष्ट रङ्का असीन आहटकाले बीच उर्पावकिष्या असिलक्सगं उदाहरित । सो येस हल्को सांगं लगति तस सिलक्सासम्ब्री महागनसंपुगीति वर्दति । येसे हल्का तां असीस अद-लक्काणीतं गर्दति । अयेको कम्मारो ऑस रुद्धा कोर्द्धा कोर्द्धा कार्याच्या पृत्तकारित्वा रङ्का असि आहिर । राजा ब्राह्मण पक्कोसायेच्या असि यीमंसाति आह । ब्राह्मणस्य असि आकड्विक्या उर्पासक्यनस्य मरिलजुण्णानि नाम प्रविश्वत्य ज्ञिरिकृतम्य उप्पदेषु । तस्य ज्ञिर्मणस्य नासिका असिमाराय परिहता द्विषा ख्रिक्य । तस्से पासिकाय विश्वत्रमावी भिक्यसम्बर्ध पाकटो आतो ।

अयेकदिवसं धम्मसभायं भिक्कू कर्षं समृद्वाभेत् आवृत्तो । रञ्जो किर असिनवकरापाटको ब्राह्मणो असिनवकरा उपसिक्क्तो नासिक छिन्नारसीति । सत्या आगत्वा कायनुत्य भिक्कवं । एतर्नहः कथाय सिपिक्ताति पुण्डिक्ता इसाय नामाति वृत्ते में भिक्कवं । इदानेवेसो ब्राह्मणो असि उपसिक्त्यनो नासिकाच्छेद पत्तो पन्नीप पत्तीयेवाति कर्या अतीत आहिर ...

प्रतीतवस्थ

अत्रोते वारागासिय बह्यदारे एउक कारिने तस्य असिनवस्यणाटको बाह्यणा अहोसीन, स्वय एक्ट्र्स्वस्य सिदसेब । राजा पत तस्य बेज्जे दग्धा नासिकाकोट कास्यक कारायेव्या तास्याय पटितासिक कारायेव्या तास्याय पटितासिक कारायेव्या तास्याय पटितासिक कारायेव्या प्रतासाय पटितासिक कारायेव्या प्रतासाय कार्येव्या सोणि उसीपि ते अस्यारे सित्तके पेव बहुआरिया ने एक्ट्रों बहुआप अञ्चास्यका पटिवडिक्स अहेत् । राजांचि असक्ये पक्कोसित्या यद्य आगितेव्यो इसम्य ज्वतस्य सामिकोद चीतन एक्ट्रमेव दव्या अभिनेकसम्य (३६३) करोमीति कर्या पूर्व चिन्नेति सद्य आगितेव्यो सक्यारिय कारावको येव एन्यम अञ्चा राजधीत्य अनेविक्य स्वयं अभिनेकसम्य स्वयं अस्यारेव्या अस्यारेव्याय स्वारंव्याय स्वारं स्वारंव्याय स्यारेव्याय स्वारंव्याय स्वारं स्वारंव्याय स्वारंव्याय स्वारं स्वारंव्याय स्वारं स्वारंव्याय स

राजकुमारो केन नुस्तो उपायेन मानुनधीनर राजगेहा नीहरायेन मक्त अवेय्याति चिन्तेन्तो अत्येना उपायोगि महाइम्बरिएक पक्कीमायेखा तस्या सहस्मसण्डिक दत्या कि मया बनव्यन्ति गुने अस्म ! अज्ज तथा करोनित्या अनिक्कीन नाम नित्य किञ्चिदेव कारण बत्या यथा मम मानुन्तो राजधीतर अन्तोयेहा नीहरा-येति तथा करोहीति आह !

लया, एनक काल तिवानित्व ओलोकलोपि नित्व, अह राजधीन-विक । राजधीनाय उपि कालकष्णि अस्य एनक काल तिवानित्व ओलोकलोपि नित्व, अह राजधीन- अनकदिवसे नाम रथ आरोगेत्वा वह आबु- धहुन्थे पुरिसे आदाय महल्नेन परिवारेन नुसान गल्चा मण्डलपीठिकाय हेट्टा सुनानमञ्जे मतमनूत्म निराज्या-देखा उपिराम्चेन राजधीतर ठेवेद्या गल्योदकथाना अहु नरमनेन नहारोत्वा कालकष्णि पवाहेस्सामीति एव क्वा राजधीन सुनान नेस्सामि । त्व अन्हाक तत्व गमनदिवसे अन्हेहि पुरेतरमेव बांक मिन्चुणणमावाय आवश्यक्रेवे सुनान नेस्सामि । त्व अन्हाक तत्व गमनदिवसे अन्हेहि पुरेतरमेव बांक मिन्चुणणमावाय आवश्यक्रेवे सुनान मिन्च सुनान प्रत्ये सुनान नेस्सामि । त्व अनुनान प्रत्ये सुनान प्रत्ये सुनान प्रत्ये सुनान प्रत्ये सुनान प्रत्ये सुनान प्रत्ये । अह तस्य अन्हेस सुनान प्रत्ये सुनान प्रत्ये । अह तस्य अन्हेस सुनान प्रत्ये सुनान प्रत्ये । तस्य सुनान प्रत्ये । अह तस्य मत्ये मान्ये । वस निम्म सुनान मान्ये । वस निम्म सुनान मान्ये । वस निम्म सुनान प्रत्ये अन्वर्या । वस निम्म सुनान प्रत्ये अन्तरमान प्रत्ये । वस निम्म सुनान प्रत्ये । वस निम्म सुनान प्रत्ये । वस निम्म सुनान प्रत्ये अनिम्म सुनान प्रत्ये । वस निम्म सुनान प्रत्ये । वस निम्म सुनान प्रत्ये अन्तरमान प्रत्ये सुनान प्रत्ये । वस निम्म सुनान प्रत्ये । वस निम सुनान प्रत्य । वस निम्म सुनान प्रत्य । वस निम्म सुनान प्रत्य । वस निम्म सु

१ रो० – राजूनं।

च बुष्णं नासिकाय पिक्वपित्वा द्वे तयो वारे व्यिपेस्यासि । तया व्यिप्तकाले मय राजधीतरं पहाय पलायिस्साम । अथागन्त्वा राजधीनर सीम नहापेत्वा सयम्पि सीस नहायित्वा तं आदाप अलनो निवेसन गच्छेस्यासीति ।

सो साध सन्दरी उपायोति सम्पटिच्छि ।

सा गल्का रञ्जो तसस्य आरोबेसि । गजा सम्पर्टिन्छ । राजभीतायपि त अन्तर आचिन्छत्, सापि सम्पर्टिन्छ । सा निक्कमनिद्दर्शे सुमारस्स सञ्ज्ञं रत्ना ग्रहलेन परिवारेन सृप्तान नक्क्सनी आरक्कमनुस्सानं भवजननस्य आह्-मया गजबीनाय सञ्जे ठपिनकाले हेट्टास्च मत्मानुस्ति सिपस्सित विपरस्ति विपरस्ति । सञ्ज्ञा निक्कसित्वा य पद्मं परिसस्सित तैमैव गहेस्सित अपपन्ता भवेद्यापाति ।

राजकुमारो पुरेनरं पत्त्वा बुत्तनयेनेव तत्य निपिज्य। महाइक्बिएका राजधीतरं उक्किपित्वा मण्डलपीठिकद्वान पण्डलती मा भाषीनि सञ्चापित्वा मञ्जे ठपेसि । तिस्म खणे कुणारो मस्त्विषुष्ण नासाय पित्रपालिका विषि । तेन खिपितमनेथेव "इडाइन्डागिका राजधीतर पहाय महारव रवमाना सञ्चपठम पत्तायि । तस्त्रा पनातकानती पद्वाय एकोपि ठात् समस्यो नाम नाहोसि । पहित्यहितानि आवृधानि छङ्ग्रेस्या स्वयं रला-स्थित ।

कुमारो ययासम्प्रस्तित सध्य कत्या राजधीतर आदाय अतनो निकेसन अगमासि । इक्खरिणका गल्का त कारणा रुञ्जो आरोबेसि । राजा पकतियापि सा समा तस्सेक्लाय पोसिना पायाले छट्टितलिप विय जात-नित्त मध्यिटिक्क्र्या अपरमार्ग मोतने यस्स रज्ज दत्या धीतर महादेवि कारसि । सो ताय सिंह समणवास जनमानो धर्मेन रज्ज कारसि ।

सीपि अमिननश्वरणपाठको तस्मेव उपट्राको अहोसि । तस्मेकविवम राजुप्ट्रानं आगन्त्वा पटिसुरियं ठन्वा अरहुक्तस्स लाखा विलीधि पटिनामिका भूमिय गति । यो लज्जाय अर्थोमुक्ती अद्वृत्ति । अय न राजा परिहासनी—आर्थयः । यो चिन्तियन् विपित नाम एकस्म कन्यारण होति एकस्म पापक । तुम्हेहि विपिनेत नाम एकस्म कन्यारण होति एकस्म पापक । तुम्हेहि विपिनेत नामा एकस्म कन्यारण होति एकस्म पापक । तुम्हेहि विपिनेत नामा एकस्म कन्यारण होति एकस्म पापका ।

तयेवेकस्स कल्याणं तथेवेकस्स पापकं,

तस्मा सध्यं न कल्याणं सध्यं वापि न पार्यकन्ति । तत्य--तथेवेकस्साति तथेवेकस्स । अयमेव वा पाठो । दुतियपदेपि एसेव नयां ।

इति सो हमाय गायाय त कारण आहित्त्वा दानादीनि पुरुश्नानि कत्वा यवाक्रम्म गतो । सत्या क्ष्मम् देसनाय लोकसम्मतान कत्याणपापकान अनेकसिकभाव पकामेत्वा जातक समोधानेसि । तदा असिलक्खण-पारको गनरिक अस्मतक्ष्मणपारकोव भाषिनय्याजा पन अहमेवाति ।

ग्रसिलक्खणजातकं ।

७. कलगडकजातकं

ते देसः तानि वरदूनोति इद सत्था जेतवने विहरन्तो एक विकत्थिकं भिक्खु आरब्भ कथेसि ।

प स्च पश्च वस्थ

तत्व द्वेपि बत्यू कटाहरूकातकसदिसानेव । इथ पनेस बाराएसीसेट्टिनो दासो कनण्डुको [३२४] नान कहाँसि । तस्स पत्नासिक्या पच्चनसोट्टिनो धीतर गहेत्वा महत्तेन परिचारेन वतनकाले बाराएसीसेस्टी परिखेशपेद्वापि तस्स बतट्टान कानानतो गच्छ कनण्डुक परिचेसाति कतना पुट्ट ^१ मुक्योतकं पेक्षेसि । सुक्रपोतको हतोभिन्नो च चत्तो त नगर सम्पापुरिए ।

तिसमञ्च कालं कलण्ड्को नदीकील कीलितुकामो बहु मालागन्धविलेपनञ्चेव लावनीयमोजनीयानि व गाहापेल्या नदि गस्त्वा मेड्डिभीताय गद्धि नाल आकरह, उदके कीलर्ता । तिसमञ्च देसे नदीकोल कीलता हस्तात्रकारित तिलिक्शमेल्यपित्वार्ति और पिवन्ति, तेन तेमं दिवनभगामिस उदके कीलन्तानं सीत न समाति । अय पन कलण्डुको वीराण्डूस गहेल्या मृख विक्वालेल्या न और नुद्दुभित, नुद्दुभन्तोपि उदके अनुद्दुभित्वा सेड्रिभीताय सीसे नुद्दुभति ।

सुक्रोतकोपि नदीतीर गरवा एकिस्सा उद्दुम्बरसास्याय निर्सीदत्या ओलोकेनो कलण्डुक सञ्जानित्वा सेष्ट्रिभोताय सीसे मृद्कुम्स दिस्सा—अरे, कलण्डुक ! दास ! अननो जाति च वसनद्वान च अनुरमर, सीर-गण्ड्स गहेल्वा मृख विक्लालेट्सा जानिसम्पन्नाय गुलसंबद्धाय नेष्ट्रियीनाय सीमे मा नुरठुम, अननो पमागा न जानासीति वस्त्वा इम गायमाह. —

> ते देसा तानि बल्यूनि ग्रहञ्च बगगोचरो, ग्रनुविच्च स्रो तंगाहेय्युं पिव स्रीरं कलण्डुकाति ।

नत्त्व — ते देसा तानि वस्त्वमीति मातुक्षित्र मन्धाय वदित । अयमेत्व अधिपायो । यत्व ने विनत न ने व्यत्तियमीतादीन कृष्ण्यदेसा । यत्व वासि पतिद्वितोतानि न व्यन्तियमीतादीन कृष्ण्यवन्तृनि अवस्वो दासि-कृष्ण्ययः त्व वसि चेव पतिद्वितो चाति । सहस्वत्यनपोचरो तिरच्छानगतोपि गृतमन्य जानामीति दीर्यान । सन्वर्षास्त्व को तं गर्थस्युनित एव अनाचर रहामा नया गर्याच्या आरोचिन अनुविच्च जानित्वा तव सामिका तालेखा चेव नक्षणाहतञ्च क्यात गर्थस्य ग्रहेस्य गर्सस्यन्ति , नमा अत्तनो पमाग् जान्या मेद्वियोताय मीसे अटटिभित्वा पिव बीरे । क्रस्युक्षसित त नामेनात्वपति ।

कलण्डुकोषि मुक्रपोतकं सञ्जानित्या म पाकटं करेय्याति भयेन—एहि सामि [।] कदा आगतोमीति आहः।

मुक्तों न एस म हितकास्ताय पक्कोर्यात गीक पन में क्लेच्या मारेतुक्यांगील ज्ञावाब न में नया अत्थोति तो उपनित्वा बारागुसिय पत्त्वा प्याविद्य मेंहितो वित्यारेन करीत । संदर्श अपून तेन कर्नान बन्दा तस्स आग्य कारेब्बा बारागुसिसेब त [३=६] आनेला दासपरिभोगेन परिम्मित्र ।

सत्या इस धम्मदेसन आहरित्वा जातक समोधानेसि । तदा कलण्ड्को अय भिक्क अहोसि । बारा-गासिसेट्टी पन अहमेवाति ।

कलण्डकजातक ।

८ विजारवतज्ञातकं

यो वे धम्मं धक्रं कत्थाति इदं सत्था जेतवने विहरत्तो एकं कुहकभिक्त् आरक्भ कपेसि । तदा हि सत्था तस्स कहकभावे आरोचिते न भिक्तवे ! इदानेव पुस्वेपेस कहको येवाति बत्वा अतीतं आहरि —

annia anno

अतीते बाराणिसय बहादतं रज्य कारेले बोधिसतो मूमिकयोनिय पटिमाँच गहेला बुढिमन्वाय महावरीरो कूरुच्छापक्षीयलां हुत्वा अनेकस्तमूमिकप्रिवारो अरुञ्जे विहर्गते । अयेको सिगालो हतो-विदा चिवरलो न मृसिकय्य दिस्वा ऱ्या मृसिका वर्ष्टेस्य वादिस्सामोति चिन्तेला सूगिकान आसपस्सा-विदूरे मृरियाभिमुलो वातं पिवलो एकेन पादेन अद्वासि । बोधिसतो गोचर चरमानो त दिस्बा मीलवा एको भविस्तनीति तस्स मिलक गल्या—मन्ते ! त्व को नाभीन पुष्कि ।

धम्मिको नामानि ।

चनारो पादे भीमय अटपेत्वा कस्मा एकेनेव ठितोसीति ?

मयि चतारो पादे पठविय ठपेन्ते पठवी बहिन् न सक्कोति तस्मा एकेनेव निद्रामीति ।

मुख विवरित्वा कस्मा ठिलोसीति ?

मय अञ्जा न भक्खयाम, वातमेव भक्क्यामाति ।

अथ कम्मा सुरियाभिमुखो निहुसीति ।

सरिय नमस्सामीति ।

बौधियसो तस्म वचन सुत्वा सीनवा एको भविस्मतीति ततो पट्टाय मुस्किकाकोन सिंढ साथ पात तस्म उपहान पच्छित । अयस्य उपट्टान करवा पमनकार्य सिमात्वी स्वव्यच्छिम मुस्किक पहेल्वा मेस साहित्वा अवस्थी हित्वा । अपस्य उपट्टान करवा पमनकार्य सिमात्वी स्वव्यच्छिम मुस्किक पुत्र्वे अम्हास्त्र अवस्थी हित्वा । सुत्र प्रविच्या । सिमात्वा केन नृत्वो कारायेन मुस्कि तन्तु गताित चिन्तेनो सिमाने आसडक उपरेखा वीम-सिमाप्ति गिला उपट्टानकार्य सेममुक्ति पुत्र जो स्वय्यच्या प्रविच्या स्वय्यच्या स्वय्यच्या प्रविच्या प्रविच्या प्रविच्या प्रविच्या प्रविच्या प्रविच्या प्रव्याच्या प्रविच्या प्याप्य प्रविच्या प्याप्य प्रविच्या प्य

यो वे धम्मं घजं कत्वा निगूल्हो पापमाचरे, विस्सासयित्वा भसानि बिलारं नाम तं वतन्ति ।

नत्व-यो देति शानियादिमु यो शोचंदव । सम्भं धन्नं करवाति दमकुमनकम्मपथम्म धन करिस्वा त करोत्तो उदमापेत्वा दम्मेनोति अत्यो । विस्तासिक्वाति भीनवा अयित सञ्जाधः सञ्जानिक्सासाति करवा। विसार नाम तं वतन्ति त एव धम्म धन्न कत्या रहो पापानि करोनस्मेव वन केरादिकवन नाम होनीनि अत्यो।

मूमिकराजा कथेन्तों कथेन्तोंपेव उप्पातस्या तस्म गोवाय पतित्या हनुकरम हेट्ठा अन्तोगन्यातिय डमिस्वर गन्यतानि फानेन्या जीविनवक्य पार्वित । मूसिकगणो निर्वान्तवा क्रियान मुस्थुक्ति व्यक्तिस्या अगमागि । पठमानाव किंग्स्म मस लीभेनु, पक्क्षा आगना न नांगम् । नतो पट्ठाय मूसिकगणो निक्सयो जातो । सरक्षा स्य प्रमादेशन आहित्या जानक समोधानेनि । नदा सिगानो कुहक्तिभक्ष्यु अहोनि । मूसिकराजा पन अह-भेवाति ।

विलारवतजातकं ।

१. स्वा०- अनेक सतन्तिकाहि परिवृतो । २. स्वा०- विचरति ।

६. अश्चिकजातकं

नायं सिका पु श्वाहेत्ति ददं सत्या जेतवने विहरन्ती कृहकञ्जोव भिक्कं आरक्भ कथेसि । पण्जाप्रभवत्य हेट्रावतसदिसं ।

प्रतीतवत्थ

अतीर्तास्त हि बाराणिय बह्यदत्ते रञ्ज कारेन्ते बोधिसतो मूसकराजा हृत्या अरञ्जे सवित । अवेको सिवालो दवडाहे उद्विते पत्तायिनुमसक्कोन्तो एकस्मि रुक्त्ये सीस आहुन्च अद्वासि । तस्स सकलसरीरे लोमानि क्रायिषु । रुक्त्ये आहुन्च टिल्हानं पन मत्यके चूना वित्य योक्तानि लोमानि अटु यु, सो एकदिवसं सोण्यिय पानीयं पिवस्तो छाय ओलोकेत्तो चून दिस्या उपप्त दानि भे प्रश्नुशृत्ति अरङ्ग विकरत्तो त मूसिकार्दार दिस्वा इमा मूसिका वञ्चेत्वा सादिस्मामिति हेट्टा चूननवेन अविदृरे अद्वासि । अय न वोधिसत्तो गोचराय चरत्तो दिस्या मीलवानि सञ्जाय उपसङ्कामित्वा त्व को नामोमीनि पृच्छि ।

अह अभिकभाग्द्वाजो नामानि । अय करमा आगतोसीति ? तुम्हाकं रक्षस्यास्यायानि । किन्ति कत्वा अम्हे रक्षिक्ससीनि ?

अह अद्रगुटुमएम् नाम जानामि, तुम्हाक पानोब निक्कमित्वा गोचराय गमनकाले एनकानि शगोत्वा पच्चागमनकालेपि गगोस्सामि । एव साय पात गगोलो रविखन्मामीति ।

तेनद्रि रक्स मातलाति ।

से साथ्ति सम्पटिच्छस्त्रा निक्समनकाले एको इं तयोनि गगोस्त्रा पच्चागमनकानेषि तथेव गगोस्त्रा सक्वपाच्छ्रम गहेल्वा कारति । सेस [३८८] दुरिसमिदिसमेव । इथ पन सूमिकराजा निर्वानत्वा ठितो—यां बीमकभारद्वाज ! नाय तब घम्ममुधम्मताय मस्यके चूना ठिप्ता कृष्टिक्कारगा पन ठिपताति बन्दा इम गावनातः :—

> नाय सिका पुञ्ञाहेतु घासहेतु श्रय सिका, नगृहरुगणन याति श्रकंते होतु अग्गिकाति ।

तत्थ--वश्चर्रभणमं मातीति अङ्गाटुगणना बुच्चति । अय मृसिकगणो अङ्गुटुगणन न गण्छति न उपेति न र्रति परिकब्द गच्छतीति अस्यो । स्वस्त हे होतु धरिषकाति सिगान नामेनानपन्नां आह । एनावना ते अस होतु न दनो पर मेले स्वादिस्मति अस्तिहि वा नया वा सिंह मवासो अस होतु न मय दर्शान तया मद्धि वसिस्मामाति अस्यो । सेस पुरिमसदिसमेव । सत्या इस घरमदेसन आहरित्वा जानक गमोधानेन्म । तदापि निगालो अय भिम्ब अहोति । सुमिनराज्ञा पन अहमेवाति ।

अग्गिकजानकः।

१०. कोसियजातक

यया बाबा च भुः जस्पूति इद सत्था जेतबने बिहरन्तो एक सावित्यय मातुगाम आरब्भ कथेमि ।

पच्चपद्मवत्य

सा किरेकस्स सद्धस्य पसप्रस्स उपासकबाह्यणस्स बाह्यणी दुस्सीला पाषधस्मा गर्नेन अतिचरित्वा दिवा किञ्चि कस्म अकत्या गिलानालयं रस्सेत्वा नित्यनमानां निपञ्जति । अय न ब्राह्यणो--किनो महे । अकासकिन पुण्डि ।

बाता मे विज्ञभन्तीति ।

अय किल खुबड़तीति ?

सिनिद्धमञ्ज्ञानि पर्गातपर्गातानि यागुभत्ततेलादीनीति ।

बाह्यगो य य मा इन्छर्ति त त आहरित्या देति । दामो विय मध्यकिन्वानि करोति । सा पन बाह्य-एरम्म मेह ए थिट्टुक्साने मिपज्यित बितिनवस्तवाने जारिष्ट सिंड वीनितामित । अय बाह्यपा इतिस्ता सरीरे विज्ञमत्वातान परियमो न पञ्चात्मति एकदिवम प्रमामावानि वाद्य केनवन मन्त्रा इत्यार देवित च विद्यात एकमन्त्र निर्मीदित्या कि बाह्यपा । न पञ्चासमीति वृत्ते—बाह्यगिया किर मे भन्ते । सरीरे वाना विज्ञमति न्याह तस्या त्राप्यनेनाधील वेब पर्गोतपर्योजभोजनानि च परियसामि सरीरमस्ता घन विय्व-मश्रद्धविद्यमा जान वानरोगस्य पन परियनो । पञ्चायित अह न पटिजमान्तीव इशाममस्स औकास न नमामिति ।

सत्या ब्राह्मार्ग्या पापभाव ञरवा ब्राह्माग् । एव निषयसम् मानुगामस्य रोगे अवृतसन्ते इद्याञ्चदञ्च भेसञ्ज कात् बहुतीति पुव्येषि ते पण्डितीह कथित भवसङ्खेपगनना पन न सल्तनक्षेत्रीति वस्त्रा तेन याचितो अनीत आर्क्षार $-[3-\epsilon]$

द्यतीतवस्य

अनीने बारागासिय ब्रह्मदने रज्ज कारेले बोधिसती ब्राह्मणमहामालकुले निव्यत्तित्वा वयप्पती तकक-मिनाव मश्वीनपानि उपाण्डित्वा बारागामिय दिसापाभोषणी आचरियो अहोमि। एकसतराजवानीमुँ खत्तिय-कुनारा च ब्राह्मणकुमारा च मेर्यूयने तस्मेव सन्तिके मिणं उमाण्डलि । अयेको जनपदनाशी ब्राह्मणो बोधि-सन्तस्स सन्तिके तयो बेदे अहारस च विज्जाहानानि उपाण्डित्वा बारागासियञ्जा कुरुम्ब सन्त्रदेखा दिवसे दिवते इत्तिकन्तु बोधिमनस्म मत्त्रिक आगन्ध्यति । तस्म ब्राह्मणी दुस्सीना अहोसि पाष्टममाति सब्ब पण्ड्-राष्ट्रसन्त्रमुस्तिमेव ।

वोधिमनो पन न इमिना कारणेन श्रेषादगहणाय श्रोकात न नशामीति बुत्ते सा मागाविका इम क्वत्यता निपन्नजीति प्रवास निप्ता रोगान् स्वीक्ष भेगज्ज आर्चित्रस्यसामीति विनेत्या श्राहु—तात त्व इतो पहुष्य नम्मा मिश्बीरम्मादीति मा श्रवामि गोमुने पर प्रवासाणीति निप्तावीति च प्रविकारित कृशेल्या नवतम्बनोहमाजने पित्रपित्वा लोहनप्य गाहापेत्वा रज्जु वा योत्तं वा क्वत्यन वा गहेत्या इद ते रोगस्त अनु-स्वर्षक्त भेग्नाज इद वा पित्र उद्घाय वात्या भाग्नतमस्य अनुस्वर्षक्ष कम्म करोहीति बत्वा इम गाय बदेख्यावि । स्व भेग्नज्ज न पित्रति अप न रज्जुवा वा योनेन वा नताय वा कतित्व पहारे पहरित्वा केमेम गहेत्वा आकर्षित्व कत्यन्त पोर्थव्यामि । ते स्वराज्जोव उद्घाय कम्म करिन्मत्वीति ।

१. स्या०---निट्ठुभमाना । २ रो०---राजधानीसु । ३. स्या०---पञ्चपणां । ४. स्या०--- कोटटेरवा ।

सो साथूति सम्पटिच्छित्वा बुत्तनियामेनेव भेसज्जं कत्वा—भद्दे ! इमं भेसज्जं पिवाति आह । केन ते इदं आचिक्सितन्ति ?

आचरियेन भद्देति।

अपनेहितं न पिविस्सामीति ।

माराको—न त्वं अत्तनो रुनिया पिविस्समीति-रुज्युं गहेत्वा अत्तनो रोगस्स अनुच्छविकं भेसज्जं वा पिव यागुभत्तानुच्छविकं कम्म वा करोहीति वत्वा इम गायमाह .—

यया वाचा च भुञ्जस्तु यया भुतञ्च भ्याहर, उभयं ते न समेति वाचा भुतञ्च कोसियेति।

तत्य—यदा बाखा च भूम्बस्तृति यया ते बाचा तथा च भू-व्यस्तु बाता मे विक्मत्तीति वाचाय अनु-कृष्टिकमेव करवा भू-व्यस्तृति अत्यो । यया चाचं बातिति पाठो युव्यति । यथा बाखायातिष पठिन । सक्त्य व्ययमेवत्यो । यथाभूतव्य व्याहराति य ते भुतं तस्य अनुक्ष्टिकमेव व्याहर अरोगम्हीति वस्ता गेहे कल्लकमम करोहीति वस्तो । यथाभूतव्यातिष पाठो । अयवा अरोगस्हीति यपापुत्तेव बस्ता कम्म करो-होति अत्यो । वभयनते [३६०] न समेति वाचा भूतव्य कोसियेति या च ते अय वाचा वाता म विक्मत्तीति यव्य ते इदं पत्यति भोजन भूनं इदं उभयम्य नुष्ट्र न समेति तस्मा उद्घाय कम्म करोहि । कोसियेति त गोलेन आस्त्रपति ।

एवं बुने कोसियकाह्माणी भीता आचियित उस्मुक्त आपक्रवातनी पट्टाय न सक्का मया एव वञ्चेन् उट्टाय कम्मं करिस्सामीति उट्टाय कम्म अकासि । आचित्येन मे दुस्सीलभावा ञालो न दानि सक्का दती पट्टाय पुन एक्क्यं कार्तुन्त आचरिय गारवेन पापकम्मतीपि विरमित्वा सीलवती अहोति ।

सापि ब्राह्मणी सम्मासम्बुद्धेन किर्राम्ह ञाताति सत्थरि गारवेन न पुन अनाचार अकामि । सत्था इम धम्मदेमन आहरित्वा जानक समोधानेसि । नदा जयम्पतिका^{रे} पन इदानि जयम्पतिकाव । आवरित्यो पन अदमेवाति ।

> कोसियजातकं। कसनालियगो तेरसमो।

१ स्या०-कोलियब्राह्मणधीता। २. स्या०-जायपतिका।

१४. असम्पदानवग्गवरणना

१ असम्पदानजातकं

म्रसम्पदानेनितरीतरसाति इद सत्था वेलुवने विहरन्तो देवदत्त आरब्भ कथेसि ।

पच्चपञ्चवत्थ

तिस्म हि काले भिक्त्यू प्रम्मतभाय कच समुद्रापेसु आबुद्धो । देवदत्तो अकतञ्जू तवागतस्म गूरां न जानातीति । मत्या आगत्वा कायनुत्य भिक्कावे ! एतर्राह कवाय श्रोन्नस्मिति पुण्छित्वा इमाय नामाति बुन्ते न भिक्त्यते । डदातेव देवदनो अकतञ्जु पृथ्वेषि अकतञ्जा येवाति वत्वा अतीत आहरि —

प्रतीनबस्थ

जतीने मगघरट्ठे राजगहे एकहिम मगवरट्टो राज कारेले बोधियत्तो तस्सेव सेट्ठी अहोत्ति असीति-कोटिवियत्त्रो महत्वसेट्ठील नामेन । बाराग्रसियिन पितिवसेट्ठी नाम असीतिकोटिविपसोच अहोत्ति । ते अञ्चामञ्ज महाया अहेम् । तेमु बारागानिय पितिवसेट्टिम्स केनचिर्देक काराग्रीयेन महत्त भय उप्पिज । सब्ब सापनेय्य पित्रायि । मो देलिट्टो अप्यटिनरगां हुल्या भिष्य आयाय सहस्वतेट्टिपच्चय कत्या बाराग्रसितो निक्कपित्या परसाय राजगह पत्या सहस्वनेट्टिम्स निवसन अगमात्रि । सो न दिस्याव सहस्रयो से आगतोति पिरस्वतिच्या वक्तारसम्मान कारेल्या कतिपाह बीतिनाभेत्या एकदिवस—कि सम्म । केनस्वेन आगतोसीति परिच्या

भयम्मे सम्म । उप्पन्न [३११] सब्ब धन परिक्लीगा, उपत्थम्भी मे होहीति ।

साथु सम्म । मा भावीति भण्डामार विवरापेतवा चतालीस हिरञ्जकोटियो दापेत्वा सेसिम्प परि-कृद्रपरिवार स्वत्र अत्ततो सत्तकः सविञ्जाणकमविञ्जाणक मण्डके भिन्तिया उपकृष्ठमेव अदासि । स्रो त विभव आदाय पन वाराणांनि रत्नवा निवास कर्पनी

अपरमासे सडक्षमें हुन्मिंप तादिसमेव यय उप्पिष्ठ । सो अन्तो पटिनग्ण उपचारेन्त्रो महायस्त म महा उपकारो कतो उपहृत्विमवो दिख्यो । न सो मं दिश्य पिरुव्यक्तिसति तस्य सन्तिक साम्सम्मिति चिनेत्वा भिरत्य आदाय परमाव वारागांचि गरन्ता भरित्य आह—महे । नव मया सद्धि अन्तरवीचिया गम्म नाम न तृन मया पेसिनयान आरुक्त महन्नेन परिवारेन पच्छा आर्गामस्ति । याव यान पेत्रेमि ताव एत्वेव होहीनि वस्ता न मानाय ठरेत्वा स्य नगर पविमित्वा सेहुस्म घर गरन्त्रा राजगहनगरतो तुम्हाक महायो सङ्कल-महेशी नाम आग्तोति आरोचायेसि । मे आगच्छत्नीन पक्कोमायेत्वा त दिस्या नेव आमना बहुत्ति न पटिसन्यार अकानि केवन—किमल्य आग्तोमीति एच्छि ।

नुम्हाक दम्मनन्थ आगनोम्होति ।

निवासो पन ने कह गहिनोति ?

न ताव निवासद्वान अस्यि, सेट्विघरिगम्पि सालाय ठपेत्वा आगतोम्हीति ।

तुम्हाक इथ निवासहान नित्य, निवास गहेत्वा एकस्मि ठाने पचापेत्वा सुञ्जित्वा गच्छ्य । पुन अस्हे मा पस्मित्वाति वत्वा सरह सहायस्स दसले^र बन्धित्वा एक बहलपलापतुम्ब देहीति दास आरगोपीस ।

त दिवस किर सो रननात्रीत सकटसहस्ममन ओपुनापेत्वा कोष्टागार पूरापेनि । बत्तात्रीसकोटिश्वन गहेरवा आगतो अकतञ्जा महाचोरो महायस्म तुम्बमने पत्रापे दापेमि । दानो पच्छिय एक पत्रापतुम्ब पिक्स-पापेरवा बोधिसत्तस्स सन्तिक अगमासि ।

बोधिसत्तो चिन्तेसि अय असुष्पुरिसो मम सन्तिका चत्तानीमकोटिधनविभव लभित्वा इदानि पला-पत्नवं दायेसि, गण्हामि नृत्वो मा गण्हामीनि। अथस्म एतदहोसि, अय ताव अकतञ्जा मित्तदुभी कतविनासक- भावेन मया सर्बि मित्तभाव भिन्दि सन्दाह ऐतन दिन्न पलापतुम्ब सामकत्ता न गण्डिस्सामि अहाँग्प मित्तभाव भिन्दिस्सामि । अन्यवाला परित्तक लढं अगण्डला मित्तभाव विनासेन्ति । अह पन एतेन दिन्न पलापतुम्ब गहेरवामम बसेन मित्तभाव पतिहुग्पेस्सामीति । सो पलापतुम्बं दसन्ते बन्धित्वा पासादा औरुव्ह साल अगमासि ।

अथ न भरिया--- कि ते अय्य ! लद्धन्ति पुन्छ ।

भद्दे ! अम्हाक सहायो पिलियसेट्ठी पलापतुम्ब दत्वा अम्हे अञ्बेय विस्सज्जेसीति । [२६२] सा-अय्य ! किमत्य अग्गहेसि ? कि एत चतालीसकोटियनस्स अनच्छिकिस्त रोदित आगिम ।

कोषिसती—भहें! मारीद अहं तेन सिंह मित्तभाव-भेदमयेन मम बसेन मित्तभाव उपेतु गण्डि । व्यक्तिमान-भहें! मारीद अहं तेन सिंह मित्तभाव-भेदमयेन मम बसेन मित्तभाव उपेतु गण्डि । त्वं किकारणा सोवनीति बत्वा इम गण्यामाः---

ग्रसम्पदानेनितरोत्तरस्स बालस्स मिलानि कली भवन्ति.

तस्मा हरामि भसं बडढमानं मा मे मिलि भिज्जित्य' सस्सतायन्ति ।

तत्य-अकाण्यसंनाति अस-पादानं राज्योग सांचा । जाहरांनाति अत्यो । इतरोतरसाति पद कस्तवि जामकालामकनापि । बालस्त मिलानि कती भवतोति दण्यस अञ्ज्ञास मिलानिवानि-तानि कालकांग्यसंदित्तानि होन्ति, भिज्यन्तीति अत्यो । तस्वा हरामि मूनं बङ्ग्यानिक नेन कारणांन्त्र सहायंन स्त्र एक पत्राप्तुम्ब हरामि गण्डामीति दस्त्रीति । मानितिह अटुभ नासीन नाम । चतुन्न अङ्बानान वतस्त्री व नामिन्न पुत्रो नाम, नेन वृन पत्राप्तुम्बिन् । सा मै मिलानिविज्य सस्त्रतायन्ति मम महायेन सहि मेन मा निजन्य सस्तता व वय हानुति अल्यो ।

पूर्व चुलेपि बेहिमिरिया रोदनेव । तस्यि क्यां सहस्यवेहिना पिनियमेहिस्य दिश्रो कम्मन्तदामी साला-हारेन आगण्डको सेहिमीरियार रोदनसद सुन्या साल पविसित्या कननी सामिक दिन्या पादेव पतिन्य रोदित्या किन्यत्या किम्यव क्यान्यत्य सामित्रिय पुण्डि । मेट्टो स्था आरोपेवि। अम्मन्तदासी होतु सामि । मा चिन्ते-वाति उभीपि अस्तासेत्या अननो गेहं नेत्या गन्धोदकेन नहापेत्या भोजेत्या मामिका वो आगताति सेसदाने सक्तिपात्यता स्टेसला किरास बीरितमील्या मन्त्रे दिसे महेत्या गज्ञकामा मन्त्रा उपरव अकासि । राजा एक्हां-साह्याति सिन्यति पृण्डिया हो सक्त त पर्वाल रूडणो आरोपेब्स ।

राजा तेस वचन सृत्वा उभोषि सेट्ठी पक्कोसापेत्वा सङ्खर्मीट्ठ पुच्छि---सच्च किर तया महामेट्टि ! पितियसेट्रिस्स चनालोसकोटिथन दिश्रन्ति ।

महाराज ! मम सहायस्म म तक्केरबा राजगह आगतस्म न केवल घन सब्ब विभवजान सविञ्ञागा-काविञ्ञाराक द्वे कोट्टासे करवा समभागे अवासिन्ति ।

राजा सञ्चमतन्ति पिलियसेट्टि पुण्छि।

आस देवाति ।

तया पनस्स तब्कां व तक्केत्वा आगनस्म अन्यि कोचि सक्कारो वा सम्मानो वा कतोति ?

सो तुण्ही अहोसि ।

अपि च पन ते एतस्स पलापतुम्बमत्त दमन्ते पक्षिणपापेत्वा [३६३] दापित अर्ल्याति ?

तम्पि सुत्वा तुण्ही येव अहोसि ।

राजा कि कातब्बन्ति अमन्त्रेष्टि सिंढ मन्तेत्थात परिभासित्वा----गण्ड्य पिलियसेट्टिस्स घरंसब्यं विभव सङ्खसेट्टिस्स देवाति आह ।

बोधिसत्तो—महाराज ! मध्ह परसन्तकेन अन्थो नित्य मथा दिश्रमत्तमेव पन दापेशांति ।

राजा बोधिसत्तम्स सन्तक दापेसि । बोधिसत्तो सब्ब अत्तना दिम्नविभव पटिलिभित्वा दामपरिसपरि-वतो राजगृहसेव गन्त्वा कटम्ब सण्डपेत्वा दानादीनि पुरुष्टानि कत्वा यथाकम्म गतो ।

मत्या इम थम्मदेमन आहरित्वा जातक समोधानीम । तदा पिलियमेट्ठी देवदत्तो अहोसि । सङ्घ्य-सेट्ठी पन अहमेशित ।

द्य सम्पदातजातकं

२. पश्रभीरकजातकं

कुसल्पवेसे वितिया दल्हाय चाति इद मत्या जेतवने विहरन्तो अजपालनित्रोधे मारधीतान पलोभन-सुत्तन्तं आरक्भ कथेति ।

पच्चपन्न वत्थ

भगवता हि आदितो पट्टाय---

बद्दल्लमाना आगञ्छुंतण्हा च घरती रगा, ता तत्थ पनवी सत्या तलं भटठं व मालतोति

एव याव परियोत्ताना तस्स मुनानस्स कथितकाले धम्मसभाय सिश्चपतिना भिक्क् कथं समुद्रापेसु— आवृत्तो ! सम्मासम्बुद्धो मारधीतरो अरुतस्तानि दिव्बरुपानि मापेखा पत्नोभनत्याय उपसङ्कमित्तयो अर्मकीनिपि उम्मीलेखा न ओलोकेसि । अहो ! बृह्बबल नाम अच्छिरियन्ति !

सत्या आगत्त्वा कायनृत्य भिक्कवं । एतर्गह क्याय सिम्निस्माति पुष्टिकृता इमाय नामाति वृत्ते भिक्तवं । दश्रानि मञ्ह हव्यासं वेष्ट्रिया मध्यप्रजान पत्तस्य मार्ग्यानात अनोलोकन नाम अण्डारित अहं हि पुख्ये बोधि परियोगमानो सिक्कलेनकालेषि अभिगद्धका दिव्यक्रपम्पि इन्द्रियानि भिन्दत्वा किसेसबसेन अनोलोकेत्वा गन्त्वा महाराज्य पापुणिन बत्वा अनीत आहरि —

ग्रतीसबस्य

त्रतीतं वाराणामिय ब्रह्मदर्भ रज्य कारेले बोधिमती भातिकमनस्म कनिट्ठो अहोसीति । सब्ब हुंद्वा तक्किमताजातके वननवंत्रेन विवारतब्ध । तथा पन तक्किमतानगण्यामित्रं बहिनगरं मालाघ बोधिमत्त उपमदक्तिमता यावित्या रज्य पिटक्युपेश्वा अभिमेक कते तक्किमितानगण्यामिनो नगर देवनगर विध च राज्यसन रूप्यभव विव च अवस्कर्कात्म् । तदा पन बोधिमतो नगर पिवित्या राज्यसने राणादे महातक समस्माणिनमेतन्त्रत राज्यसने प्रवार इत्यार हित्यस्य सम्माणिनमेतन्त्रत राज्यसने प्रवार हित्यस्य । तथा पन बोधिमत्रती नगर पिवित्यस्य राज्यसने राणादे महातक समस्माणिनमेतन्त्रता ननवर्षाम् कामस्माणात्री कामस्माणात्री न विवारत्य नवस्त्रता सामस्माणात्री स्वराप्त्रकारणिनाणित्रा परिवारत्य अट्ठान् । देवन्द्रत्यिकामा सोमस-स्वराणा नावित्यस्य । नवस्त्रता नवस्यानक्षराप्तिमाणित्र । त्राप्तिकानामस्मयक्षा नवस्त्रीत्वारीतित्र पर्योतेषु । त्रीत्या । दित्यस्य नवस्त्रता नवस्त्रता नवस्त्रता । त्राप्तिकाम् वास्त्रत्य प्रवार कामस्मा नावित्यस्य । त्राप्तिकाम्य पर्वार नवस्त्रता । विवारता निर्माणात्र स्वराप्तिकाम् पर्वार ताम प्रवित्यस्य एकितम्राय अहोति । वीधिमत्तो त अन्ति । त्राप्ति । विवारता प्रवित्यस्य पर्ता अतिहास पर्वार स्वराप्ति । विवारता विवारता पर्वार प्रवार स्वराप्ति । विवारता पर्वार प्रवार स्वराप्ति । विवारता विवारता विवारता विवारता विवारता । विवारता विवारता विवारता विवारता विवारता । विवारता विवारता विवारता विवारता विवारता विवारता । विवारता विवारता विवारता विवारता विवारता विवारता । विवारता विवारता विवारता विवारता विवारता विवारता विवारता । विवारता विवारता विवारता विवारता विवारता विवारता । विवारता विवारता विवारता विवारता विवारता विवारता विवारता । विवारता विवारता विवारता विवारता विवारता । विवारता विवारता विवारता विवारता विवारता । विवारता विवारता विवारता विवारता विवारता । विवारता विवारता विवारता विवारता विवारता विवारता । विवारता विवारता विवारता विवारता

कुसल्पदेसे चितिया दल्हाय च ब्रवस्थितता भयभीष्ताय च, न रक्छसीनं वसमागिमम्हा स सोस्थिभावो महता भयेन मेति।

 ३४२ जातकटठकया

वृत्तं होति । **स सोरिवभावो महता भयेन मेति** सो मे अयं अज्ज महता भयेन रक्खसीन सन्तिका पत्तब्बेन दुक्खदोमनस्सेन सोरिवभावो खेमभावो पीतिसोमनस्सभावो येव जातोति ।

एव महासत्तो इमाय गावाय धम्म देसेत्वा धम्मेन रज्जं कारेत्वा वानादीनि पुञ्जानि करवा यथाकम्म गतो । सत्वा इम धम्मदेसन आहरित्वा जातक समोधानेसि । अहं तेन समयेन तक्कसिलं गन्दा रज्जप्पत-कृमारो अहोसिन्ति ।

पञ्चभी रक्त जातकः ।

३. घतासनजातकं

खेमं यहिन्ति इदं सत्था--जेतवने विहरन्तो अञ्जातरं भिक्खुं आरब्भ कथेसि ।

पच्चपन्नवत्थ

सो हि भिक्कु तथ्यु सन्तिके कम्मट्टान गहेरवा पक्कता गरुवा एक गामकं उपनिस्साय आरञ्जे तेमामते इसं उपपित्वः। तस्म पटमामंथेव पिष्युच्य पिष्टुस्स पण्याता भागियवः। से सत्तरुगमामानेव फिलमत्तो उपट्टाकानं जीविकाः। ते होतु भन्ते । यण्याता करिरमाम, कमाम नाव, वपाम तावाति आदीनि वस्ता तेमारा बीतिनामेसु । तो तेनासनसण्याभावेन कम्मट्टान सत्यक पामेतु नासिक्व । सो निमित्तमत्तिम् अनुणादेक्ता वृत्यवस्तो जेतवन गरुवा सर्तार वित्यत्वा एकमत्त निसीदि । सत्या तेत सिद्ध पिटसम्यार कर्या किन्नवो ने मिक्य । कम्मट्टान नापणा कानित पृष्टिक् । तो आदितो प्रदाय अनुणादेक्त कर्योत् ।

अ. सत्या—पुश्वे को भिवलु ! तिरच्छानापि अननो सप्पाधामणाय कात्वा सप्पाधानाने विसन्या असप्पायकाले वसनदुाल पहाथ अन्त्रात्व अगमस्, त्व कम्मा अननो सप्पाधामण्याय न अञ्चासीति वत्वा तेन स्वाचनो अतीत आहोर :—

ग्रतीतवत्य

अनीने वाराणित्य ब्रह्मदने रुज्यं कारिने बोधिततो सक्यायीत्या निव्यक्तित्वा विज्ञान पत्या सोय-स्थायां स्थायां हुत्या एक्सिम अरुज्यायाने जानसम्पतीर गांवाविष्यसम्पत्र सहस्वस्य उपित्तमाय स्वातारी साम कथिति । बहु सक्या तम्म क्ष्यस्य उद्यक्तस्यके एएट्यासाम् वस्ता सरीय-स्वज्ञ उदके पार्तित । निस्यज्य जातस्यरे वण्डो नामगंत्रा वस्ति । तस्य एत्वरहोसि इसे सक्या प्रायद्व । जातस्यरं सरीरवण्ड पार्तित । वस्ता हस्त्रमा उद्यक्ति अस्य प्रमाणित्य स्वक्त प्रमाणे एत्र सामे व्यक्तिस्यात्ति । विज्ञ क्ष्या पान्त्रा गित्तमारे पश्ची सक्यात्र स्विपतित्य राज्यस्य स्वात्म विषयक्ति एट्या त्या उद्यापित विच उक्त पान्द्रशंथ्या दुनियवारे धूम उद्वायेत्या नित्यवारे नात्मक्यस्थात्माग् आन उद्वापित । बोधिसत्तो उदक्तो जात्र उद्वस्यात् विज्ञान स्वात्म स्वात्म । अभिना आदित नाम उदक्ति निक्वापित इदानि पत्र उदक्तेव अधितः ।

> सेमं योह तत्य प्ररी उवीरितो उदकरस मज्जो जलते घतासनो न प्रज्ञ वासो महिषा महीदहे विसा भजहो सरणज्ञ नो भयन्ति । [३६६]

नत्य-चेन यहि तत्व घरी उनीरितीति याँमा उदकपिट्टे खेमभावी निक्सवभावो तस्मि सत्तु पच्यत्वीको स्वतारी उदिक्ता विज्ञान । वितासकोति अणि । सो हि धन असताति तम्मा धनासलीति वृच्चित । न प्रज्ञ वासीति अज्ञ नो वासी नित्य । महिष्य प्रहिष्टेम होहही वृच्चिति रुक्ची । तस्मि इमिन्सा महिष्टा आने कर्वे ने वासी नित्य । महिष्टा आने कर्वे ने विकास क्षेत्र विद्या आने कर्वे ने विद्या आहे ने विद्या आहे अपने विद्या आहे कर्वे ने विद्या आहे ने विद्या स्वाप्ति विद्या अपने अपने विद्या कर्वे ।

एव वत्वा बोधिसतों अतनो वचनकरं मकुणे आदाय उणानित्वा अञ्जात्व नतो । बोधिसत्तस्स पन वचनं अगहेत्वा ठिनमकुणा जीवितम्बय पना । गत्था ६मं धम्मदेशन आहरित्वा सच्चानि पकासेत्वा जातकं समीधानीम । सञ्चपियोमानं सो निम्बु अरहते पितृशीम । तदा बोधिसत्तस्स वचनकरा सकुणा बुद्धपरिता । सकुणराज पन अधुमेवाति ।

४ भागसोधनजातकं

य सिष्टकानोति इद सत्या जेतवने विहरत्तो सङ्करस नगरद्वारे अत्तना सङ्गलिने पुन्छितपञ्हस्स धम्म-सेनापतिनो वित्यारव्याकरण् आरम्भ कपेसि । तत्रिदं अतीतवत्यः :---

श्रतीतवत्थ

अतीते किर बारागुसिय ब्रह्मद्रेत रज्य कारने वोधिसत्तो अरञ्जावतने काथ करोत्तो अन्तेबासिकेहि पुण्डिह्नो नेबसञ्जीनासञ्जीति आह-पे-तापसा जेट्टन्तेबासिकस्स कथ न गण्डिस् । बोधिसत्तो आभस्सरतो आगन्त्वा आकासे ठरवा इमं गाथमाद्र —

> ये सिङ्गानो तेपि बुग्गता येपि ससिङ्गानो तेपि बुग्गता, एतं उभयं विवज्जय त समापलिसखं प्रनङ्गानित ।

तत्य--यं सञ्ज्ञिनीति ठपेत्वा नेवसञ्ज्ञासकञ्जायतनलाभिनो अवसेसे सचित्तकसत्ते दस्तीत । सेषि बुलाताित तस्ता समापत्तिया जलाभतो तीप दुणता नाम । येषि ससञ्ज्ञिनीत अर्साञ्जाभये निव्यते अचितकसते दस्तीत । तेषि बुलातााित तीप इमिस्सायेव समापत्तिया अनाभतो दुणता येव नाम । एतं उत्रयं विवञ्जयाित एत उभवािम सञ्जोभावन्त्र असञ्जोभावन्त्र विवञ्जय पत्रताित अनेवाािसक आंवाित । त समापत्तिसुसं स्वत्रकुत्तात् त नेवसञ्जानात् । १८०) समापत्तिनाभिनो सन्तर्शन मूर्यान्त सक्कतंत्र समावस्त्र अत्रकाण तिहोत वन्त्रविकत्तात्रसावितावित अत्रकाण नाम जातः ।

एव बोधिसत्तो घन्म देक्षेत्वा अन्तेवासिकस्स गुण कवेत्वा ब्रह्मजोक्तमेव अगमानि । तदा सेमतायसा जेंदुन्तेवासिकस्स सर्होह्तु । सत्या इन धन्मदेसत् आहरित्वा जानकसमोधानीसः । तदा जेंद्रन्तेवासिको मारित् पुत्तो अहोसि, महाबद्धा पन अहमेवाति ।

झानसोधनजातक ।

४ चन्दाभजातकं

चःबार्भन्तिः इदम्पि सत्या जेतवने विहरन्तो सङकस्सनगरद्वारे थेरस्सेव पञ्हस्थाकरणं आरब्भ कथेसिः– ः **अतीलवल्य**

जतीते वारास्सियं ब्रह्मस्तं रज्ज कारेन्से वीधिसत्तो अरुञ्जायतने कालकरोत्तो अन्तेवासिकीह पुण्छितो चन्दामं सुरियामित्त बत्वा आमस्सरेस् निब्बत्तो । तापसा जेट्टन्तेवासिकस्स न सङ्हिस् । बीधिसत्तो आगन्त्वा आकासे ठितो इमं गायमाह :----

चन्दामं सुरियाभञ्च योष पञ्जाय गायति, स्रावतक्केन भानेन होति आमस्तक्ष्मगोति ।

तत्य—चन्दाभित्त ओदातकसिण् दस्तेति । सुरियाभित्त पीतकसिण् । योथ पञ्जाय गायतीति यो पुणनो इच सत्तनोके इदं कसिण्डय पञ्जाय भावेति, आरम्मण कत्वा अनुपितमित तत्य च पितृहति । अथवा खनामे सुरियाभञ्च योथ पञ्जाय गायतीति यत्तकं ठान चत्याभञ्च मृत्याभञ्च एत्यः, ननके ठाने पित्रमान किंगि वहंदेता त आरम्पणं कत्वा भाने निज्ञतेन्तो उभयप्येत आभ पञ्जाय भावेति नाम । तस्मा अयप्येत्य अपयोवे । यास्त्रसक्तने भानेन होति प्रानस्तरक्ष्मोति सो पुणनो तवाकत्वा पटिनद्वेत दुतियेन भानेन आसस्तरह्मानेक्ष्मणे क्षां भावेति स्वानस्तरहम्मोन्ति सो पुणनो तवाकत्वा पटिनद्वेत दुतियेन भानेन अभस्तरहम्मोक्ष्मणे होति ।

एवं बोधिसत्तो तापसे बोधेत्वा जेट्टन्तेवासिकस्स गुरुग कथेत्वा ब्रह्मलोकमेव गतो ।

सत्था इम धम्म-देमन आहरित्या जातक समोधानेसि । तदा जेट्टनोबासिको सारिपुत्तो । महाबह्या पन अहमेबाति ।

चन्दाभजातकः । [३६८]

६ सवरणप्रंसजातकं

मं ल**हं तेन तुटुःवन्ति इदं सत्या जे**तवने विहरन्तो युल्लनन्दं भिक्जुनि आरब्भ कथेसि ।

पच्चपस्रवस्थ

साबत्थय हि अञ्जातरो उपासको भिक्क्षुनीसङ्घ लसूगोन पबारेत्था खेतपाल आणापेसि, सर्च भिक्क्षुनिय आक्ष्यात्म एकेशय भिक्क्ष्युनिया द्वे तयो अध्विका देहीति । ततो पट्टाय भिक्क्ष्युनियो तस्स येहीम्य खेतिम्य लसुग्रियाय गब्द्यात्म । अवेशीस्य उसस्वदिवसे तस्स गेहे लसुग्र पिक्क्ष्य अगमासि । धुन्तनन्दा भिक्क्ष्य सर्वादाय गब्द्यात्म । अवेशिया पिक्क्ष्य अगमासि । धुन्तनन्दा भिक्क्ष्य सर्वादाय गेह गल्या तस्तुग्र पिक्क्ष्यो । अत्याति दत्या तस्य ये यथासत लस्तुग् पिक्क्ष्यो । खेत गब्द्य वाति दुता खेत गस्य न सत्त जानिक्या लसुग्र अहरायेसि । खेत्रपातो उन्साय—कर्य हि नाम भिक्क्ष्यियो न सत्ते जानित्था लस्तुग्र हरायेस्सन्तीति ।

त्रस्म कर्ष मृत्या या ता भिक्क्षुनियो अण्यिच्छा लागि, तास सुत्वा भिक्क्ष्पि उरुक्षायिस् । उरुक्षायिस्ता व पन भगवती एतमस्य आरोचेन् । भगवा बुल्लनस्य भिक्क्ष्पिन गरिष्टवा—िमक्क्ष ! मिहच्छा पुग्पको नाम विज्ञातमानुवाणि अण्यियो होति अभनाणो अण्यक्षे पसादेत् पत्रसान वा भीयोक्षोमनाय प्रमाद कर्नेतु अनु-पत्र लामं उप्योदेतु उरुक्ष चा पन चिर कातु न सक्कोति । अण्यिच्छी पन पुणाको अप्यक्षि प्रसादेनु पत्रकान भीयोक्षोसनाय पत्राद कर्नेतु अनुष्पन्न लाम उप्यादेनु उप्पन्न वा पन चिर कातु सक्कोतीति आदिना नयन निक्क्ष्म तद्वनुच्छिकिक प्रमा क्रवेत्वा न भिक्कवे ! युल्लनन्दा इदानेव महिच्छा, पुक्ष्मि महिच्छायेगाति बत्या अतीन आहरिः—

प्रतीतवत्य

अतीने वाराण्सियं बह्यदत्ते रज्ज कारेन्ते वीधिसत्तो अञ्जातरिम्य ब्राह्मगण्डले निव्यत्ति । तस्म बयणस्तस्य समजातिककृत्ता पत्रापति ब्राह्मिस् । तस्सा नव्या नव्यत्ती सुनव्यति निरामो धीनरी अहेत् । तासु परक्लुं अवानुष्येव बोधिसत्तो काल कर्या सुक्रण्युहस्योनिय निव्यत्ति । जानिस्सरच्याराज्यस्य उपायेव स्रो बक्यस्तो हुत्या सुक्रणप्तसस्यक्ष्म्य सोभागण्यन महत्त्व अत्याव दिख्या कृते नृत्यो चिव्यत्व अह इपुण्यतिक आक्ष्मश्रेत्वो मसुस्मवोक्तोति ज्ञान्त्य पत्रापती स्वाद्यापी चर्या धीनरो च जीवस्तीति ज्ञय-सारेव्यापरे सर्वे मान्यस्य कर्या किञ्चेत्र जीवस्तीति ज्ञान्त्या चित्रसेति – मध्यः सरीर मोवणाप्याति पनाति कोहनपट्ट-नक्ष्मयानि इतो नास एकेक पत्र बन्धानिः, नेत्र में पत्रावती च धीनरो च नृत्य जीवस्यानीति ।

सो तत्य गन्त्वा पिट्टबसकाटिय निर्लावि । ब्राह्मागी च घीतरो च बोधिसत् दिस्वा---बुनो आग-तोसि [३११] सामीति पुण्डिस् ।

बह तुम्हाक पिना, काल कत्वा सृदश्यहसयोगिय निज्यति दुग्हे दटह आगती। इतां प्रहाय तुम्हाक परेस भाँत करवा दुवस्त्रीविकाय जीवनिकित्व निवि । अह वी एकेक पन दस्मामि, न विविकारियाया सुम्बेन जीववाति एक पत दत्वा अगसामि।

सो एतेनेव नियमिन अन्तरभा आपन्या एकेव पन देति। ब्राह्मणी च घीतरो च अद्दृश मुक्तित अंदृत् । अदंकिदवर्ष सा ब्राह्मणी धीतरो आमनेमि—अम्मा । निरच्छानान नाम चिन दुष्ट्यात, कदाचि वो पिना दव नागच्छेया, इदानिस आपत्रकाले सम्ब्रानि पनानि सुन्तित्वन गब्ह्यानि । ता एक में पिना किवसिस्स्तीति न सम्पर्टिच्छम् । ब्राह्मणी पन महिन्द्रताय पुरेकदिवस सुवण्णराजद्रतस्य आगतकाने एहि ताब सामीति क्या त अनती सन्तिक उपगण उभोहि हर्ल्याह महेला सव्यक्तानि तृष्टिच । तानि पन वोपि-सत्तस्य विचित्त व अक्तारो सतिक उपगण उभोहि हर्ल्याह महेला सव्यक्तानि तृष्टिच । वानि पन वोपि-सत्तस्य विच्या व वक्तारो नातिना मत्यानि वस्तप्रमित्तानि अद्ये । वीपिसती पक्षे प्रतारेवा गस्त नातिकत्र । अव नं सा महाचाटियं पिक्विपिट्या पोसेसि । तस्त पुन उद्गहन्नानि पत्तानि सेतानि सम्पर्क्त्रिसु । सो सम्बातपक्को उप्पतित्वा अत्तनो वसनदानमेव गन्त्वा न पुन अगमासीति ।

सत्या इसं अतीत आहरित्या न भिक्कवं ! युरुननत्या इदानेव महिच्छा, पुख्येष महिच्छायेव, महि-च्छताय च पन सुबन्धान्हा परिहोना, इदानि पन अत्तनी महिच्छताय एव नमुष्पन्दाप परिद्यायिसति । तस्मा इतो पद्गाय लक्षण साथितु न लिस्स्तित, यथा च युरुननदा एव त निस्साय सेम भिक्क्विनयोपि । तस्मा बहुं सनिश्वापि पमाण्मेच जानितस्त्रं, अपं लिभत्वा पन यथानद्वेनेव सन्तोसो कातव्यो उत्तरिंत पत्येनस्वन्ति क्रवा इम गायमाहः —

यं लद्धं तेन तुट्ठश्चं ग्रतिलोभो हि पापको, हंतराज गहेत्वान सुवण्णा परिहायथाति।

तस्य-जुरुठब्बन्ति तृत्वितस्य । इदम्यन बस्या सस्या अनेकर्पारयायेन गरीहरूवा या पन भिक्कुनी लसूर्ण सारेय्य पाचितियनित' सिमकायर पञ्चा 'स्वा जातक समोधानेसि । तदा ब्राह्मणी अयं युन्तनन्दा अहोसि । तिरुवो भोररो इदानि तिन्तो येव भविनियो । सवण्याराज्ञसो पन अहमेवाति ।

स्वण्णहंसजातकं। ४००]

७. बब्बजातकं

यश्येको सभते बम्बृति इदं सत्या जेतवने विहरन्तो काशामातु सिक्सापद आरब्भ कथेसि ।

पण्चपन्नवस्य

सावस्थियं हि कारणमाता नाम भीतुपसेन पाकटनामा उपासिका अहोसि सोनापन्ना अरियसायिका । सा भीतरं कारणं अञ्च्यतरीस्म गामके सामानजातियस्स पुरिसस्स अवासि । कारणा केनचिवेव कररणीवेन मातु भग क्रामासि ।

अवस्ता सामिको कतिपाहरूवयेन दूर्त पाहीस आगच्छतु कांगा हच्छामि कागाय आगतिन । कागा दूतस्त वचनं सुख्या अम्म ! गमिस्सामीति मातर आपुष्टि । काग्माता एत्तक काल वसित्वा कमं तुच्छहत्याव गमिस्सामीति पूर्व पांच । तसिम व्यंगे एको पिण्डचारिको तिभक्ष तस्ता निवेसत अगमासि । उपासिका तिसीदायत्व पत्तपुर दापेसि । सो निक्वीमत्वा अञ्जस्त आचिकि । तस्सपि तयेव दापेसि । सो पि निक्व-मित्या अञ्जस्त आचिकि । तस्सपि तयेव दापेसि । सो पि निक्व-मित्या अञ्जस्त आचिकि । तस्सपि तयेव दापेसि । सोपि निक्व-मित्या अञ्जस्त आचिकि । तस्सपि तयेव दापेसि । सो पि निक्व-मित्या अञ्जस्त आचिकि । तस्सपि तयेव दापेसि । स्वापित्य अगमासि । काग्याय गमन न सम्पर्येज ।

अवस्सा सामिको दुतिवर्षिप दून पाहेसि । ततिवर्ष्णाहेत्ती च सचे काग्गा नामिन्ध्रस्सति अहं अञ्जा पत्राणित आनेस्सामीति पाहेसि । तथोपि वारे तेनेव उपायेन गमन न सम्पञ्जि । काग्गाय सामिको अञ्जा पत्राणित आनेसि । काग्गा त पत्रीत सत्या रोदमाना अद्वामि ।

सत्या तं कारण अस्वा पुब्बकृतमय निवासेत्वा पत्त्वीवरमादाय काणमानुषा निवेतन गत्त्वा पञ्चात्ता-सने निमीदित्वा काणमातर पुच्छि किस्साय काणा रोदतीति । इमिना नाम कारणेनाति च मृत्वा काणमातरो । समस्त्रामेत्वा थम्मकथ केषेत्वा उद्गायासना विहार अगमासि ।

अय तेस चतुत्र भिवसून तयो वारे यथापिटयत पून गहेत्वा कागाय गमनस्म उपिछन्नभावी भिवसु-सङ्घे पाकटो जातो । अवेकदिवस भिवसू घम्मसाय कर समुद्रायेषु---आवृत्तो ! चतुहि नाम भिगसूहि तयो बारे काएमानुषा पक्कद् बादित्वा काएाग पमन्तम करना सामिकेन पित्र्चत पीत्रत निस्माय महाडपासिकाय दोमनस्स उत्पादितनि । सत्या आगन्त्वा कायनुत्व भिवस्वये ! एतर्गह कथाय सन्नि-सिन्नाति पुण्डिक्ट्या स्माय नामाति वृत्ते ने भिवस्वये ! इदानेव ने चत्तारी भिवन् कागमानुया मन्तक साहित्वा तस्सा दोमनस्म उत्पादेषु पुष्टिपि उत्पादेषु येवानि बत्वा अतीतं आहीर —

प्रतोतवत्य्

अतीने बारागामिय बहादन रे प्रका कारणे वोषियत्तो पासाएकोहुककुले निव्यन्तित्वा वयणता परियो-दातिस्त्रियो बहाति । कासियट्ट एक्सिय मान एको महाविष्ठावी (१०१) वेद्दील बहाने । तस्य निवासत्ता-येव चतालीसहिर्ण्याकीट्यो अहेत् । अथम्म अधित काल कत्वा धनिमहेत्हे तस्वा व्यापिद्ध सृस्तिका हुत्वा निव्यत्ति । एव अनुक्कमेन सम्बद्धित कह्न अन्भर्य अवसासि । वसो उपिन्द्धित्व । सो गामोपि छहिइदो अवस्यानिकभाव अस्तासि । तदा वीस्त्रित्ती तीस्त पुरागणासहादेन पासाले कारोट्या कोहेति । अय सा सृरिक्का गोवाद्या वरमाना बोस्तित पुत्रपुत्र पस्स्तानी अप्रवासिता हुत्वा चिन्द्यति सम्बंद पत्र वह निक्काराखेन तस्यति, इसिना सर्ढि एकतो हुत्वा इस पन व्यविस्मामीति एकदिवस एक कहापरा मुक्तेन बित्या बोसिवतस्त्र सन्तिक अस्तासि । सो त विस्त्रा पियवाचाय समावपनी—किशुलो अस्म ! कहापरा गहेत्वा आगतासीति

तीत ! इमं गहेरका अलनापि परिभुज्ज मय्हम्पि मंस आहराति ।

सो साबूति सम्पटिण्झ्रिया कहापणां आदाय नगर गन्तवा एकेन मासकेन मंस किगिएता आहरित्वा तस्सा अदासि । सा तं गहेल्या असतो निवासट्टान गन्तवा यपार्काच्या लादि । ततो पट्टान हमिनाय निवासेन दिवसे दिवसे बोषिसतस्स कहापण् देति । सीपिस्सा मसं आहर्गत । अवेकदिवस त मृथिक बिलारो अगहेसि । अय न सा एवसाह—प्राप्ति ! मा मं मारेहोति ।

किकारमा ?

अह हि छातो मंसं खादितकामो न सक्का मया न मारेनुन्ति ।

किम्पन एकदिवस एकमेव मस खादितुकामोसि, उदाहु निच्चकालन्ति ?

लभमानो निच्चस्यि खादितकामोस्हीति ।

यदि एवं अहं ते निज्वकाल मन दस्मामि विस्मज्जेहि मन्ति ।

वय में बिनारों नेन हि वणमत्ता होहीति बिस्सवनीति । ततो पहाय सा अत्तनो आजनसम्र हे कोहासे कत्वा एक बिनारस्म देति, एक सय सार्यः । वय न एकदिवसे अवव्या गिर्वाणिता अमारिम । तांभ्य तर्यस्म सब्बारिका अस्तानि स्मित्यनपरिष् । ततो पहाय तथी कोहासे कवा स्वादिन । एन अव्या अस्वव्या तिस्म तिस्म तथेव सञ्जापेत्वा अतानं भोवापेसि । नतो पहाय चतारो कोहासे कत्वा खादिन्त । पुन अव्या अमारिस । तांभा नवेद सङ्गापेत्वा अतान भोवापेसि । ततो पहाय पत्रच कोहासे कत्वा खादिन्त । सा पत्रचम कोहास सवसमा अभावानाया कित्ता सिका अहोसि अमायनपत्रीक्षिता ।

बोधिमसो तं दिस्वा अस्म । कस्मा मिनानासीति बत्वा इमिना नाम कारखेनाति वुसे त्व एत्तक कालं कस्मा मस्ट नाविक्ष्य ? अद्रशेत्य कत्तव्य जानित्सामीति त समस्यानेत्वा सुब्रफीनक्पामाखेन यह कस्वा आहरित्वा—अस्म । त्वं इम गृह पविभिन्व। निपञ्जित्वा आगनागतान फरमाहि बाचाहि सन्नज्जेय्यासीति आह ।

सा गृह पविभित्वा निपण्डि । अयेको विचारो आगन्ता देहि मे मंसन्ति आह । अथ न मूसिका अरे दुर्द्द्रविचार । कि ते अह ममहारिका ? अननो पुनानं मंसं (२०२) बादानि तरुवनि । बिकारो क्रांनिक-सृहान पितप्रभावं अवाननो कोश्यक्ते मूसिक गण्डिस्सामीति नहमा पक्कित्वत्व हुक्केन कीकनुतुत्म पहिर । ताबदेवस्स हत्यं भिष्ठि । अस्त्रीति निक्समनाकारपतानि जातानि । सो तत्येव जीवितस्वय पत्वा एकस्म-पटिच अहसूनने पति । एतेनुपायेन अपरोपीति चनारोपि जना जीवितस्वय पार्पुरासु । ततो पट्टास मूसिका निक्स्या हृत्वा वोधिनन्तर दिसिक हे नयी कहाण्यो देनि । एव अनुक्कमेन सम्बन्ध्य पत्र वोधिनत्तस्व अदासि । ने उभीपि यावजीव मेति अभिनेदत्वा यथाकम्य गता ।

मत्था इमं अनीतं आहरित्वा अभिसम्बद्धो हत्वा इमं गाथमाह —

यत्येको लगते बब्धु दुतियो तत्य जायति , ततियो च चतुत्यो च इदन्ते बब्बुका बिलन्ति ।

नश्य—वश्याति यस्मि ठाने । वश्यति विजारो । दुनियो तस्य जायतीति यस्य एको मृनिक वा मंस वा लमित दुनियोगि तस्य विलारो जायित उपण्डमि । तथा ततियो वशुस्यो च एव ते तदा चत्तारो विलारा केतृत । हुल्ला च पन दिवसे दिवसे मंस स्वादना ते वश्यूका इदं फलिकमय विलं उरेन पहरिस्वा सम्बंधि जीवि-तक्ष्मय पनाति ।

एव सत्था धम्म देसेत्वा आतकं समोधानीस । तदा चत्तारो बिलारा ते चत्तारो भिक्ष् अहेस् । सूसिका कागुमाता, पासागकोट्टकमिणकारो पन अहमेवाति ।

बस्बुजातकः ।

८. गोधजातकं

कि ते कटाहि दुम्मेवाति इदं सत्था जेनवने विहरन्तो एकं कृहकं आरब्स कवेसि । पञ्चुप्पप्रवत्यु हेट्टा कथितसदिसमेव ।

प्रतीतवत्यु

अलीते पन बारत्णसियं बहादत्ते रज्य कार्रेल्ते बोर्पमतो गोघयोनिय पटिसा्च्य ग्रीष्ट् । तदा एको पञ्चाभिक्ष्मो उपाएगो तापसो एक एक्चत्त्रसाम सिन्साय अरुआवत्त्रते पण्णासाम्य स्वर्तत । सामवास्ति । तास सक्ष्मक चप्रहृत्ति । बोषियत्तो तस्स बक्कत्त्रणकोटियं एकस्मि बमिक्के वसति । वसत्ती च पन दिवते दिवसे हे तथो वारे तास्य उपसक्तमित्वा धम्मुपर्साहृत अरुप्पर्शहतुक्च वचने सूत्वा तापस बन्दित्व वननहाममे बन्नकृति । अरुपभागे जापमो गामवास्ति आपुष्कुत्वा पत्कामि । पत्कन्ते च पन त्रास्म सील-वतसम्पर्भ तास्त्र अक्ष्मा इत्यापमो आगल्या तर्गस्म अस्ममपदे बास कप्येति । बोषियत्तो अर्याप्य सीलवाति सत्वसक्ष्मेश्रला पुरिम्मयेनेव तस्स सन्तिकं अगमासि ।

अवकदिवस निदायसमय अकालमेथे वट्टे बिम्मकहि मिक्सका निक्कमिसु । ताल बादनत्वं गोधा आहिण्डिमु । गामवासिनी निक्कमित्वा बहु गोधा ' गहेत्वा सिनिद्ध सम्भारयुन अध्विनानम्बलं गोधमसं सम्पा-देवा तापसस्त अवंतु । तापत्वी गोधमसं सार्वान्तिका पत्रकार वर्षे हुं। तापत्वी गोधमसं सार्वात्वा पत्रकार वर्षे हुं। तापत्वी गोधमसं सार्वात्वा प्रकार प्रविक्ति का गोधमसिन मृत्वा मम मन्तिक सहार्वाण्या वर्षे का ताप्तवा मंस कार्याक्ष प्रविक्ता पत्रकार सार्वाव्य प्रकार सार्वाव्य सार्वाव्य परिक्कारेवा प्रकार सार्वाव्य परिकार सार्वाव्य सार्वाच्य सार्वाव्य सार्वेष्ठ सार्वाव्य सा

बोधिसती हाराव्यहसमये तापनस्स मनिक गांच्यस्यामीर्ति निक्कमित्या उपस्कमनोष तस्स इन्दिय-ब्रिकार दिक्वा चिन्नीम—मान तापामी अञ्चां मू दिक्क्म निर्मादनाकरन निर्माल, अञ्जेन म ओलंकेतारीण इृद्धिहेद्वा हुन्दा ओलंकेति, परिणाहस्सामि निन । मो नापनम हेट्टावारे ठन्वा गोममानक पायन्त्र-इमिता बृद्धार्थने अञ्च गोधमस खादित मदिन्सति तेनेस रसत्यहार बढी अञ्च म अननो मनिक उपस्टक-मन्ते मुगारेन पहित्वा पम गांचवा खादितुकाणो मिसस्पतित-नम्स सनिक अनुपान्त्राव परिक्किमित विवर्दति । तापसो ओधिमतस्स अनापनमभाव जल्का दीमा अय म मारंगुकामीर्त ज्ञात प्रकारक्षिति के कारस्तेन नापच्छित अनापच्छतस्मस्मित्स कृतो मुनीति मुमार नीहरिग्वा विपि । मो नन्स अयनउद्धुक्तेन आसदित्त । बोधिकती बेरेन बेरोन बिम्मक पविक्तिस अञ्चान क्षित्रेन मीत निक्वापना—अम्मो ! कूट्य-टित ! अह तब सनिक उपसक्कमनो मीतवाति सञ्चाय उपसक्कांम द्वानि पन ते मया कूट्याबो जाति।

किन्ते जटाहि बुम्मेश्र! किन्ते ग्रजिनसाटिया, ग्रन्भन्तरन्ते गहण बाहिरं परिवरणसीति।

नत्य—कि.ते जडाहि हुम्बैवाति अस्त्रो । हुम्मेष । निष्यञ्जा । एता पञ्जितन भारत्वज्ञ जटा पञ्जा । कि.ते प्रजितसादिया ल्या ल्या क्ष्य । कि.ते प्रजितसादिया ल्या ल्या ल्या ल्या ल्या लिए त्या कि.ते अविनतादिया ल्या क्षय स्वत्य स्वयं त्या क्षय स्वत्य स्वयं त्या क्षय स्वत्य प्रत्य क्षय स्वत्य क्षय स्वत्य क्षय स्वत्य क्षय स्वत्य क्षय स्वत्य क्षय स्वत्य प्रत्य प्रत्य क्षय स्वत्य क्षय स्वत्य क्षय स्वत्य स्वत्य प्रत्य क्षय स्वत्य स्वत्य प्रत्य क्षय स्वत्य प्रत्य क्षय स्वत्य स्वत्य प्रत्य क्षय स्वत्य प्रत्य स्वत्य प्रत्य स्वत्य स

एव बोधिसतो कुटनायस तज्जेत्या बस्मिकमेव गाविमि । कुटनायसोपि ननो पक्कामि । सत्या इस धम्मदेसन आहॉरत्या जानक समोघानेसि । नदा कुटनापमो अघ कुरूको अहोसि । पुरिमो सीनवन्ननायसो मारिपुतो । गोषपण्डिनो पन अहमेवाति ।

९. उमलोमट्डजातकं

श्रवती भिन्ना पटो नट्डोति इद सत्या वेलुवने विहरन्तो देवदत्त आरब्भ कथेसि ।

पच्च पश्चवः थ्

तदा किर धम्मनभाय भिक्क कथं समुद्रापेषु—आद्गो ! सेव्यथापि नाम ख्रवालात उभतो पदित मण्डे भूषणन नेबारङ्के कहुत्व फर्निन नामे कहुत्वं फर्नित, एवंमेव देवदत्तो एवरूपे निव्याणिकसासने एवर-कित्वा उभतो भट्ठो उभतो परिवाहिरो जाती गिहीपरिभोगा च परिहोंनो सामङ्गावङ्क न परिपृत्तीति । सत्या आगन्तव कायनुत्य भिक्कवं ! एतरहि कथाय सिक्तिस्नाति पुष्क्क्ति समय नामित द्वेन ने भिक्कवं ! वेवदनो इसाने उभनो परिप्रदेशे होति नीनीए पिन्परेश अहोसियोनी वया अनीन आहीर —-

श्रतीतवत्थ

अतीनं वाराणांत्रिय बहादनं रज्य कारेनं बांधिसनो कस्बदेवना हृत्या निव्वति । तदा एकिस्म गामके बालिनिका वर्मान्त । अपेको बालिनिको बिलम आदाय दहरेन पुनेन सिद्ध यस्मि सीन्धे पक्रतिवाधि बालिमिका मच्छे गण्डान्ति तत्य गत्या बलिम स्विधि । बलिमी उदकर्षिटच्छ्रसं एक्तिम स्वागुके निर्मा । बालि-पिनेत जाकद्वित अस्वकोली | चित्रीस--अय बलिमो महामच्छे लगो भिनमित पुत्तक मातुसनिक्सं पेनेत्वा परिविम्मकेशिक्ष सिद्ध कलह कारापंत्रिम, जब होने कोचि कोट्टाम पच्चािम स्विति । सी पुत्त आह--गच्छ तात । महामच्छ नो लुद्धाब मात्र आविक्यबाहि परिविम्मकेहि किर सिद्ध कलह नरोहीति वेदेहीलि ।

मों पुन वेमेत्वा बांनम आकडि्डन असकोस्ता राजुन्छेदनमयेन उत्तरिमाटक यने ठपेरबा उदक ओन-रित्वा मच्छतीभेन मच्छ उपपारेन्तो खालुबेहि पहित्त्वा होष अमनीति भिन्ति । यसे ठपिन नाटकीमदस नीरो होरि । मो बेदनामसो हुन्बा हत्येन अनवीति उपीनयमानो गहेत्वा उदका उत्तरित्वा कम्पमानो साटक परियमित ।

सापिम्म भरिया कलह करवा कम्मचि अपच्चित्तसभाव करिरसामीति एकस्मियेव कम्भो तालपस्म
(८०४) जितिस्वा एक लिक्ष उक्कांत्मसिया अध्येत्वा कुक्तूर अव्हेतनादाय परिविस्तकार अभागि ।
अय न एवा नहारिका एयसाइ-एक्सियेव ने तत्र्णे नालप्त्म पिनस्थित एक औरक अधिकादिक पिरयुत्त विश्व
कृत्रकुर अट्लेनादाय परनो घर नख्युति कि उम्मीनकामि जानाति ? नाह उम्मीनका त्यप्पन म अकारगोत
अक्कांतास परिभागति इदानि न गामभोजकस्म गतिनक गल्या अष्टुक्तापणो रण्डापेस्मामीति एव कल्हू कन्वा
अभोपि गामभोजस्म मनिक अर्जामिग् । कल्द्रे विशोधियमान नत्मायेन मन्यके रण्डो पति । अय न बन्धिया
रण्ड देशीति पोर्थन आर्णाम ।

रुक्तदेवता गामे तस्ता इम पर्वात अरङ्शं चम्मा पतिनो त व्यसन दिस्या खन्यन्तरं टिना--भो । पुरित ! नुःह उद्देशित कम्मस्तो पहुर्छो घरेषि उभतो भट्छोसि जातीति वत्वा इम गायमाह ---

ग्रक्को भिन्ना पटो नट्ठो सलीगेहे च भण्डनं , उभतो पद्रटकस्मातो उदकस्हि थलस्हि चाति ।

न्य---सत्नोगेहे च भव्यतित सची ताम सहाविका तस्मा गेहे तव भव्यिय भण्यत कत, भण्यत करवा बन्धित्व पोवेल्वा दण्ड द्याण्याति उत्तरी पुषुट्कस्मलोति एव तव हीमृषि ठातेम् कम्मला पुरुद्व भिन्ना येव। करदेवृद्धीत् ? यक्काह्य वस्त्रीह् वस्त्रीह् वाति अभिन्नमेदेन पटनासेन च उदके कम्मला पुरुद्वा, सलीगेहे भण्यनेन वर्षे कम्मला पदाति।

सत्या इम धम्मदेमनं आहरित्वा जातक समोधानेसि । तदा बालिमिको देवदत्तो अहोिम । रुक्वदेवता पन अहमेवाति ।

उभनोभट्ठजातकं।

१० काकजातकं

निष्यं उद्यागहस्वाति इदं सत्या जेतवने विहरत्तो आतत्वचरियं आरश्म कथेसि । पच्चुप्पन्न-वत्य द्वावसनिपाते महसालजातके आवीभविस्सति ।

ब्रतीतवस्य

जतीते बाराण्सियं बह्यदते रज्ज कारेन्ते बोधिसतो काकयोनियं निब्बत्ति । अयेकदिवसं रञ्जो पुरोहितो बहितगरे निर्द्धं तहादित्वा गन्ये वितिस्थित्वा मानं पित्रिचित्वा वरस्विनिक्त्यो नगर पािवित्ति । नगरदारतोर्त्यो हे काका निवित्ता होन्ति । तेतु एको एकं आह—सम्म ! आहं इमस्स बाह्यणस्स भत्यकै सरिवत्वज्ञं पोत्तेसामीति ।

इतरो---मा ते एतं रुच्चि अयं बाह्मगो इस्मरो इस्मरजनेन च सिंढ वेरं नाम पापक अयं हि कुढी सब्बेपि काके विना-४०६। सेय्याति ।

न सक्कामयान कातुन्ति।

तेनहि पञ्जापिस्ससीति बत्वा इतरो काको पलायि । सो तोरणस्स हेट्टाभागं सम्पत्ते ब्राह्मणे ओलम्बक चारेन्तो विस्न तस्स मत्वके वज्ज पातेसि । ब्राह्मणो कृष्णिक्ष्या काकेस् वेर विश्व ।

तस्मि काले एका प्रतिवा शिह्किट्टिका दासी शेहिं गेह्वारे आलपे एक्यरिका रक्तमती नितिकाव निदं शोक्किम । तस्ता पमार्च शत्वा एको दीक्षणेमको एक्को त्रान्तवा वीहि सादि । सा प्युक्तिस्वा ते दिस्वा पमार्च नित्वाच त्राचित्र । सा प्युक्तिस्वा ते दिस्वा पमार्च । त्राच्याचे । सा प्युक्तिस्वा ते तिर्वा पमार्चित त्राच्या पमार्च त्राच्याच प्रवाद । सा प्युक्तिस्वा ते त्राचित्र । सापि ते त्रिच्या पमार्च त्राच्या प्रवाद । सापि ते त्राच्या पमार्च त्राच्या विद्या कि स्वाद त्राचा प्रवाद प्रवाद । साप्य त्राच्या पमार्च प्रवाद । साप्य त्राच्या पमार्च अन्य त्राच्या विद्या प्रवाद । साप्य विद्या अत्यात एक्को साप्य त्राचित्र । साप्य त्राच्या पमार्च विद्या अत्यात एक्को साप्य त्राच्या प्रवाद । साप्य प्रवाद । साप्य त्राच्या प्रवाद । साप्य प्राचित्र । साप्य प्रवाद । साप्य प्रवा

जानामि महाराजाति।

कि लद्धं बट्टतीति ?

काकवसा महाराजाति

राजा--तेनहि काके मारेत्वा वस आहरवाति आह ।

ततोषट्टाय काके मारेत्वा वसं अनभिन्वा तत्य तत्येव रागि करोन्ति । काकान महाभयं उप्पाज्य । तदा बोधिसत्तो असीतिसहस्सकाकपरिवारो महासुसानवने वसति । अधेको काको गन्दा काकानं उप्पन्न स्वय बोधिसत्तस्य आरोचेसि । सो चित्तीस ठरेत्वा म अञ्जा मग्द ज्ञातकान उप्पन्न स्य हिन्तु समस्यो नाम नित्य, हिस्सामि नित्त दसपारिमयो आवन्त्रत्वा मेनापारीम पुरेचारिक कत्वा एकवेगेनेव पक्काित्वा विवट्ट-सहावातपानेन पविसत्वा रञ्जा आवनस्त हेट्टा पाविसि । अच नं एको मनुस्सो गहेतुकामो अहोसि । राजा सरण पविद्ठो मा गण्हीति वारेसि ।

महासत्ती थोकं विस्तिमत्वा मेतापारीम आविज्ञत्वा हेहामना निक्कमित्वा राजानं बाह—महाराज ! राञ्चा नाम अत्यादि वसेन जगरवा रज्जं कारेतु बहुति । यं य कम्मं कत्तव्यं होति सम्यं निसम्य उपवारेत्वा कात् बहुति, यञ्च कियरमानं निष्कञ्जित तदेव कात् बहुति न इतरे । सचे हि राजानो यं कियरमानं न निषक-ज्ञति त करोन्ति महाजनस्य मरण्यनयपियोमानं महाभयं उपवज्जति, पुरोहितो वेरवसिको हुत्वा मुसाबादं अकामि काकानं बसा नाम नत्यीति । कासवातक 848

तं सत्वा राजा पसन्नवित्तो बोधिसत्तस्य कञ्चनभद्दपीठ दापेत्वा तत्य निसिन्नस्य पक्खन्तरानि सत-पाकसहस्सपाकतेलेहि मनखापेत्वा कञ्चनतटके राजारह सभोजन दापेत्वा पानीय पायेत्वा सहित विगतदर्थ महासत्तं एतदवीच--पण्डित । त्वं काकान वसा नाम नत्यीति वदसि केन काररोन तेसं वसा न होतीति ?

बोधिसतो---इमिना च इमिना च कारगोनानि सकलनिवेसनं गुकरवं कत्वा धूम्मं देसेन्तो इम गायमाद:--

निरुषं उडिवागहबया सञ्बलोकविहेसका,

तस्या तेसं बसा निवा काकानस्याकशानिनन्ति ।

तत्रायं सङ्खेपत्थो । महाराज । काका नाम निच्च उव्यागमानसा भयण्पताव विचरन्ति । सब्ब-लोकस्स च विहेसका खत्तियादयो मनस्सेपि इत्थिपुरिमेपि कमारकमारिकादयोपि विहेठेन्ता किलमेन्ताव विच-रन्ति । तस्मा इमेहि द्वीहि कारणेहि तेस अम्हाक आतीन काकान बसा नाम नित्य । अतीतेपि अभत-पूब्बा अनागतेपि न भविस्सतीति ।

एवं महासत्तो इम काररण उत्तान करवा महाराज ! रञ्ञा नाम अनिसम्मक्षनपथारेत्वा कम्म न

राजा तुस्सित्वा बोधिसत्तं रज्जेन पजेसि । बोधिसत्तो रज्जं रङ्गोयेव पटिवत्वा राजान पञ्चस सीलेस पतिट्रापेत्वा सब्बसत्तान अभय याचि । राजा धम्मदेसन सत्वा सब्बसत्तान अभय दत्वा काकानं निवद-दान पटुपेसि । दिवसे दिवसे तण्डलम्मरास्य भत्त पचित्वा नानग्गरसेहि ओमहित्वा काकान दानं दीयति । महा-सलस्य पत राजभोजनभेव दीयित्य ।

सत्या इम धम्मदेसन आहरित्वा जातक समोधानेसि । तदा बाराणसीराजा आनन्दो अहोसि । काक-राजा पन अहमेवाति ।

काकजातक।

ग्रसम्पदानवग्गो च हसमी ।

१५. कक्षटकवग्गवगणना

१. गोपजातकं

न पापजनसंतेबीति ६६ सत्था वेनुवने विहरन्तो विपक्खसीव भिक्खुं आरब्भ कथेसि । पञ्चुप्पन्नवत्थु
महिलाम् खजातके कथितसदिसमेव ।

प्रतीतबस्य

सो करोतियेव। बोधिसत्तो पुनपुत कथेन्त्रोति तस्स नेन मदि विस्सास चारेतु असक्कोन्तो अवस्य अम्बद्धाक एत कक्ष्णकं निम्साय भर उपप्रिजनस्विति, तस्सि उपप्रेश पनायनस्य सम्यादेत् बृहतीनि एकेन पम्येतव बातविक कारपेति । पुनोपिस्स अनुकन्धेन महास्योती अहोति । कल्क्ष्णके पर्यक्षका प्रस्तुतक्रमात्रापेश्व । इत्योत् कृष्णकः परिस्तिक्सामीति अन्तरन्तरा अवस्यरतेव । कक्षणकस्य प्रस्तुतकृटेन अवस्यराणकाची विष् होति । स्रो किनसन्ती चिनतेस—चन्नाय अञ्चानिक कित्यसामिति विकानि मं एव परिस्तिनस्विति जीवित

अधेकदिस्स निदासमेथे बट्ठे बिम्मकमिस्त्रका उट्टाइंग् तनो तनो गोधा निक्यिएया मिस्यकायो सार्वास । एको गोधानुक्ते गोधांन मिस्यक्ताय कुराल ग्रहेला गुरुके मुन्ति है महि अप्टच्या पार्विम । कारणको त दिस्सा अवन अननो मनोर्थ गूरेस्सामीन उपसक्तिय लिखा अबिहुर निपिजिन्दा । गुरुको गोधान अस्यायाति आह । अहं अनेकसतान गोधान आसये जानामि, आँगा व पत्ता च अहां असे कारणको निर्मा अप्यायाति आह । अहं अनेकसतान गोधान आसये जानामि, आँगा व पता च आदाय पहीति त तत्व नेत्वा इमिस्स ठाने पताल पिक्सिएया आँगा दत्वा गूग करवा समना मृनमे ठरेखा सव सहामूम्मर गेहेला निक्स्तितिकत्ता गोधा पहीरणा मार्ट्या मार्ट्या गृत्य । एव च पत वत्वा अञ्च पत्र्वासित्स पिट्ट पित्सस्सामीनि एकस्मि ठाने सीम उत्तिस्था निर्माणका निक्सि छाने मार्ट्याभाविका निक्सि छाने । नुहक्ति पित्रवाय । नुहक्ति निक्स्ति स्थाविका प्राचिक्त । स्वर्द्या निक्स्ति । गोधा पुत्रच्या मरायुभ्यतिकता निक्सिका वार्याविका । त्वासिका । गुरुको निक्स्तिका निक्सिका प्राचिका स्वरित्वा सार्विष । तस्य हत्यतो मृना सुन्या गण्डित् । गोधान महाविनामां उपप्रित्व ।

बोधिमतो करूएक निस्साय भयं उपन्नित अत्वा पापपुरिमससमो नाम न कनब्बो पापे निस्साय हि मुख नाम नित्य । एकस्म पापककप्टकस्म बमेन एनिकानं गोधान विनामो जानोनि बानविनेन पलायन्तो इम गावमाह —[४०६]

न पापजनससेवी ग्रज्जन्तसुलमेघति, गोधाकुलंककण्टायकॉल पापेति ग्रतानस्ति ।

तत्राय सबेवरथो । **पापजनसंसेमी पुगानो अन्यस्तमुकं** एकन्नमूल निरन्तर सून नाम न ए**य**नि न पटित्यमित, यया कि ? गोशा**क्लं कक्कटाय** यया कन्कटकतो गोशाक्ल सूत्र्यं न लिंग । एक पापजनसमेवी सूत्र न नमित । पापजन पन सेवलो एक-नेनेव **कति पापित स्नतारं** किन वृच्चित विनासी, एकन्नेनेव पापसेबी अत्तान च अल्टो च अन्ता सदि वसन्ते विनास पापितीत ।

पालियम्पन **फर्च पापेनीति**' लिखन्ति । त व्यञ्जन अट्टकथाय नन्धि । अत्थोपिम्म न युःजति, तस्मा ययाबुत्तमेव गहेनस्य ।

सत्या इम धम्मदेशन आहरित्वा जातक समीधार्गमि । तदा ककष्टको देवदत्तो अहोसि, बोधिसत्त-पुत्तो अनोवादकगोधिपत्तको विश्ववयोगी भिवस् अहोसि । गोधराजा पन अहमेवानि ।

गोधजातकं।

२ सिगासजातकं

एतं हि ते दुराजानिन्त इद सत्या वंजुकने विहरन्तो देवदत्तस्य वधाय परिसक्कन आरङ्भ कथेसि । पच्चपक्रवस्य

धम्मसभाय हि भिक्कृत कथ सृत्वा सत्था न भिक्सवे ! देवदनो इदानेक्ष स्पन्न वधाय परिसक्किति पृथ्वेपि परिसक्कियेब, न च में मारेन असिब्ब, सयमेव पन किलन्तोनि वत्वा अतीत आहरि —

द्मतीतदस्य

अनीते बारासासिय बहादने रुखं ं निर्मेन बोधिससो दिमानयोगिय निम्बित्ता सिमानयाज्ञ हुत्वा सिमानयात्र प्रमुख्य मुद्दास्त विद्यासा स्वर्ण सिमानयात्र स्वर्ण सुन्ता सुर्पास्त स्वर्ण स्

एतं हि ते दुराजानं यं सेसि मतसायिकं, यस्स ते कडटमानस्स इत्या दण्डो न मण्चतीति ।

नत्थ—एतं हि ते दुराजातिन्त एतं कारणं तव दुविञ्जोय्य । यं सेति भतसायिकन्ति येन कारणेन त्व मनमायिकं मेनि मनको विय हत्या सयसि । यरस ते कददमानस्साति यस्त तव दण्डकोटिय गहेत्वा कद्दिय-मानस्स हत्यतो दण्डो न मुर्ज्वात मो पन त्य तत्ततो मनको नाम न होनीति ।

एव वुने मो धुनो अय मम अमतकभाव जानातीति उद्घाय दण्ड मिपि। दण्डो विराज्यः। धुनो गच्छः विज्ञो दार्तित सर्याति आहः। बोधिमनो निर्वालवा भो । पुरिरा । म विराज्यन्तीपि त्वं अट्ट महानिरये मोतम उस्मदितय्ये अविरद्धोधेवामीति क्वा पक्कामि। धुनो किञ्च अलभित्वा मुमाना निक्वमित्वा परि-वाय नहामित्वा आगनमपोनेव नगर पार्विम।

मत्या इस धम्मदेमन आहरित्वा जातक समोधानेमि । तदा धुनो देवदनो अहोमि, सिगानराजा पन अहमेवाति ।

मिगालजातकः ।

३. विरोचनजातकं

लती च ते निष्कालितारि इवं सत्था बेलुबने बिहरन्तो वेवदत्तस्स गयासीसे सुगतालयस्स दस्सितभावं आरब्भ कथेसि ।

पच्चपन्नवस्य

देवदत्तो हि अन्तरहितज्कानो लाभसक्कारपरिहीनो अल्वेस उपायोति क्रितेत्वा सत्यारं पञ्चवस्यूनि याचित्वा असभमानो क्रिप्तं अग्गसावकानं सर्विविद्यारिकं अधुनापव्यक्ति धम्मविनयिन्हं अकोविदे भिक्क् गहेत्वा गयासीसं गन्त्वा सद्य्य भिन्दित्वा एकसीमाय आवेणिसदयकम्मानि अकासि ।

सत्या तेसं जिक्कूनं जारागिराजकालं ज्ञाला हे जगासाक पेत्रेसि । ते दिस्ता देवदत्ती तुटुमानसो रित्त धम्मं देवयायानो बुद्धसीलहं करिस्सामीति सुगतामयं स्स्तेता विगतपोनिमद्धो सो आबुद्धो सारिपुत ! मिक्कुसकमे पटिमातु तं जिककूनं धम्मीकथा पिट्टि मे जागिलायित, तमह आयमिस्सामीति दत्ता निट्ट उपगतो । हे अग्यसाकको तीर्ष मिककुन धम्म देवेत्या मागफलिंह पनोधेत्या सळे आदाय वेनवनमेव पन्यागिस्त । ४४२ ।

कोकालिको बिहार तुण्छ दिस्ता देवदसस्य सन्तिकं गन्त्वा आबुमो देवदस[ा] परिसं ते मिनिदला है अम्माबका बिहार तुण्छं कत्वा गता, त्व पन निहायसिवनति कत्वा उत्तरसङ्गमस्स अपनेत्वा मिनिय पिट्ठिकण्टकं फस्सन्तो विच पण्हिया नं इच्चे पहरि। ताबदेवस्स मुक्तो लोहित उप्पान्छि । यो ततोपट्टाय गिलानो अहोसि ।

सत्या वेरं पुच्छि-सारिपुत्त ! तुम्हाकं गतकाले देवदत्तो कि अकासीति ।

भन्ते ! देवदत्तो अन्हे दित्वा बुढलील्हं करिस्सामीति सुगतालय दस्सेत्वा महाविनास पत्तोति । सत्या न स्त्रो सारिपुत ! देवदत्तो इदानेव मम अनुकरोन्नो विनास पन्नो पुत्र्वेपि पत्तोघेवाति वत्वा थेरेन याचितो अतीतं आहीं —

म्रतीतवत्यु

अतीते बाराण्तियं ब्रह्मदत्तं रज्य कारेन्त्रं बोधिसत्तो केसरसीहो हृत्या हिम्मक्तप्रदेसे कञ्चनगृहाय बासं कप्येति । सो एकिंदस्य कञ्चनगृहाय निर्माणनाया पित्राचित्रं कालोकेत्य सीहमाद निर्माण निर्माणनाय पित्रकर्ता महामित्रः भवित्रवा वर्षास्य कालिक । इत्या एक सर्व कोलाकेत्य महिलाय दक्तक्य कृष्टिक पूरेत्वा गृह सम्याय पायासि । अयेको सिगाली गोचरपसुनी सहसाय सीह दिस्या पनार्यित् असक्कान्तो सोहस्य पूरतो पादेस् परित्या निर्माणना कि आह । सीहो साधु एहिं से उपहुत्त कर्षास्य कालाक्ष्य कर्षास्य कर्माणना हिलाय निर्माणने तत्रोपहुत्य सीहिष्यामं संस सावति । सो कित्यास्य क्रिक्ति । अयं न एक्टियन गृहाद निरम्पत्र कोति । सिही आह—मञ्च अन्युक्त प्रसार क्रिक्ति । क्रिक्ति । अपने एक्टियन गृहाद निरम्पत्र कोति । सो क्रिक्ति । सामे सामित्र । सामेरित वर्ष अहं त विराम सामिति वर्ष अहं त विराम सामित्र वर्ष अहं त विराम सामित्र । सामोरित वर्ष अहं त विराम सामित्र । सामेरित वर्ष अहं त विराम सामित्र । सामेरित वर्ष अहं त विराम सामित्र । सामेरित वर्ष अहं त विराम सामेरित सामेरित सामेरित सामेरित वर्ष अहं त विराम सामेरित वर्ष अहं त वर्ष सामेरित सामे

स्वालो पञ्चतिसक्षर अभिरुहित्वा नानप्पकारे मिर्ग ओलोकेरवा यस्सेव मंसं लाबितुकामो होति कञ्चन-मृह पिबिस्तवा तमेव सीहस्स आरोकेत्वा पादेस, पतित्वा विशोच सामीति वर्दति। सीहोकेनेत पक्कादित्वा स्वीय स्पत्नस्वरायोः होनि । नत्येव न जीविनस्वय पापंत्वा सर्याम्य तस्यस लादित । सियानस्सापि देति विगालो कुच्चित्र्र मंस जादित्वा पृह पिबिस्तवा निहारित । सी गण्चते नण्डले काले सान वर्ड्डिस-ब्रहिप्य बनुष्पदावे कि कारणा दिवसे विवसे परिह पीबिस्यमानी विहरामि कतो पद्माय अहिम्स हरियआदयो पहिरित्वा संसं आदिस्तामीति। सीहोपि मिगापाला विरोक्षतामीति इत्तमेव पर्यं निस्ताय वारणो कोति, अहम्मि सीहेन विरोच जयकाति में बदापेला एक वर्षागणं विरोक्षतामान मंत्र वाहिस्सामीति । भी सीहं [४१३] उपसंकिमस्वा एनदवोच—सामि ! मया दीघरत तुम्हेहि विधितानं वरवाराणान मंदं साहित, ब्रहीम एक वाराएं पहरित्वा मस साहित्कृतानो, तुम्हेहि निपमद्वानं कञ्चनपृहाय निपिज्यस्वामि, तुम्हें पम्बतपादे विचरन्त वरवाराण् ओनोकेत्वा मम सन्तिकं आगन्त्वा विरोच जम्बृकाति वदेव, एनकमत्तिम् मच्चेरं मा करित्याति ।

अप नं सीहो आह्-न त्वं जम्बुक ! बारणे वधितु समत्यो । सिगाणकृते उपायो वारण पहरित्वा मंसं खादनसम्त्यो सिगालो नाम लोके निस्थ मा ते एतं किच्च । मया वधितवरवारणानघ्यां व मस खादित्वा वसस्तित ।

सो एवं बुसेपि ओरमितृ न इन्छि । वृतप्पुत याचियेव । मीहो त निवारंतुं असक्कोन्तो सम्पर्टिन्छस्वा तर्नाहृ सम सत्तरद्वान पर्विवित्या निपञ्जाति जम्बुक कञ्चनगृहाय निपञ्जापेता प्रक्रतपादे प्रस्तवस्वारणं औपो-केव्या गृहाद्वारं गन्या विरोज जम्बुकाति आहं । सिगाती कञ्चनगृहाय निकस्वाम वावद्यमेश्या चतुर्दिस् औलोकेव्या तिकस्तर् वस्तित्या मनवरवारः स्व कृम्भे पतिन्यामीति विरिच्यत्या पादमुक्ते पति । बारणी दिक्तिणापादं जिक्सपित्या तस्म सीमं अक्की । सीमद्कीत चृज्जनाद नक्तो अरञ्जा पादमुक्ते पति । बारणी वारणी पादेन सदस्यरित्या रास्ति कर्वा उपरि लज्य पानेत्या कृज्जनाद नक्तो अरञ्जा पावित्व । बीमिससी इमं पर्वात्त दिस्या इदानि विरोज जम्बुकाति क्या इम गायमाह—

> लसी च ते निष्फलिता मत्यको च विवासितो, सब्बाते फासका भग्गा ग्रज्ज लो त्वं विरोक्सीति।

तत्थ-समीति मत्यलङ्गा । निष्कतिसाति निक्खन्ता ।

बोधिसत्तो इम गाथ वरवा यावनायुक ठत्वा यथाकम्म गनो । सत्या इम धम्मदेमन आहिरित्वा जातकं समोधानीस ।

नदा सिगालो देवदत्तो अहोसि । सीहो पन अहमेवाति ।

विरोधनजातकं।

४. नङ्गुहजातकं

बहुन्देत घतिभजातवेदाति इद सत्या जेनवने विहरन्तो आजीवकान मिच्छातप आरब्भ कथित ।

पच्चपञ्चवस्य

तदा किर आजीवका जेतवनपिट्टिय नानप्पकार मिञ्छातप वरति । मम्बहुना भिक्खू तेस उक्कुटिकप्प-धानवस्पृत्तिवतकष्टकापस्सयपञ्चतापतप्पनादिभेद मिञ्छातप दिस्वा भगवता पुण्छिसु—अस्यि नुखो भन्ते । इस मिञ्छातप निस्साय काचि बढकीति ।

सत्या न भिक्कव । एकश् मिञ्जातम निस्ताय कुभन वा बङ्बी वा अस्यि । पुत्र्वे पण्डिता एकश्य तप निस्ताय कुभन वा बहरी वा भविस्ततीति [४१३] सञ्ज्ञाय जातीमा गहेत्वा अरञ्ज्ञ पवितित्वा असि-जुह्ताविद्यंति किञ्च बहुँ अपस्तन्ता ऑग उत्तकेन निज्ञापेत्वा विस्तपरिक्तम सरवा अभिञ्ज्ञा च समा-पत्तियो च निक्कतत्वा अद्वानोकसरायणा अहेत्तिल बल्वा अतीत आहोर ——

प्रतीतवस्य

अतीते बाराणस्य बहादते राज कारन्ते बोधिसतो उदिन्बबाह्यणगुन निन्बति । तस्स जातदिवसे मातापितरी जातीस्य गहेल्या ठरेल्नु । अय न सोलवस्समाण एतदबोणु—स्य त पुत्त ! जातदिवसे और्ण गण्डिम्ह सबसि थगार अञ्भवित्तवानो तथो बदे उनाक्षु अय बह्यांका गण्डुकामो अस्य गहन्त्वा अरञ्ज पश्चितित्वा अस्य गरिन्दरन्ती महाब्रह्मान आराधस्य बह्यांकिगरायणो होहीति ।

सी न मस्ह अगारेनत्थोति आँमा गहुत्वा अर्घ्या पविसित्रा अस्ममपद माधत्वा अग्गि परिचरन्ना अर्घ्या विकास । सो एकदिवस पण्यत्तासके गोदिस्सण तमित्वा त गोगा अरसमपद तत्वा चित्तीस आँमा भगवत्त गोमम खादापेस्सामीति । अयरस एनदहोमि—इच नोण नित्य अग्मिभगवा अलाण सादिनु न मांच्य सस्ति, गामती लाश्चादित्वा आंग्यभगवन्त सलोगाव छादापस्यामीति । सो त तत्व्य विध्यत्वा लोगा थाय गाम अगमाति ।

तिस्म गत सम्बहुना लुहुका न ठान आगता गोगा दिम्बा विध्तवा मस पिचत्वा व्यादित्वा नडगुटुञ्च जडपञ्च चम्मञ्च तत्वव छड्डत्वा अवसेसमस आदाय अगमस् ।

ब्राह्मणो आगन्त्वा नहरपुट्टादिमतामव दिस्वा विलिसि—अय अगिभगवा अन्तरा मन्तर्काम्य र्गक्वत न सक्काति भ पत्र कदा रिकिस्तिति ? इमिना आणिपरिहरणा निरस्यवेन भवितः ब नात्य रोनिदाना कृत्र न वा बड्ढी वाति । सो ऑग्यिपरिचरियाय विगतच्छत्दो हम्मा । अग्यामगवा । त्व अत्तरापि सत्तक रिक्बत् अस्कोत्तो भ कदा रिकिस्तिति ? मस नित्य एनकेनिषि तुस्साहीति नटगुट्टादीनि अग्याम्बिद पविवयन्तो स्म गायमाह —

बहुम्पेत ग्रसब्भि ! जातवेद ! य त वालिधनाभिपूजयाम, मसारहस्स नत्यज्ज मस नद्धगुट्ठिम्प भव पटिग्गहासूति ।

एव बस्वा महासत्तो आँग उदकेन निम्बापन्ता इसिपब्बज्ज पम्बद्धित्वा अभिञ्जा च समापत्तियो च निब्बत्तेत्वा बहुलोकपराययो। अहोमि । सत्या इम धम्मदेसन आहरित्वा जातक समोधानसि । निब्बुतागता-पसो अहमेव तेन समयेनाति ।

प्र. राधजातकं

न स्व राघ ! विज्ञानासीति इदं सत्या—जेतवने विहरन्तो पुरागादुर्तियकापलोभन आरब्भ कथेसि ।

वञ्चपञ्च दश्य

पञ्चूपाझन्युं इन्द्रियजातके आवीभवित्मति । सत्या पन त भिन्न् आमन्तेत्वा—भिन्ननु । मातु-गामा नाम अरम्बिया आरम्ब ठरोता पञ्चलापि ता रम्बियत् न सम्बर्गात व्विष्म पुळे एन आरम्ब ठरेत्वा एक्बलोपि रम्बियत नामिक्ब द्वानि कर रम्बियनमिति वत्वा अतीन आहरि ——

प्रतीतवस्थ

अतीने बाराणसिय ब्रह्मदने रज्य कारोने बोधिसत्तो मुक्योनिय निव्यत्ति । कासिरहर्ठ एको ब्राह्मएो बोधियनञ्ज काणुद्रभाराज्यस्य पुत्रहाने ठेरेला पोसीम । तेत् शोधिसनस्य पोह्नपाशीन नाम अहाँति । हन-रस्य राघोति । नस्य पन बाह्मणस्य भरिया अनाचार होति हुम्पसीमा । सौ बोहारखाय गच्छन्तो उमोधि भातो ब्राह्म---नाग । सचे बो माना बाह्मणी आनाचार आचर्रत बारेत्याथ नित्त ।

वोधिमनो आह---माध तात ! वारेत सक्कोन्ना बारेय्याम, असक्कोन्ता तण्ही भविस्सामाति ।

एव बाग्रागो बाग्रागि मुकान नीयादेन्या बोहारम्थाय गर्ना। तस्म पन गतविवसतो पट्टाय बाग्रागी अनिविन्ति आरद्या । पविम्मतानञ्च निक्कमनामञ्च अन्तो तत्वि । तस्म किरिय दिस्य राधो बोधियन आह——मातिक ! अन्द्राक पिता संबं से माना अनावार आवर्गन वारेय्यायानि वस्त्रा गर्नो, दशनिषंसा अनावार आवर्गन बारेम नन्ति ।

बोधिसत्तो—नान । त्व अननो अध्यत्तताय बालभावेन एव बदेसि, मातुगाम नाम उक्किपित्वा चरनापि रक्षित्र न सक्कोन्ति । य कम्म कान न सक्का न न कान नदनीनि इम गाथमाह —

न त्व राघ! विज्ञानासि ग्रह्दरले श्रनागते, ग्रह्मायत पिलपमि विरत्ता कोसियायनेति ।

एव पकामेत्वा च पत ब्राह्मिण्या मींड राजस्म वन् नादामि । सापि याव ब्राह्मएस्स अनागमना ययात्मिच्या विचित्र ब्राह्मणो आगल्या पोष्ट्रपार पुण्छि----नात । कीरिसी ते माताति । बीपिसनी ब्राह्म-गासस सक्त यदाभुत करेत्या कि ते नात । एवरुपाय दुर्णालायाति च बन्या तात । अन्हेहि मातुषा दोसस्म कपितकानतो पट्टाय न सक्का इत्र बितनुत्ति ब्राह्मणस्म पादे वस्त्रित्या मिंड रागेन उप्पतित्वा अरुङा ब्रामानि ।

सत्या इम धम्मदेसन आर्हाग्न्या बनारि सच्चानि पकार्मीम । मच्चपरियोगाने उनकण्ठितभिक्कु सोतार्पत्तिकने पतिद्वहि । नदा पन ब्राह्मणो च श्राह्मणो च एनेयेव हे जना आहेसु । राधो आनन्दो । पोट्ट-पादो पन अहमेवाति ।

६. काकजातकं

व्यपि नुहन्का सन्ताति इदं सत्या—जेतवने विहरन्तो सम्बद्धले महत्लके भिक्खू आरब्भ कथेसि ।

पञ्चुपन्न वत्यु

ते किए सिहीकालें सावनिष्यं कुटुर्निकका अहबा महुजा अञ्जासञ्जा सावना एकती हुत्या पुञ्जाति तर्माना सत्य प्रमादेवन सुरवा यय सहस्त्रका कि नो घरावासेन सत्यु सन्तिक रुपयोष बुढवावने पत्रविलया दुक्तस्त्रस्त के सिस्तामाति सत्यं वारानेय्य पुत्तभीवारोनी दत्या अस्मुस्त्र आतिसाव्यं बहाय सत्यारे प्रकल्यं धाविल्या पत्रवित्तम् । पत्रवित्या न पत्र पत्रक्राजातृक्य समरायम्य न करिस्तु, महत्त्वकशावेन घम्मिय न परिवापुर्शित्स्, मिहीकाले विव पत्रवित्तकाविष विहारपरिवर्त्त पण्यासालं कारेटला एकतीव वीसत् । पिण्डाय चरलापि अञ्चाव्यं अस्त्रवान भेमूर्येन असत्रात्र पुरवारान्तेक यहे नन्त्वा भूज्जात् । तेसु एकत्त्व पुरवाहित्तिका सन्दे सम्प्त महत्त्वकरवेरानं उपकारा अहोसि ।तस्मा सेसापि अत्रता लढ आहार गहेत्वा तस्सा वेव गेहे निसीवित्या भूज्जाति । सापि तेस यथावात्रिहित सुव्यज्जत देति । सा अञ्जातरेन आवायेन पहुर कालमकाति । अय ते महत्त्वकरवेरानं उपकारा अहोसि ।तस्मा सेसापि अत्तता लढ आहार गहेत्वा तस्सा वेव गेहे निसीवित्वा त्र महत्त्वकरवेरानं उपकारा अहासि ।तस्मा सेसापि अत्तता लढ आहार गहेत्वा तस्सा वेव गेहे निसीवित्वा ।

ते—अन्हाक सहायस्स पुराएषुतियिका मधुरहस्थरमा कालकता [४१६], अन्हाक अतिविय उप-कारा इदानि कृतो तथारूपि लिभस्साम, इमिना कारएगेन रोदिन्हाति आहसु ।

तेस त विष्णकारं दिस्वा मिक्क् पम्मसभायं कथ समृद्वापेसु—आवृसो ! इमिना नाम कारगोन महत्तन कर्चरा अञ्ज्ञासञ्ज्ञ गीवाय महेला विहारपञ्चले रोस्ता विवरत्त्रीति सत्या आगन्वा कायनुत्य भिक्क्ये ! एतरिंह कथाय सिन्निस्त्राति पुन्छिस्वा इमाय नामाति वृत्ते न भिक्क्ये ! इदानेवेते तस्सा कालतिरयाय रोदला विवर्षाल, पृत्येरेते इम काक्योनियं निक्कतिस्वा समुद्दे मन निस्साय समृद्दा उदक उस्सिञ्चिया एन नीहिस्सामाति वायमला पण्डिले निस्साय जीवित सोमक्षित वस्त्रा अतीत आहरि —

प्रतीतमस्य

अतीते बाराण्सियं ब्रह्मद्रसं रज्यं कारेने वोधिसत्तो समृद्देवता हुत्या निन्नति । अयेको काको अत्तनो अरियं काकि आदाय गोषर परियेसमानो समुद्दतीर अगमाति । तरिम काले मनुस्मा समुद्दतीर बीरपायासमञ्च-मससुरात्तीह नायबन्तिकर म करवा पक्किंम्स् । काको बनितकम्मष्ट्रान गरनवा सीरादीनि दिश्वा सद्धि काकिया सीरपायासमञ्ज्यसदीनि परिसृञ्जित्वा बहु सूर गिवि । ते जभोगि सुरायदमता समृद्दकील कीमि-स्सामाति वेन्त्र निर्मीदित्वा नहायिन् आर्राभ्यु । अयेका उक्ति आपन्ता काकि गहेरवा समृद् पवेसीस । तमेको मच्छी मसं सादित्वा अन्मोहिर । काको भरिया मे मताति रोदि परिदेवि ।

अथस्स परिदेवनसद् सुत्वा बहु काका सिम्नपितत्वा---िक कारएगा रोद्रसीति पुच्छिसु । सहायिका वो वेलन्ते नहायमाना ऊमिया हटाति ।

त सब्वेण एकरवं रक्ता रोबिष् । अव नेसं एतबहोसि इसं समुदोदकं नाम अम्हाकं कि पहोति ? उदकं उत्तिर्धाञ्चला समृदं पुच्छं कथा बहायिक नीहरिस्सामाति । ते मुखं पूरेला उदकं बहु छह्छेति । सोएएकेन म नले सुस्सानों उद्दायद्वाग पत्र नत्त्व विस्तमन्ति । ते हनुसु किलनेस मुखंसु सुक्कतनेसु अधिकसु रेतेषु दीना किलना हुला अञ्चामञ्जे आमन्तेला—अस्मो ! मयं समृद्दा उदकं गहेला बहि पातेम गहितगहितद्वानं पुन उदकेन पूरीत समृदं तुच्छं कार्त् न सिक्तसामाति बरवा इसं गायमाहंतु ---- काकजातकं ३६१

व्यपिनु हनुका सन्ता मुख्यन्य परिसुस्सति, बोरमाम न पारेम पुरतेव महोदधीति।

तत्य-सिषन् हन्का सन्ताति अपि नो हन्का सन्ता अपि अम्हाकं हन्का किलन्ता । स्रोर-माम न परिभाति सयं अत्तनी बलेन महासमुद्दा उदक आकड्डेम ओसारेम नुच्छ पन न कातु न सक्कोम अयं हि प्रतिब महोदयीति । ४१७]

एवं च पन वरवा सब्बंधि ते काका तस्सा काकिया एवरूपं नाम नुण्ड अहोसि, एवरूपानि वट्टस्कीनि एवरूपं स्वविद्यालानं, एवरूपो मधुरसदो, सा नो डम चौरसमृद्द निस्साय नट्टानि बट्ट विष्पतर्पसु । ते एव विष्पत-पमाने समझदेवता भेरवरूप दस्सेत्वा पतापेसि । एव तेस सोतिब अहोसि ।

सत्था इमं धम्मवेसन आहरित्वा जातकं समोधानेसि । तदा काकी अय पुराखुतियिका अहोसि काको महत्लकत्थेरो । सेसकाका महत्लकत्थेरा । समदृदेवता पन अहमेवाति ।

काकजातकं।

७. पुष्फरसजातकं

नियद हुन्स प्रदु हुन्सनित इद सत्या जतवन विहरन्ता एक उनकण्ठितभिक्स आरब्भ वधेसि ।

यच्छ्पन्नवत्यु

सी हि भगवता सज्ब किर त्व निक्कु । उक्कफिटतीति वृत्त सज्बन्ति कता केन उक्कफाणितोसीति ब युटठो पुराराषुतिविकायाति बत्ता मधुरहुल्यनिका भन्ते । मा इत्यी न सक्कामित विना बांसतुन्ति आहं । अय न सत्या एसा ते भिक्कु । अनत्यकारिका पुब्बिंग त्व एत निस्साय सूल उत्तामितो एतञ्जे व परिदेवमानो काल कत्वा निरय निक्कतो इरानि त कस्या पुत्र पत्यक्षीति बत्त्वा अतीत आहरि —

प्रतीतवत्यु

अतीतं बारागुसिय ब्रह्मयत रज्ज कारन्ते बोधिमातो आवासट्टदेवता अहोमि । अय बाराग्यस्यि कत्तिव रित्तवारक्षमो सम्पत्ती होति । नगर देवनगर विध अलक्ष्वीन्त । सब्बी जनी द्वग्णकीवार्तिमस्ति अहोित । एकस्स्य पन बुग्गतमनुम्सस्स एकमेव धनसाटकयुग अहोित । सो न गुधोत घोषाण्या आभञ्जापन्या सतवन्तिक सहस्यविक्त कारित्वा ठापि ।

अथ न भरिया एवमाह—इच्छामह सामि ! कुमुम्भरत्त निवासेत्वा एक पारुपित्वा तव कष्ठ लग्गा कत्तिकर्रात्तवार चरितृत्ति ।

भद्दे । कृतो अम्हाक दलिद्दान कुमुम्भ ? सुद्धवत्य निवासेत्वा कीलाहीति ।

कुसुम्भरत्त अलभमाना छगाकीन न कीलिस्सामि त्व अञ्ञ इत्थि गहेरवा कीलस्मूति ।

भद्दं कि म पीलसि ? कुती अम्हाक वृसुम्भन्ति ?

सामि । पुरिसस्स इच्छाय सति कि नाम नित्थ । नन् रञ्जो कुसुम्भवत्थुस्मि बहु कुमुम्भन्ति ?

भट्ट । त ठान रक्ससपरित्याहीतपोक्सरगोसदिस बलवारक्या न सक्का उपसङक्षित मा त एत रुच्चि यथालद्भनव तुस्सस्मृति ।

सामि । रत्तिभाग अन्धकार सति परिसस्स अगमनीयट्टान नाम अत्थीति'

इति सो ताय पुत्रपुन कश्वांत्र्या किस्तवनेन वचन गहेरवा हानु भट्ट्र । मा जिल्त [४१६] प्रित्याति त समस्यादिक रात्त्रमाण जीविन परिच्वांत्रका नगा निक्वंपित्वा रूट्या सुमुभवन्त्र ग॰ वा वित महित्वा अत्योदत्त्र पावित्त । आरक्तमपुन्ता वातिम्द मृत्या बोग चोरोति परिवारत्वा गहेद्दा परिभा सित्वा कोहुत्वा विभावा कित्या वित्याद्वा नित्या राष्ट्रप्त रहित्य परिकार कित्या कित्या कित्या कित्या कित्या कित्या विश्वाप्त कित्या विश्वापत कित्या विश्वापत कित्या विश्वापत कित्या विश्वापत कित्या विश्वापत कित्या विश्वापत विश्वापत विश्वापत कित्या विश्वापत कित्या विश्वापत कित्या विश्वापत विश्वापत कित्या विश्वापत कित्य विश्वापत कित्या विश्वापत कित्य कित्या विश्वापत कित्या विश्वापत कित्य कित

नियद तुक्ल झर्तुं तुक्ल य म तुद्दित वायसो य सामा पुष्करत्तेन कत्तिक नानुभोस्सतीति।

तत्य---निषद हुक्क महु हुक्क यम पुनित वासमोति यञ्च इद मूल लागनपञ्चय नायिकचेतिसव दुक्क यञ्च लोहमयहि विय तुष्डहि वायसी तुरित इद सब्बम्पि मध्ट न हुक्क अद् हुक्क एतयव पन म हुक्कृति अत्थो। कनर ? य सामा पुण्करतेन कत्तिक नातृभोस्सतीति य सा पियळगुमामा मम मरिया एक वृस्मभरत

१ स्मा०-एका प्राकासचारिणी देवता तस्त ग्रनागतभय दिस्वा तं निवारेसि ।

निवासेरवा एकं पारुपित्वा एव घनपुष्करतेन वत्ययुगेन आच्छन्ना मं कण्ठे गहेत्वा कत्तिकरत्तिवार नानुभवि-स्सति इमें मध्हें दुक्कं, एतदेव हि म वाधनीति ।

सो एवं मातुगामं आरब्भ विष्पलपन्तोयेव काल कत्वा निरये निब्बत्ति ।

सत्था इस बम्मदेसनं आहरित्वा जातक समोधानेसि । तदा जबस्पतिका इदानि जबस्पानिका । तं कारणं पच्चकल कत्वा ठिता आकामद्रदेवता पन अहमेवाति ।

पुष्करसञ्जातकं।

सिगासजातकं

नाहं पूर्व न च पुनन्ति इद सत्था जेतवने बिहरन्तो किलेसनियाह आरब्भ कथेसि ।

पच्चपन्नवस्यु

साबत्थिय किर पञ्चसतमत्ता सहायका महाविभवा सेट्रिपुत्ता सत्थु धम्मदेसन सुत्वा सासने उर दत्वा पञ्चजित्वा जेतवने अन्तोकोटिसन्यारे विहरिस् । अथेवदिवस तेस अडढरत्तसमये किलेसनिस्सितो सकप्पो उप्पक्ति । ते उक्कण्ठित्वा अत्तना जहितकिलेसे पून गण्हित चित्त उप्पादयिस । अद्य सत्या अडढरत्तसमनन्तरे सब्बञ्जातञारादण्डदीपिक उक्खिपित्वा कतराय नुखो रानिया जेतवने मिक्स विहरन्तीति अज्भासय ओलो-केन्तो तेस भिक्कन अब्भन्तरे कामरागसकप्पस्स उप्पन्नभाव अञ्जामि । सत्या च नाम एकपृत्तिका इत्थी अत्तनो पूत्त विय एकचक्खको [४१६] पूरिसो चक्य विय अत्तनो सावके रक्खित । पृथ्वण्हादिस् यस्मि यस्मि समये तेस किलेसा उप्पज्जन्ति ते तेस किलेसे ततो पर विडढत अदत्वा तस्मि तस्मियेव समये निगण्हाति । तेनस्स एतदहोसि. अय च चक्कवत्तिरञ्ञा अन्तोनगरेयेव चोरान उप्पन्नकालो विय वत्तति इदानेव तस धम्मदेसन कत्वा ते किलेसे निग्गण्हित्वा अरहत्त दस्सामीति । सो मुर्गभगन्धकटितो निक्वमित्वा मधरस्यरेन आनन्दाति आयस्मन्त धम्मभण्डागारिक आनन्दत्थेर आमन्तेसि । थेरो वि भन्तेति आमन्त्वा विदत्वा अट्टासि । आनन्द ! यत्तका भिक्ख अन्तोकोटिसन्यारे विहरन्ति सब्बेव गन्धक्टिपरिवेगो सन्निपानेहीति । एव किरस्स अहीसि सचाह तेयेव पञ्चसते भिक्ख पक्कोसापेस्सामि सत्यारा नो अब्भन्तरे किलसान उप्पन्नभावो ज्ञातोति सविग्गमानसा धम्मदेसन पटिच्छित् न सक्तिस्सतीति । तस्मा सञ्जे सन्निपानेहीति आह । थरो साधु भन्तिन अवापुररा आदाय परिवेगोन परिवेण आहिण्डित्वा सब्बे भिक्त गर्थकृष्टिपरिवेगो सन्निपानेत्वा बद्धामन पञ्जापेमि । सत्था पत्नबक्त आभुजित्वा उज् वाय परिगधाय सिलापठविय पतिद्रहमानो सिनेधविय पञ्जानबुद्धामन निसीदि । आवेलावेला यमकयमका छब्बण्एघनबुद्धरस्मियो विस्सज्जन्तो । तापि रस्मियो पागिमला छत्तमत्ता कटा-गारकच्छिमत्ता छिज्जित्वा छिज्जित्वा गगननले विज्जल्लना विय सञ्चरिम । अध्यावकच्छि खोभन्वा बाल-सरियगमनकालो विय अहोसि । भिक्ख्सक्रघोपि सत्यार वन्दित्वा गरुचित्त पच्चुपटुपेत्वा रत्तवस्वलमाणि परिक्लिपन्तो विय परिवारेत्वा निसीदि ।

सत्ता बद्धास्तर निच्छारेन्ती भिक्कृ आमनेत्वा—न भिक्कृत्व । भिक्कृता नाम वामिवननव व्यापा-देवितक्क विद्वित्तावितक्वनित समे तयो अकुमत्तवितक्के वित्तकेतु बहुति अन्तो उपप्रविनयेग हि पिन्तकोति उनातृ न बहुति, विजेगो नाम पच्चामिनमाँदमो पच्चामिनो च लुदुवे नाम नित्व ओवाग लिग्तित्व विनासमय पापेति, एवमेव अप्पानकोषि किलेमो उपाजिज्ञ्वा विद्वत्तु लभन्तो महावितास पापेति निक्यो नामेक हन्ना-हनविसमूममो उपाटितच्छविनोमगण्डितभो अमीविसपिटभागो अमित्रज्ञीगमादिमो इटगे अटल्या पहुमिनि-पत्ता उद्दिबन्दुविय विवट्टित एव पर्वाटतव्यो पोरालक्वपिटलापि अप्पानकमित्र विलेस गर्राहत्या यथा युत्र अन्तमने नृप्यज्ञति एव निमाणिकुमृति बत्वा अनीत आहर्षि —[४२०]

द्मतीतवस्यु

अतीने बारागामिय ब्रह्मदने रज्ज नारेन्ते नीधिमतो निगानधीनिय परिमाण्य गहेत्वा अरञ्जे नदीतीर निवास चणेवि। अथेको जरहत्यी गह्यातीरे कावनकासि। सिगालो गोवरणस्तो न हस्तिसरीर दिस्य नहां में गोवरी उपक्षीति गल्वा सोण्डे डिस। नह्यातीसाय दहनालो विया अहोसि। सो नदेश्य स्वादिनक्षयुनकिन्त दन्ते डिस। यस्में दहनालो विया अहोसि। क्षण्णे डिस। सण्लेटिय दहकासी विय अहोसि । उदरे इसि । कुमुले दद्रकालो विय अहोसि । पादे इसि । उद्कम्बले दद्रकालो विय अहोसि । नङ्गुटठे इसि । मूसले दहुकालो विय अहोसि । एत्यापि नत्थि स्वादितब्बय्तकन्ति सब्बत्थ अस्मादं अल-भन्तो बन्बमागे डिस । मदपवे ददकालो विय अहोसि । सो लद्धदानि से हमस्मि सरीरे मद खादितस्वयन-ट्रानन्ति । ततो पट्टाय खादन्तो अन्तोक्च्छि पविसत्या वक्कहदयादीनि खादित्वा पिपासिनकाले लोहित पिवित्वा निपिज्जितुकामकाले उदर पत्थरित्वा निपज्जित । अथस्स एनदहोसि इद हरिखसरीर मटहं निवा-समस्ताय गेहसदिस खादितुकामताय सति पहतमम किदानि मे अञ्जात्य कम्मन्ति सो अञ्जात्य अगन्तवा हित्यकच्छियंथेव मंस खादित्वा वसति । गच्छन्ते गच्छन्ते काले निदाधवातसम्फरसेन चेव सरियरस्मिसन्तापेन च त कराप सस्सित्वा वितयो गण्डि । सिगालस्स पविद्वार पिहित अन्तोकच्छिय अन्धकारो अहोसि । सिगा-सस्स लोकन्तरिकनिवासो विय जातो करापे सस्सन्ते मसस्य सस्सि लोहितस्प पश्चिष्ठिज्य । सो निक्खमन-द्वार अलभन्तो भयप्पत्तो हत्वा सन्धावन्तो इतोबितो च पहरिस्वा निक्लमनद्वार परिग्रेसमानो विचरति । एव तरिंग उनलालिय पिट्रपिण्डि विश्व अन्तोक्िश्रय सिज्जमाने कतिपाहरूबयेन महामेघो पावस्सि । अथ न कराप तेमित्वा उद्वाय पर्कातमण्ठानेन अदासि । बच्चमग्गो विवटो हत्या तारका विय पञ्जायि सिगालो न श्चिह दिस्वा इदानि मे जीवित लढन्ति यावहत्थिमीसा पटिककमित्वा वेशेन पक्किन्दत्वा बच्चमग्ग सीसेन पहरित्वा निक्खमि । तस्य समिन्नमरीरत्ता सञ्बलोमानि वच्चमयो अल्लीयिस् । सो नालक्खन्धमदिसेन निल्लोमेन मरीरेन उच्चिमाचित्तो महत्त धावित्वा निवत्तित्वा निमिन्नो सरीर ओलोकेत्वा इद दक्क मरह न अञ्जोन कत लोभहेत पन लोभकारगा लोभ निस्साय मया एत कत इतोदानि पटाय न लोभवसिको भविस्सामि पून हत्थिमरीर नाम न पविसिस्सामीति सविगाहदयो हत्वा इम गायमाह :--

नाहं पुनं न च पुनं न चापि प्रपुनःपुनं, हत्यिबोन्वि पवेक्कामि तया हि भयतिकातोति । [४२१]

तन्य--- वापि प्रयुक्तपुत्रिक अकारो निशानमत्तो । अय पनेतिनसा सकलायपि गायायत्यो । अह हि हनो पुत नतो च पुत्रतित बुत्तवारतो पुत तत्तीपि च पुत्रपुत बारणसरीरसहस्वात हिस्बोधिव न पवेषवापि । कि कारणा तिवाहि भयतिष्ठती तवाहि अह हमस्मिवंव पवेशने भयतिष्ठती मरणभयेन मन्तास सवेग भणावित्तीत ।

एवञ्च पन वत्वातनो च पलायित्वापुन त वा अञ्चा वा हत्विमरीर नाम निवन्तित्वापि न ओलो-केनि । ततोपदाय न लोभवसिको अहोनि ।

सत्था इसं धम्मदेसन आहरित्वा भिक्कवं । अस्तो उत्पन्नलेकसस्य नाम बहिडतुं अदस्वा तत्व तदेवे निम्मापृहत् बहुतीति अत्या मञ्चानि पकासेत्वा जातक ममोधानेमि । मञ्चापियोमाने पञ्चसतापि ने जिम्मु अरहाने पिनृहिम्स् । अयंगेयमे केचि मोतापन्ना केचि सकदागामिनो केचि अनागामिनो अहेसु । नदा मिगानो अक्रमेच अहामिति ।

सिगालकातक।

ह. एकपश्याजातकं

एकपण्यो प्रयं घवकोति इद सत्या बेसालिय उपनिस्साय महावने कटागारसालाय विहरन्तो बेसालिक दुद्रलिच्छविकमारक आरक्भ कथेसि ।

पच्च पन्नबत्यु

तिस्मि हि काले बेसामिनगर गाबुतगाबुनन्तरे तीहि पकारेहि परिक्लित, तील् ठानेस् मोपुरहालकोट्टकब्दुल परसलोभणप्ता । तत्स निष्काला राज्य कारेला बक्तवान येव पाजुन सत्तरहस्तानि सत्त क् क् राजानी होन्ति, तत्तकार्येव उपराजानो, तत्त्व सेनापिताने, तत्तका भण्डागारिका । तेव राजकुमारान अन्तरे एको द्भुतिष्व्यविकुमारी नाम अहोसि, कोशनी चण्डो फरसो, रण्डेन घट्टितासीविज्ञो विस निक्च पर्य-जितो कोषेन । तस्स पुरतो हे तीशिण वचनानि कवेन् समत्यो नाम निष्य । त नेय मातापितरो न ज्ञातयो न मित्तसुहज्जा सिक्सापेत्, सीक्सायु । अस्सस मातापितुस एतवहीसि अय कुमारो अनिफरसो साहसिको ठपेखा समासान्यु बज्जा हो स्म विनेतु समत्यो नाम नत्ति बुढ्वनेत्येन पन भवितव्यन्ति । ते त आदाय सन्यु सन्तिक गन्तवा वन्तित्वा आहत्त-भन्ते । अयः कमारो चण्डो फरसो कोभेग पञ्जनित इमन्म औवाद देपाति ।

सस्या त कृमार ओविद—कृमार । अम् नाम सनेतृ वण्डेन फरोत साहिसकन विटेवन वानिकेन मिद्रवा । फरसवाची नाम विवादमातृयापि पिनुनोपि पुन्नम्पि भानुमिर्मानीम्प [८२] पवापित्यापि मित्तवस्वातीम्प अपियो होति असमार्ग डेसिन् आगल्डक्तो स्पे विव अटिवय उद्वित्वचेषा विव कावित्र आगल्डक्तो स्पे विव अटिवय उद्वित्वचेषा विव कावित्र आगल्डक्तो स्वक्तो विव उद्वत्वचेषा विद्यत्व इतियापित्यापित्यापित्य निव्यत्व विव अटिवय अपियो प्रमानो मिद्रवत्यसामित्रीय दुक्कणीव होति । पुत्राप्तस्वसिम्पित्तम्पस्म मृत्र जातामित्रवपद्व विय मनणडीतकरूच- नादासयण्डत विय च विक्रम होति दुर्दस्क । काच निवचेन मत्ता स्वत्य आपाय अनताय अतान प्रमान विव स्वादित , उत्त्य प्रक्रमान्ति , परात परत्रति । यह कोवचेन वालच्चन नित्यादित उपायकीनि विदेवकवातिकाणि विटेवेष सम्मे गरह पत्वा वायस्स भद्र निर्यादिन् उपायकीनि । प्रमान विक्रवाद्यापित्यस्य प्रमान अत्यापित्यस्य जातकात्यापुत्रय रोगवन्त्य होति । वस्त्र गोगो मोत्रसाति व्यादिन् उपायकीन । प्रमान वृत्य एववित्र पतिन स्वित्यस्य प्रमान हत्वा निव्यद्वित । तस्य मञ्ज्यस्य मुद्रित्व पतिन हित्यस्य स्वित्यस्य ह्या निव्यद्वित हाति । तस्य मञ्ज्यस्य मेन प्रमानित हित्यस्य मद्रित्वन अपित । तस्य मञ्ज्यस्य मेन प्रमानित हत्वा विचाय मद्रित्वन । स्वस्य मञ्ज्यस्य मुद्रित्वन । स्वस्य मञ्ज्यस्य मुद्रित्वन । स्वस्य मञ्ज्यस्य मञ्जयस्य ।

सो कुमारो सन्यु बोबार लिम्बला क्लोबारेन निज्ञतामो दन्तो निब्बिवनो मेर्ताचितो महिच्यो सहीमा अक्लीमरा विकास कर समुद्रालेन अब्लास के उत्तर के अर्थ महिप्त अक्लीमरा अक्ल

सत्या आगन्त्वा कायनृत्य भिनस्यवे । एतरहि क्याय सिन्नसिन्नाति पृच्छित्वा इमाय नामाति बुत्ते न भिनन्तवे । इटानेवेस मया एकोवादेनेव दमितो पुब्येपह इम एकोवादेनेव दमेसिन्ति बन्वा अनीत आहरि - [४२३]

प्रतीतवस्यू

अतीते बारागासियं बहादतं रज्य कारन्ते वोधिसत्तो उदिच्चब्राहागुकाणं निव्यतिस्या वयपत्तो तकः सिनाय तथा वेदे सब्बसिप्पानि च उमाण्डित्वा कञ्चिकान घरावास वसित्वा मनापिनुत अच्चयंन इसिपब्य-ज्यं पत्र्वाज्ञिया अभिञ्जा च समार्थात्त्यो च निव्यतेत्वा हिमयने वामं कप्पीत तत्त्व चिर बसित्वा लोगास्व-स्वस्वनत्वाय जनपद आगन्त्वा बारागास पत्वा राज्याने वसित्वा पुनदिवसे सुनिवत्यो सुपास्तो तापसारुप्प-सम्पत्नी भिनवाय नगरं पविसत्वा राज्ञहाण गार्गुष्ण।

राजा सीह्यप्रव्यरेन ओलोकेन्तो त दिस्वा इरियापचे पत्तीदित्वा अय तापसो सन्तिद्रियो सन्तमानसो युगमत्तदसो पदवारे पदवारे सहस्सत्यविक ठभेन्तो विय सीह्यजमिमतेन आगच्छति सचे सन्तप्रम्मो नामेको अस्य इमस्स तेनवभन्तरे भविकस्यन्ति चिन्तेत्वा एकं अमच्च ओलोकेसि ।

सो--- कि करोमि देवाति आह।

एतं तापसं आनेहीति ।

सो साथु देवाति योधिसत्त उपसक्तिमत्वा वन्दित्वा हत्यतो भिक्लाभाजन गहेत्वा कि महापुष्ट्याति वन्ते—भन्ते । राजा त पक्कोमतीति आह ।

बोधिसत्तो--मय राजकलपगा हेमवतका नामम्हाति आह ।

अमच्चो गत्त्वा नमत्य रञ्जो आरोचेमि । राजा अञ्जो अम्हाक कृतुषमो नित्य आनेहि नित्त आह । अमच्चो गत्त्वा बोमिमत वन्दित्वा याचित्वा राजनिवेनन प्रवेसीम । राजा बोभिमत विदित्वा समुस्तितमेनच्छनं कञ्चनपत्त्वदके निमीदापेत्वा अननो पटियन नानम्गरमोजन भोजेत्वा---भन्ते । कृहि वनवानि पृष्टिग्र ।

हेमवतका मय महाराजाति ।

इदानि कह गच्छयाति ?

वस्मारत्तानुरूप सेनामन उपधारेम महाराजानि ।

तेन हि भन्ते ! अम्हाकञ्ञोब उय्याने बमधाति ।

पटिज्ञा गहेत्वा सविध्य भूज्यित्वा बोधिसन आदाय उत्यान गत्त्वा पण्णसालं मापेत्वा रत्तिद्वानिदि बाद्वानानि कारेत्वा पत्र्वजिनपरिसमारे दत्वा उत्यानपान पटिज्ञ्जापेत्वा नगर पार्विमि । ततोपद्वाय बोधिसत्तो उत्यान वर्मात । राजापिस्स दिवसे दिवसे द्विनम्बन्त् उपद्वान गब्छति ।

तस्य पन रज्ञा दुरूक्मारो नाम पुतो अहोस्य चण्डो फरुसो नेव न राजा दमेन असस्य न सेसङातका अमच्चापि ब्राह्मात्मकरपितकापि एकतो हुत्या मामि । मा एव करि एव कान् न तन्थाति क्रिकट्या कपेतापि कर्ष गाहापेनु न सम्बद्धा राजा चिन्तीस—ज्येत्वा मम अस्य सीनवन्तरापम अञ्ज्ञा डेम कुमार दमेनु समस्यो नाम नित्य, मी येज न दमेम्ब्सतित ।

मो कुमार आदाय श्रोधसतस्य सन्तिक गत्या भन्ते । अय कुमारो वण्डो करूमो, सय दम दमेनु न सक्कोम तुन्हें न एकेन उपायेन सिक्काशेशाति कुमार वारियनस्य [८२८] निय्यादेन्ता यक्कामि । शोधि-सत्ती कुमारे गहेत्या उप्याने विवरन्तो एकतो एकेन एकनो एकेनाति झीहियेव पसेहि एकं निम्बयोनक दिस्वा कुमार आह—कुमार । एतस्य ताव क्ष्मयोनकस्य पण्ण सादित्वा रम जानाहीति ।

स्रो तस्य एक पष्णां सङ्ग्लादित्वा रस जात्वा घीति' सहन्नेन भूमिय निष्ट्रुमि । किमेत कुमाराति बुने— भन्ते ! इदानेवेस स्ववी हलाहनविन्पुमो बङ्ग्लो पन बहु मनुस्मे मारस्मतीति निम्बपीनक उप्पाटेत्वा हत्येहि परिसङ्ग्लि इम गावमाह :—

> एकपण्णो अयं रुक्लो न भूम्या चतुरङ्गुलो, फलेन विसक्तप्पेन महायं कि भविस्ततीति।

१. स्या०-छिछीति ।

तत्य—एकपन्नांति उभोगु परसेस् एकेकपन्नां। । मृथ्या खतुरक्षानांति भूमितो चतुरक्रगुनमत्तिम्
न विद्वतं। फन्नेनाति पलासेन । विश्वसम्पाति हताहुनविस्तविसेनः। एवं खुद्कोपि समानो एकपरेन तित्तकेन पन्नोन समझागतीति अत्यो । वहायां कि भौबरक्ततीति यदा पनाय बुद्धिणत्तो महा भनिस्तित तदा कि नाम भविस्तित ? अदा मनसम्पात्को विस्तवतीति एव उप्पाटेला महित्वा छडकेसिन्तं आह ।

खन में बीधसती एतदबीच-कुमार ! त्वं इमं ताथ निम्बपीतकं इदानेव एवं तितको महत्नककाले कृतो इमं निस्ताय बद्बीति उप्पाटेत्वा महित्वा छह्ददेशि यथा त्वं एतस्मि पटिपिज्व एवमेव तं रहुवासिनोपि जयं कुमारो दहरकाले येव एवं चच्छो फरतो महत्त्वककाले राज्य तथा कि ताम करिस्सित ? कृतो अन्हाकं एवं निस्साय बद्बीति तब कुनसन्तकं राज्यं अदत्वा निम्बपीत विष तं उप्पाटेत्वा रहा प्रवाचावनियकम्म विर्-स्प्रति, तस्मा निम्बक्कपटिमागत हित्वा इतो पृद्या खनियोतान्वयमम्पन्नो होत्रीत ।

सो ततो पट्टाय निहतमानो निब्बिसेवनो खन्तिमेत्तानुहयसम्पन्नो हृत्वा बोधिसत्तस्स ओवादे ठत्वा पितु अच्चपेन रज्जं पत्वा दानादीनि पञ्जाकम्मानि कत्वा यथाकम्म अगमामि ।

सत्या इस घम्मदेसन आहरित्वा न भिक्खवे [।] इदानेबेसदुद्वनिच्छविकुमारो मया दमितो, पुज्येपाह एतं दमेसि येवाति बत्वा जानक समोघानेसि । नदा दुदुकुमारो अय निच्छविकुमारो अहोसि । राजा आनन्दो । ओवाददायकतापसो पन अहमेवानि ।

एकपण्णजातकं ।

१०. सञ्जीवजातकं

भत्रत्यं यो पम्पक्ततीति इदं मत्या बेनुबने बिहरन्तो अजातमनुस्म रञ्जा । असन्तपमाहं आरब्भ कथेसि । [४२५]

पञ्चपन्नधत्यु

सो हि ब ढान पतिकण्डकमूते दुस्सीने पापधम्मे देवदते पसीदित्या त असन्तं असणुरिसं पत्माव्ह तस्स सक्कार करिस्सामीति बहु वर्ष परिण्वजित्वा ग्रासीसे बिहार कारेत्वा तस्सेव वचन गहेत्वा पितर धम्मराजान सितापक्ष अर्थिताकक धानेत्वा अत्तानो सोतापत्तिमणस्त उपनिस्मय छित्तत्वा महावित्तास पत्मा । सो हि देवदत्तो एठिव पितर विज्ञान क्षिण्य लेको मित्र पत्मी सित्ता भीतनिस्तो रज्जसुक न तभित, सम्बे अस्मादस्य न विन्दित, तिक्कारस्यामिनुको हन्त्यपोत्तारे विच कप्पमानो विचरति । सो एठिव पत्मान विच अवीवजाल निक्कार्यन्ति विचरणात्म विच असीवजाल निक्कार्यन्ति विचरणात्म विच असीवजाल निक्कार्यना विच व तसनुपासि । तेनस्स एइटकुक्ट्रसंत्र महत्त्वीण कप्पमानस्म अवत्यान नाम नाहौस । से सम्मासम्बद्ध पस्तिनुकामो नमायेनुकामो पञ्च पुण्डिनुकामो अहोसि । अत्तनो पन अप-रापस्त्वताय उपस्टक्षित् न सक्कोनि ।

अवस्य राजगहतारे किनिकानिकार सम्पत्ते देवनार विध्य नगरे अनककते महातले अरूक्याएः पितृतस्य कञ्चनास्य निविद्यस्य पात्रकारे आविक कोमार्ग्यक्य अविदूरे निविद्य दिस्ता एत्रहासि—जीवक गहेत्वा सम्मायबूद एसिस्सामि न लो रप्त सक्का गया उन्नत्नेत्र वस्तु प्रत्यमा । जीवक । स्था गण्ण न सक्कोरि एहि स सत्य मिनक नेहीति परियायेन पन रामम्पयद क्योल्वा कञ्चन्यस सम्पण वा ब्राह्मण वा पविष्-पासित्यास य नो पविष्यात्मतानिकार पानिस्यापित वस्त्रमात्म न स्था अपन्या अनना अस्त्री स्थापात्म वस्त्रमात्मी करोगाति स्थापात्म स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्था

मो पञ्चिह परेहि राँन बर्णास—"नक्ष्यञ्ञा वन भो । दोमिना राँन, अभिरूपा वन भो । दोसिना राँन, उम्मिना राँन, रमसीया वन भो । दोसिना राँन, पासादिका वन भो । दोमिना राँन, रमसीया वन भो । दोसिना राँन, पासादिका वन भो । दोमिना राँन, रमसीया वन भो । दोसिना राँन, कन्नववज्ञ मय समस्य वा ब्राह्मण वा प्राह्मण व

अबेको अमञ्चो एरगाकस्मापस्म वाणा कथेमि । एको मक्चितगोमानस्म, एको अजितकेसकम्बनस्म, एको एक्शकञ्जायसस्म, एको सञ्जयस्म वेलिङ्गुलस्म, एको राषपुत्तिगण्डन्सारित । राजा तेत कथ सृत्या तुन्हीं अहोमि । सो हि जीवकस्मेत्र महामच्चस्म कथ पच्चास्मिति । जीवकोपि रञ्जा स आरब्स कथियेथ जानिस्सामीति अविदूरे तुन्हीं निसीरि ।

अथ न राजा आह—[४२६] त्वम्पन सम्स । जीवक । कि तुण्हीति ?

तांस्म बगो जीवको उट्टायामता यंत्र भगवा तेतञ्जित्वरणणामत्वा—एमो देव 'भगवा अरह सम्मा-मत्वुडो अन्द्राक अत्ववर्ग विदरति तदि अद्दर्शनतेष्टि भिष्मधुमतिह तञ्च पत्र भगवता एव कल्यागा कित्तिहरे अभूमानोति तव अरहादी एगो वत्वा जातिनो पट्टाय पुव्वित्तिस्तादिभेद भगवतो आनुभाव पत्तसेस्ता त भगवता देवो परिकासानु धम्म सुगापु पञ्च पुच्चतृति आह ।

१. स्या०-पोतो विय । २. स्या०-नाटपुलनिग्गण्ठस्साति ।

सो सुत्तर्पारियोसाने अत्तमनो भगवन्तं जागरेन्त्रा उट्टायासना पदिक्कण करूवा पक्कामि । सत्या अविरपक्क-त्तस्स रुज्जो भिक्कु आक्तरेत्वा-"स्तायं भिक्कये । जात, उपहृतायं भिक्कये । राजा, सावार विक्कये । राजा इस्मिरियकारणा पितर पम्मिकं पम्मराजानं जीविता न वोरोपेस्सय इसम्मिमेव आसने विरजं वीतमलं भम्मवक्कुं उपमिजस्सय । वैवदत्तं पन निस्साय असुत्तर्पाणाः कृत्वा सोतापिकक्का परिद्वीनोति" आह्

पुनविवसे भिक्क घम्मसभायं कथं समृहापेसुं-आवृसी ! अजातसत् किर असन्तपपाहं करवा दुस्तीलं पापचम्म देवदत्तं निस्साय पितुचातकम्मस्स करत्ता सोतापनिकला परिहीनो देवदत्तेन नासितो राजाति ।

सत्था आगन्त्वा नायन्त्य भिनकवं ! एतरहि कथाय मिन्निमाति पुन्कित्वा हमाय नामाति वृत्ते न मिनकवं ! अजानसन् इदानेव जसन्तरमाहं कत्वा महाविनासं पनो पुन्वेपेस असन्तरमाहेनेव असानं नासे-सीति वत्या कतीनं आहरि .—

ग्रतीतबत्यु

अतीते बाराग्सियं बह्यदते रज्यं कारेन्ते बोधिमत्तो महाविभवं बाह्यगृक्तं निव्यत्तिस्या वयप्पत्तो तक्कित्ति गत्त्वा सम्बद्धित्यानि उत्पहिल्दा वाराग्गीत्य दिसापामोक्को आवित्यो हुत्वा पञ्चमागुवककतानि मिम्पं बांबेति । तेमु मागुनेमु एको सञ्जीवो नाम मागायो अत्य । बोधिसनी तह्न सत्वकृत्रपनमत्त अवासि सो उद्वापनमन्त्रमे बहेत्वा परिवाहनमन्त पन अगहेत्वा एकदिवस माग्यवेहि सद्धि दास्त्रव्याय अरञ्जं गन्त्वा एक मतव्यार्च दिन्दा मागुने (२९०) आह—भी । इस मतव्याय उद्गारेस्सामीत ।

मारावा-न सक्तिस्समीति आहसु। पस्सन्तानञ्जाव वो उट्टापेस्सामीति। सचे माराव! सक्कोसि उट्टापेहीति।

श्रसन्तं यो पग्गश्हाति श्रसन्तङचुपसेवति, तमेव घासं कुस्ते स्पन्धो सङ्जीविको यथाति ।

तत्व—ससस्तित तीहि दुण्चितिहि समझानां दुम्मीन पाषपमा । यो पगण्डातीति य स्रतियादिम् यो कोणि एक्य दुस्तीन पक्षित्र वा चीवरादिसम्पदानेन ग्रहट्ठ वा उपर्ज्यनेनापनिद्वानिदिसम्पदानेन पर्याण्डाति । सक्कानसम्मान करोतीति अत्यो । स्रस्तन्यपुर्विद्याति यो च एक्स्य असन्त दुस्तीन उपोवित्त भि क्ष एक्स्य असन्त दुस्तीन उपोवित्त भि क्ष पर्वस्य असन्त दुस्तीन उपोवित्त भि क्ष प्रकार असन्त दुस्तीन उपोवित्त भि क्ष प्रकार क्ष्यादित । तस्य प्रसार कृष्तीति तमेव असन्तप्रमान्दनक तो दुस्तीनो पापपुण्याचे प्रमृति सक्ष्यादित । वन्य निवास प्रयोगित । क्य निवास क्ष्याचित असन्त स्थास अस्ति । वर्ष अस्ति । वर्ष असन्त सम्पाहित अनित प्रोगित । एवं असन्त सम्पाहित असन्त स्थास । वित्ता प्रमृति । एवं असन्त सम्पाहित । एवं असन्त सम्पाहित । एवं असन्त सम्पाहित । एवं असन्त सम्पाहित । वर्ष असन्त सम्पाहित । एवं असन्त सम्पाहित । वर्ष असन्त सम्पाहित । वर्ष असन्त सम्पाहित । वर्ष असन्त सम्पाहित । एवं असन्त सम्पाहित । वर्ष असन्त सम्पाहित ।

कोधिसतो इताव गायाय माणवान धम्म देनेत्वा दानादीनि पुञ्जानि करना यवाकम्मं गतो । सन्याधि इन यम्मदेवतं आहरित्वा जातक समीवानेसि । तदा मनव्यग्युद्वायको माणवी अजातसन्तु अहोसि । दिसा-पामोक्तवानियो पन अहनेवाति ।

> सञ्जीवजातकः। ककण्टकवरमी पण्णरसमीः।

> > उपरिमो पण्णासको ।

एककनिपातवण्णना निद्ठिता।

सुद्धिपत्तं

| पिट्ठे | पस्तियं | प्र सुद्धि | দুৱি |
|--------|--------------|----------------------|--------------------------------|
| ર | 5 | थरेन | थेरेन |
| ,, | ३० | उम्मण्हि | उमाण्हि |
| ą | २ | गाथाबन्धनेन न | गाथाबन्धनेन पन |
| ,, | ₹ | वचनेहि | वचनेहि |
| ,, | १० | वीरगामद्न | वीग्गासद्देन |
| ,, | 3 8 | गो | मो ं |
| 6 | 8 | ए व | ria. |
| ,, | 8 | ম ৰ | भवे |
| ,, | X | अजातिसम्बातन | अजानिमस्यानेन |
| ,, | 3 | निविधरगी | तिविधिगा |
| ,, | १२ | सङख्ञ | सञ्दर्भ |
| | ₹€ | यश्रासि | यथापि |
| , | 3 ₹ | परिपीलीयो | परिपीलिनो |
| ,, | 33 | एव | ए व |
| 11 | ąх | छडुत्वा | छड्डेत्या |
| У | ¥ | जि गु व्हिख्य | जिगु च् छिय |
| ., | 9.9 | वच्च | वच्च |
| 11 | શ્ પ્ | गच्छिम्स | गच्छिन्स |
| ,, | ⇒ γ | सकनिवेसन | सकनिवेसने |
| ,, | ₹ 6 | कारसमसोहि | कारगागुगोहि |
| ., | 3.3 | पञ्चदोसविवज्जित | पञ्चदोमविवज्जितं |
| ,, | ३६ | गुगा | गृगोहि |
| Ę | 9 | वसनटठान | वसनद्वान |
| ,, | ١ ٥٥ | गुग्गसमपेत | गुगासम्पेत |
| | ₹.4 | आनुपुत्वकथा | आनुपुरवीकथा |
| | ३० | जटामण लवाकचीर | जटामण्डलवाकचीर |
| '9 | २ | प वजन्तु'ति | पब्बजन्तू'ित |
| ,, | 9 | विवरित्वाअन्तो | विवरित्वा अन्तो |
| ,, | 88 | तापमपटजज्ज | नापमपञ्च ञ्ज |
| ,, | ₹\$ | जिससम्ब | जिष्णस्स |
| ,, | १४ | दुरभिसम्भवभावो | दुरभिसम्भवभावो |
| ,, | 20 | अप्पग्ध | अण्यम |
| | २७ | अट्टदीसमर्माकण्ण | अट्टदोमसमाकिण्ण |
| ,, | 30 | निच्चलभावकरत्थं | नि च् नलभावकरगात्यं |
| | ₹ \$ | अकुरापच्छि | अकुसप=्छि |
| | ३२ | अपर परं | अपरापर |

| ३७२ | | जातकट्ठकमा | |
|--------|------------|------------------------|-----------------|
| पिट्ठे | पन्तियं | बसुद्धि | सुद्धि |
| 5 | ¥Χ | उद पादी | उदपादि |
| ,, | ₹.9 | वीतिनामन्तो | वीतिनामेन्तो |
| ٤ | ۶ | व | एव |
| " | ٧ | नाइसि | नादृसि |
| ,, | ₹¥ | यव | येव |
| 1) | 11 | महानभावान | महानुभावानं |
| ,, | ३६ | मानुसकगन्धहि | मानुसकगन्धेहि |
| १० | ą | छज्जभग।घन- | छुम्बण्णघन- |
| ** | ₹ ₹ | पटिपञ्जिअ ञ्जस | पटिपज्जि अञ्जरः |
| | ₹8 | महहिस्सेहि | सहसिस्सेहि |
| 0 | ₹¥ | मा मा | मान |
| ११ | २ | अट ठ | अट्ट- |
| | 8.8 | पारेमि | तारेमि |
| H | २० | अत्तभावपि | अत्तभावे |
| | २१ | हेतुमम्प न्न पि | हेतुसम्पन्नेपि |
| | ३२ | बद्धन | बुद्धन |
| | ₹ 6 | एव | एव |
| | ३७ | उग्घान्टेनो | उग्घाटेग्तो |
| १२ | २ | अनागत सञ्जारग | अनागनंसञ्जारम |
| 0 | 8 | व्याकसि | व्याकासि |
| | n | नापरा | तापम |
| ., | 8 8 | पटिग्गाहेत्वा | पटिग्गहेत्था |
| 11 | 6.8 | वचनमबुबी | वचनमञ्जूबी |
| 8 8 | १४ | तपञ्जुभो | तेपज्जुभो |
| ., | ₹ V. | नंदान | नदान |
| १६ | 8 | यस | यसं |
| ** | 8 | वि चिनामि | विचिनामि |
| | १ ३ | कुम्ही | कुम्भो |
| 39 | 3 6 | होन्ती | होन्तो |
| २० | २६ | तेलपन्ते | नेलयन्ते |
| २२ | १६ | वीरोच | विरोच |
| २३ | Ę | उपगन्त्वा न | उपगन्त्वान |

न दिम्सन्ति । अपि च बुद्धवंसे एव बुत्ता---

३१–३७

२३

"दसवस्मसहस्मानि अगार अञ्क्रमो विमा हमाकोञ्चामयूराचतयो पामादमृत्तामा। तीरिंग सतसहस्मानि नारियो समलद्भवता। पदुमानाम सानारी उसभक्कत्योच अत्रजो।। निमित्ते चतुरो दिस्याहरियमानेन निक्कमि।

एता गाथायो न भवितव्या, जातकटुकथायं पन एत।

| विद्ठे | पन्तियं | श्रसुद्धि | सुद्धि |
|--------------|--|---------------------------|-------------------------------|
| | अनूनदसमासानि प | मधान पदहि जिनो ॥ | - |
| | पर्धानचार चरेत्वा | अवुज्भि मानस मुनि।" | |
| 78 | १ −२ | | थाय न दिस्सति। युद्धवसे |
| पन एव आगता.— | | - | • |
| | ''ब्रह्मुना याचितो सन्तो दीपडकरो महामुनि । | | |
| | वित्ति चक्क महाब | शैरो नन्दारामे सिरिघरे॥ | |
| | निमिन्नो मिरीसमूर | लस्टि अका नित्थियमद्दनं॥" | |
| २४ | 6 | सामतो | सागतो |
| २४ | १८ | जोवित | जीविन |
| ** | २० | पदक्कीरग | पदिक्ष्यरग |
| २६ | १ | कारति | कारेति |
| n | 39 | अय | अय |
| 11 | २१ | नीस्माय | निस्साय |
| २७ | X. | चढ्ढे | च हे |
| ,, | \$ 0 | धम्मोक्कमभिघारयीति | धम्मोवकमभिधारयीति |
| ,, | 3,8 | सरगा | सरगो |
| २८ | 8 | सरराम् | सरगंसु |
| 11 | २ ३ | अगगमके | अगामके |
| 3.5 | ६१ | बुद्धन्भुखस्स | बुद्धपमुखस्स |
| ३० | 5 | स्ट् ठुपाद | रट्ठुग्याद |
| 11 | १ X | सीहहनू सभवन्वन्धी | मीह हनूमभन कन्धो |
| " | १६ | भगव | भगवा |
| " | ३४ | पूजिस | पूजेसि |
| ३ १ | 3 8 | असीति कोटिको | असीतिकोटियो |
| ३२ | ₹ 6 | सम्हवो | सम्भवा |
| \$3 | २० | चनानीसन्थुब्बेध | चत्तानीसहत्थु व्येष |
| ३ ४ | 3 | र्वामतीवस्मसहस्मानि | वीसतिवस्स <u>सहस्</u> मानि |
| n | ₹ १ | अट्टथम्मसमाधाना | अट्टधम्मसमोधाना |
| ३६ | 5 | लग्गन | लगन |
| n | Ę | निस्सगताय | निस्सदगताय |
| ३७ | १५ | नीणिहलाहलानि | नीमि कोलाहलानि |
| " | १६ | बुद्धहलाहल | बुद्धकोलाहल |
| " | 11 | हलाहलानि | कोलाहलानि |
| " | १७ | कपहलाहल | कपकोलाहल |
| 11 | *** | बुद्ध हलाहम | बुढकोलाहल |
| 21 | n . | चक्कवित्तहलाहल | चक्कवत्तिकोलाहल कप्पकोलाहल |
| | १८ | कप्पह्लाहल | नः-पदमाता रु ण |
| n | २४ | " | ।। सन्तर्भोग्रमस्य |
| n | २६ | बुद्धहलाहल | बुद्धकोनाह लं |
| 11 | २६ | n | " |

जातकद्वकथा

| पिट्डे | पन्तिवं | यस् बि | सुद्धि |
|----------|------------|---------------------------|-----------------------|
| ३७ | 3.5 | चक्कवत्तिहलाहलं | चक्कबस्तिकोलाहलं |
| ,, | ३२ | ,, | ,, |
| ३⊏ | ર | हलाहलानि | कोलाहलानि |
| ,,, | 2 | बु ढ हलाहलसहं | बुद्धकोलाहलस ह |
| ,, | 8 % | पञ्ञायति | पञ्चायन्ति |
| 3 € | १४ | इम | इमं |
| ,, | १७ | न | न |
| ,, | २४ | सिरिसयनेनिपन्ना | सिरिसयने निपन्ना |
| | २६ | सहिगोजनिके | सद्वियोजनिके |
| <i>n</i> | 3.5 | पाचिनसीसक | पाचीनसीसक |
| 80 | 8 | पुरेत्वा | पूरेत्वा |
| n | २६ | सुस्तीनि | सुखिनी |
| 86 | १ ५ | मातुकुच्छिमम्हवेन | मातुक्तुच्छसम्भवेन |
| ,,, | २७ | एव | एव |
| 85 | १७ | आरगापेत्वा | आनापेत्वा |
| | ३६ | भगीनिया | भगिनिया |
| 8.5 | 7 | सन्तक | सन्तिक |
| " | ** | कुल | कुले |
| ХX | 8 8 | चरापेथइतो | चरापेथ इतो |
| ,, | १४ | आगतनयेनेव व | आगतनयेनेव |
| ४६ | ३२ | किसागोतामया | किसागोतमिया |
| ४७ | २४ | क | को |
| n | ३२ | निरुम्हिन्बा | निरुम्भित्वा |
| ४८ | ς | सन्निरुम्हित्वा | सन्निरुम्भित्वा |
| n | ३२ | उपभ्रमने | उपन्नमत्ते |
| 38 | 3 € | नन्थीदानि | नित्थदानि |
| χo | १७ | पसुकुलिकं | पसुकूलिक |
| | ३ २ | भमिभागो | भूमिभागो |
| ४१ | K | न | न |
| | × | यास | यास |
| ५२ | ? 3 | घटीकारब्रह्मना | घटीकारवह्माुना |
| " | २व | अत्यी | अस्थि |
| " | ₹¥. | एकोनिव्यतोति | एकोनिब्बत्तीनि |
| χş | 88 | मयिद | इमस्प |
| " | ₹७ | निसीवी | निसीदि |
| XX | Ę | रुपसोभग्गप्पत्तो | रूपसोभगगपत्तो |
| II II | 8 X | ठत्वामया | ठत्वा मया |
| ४७ | 30 | ठान जिल्लाम | ठान |
| ,, u= | ₹₹ | विभुत्तिसुखं | विमुत्तिगुख |
| ४८ | 8 | पञ्ञापरमि | पञ्ञापारमि |

| विट्ठे | पन्तियं | चसु बि | सुद्धि |
|-----------|---------------------------|--------------------------------------|--------------------------------|
| ሂ። | २२ | भगवत | भगवन्तं |
| 11 | २६ | एव | एव |
| ५६ | २८ | धमचक्कपवत्तन | धम्मचक्कणवत्तन |
| " | ₹७ | थरा | थेग |
| ęο | १ २ | महि्यत्थेर | महियत्थेर |
| 11 | ३० | उरवेलकस्सपो | उरवेलकस्सपे |
| 17 | n | महासमगोति | महासमगोति |
| ६१ | ₹ | बुद्धा | बुढ़ा |
| n | १० | जादिट्ठो - | अदिट्ठो |
| n | १ ५ | निक्खमरगोकास | निक्समनोकास |
| n | ३७ | अज्ञ | সকল |
| ६३ | २७ | परिजग्गनर्विध | पटिजम्मनविधि |
| ६४ | ¥ | एकग्गचिलो | ग् कमाचिला |
| n | n | हेट्ठो | हेट्टा |
| | 5 & | युत्ततु गमुदुशायतनासो | युत्ततुद्धगमुद्दकायननासो |
| ६५ | १७ | वन्दकिलरजातक | वर्त्दकिसरजालक |
| ,, | २० | पवकामी | पनकामि |
| ६६ | 60 | कोटिमत्यारेन | कोटिसन्थारेन |
| 27 | Ę | अनाथ(पण्डित्र) | अनाथपिण्डिको |
| 27 | १६ * | आगमगात्याय | आगमनत्थाय |
| 11 | ₹1, | कुरू मानो | कुरुमानो |
| 11 | ₹ ₹ | भागितु | भागितु |
| ६७ | ৬ | सिरिवरम | सिविरस |
| n | १ ≒ | निदानकथानिद्विता | निदानकथा निद्विता |
| ६८ | × | पच्चुपश्चवत्थु | पच्नुप्पन्नबन्धु |
| (इमस्मिगन | थे सब्बत्थ पमादेन 'पच्चुप | झबत्थुं इति मुद्दापित अस्थि, संपक्त् | प्पन्नवस्युं इच्नेय गहेनव्य ।) |
| ६्८ | \$ o | - प्जन्या | पृजेत्वा |
| n | १४ | सीहनाद | सीहनाद |
| n | २७ | आसक्तांन्नेहि | असक्कान्तिह |
| ** | ξo | अग्गमक्खार्यान | अगगमक्वायति |
| ·3 o | ź | सेटठिनो | संद्विनो |
| n | १ o | येवग मिरमान | येव गमिस्सति |
| " | 38 | परिणतप्यद्वतिणे | परिणनथद्वतिणे |
| ** | ₹೨ | भिसमलालानि | भिगमुलालानि |
| ७१ | २ ४ | मीपस् | सृपिसु |
| ७२ | 8 | उदक | उदक |
| n | ११ | कान्तारे | कस्तारे |
| ७३ | ₹ | यथापूरितानव | यथाप्रितानेव |
| ७४ | १ २ | बोधिनले | बोधितले |
| | | arefror | acrefitate |

दर्मास्म

इमिंग्म

৬২

११

जातकट्ठकथा

| पिट्ठे | पन्तियं | ब सुदि | सुद्धि |
|------------|------------|------------------------|-----------------------|
| υX | २४ | विरियंतेओस्सट्टन्ति | विरियं ओस्सट्टन्ति |
| ७६ | ३३ | यथाकम्ममव | यथाकस्ममेव |
| ৬= | 8 | सेरिववाणिजजातकं | सेरिवाणिजजातक |
| ,11 | Ę | सेरिवबाणिजो | सेरिवाणिजो |
| e. | १४ | पुतभातिका | पुत्तभातिका |
| u | १८ | लोलबाणिजो | लोलवाणिजो |
| 50 | 8 | चुल्लकसेट्विजातकं | चुल्लसेट्विजातकं |
| π የ | 8 | अह | अहं |
| 11 | २६ | अगीरस | अंगीरसं |
| 45 | १ २ | ारकोट्ठके | द्वारकोट्टके |
| = 3 | 30 | कथापवृत्ति | कथापवत्ति |
| ⊏ € | Y | निसीन्नम्हा | निसिन्नम्हा |
| 13 | 39 | खड्देतु | छड्डेतु |
| 11 | २३ | दारुनि | दारू नि |
| πX | 88 | कतज्ञाुना | कनञ्ज्ञुना |
| n | १५ | पवृत्ति | पर्वात्त |
| n | 28 | सम्धमन्ति | सन्धर्मान्त |
| 5 9 | Ę | पवृत्ति | पबन्ति |
| , | 3 | रञ्जा | रञ्जो |
| n | १४ | 21 | " |
| 11 | *1 | अञ्ज्ञ रेपि | अञ्जो पि |
| n | 38 | पवृत्ति | पर्वान |
| 1,1 | ३४् | लोलुदायी | लालुदायी |
| <i>n</i> | 3 E | निद्वापेसि | निट्ठपेसि |
| 55 | 3 ₹ | ानम | नाम |
| n | ₹४ | एक | एक |
| 21 | 3 X | पून | पुर्न |
| 60 | ₹ 6 | लोक | लोक |
| દર | 6-0 | दबधम्मानि | देवधम्माति |
| €3 | 8 | बट्टहारिजातकं | कट्टहारिजातक |
| n | Ę | विड्डभस्सापि | विदूरभम्सापि |
| ,, | ৬ | पञ्चसतभिवखुपरिवृतो | पञ्चसनभिक्खुपरिबुनो |
| " | ąo | महिकं | मुद्दिकं |
| ER | 6 & | संकष्ठवत्यूहि | सगहबत्यूहि |
| 22 | २३ | कोसलरञ्जा | कोमलरञ्जा ो |
| £X | १० | समिञ्भतीति | समिज्भनीति |
| n | १२ | संग्रहवत्यूनि | सगहवत्यूनि |
| 69 | 8 | जीष्ण व्याधिमतपव्यजिने | जिण्णव्याधिमतपब्बजिते |
| १०० | 68 | पससित्व । | पससित्वा |
| " | २६ | वीतिनामेस्साय | वीतिनामेस्साम |

| पिड्ठे | पन्तियं | जन्दि : | सुद्धि |
|-------------|----------------|------------------------|----------------|
| 808 | 8 | हमस्मि | इमस्मि |
| १०३ | . २४ | पब्बज्ज | पञ्चज्जं |
| १०४ | 8 | अन्तरधापथ | अन्तरधापेथ |
| ,, | ₹8 | गुणकथामाति | गुणकथायाति |
| १०५ | × | मरवं | मुंख |
| ,, | १ २ | बागु रानि | नागरे |
| ,, | २३ | पवृत्ति | पवत्ति |
| १०६ | = | सीस | सीस |
| ७०७ | १- २ | यम्प न | यम्पन |
| १०= | १व | अतिवत्तित्वा | अनिवत्तित्था |
| | २६ | विस्साय | निस्साय |
| ११० | ₹ १ | पवृत्ति | पवित |
| १११ | 8 | पर्वात | पर्वात्त |
| ११२ | २ | अठठ्मुरं | अट्टल्युर |
| ११३ | १५ | सिक्स्वीकामत | सिक्खाकामत |
| ११७ | १४ | नदितीरे | नदीतीरे |
| १२० | २१ | सी | सा |
| १ २२ | १ ७ | र्बान्धन्य । | बन्धित्वा |
| १२४ | 8.9 | नत्थी | र्नात्थ |
| " | २७ | हन्ति | अहन्ति |
| १२५ | 8 | नुक्कुरहि | कुक्कुरेहि |
| ,, | 8 | अणापेसिन्ति | आणापेसिन्ति |
| ,, | × | 11 | |
| ,, | ३४ | रजञा रे | रञ्जा |
| १२७ | ৬ | निव्वत्तो | निव्यत्तो |
| ,, | १ २ | पर्वान | पर्वान |
| १२८ | ११ | नामनु | नासेत् |
| | ŧ= | मच्चपरियोमाने | सच्चपरियोसाने |
| १३० | 8 | तिट्ठजातक | तित्थजातक |
| 630 | १६ | आगत्वा | आगन्त्वा |
| ,, | २७ | अ चिष ्चाति | अनिच्चाति |
| १३१ | ą | तमोतत | समीतत |
| ,, | ف | पर्वात | पवस्ति |
| १३२ | 88 | निद्वजातक | तित्थजातक |
| १३३ | 5 | अञ्जामञ्जा | अञ्जामञ्ज |
| १३६ | 3 | पवृत्ति | पवित्त |
| १४० | २ | भण्डिक | ম্ তিৱক |
| 888 | 8 | मुणिक जा लक | मुनिकजानक |
| १४२ | १६ | भने | भन्ने |
| 11 | २७ | मत्थापि | तत्थापि |
| | ሄ ፍ | | |

| हेक्य | जातेबांडुकं या |
|-------|-----------------------|
| | |

| पिट्ठे | पन्तियं | बसुद्धि : | सुद्धि 📆 |
|--------|------------------------------|-----------------------|--------------------------------------|
| 688 | १ २ | कुल | कुले |
| " | १८ | रज्जनाति | रज्जेनाति |
| 682 | . १७ | गम्बतो | गुम्बतो |
| ,, | ₹ 0 | त | तं |
| 388 | 8 | तरो | इतरो |
| " | 11 | कुजिमति | कुज्मीति |
| ,, | ą | इदानेव | इदानेव |
| १४० | २ | कथसि | कथेसि |
| १५३ | १ २ | पबुत्ति | पर्वात्त |
| " | १= | घंसन्तिसु | घंसन्ती सु |
| १५५ | 8.8 | सारिपुत्ताति | सारिपुत्तोति |
| | १ ३ | पर्वात्त | पर्वास |
| ,, | २३ | छ लभिञ्जोति | छलभिञ्ञा ोति |
| १५६ | ę | अत्थ | अथ |
| ,, | 11 | य | य |
| ,, | Ę | मक्करो | मक्कटो |
| ,, | ড | अग्गरवा | अगारवा |
| ,, | २३ | अपवादे | ओवादे |
| १५८ | ¥ | पन्नायित्थ | पञ्जामित्थ |
| १६१ | 5 | आगतकालोतो | आगतकालतो |
| 858 | ₹ & | सीघं | सीघ |
| १६७ | १० | त | ते |
| ٠, | २१ | असीतिहत्य गम्मी राय | असीतिहत्यगम्भीराय |
| " | २२ | रणुजग्गन्त्वा | रेणु उग्गन्त्वा |
| १६= | 5 | व | च |
| ,, | २१ | तस्मि वड्ढेत्वा | तस्मि मेत्तचित्तं वड्ढेत्वा |
| " | २६ | निप्पुङजो | निप्युञ्जो । |
| १६६ | 9 | "लद्धते आयुमो! भा | तन्ति पुच्छि" एतस्स पच्चुत्तर |
| पमादेन | न मुद्दापित । त एव योजेतब्ब— | | |
| | "लढ ते आवुसो ! | | |
| | लभिस्साम नो भग | | |
| १६६ | १ २ | सहाबुसी | एहावुसो |
| १७० | . 80 | वालाभेत्वागगो | वागगो |
| 21 | ., | अपनियुद्धभावं | अपनिबृद्धभावं |
| १७१ | 22 | अगाहेसि | अग्गहेसि |
| १७६ | १ २ | भिक् लु संखस्स | भि क् लुसघस्स पर्वात्त |
| १७७ | 5 | पवृत्तिं | पवा त्त |
| " | , e | n | " |
| 910.5 | १ ६ | ,, | |
| १७८ | २७ | समय | समये . |

3⊌€

| | | 2.4 | , |
|--------|--------------|----------------|----------------|
| पिट्ठे | पन्सियं | थसृद्धि | सुद्धि |
| १८० | ٠ ٧ | वैहिति | देहीति |
| ,, | १३ | नासितीति | नासिताति |
| | ` १ ५ | कथापारभतन्ति | कथापाभतन्ति |
| १८१ | ¥ | पण्डितान | पण्डितान |
| ., | १० | वस्साति | वस्सति |
| ,, | 8.8 | कोन चिदेव | केनचिदेव |
| ,, | २७ | अहतवत्यानि | अहतवत्यानि |
| १८२ | 9 | अम्हो | अम्भो |
| ,, | १६ | त धन | तं धनं |
| ,, | २७ , | सक्खिस्सित | सक्खिस्सन्ति |
| " | ₹ १ | वत | वत |
| 8=8 | 8 | नक्खनजानक | ६ नक्खसजातकं |
| ,, | ¥ | अञ्ज | अज्ज |
| १८७ | '9 | दुम्मेघान | दुम्मेधान |
| ,, | ** | वह्तीति | बट्टतीति |
| १८८ | २१ | मञ्जेति | मञ्जे नि |
| ,, | 7.8 | बाराणमीरज्जो | बाराससिरञ्जा |
| ,, | २८ | पबुत्ति | पर्वात्त |
| 3=9 | ₹ | रुचियासति | रुचिया सनि |
| ,, | 3 | वाहनगरे | बहिनगरे |
| ,, | १३ | पत्लक- | पल्लडक- |
| 939 | 5 | जीवितदन | जीवितदान |
| १३१ | 2 6 | अनन्यिको | अनित्थिको |
| ,, | 30 | स चाय | सचाय |
| 8 E X | २्द | छेड्डेत्वा | छड्डेत्वा |
| १६६ | २ | साधुफलो | सादुफलो |
| ,, | 9 | जागोन | ञागोन |
| 28.9 | २ | भिक्क्यू | भिक्क्यु |
| ,, | १४ | उष्मण्ह | उम्मण्ह |
| ,, | হ্ | पञ्जा | पञ्चास |
| " | २६ | करणपेन | करायेन |
| 339 | ρĝ | द्वारीगि | हारानि |
| ,, | ₹ १ | पर्वान | पवित् |
| २०० | १८ | वायुगों | पापुग्गे |
| २०५ | ¥, | इदानव | इदानेव |
| २०६ | 28 | कामद्वारादीनि | कायद्वारादीनि |
| ,,, | २२ | गनो । अग्गि | गतो अग्गि |
| २१७ | २ | नन्द | नन्दि |
| २२० | ₹₹ | स्वारिकामजादाय | स्तारिकाजमादाय |
| २२१ | १० | महसाप्को | मटसाटको |
| | | | |

| रेक∙ | | जात ्रहरू | |
|---------------|---------|----------------------------|----------------------------------|
| पिट्ठे | पन्तियं | ध सुद्धि | सुद्धि |
| २२ २ | 3 | स्रञ्जेव | अर्जेव |
| २२४ | ? | बनी | मनो |
| | १६ | भिक्खो [!] | भि वस वे [।] |
| २२७ | ٧ | अथ क दिवस | अथेकदिवस |
| २३६ | Ę | सुरगमत्तभि | गुरगमत्तम्प |
| २३८ | 25 | स्नन्तिमेत्तानृद्यसर्गत | खन्तिमेत्तानुद्दयसम्पत्ति |
| २४० | ₹€ | चारेहि | चोरहि |
| २४४ | ₹ | या ण्डितान | पण्डितान |
| ,, | ς. | ब हागोगान | महागोरागन |
| २५१ | २७ | मृहुत्तनव | मुहुत्तनव |
| २५६ | २१ | पिच्छि।याय | पिद्विच्छायाय |
| , | २४ | पना है | पनाह |
| २५७ | ₹٧ | डभ य | उभय |
| २६० | 30 | अनिच्चम्हाति | अनस्चिम्हाति |
| 17 | ¥ζ | एनरू प | एवरूप |
| १६१ | 3 | स्दाामत | सदामत्त |
| २६२ | Ę | परिब्दमय | परिब्बय |
| | १२ | भवितु | भवित् |
| २६१ | 8 | इघ इल्लीसजातक इति | । महापित अस्थित न भविवस्य |
| २६९ | ₹ ₹ | आलोकेक्षो | ओलोकेन्तो |
| २७० | 8 | राजागहनगरे | राजगहनगर |
| | ¥ | सटकयुगन्ति | माटव युगन्ति |
| २७१ | 9 | स करचे य | म ङचेय्य |
| २७२ | Ę | प्रटिग्जगति | पटिजम्मति |
| | 38 | म हेच्छदनतो | गहच्छदनता |
| २७३ | ٠, | <i>निवय</i> सत | निक्स मत |
| २७६ | ς | सरिभुज्जितु | परिभुञ्जितु |
| | 8 8 | परिभुङ्गितु | ,, |
| , | 65 | परिभुक्तिकान्बा | परिभृञ्जित्वा |
| <93 | Ę | लभाभ | लभाम |
| | 3 8 | एकमत | एक मन्त |
| ₹95 | ₹ 6 | अ न्तोबलञ्जानमनुरमा | अन्तोवलञ्जनमनुस्सा |
| २८१ | 8 | अत्थगम्भीर | अत्यगम्भीरे धम्मगम्भीरे |
| | | कारग | कारमा |
| | | তত্মশ্ব | उपश्रे |
| | | बिच स्वरा | विचक्ष्यग |
| २६३ | Ę | इत्वा | हुत्वा |
| ,, | 3 | स्वस्स | स्बस्स |
| 2000 | | • | |

बिञ्जापनाय

स्वयञ्जन

विञ्ञापनाय

सब्यञ्जन

२८७

,

93

१५

| पिट्ढे | वस्तियं | प्रसुद्धि | सुद्धि |
|-------------|------------|--------------------------|-------------------------|
| २ = 0 | ₹o | विगता नि | निगलानि |
| २८८ | ₹ | कामगतासर्ति | कायगतासनि |
| " | १ ३ | रज्ज | रज्ज |
| २⊏६ | 38 | अन्तरधायत्वा | अन्तरधापेत्वा |
| RED | २० | सचि त्तमनरक् खेति | सचित्तमनुरक्खेति |
| २६२ | Х | कालकप्रिणमूर्तान्त | वालकण्णिभूतन्ति |
| 5€8 | १ ६ | अहोसी | अहोसि |
| ,, | २४ | वेदय्यासीति | वदेय्यासीति |
| २६६ | ς | मा सितं | भासित |
| ** | १ २ | उपडढ | उपदृढ |
| २६⊏ | 8 | असातक्ष्यजानक | जानकट्टकथा |
| ३३,६ | Ę | अन्यनि | अन्यन्ति |
| ₹00 | હ | नि च्चप्पहसितमस्या | निच्चपहसित मुखा |
| 306 | २३ | वत बत | वत |
| ३०५ | Ę | अचिर वृति | अ चि रवित |
| 38.€ | 24 | नर्गन | नन्ति |
| ३१ ४ | १८ | ल॰ यित्वान | ल हु यि॰वान |
| ३१€ | १८ | नप स्सन्ति | न पम्सन्ति |
| ३ २० | 8.6 | नानप्यति | नानप्पकारा नि |
| ,, | ķλ | यद्वानि | युद्धानि |
| ,, | १६ | पटक्सिता | पटिक्यि सा |
| ,, | 93 | जाननस्य | जाननत्यं |
| 2, | | सस्यदुवस्य | सुखदुक्ख |
| ३२३ | Ę | क्यसि | क्थमि |
| ३२६ | D D | ग्रमस्यै | एक्सप |
| ३२⊏ | y | বৰুৱ | ভ ৰুত্ৰ |
| ٠, | 1 | उच्छ | , |
| ,, | 8.8 | उच्छ | |
| ६६५ | ą | नहनभावे | बहुकभाव |
| " | Ę | सूकरच्छापमीदमा | सव रच्छाप प दिसो |
| ,, | ₹ ~ | मुरभु रूति | मु≀मरूनि |
| | | | |

एककनिपातस्स

जातकडकषानुक्कमो

| क्रया | विद्वेशको | क्या | विद्वसूती |
|------------------------|-----------|-------------------|---------------|
| अकतञ्ञ जातक | २७४ | कुक्कुरजातक | 64.4 |
| अकालरावीजानक | 398 | कुण्डकपूवजातक | 3,00 |
| अग्गिकजासक | 3 ₹ \$ | क्ट्रालजातक | २् १ ७ |
| अण्डभूतजातक | २१० | कुरुङगमिगजातक | 122 |
| अत्यस्सद्वारजातक | २६४ | कुलावकजातक | 145 |
| अनिमरतिजातक | २१६ | कुसनालिजातक | 60 |
| अनुसासिकजातक | ₹ 9 € | कुहकजातक | ્રં ૭૨ |
| अपण्एकजातक | ६= | कूटवारिएजजानक | ₹ 8 |
| अभिण्हजातक | १३४ | कोसियजातक | 13⊍ |
| अमरादेवीपञ्हो | ३१० | खदिरङगारजातक | (|
| अम्बजातक | 378 | खरस्सरजातक - | SAA |
| असङ्गकियजातक | २४० | खरादियजातक | ११२ |
| असम्पदानजातक | 3 € € | गद्रभपञ्हो | ३१० |
| असातमन्तजातक | २०७ | गामनिजातक | 6 A |
| असातरूपजातक | २६७ | गोघजातक | οχε |
| असिलक्खरगजातक | इइ२ | गोधजातक | きてみ |
| आजञ्ञाजातक | १२६ | घ तामनजातक | ३४३ |
| आयाचितभत्तजातक | 399 | चन्दाभजातक | ३ ४४ |
| जारामदूसक जा तक | १७८ | चुल्लसेट्विजातक | 50 |
| इल्लीसजातक | ३४६ | चूलजनकजातक | १६२ |
| उच्छङ्गजानक | २२३ | भानसोधनजातक | 3 8 8 |
| उदञ्चनिजातक | ₹08 | तक्कजातक | २१४ |
| उभतोभट्ठजातक | ३४१ | तण्डु पना निजातक | # § |
| एकपण्णजातक | ३६६ | तयोधम्मजातक | २०३ |
| कञ्चनक्लन्धजानक | 338 | तिसिरजानक | १४४ |
| कटाहजातक | 330 | तित्तिरजातक | ₹ १ ६ |
| कट्ठहारिजातक | ₹3 | तित्थजातक | १३० |
| कण्हजातक | 3 \$ 9 | तिपल्लत्यमिगजातक | ११३ |
| कण्डिनजातक | १०८ | तेलपत्तजातव | २ ५ ७ |
| कपोतजातक | १७३ | दुव्यचजातक | ₹ ₹ % |
| कलण्डुकजातक | 338 | दुब्बलकटुजातक | ●の養 |
| काकजातक | ३४२ | दुम्मेवजातक | १⋷€ |
| काकजातक | ३६० | दुम्मेधजातक | ३६४ |
| कालकप्पिगजातक | २६२ | बुगजानजातक | २१७ |
| किम्पक्कजातक | २६६ | देवधम्मजातक | 55 |

| जातकहरूयानुबन्धनो | | | ३ =३ |
|----------------------|--------------|------------------------|-------------|
| कषा | विट्ठश्रको : | क्या | पिट्रश्चको |
| नक्षत्तजात कै | १८४ | मृदुलक्लग्जातक | 220 |
| नडगलीसजातिक | ३२७ | मुनिकजातक | 886 |
| नक्रगुटुजातक | 3,4 € | राधजातक | 3,4,6 |
| न्च्यजातक | १४७ | रक्खधम्मजातक | २३७ |
| नन्देजातक | १६१ | रोहिएीजातक | १७७ |
| नन्दिविसालजातकं | १३७ | लक्ष्य ामिगजातक | 900 |
| नवपानजातक | १२० | लित्त ातकं | २७६ |
| नामसिद्धिजातक | २६२ | लोमहंसजातक | २८३ |
| निग्रोधमिगजातक | १०२ | लोसकजातक | १६८ |
| पञ्चगरकजातक | 388 | बट्टकजातक | १५१ |
| पञ्चावधजातक | १६७ | बट्टकजातक | ३१७ |
| पण्णिकजातक | ₹00 | वण्गुपयजातक | J¥ |
| परोसतजातक | ३३६ | वरराजातक | २३० |
| परोसहस्सजातक | २१६ | वासमिगजानक | ११० |
| पुण्एापातिजातक | १६३ | वानरिन्दजातक | २०१ |
| पुष्फरत्तजातक | ३६२ | वारुग्गिजानक | १८० |
| फलजातक | <i>१६५</i> | विरोचनजातक | ३४६ |
| वकजातक | १४८ | विसवन्तजानक | २२६ |
| बन्धनमोक्ख जानक | ३२० | विस्सासभोजनजातक | २६२ |
| बब्धु जातक | ३४८ | वेदब्भजातक | १६१ |
| बाहियजातक | ३०७ | वेरीजातक | ३०१ |
| विलारवतजातक | ३३४ | वेलुकजानक | १७४ |
| भीमसेनजातक | २५६ | सम्गाजातक | \$ v \$ |
| भेरिवादजातक | २०४ | सद्भवधमनजातक | २०६ |
| भोजाजानीयजातक | १२७ | | २३४ |
| मकसजातक | १७६ | सञ्जीवजातक | ३७० |
| मन्बादेवजानक | € ૬ | सब्बसहारकपञ्हो | ३१० |
| मङ्गलजातक | २६६ | सम्मोदमा क जातक | १४८ |
| मच्छजातक | १५० | सावेतजातक | २२४ |
| मच्छजानक | २३८ | सारम्भजातक | २७१ |
| मतकभनजातक | ११७ | | ३०४ |
| महासारजातक | २७७ | सिगालजातक | ३११ |
| महासीलवजातक | १८८ | | ३४४ |
| महासुदस्सनजातक | २८४ | | ३६४ |
| महासुपिनजात क | २४२ | मीलवनागजातक | २३२ |
| महिलामुखजातक | १३३ | | २६७ |
| मालुतजातक | ११६ | सुखविहारीजातक | €= |
| मितचिन्तीजातक | ३१३ | सुरापानजातक | 3 % & |
| मित्तविन्दजातक | ગ્ ક્ | मुवष्णहमजातक | ₹४६ |
| मित्तविन्दजातक | ३०२ | , सेरिवारिगजजातक | ৩5 |

भारतीय ज्ञानपीठ काशीके प्रकाशन

[हिन्दी ग्रन्थ]

| १. सुक्तिदूत [उपन्यास]—कञ्जना-पदनञ्ज्यको पृथ्यगाया । | 12103 |
|---|---|
| २. पथिनकः [सस्मरण]स्वर्गीय बहिनके बिक्त सस्मरण ग्रीर युगविश्लेषण । | AHI) |
| ३. दो हजार वर्ष पुरानी कहावियां | 3 |
| ४. पाश्चात्य तर्कशास्त्र [प्रतान्त्र] | 1 |
| ५. शोरो शायरी [उर्दू के सर्वोत्तव १४०० कोर और १६० नज्म] | 61 |
| ६. मिलनयामिनी [गीत]-कविवर वण्यन । | 9 81 |
| वैदिक साहित्यवेबोपर हिन्दीमें साविकार मौलिक विवेचन । | 1 |
| ८ मेरे वापूमहात्मा गाथीके प्रति अखा≉चलि | 8H1 |
| ९. पंच प्रदीप[गीत] | 81 |
| १०. भारतीय विचारघारा | ล์เ |
| ११. मानगंगासंसारके महान् साधकोकी सूक्तियोका प्रक्षय भण्डार । | εí |
| १२. गहरे पानी पैठसुक्तिकपर्ने ११८ मर्नस्पर्शी कहानियाँ । | ₹ 1 1) |
| १३. वर्द्धमान [महाकाव्य] | かりかのかりかがかりからいかり |
| १४. दोर श्रो-सुलान | á |
| १५. श्राञ्चनिक जैन कवि | ani) |
| १६. जैनशासनजेनशासनका परिचय तथा विवेचन करनेवाली सुन्दर रचना । | ¥) |
| १७. कुन्दकुन्द।चार्यके तीन राम | ٩́) |
| | |
| १८. हिन्दी जैन साहित्यका संक्षिप्त इतिहास | ₹H#=} |
| रटा हत्दा जन साहत्यका साझप्त इतिहास [माकृत संस्कृत ग्रंथ] | *1115) |
| [बाकृत संस्कृत ग्रंथ] | |
| | १२) |
| [माकृत संस्कृत ग्रंथ] १९. महाबन्ध [नहाथवल सिद्धाल]-प्रथम माग, हिन्दी श्रनुवाद सहित । | १२) |
| [शाकुत संस्कृत ग्रंथ] १९. महाबन्च [महाथवत सिद्धात्त]-प्रयम माग, हिन्दी अनुवाद सहित । २०. करत्वस्वय [तानृद्धिक वात्त्र]-हस्तरेका विशानका नदीन ग्रन्थ । २१. महनवपराज्य-भावानुवाद तथा एको विस्तृत प्रस्तावना सहित । २२ कक्षद्वान्तीय ताक्रपेवीय ग्रन्थसकी | १२) |
| [शाकुत संस्कृत ग्रंथ] १९. महाबन्च [महाथवत सिद्धात्त]-प्रयम माग, हिन्दी अनुवाद सहित । २०. करत्वस्वय [तानृद्धिक वात्त्र]-हस्तरेका विशानका नदीन ग्रन्थ । २१. महनवपराज्य-भावानुवाद तथा एको विस्तृत प्रस्तावना सहित । २२ कक्षद्वान्तीय ताक्रपेवीय ग्रन्थसकी | (ક) (ક) (ક) |
| [बाकुत संस्कृत ग्रंथ] १९. महाबन्ध [नहायवत सिढातः]-प्रमम मागः, हिन्दो प्रनुवाद सहित । २०. करत्सकृष्ट्यण् [नामृक्षक वास्त्र]-हस्तरेला विज्ञानका नवीन ग्रन्थ । २१. मद्नपराज्ञय-भावानुवाद तथा ७८ वृष्टकी विस्तृत प्रस्तावना सहित । | (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) |
| [बाकुत संस्कृत ग्रंथ] १९. सहावन्य [नहायवन सिहासा]-प्रथम माग, हिन्दी ब्रनुवाद सहित । २०. करत्वक्षण [सानृद्विक बास्त्र]-हस्तरेखा विकानका नवीन प्रत्य । २१. सहनपराव्य-भावानुवाद तथा ७८ वृद्धकी विस्तृत प्रस्तावना सहित । २२ कप्रह्वप्रत्ये व्यवस्यीय प्रस्यक्षी— २३. न्यार्विनिक्षय विवस्यी प्रत्ये भाग- | र १५५३ १५५ |
| [बाकुत संस्कृत ग्रंथ] १९. महाबन्ध [नहायवल सिडाल]-प्रथम नाग, हिन्दी प्रनुवाद सहित । २०. करलक्ष्मण् [सामृतिक वाल्य]-हस्तरेबा विकानका नवीन ग्रन्थ । २१. महावपराज्ञय—भावानुवाद तथा ७८ वृष्टकी विस्तृत प्रस्तावना सहित । २२. कष्ठज्ञान्तीय लाइपत्रीय प्रम्यस्कृति— २२. न्यायविकित्रय विवर्ण[प्रयम भाग]— २४. तरवार्यवृत्ति— भूतवान सृत्रित्वत दोका । हिन्दी तार तहित । | *\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\ |
| [बाकृत संस्कृत गंध] १९. सहावन्ध [नहाधवल सिढाल]-प्रथम नाग, हिन्दी अनुवाद सहित । २०. करलक्ष्मण् [सामृतिक गावन]-हस्तरेवा विकायका नदीन प्रथ्य । २१. सद्गनपराज्ञय—भावानुवाद तथा ७८ पृष्ठकी विस्तृत प्रस्तावना सहित । २२. कलडमान्तीय लाडपंत्रीय झन्यसूची— २३. न्यापविक्रिय विदर्ण[प्रथम भाग]— २४. तस्वार्यकृति—प्रतानार कृरिरविक टोका । हिन्दी सार सहित । २४. आविदुराण भाग [१]—भगवान् ऋष्यरेवका पुष्प विन्त्र । २६. आविदुराण भाग [२]—, , , , , | |
| [बाकृत संस्कृत ग्रंथ] १९. सहावन्य [नहायवन सिदान्त]-प्रमम नाग, हिन्दी अनुवाद सहित । २०. करत्वक्ष्मण् [सामृद्रिक वात्र्य]-हस्तरेवा विकातका नवीन ग्रम्य । २१. सद्भवपराज्ञय—भावानुवाद तथा ७६ वृष्टकी विस्तृत प्रस्तावना सहित । २२. कष्ट्रज्ञानिय ताइपत्रीय सन्यसूची— २३. न्यायधिनिक्ष्मय विवर्णी[प्रमम भाग]— २७. तरवार्णवृत्ति—भृततानर सृरिर्शकत टोका । हिन्दी सार सहित । २४. आदिपुराण भाग [१]—भगवान् ऋषभवेवकः। वृष्ट वित्त । २६ आदिपुराण भाग [२]— , , , , , , , , , , , , , , , , , , , | |
| [बाकृत संस्कृत ग्रंथ] १९. सहावन्य [नहायवन सिढातः]-प्रमम मार, हिन्दो प्रनुवाद सहित । २०. करत्वकृष्यण् [नामृक्षक सार्त्रा-हस्तरेवा विश्वानका नवीन ग्रस्य । २१. सद्वायराज्ञय-भावान्याव तथा ७० वृष्ठकी विस्तृत प्रस्तावना सहित । २२. कष्ठाद्यपानिवाद्य विवयर्णा ग्रम्थस्थी २३. न्यायिविनिद्यय विवयर्णा ग्रम्भ सार्ग्य- २४. त्रावार्णवृत्तिय-भुततार कृरिर्वान दोका । हिन्दो सार सहित । २४. शाविषुराण्य भाग [१]भगवान् श्रवभवेषका पुष्य चित्र । २६. शाविषुराण्य भाग [१] , , , , , , , , , , , , , , , , , , | |
| [बाकृत संस्कृत ग्रंथ] १९. सहावन्य [नहायवन सिदान्त]-प्रमम नाग, हिन्दी अनुवाद सहित । २०. करत्वक्ष्मण् [सामृद्रिक वात्र्य]-हस्तरेवा विकातका नवीन ग्रम्य । २१. सद्भवपराज्ञय—भावानुवाद तथा ७६ वृष्टकी विस्तृत प्रस्तावना सहित । २२. कष्ट्रज्ञानिय ताइपत्रीय सन्यसूची— २३. न्यायधिनिक्ष्मय विवर्णी[प्रमम भाग]— २७. तरवार्णवृत्ति—भृततानर सृरिर्शकत टोका । हिन्दी सार सहित । २४. आदिपुराण भाग [१]—भगवान् ऋषभवेवकः। वृष्ट वित्त । २६ आदिपुराण भाग [२]— , , , , , , , , , , , , , , , , , , , | |

भारतीय ज्ञानपीठ काशी, दुर्गांकुगड रोड, बनारस ४